### ं॥ प्रस्तावना ॥

या सद्यायमाला नामनो ग्रंथ जैनधर्मी श्रावक श्रावीका तथा साधु सा धवीने बहु उपयोगी हे एम तेनी प्रथमनी खादृत्ति उपरथीज सिद्ध थयुं हे. कारण के तेमां जिक्त खने वैराग्यने पृष्टि खापनारी तेमज वांचनारा उने हृदयमां खानंद प्रगट करनारी उत्तम सरस सद्यायो दाखल करवा मां खावेली हे, तेथी ते सर्वेने बहु प्रीय थइ पड़ी हे. जो के जैनधर्मना जिक्त खने वैराग्यमय बीजा बहु ग्रंथो हे पण ते ग्रंथो संस्कृत ख्रथवा प्राकृत जाषामां होवाथी तेवा ग्रंथो गुरुगम्यता विना जाणी शकाता नथी खने खा सद्यायमाला तो खन्दरोना जाण कोइपण सहेलाइथी वांची शके हे, खने तेमां वली नवा नवा रागवाली सद्यायो होवाथी वांचनारने बहु खानंद खापे हे.

आ सद्यायमालानी प्रथम आदृत्ति उपावी त्यारे तेमां जे जे उत्तम अ ने शांतरसमय सद्यायो हती ते ते दाखल करी हती अने ते सद्यायोनी संख्या पण कांइ उठी नहोती. आद्यारे (५११) सद्यायो हती. तेज सद्या यो सुधारा वधारा साथे आ बीजी आदृत्तिमां पण दाखल करी हे.

श्रमारा जैनधर्मी जाइयोने तेमज बाइयोने सद्यायो वांचवानो घणो श्र रयास होवाथी तेर्डए श्रमारी पासे प्रथमनी श्रावृत्ति पुरी थवाने लीधे बीजी श्रावृत्ति डापवानो श्राग्रह करवाथी तेमज बहु साधर्मी बंधु तरफ थी तेनी मागणी थवाने लीधे श्रमे सद्यायमालानी श्रा बीजी श्रावृत्ति उपावीने प्रसिद्ध करेली हे श्रने वली ते प्रथमनी श्रावृत्तिनी माफक शा स्त्री श्रक्तरोथीज हपावी हे; कारण के साधु साध्वी तेमज मारवाड तथा दक्तिण विगेरे देशोमां निवास करनारा श्रमारा साधर्मी जाइयोने तेमज बाइयोने शास्त्री श्रक्तरोना ग्रंथो वांचवानो परीचय होय हे. वली श्रमा रा कह काहीयावाड तथा गुजरात देशमां वसनारा साधर्मी जाइयो तथा बाइयोने पण शास्त्री श्रक्तरो वांचवानो श्रन्यास होय हे, तेथी ते सर्वेने जपयोगमां श्रावे एम धारी शास्त्री श्रक्तरोथीज हपावी हे. वेवट आ प्रस्तावना पुरी करता पहेलां अमो अमारा साधमीं वेने विनं तीपूर्वक निवेदन करीए बीए के, आ सद्यायमाला प्रंथ जिक्त अने वैराग्य ना आनंदने आपनारो बहु रसीक होवाथी तेनो अवस्य वांचीने लाज लेशो एवी अमारी प्रार्थना के. वली अमोए आ सद्यायमाला प्रंथ बपाव ती वलते यथामित पुरतुं ध्यान आपीने शुद्ध कर्यों के कतां कोइ वेकाणे दृष्टिदोषथी अशुद्धपणुं रही गयुं होय तो तेनुं अमारा साधमीं बंधु वे पासे 'मिन्नामि एकड' मागीए बीए. शुजं जवतु.



# ॥ इप्रनुक्रमणिका ॥

ं सञ्चायनुं नाम.	सञ्चायनुं प्रथम पद.	हाल. पृष
१ सम्यक्त्वना सडसठ बोखनीस	। सुकृतविद्यकादंबिनी.	₹—- <b></b> ₹
२ खढार पापस्थानक सर्चार्य.	पापस्थानक पहेल्लुं कह्युं रे.	<b>१</b> ज—६
३ निंदाचारक सद्याय.	निंदा म करजो कोइनी०	<b>₹</b> —१६
ध नेम राजुल सद्याय.	पियुजी रे पियुजी रे नाम ज	पुंग् ११६
<b>५ ब</b> खन्न मुनिनी सद्याय	शा माटे बांधव मुखर्थी न बोह	झो. १−१७
६ मनजमरानी सञ्चाय.	त्रू ह्यो मनजमरा तुं क्यां जम	यो. र–१७
9ं खाठ दृष्टिनी सञ्चाय.	शिव सुखकारण जपदिसी.	<u></u> <u></u> <u></u> <u> </u>
<b>७ श्रीनगवतीसूत्रनी सद्याय.</b>	वंदी प्रणमी प्रेमशुं रे.	<b>१</b> —₽३
ए अगीयार अंगेनी सद्याय.	<b>छाचारांग पहे</b> खुं कह्युं रे.	११—२५
<ul><li>पांच कुगरुनी सञ्चाय.</li></ul>	सेवो सज्जरु गुण्निर्धारी.	६—३०
११ यांबिल तपनी सद्याय.	समरी श्रुतदेवी शारदा.	<b>१—३</b> ३
१२ श्री अमृतवेलीनी सञ्चाय.	चेतन ज्ञान अजुवालीयें.	₹₹₹
१३ जीवहित शिखनी सद्याय.	जोयें जतन करी जीवण	१३५
१४ पांचमा आरानी सद्याय.	वीर कहे गौतम सुणो.	१३६
१५ कलियुगनी सञ्चाय.	सरस्वतीस्वामिनी पाय नर्म	ीने १३७
१६ एकादशीनी सञ्चाय.	<b>ञ्राज महारे एकाद</b> शी रे.	१३७
१९ वैराग्यनी सद्याय.	जंचां मंदिर मालीयां.	?3 <sub>(U</sub>
१७ त्रमल वर्जननी सद्याय.	श्रीजिनवाणी मन धरी.	<b>₹</b> ₹₩
१ए श्री शीखामणनी सद्याय.	श्रीगुरुचर्ण पसाउले.	₹80
१० बार जावनानी सद्याय.	पास जिनेश्वर पय नमी.	१३४१
११ सीताजीनी सद्याय.	ञनकसुता हुं नाम धरांबु.	?
११ नोकरवालीनी सद्याय.	बार जपुं अरिहंतना.	१५०
२३ वणकारानी सद्याय.	नरजव नयर सोहामणुं	१ए१
२४ सोदागरनी सद्याय.	सुन सोदागर बे.	र५२
१५ छापस्वजावनी सद्याय.	ञ्चापस्वजावमां रे.	१५१
१६ सहेजानंदीनी सद्याय.	सहेजानंदी रे आतमा.	<b>१</b> ५१

सञ्चायनुं नाम.	सद्यायनुं प्रथम पद. हा	ास. पृ०
१९ चेतन शीखामणनी सद्याय.	चेतन अब कढु चेतीयें.	र-५४
२७ त्रात्मबोधनी सद्यायः	हो सुण त्रातमा मत पडे०	१–५४
१ए श्रात्मबोधनी बीजी सद्यायः	सांजल सयणां साचि सुणावुं.	१–५४
३० रात्रिज्ञोजननी सञ्चायः	पुएयसंजोगे नरजव खाधो.	ર–૫૫
३१ जोबन ऋस्थिरनी सञ्चाय.	जोबनीयांनी मोजां फोजां.	१–५६
३१ शियलविषे पुरुषशीखामण सप	सुण सुण कंता रे शीख सो।	१–५६
३३ नारीने शीखामणनी सद्याय.	एक अनुपम शीखामणखरी.	१-५७
३४ धोबीडानी सद्याय.	धोवीडा तुं घोजे मननुं.	१५ए
३५ जरत चक्रीनी सद्याय.	मनहीमें वैरागी जरतजी.	१५ए
३६ बाहुबलजीनी सचाय.	बहेर्नी बोले हो बाहुबल०	१६०
३९ ढंढण्क्षिनी सद्याय.	ढंढणक्रिषेने वंदणा.	१६□
३७ श्राइमंताजीनी सद्याय.	श्रीश्रइमंता मुनिवरजूकी.	<b>१६</b> १
३ए करकंरू प्रत्येकबुधनी सद्याय.	चंपानगरी अति जली.	१६१
४० मनोरमा सतीनी सचाय.	मोहनगारी मनोरमा. 📝	१६१
४१ शोख सतीनी सद्याय.	सरस्वती माता प्रण्मुं.	१-६२
४१ जीवदयानी सद्याय.	आदिजिनेश्वर पाय प्रणमेव.	१-६१
<b>४३ क्रोधनी सद्याय.</b>	कडुवां फल वे कोधनां.	१६४
४४ माननी सद्याय.	रे जी <u>व मान न की</u> जीयें.	१६४
४५ मायानी सञ्चाय.	समकितनुं मूल जाणीयें जी.	<b>१</b> ६४
४६ लोजनी सद्याय.	तुमें बक्ष जो जो बोन्ननां.	<b>१</b> ६५
४७ श्रावकनी करणीनी सद्याय.	श्रावक तुं ज्वे परनात.	र६५
४७ श्रीयनायी मु।ननी सञ्चाय.	श्रेणिक रयवाडी चट्यो.	<b>१</b> ६६
४ए सारबोलनी सद्याय.	सरस्रतिस्वामिनीपयप्रणमेव.	१–६७
ए० सामायिकनाबत्रीशदोषनीस०		<b>१६</b> ७
<b>५१ मुह्</b> पत्तीना पचास बोलनी सप		१६७
<b>५२ कायाजपर सद्याय.</b>	काया रे वाडी कारमी.	<b>₹3</b> 0
<b>५३ अगीयार गण्धरनी सद्याय.</b>		<b>?9</b> 0
<b>५४ शोल सतीनी सद्याय.</b>	शोल सतीनां लीजे नाम.	<b>3-30</b>

सञ्चायनुं नाम.	सद्यायनुं प्रथम पद. हा	ल. प्र
<b>५५ वीश स्थानकना तपनी सञ्चाय</b>		<b>?9</b> ?
<b>५६ ज्ञीलविषे ज्ञीलामणनी सञ्चाय</b>		?-9?
५९ प्रजाते वहाण्खांनी सञ्चाय.	मिथ्यामती रे रजनी श्रसण	₹-9₹
<b>५</b> ० क्तमानत्रीशी सद्याय.	आदर जीव कमागुण आदर.	₹-9₹
<b>५</b> ए श्रावकना एकवीश गुणनी स०	संजुर कहे निसुणो जवि.	१—9५
६० नोकारवाखीनी सञ्चाय.	एक नारी रे धर्मतणे धुर.	१-9६
६१ तेर काठीयानी सद्याय.	श्राखस पहेलोजी काठीयो.	?-99
६२ महोटीहोंश नकरवा आश्रयीस		₹—99
६३ रसनानी सद्याय.	बापडली रे जीजडली तुं.	₹-90
६४ सचित्त अचित्त विचारनी स०		<b>?—9</b> 0
६५ वैराग्यनी सद्याय.	कोज काज न त्र्यावे रे.	?— <b>5</b> 0
६६ चैतन्यशिकानासनी स०	<b>ञ्चाप विचारजो ञ्चातमा</b> .	<b>₹—</b> 00
६७ वैराग्यकारक सद्याय.	कीसीकुं सब दिन सरखे न०	<b>ং—</b> ঢ <b>ং</b>
६७ निद्धानी सद्याय.	बेटी मोह नरिंदकी.	?-5?
६ए अज्ञव्यनेजपदेशनलागवाविषे	- '	<b>ং—</b> ঢ <b>ং</b>
<sup>90</sup> वैराग्यकारक सद्याय.	प्राणी काया माया कारमी.	१ण्य
ऽ१ वखाण सुणती वखत स्त्रीक⁰स	ण् <del>ञा</del> ठम पांखी पडवे.	<b>१</b> তহ
७१ खोजनी सद्याय.		१ ७५
७३ शिलनी नववाडनी सञ्चाय.	श्री गुरुने चरणे नमी.	१०७६
<b>98 तमाकु परिहारनी सद्याय.</b>		१एए
७५ ऋरणिकमुनिनी सञ्चाय.	अर णिकमुनिवरचाख्या गोचर	ी१ए०
<b>9६ मेघकुमारनी सञ्चाय.</b>	धारणी सनावे रे मेघकुमारने.	१–ए१
99 वैराग्यकारक स <sup>o</sup>	या सेवासमें बे-	१ए१
७७ कृतकर्मफलनी स <sup>0</sup>	देवदा <u>णव तीर्थंकर गण्</u> धर	?ए <b>ত্</b>
७ए त्र्यात्मप्रबोधनी स०	जीव कोध स करजे खोजण	१ए३
oo रहनेमी राजिमतीजीनी सo	काउस्सग्गथकी रे रहनेमी.	<b>१</b> ए३
<b>७१ श्री शालीज</b> ङ्गनी स०	प्रथम गोवालीयातणे जवेंजी.	
<b>७२ अज्ञान दोष अंधेरनगरीनी</b> स	ण् <b>अज्ञान महा अंधेर नगरें</b> .	१एइ

सवायनुं प्रथम पद. सद्यायनुं नाम. ढाल. पृ. शांतिसुधारस कुंनमां. **0३** अध्यात्मनी सद्याय. ₹--@9 सरखती मुऊ रे. **08 मधुबिं** छुञ्जाना हष्टांतनी सण **₹—**@6 **ए**५ वैराग्यकारक सद्याय. कां नवि चिंते हो चित्तमें. **}—-**trite प्रजुसाथें जो प्रीत वंडो तो. १--एए **0६ परस्त्रीत्यागनी सद्याय. 09 स्त्रीवर्जन शीखामणनी स**र्व धर्म जाली जातां धराजी. **₹—₹**¤¤ **ए** परस्त्रीवर्जननी सद्याय. शीख सुणो पियु माहाण ₹**—**₹00 **७** दश दष्टांताधिकारनी स० प्रेमे पास जिएंदना. 21-101 ए० समकितनी चोपाइनी सण धुर प्रणमुं जिनवर चण सुगुरु पीढाणो इण खाचारे. १-११४ ए१ श्री सुगुरुपचीशीनी सण एर आत्मशिका सञ्चाय. ञ्चातमरामे रे मुनि रमे. र-रयप ए३ मायानी सञ्चाय. माया कारमी रे माया मत० १-११६ रखे कोइ रमणीरागमां. ए४ शीयलविषे सद्याय. १-१२६ एए कृतकर्म जपर सञ्चाय. सुखट्टःख सरज्यां पामीयें रे. १-११७ ए६ वणकारानी सद्याय. नरजव नयर सोहामणुं. 3-399 ए९ सुमति विलाप सद्याय. पडजो कुमति गढना कांगरा : - १२७ ए७ कुगुरुपचीशीनी स० श्रीजिनवर प्रणमुं मुदा. **१--**१२७ एए शांतिनाथनोदशण्मेघण्तेनीसण्दशमे जवे श्री शांतिजी. १--१३० नाम एलापुत्र जाणीयें. १०० एलाचीकुमारनी सo. · <---<> १०१ मनकमुनिनी सद्याय. नमो नमो मनकमहामुनि. १--१३२ १०२ उपदेश बत्रीशी सद्याय. आतमराम सयाने तुं तो. ं १--१३३ १०३ रहनेमीजीनी सद्याय. रहनेमी छंबर विण० १-134 १०४ हितशिक्तोपदेश सद्याय. प्रथम प्रण्मुं सरस्वती पाय. १--१३७ १ण्प श्री आठमदनी सद्याय. मद ञ्राठ महामुनि वाण ?--१३७ १०६ शीखामणनी सव ·चड्या पड्यानो श्रंतर सम<sup>् १</sup>--१३ए १०७ वैराग्यकारक स० ए संसार असार हे रे. · <-->8 वर्द्धमान जिन वीनवुं. १०० चलगति वेलनी स० ह--१४५ ं जिन शासन रे सूधि. १०ए अजद्य अनंतकाय स० 885--5 पवयण देवी समरी मातः १--१४५ ? १० असद्याद्वारकनी सº

सञ्चायनुं नामः	सद्यायनुं प्रथम पद.	हाल. पृष
१११ सुगुरु सञ्चाय.	सफ़ुरु एवा सेवीयें.	<b>ყ</b> –₹ყ६
१११ पृथ्वी सचित्त अचित्त सा	प्रथम नमुं सह्यु	<b>१—१४</b> ए
११३ कर्मपचीशीनी सञ्चाय.	पेख करमगति प्रा॰	<b>₹—</b> ₹₩₩
११४ मनःस्थिरकरण सद्याय.	मन थिर करजो रे.	र्—र्यव
११५ नेमराजुलना पत्ररूप स०	खस्ति श्री रेवइगिरिवण	१—१५१
११६ घडपणनी सद्याय.	घडपण कां तुं छावियो.	१—१५५
११७ व्यात्महितशिक्ता सञ्चाय.	प्यारी ते पियुने एम.	1-143
११७ श्री सीता सतीनी सञ्चाय.	सरस्वती जगवती जारती.	र–्रथ्४
११ए ख्रात्मशिका सञ्चाय.	समय संजालो रे आखर०	१–१५६
१२० खातमा उपर सद्याय.	सुमति सदा सुकुलिणी.	१–१५६
१११ त्राशातनानी सञ्चायः	श्री जिनवरने करी प्रव	१—१५७
१२१ संसार खरूप सद्यायः	संसारे रे जीव अनंतः	<b>!—</b> ?५७
११३ प्रमादवर्जन सद्याय.	श्रजरामर जगको <b>न</b> □	१—१५ए
१२४ संग्राम सोनीनी सद्याय.	श्री संखेश्वर पाय नमी.	<b>₹—</b> ₹५ए
१२५ चेलणानी सद्याय.	वीर वंदी घेर छावतां जी.	र–१६०
र१६ शीखामण्नी सचाय.	कामिनी कहे निजकंथने.	११६१
१२७ कायापुर पाटणनी सद्याय.	कायापुर पाटण रूयडुं.	११६२
११७ मांकडनी सञ्चाय.	मांकडनो चटको दोहीलो.	११६२
११ए होकानी सञ्चाय.	होको रे होको रे द्युं करो रे	?१६३
१३० बादशाह प्रतिबोधन सद्याय	. या जुनियां फना फुरमाए.	११६४
१३१ श्रीप्रतिक्रमणहेतुगर्जित सः	श्री जिनवर प्रणमी कण	१ए१६४
१३२ शीयलविषे सद्याय.	सोमविमल गुरु पय नमीण	<b>?</b> ?90
१३३ पन्नरतिथि सद्याय.	सकलविद्यावरदायिनी.	?{9@
<b>१३४ रेंटीयानी सद्याय.</b>	बाइ रे अमने रेंटियो वा०	,
१३५ घीनी सद्याय.	चवियण जाव घणो घरी.	११७२
, ३६ स्त्रीनेशिखामणनी सद्याय.	नाथ कहे तुं सुण रे नारी.	<b>११</b> ७३
१३७ बार जावनानी सद्याय.	•	१४~१७४
१३७ ऋष्टमीनी स	श्री सरस्वती चरणे नमी.	ง <b></b> งด้อ

सद्यायनुं नाम.	सद्यायनुं प्रथम पद.	ास. पृ.
१३ए नाविज्ञावनी सद्याय.	कमें खखीयुं निश्चे रे होय.	१—१ए१
१४० सुगुरुगुणनी सद्याय.	पंच महाव्रत सूधां पाले.	१—१७२
रधर मूर्वनी सद्याय.	मायाने वश खोदुं बोले.	र—रएव
१४२ ऋध्यात्म सद्याय.	किसके चेक्षे किसके वे पूत.	१—१ए३
१४३ समकित सद्याय.	समकित निव खह्युं रे.	<b>ং—</b> ংশুধ
१४४ व्यात्मोपदेश सद्याय.	सासरिये एम जझ्यें रे.	१—१ए४
१४५ छात्मोपदेशनी बीजी स०	हुं तो प्रण्युं सजुरु राया रे.	<b>१—</b> १ए५
१४६ शीयलविषे शीखामण स०	सुण सुण प्राणी शीखडी.	३—१ए५
१४७ कुगुरुनी सद्याय.	शुद्ध संवेगी किरियाधारी.	<b>₹</b> —₹@9
<b>१</b> ४७ षट्साधुनी स०	सनडुं ते मोद्यं मुनिव	१—१एए
१४ए शीखासणकोने आपवीते विषे	स.शीखामण देतां खरी रे.	<b>ং—</b> হতত
.१५० सात वारनी स० ं	आदित्य कहे हे मानवीने.	१—'२००
१५१ प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी सर	मारगमां मुनिवर मख्यो.	१५०१
१५१ जीवोपदेश स० 🔧	सेवो सहग्रुरु जविजना.	र—२०र
रप३ तेरकाठीयानी सद्याय.	सोजागी जाइ.	<b>१</b> २०२
१५४ <sup>,</sup> षट्जावअथवाजावप्रकाशस	<b>ण्श्रीस</b> जुरुना प्रणमी पाय.	<b>ए</b> श्०३
१५५ षडावस्यक सद्याय.	श्रीसजुरुने सदा प्रणमीजें.	५५०ए
१५६ वैराग्यकारक संचायो 🦈		घ१घ१३
.१५७ शोल सुपननी संचाय.	श्रीगुरु पद प्रणमी करी	्रघ्ध्इ
१५७ उत्तराध्ययननी सञ्चाय.	पवयणदेवी चित्त धरी जी.	३६ श्रप
१५ए नंदीषेण सण	राजग्रही नगरीनो वासी.	१–१४४
१६º आयु अस्थिरनी सº	् <u>त्र्यावखां त्र</u> ुट्यांने सांधोण	१—श्रध
र६१ नवकार फखनी स□	ए नवकारतेणुं फख साव	१२४५
१६२ अष्टनंगीनी सण	• • •	१–१४५
१६३ चेतनबोधनी स <sup>o</sup>	चेतन अब कतु चेतियें.	१५४६
१६४ श्रात्माने शिकानी स०		् <b>१</b> श्प्रह
.१६५ जीव उपदेशनी सव	_ '	~? <b>२</b> ४७
१६६ जोवन अस्थिरनी सण	जो जो रे ए जोबनीयुं में	`१÷१४७्

सञ्चायतुं नाम.	सञ्चायनुं प्रथम पद्.	ढाल. पृण
१६७ वैराग्यकारक सद्याय	सुण बहेनी पियुडो०	१—१४ए
१६७ श्रात्माने जपदेशनी सद्याय.	जीव वारुं हुं मोरा.	१—५४ए
१६ए उपदेशनी सद्याय.	रात दिवस काया मूह पोर	वे.१—१एव
१९० ते सुखीयानी सद्याय.	ते सुखीया जाइ ते सुष	११५०
१७१ पूर्वसेवालक्षण सद्याय.	त्रव्यने कर्मना योगधी.	र–१५१
१७१ पन्नरतिथिनी उपदेशकारकसण	। श्रीमजोडी जगधणी.	<b>ર</b> ૫–રૂપર
१७३ सतासतीनी सचाय.	सुप्रजात नित्य वंदियें.	<b>१</b> —१६१
१९४ रात्रिजोजननी सङाय	श्री गुरुपद प्रणमी. 🦠 🕆	र–१६३
१९५ हितशिकानी संचाय	ळापं आप सदा समजावे.	१–१६५
१५६ कायारूप कामिनीकृत उण्सण	सुग्रण सोजागी हो. 🔻	-१–१६६
१९९ श्रावकनां बार त्रतनी सञ्चायः	श्रीजिनवीर वदे ग्रुप्त वाण	. <b>५–</b> १६७
१९७ श्रदार नातरांनी सचाय	पहेलाने समेरंपासपंचासरो	रे३–१८०
१७ए दशवैकालिकनी सचाय	श्रीगुरुपद पंकज नमीजी.	<u> </u>
१ <b>०० विजयकुंवर ने विजयाकुंवरीस</b> ०	श्रीवीतरागजिन देव नमुं.	१—२७१
१०१ जांजरीया मुनिनी सचाय.	सरस्वती वरणे शीश नमार्व	l.ধ—হত <b>ধ</b>
•	श्रीसरस्ततीना रे पाय.	-
१०३ इस्कुकारकमलावतीष्रद्ढाखीयुं	.चोवीशे जिनवर नमुं.	६—घ्एव
	मालवदेश सनोहरुं.	8—\$@3
राष् श्री छाईन्नकमुनिनो रासः 🕠	सरसतीसामिणी विनवुं रे.	D-301
१७६ कामकंदर्पनी सद्याय.	कामविकारें मानवी रे.	\$—₹¤9
१०७ नेमराजुलनी सद्याय.	गोखमें सखीयो संघात.	₹—₹00
१०७ व्यात्मशिका सद्यायः	त्रविकजन जज ले रे.	१—३०ए
१७ए जंबुकुमारनुं चोढालीयुं.	सरसती पदपंकजनमी.	४–३११
१ए० नेमराजुसनो बारमासो.	सरसती सामिणी विनवुं.	र–३१३
	सरसती सामिनी विन्वु ए.	र–३१४
१ए२ उपराम सद्याय.	जगवती जारती मन धण	र–३र७
_	सकुरुचर्णे निम कहुं सार.	र–३रह
१ए४-श्रीजनरख छने जन पाण्चोढाण	श्यनंत सिद्ध श्रागें हुवा.	त्र—ईर्व

सञ्चायनुं नाम.	सञ्चायनुं प्रथम पद.	हास. प्र
रएए श्रीरत गुरुनी जोड.	रतन गुरु गुणे मीठडा रे.	- 1
१ए६ रत्निंवतामणिनी सद्यायः	ष्ट्या जवरत्नचिंतामणि सण	
१ए७ श्री यावचाकुमारनुं चोढा िसं	ALL CONTRACTOR OF THE PROPERTY	
१ए० श्री धन्नाजीनी सद्याय.		
१एए श्रीगजसुकुमारनी सञ्चाय.		
१०० श्रीपर्यूबण पर्वनी सद्याय.	-	
२०१ उपदेश कारक ककानी सद्याय	_	?-339
२०२ जांग्य वारकनी सद्याय.		
२०३ विष्नुकुमार सुनिनी सद्याय.	_	१०-३४०
२०४ श्री हीरविजय सूरि सद्याय.		१—३५०
२०५ क्तुवंती सचाय.		१-३५०
२०६ पर्यूषणपर्वना नवव्याख्यान स्व		११-३५१
,	सुद्रीवनयर सुहामणुं रे खाण	१७—३६७
२०० सपरिकर श्रीखंधकरूषि स०	श्री सुव्रत जिनवर नमुं.	3-391
	्षक घरे घोडा हाथीयाजी.	<b>१</b> −३७४
	हस्ती नागपुर वर ज्रह्यं.	₹-₹98
	ळांबो मोस्चो हे ळांगणे.	१—३७६
२१२ श्री यूबिजडनी सद्याय.	श्री यूलिजङ् मुनिगणमां.	१-३७६
११३ श्री घूलिजडनी सञ्चाय.		<b>?—</b> ३७७
११४ अष्ट प्रवचन मातानी सद्याय.	सुकृतकद्दपतरु श्रेणिनी.	
२१५ पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर सव	शासन नायक सुखकरु	३३७६
११६ रावणनें मंं आपेला उ० स०	सीताहरी रावण घरत्राणी	. १-३ए१
११७ तपनी सचाय.	की थां कर्म निकंदवा रे.	१—३ए२
११७ श्री सुंदरीनी सद्याय.	रूडे रूपें रे शीख सोहागण.	१—३एव
११ए श्री नंदा सतीनी सञ्चाय.	बेनातटनयरें वसे	?३ए३
११० राजिमतीनी सद्याय.	कांइ रीसाणा हो, नेम नगीना	७१३७३
१२१ श्री चेलणासतीनी सद्याय.	वीरे वखाणी राणी चेण	१३ए४
१२१ श्री रुक्मिणीजीनी सद्याय.	कहे सीमंधर स्वामी	१३ए४

११३ रोहिणीजीनी सद्याय. श्रीवासुपूज्य जिनंदना ए १--३एए १२४ कौराख्याजीनी सञ्चाय. दशरथनृप कौशहयाने कहे. १-३ए६ जिनवर रूप देखी मनहरण १--३एउ ११५ देवानदाजीनी सद्याय. ११६ नागेश्वरी ब्राह्मणींनी सद्याय. चंपा नगरी वखाणीयें रे. ११९ श्रीनिश्चयव्यवहारनी सञ्चाय. श्रीजिनवर रे, देशना दि० १--४०० ११० स्याद्वादनी सञ्चाय. स्याद्रादमत श्रीजिनवरनोः १--४०१ ११ए सनत्कुमारनी सद्याय. 😁 सरस्वती सरस वचनरसण १--४०३ १३० श्री एवंती सुकुमारजीनी सण्मनोहर माखवदेश. २३१ श्री वयरमुनिनी सञ्चाय. सांजलजो तुमे त्राज्ञतवातो. १--४०६ १३१ श्री मेतारज मुनिनी सञ्चाय. धन धन मेतारज मुनि. १--४०७ १३३ सात व्यसननी सद्यायः वार तुं वार तुं व्यसन सव १-४०७ · सर्व सद्यायोः २३३ सर्वे ढाख. प्रश

## ॥ अथ पश्चोत्तरवाक्यरतसंग्रहः ॥

ा प्रश्न. जगतमां प्राह्म शुं हे? उत्तर. ग्रुरुवाक्य. प्र० त्याज्य शुं ? उ० संसारकार्यः प्र० ग्रुरु कोण ? उ० विज्ञाततत्त्व तथा जीवदयातत्त्वर होय ते. प्र० उत्तमजनने शीव कर्त्तव्य शुं हे? उ० संसार वृद्धिना कार्यनुं हेद नः प्र० मोक्ततस्वीज कर्युं ? उ० सिक्तय सम्यग्ज्ञान. प्र० जीवने परलोक जतां पाथेय शुं ? उ० करेखुं धर्माराधनः प्र० पवित्रजन कोण ? उ० शुरु मनवालो, प्र० निद्धावान् कोण ? उ० विवेकी जनः प्र० विष कर्युं ? उ० ग्रुरु मनवालो, प्र० निद्धावान् कोण ? उ० विवेकी जनः प्र० विष कर्युं ? उ० ग्रुरु मां ख्रविश्वास ते. प्र० संसारमां सार शुं हे? उ० पोतानुं वापरनुं सारं कर्युं ते, ख्रयवा उद्योग करवो ते. प्र० मदिरापान कर्युं ? उ० मोहनुं उत्पन्न थवुं ते. प्र० स्नेह कोने कहेवो ? उ० सुधर्ममां स्नेह ते. प्र० चोर कोण ? उ० पंचेंडियना जे विषयो ते. प्र० संसारवह्मी कर्द् ? उ० तृक्षाः प्र० वैरी कोण ? उ० ख्रवांगः प्र० जगतमां जय कोनो हे? उ० तृक्षाः प्र० वेरी कोण ? उ० संसाररागी. प्र० श्रुरवीर कोण ? उ० कामिनीना कटा क्यी निहं पीडा पामे ते. प्र० श्रवणीय शुं ? उ० सष्डपदेशः प्र० मह चानुं मूल कर्युं ? उ० ख्रयाचनाः प्र० पार न पमाय एवं शुं ? उ० स्री चित्रः प्र० चतुर कोण ? उ० ख्रवि त्रित्रः प्र० चतुर कोण ? उ० ख्रवि त्रित्रः प्रथ वतुर कोण ? उ० ख्रीचरित्रथी ख्रवं मित रहे ते. प्र० दा

रिद्र कयुं? उ० असंतोष. प्रण लघु शुं? उण याचना करवी ते. प्रण जीवित शुं? उ० परहित करतां जीववुं ते. प्रण जाड्य शुं? उ० बुद्धिमत्ता वतां विद्या ज्यासरहित होय ते. प्रव जायण कोण? उ० विवेक जन. प्रव निद्रा कइ? उ॰ मूहपणुं, प्र॰ योवन, धन, आयु, ते केवां हे ? उ॰ कमलपत्रपर पहेला पाणीना टीपा जेवां हे. प्रण चंद्रतुखरीतल शुं? उण सुजनजननो समागम. प्रण्नरक कयुं? उ० परवशता. प्रण्सुख शुं? उण् आत्मविरति. प्रण्सत्य शुं? उ॰ सर्व प्राणीनुं हित करवुं ते. प्र॰ जीवने वहाज शुं? उ॰ प्राण प्र॰ दान कयुं? उ० जीवोने अजयदान आपवुं ते. प्र० मित्र कोण? उ० जे पापथी नि वृत्तावे ते. प्रव असंकार शुं? जव शीस. वाग्त्रूषण कयुं? जव सत्यवाक्य. प्रव श्रनर्थ फलदायक ग्रुं? उ० चेंचल मन. प्र० सुखावह मैत्री कई? उ० सत्सा धुनो समागम होय ते. प्र० डाह्यो कोण? उ० सर्वेडःसंग्त्यागी. प्र० श्रंध, बहेरो अने मूक कोण? उ० अकृत कार्य करनार, हितवाक्य न सांजलनार अने समयानुकूल न बोलनार. प्रण मरण शुं? उण अतिमूर्खपणुं. प्रण अमु ह्य शुं? उ० जे समयमां काम आवे ते. प्र॰ मरणांत शहय क्युं? उ० प्रष्ठ न्नरीतें अक्तत कंखुं होय ते. ज्ञण्यंत्न क्यां करवो? उज्विद्याच्यास, सदौ षध, अने दान तेमां. प्रव अप्रीति क्यां राखवी? उव्खलमां,परस्रीमां,अने परधनमां. प्रण् अहोनिश चिंतवन कोनुं करवुं? उण् संसारनी असारतानुं. प्र॰ मरण पर्यंत पण कीने वैराग्य न छावे? उ॰ मूर्खने, पाराधिने,गर्विष्टने, अने कृतन्नीने. प्रo पूज्य कोणं? उ० सदाचरणी. प्रo अधम कोण? उ० यहीतवतत्यागी. प्रण्जगत् कोणें जित्युं हे? उण्सत्य तितिकावान् पुरुषे, प्रण सुरवंदनीय कोण हे? उ० परिपूर्ण दयाधर्मपाद्यनार, प्रण बुद्धिमान् कोनाथी जय पामे ? उ० संसारारख्यी. प्रण प्राणीयो कोने वश रहे हे? ठ० सत्य, अने प्रिय वाक्य कहेंनारने तथा विनयवान्ने. प्र० सुजनने क्यां ऊतुं रहेवुं? उ० खान्नालाननो विचार बोडी न्यायमार्गमां ऊतुं रहेवुं. प्रव विजली समान शुं हे? उव दुर्जनसंगति अने युवतिजननी प्रीति. प्रव क्या युगमां सुमनुष्यनी पण मति दुःशील आचरण करवामां तत्पर याय वे ? उ० कि खुगमां. प्र० शोचनीय शुं वे ? उ० कार्पएय. प्र० धनीनुं शुं प्रशंसनीय हे ? उ० खीदार्य. प्र० पराज्ञव पामेखा छने निर्धनतुं शुं प्रशं सनीय हे? उ० सहनशीखपणुं ॥ इति प्रश्नोत्तर वाक्यरत्नसंग्रहः समाप्तः॥

## ॥ महालिब्बनिबानेत्रवः श्री गौतमगुरुत्रयोनमः॥ ॥ त्र्यथ श्रीसम्यक्त्वना सडसठ बोलनी सद्याय प्रारंतः॥

॥ दोहा ॥ सुकृतविद्ध कादंबिनी, समरी सरसति मात ॥ समिकित सड सठ बेलिनी, किइंगुं मधुरी वात ॥१॥ समिकत दायक गुरुतेलो, पञ्चवयार न थाय ॥ त्रव कोडाकोडे करी, करतां सर्व जपाय ॥ २ ॥ दानादिक किरि या न दियें, समिकत विण शिवशर्म ॥ तेमाटे समिकत वडूं, जाणो प्रवच न मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोइ विनाशयी, जे निर्मल गुणठाएँ ॥ ते निश्चय समिकत कह्यो, तेइनां ए अदिगण ॥ ४ ॥ हाल ॥ देइ देइ द्रिसण श्रापणुं ॥ ए देशी ॥ चन सहहणा तिलिंग हे, दशविध विनय विचारो रे ॥ त्रिण शुद्धि पण दूषण, आठ प्रजाविक धारो रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ प्रजा-विक अड पंच सूषण, पंच तक्षण जाणियें ॥ षट जयण षट आगार जा वन, बिहा मने आशियें ॥ षट वाण समिकित तला सहसव, जेद एह **उदार ए ॥ एइनो तत्विवचार करतां, अहीजे जवपार ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥** चहु विइ सदहणा तिहां, जीवादिक प्रमहो रे ।। प्रवचनमां जे नाषिया, लीजे तेइनो अहो रे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ तेइनो अर्थ विचार करीयें, प्रथम सददणा खरी ॥ बीजी सददणा तेइना जे, जाण सुनि गुण जवदरी संवेग रंग तरंग जीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा ॥ तेहनी सेवा की जियें जिम, पीजियें समता सुवा ॥ ए ॥ हाल ॥ समकेत जेणे ग्रही विमकं, निन्हव ने अइंडेंदो रे ॥ पासज्ञाने कुशीलिया, वेषविडंबक मंदा रे ॥ ए ॥ ब्रुटक ॥ मंदा अनाणी दूर ढंमो, त्रीजी सददणा प्रही ॥ परदर्शनीनो संग तजि यें, चोथी सदहणा कही।। हीणातणो जे संग न तजे, तेहनो गुण निव रहे ॥ ज्यूं जलिं जलमां जल्यूं गंगा, नीर लूषापर्षूं लहे ॥ १० ॥ हाल ॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ त्रण लिंग समिकत तथां रे, पहि लो श्रुतग्रजिलाष ॥ जेहंघी श्रोता रस तहे रे, जेवो साकर इाल रे ॥ प्रा णी घरियं समकित रंग, जिम विहर्ये सुख अनंग रे ॥ प्राणीण ॥ए देक ॥ ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्त्रो रे, चतुर सुणे सुरगीत ॥ तेइसी रा-गे अति घणो रे, धर्म सुण्यानी रीत रे ॥ प्राणीण॥ १२॥ जूरूयो अटवी

कतस्यों रे, जिम दिज गेवर चंग॥इन्ने तिम जे धर्मने रे, तेहिज बीजं विं ग रे ॥ प्राणीण ॥ १३ ॥ वैयावच गुरुदेवनूं रे, त्रीजुं लिंग नदार ॥ विद्या साचक तिण परें रे, आलस निवय लगार रे ॥ प्राणीण ॥ १४॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणे जवेजी।। ए देशी ॥ अरिइंत ते जिनं विचरता जी ॥ कर्म खपी हुआ सिद्ध ॥ चेइय जिए पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धांत प्रसि इं॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम लिइयें समिकत सार ॥चतुरण ॥ १५ ॥ धर्म खिमादिक नाखिन जी, साधु तेइना रे गेह ॥ आचारय आ चारना जी, दायक नायक जेइ ॥ चतुरण ॥ १६ ॥ जपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र ज्ञणावणहार ॥ प्रवचन संघ वखाणियें जी, दरिसण समिकत सार ॥ चंतुरण ॥ १७ ॥ नगित बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृदय प्रेम बहुमा न ॥ गुण घुति अवगुण ढांकवा जी, आशातननी हाण ॥ ॥ चतुरण। १० ॥ पांच नेद ए दशतणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेह सुधारसें जी, धर्म वृक्तनूं मूल ॥ चतुरण ॥ १ए ॥ ढाल ॥ धोबीडा तूं धोए मननुं घोतीयूँ रे ॥ ए देशी ॥ त्रण शुद्धि समकीततणी रे, तिहां पहिली मन शुद्धि ॥ श्री जिनने जिनमत विना रे, जूर सकल ए बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए श्रांकणी ॥ २०॥ जिन नगतें जे नवि शयुं रे, ते बीजाधी निव थाय रे ।। एवं जे मुख जाखियें रे, ते वचनशुद्धि कहिवाय रे ॥चतुरण। ११ ॥ वेद्यो त्रेद्यो वेदना रे जे सहतो अनेक प्रकार रे ॥ जिए विणपर सुर निव नमे रे, तेइनी काया शुद्ध जदार रे ॥चतुरणाश्शाहाल॥ मुनि जन सारगनी देशी।।समिकित दूषण परिदरो, तेमां पहिली हे शंका॥ ते जिन वचनमां मत करो।। जेइने सम नृप रंका, समकित दूषण परिइरी ॥ ए आंकर्णी ॥१३॥ कंखा कुमतनी वांग्रना, बीजुं दूषण तिजेंये।। पामी सुरतरु परगडो, किम बाजव जियें ॥ समण ॥ २८ ॥ संशय धर्मना फ सत्यो, विचिगिञ्चा नामें ॥ त्रीजूं दूषरा परिद्रो, निज शुन्न परियामें ॥स मण् ।। १५।। मिछ्यामित गुण वर्षाना, टालो चोथो दोप ॥ उनमारिग शुणतां हुवे, जन मारग पोष ॥ समण ॥ १६ ॥ पांचमो दोष मिछ्यामती, परिचय नवि, की जे ॥ इम शुन्न मित अरविंदनी, जली वासना ली जे ॥ समण्॥ ॥ १७ ॥ दाल ॥ नोलिंडा इंसारें विषय न सचीये ॥ ए देशी ॥ आव प्र नाविक प्रवचनना कह्या, पावयणी घुरि जाण ॥ वर्त्तमान श्रुतना जे अर्थ

नो, पार लंदे गुणखाण ।। धन धन शासन मंमन मुनिवरा ॥ ए आंकणी ॥ १०॥ धर्म कथी ते बीजो जाणिये, नंदिषेण परि जेह ॥ निज उपदेशे रे रंजे लोकने, जंजे त्हदयसंदेह ॥ धनण ॥ २७ ॥ वादी त्रीजोरे तर्क निपुण जाएयो, मख्नवादी परि जेह ॥ राजहारे रे जयकमला वरे, गाजंतो जिम मेह ॥ धनण् ॥ ३०॥ न्नाइ परि जेह निमित्त कहे, परमत जी पण काज ॥ तेइ निमित्तीरे चोथो जाणिये, श्रीजिनशासन राज ॥ धनण ॥ ३१ ॥ तप गुण ऊपर रोपे धर्मने, गोपे निव जिन आए ॥ आश्रव लोपेर निव कोपे कदा, पंचम तपसी ते जाला ॥ धनण ॥ ३१ ॥ वठी विद्यारे मंत्र तणो बलि, जिम श्रीवयर मुणिंद ॥ सिद्ध सातमोरे श्रंजन योगश्री, जिम कालिक मुनिचंद ॥ धनण ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मध्र अर्थनस्था, धर्म हेतु करे जेह ॥ तिङ्लेनपरे नरपति रीजवे, अठ म वर किव तेह ॥ धनण॥ ३४॥ जव निव होवे प्रजाविक एइवा, तव विधि पूरव अनेक ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रजाविक विक ॥ धनण ॥ ३५ ॥ ढाल ॥ सतीय सुन्नज्ञानी देशी ॥ सोहे समिकत जेइथी, सिख जिम आजरणें देह ॥ जूषण पांच ते मन वस्यां, सखी मन वस्यां तेहमां नही संदेह, मुऊ समिकते रंग अचल होयो ॥ ए आंकणी ॥ ॥ ३६ ॥ पहिलुं कुशलपणुं तिहां, सखी वंदन ने पञ्चलाण ॥ किरियानो विधि अति घर्षा, सखी आचरे तेइ सुजारा ॥ मुऊए ॥ ३५ ॥ बीजूं तीर थ सेवना, सखी तीरथ तारे जेह ॥ ते गीतारथ मुनिवरा, सखी तेहसुं की जे नेइ ॥ मुऊण ॥ ३० ॥ जगित करे गुरु देवनी, सखी त्रीजुं जूबण होय ॥ किणहि चताओं निव चते, सिव चोयुं नूषण जोय ॥ मुऊण ॥ ३ए॥ जिनशासन अनुमोदना, सखी जेहमी बहुजन हुंत ॥ की जें तेह प्रजाव ना, सखी पांचजूबरानी खंत ॥ मुऊण ॥ ४ण ॥ हाल ॥ इम निव की जे हो ॥ ए देशो ॥ विक्षण पांच कह्यां समिकतत्रणां, धुर उपसम अनुकूल ॥ सुगुण नर ॥ अपराधी सुं पण निव चितथकी, चिंतवियें प्रतिकूल ॥ सुगुण नर, श्री जिननाषित वचन विचारियें॥ ए श्रांकणी॥धर्॥ सुरनर सुख जे इःख करि तेखवे, वंबे शिवसुख एक ॥ सुण ॥ बीजूं लक्कण ते अंगोकरे, सार संवेग सुटेक ॥ सुण ॥ श्रीजिन्ण ॥ ध्रेश ॥ नारके चारक समन्तव क नग्यो, तारक जाणिने धर्म ॥ सुण ॥ चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक

ए। मर्म ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ध३ ॥ इत्यथकी दुःखियानी जे दया, धर्म हीणानी रे जावि ॥सुण्॥ चोथुं वक्षण अनुकंपा कही,निज शकतें मन छ्यां वि ॥ सूण ॥ श्रीजिनण ॥ ४४ ॥ जे जिन नारुयुं ते नदि अन्यया, एइवो जे हह रंग || सु<sup>0</sup> || ते आस्तिकता बक्तण पांचमं, करे कुंमतिनो ए जंग ॥ सुण ॥ श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ढाल ॥ जिन जिन प्रति वंदन दिसे, ए दे-ही ॥ पर तीर्थी परना सुर तेणे, बैत्य प्रह्या विल सेह ॥ वंदन प्रमुख ति-हां निव करवुं, ते जयणा षट नेय रे, जविका समिकत यतना की जें ॥ ए आंकणी ॥ ४६ ॥ वंदन ते करजोडन किइयं, नमन ते शीश नमाडे ॥ वान इष्ट अन्नादिक देवुं ॥ गौरव जिक्त देखाडे रे ॥ जण्॥ धण्॥ अनुप्र दान ते तेइने कहियें, वार वार जे दान ॥ दोष कुपात्रें पात्रमतियें ॥ न-हि अनुकंपा मान रे ॥ जण्॥ ४० ॥ अए। बोलावे जेर जाखवुं, ते कहि-वें आखाप ॥ वारवार आखाप जे करवो, ते कहियें संखाप रे ॥ जण् ॥ ॥ ४ए ॥ ए जयलाघी समिकत दीपे, वित दीपे व्यवहार ॥ एमां पेण कारलाधी जयला, तेइ अनेक प्रकार रे ॥ त्र०॥ ए० ॥ ढाल ॥ ललना-नी देशी ॥ शुद्ध घरमधी निव चले, अति दृढ गुए आधार ललना ॥ तो पण जे निव तेहवा, तेहने एह आगार ॥ खलना ॥ ५१ ॥ बोल्युं तेहवुं पालियें ॥ इंति इंत सम बोख ॥ खखना ॥ सक्जनना इर्जन तणा, कह्नप कोटिने तोल ॥ ललना ॥ बोठं ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस ज्ञा-सन अजियोग ।। खलना ॥ तेइथी कार्तिकनी परे, निह मिण्यात्व संयोग ॥ बढ़ना ॥ बो० ॥ ५३ ॥ मेखो जननो घण कह्यो, बढ़ चोरादिक जाण ॥ खलना ॥ खेत्रपालादिक देवता, तातादिक गुरु गण ॥ लंतना ॥ बो॰ ॥ ए४ ॥ वृत्ति इर्बज आजीविका, ते जीवण कंतार ॥ वलना ॥ ते हेते दूषरा नही, करतां अन्य आचार ॥ ललना ॥ बोण ॥ ५५ ॥ ढाल ॥ राग मल्हार ॥ जाविजे रे समकित जेहणी रूअंडु, ते जावना रे जावी म न करि परवडुं ॥ जो समकित रे ताजुं साजुं मूल रे, तो व्रत तरु रे दीये शिवपद अनुकूल रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनुकूल मूल रसाल समिकत, ते-हिवस मित अंध रे ॥ जे करे किरिया गर्व जिरिया, तेह जूंगे धंघ रे ॥ ए प्रथम जावना गुणो रुअडी, सुणो बीजी जावना ॥ बारणुं समर्कित धर्म पुरनुं, एहवी ते पावना ॥ ५७ ॥ ढाल ॥ त्रीजी जावना रे समिकत पीव

जो हढ सदी, तो मोटो रे धर्म प्रासाद मगे नहीं ॥ पाइये खोटे रे मोटो मंगाण न शोजीयें, तेइ कारण रे समकितशुं चित्त थोजीयें ॥ ५० ॥ तु-टक ॥ योजीयें चित्त नित एम जावी, चोथीं जावना जावियें ॥ समकित निधान समस्त गुणनुं, एइचुं मन लावियें ॥ तेइ विण ब्रटा रत्नसरिखा, मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रहे ताके जेह हरवा, चोर् जोर सवे सवे ॥ एए ॥ ढाल ॥ जावो पंचमी रे जावना ज्ञाम दम सार रे, पृथवी परें रे समिकत तसु आधार रे ॥ उदी जावना रे जाजन समिकत जो मखे, श्रुत शींखनों रे तो रंस तेइमां निव ढले ॥ ६०॥ त्रुटक ॥ निव ढले स-मकित ज्ञावना रस, अमिब सम संवरतणो ।। षट ज्ञावना ए कही एइमां, करो आदर अति घणो ॥ इम नावता परमार्थ जलनिधि, होय ननु जक कों ल ॥ घन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे ॥ चिदानंद कलोल ए ॥ ६१ ॥ ॥ ढाल ॥ जे मुनिवेष सके नवी छंमी ॥ ए देशी ॥ छरे जिहां समिकत ते थानक, तेहना षट विघ कहियें रे ॥ तिहां पहितुं थानक हे बेतन, लक्ष-ण श्रातम लहियें रे ॥ खीर नीर परें पुजल मिश्रित, पण एहधी हे अ-लगो रे ॥ अनुजब इंस चंच जो लागे, तो निव दीसे बलगो रे ॥ ६२ ॥ वीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुजूत संजारे रे ॥ बालकने स्तन पान वालना, पूरव ज्ञव अनुसारें रे ॥ देव मेनुज नरकादिक तेहना, वे अनि-त्यपर्याय रे ॥ इत्यथकी अविचलित अखंदित, निज गुण आतमराय रे ॥ ६३ ॥ त्रीजुं थानक चेतन कर्ता, कर्मतणे हे योगे रे ॥ कुंत्रकार जिम कुंजतणों जे, दंमादिक संयोगे रे।। निश्चयधी निज गुणनो कर्जा, अनुप चरित व्यवहारें रे ॥ इव्यकर्मनो नगरादिकनो, ते जपचार प्रकारें रे ॥६४॥ चोशुं यानक है ते जोका, पुण्य पाप फलकेरो रे ॥ व्यवहारैं निश्चय न-य हुए, जुंजे निज गुण नेरो रे ॥ पंचम शानक है परम पद, अचल अनं-त सुख वासो रे ॥ अवि व्याधि तन मनधी दिहें यें, तसु अनावे सुख खा सो रे ॥ ६५ ॥ उडुं यानक मोक्ततणुं हे, संयम ज्ञान उपायो रे ॥ जो सहिजें लिहियें तो सघले, कारण निःफल प्रायों रे ।। कहे ज्ञान नय ज्ञा-नज साचुं, तें विशे फूठी किरिया रे ॥ न लहे रूपूं रूपूं जाशी, सीप जन णी जे फिरिया रे ।। ६६ ॥ कहे किरियानय किरियाविण जे, ज्ञान तेह शुं करशे रे ॥ जल पेसी कर पद न हलावे, तारू ते किम तरशे रे ॥ दूषण त्रूषण हे इहां बहुतां, नय एकेकने वादें रे ॥ सिद्धांती ते बेहु नय साधे, कानवंत अप्रमादें रे ॥ ६७ ॥ इणिपरे सडसह बोत विचारी, जे समकित आराहे रे ॥ राग देष टाती मन वाती, ते समसुख अवगाहे रे ॥ जेइ नुं मन समकितमां निश्चल, कोइ नहीं तस तोतें रे ॥ श्री नयविजय विबुध पयसेवक, वाचकजस इम बोते रे ॥ ६० ॥

॥ इति श्री सम्यक्तवना सडसठ बोखनी सद्याय संपूर्ण ॥

## ॥ अथ अदार पापस्थानकनी सद्याय प्रारंतः ॥

।। तत्र प्रथम ॥

।। हिंसा पापस्थानक सञ्चाय।।

॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ पापस्थानक पहिलं कहुं रे, दिंसा नामे इरंत ॥ मारे जे जग जीवने रे, ते लहे मरण अनंत रे ॥ १ ॥ प्राणी जिनवाणी घरो चित्त ॥ ए आंकणो ॥ मात पितादि अनंतनां रे, पामे वियोग ते मंद ॥ दारिइ दोहग निव टले रे, मिले न वल्लान बुंद रे ॥ प्राणीण ॥ २ ॥ होय विपाकं दशगुणुं रे, एकवार कियुं कर्म ॥ इति स हस्स कोडि गमें रे, तीव जावना मर्म रे ॥ प्राणीण ॥ ३ ॥ मर कहितां पण इःख हुवे रे, मारे किम निव होय ॥ हिंसा जिननी अति बुरी रे, वे श्वानरनी जोय रे ॥ प्राणीण ॥ ४ ॥ तहने जोरें जे हुवा रे, रोइध्यान प्र मत्त ॥ नरक अतिथि ते नृप हुआ रे, जिम सुजूम बहादत्त रे ॥ प्राणीण ॥ ५ ॥ राय विवेक कन्या क्षमा रे, परणावे जस साय ॥ तेह अकी दूरें टले रे, हिंसा नाम बलाय रे ॥ प्राणीण ॥ ६ ॥ इति प्रथम पापस्थानक ॥

॥ अथ हितीय मृषावाद पापस्थानक सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ लाउलदें मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ बीजुं पापनुं स्थान, मृषावाद इर्ध्यान, आज हो उंदो हो जित मंद्रो धर्मसुं प्रीतडजी ॥ १ ॥ वैर खेद अविश्वास, एहथी दोष अञ्यास, आज हो थाए रे निव जाए व्याधि अ-पण्यथी जी ॥ १ ॥ रहिवुं कालिक स्र्रि, परिजन वचन ते जूरि, आज हो सहिवुं रे निव कहिवुं फूठ ज्यादिकं जी ॥ ३ ॥ आसन धरत आकाश, वसु नृप हुन सुप्रकाश, आज हो फूठें रे सुर रूठें घाल्यो रसातलें जी ॥ ॥ जे सत्यव्रत धरे चित्त, होय जगमांहे पिवत्त ॥ आज हो तिहने रे निव नय सुर व्यंतर यक्तथी जी ॥ ५ ॥ जे निव नांखे अखीक, बोले वावुं वी-क, आज हो टेकेरे सुविवेकें सुपदा ते सुख बरे जी ॥ ६ ॥ इति मृषावाद॥ ॥ अथ तृतीय अदत्त पापस्थानक सद्याय प्रारंनः ॥

॥ नींदरही वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ चोरी व्यसन निवारीयें, पाप स्थानक हो त्रीजुं कह्युं घोरके ॥ इहत्तव परत्तव इःख घणां, एह व्यसनें हो पामे जग चोरके ॥ चोण ॥ १ ॥ चोर ते प्राय दिश्शी हूये, चोरीधी हो घन न ठरे नेटके ॥ चोण ॥ १ ॥ जिम जलमांही नाखिड, तले आव हो जलने अयगोल के ॥ चोण ॥ १ ॥ जिम जलमांही नाखिड, तले आव हो जलने अयगोल के ॥ चोण ॥ १ ॥ जिम जलमांही नाखिड, तले आव हो जलने अयगोल के ॥ चोण ॥ १ ॥ नाठुं पड्युं बली वीसरधुं, रह्युं राख्युं हो थापण कर्युं जेहके ॥ नृण तुस मात्र न लीजीयें, अण दीधुं हो किहां कोइनुं तहके ॥ चोण ॥ ४ ॥ दूरें अनध सकल टले, मिले वाला हो सघले जश थाय के ॥ सुर सुखना हुये जेटलां, बत त्रीजुं हो आवे जस दायके ॥ चोण ॥ ॥ ५ ॥ त्यजी चोरपणुं देवता, होय निश्चय हो रोहिणीया जेमके ॥ ए बन्तधी जस सुख लहे, वली प्राणी हो वहे पुण्यसुं प्रेमके ॥चोण ॥ ६ ॥इति

॥ अय चतुर्घ अब्रह्मचर्य पापस्थानक सञ्चाय प्रारंजः ॥

11 तुमें बहु मित्री रे साहिवा ॥ ए देशी ॥ पापस्थानक चोथुं वर्जियं, इगित मूल अवंत्र ॥ जग सिव मूंज्यो हे एइमां, हांने ते इ अचंत्र ॥ १ ॥ पापण्॥ ए आंकणी ॥ रूडुं लागे रे ए धुरें, परिणामें अति कूर ॥ फल किंपाकने सारिखुं, वरजे सक्जन दूर ॥ पापण्॥ १ ॥ अधर विद्रुम स्मित फूलडां, कुचफल किंटन विशाल ॥ रामा देखी न राचियं, ए विषवेती र-साल ॥ पापण्॥ ३ ॥ अवलज्वलित अयपूतली, आलिंगन त्रालुं तंत ॥ नरक इआर नितंबिनी, जधन सेवन ए इरंत ॥ पापण्॥ ४ ॥ दावानल गुण वन त्रणों, कुलमशी कूर्चक एइ ॥ राजधानी मोह स्मयनी, पातक कानन मेह ॥ पापण्॥ ४ ॥ प्रजुतायें हरिसारिखों, रूपें मयण अवतार ॥ सीतायें रे रावण यथा, हंमो तुमें नरनार ॥ पापण्॥ ६ ॥ दशिशर रज मांहे रोलियां, रावण विवश अवंत्र ॥ रामें न्यायें रे आपणों, रोप्यो जग जय यंत्र ॥ पापण्॥ ६ ॥ पापण्॥ ६ ॥ पापण्॥ ६ ॥ वशिशर रज मांहे रोलियां, रावण विवश अवंत्र ॥ रामें न्यायें रे आपणों, रोप्यो जग जय यंत्र ॥ पापण्॥ ६ ॥ पापण्॥ ६ ॥ पाप्णा ज्ञा का व्याप्त ॥ अवह्यचारीनुं चिंतन्युं, किंदिय सफल निव याप ॥ पापण्॥ । ।।

मंत्र फले जग जसवधे, देव करे सामिक ॥ ब्रह्मचर्य धरे जे नरा, ते पामे नव निक् ॥ पापण ॥ ए॥ शेठ सुदर्शनने टली, शूली सिंहासन होय ॥ गुण गाये गगनें रे देवता, महिमा शीलनुं जोय ॥ पापण ॥ १ण॥ मूल चारित्रनुं ए जलुं, समिकत वृद्धि निदान ॥ शील सिल धरे जिके, तस हुये सुजस वलाण ॥ पापण ॥ ११ ॥ इति चतुर्थ अब्रह्मचर्य पापस्थानक्ण

॥ अथ पंचम परिश्रइ पापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ सुमित सदा दिलमां घरों ॥ ए देशी ॥ परिग्रह ममता परिहरों, परिग्रह दोषनुं मूल ॥ सल्णे ॥ परिग्रह जेह घरे घणों, तस तप जप प्रित्रह ॥ सण् ॥ १ ॥ पण् ॥ ए आंकणी ॥ निव पलटे मूल राशिषी, मार्गी किंदय न होय ॥ सण्॥ परिग्रह ग्रह हे अन्निनवों, सहने दीये इःख लोय ॥ सण् ॥ पण ॥ १ ॥ परिग्रह मद गरुअनणे, जव मांहि पडे जंत ॥ सण् ॥ यान पात्र जिम सार्यों ॥ जाराक्रांत अत्यंत ॥ सण्॥ पण ॥ ३ ॥ ज्ञान घ्यान हय गय वरे, तप जप श्रुत परतंत ॥ स० ॥ वरेंड सम प्रजुता लहें, सुनि पण परिग्रहवंत ॥ सण ॥ प० ॥ ४ ॥ परिग्रह गृहवर्शे लिंगिया, लेइ कुमित रज सील ॥ सण्॥ जिम तिम जग लवता फिरे, उनमच हुइ निश् दील ॥ सण ॥ पण ॥ ५ ॥ तृष्तो न जीव परिग्रहें, इंघणघी जिम आग ॥ सण ॥ तृष्ता दाह ते उपशमें, जलसम ज्ञान वराग ॥ सण्॥ सण्॥ पण ॥ इ॥ वृष्ता दाह ते उपशमें, जलसम ज्ञान वराग ॥ सण्॥ तिलकशें वर्ली घानकी, कनकें नंद सकर्ण ॥ सण्॥ पण ॥ ७ ॥ असंतुष्ट परिग्रहजन् घा, सुखीआ न इंद नरिंद ॥ सण्॥ सुखी एक अपरिग्रही, साधु सुजस समकंद ॥ सण्॥ पण ॥ पण ॥ पण ॥ पण ॥ पण ॥ सण ॥ सण्॥ पण ॥ स्वलं समकंद ॥ सण्॥ पण ॥ पण ॥ पण ॥ इति पंचम पापरथानकण्॥

॥ अय षष्ठ क्रोधपापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ ज्ञष्यत्रनो वंद्या रयणायह ॥ ए देशी ॥ क्रोध ते बोध निरोध हे, क्रोध घ ते संयम घाति रे ॥ क्रोध ते नरकनुं बारणुं, क्रोध छित पक्षपाति रे ॥ १ ॥ पापस्थानक छढुं परिहरो ॥ मन घरि छत्तम खंति रे ॥ क्रोध जुयं गनी जांगुली, एह कही जयवंती रे ॥ पाण ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पूरव कोडि चरण गुणें, जाव्यो हे आतम जेण रे ॥ क्रोध विवदा हुता देश ध-छी, हारे सिव फल तेण रे ॥ पाण ॥ ३ ॥ बाले आश्रम आपणों, जजना अन्यने दाहे रे ॥ क्रोध कुशानुसमान हे, टाले प्रदाम प्रवाहें रे ॥ पाण ॥

॥ ४॥ आक्रोश तर्जना घातना, धर्मश्रंशने नावे रे ॥ अग्रिम अग्रिम विरहणी, लाझ ते शुरू स्वझावेरे ॥ पाण ॥ ए ॥ म होय ने होय तो चिर नहीं, चिर रहे तो फल वेहों रे ॥ सज़न क्रोंघ ते एहवो, जेहवो जर जन महोरे ॥ पाण ॥ ६॥ क्रोधी मुखें कटु बोलणा, कंटिकिया कूट सा बिरे॥ अदिह कट्याण करा कहा, दोषतरू दात माबिरे॥ पाण ॥॥ कूरगडू चन तप कह्या, चरित सुणि लम आणो रे ॥ नपशम सार ने प्रवचन, मुज्ञ वचन ए प्रमाणो रे ॥ पाण ॥ छ ॥ इति षष्ठ पापस्थानक॥ ॥ अश्र सप्तम मान पापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ नदी यसुनाके तीर उमे दोय पंचियां ॥ ए देशी ॥ पापस्थानक क-हे सातमुं श्रीजिनराज ए, मान मानवने होय इस्ति शिरताज ए ॥ आठ शिखर गिरि राज तणां आडां वले, नावे विमला लोक तिहां किम तम टले ॥ १॥ प्रज्ञामद तपमद वली गोत्रमदे ज्ञाजी विका मदवंत न मुक्ति श्रंगी कला॥ क्योपशम अनुसारं जो एह गुण वहे, उघो मह करवो एहमां निर्मद मुख लहे ॥ २॥ उचनाव हढदे के मदण्वर आका-रो, होय तहना प्रतिकार कहे मुनिवर खरो ॥ पूर्व पुरुष सिंधुरधी लघुता नाववुं, गुड़ नावन ते पावन शिवसाधन नवुं ॥ ३॥ माने खोयुं राज्य संकानुं रावणं, नरनुं मान हरे हरी आवी ऐरावणें ॥ श्रुलिनइ श्रुतमद श्री पाम्या विकार ए, माने जीवने आवे नरक अधिकार ए ॥ ४॥ वि-नय श्रुत तप शील त्रिवर्ग हणे सवे, मान ते झाननों त्रंजक होय त्रवो त्रवे॥ लुंपक वेक विवेक नयणना मान वे, एहने वांने तास न इ:ख हे पर्छ ॥ ॥ माने बाहुबिब वरस लगे काउस्सग्ग रह्या, तिर्मेद चक्री सेवक दोय मुनि सम कहा ॥ सावधान त्यजी मान जे ध्यान धवल धरे, प्रमा सुजस रमा तम आलिंगन करे ॥ ६॥ इति सप्तम पापस्थानक ॥

॥ अथ अष्टम माया पापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥ ॥ स्वामी स्वयंप्रत्र सांजलो अरिहताजी ॥ ए देशी ॥ पापस्यानक अठ म कहुं, सुणो संता जी ॥ गंभो माया मूल, गुणवंता जी ॥ कष्ट करे व्रत जादरे || सु<sup>0</sup> || मायांचे ते प्रतिकृत || गु<sup>0</sup> || ? || नगन मास जपवा-सिया॥ सु०॥ सीघ लीये कुश श्रन्न ॥ गु०॥ गर्ने अनंता पामशे ॥ सु० ॥ जो वे माया मन्न ॥ गुण् ॥ १ ॥ केश लोच मल धारणा ॥ सुण् ॥ सू

मिशय्या वत याग ॥ गुण्॥ सुकर सकल वे साधुने ॥ सुण्॥ इष्कर मायात्याग ॥ गुण्॥ ३ ॥ नयन वचन आकारनुं ॥ सुण्॥ गोपन मायावंत
॥ गुण्॥ जेद करे असती परें ॥ सुण्॥ ते निह दितकर तंत ॥ गुण्॥
॥ ४ ॥ कुसुमपुरं घर शेवने ॥ सुण्॥ देवें रह्यो संविक्त ॥ गुण्॥ कपेरं त
स बीजो रह्यो ॥ सुण्॥ सुत्कल पण सुगुणक्त ॥ गुण्॥ ए॥ दंत्रि एक
निंदा करें ॥ सुण्॥ बीजो घरें गुण राग ॥ गुण्॥ पहेलाने त्रव इत्तर कहें
॥ सुण्॥ बीजाने कहें वली ताग ॥ गुण्॥ द ॥ विधि निषेध निव वपदिशे ॥ सुण्॥ एकांते त्रगवंत ॥ गुण्॥ कारणे निःकपटी द गुं॥ सुण्॥ ए
आणा वे तंत ॥ गुण्॥ ५ ॥ मायाधी अलगा टलो ॥ सुण्॥ जिम मलो
सुगित सुरंग ॥ गुण्॥ सुजस विलास सुखी रहो ॥ सुण्॥ लक्तण आवे

### ॥ अग्र नवम खोज पापस्थानक सञ्चाय पारंजः॥

॥ जीरे मारे जाग्यो कुमर जाम ॥ ए देशी ॥ जीरे मारे लोज ते देखि अयोज, पापस्थानक नवमुं कहुं ॥ जीरे जी ॥ जीण् ॥ सर्व विनाशनुं मूल, एइथी कोणें न सुख लहुं ॥ जीरे जी ॥ र ॥ जीण् ॥ सुणीयें वह लो जांध, चक्रवांचें इरिनी कथा ॥ जीरे जी ॥ जीण् ॥ पाम्या कटुक विपाक, पीवत रक्त जलो यथा ॥ जीण् ॥ श जीण् ॥ निर्धनने दात चाद, दात लहे सहस लोडिए ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ सहस लहे लख लोज, लख लोजें मनकोडियें ॥ जीण् ॥ ३ ॥ जीण् ॥ कोटीश्वर नुपरुद्धि, गृप चाहे चक्री-पणुं ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ यूल लघुपणे लोज वाथे, सर्व परे सही ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ मूल लघुपणे लोज वाथे, सर्व परे सही ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ मूल लघुपणे लोज वाथे, सर्व परे सही ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ स्वयं जुरमण समुद्द, कोइक अवगाही हाके ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ कोइक लोजने हेत, तप श्रुत हारे जे जडा ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ काग न्डावण हेत, सुरमणि नाखे ते खडा ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ लोण् ॥ लोण् ॥ लोण् ॥ लोण् ते तस संव संपत्ति किंकरी ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ सुणस सुपुण्य विलास, गांवे तस सुर सुंदरी ॥ जीण् ॥ जीण् ॥ इति नवम लोज पारस्थानक सञ्चाय ॥

#### ॥ अथ दशम राग पापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जाए रे ॥ ए देशी ॥ पापस्थानक दश-मुं कहुं राग रे, कुणहि न पाम्यो तेइनो ताग रे ॥ रागें वाह्या हरि इर वं जारे, राचे नाचे करेय अचंजा रे ॥ १ ॥ राग केसरी वे वड राजा रे, विष याजिलाष ते मंत्री ताजा रे ॥ जेइना ठोरु इंड्यि पंचो रे, तेइनो कीधो ए सकल प्रपंचो रे ॥ २ ॥ जेह सदागमवश हुइ जाशे रे, अप्रमत्तता शि-खरें वाहो रे ॥ चरण घरम तृप हाँ ब विवेकें रे, तिइशुं न चले रागि टेके रे ॥ ३ ॥ बीजा तो सिव रागें वाह्या रे, एकादश गुणवाणें नमाह्या रे ॥ रागें पाड्या ते नर खूता रे, नरय निगोद महा इःख जूता रे ॥ ४॥ रा-गहरण तप जप श्रुत जांख्या रे, तेइथी पण जिले जब फल चाख्यां रे ॥ तेइनो कोइ न वे प्रतिकारों रे, अमिय होय विष त्यां इयो चारों रे ॥ ५॥ तपबते बूटा तरणुं ताणी रे, कंचन कोडि आषाढन्न्रति नाणी रे ॥ नंदि-षेण पण रागें निहया रे, श्रुतनिधि पण वेद्रयावद्या पेहिया रे ॥ ६॥ वा-वोश जिनपण रहि घरवासे रे, वर्त्या पूर्वराग अन्यासे रे ॥ वज्जबंघ पण जस बल बूटे रे, नेह तंतुषी तेह न बूटे रे ॥ ७॥ देह जज्ञाटन अभिनुं दहवुं रे, घलकुट्टन ए सिव डःख सहवुं रे ॥ अति घणुं राति जे होय मजिह रे, रागतणो गुण एइज दिछ रे ॥ ए॥ राग न करजो कोइ नर को इशुं रे, निव रहेवाय तो करजो मुनिशुं रे ॥ मिण जिम फिण विषनो तिम तेही रे, रागनुं नेपज सुजदा सनेहो रे ॥ ए ॥ इति दशम पापस्थानक ॥

॥ अत्र एकादश देष पापस्थानक सद्याय प्रारंजः॥

॥ तालननी देशी ॥ देष न घरियं लालन, देष न घरियं ॥ देष तज्या थी लालन, शिव सुख वरियं ॥ ला० ॥ शि० ॥ पापस्थानक ए अग्यारमुं कूडुं, देष रहित चित्त होय सिव रूडुं ॥ ला० ॥ हो० ॥ १ ॥ चरण करण गुण बिन चित्रशाली, देष धूमें होय ते सिव काली ॥ ला० ॥ हो० ॥ ॥ १ ॥ दोष बंतालीश शुरू आहारी, धूम्रदोषं होय प्रबल विकारी ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वम्र विहारने तप जप किरिया, करतां देष ते ज्ञवमां हे फरिया ॥ ला० ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ योगनुं अंग अदेष वे पहिलुं, साधन सिव लहे तहणी वहेलुं ॥ ला० ॥ त० ॥ ५ ॥ विग्रण ते गुणवंत न जाणे, गुणवंत ते गुण देषमां ताणे ॥ ला० ॥ दे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणवंत ते गुण देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणवंत ते गुण देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणवंत ते गुण देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुण देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणा देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणा देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणा देषमां ताणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणा हेणां तो गुणा हेणां तो गुणां होणां लाणे ॥ ला० ॥ हे० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणां होणां लाणां ॥ ला० ॥ हो० ॥ ६ ॥ आप गुणीने वली गुन्यां तो गुणां होणां ॥ ला० ॥ हो० ॥ होणां ॥

ण रागी, जग मांहे तेहनी कीरति जागी ॥ वाण ॥ कीण ॥ छ ॥ राग घ रीजे जिहां गुण विह्यें, निर्गुण ऊपरे समिचत्त रहियें ॥ वाण ॥ सण ॥ ॥ ए ॥ जविधिति चिंतन सुजश्विवासें, जनमना गुण एम प्रकाशे ॥ वाण ॥ एण ॥ ए॥ इति अग्यारमा देष पापस्थानक सञ्चाय समाप्त ॥

।। अथ इादश कलइ पापस्थानक सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ किसके चें किसके पूतण ॥ ए देशी ॥ कलह ते वारमुं पापनुं स्या न, इरगित वननुं मूल निहान ॥ साजन सांजलो ॥ महोटो रोग कलह काच कामलो ॥ ए आंकणी ॥ दंत कलह जे घर मांहे होय, लही निवास्त तिहां निव जोय ॥ साण ॥ १ ॥ ह्युं सुंदरी तुं न करे सार, न करे नापे कांइ गमार ॥ साण ॥ कोधमुखी तुं तुजने धिकार, तुजधी अधिको कुण कितकार ॥ साण ॥ १ ॥ साहामुं वोले पापणी निज, पापी तुजपिता जुन्न चित्त ॥ साण ॥ १ ॥ साहामुं वोले पापणी निज, पापी तुजपिता जुन्न चित्त ॥ साण ॥ दंत कलह इम जहने थाय, ते दंपितने सुख कुण गय ॥ साण ॥ ३ ॥ कांटे कांटे थायें वाहि, बोलें बोलें वाथे राहि ॥ साण ॥ जा-णी मौन धरे गुणवंत, ते सुख पामे अतुल अनंत ॥ साण ॥ ध ॥ निर्ने कलहण कोहण शील, जंनण शीलविवाद सलील ॥ साण ॥ चित्त नताण धरे जे एम, संयम करे निरर्थक तेम ॥ साण ॥ ए ॥ कलह करीने खमावे जेह, लघु गुरु आराधक होय तेह ॥ साण ॥ कलह समावे ते धन्य धन्न, नपशम सार कहियो सामन्न ॥ साण ॥ ह ॥ नारद नारी निर्द्य चित्त, कन् लह नदीरे त्रएये कित्य ॥ साण ॥ सज्जन सुजस सुशील महंत, वारे कलह स्वजावें संत ॥ साण ॥ ९ ॥ इति कलह नामक हादश पापस्थानक ॥

॥ अथ अन्याख्यान नामे तेरमा पापस्थानकनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरो ॥ ए देशी ॥ पापस्थानक ते तेरमुं गंभीयें, अन्याल्यान इरंतो जी ॥ अग्रतां आल जे परनां गचरे, इःख पामे ते अनंतो जी ॥ १ ॥ धन धन ते नर जे जिनमत धरे ॥ ए आंक-णी ॥ अग्रते दोषें रे अन्याल्यान जे, करे न पूरे गणो जो ॥ ते ते दोषें रे तेहने दूषीयें, इम नांखे जिन नाणो जी ॥ धनण॥ १ ॥ जे बहु मुखरी रे वली मत्सरन्त्रा, अन्याल्यानी ते होय जी ॥ पातक लागे रे अण्या की धां सही, ते कीधुं सिव खोय जी ॥ धनण॥ ३ ॥ मिण्यामितनी रे दश संज्ञा जिके, अन्याल्यानना नेदो जी ॥ गुण अवगुणनो रे जे करे पा

खटो, ते पामे बहु खेदो जी ॥ घन० ॥ ४ ॥ परने दोष न अठता दीजीयें, पीजीयें जो जिन वाणी जी ॥ उपशम रससुं रे चित्तमां नींजीयें, कीजी-यें सुजस कमाणी जी ॥ घन० ॥ ए ॥ इति तरमा पापस्थानक स० ॥

॥ अय चौदमा पैशुन्य पापस्यानकनी सञ्चाय प्रारंतः॥
॥ शिरोहीनो शालुहो के उपर योघपुरी ॥ ए देशी ॥ पापस्यानक हो के चौदमुं आकरं, पैशुन्यपणानुं होके व्यसन के अति बुरं ॥ अशन मान्त्रनो होक गुनक कतक के, तेहची जूंको होके पिशुन लवे पर्वे ॥ १ ॥ ब हु उपकरियं होके पिशुनने परं परं, कलहनो दाता होके होय ते ऊपरं ॥ दूधें घोयो होके वायस उजलो, किम होय प्रकृते होके जे के शामलो ॥ इ ॥ तिल्वह तिल्वण होके नेह के त्यां लगें, नेह पिण्ठे होके खल कहि ये जों ॥ इम निःस्नेही होके निरद्य त्हदयशी, पिशुननी वार्चा होके न वि जाये कथी ॥ ३ ॥ चाडी करतां होके वाि गुणतणी, सके चूके हो के ख्याति पुण्यतणी ॥ कोइ निव देखे होके वदन ते पिशुनतणुं, निर्मल कुलने होके दीये ते कलंक घणुं ॥ ४ ॥ जिम सज्जन गुण होके पिशुनने दिष्यें, तिम तिणे सहेजें होके त्रिजुवन जूषियं॥जरमें मांज्यो होके दर्पण होय जलो, सुजस सवाइ होके सज्जन सुकुल तिले। ॥ ए ॥ इति समाप्त॥

॥ अय पंदरमा रित अरित नामं पापस्थानकनी सञ्चाय ॥
॥ प्रथम गोवाला तणे ज्रवेंजी ॥ ए देशी ॥ जिहां रित कोइक कारणे जी, अरित तिहां पण होय ॥ पापस्थानक ते पनरसुं जी, तेणे ए एकज जोय ॥ ? ॥ सुगुण नर समजो चितमजार ॥ ए आंकणी ॥ चिन तो अरित रित पाखशुं जी, नहें पंखी रे चिन ॥ पिंजर शुइ समाधिमें जी, हं ध्यो रहे ते मिन ॥ सुण ॥ १ ॥ मन पारद नहें नहीं जी, पामि अरित रित आग ॥ तो हुये सिद्धि कष्ट्याणनी जी, जावन जाये जाग ॥ सुण ॥ शुण ॥ शुण ॥ शुण तत विवेक आवे नहीं जी, होये न इःखनो नहीं जी, जुतारथ होय जेह ॥ तस विवेक आवे नहीं जी, होये न इःखनो नहीं जी, जुतारथ होय जेह ॥ तस विवेक आवे नहीं जी, होये न इःखनो नहीं निह्म सुण ॥ शुण ॥ शुण न रित अरित निह्म कांही ॥ सुण ॥ धुण ॥ शुण न हों सित्य पर्याय ॥ नहीं तो वेची वस्तुमा जी, किम ते सिव मिट जाय ॥ सुण ॥ ६ ॥ जेह अरित रित निव गणे जी, सुख इःख दोय समान ॥ ते पामे जस संपदा जी, वाचे जग

तस वान ॥ सु॰ ॥ उ ॥ इति पंदर्रमां पापस्थानकनी सञ्चाय समाप्त ॥ ॥ अथ शोखमा परपरिवाद पापस्थानकनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

साहेब बाहु जिनेसर विनवुं ॥ ए देशी ॥ सुंदर पापस्थानक तजो शो-लमुं, पर निंदा असराल हो ।। सुंदर निंदक जे मुखरी हुवे, ते चोथो चं-माल हो ॥ सुंग ॥ १ ॥ सुंदर जेहनें निंदानो ढाल हे, तप किरिया तस फोक हो ॥ सुंदर देव किब्बिस ते ऊपजे, ए फल रोकारोक हो ॥ सुंग् ॥ ॥ १॥ सुंदर क्रोध अजीरण तपतणुं, ज्ञानतणो अहंकार हो ॥ सुंदर परिनंदा किरिया तणो, वमन अजीरण आहार हो ॥ सुंग्॥ ३॥ सुंदर निंदानों जेह स्वजाव है, तास कथन निव नंद हो ॥ सुंदर नाम धरी जे निंदा करे, तेइ महामित मंद हो ॥ सुंण ॥ ध ॥ सुंदर रूप न कोई घारियें, दाखीयें निज निज रंग हो ॥ सुंदर तेहमां कांइ निंदा नहीं, बोले बीजुं ग्रंग हो ॥ सुंग ॥ ५। सुंदर एह कुशीलणी इम कहे, कोप हुन जेइ जांखे हो । सुंदर तेइ वचन निंदा तणुं, दश वैकाखिक साखें हो ॥ सुंग ॥ ह ॥ सुंदर दोष नजरबी निंदा हुवे, गुण नजरें हुए राग हो ॥ सुंदर जग सिव चाले मादल मह्यो, सर्व गुणी वीतराग हो ॥ सुंण ॥ ७ ॥ सुंदर निजमुख कनक कचोलडे, निंदक पर मल लेश हो ॥ सुंदर जेंद्र घणा परगुण यदे, संत ते विखा कोइ हो ॥ सुंण॥ ण॥ सुंदर पर परिवाद व्यसन तजो, म करो निज इत्कर्ष हो ॥ सुंदर पाप करम इम सवि टले, पामे शुन्न जस हर्ष हो ॥ सुंण ॥ ए ॥ इति शोखमा पापस्याण

॥ अय सत्तरमा माया मोस नामें पापस्यानकनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ सखी चैतरज महीनें चाल्या ॥ ए देशी ॥ सत्तरमुं पापनुं गम, परिहरजो सदगुण घाम, जिम वाघे जगमां माम हो लाल ॥ १ ॥ माया
मोस निव कीजीयें ॥ ए श्रांकणी ॥ एतो विषनें वलीय वघारघुं, एतो श
स्त्रेनें श्रवलुं ाधरघुं, एतो वाघनुं बाल वकारघुं हो लाल ॥ माण ॥ २ ॥ ए
तो मायीने मोसावाइ, धइ महोटा करेय गगाइ, तस हेठें गइ चनुराइ हो
लाल ॥ माण ॥ ३ ॥ बमला परें पगलां जरतां, धोडुं बोले जाणे मरतां,
जग धंधें घाले फिरता हो लाल ॥ माण ॥ ध ॥ जे कपटी बोले जूढुं, तस
लागे पाप श्रपूठुं, पंक्तिमां होये मुख जूठुं हो लाल ॥ माण ॥ ५ ॥ दंजी
नं जूठुं मीठुं, ते नारी चिरंत्रें दीठुं, पण ते वे द्वर्गति चीठुं हो लाल ॥

माण ।। ६ ।। जे जूठो ये उपदेश, जन रंजननें धरे वेश, तेहनो जूठो सकल कलेश हो लाल ॥ माण ॥ ७ ।। तेणें त्रीजो मारग जांख्यो, वेशनिंद इंन्त्रें राख्यो, शुद्ध जापक शम सुख चाख्यो हो लाल ॥ माण ॥ ण ॥ जूठुं वोली उदर जे जरवुं, कपटीने वेशें फरवुं, ते जमवारें शुं करवुं हो लाल ॥ माण ॥ ए ॥ पंनें जाणे तो पण दंजे, माया मोसने अधिक अचंजें, समिक तदृष्टि मन अंजे हो लाल ॥ माण ॥ १ण ॥ श्रुत मर्यादा निर्धारी, रह्या माया मोस निवारी, शुद्ध जाषकनी बितहारी हो लाल ॥ माण ॥ ११ ॥ जे मायायें जूठ न बोले, जग नहीं कोइ तहनें तोलें, ते राजे सुजस अमो लें हो लाल ॥ १० ॥ इति सत्तरमा पापस्थानकनी सञ्चाय संपूर्ण ॥

॥ अथ अहारमा मिण्यात्व पापस्थानकनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ जत्सर्षिणी अवसर्षिणी आरा ॥ ए देशी ॥ अढारमुं जे पापनुं या नक, ते मिछ्यात्व परिइरियें जी ॥ सत्तरथी पण ते एक जारी, इोये तुला यें जो घरियें जी।। कष्ट करो परें परें दमो अप्पा, धर्म अर्थें धन खरचो जी ।। पण मिण्यात्व इते ते जूवुं, तिणे तेइथी तुमे विरचो जी ॥ ? ॥ किरिया करतो त्यजतो परिजन, इःख सहतो मन रीजें जी ॥ ग्रंध न जीपे परनी सेना, तिम मिण्यादृष्टि न सीजे जी ॥ वीरसेन शूरसेन दृष्टांतें, समिकत नी निर्युक्तें जी ॥ जोइने जलीपरें मन जावो, एइ अरथ वर युक्तें जी।।श। धन्मे अवन्म अधन्मे धन्मह, सन्ना मग्ग नमग्गा जी ॥ नन्मार्गे मारगनी सन्ना, साधु असाधु संवग्गा जी ॥ असाधुमां साधुनी मित, जीवें अजीव अजिय जिय वेदो जी ॥ मुनें अमुत्ति अमुनें मुनिह, सन्नाए दश नेदो जी ॥ ३॥ अनिप्रहिक निज निज मते अनिप्रह, अनिन्यहिक सहु सरिखा जी ॥ अजिनिवेशि जाणती कहे जूठुं, करे न तत्त्व परिस्का जी ॥ संशय ते जिन वचननी शंका, अव्यक्तें अनाजींगा जी ॥ ए पण पांच जेद वे विश्वत, जाणे समजु लोगा जी ॥ ४ ॥ लोक लोकोत्तर जोद ए षट्विष, देव धर्म वली गुरु पर्व जी ।। शक्तें तिहां लोकिक त्रण आदर, करतां प्रथम निगर्व जी ॥ लोकोत्तर देवःमाने नीयाणें, गुरु जे लक्तणहीना जी ॥ पर्वनिष्ट इह लोकनें कार्जे, माने गुरुपद लीना जी ॥ ए॥ एम एकवीश मिष्यात्व त्य-जे जे, ज्ञजे चरण गुरुकेरां जी।। सजे न पांपे रजें न राखे, मत्सर दोह अनेरा जी ॥ समकितधारी श्रुत आचारी, तेइनी जग बिखहारी जी॥

इासन समिकतंनं श्राराघे, तहनी करो मनोहारी जी ॥ ६ ॥ मिण्यात्व ते जग परम रोग हे, वलीय महा श्रंघकारो जी॥ परम रात्रुने परम रास्त्र ते, परम नरक संचारों जो ॥ परम बोहगने परम दिर्ह ते, परम संकट ते क हिंथें जी ॥ परम कंतार परम डार्जिक ते, ते हांमें सुख लहिंथें जी ॥ ७ ॥ जे मिण्यात्व लवलेश न राखे, शुद्धों मारग जांखे जी ॥ ते समिकत सुरत रु फल चाखे, रहे बली श्रणीयें श्राखे जी ॥ महोटाइ शी होय गुण पाखें, गुण प्रजु समिकत दाखे जी ॥ श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, वाचकज स इम जाखे जी ॥ ६ ॥ इति श्रहार पापस्कानक सञ्चाय समाप्त ॥

## ॥ श्रय निंदावारक सद्याय ॥

| निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोख्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वांधे घणो रे, निंदा करतो न गणे माय बाप रे ॥ निंप ॥ १ ॥ दूर वलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सह कोय रे ॥ परना मलमां घोयां लुगडां रे, कहो कम कजलां होय रे ॥ निंप ॥ ३ ॥ आप संज्ञालो सहको आपणो रे, निंदानी मूको पड़ी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सह जस्वा रे, केइनां निलीयां चुंए केइनां नेव रे ॥ निंप ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सह जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम बुटकबारो थाय रे ॥ निंप ॥ ४ ॥ गुण प्रह जो सहको तणा रे, जेइमां देखो एक विचार रे ॥ कष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निंप ॥ ५ ॥ इति निंदावारक सञ्चाय ॥

॥ अथ श्री नेमराजुबनी सञ्चाय ॥ ॥ नदी जमुनांके तीर, जडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

। पियुजी पियुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां ।। पियुजी चाल्या परदेश तपे मोरी इतिथां ॥ पग पग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर वि-होयां मीन, के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ लुंहर अंदिर सेज, साहिब विण न-वि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम, तिहां मार्ड मन जमे ॥ जो दोवे सज्जन दूर, तोदी पासे बसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन इल्लेसे ॥ १ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ वाहाला माणसनो विजोग, म होजो केहनें ॥ साले रे साल स मान, इइश्रामां तहने ॥ ३॥ विरह व्यथानी पीड, जोवन वय श्रित दे हे ॥ जेनो पीय परदेश, ते माणस इःख सहे ॥ जुरी जुरी पंजर कीय, काया कमलज जिसी ॥ इजिश्र न श्राव्यों नेम, मिल न नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहशुं राग, टाल्यों ते निव टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ श्रांबाकेरो स्वाद, लिंबू ते निव करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते लिंह्यर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, घतूरे किम रमे ॥ जेह ने घृतशुं प्रेम ते, तेलं किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, श्रवरनें शुं करे ॥ नव जोवन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥ ह ॥ राजुल रूपनिधान, पोहोती सहसावनें ॥ जइ वांद्या प्रजु नेम, संजम लेइ एकमनें ॥ पा म्यां केवलज्ञान, पोती मननी रली ॥ रूपविजय प्रजु नेम, नेटे श्राञ्चा पत्नी ॥ ७ ॥ इति नेमराजुलनी सञ्चाय ॥

॥ ग्रंथ बलिन्द्मुनिनी सञ्चाय ॥

|| ज्ञा माटे बंबव मुखबी न बोलो, आंशुंडें आनन घोतां मोरारी रे ||
पुएपजोगें दिहियों एकपाणी, जड्यों वे जंगल जोतां मोरारी रे || ज्ञाण ||
।। १ || ए आंकणी || त्रीकम रीं ज्ञा चंढी वे तुजने, वनमांहे वनमां मो
रारी रे || वहीरे वारनुं मनावुं वुं वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली
मोरारी रे || ज्ञाण || १ || नगरी रे दाधीने शुंड न लाधी, महारी वाणी
निञ्जुण वाला मोरारी रे || आ वेलामां लीघो अबोलो, कानजी कां अया
काला मोरारी रे || ज्ञाण || ३ || ज्ञी ज्ञी वात कहुं ज्ञामलीया, वीवलजी
आ वेला मोरारी रे || ज्ञाण || ३ || ज्ञी ज्ञी वात कहुं ज्ञामलीया, वीवलजी
आ वेला मोरारी रे || आर्ता कार्जे मुजने संतापे, हिर हसी बोलोने हेला
मोरारी रे || ज्ञाण || ४ || प्राण माहारा जासे पाणी विण, अध्यद्धीने अएबोलं मोरारी रे || आरित सच्छी जाये अलगी, बांधवजो तुं बोले मोरा
री रे || ज्ञाण || ५ || षटमास लगें पाल्यो व्यीलो, हैया वपर अति हिते
मोरारी रे || सिंधु तटें सुरने संकेते, हिर दहन करम शुजरीतें मोरारी रे ||
ज्ञाण || ६ || संयम लइ गयो सुरलोकें, किव वदयरतन इम बोले मोरारी
रे || संसारमांहे बलदेव मुनिने, कोइ न आंवे तोले मोरारी रे || ज्ञाण || ७

॥ जूट्यो मन जमरा तुं क्यां जम्यो, जमियो दिवसने रात ॥ मायानो बांध्यो प्राणियो, जमे परिमलजात ॥ जूट्यो ॥ १॥ कुंज काचो रे

काया कारमी, तेइनो करो रे जतन ॥ विषासंतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो रे मन ॥ जूडयो० ॥ २ ॥ केइनां ठोरू केइनां वाडरू, केइनां मायने वाप ॥ प्राणी रे जावुं वे एकवुं, साथें पुण्यने पाप ॥ जू० ॥ ३॥ आज्ञा तो मुंगर जेवडी, मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कांइ करें।, करो दैवनी चेठ ॥ जूण ॥ ध ॥ धंधो करी धन जोडियुं, लाखां जपर कोड ॥ मरणनी वेखा मानवी, खीयो कंदोरो बोड 11 जूण ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माहरुं, धोंखें धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जर पोढवुं, ल-खपित लाकडांमांच ॥ जूण॥ ६॥ जनसागर इःखजल जस्बो, तरवो हे रे तेह ॥ विचमां जय सबलो थयो, कर्म वायरोने मेह ॥ जूण ॥ उ ॥ लख पित अत्रपति सब गया, गया खाख बे लाख ॥ गर्व करी गोखें बेसता, स-र्व थया बली राख ॥ चूण ॥ छ ॥ धमरा धूखंती रे रहि गइ, बुज गइ लाल श्रंगार ॥ एरणको ठबको मखो, उठ चड्यो रे बोहार ॥ ऋण॥ ए॥ ऊवट मारग चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥ आगल हाट न वाणीयाँ, संबल लेजो रे सार ॥ जूण ॥ १ण ॥ परदेशी परदेशमें, कुण हुं करो रे सनेइ ॥ आया कागल उठ चंख्या, न गरो आंधीने मेह ॥ जूण ॥ ११ ॥ केइ चाख्या रे के इ चालहो, केइ चालणहार ॥ केइ बेठा रे बुढा वापडा, जाये नरक मजार ॥ जूण ॥ १२ ॥ जिए घर नोबत वाजती, याता बत्रोक्षे राग ॥ खंडेर यह खाली पड्यां, बेंठण खागा हे काग ॥ जू० ॥ १३ ॥ जमरो आव्यो रे कम-लमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वोंग्रायें मांहे रह्यो, जिम आधमते सूर ॥ जूण ॥ १४॥ सहगुरु कहे वस्तु वोस्यिं, जे कोइ आवे रे साथ ॥ श्रापणो लोज नगारीयें, लेखुं साहिब हाथ ॥ जू॰ ॥ १५ ॥

॥ अय श्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत आवदृष्टिनी सञ्चाय प्रारंतः॥ ॥ श्री श्वायुक्त प्राप्तुक्त अवदृष्टिनी रे॥ ते गुण्युक्षी जिन्नीरनो, करसुं धर्मनी पुछी रे॥ वीर्रिजनेसर देशना ॥ १॥ सधन अधन दिन्रयिक्षमां, बाव विकलने अनेरा रे॥ अरथ जोये जेम जुजूआ, तेम अवन्य प्राप्ता फेरा रे॥ बी॰॥ १॥ दर्शन जे थयां जूजूआं, ते उधनजरने फेरे रे॥ जोद विरादिक दृष्टिमां, समकेतदृष्टिने हेरं रे ॥ वी॰॥ ३॥ दर्शन सकलना नय अहे, आप रहे निजन्नावें रे ॥ दित करी जनने संजी

वनी, चारो तेइ चरावे रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ दृष्टि थिरादिक चारमां, सुगति प्र याण न जाजे रे ॥ रयणि सयन ज़ेम श्रमहरे, सुरनर सुख तेम ठाजे रे II वी<sup>0</sup> II ए II एइ प्रसंगयी में कहुं, प्रथमदृष्टि हवे कि हैं रें II जिहां मित्रा तिहां बोधजे, ते तृण अगिन सो लिइयें रे ॥ वीण ॥ ६॥ व्रतपण यम इहां संपजे, खेद नहीं शुजकाजें रे ॥ देव नहीं वली अवरसुं, एद गु ण अंग विराजे रे ॥ वीण ॥ उ ॥ योगनां बीज इहां प्रहे, जिनवर शुद्ध प्र णामो रे ॥ जावाचारज सेवना, जवज्रह्म सुग्रामो रे ॥ वीण ॥ छ ॥ इस्र श्रनियह पालवा, जेवधप्रमुखने दाने रे ॥ आदर श्रागम श्रासरी, लिख नादिक वहु मानें रे ॥ वी० ॥ ए ॥ लेखन पूजन आपवुं, श्रुतवाचना उद प्राहों रे ॥ जाविवस्तार सञ्चायथी, चिंतन जावन चाहो रे ॥ वीण ॥१ण॥ बीजकथा जली सांजली, रोमांचित हुइ देह रे ॥ एह अवंचक योगधी, तिहियें घरमसनेह रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ सदगुरु योगें वंदनक्रिया, तेहथी फल होये जेहरे रे ॥ योगक्रिया फल जेदथी, जिविध अवंचक एहो रे ॥ वीण।। ११।। चाहे चकोर ते चंदने, मधुकर मालती जोगी रे ॥ तेम जवि सइज गुणें होये, उत्तमनिमित्त संयोगी रे ॥ वीण॥ १३ ॥ एइ अवंचकयो ग ते, प्रगटे चरमावर्तें रे ॥ साधुनें सिद्धशासमा, बीजनुं चित्त प्रवर्ते रे ॥ वीण ।। १४ ।। करण अपूर्वना निकटथी, जे पहें सुं गुणगणुं रे ॥ मुख्यपणे ते इहां होये, सुयश्विलासनुं टाणुं रे ॥ वी॰ ॥ १५ ॥

॥ हाल बीजी ॥ मन मोइन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ दर्शन तारादृष्टिमां, मनमोहन मेरे ॥ गोमय अगिन समान ॥ मृण् ॥ शौचसंतोषने तप जातो ॥ मण् ॥ सञ्चाय ईश्वरध्यान ॥ मण् ॥ १ ॥ नियमपंच इहां संपजे ॥ मण् ॥ नहीं किरिया उद्देग ॥ मण् ॥ जिङ्गासा गुण्यात्त्वनी ॥ मण् ॥ पण नहीं निजहउदेग ॥ मण् ॥ श ॥ ए हष्टें होय वर्रततां ॥ मण् ॥ योगकथा बहुप्रेम ॥ मण् ॥ अनुचित तह न आचरे ॥ मण् ॥ वाढ्यो वले जेम हेम ॥ मण् ॥ अनुचित तह न आचरे ॥ मण् ॥ वाढ्यो वले जेम हेम ॥ मण् ॥ श ॥ विनय अधिक गुणीनो करे ॥ मण् ॥ देखे निजगुण हाण ॥ मण्॥ त्रास घरे जवज्ञयथकी ॥ मण् ॥ ज्ञाच माने खुखखाण ॥ मण् ॥ ४ ॥ शास्त्र घणां मति थोडली ॥ मण् ॥ श्वाच ए कहे ते अमाण ॥ मण् ॥ सुयश्च लहे ए जावधी ॥ मण् ॥ न करे जूज इफाण ॥ मण् ॥ ॥ ॥

॥ हाल त्रीजी प्रथम गोवाला तले जवंजी रे ॥ ए देशी ॥ ॥ त्रीजी हिए बला कहीजी, काष्ट्र अगनीसम बोध ॥ केप नही आस्त संघेजी, श्रवणसमीहा सोध रे ॥ जिनजी ॥ धन धन तुऊ उपदेश ॥ १ ॥ तहलसुखी स्त्री परिवस्त्रोजी, जेम चाहे सुरगीत ॥ सांजलवा तम त त्वनेजी, ए हिए सुविनीत रे ॥ जिनजी ॥ धनण ॥ १ ॥ सिर ए बोधप्रवाहनीजी, ए विण श्रुत शलकूप ॥ श्रवणसमीहा ते किसीजी, शिंत सुले जेम जूप रे ॥ जिण ॥ धण ॥ ३ ॥ मन रीजे तनु छल्लसेजी, रीजे बुजे ए कतान ॥ ते इन्नाविणुं गुणकथाजी, बहिरा आगल गान रे ॥ जिण ॥ धण ॥ ४ ॥ विधन इहां प्रायं नहीजी, धमहितुमां कोय ॥ अनाचार परिहारशी जी, सुयश महोदय होय रे ॥ जिण ॥ धनण ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जांजरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ योगदृष्टि चोधी कहीजी, दीप्ता तिहां न ज्यान ॥ प्राणायाम ते जा-वधीजी, दीपप्रजासम ज्ञान ॥ मनमोहन जिन्जी, मीठी ताहरो वाण ॥ १ ॥ बाह्यनाव रेचक इहांजी, पूरक ग्रंतरनाव ॥ कुंन्नक श्रिरतागुणें करी जी, प्राणायाम स्वनाव ॥ मण ॥ २ ॥ धर्मश्ररये इइां प्राणनेजी, ढांने प-ण नहीं धर्म ॥ प्राण अरथें संकट पहेंजी, जूड ए दृष्टिनो मर्म ॥ मणा३॥ तत्वश्रवण मधुरोद्केंजी, इहा होए बीजप्ररोह ॥ खार उदकसम जब त्य-जेजी, गुरुनगंति अड़ोइ ॥ मण्॥ ध ॥ सूहमबोघ तोपण इहांजी, सुम्-केत विण निव होय ॥ वेद्य संवेद्यपदं किह्नजी, तेन अवेद्यं जोय ॥ मण् ॥ ए॥ वेद्यबंध शिवहेतु वेजी, संवेदन तस नाण ॥ नयनिकोपं अति न-खुंजी, वेद्यसंवेद्य प्रमाण ॥ मण्॥ ६ ॥ तेपद यंशिविज्ञेदयी जी, बेह्सी पा पप्रवृत्ति ॥ तप्तवोह पद्धृति समीजी, तिहां होय अंतिनवृत्ति ॥ मण्॥ ॥ एइथकी विपरीत हेजी, पर ते अवेद्य संवेद्य ॥ जवअजिनंदी जीवनेजी, ते होय वज अनेच ॥ मण॥ ण॥ वोन्नी कृपण द्यामणोजी, मायी म-हरगण ॥ जब अजिनंदी जय जस्बोजी, अफल आरंज अयाण ॥ म<sup>0</sup> ॥ ए॥ एइवा अवगुणवंतनुंजी, पद हे अवेद्यकहोर ॥ साधुसंग आगम तणुंजी, ते जीते धरि जोर ॥ मण्॥ १०॥ ते जीतें सहजें टबेजी, विष-म कुतर्कप्रकार ॥ दूर निकटहाधी ह्रेणेजी, जेम ए बगरविचार ॥ मण्॥ ॥ ११ ॥ हुं पाम्यो संशय नदीजी, मूरख करे ए विचार ॥ आलसुआ गु

रु शिष्यनोजी, ते तो वचनप्रकार ॥ मण्॥ १२ ॥ इीजें ते पति आववुं जी, अापमतें अनुमान ॥ आगमने अनुमानधीजी, साचुं तहे सुज्ञान ॥ मण्॥ १३॥ नहीं सर्वज्ञते जूजूआजी, तेइना जे वली दास ॥ न्नगति देवनी पण कहीजी, चित्र अचित्र प्रकाश ॥ मण ॥ १४ ॥ देव संसारी अ नेक वेजी, तेइनी जिक्ति विचित्र ॥ एक राग पर देषजी, एक मुगतिनी अ चित्र ॥ मण् ॥ १५ ॥ इंडियार्थगत बुद्धि के जी, ज्ञान के आगमहैत ॥ अ संमोइ शुन्नकृति गुरोजी, तेर्षे फलनेद संकेत ॥ मण॥ १६॥ आदर कि रिया रित घणीजी, विघन टले मिले लिख ।। जिज्ञासा बुधसेवनाजी, शु जकति चिन्ह प्रत्यि ॥ मण्॥ १७ ॥ बुिक क्रिया जवफल दीयेजी, ज्ञान क्रिया शिवश्रंग ॥ असंमोइ किरिया दियेजी, शीघ्र मुगतिफल चंग ॥ मण ॥ १० ॥ पुत्रल रचना कारमीजी, तिदां जस चित्त न लीन ॥ एक मार्ग ते शीवतणोजी, जेद लहे जग दीन ॥ मण ॥ १ए ॥ शिष्य जणी जिनदेश नाजी, कइ जन परिणति जिन्न ॥ कइ मुनिनी नयदेशनाजी, परसार्थयी अजिन्न ॥ मण ॥ २० ॥ शब्दजेद ऊगडों किस्योजी, परमार्थ जो एक ॥ कहो गंगा कहो सुरनदीजी, वस्तु फिरे नही छेक ॥ मण॥ ११ ॥ धर्म क्रमादिक पण मिटेजी, प्रगटे धर्मसंन्यास ॥ तो ऊगमा ऊांटा तणोजी, मुनीने कवण अप्रयास ॥ मण ॥ २१॥ अजिनिवेश सघतो त्यजीजी, चार लही जेणे हिष्णा ते लेसे इवे पांचमीजी, सुयश असृत घनवृष्टि ॥मण। १३॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धन धन संप्रति साची राजा ए ॥ देशी ॥

॥ दृष्टि थिरामांहे दर्शन नित्यं, रतनप्रजासम जाणो रे ॥ ज्ञांति नहीं वली बोध ते स्क्रम, प्रत्याहार वखाणो रे ॥ १ ॥ ए गुण वीरतणो न वी सारूं, संज्ञारूं दिनरात रे ॥ पशु टाली सुरूप करे जे, समकेतने अवदा त रे ॥ ए गुणण ॥ १ ॥ बालधुलि घरलीला सरिखी, ज्ञवचेष्टा इहां जासे रे ॥ रिव्विवि घटमां सिव प्रगटे, अष्ट महासिवि पासे रे ॥ ए गुणणा ३ ॥ विषयविकारं न इंडिय जोने, ते इहां प्रत्याहारो रे ॥ केवलज्योति ते त त्व प्रकाशो, शेष छपाय असारो रे ॥ ए गुणण ॥ ४ ॥ शीतल चंदनथी पण छपनो, अगनी दहें जेम वनने रे ॥ ए गुणण ॥ ५ ॥ अंशे होय इहां जिम, लागे अनिष्ठ ते मनने रे ॥ ए गुणण ॥ ५ ॥ अंशे होय इहां अवि

नारी, पुजल जाल तमासी रे ॥ चिदानंद्यन सुयश्विलासी, केम होय जगनी आसी रे ॥ ए ग्रणण ॥ ६॥

॥ ढाल वही ॥ जोलीडा इंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

।। अचपस रोगरदित निष्ठुर नहीं, अख्य होय दोय नीति ॥ गंध ते सारो रे कांति प्रसन्नता, सुस्वर प्रथम प्रवृत्ति ॥ १॥ घनधन शासन श्री जिनवरतणुं ॥ ए आंकणी ॥ धीर प्रजावी रे आगर्ते योगधी, मित्रादिक युतचित ॥ खान इष्टनो रे इंइ अधृष्यता, जनप्रियता होय नित्य ॥ ध॰ ॥ १॥ नाइ। दोषनो रे तृषति परम बलें, समता उचित संयोग ॥ नाइ। वयरनो रे बुद्धि संतंज्ञरा, ए निष्पन्नह योग ॥ घण॥ ३॥ चिन्हयोगना रे जे परमंत्रमां, योगाचारय दिह ॥ पंचमदृष्टिश्वकी ते जोडीयें, एइवा तेइ तत्वमीमांसा रे हढ होये घारणा, नही अन्य श्रुतवाज्ञ ॥ घण्॥ ५॥ म-न महिलानुं रे वाइला ऊपरें, बीजां काम करंत ॥ तेम श्रुतधर्में रे एइमां मन घरे, ज्ञानाक्तेपकवंत ॥ घ०॥६॥ एइवे ज्ञाने रे विघन निदारणे, जोग नही जबहेत ॥ निव गुण दोष न विषयस्वरूपधी, मनगुण अवगुण खेत ॥ घण ॥ छ ॥ मायापाणी रे जाणी तेहने, खंघी जाय अतील ॥ साचुं जाए। रे ते बीइतो रहे, न चले मामामील ॥ धण ॥ ण ॥ नोगत त्वने रे एम जय निव टखे, जूग जाणे रे जोग ॥ ते ए दृष्टि रे जवसायर तरे, बहे बखी सुयश संयोग ॥ घण॥ ए॥

॥ ढाल सातमी ॥ ए बिंमि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ अर्कप्रजासम बोध प्रजामां, ध्यानिष्रया ए दिहि ॥ तत्वतणी प्रतिपन्ते इहां वली, रोग नही सुख पुढी रे ॥ जिवका वीरवचन चित्त धरियें ॥ ॥ १॥ ए आंकणी ॥ सघलुं परवज्ञा ते खुखतकण, निजवज्ञा ते सुख लिखें ॥ ए हछें आतमगुण प्रगटे, कहे। सुख ते कुण किहें ये रे ॥ जिवणी १॥ गागरसुख पामर निव जाणे, वल्लजसुख न कुमारी ॥ अनुजव विण तेम ध्यानत्युं सुक्ष, कुण जाणे नर नारी रे ॥ जण्॥ ३॥ एइ दृष्टि मां निर्मलबोधें, ध्यान सदा होये साचुं ॥ दूषणरिहत निरंतर ज्योति, रतन ते दीपें जाचुं रे ॥ जण्॥ ४॥ विषज्ञाग क्रय ज्ञांत वाहिता, ज्ञावमारग ध्रु वनाम ॥ कहे असंगिक्तया इद्यां योगी, विमलसुयज्ञा परिणाम रे ॥ जण्॥ थ

॥ ढाल थ्रांग्मी ॥ तुज साथें नहीं बोखुं महारा वाखा तें मुजने चीसारी जी ॥ ए देशी ॥

।। दृष्टि आउमी सारसमाधें, नाम परा तस जाणुंजी ।। आपस्वन्नावें प्रवृत्ति पूरण, शशिसम बोध चखाणुंजी ॥ निरतिचारपद एइमां योगी, क हियें नहि अतिचारीजी।। आरोहे आरूढे गिरिने, तेम एहनी गति न्यारी जी ।। ? ।। चंदनगंच समान खिमा इहां, वासकने न गवेषेजी ॥ आसंगें वार्जित वली एइमां, किरिया निजगुण लेखेजी।। शिकाधी जेम रतननि योजन, दृष्टिजिन्न तेम एहोजी ॥ तास नियोगं करण, अपूरव, यहे छुनि केवल गेरोजी ॥ १॥ की एदोष सर्वक महामुनि, सर्वलव्यिकलानी जीं ॥ परनपगार करी शिवसुख ते, पामे योग अयोगीजी ॥ सर्व शत्रुक्तय सर्वे ब्याधिलय, पूरण सर्व समीहाजी ॥ सर्वे अरथयोगें सुख तेइथी, अ-नंत गुण निरीहाजी ॥ ३॥ ए अडिइडी कही संकेषे, योगझास्त्र संकेते जी।। कुल योगीने प्रवृत्तचक्र जे तेइतएो हितहेतेंजी ॥ योगी कुर्ले जाया तस धम्मैं अनुगत ते कुलयोगंजी ॥ अद्देपो गुरुदेविज्ञ प्रिय, द्यावंत छ पयोगेंजी ॥ ध ॥ शुश्रूषादिक अडगुण संपूरण, प्रवृतचक्र ते कहियेंजी ॥ यमच्य लाती परड्म अर्थी, आद्य अवंचक लहियेंजी ॥ चार आहिंसादि क यम इद्या, प्रवृत्ति थिर सिद्धिनामें जी ॥ शुद्ध रुचें पाले अतिचारह, टा ले फल परिणामें जी ॥ ए ॥ कलयोगीने प्रवृत्तचक्रने, श्रवणशुद्धि पक्तपातें जी।। योगदृष्टि प्रंथे हित होवे, तेणे कह्युं ए वातेंजी ।। शुद्ध नावने सूनी किरिया, बेहुमां अंतर केतोजी ॥ जलदलतो स्राजने खजुने, तास तेजमां तेतोजी ॥ ६ ॥ गुह्यनाव ए तहने कहियें, जेहसुं अंतर जानेजी ॥ जेहसुं चित्त पटंतर होवे, तेइसुं गुद्ध न गाजेजी ॥ योग्य अयोग्य विनाग अबद-तो, करसे मोटी वाताजी ॥ खमसे ते पंक्ति परपदमां, मुष्टि प्रहारने ला-तोजी ॥ ७ ॥ सन्ना त्रण श्रोतागुण अवगुण, नंदिसूत्रें दीहोजी ॥ ते जाणि ए ईंथयोग्यने, देजो सुगुण जगीरोजी ॥ लोकपूरयो निज निज रहा, योग नाव गुणरयणेजी॥श्रीनयविजय विबुधपयसेवक,वाचकयशने वयणेजी॥ए ॥ श्री विनयविजयजीकृत नगवतीसूत्रनी सञ्चाय ॥

॥ कपूर होये अति कजलो रे ॥ ए देशी ॥ वंदि अणमी प्रेमझुं रे, पूर्व मौतझ स्वाम ॥ वीरजिनेसर हितकरी रे, अरध कहे अजिराम रे ॥ जिव

का सुणजो नगवइ अंग, मनआणी नवरंग रे ॥ नण् ॥ सुण् ॥ १ ॥ गौत-मस्वामीयें पूछीयां रे, प्रश्न सहस बत्रीश् ॥ तेहना उत्तर एहमां रे, दीधा श्रीजगदीश रे ॥ तण ॥ १॥ एक सुश्रखंघ एहनो रे, शतक एक चालीश ॥ शतकं शतकें अतिघणा रे, जहेशा जगदीश रे ॥ तण ॥ ३ ॥ वांच्युं सू-के तहने रे, जेले बमासी योग ॥ वांच्यो होय गुरु आगले रे, तप किरिया संयोग रे ॥ जण् ॥ ४ ॥ सांज्ञलनार एकासणुं रे, पचली करे त्रिविद्वार ॥ ब्रह्मचारि जूई सुवे रे, करे सचितपरिहार रे ॥ जण्॥ ए॥ देव वंदे त्रिण टं कना रे, पिकक्कमणुं बेवार ॥ किष्ण बोल निवः बोलीयें रे, रागद्वेष निवार रे ॥ जण् ॥ ६ ॥ कलइ न की जे केहरा रे, पापस्थानक अहार॥ यथाशक्ति एम वरजीये रे, घरमध्यान मन धार रें॥ त्रण॥ जंभी उंमे मन आलोचि र्थे रे, एइना अर्थविचार ॥ वित वित एइ संज्ञारियें रे, जाणी जगर्मे सार रे ॥ जण् ॥ ण् ॥ पंचवीशं लोगस्स तणो रे, कीजीये कानसम्म॥ एइ सूत्र आराधंबुं रे, स्थिरकरी चित्त अनंग रे ॥ नण्।। ए॥ नाम त्रिणां एइ-नां रे, पहिलुं पंचमुं अंग ॥ विवाइपन्नती ए जलुं रे, जगवइसूत्र सुरंग रे 11 नि 11 १० ॥ जिलादिन सूत्र मंनावियें रे, तिलादिन गुरुनी निक्त ॥ श्रंग पूजणुं की जीयें रे, प्रजावना निजशक्ति रे ॥ जण्॥ ११ ॥ गौतमने नामें करों रे, पूजानिक नदार ॥ लखमीनो लाहो लीयो रे, शक्तित्ये अनुसा र रे ॥ त्रण ॥ १२ ॥ मांमवना व्यवहारिया रे, धन सोनी संग्राम ॥ जेणे सोनैयें पूजीयुं रे, गुरुगौतमनुं नाम रे ॥ जण् ॥ १३ ॥ सौनइया अविच-ल श्रया रे, ते बत्रीश इजार ॥ पुस्तक सोवन श्रक्तरें रे, दीसे घणा जंगार रे ॥ जण्॥ १४॥ जिपये जगवतीसूत्रनी रे, नोकारवाली वीस ॥ ज्ञानाव रणी बुटियें रे, एइथी वीसवावीस रे ॥ तण्॥ १५॥ सर्प केर जेम उत रेरे, ते जिम मंत्रप्रयोग ॥ तिम ए अक्षर सांज्ञले रे, टाले करमना रोग रे !! जण ॥ १६ || सूत्र ए पूरुं धइ रहे रे, उंग्व करो अनेक || जिक्त साधु साइमी तणी रे, रातीजगा विवेक रे ॥ नण् ॥ १७ ॥ विवेकरी इम सांज खेरे, जे अग्यारे अंग ॥ थोडा नवमांदे खंदे रे, ते शिवरमणी संगरे ॥ न्नण।। १७॥ संवत सत्तर अडित्रहामे रे, रह्या रांदेर चोमास ॥ संघें सूत्र ए सांज्ञख्युं रे, आणी मन जल्लास रे ॥ जण् ॥ १ए ॥ पूजाजिक प्रजावना रे, तप किरिया सुविचार ॥ विधि इम सघलो साचव्यो रे, समयतणे श्र

नुसार रे ॥ जण्॥ २० ॥ कीर्तिविजय नवऊ।यनो रे, सेवक करे सञ्चाय ॥ इणिपरे जगवती सूत्रनी रे, विनयविजय नवञ्चाय रे॥ जणाः १।।इति॥

## ॥ श्रीमद्यशोविजयजीकृत द्यगियार द्यंगनी सद्याय ॥ ॥ तत्र प्रथम श्राचारंगसूत्रनी सद्याय विख्यते ॥

॥ कोइसो परवत धूंथलो रेसो ॥ ए देशी ॥ आचारांग पहेसुं कह्यं रेसो, श्रंग इग्यार मजार रे ॥ चतुरनर ॥ अहार हजार पंदं जिहां रेसो, दाख्यो मुनि आचार रे ॥चण।१॥ जावधरीने सांजलो रेसो,जिम जाजे जवजीति रे॥चण। पूजा जिलप्रजावना रेसो, साचिये सिवरीति रे ॥चण।जावण ॥ ए आंकणी ॥ दो सुअखंध सुहामणां रेसो, अज्ञयणां पणवीत रे ॥ चण। शाश्वताअर्थे इहां कहे रेसो, युक्ति श्रीजगदीश रे ॥ चण।जाण।श्॥ मीउही वयणें गुरु कह्यं रेसो, मीउहुं अंगज एह रे ॥ चण॥ मीउहीरीते सांजसे रेसो, सुख सह मीउहां तह रे ॥ चण॥ जाण॥ ३ ॥ सुरतह सुरमणि सुरगवी रेसो, सुरघट पूरे काम रे ॥ चण॥ सांजसवुं सिद्धांतनुं रेसो, ते हथी अति अजिराम रे ॥ चण॥ जाण॥ ॥ ॥ श्रीनयविजयविबुद्धतणो रेसो, वाचकजस कहे शीश रे ॥ चण। तुमने पहिसा अंगनो रे सो, शरण होयो निशहीश रे ॥ चण॥ जाण॥ ॥ ॥ १॥

॥ अथ बीजा अंग सूयगडांगसूत्रनी सञ्चाय ॥

॥ कपूर होवे अति कजलो रे ॥ ए देशी ॥ स्यगडांग हवे सांजलोजी,बी जो मनने रंग ॥ श्रोताने आवे जे रुचिजी, पाठांतर ॥ सातम जावे मन रुचे जी, तेहज लागे अंग ॥१॥ चतुरनर घारो समिकतज्ञाव, ए वे जवसायरमां नाव ॥ चणा ए आंकणी॥ सुअखंघा दोय इहां जलांजी, अऊयणां तेवीस ॥ तिसय तिसिठ कुमितितणुंजी, मतखंगन सुजगीस ॥ चणा १॥ किहिछे दिवय अणुजोगमांजी, एह पहूत अधिकार ॥ साधु जवहरीनो जलोजी, जवहरनो व्यापार ॥ चण्॥ ३ ॥ अर्चक वर्चकना इहांजी, श्रोताना अंतर होय ॥ गुरुजका सुख पामशेजी, अवरजमे मित खोय ॥ चण्॥ ध॥ अंग ज पूजा प्रजावतांजी, पुस्तक लेखन दान ॥ गुरुजपकार संजारवोजी,आ दर जिक्त निदान ॥ चण्॥ ॥ वक्ता एहवो कोइ नहीजी, जिम जाल्यो तुमे धर्म ॥ वाचकयश कहे हर्षशुंजी, इम ते विनयनो मर्म ॥ चण्॥ ६॥

### ॥ अय त्रीजा अंगगणांगसूत्रनी सञ्चाय ॥

॥ हूं वारी रे गोडीगामनी ॥ ए देशी ॥ त्रीजं अंग हवे सांज्ञतो, जिहां एकादिक दसवाण ॥ मोहन ॥ उद्देशा वे अति घणा, अर्थ अनंतप्रमाण ॥ ॥ मोण ॥ १ ॥ वारी रे हूं जिनवचननी, जेहना गुणनो नही पार ॥ मोण ॥ ए आंकणी ॥ जेह कूर अने बहुलंपटी, तेहनो पण करे उद्धार ॥ मोण ॥ ए आंकणी ॥ जेह कूर अने बहुलंपटी, तेहनो पण करे उद्धार ॥ मोण ॥ २ ॥ वारीण ॥ गीतारथ मुख सांज्ञढ्ये, खहे नयज्ञाव उद्धास ॥ मोण ॥ त रणीकिरण फरसेंकरी, हुये सिव कमखिकास ॥ मोण ॥ वाण ॥ ३ ॥ जेण एइनी दिये अतदेशना, तेम हू सर्गुरु दूर ॥ मोण ॥ तस अंगविलेपन कीजीये, चंदन मृगमदर्गुंकपूर ॥ मोण ॥ वाण ॥ ४ ॥ जिम जमर कमल वन सुख खहे, कोकिल पामी सहकार ॥ मोण ॥ तिम श्रोता वक्ताने म ले, पामे श्रुत अर्थनो पार ॥ मोण ॥ वाण ॥ १ ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण मन लावीयें, वली जावियें मन वैराग ॥ मोण ॥ वाण ॥ ६ ॥ श्रुतना गुण मन लावीयें, वली जावियें मन वैराग ॥ मोण ॥ वाण ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ ॥ चगावियें, उपजावियें सुय शसोजाग ॥ मोण ॥ वाण ॥ ४ ॥ इति ॥ ३ ॥

## ॥ अय चोषा अंग समवायांगसूत्रनी सञ्चाय विख्यते ॥

॥ निंइडी वेरण हूई रही ॥ ए देशी ॥ चोखुं समवायांग ते सांज्यों, मुकी आमलो रे मननो घरि जावके ॥ एना अर्थ अनोपम अतिघणा, जग जागेरे एहनो सुप्रजावके ॥ १ ॥ उत्तम घरमें थिर रह्यो ॥ ए आंकणी ॥सं ख्याशत एगुणुत्तरा, अणेगुत्तरारे बीजीपण जाणके, सरवालो गणि पिटक नो, एहमांग्रे रे जूड युक्तिप्रमाणके ॥ ड० ॥ १ ॥ इगलखपद एहमां कह्यां, वली ऊपर रे चुंआलहजारके ॥ अपस्त संघाते दोषजे, करे सद्गुरु रे तेह नो परिहारके ॥ उ० ॥३ ॥ जिनवयणे न विरोध ग्रे, तस जासने रे मंदबुि होइके ॥ सद्गुरु विरहें अलपता, गीतारथ हो गुणआहक कोइके ॥ उ० ॥ ॥ ॥ ॥ बलिहारी सद्गुरु तणी, जे दाखे रे अतुअर्थ निचोलके ॥ की जे को डि वधामणां, लीजे जामणां रे नित नित रंगरोलके ॥ उ० ॥ ए ॥ सद्गुरु सुख जे सांजले, अतुजक्ति रे उजमणां सारके॥ श्रीनयविजयविबुधतणों, कहे सेवक हो तस हुये जवपारके ॥ उ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमा अंग जगवतीसूत्रनी सद्याय विख्यते ॥

॥ अदो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥ अंग पांचमुं सांजलो तुमे, जग वई नामे चंगो रे ॥ पूजा करो ने प्रजावना, आणी मनमांहि दढरंगों रे ॥ ॥ १ ॥ सुगुणसनेदी साजनां, तुमे मानो ने बोल अमारो रे ॥ हितकारी जे हित कहे, ते तो जाणीजे मनप्यारो रे ॥ सुण ॥ श्रा ब्रह्मचारी जुई सुए, करी एकासणुं त्रिविद्दारों रे ॥ पडिकमणां दोइवारनां, करे सिच्चततणो परिहारों रे ॥ सुष् ॥ ३ ॥ देव वां दे त्रिणटंकना, वित कविणवचन निव बो ले रे ॥ पापस्थानक शक्तें त्यजे, धर्मी सुं इङ्डं खोले रे ॥ सुण ॥ ध कीर्जे सूत्रश्राराधना, कानसम्मद्योगस्स पणवीसो रे ॥ जिपये न्नगवईना मनी, नोकारवाली वीसो रे ॥ सुण। ५॥ जे दिन एइ मंनाविये, गुरुन्निक ते-देश विशेषे रे ॥ कीजे वली पूरे थये, जत्सव बहुजन देखे रे ॥ सु० ॥ ६॥ जिक्त साधुसाइमीतणी, वली रातिजगो सुविवेको रे॥ लखमी ला हो अतिघणो, वर्ती गौतम नामे अनेको रे ॥ सु०॥ । त्रएय नाम हे एह नां, पहिलुं तिहां पंचम श्रंगो रे ॥ विवाहपन्नती बीजुं त्रलुं, त्रीजुं त्रगवई सूत्र सुरंगो रे ॥ सु०॥ ॥ एकसुयखंध एइनो वली, वली च्याली इा शतक सुदाया रे ॥ जेदेसा तिहां अतिघला, गमनंग अनंत कदाया रे ॥ सु० ॥ ॥ ए॥ गौतम पूर्वे प्रजु कहे, तेतो नाम सुएयां सुख होय रे ॥ सइसर्वि स ते नामनी, पूजा कीजे विधि जोय रे ॥ सुण ॥ १०॥ मंमपगिरि विवहा रियो, जयो घन्यसोनी संग्राम रे॥ जिएो सोनैये पूजीयां,श्रीगरुगतिमन म रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ पुस्तकसोनाने अकरे, तेतो दीसे घणा जंगार रे ॥ क-ख्याणे कख्याणनो, होय अनुबंध अतिविस्तार रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ सफलम नोरथ जस होये, ते पुरायवंतमां पूरो रे ॥ जमाही अलगो रहे, तेतो पुराय थकी अधूरो रे ॥ पाठांतरें ॥ तेतो माणस नही ढोरो रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ सूत्र सांज्ञें हो जगवती, पाठांतरे॥ मानव जब पामी करी, लीजे लखमी नो लाहो रे ॥ नावनूषणमां घारीयें, सदहणां उद्घादो रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ उत्रुष्टि आराधना, जगवइ सुणतां शिव बहियें रे ॥ त्रीजे जब वाच कय-रा कहे, रम नाख्युं ते सद्दियें रे ॥ सु० ॥ १५ ॥

॥ अथ ववा अंग ज्ञाताधर्मकथानी सखाय विख्यते ॥ ॥ प्यारो प्यारो करती हो वाव ॥ ए देशी ॥ ज्ञाताधर्मकथा ववुं अंग, सांज्ञितिये मन घरी रंग ।। सुअखंघ दोइ इहां सारा,सुणि सफल करो अव तारा हो लाल ॥ १ ॥ प्यारी जिनवर वाणी, लागे मीठी साकरवाणी हो लाल ॥ प्याण् ॥ ए आंकणी ॥ पहिलामां कथा लगणीश, दसवग्ग बीजे सुजगीस ॥ कठकोडी कथा तिहां सारी, ठठा अंगनी जानं बिलहारि हो लाल ॥ प्याण् ॥ १॥ नत्सव आणंद धारो, बीजा ध्याने जन तारो ॥ रोमां चित हुइ चित्तधारो, समिकत पर्याय वधारो हो लाल ॥ प्याण् ॥ ३ ॥ सा-हाज्य करे श्रुत सुणतां, ते सुख पामे मनगमतां ॥ जे विघन करे हुइ आ-मो, ते तो माणस नही पण पामो हो लाल ॥ प्याण् ॥ ४ ॥ वाचक जस कहे सुणो लोग, श्रुत टाले विघननो सोग ॥ कहियें श्रुतज्ञित्त निव त्यिज यें, गुरुचरण कमल नित ज्ञित्यें हो लाल ॥ प्याण् ॥ ४ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमा अंग जपासकदशांगनी सद्याय विख्यते॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ सातमुं श्रंग उपासकदशा, ते सांजलवा मन उद्वस्यां ॥ टोलें मिल मनोइरजाव, पाम्यो धर्मकथा प्रस्ताव ॥ १ ॥ श्रावक
धर्मप्रजावक जया, श्राणंदादिक जे दृढ थया ॥ तेइनां एइमां सरसचरित्र,
सांजली करियं जन्म पवित्र ॥ १ ॥ श्रावक जिम उपसर्गा खमे, तेडी मु
निनं वीर कहे तमे ॥ गृहीनें खमवुं इम चित्त वस्युं, श्रुत पाखें तुम कहे
वुं किस्युं ॥ ३ ॥ जिम जिम रीजे चित श्रुत मुणी, तिम तिम श्रोता होय
बहुगुणी ॥ रोमांचित हुये काया सद्य, जाये नाग सकल अवद्य ॥ ४ ॥
जिनवाणी जेइने मन रुची, ते सत्यवादि तेइज शुचि ॥ धमर्मगोति तेहशुं
कीजियं, वाचक जस कहे गुणें रीजियं ॥ ५ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अय आठमा अंग अंतगड दशांगस्त्रनी सद्याय तिख्यते ॥

।। साहेलडीयांनी देशी ॥ आठमुं अंग अंतगडदशा साहेलडीयां, सुण जो धरिय विवेक गुण वेलडीयां ॥ बोल्या बोल ते पालियें साण ॥ निव त्य जियें गुणटेक गुण।। १ ॥ एक सुअखंध वे एइनो साण॥ मोटो वे अडवग्ग गुण।। चरित्र सुणो बहु वीरनां साण॥ रोमांचित हूए अंग गुण॥ १ ॥ धरम ते सोवन घटसमो साण॥ नांगे पण निव जाय गुण॥ घाट घडामणा जो गयुं साण॥ वस्तुनुं मूल कहाय गुण॥ ३ ॥ नित नित राचिये माणि सर्मरंग एह युक्ति गुण॥ श्रीनयविजय विबुधतणो साण॥ वाचकयश क

हे शीश गुण्।। मुफने जिनवाणीतणो साण्।।नेह होजो निशदीश गुण्॥॥॥
॥ अथ नवमा अंग अणुत्तरोववाईसूत्रनी सञ्चाय विख्यते॥

॥ रिसयानी देशी ॥ नवमुं श्रंग इवे जित सांजलो, अणुनरोववाई नाम सोजागी ॥ सुणता रे सकल प्रमादने परिहरो, जिम होये समपिर णाम वैरागी ॥ नवमुं० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बूजे रे रीजे रे श्रोता जो सुणी, तो सीजे सिव काम ॥ सो० ॥ वाधे रे रंग ते श्रुतवक्तातणों, बिहुं प्रति बहु धाम ॥ वै० न० ॥ १ ॥ अंधा आंगें रे दरपण दाखवो, विहरा आंगें रे गान सो० ॥ धर्मरहस्यकथा जह आगलें, त्रण्ये एह समान ॥ वै० न० ॥ ३ ॥ जे जेहवो होये ते समजे तिस्युं, निःस्पृद्द करते रे साच सो० ॥ धर्मगांठ धर्मीद्युं बाजहो, बीजुं मोरनुं नाच ॥ वै० न० ॥ ४ ॥ धर्म करी जे अनुत्तर सुर हुवा, तहना इहां अवदात सो० ॥ वाचक जस कहे जे ए सांजले, धन तस मातने तात वै० ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अय दशमा अंग प्रश्नव्याकरणसूत्रनी सद्याय विख्यते ॥

।। मोतीडानी देशी।। प्रश्नव्याकरणांग ते दशमुं, सांज्ञवतां कांइ न हु ए विसमो ॥ ज्ञाविया प्रवचनना रंगी, श्राविया सुविहितना संगी।। १ ॥ ए श्रांकणी ॥ श्राश्रवपंचने संवरपंच, दश अध्ययन इहां सुप्रपंच।। ज्ञावियाण ॥ टेक ॥ एहिज हित जाणीने धास्त्रा, श्रातश्य हुता ते कतास्त्रा ॥ ज्ञाण। जेह अपुष्टालंबन सेवी, तेहने विद्या सबल न देवी ॥ ज्ञाण॥ १ ॥ नाग कुमार सुवर्णकुमार, वर दीये निव ले अणगार ॥ ज्ञाण॥ एहवा इहां अ कर संयोग, नंदीसूत्रनो दिन जपयोग ॥ ज्ञाण॥ श्राण ॥ प्रण ए जगमां अधि क गवाणी, लिब्ध अठावीश गुणनी खाणी॥ ज्ञाण॥ प्रण ए जगमां अधि क गवाणी, सुविहितसंग सदा सोजागो॥ जाण॥ वाचक जस कहे पातक दहशे, श्रुत सांज्ञवतां ते सुख लहेशे॥ जाण॥ ५॥ इति॥ १ण॥

॥ अय अगीयारमा अंग विपाकसूत्रनी सञ्चाय जिल्पते ॥

॥ तेतरीयां जाइ ते ॥ ए देशी॥ ग्रंग इंग्यारमो सांजलो, इवे चिरविपाक गुज नाम रे ॥ अशुजविपाक बेदशे, वली दशविपाक शुज धाम रे ॥ १ ॥ ग्रंग ए ॥ ग्रांकणी ॥ अशुज कर्म ते बांनीयं, वली ग्रांदरियं गुजकर्म रे ॥ समजी ख्यो रे जविया, ए सांजल्या करो मर्म रे ॥ ग्रंण ॥ १ ॥ मर्म न जाणे मूलगो, कंउशोष करावे फोकरे ॥ तेहने हित किणि परे हुये, फल लिये ते रोकारोक रे ॥ अंण् ॥ ३ ॥ मत कोइ जाणो रे उलहुं, अमें प्रविचनना हुं रागी रे ॥ शासननी उन्नित करें, ते श्रोताने कहुं सोनागी रे ॥ अंण् ॥ ४ ॥ चेइय कुल गण संघनुं, श्राचारय, प्रवचन श्रुतनुं रे ॥ वैन्यावच तेणे नित कर्युं, जेहनुं मन हे तप संयमनुं रे ॥ अंण् ॥ ५ ॥ पण व्यवहारे शोनीयं, व्यवहार ते जिक्त साचो रे ॥ कपणपणे जे वंचिये, ते हो नाव ते जाणो काचो रे ॥ श्रंण् ॥ ६ ॥ जे उदार श्रागम गुण रित्या, कित्य नही आखसीया रे ॥ साधु वचन सुणवा उद्धित्या, ते श्रोता चोकित्या रे ॥ श्रंण् ॥ ६ ॥ साधु वचन सुणवा उद्धित्या, ते श्रोता चोकित्या रे ॥ श्रंण् ॥ ७ ॥ एहवाने तुमे अंग सुणावो, धिर्ये धर्म सने-हा रे ॥ धर्मगोठ एहवा शुं बाजे, जे एक जीव दोइ देहा रे ॥ अंण् ॥ ए ॥ धन्य तेह वर श्रंग उपंगे, जेहनो लागुं मन रे ॥ वाचक जस कहे तस गुण गावा, कीजे कोही यतन रे ॥ श्रंण ॥ ए ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ कलशा ॥ टोडरमल्ल जीति हो ॥ ए देशी ॥ श्रंग इग्यारे सांजल्यां रे, पुदता मनना कोड ॥ टोडरमल्ल जीत्यों रे ॥ गइ आपदा संपदा मिलीए, आवी होडाहोड ॥ टोण ॥ १ ॥ दिलयें ते इर्जन देखतां रे, विघनना कोडाकोड ॥ टोण ॥ सक्जनमांहि मलपता रें, चाले मोडामोड ॥ टोण ॥ १॥ जिम जिन वरसी दानमां रे, न करे उडाउड ॥ टोण ॥ तिम सदगुरु उपदेशमां रे, वचन विचारशुं ठोड ॥ टोण ॥ दे ॥ कर्मविवर चर पोलीयों रे, पोलें दिये हे होड ॥ टोण ॥ तखत वखत बल पामशुं रे, हूइ रह्या दोडादोड ॥ टोण ॥ ध ॥ मात बगोइ मंगल पिता रे, रूपचंदजाइ उदार ॥ टोण ॥ मान एकशायें कांइ सांजल्यां रे, विधिशुं अंग अग्यार ॥ टोण ॥ ए ॥ युगयुगमुन विधुसंवह्यरे रे, श्रीजसविजय उवजाय ॥ टोण ॥ सुरत चोमासं रही रे, कीघो ए सुपसाय ॥ टोण ॥ ६ ॥ इति एकादशांगनी सञ्चाय ॥

॥ अध श्री यशोविजयजीकृत पांच कुगुरुनी सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ ढाल पहेली ॥

॥ सेवो सदगुरु गुण निरधारी, इइजव परजव जे उपगारी ॥ व रजी कुगुरुसमय अनुसारें, पासञ्चादिक पंच प्रकारें ॥ १ ॥ निज श्रावकने जे बल सारे, सुविहित संगति करतां वारे ॥ कुलिश्रतिजंगे ज य देखाडे, सुगधलोकने जामे पांडे ॥ १॥ ज्ञानादिक गुण आप न राखे,

सूधो मारग मुखे निव जाखे ॥ करे साधुनिंदा विस्तारे, पासहो ते सर्व प्रकारे ॥ ३ ॥ देशायकी सज्यातरपिंम, नित्यापिंम जुंजे नृपापिंम ॥ अप्रापिं म निःकारण सेवे, साइमुं आएयुं जोजन लेवे ॥ ४ ॥ देशनगर कुल मम-ता मांमे, थापित कुलमर्यादा डांमे ॥ विवाद उद्यव जोवे फिरतो, नरहे जननो परिचय करतो ॥ ए ॥ जेइ महाब्रत जारे जूतो, ग्रंमी तेइ प्रमादे खूतो।। कर्मपाशमां रहतो कहियें, पासञ्जो जिन वचेनें बहियें।। ६॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ गिलया बलदतणी परे रे, जे न बहे ब्रतन्नार ॥ ते उसन्नो जाणीयें रे, सर्व देश बेहु प्रकारो रें ॥ ? ॥ जविजन सांज्ञलो ॥ पाटि पाटला वावरे रे, शेषें कार्ते रे जेइ ॥ यापित पिंम जिमे सदा रे, सर्व उसन्नो तेहो रे ॥ जण्॥ ए॥ चढां अधिकां जे करे रे, पडिकमणादिक ठाण ॥ सुगुरुव-चन निव जालवे रे, देश उसन्नों ते जाणों रे ॥न्न०॥३॥ राय वेठसम न यथकी रे, किरियाविण उपयोग ॥ जेइ करे ते नवि खंहे रे, परनवचारित्र योगो रे ॥ जण् ॥ ४ ॥ ते किरिया शिथिल करि रे, दीिकत शीश अनेक ॥ जनसायर अधिको पडे रे, उसन्नो अविवेको रे ॥ ज०॥ ५॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

।। नाण दंसण चरण जेदथी, कह्युं त्रिविध व्रत कुशील ।। नाणथी ना ण श्राचारनो, करे नंग डःशील ॥ १ ॥ वीर वाणी त्हदयें धारियें, दर्शना-चार दर्शनथकी, विशुधे सवि पापी ॥ बोलीयें चरण कुंशीलनां, इवे लक ए। विष् ॥ १ । स्नान सोन्नाग अर्थे करे, ज्वर औषध आपे ।। प्र-श्र विद्यादि बलबी कहे, निमित्तादिक थापे ॥ वीण ॥ ३ ॥ जाति कुल प्र-मुख आजीविका, करे केलवे माया ॥ स्त्री प्रमुख अंगलकण कहे, वहे मं त्रनी गया ॥ वी० ॥ ४ ॥ इम अनाचार मलयोगथी, करे कुत्सिलशील ॥ घर त्यजी अधिक माया जस्बो, कहिनं तेणे कुशील ॥ वी० ॥ ॥ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

।। शंसतो जिहां जर मिखे, तिहां तेहवो होवे ।। नट जिम बहुरूपी फरे, मुनिवेष विगोवे ॥ १ ॥ आगम अर्थ विचारियें ॥ बिंहुं जोदे ते जा-णियें, शुन्न अशुन्न प्रकार ॥ मूलुत्तर गुण दोषने, योगि शुन्नसार ॥ १ ॥ ब्राण्।। पासञ्चादिक शुं मख्यो, ते थाये अधर्मी ।। संवेगी साथे मख्यो, प्रा यें थाये धर्मी ॥ आण्॥ ३ ॥ पंचाश्रव रतगारवी, स्त्रीजनशुं रत्तो ॥ जे मोईं मातो रहे, ते अशुज संसत्तो ॥ आण्॥ ४ ॥ एम अनवस्थित दोष ते, संगतिथी पावे ॥ निंबसंगधी अंबमां, जिम कटुता आवे ॥ आण्॥ ५ ॥ ॥ दाल पांचमी ॥

॥ चार्षे सूत्र विरुद्धाचारे, जापे सूत्र विरुद्ध ॥ यथा ढंद इहायें चार्षे, ते नही मनमां शुद्ध रे ॥ १ ॥ प्राणी वीर वचन चित्त घारो, सूत्र परंपर शुं जे न मले, ते उत्सूत्र विचारो ॥ श्रंघ परंपर चाढ्युं श्राव्युं, ते पण तिम निर्धारों रे ॥ १ ॥ प्राणी वीण ॥ ए श्रांकणी ॥ निजमति किष्टपत जनने जापे, गारवरसमां माचे ॥ यथाढंद गृहिकाज करंतो, नवनवरूपें नाचे रे॥ प्राण ॥ ३ ॥ एकप्ररूपण तेहनी चरणो, बीजी गमने खोटी ॥ पहिलेहण मुं हपतियें करशुं, किसी चरवली मोटी रे ॥प्राण॥ ४॥ मात्रकविध पात्रकथी होशे, पहलां काज चलेटि ॥ लेपं दोष घणो इत्यादिक, चरण मृषा मिल लोटे रे ॥ प्राण ॥ ५ ॥ चोमासे जो मेह न वरसे, तो हींम्ये शो दोष ॥ राजविरुद्ध गमनशुं वारी छं, मुनीने शो तनु पोष रे ॥ प्राण ॥ ६ ॥ वर्षाका लें वस्त्र विहरतां, खप करतां नही हाणी ॥ नित्यवासमां कांइ न दूषण, साहमुं हुए नाणी रे ॥ प्राण ॥ ७ ॥ इमगति विषय प्ररूपण खोटी, ए सिव वे विस्तारे ॥ आतमअरथी जोइ लेजो, जाष्यसहित व्यवहारें रे॥प्राण। ७ ॥

॥ ढाल बदी ॥

॥ एम पांचे कुगुरु प्रकास्यां, आवदयकमां जिम नाष्या ॥ समिकत प्र करण बहुनाखी, योगिबंड प्रमुख इहां साखि ॥ १ ॥ ए आनक सर्व अशि कि, जो सेवे कारण विगति ॥ तो मुनिगुणनी नही हाणी, ए उपदेश मा जा वाणी ॥ १ ॥ जसु परियह प्रमुख अकाज, उन्मार्ग किहेंथें निव जाज ॥ ते तो बोख्यो बिमणो बाज, जूडे पहिलो अंग विशाल ॥ ३ ॥ आधा क स्मादिक खापे, यतिनाम घरावे आपें ॥ ते पापश्रमण जाणीजें, उत्तरा. ध्ययनें मन दीजें ॥ ४ ॥ जे कुगुरु होए गज्जनाथ, निव लीजे तहनो सा. य ॥ अज्ञानी जे गज्जधारी, ते बोख्यो अनंत संसारी ॥ ५ ॥ जावाचारय जिनसरिखो, बीजा निव लेखे परिखो ॥ पूछे गौतम कहे वीर, मध्य महा निशीध गंजीर ॥ ६ ॥ जे ज्ञानिक्रयानो दरिड, ते सदगुरु गुणमिण जरिड ॥ जे शुद्ध प्ररूपक नाणी, ते पण उत्तम गुणखाणी ॥ ७ ॥ उसन्नो प

ण रज टाले, जे जिनमारग अजुआले ॥ एम बोले गहाचार, गुरुक्तानी जगदाधार ॥ ए॥ कानी हे केवलोकल्प, ए कल्पनाष्यनो जल्म ॥जे हुड़ कथक गुषधारी, ते सदगुरुनी बितहारी ॥ए॥गाथा ॥ एसी कुगुरुसकाल, जिणवयणान फुडं निणिने॥ सिरि णयविजयमुणीणं, सीसेण जणाण बो हुछ। ॥ १०॥ इति श्री पांच कुगुरुनी सद्याय संपूर्ण ॥

॥ अप श्री विनयविजयजोकृत आंबिलतपनी सञ्चाय ॥

॥ समरी श्रुतदेवी शारदा, सरसवचन वर आपे सदा ॥ आंबिखतप नो महिमा घणो, जविजन जावश्रकी ते मुणो ॥ १॥ विगय सकतनो जि हां परिहार, अशनमांहि वर्ण जेद विचार ॥ विदल सर्व तिल त्यर विना, अति कोइव कांगनी मना ॥ १ ॥ खडधान पुंहक दूकट फल सर्वे, व-र्जीर्जे आंबिलने पर्व ॥ उत्तामण परं जो जल जले, तो आंबिल अंबिलर-स टले ॥ ३ ॥ विलवण सूंति मरीच ने सूत्रा, मेथी संचल रांमत कह्या ॥ अजमादिक नेला रंघाय, तो आंबिलमां लेवा थाय ॥ ४॥ जीहं जले ते जेवडी कही, ते सुऊ पण जीहं नहीं ॥ गोमूत्र विना अंग्रे अणाहार, ते सिव खेवानो विवहार ॥५॥ सात जाति जे तंडेवतणी, ते सुऊती आंबि समां जाणी ॥ सेकिसवान अपकी दाल, मांना खाखर लेवा टाल ॥ ६॥ इतइ लविंग पींपर पींपली, इरडे सैंधव वेसण वली ॥ खादिम स्वादिम जे कईवाय, ते आंविलमां निव लेवाय ॥ ७॥ जतकृष्ट विधे जष्णजल नीर, जघन्यविधे कांजीनुं नीर ॥ इम निरदूषण आंबिस करे, मुख धोव ण दांतण निव करे ॥ ७ ॥ जे निरदूषण लिये आहार, उदननो तेइ ने विवदार ॥ आटो लिंगट पाणीवतुं, ते पण आंबिलमां स्फतूं ॥ ए॥ अशर्ग गीतारथ अणमञ्चरी, जे जे विधि बोले ते खरी॥ लाजालाज विचा रे जेइ, विधिगीतारथ किर्चे तेह ॥ १०॥ आंविसतप उत्कृष्टो कह्यो, विघनविदारण कारण जह्यो ॥ वाचक कीर्तिविजय सुपसाय, नाखे विनय विजय जवसाय ॥ ११ ॥ इति आयंबितमां आहार तेवानो विधि ॥

॥ अय श्री अमृतवेलिनी सञ्चाय प्रारंज ॥

॥ चेतन ज्ञान अजुआलीयं, टालीयं मोह संताप रे ॥ चिनां प्रमिनो सतुं वालीयं, पालीयं सहज गुण आप रे ॥ चे० ॥ १॥ जपशम असृत रस पीजीयं, कीजीयं साधु गुणगान रे ॥ अधम वयणं निव खीजीयं,

दीजीयें सक्जनने मान रे ॥ चेए ॥ २ ॥ क्रोध अनुवंब नवि राखीयें, नांखीयें वयण मुख साच रे॥ समकेत रतहिच जोडीयें, वोडीयें कुमित मति काच रे ॥ चे० ॥ ३॥ शुद्धपरिणामने कारणें, चारनां शरणः धरे चित्त रे ॥ प्रथम तिहां शरण अरिदंतनुं, जेह जगदीश जगिमत्त रे ॥ चे० ॥ ४॥ जे समोसरणमां राजता, जांजता जविक संदेह रे॥ धर्मनां वचन वरसे सदा, पुष्करावर्त जिम मेह रे ॥ चेण ॥ ५ ॥ शरण बीजुं त्रजे सिह नुं, जे करे कर्म चकचूर रे ॥ न्रोगवे राज्य शिवनगरनुं, ज्ञान आनंद न्नरपू र रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ साधुनुं शरण त्रीजुं धरे, जेह साधे शिवपंथ रे ॥ मृ-ल उत्तर गुण जे वस्ता, जब तस्ता जाव नियंघ रे ॥ चे०॥ छ॥ शरण चोशुं धरें धर्मनुं, जेइमां वर दया ज्ञाव रे ॥ जे सुखहेतु जिनवर कहां, पापजल तारवा नाव रे ॥ चे०॥ ०॥ चारनां शरण ए पडिवजे, वली जाजे जावना शुद्ध रे ॥ इरित सवि श्रापणां निंदियें, जेम होये संवर वृ हिरे ॥ चेण ॥ ए ॥ इंइजन परजन आचत्वां, पाप अधिकरण मिण्यात रे ॥ जे जिनाशातनादिक घणां, निंदियें तेइ गुणघात रे ॥ चेण ॥ १ण॥ गुरुतणां वचन ते अवगुणी, गुंथिया आप मत जाल रे ॥ बहुपरें लोक-ने नोल्या, निंदियें तेह जंजाल रे ॥ चेण ॥ ११ ॥ जेह हिंसा करी आ-करी, जेइ वोख्या मुषावाद रे ॥ जेइ परधन हरि हरिखया, कीधलो काम उन्माद रे || चेण ॥ १२ ॥ जेह धन धान्य मूर्जी धरी, सेविया चार कथा-य रे ॥ रागने देवने वश हुवा, जे कीयो कलइ जपाय रे ॥ चे० ॥ १३ ॥ ज्ञ जे आल परने दियां, जे कस्वां विशुनता पाप रे ॥ रति अरित निंद माया मुबा, वितय मिछ्यात्व संताप रे ॥ चेण् ॥ १४ ॥ पाप जे एइवां से-वीयां, तेइ निंदियें त्रिहुं काल रे ॥ सुकृत अनुमोदना की जियें, जिम हो ये कर्म विसराख रे ॥ चे० ॥ १५ ॥ विश्व उपगार जे जिन करे, सार जिन नाम संयोग रे ॥ ते गुण तास अनुमोदियें, पुण्य अनुवंध शुन्न योग रे ॥ चे०॥ १६॥ सिद्नी सिद्ता कर्मना, क्ययकी उपनी जह रे ॥ जेह आचार आचार्यनो, चरणवन सिंचवा मेह रे ॥ चे० ॥ १७ ॥ जेह नव-जायनो गुण जलो, सूत्र सञ्चाय परिणाम रे ॥ साधुनी जे वली साधुता, मूल उत्तर गुण धाम रे ॥ चेण ॥ १० ॥ जेइ विरति देश श्रावकतणी, जे समिकत सदाचार रे ॥ समिकतदृष्टि सुरनरत्यो, तेइ अनुमोदियें सार

रे ॥ चे० ॥ १ए ॥ अन्यमां पण दयादिक गुणा, जेह जिन वचन अनुसा-र रे ॥ सर्व ते चित्त अनुमोदियें, समिकत बीज निरधार रे ॥ चे०॥ २०॥ पाप निव तीव्रज्ञांवें करें, जेइने निव ज्ञव राग रे ॥ उचित स्थित जेइ सेवे सदा, तेइ अनुमोदवा लाग रे ॥ चेण॥ ११॥ थोडलो पण गुण पर रतणो, सांज्ञली इर्ष मन आण रे॥ दोष लव पण निज देखतां, निजगु-ण निजातमा जाण रे ॥ चेण ॥ २२ ॥ जिचत व्यवहार अवलंबनें, एम करी स्थिर परिणाम रे ॥ जावियें शुद्ध नय जावना, पाबनाशन तणुं ठा-म रे ॥ चे० ॥ २३ ॥ देइ मन वचन पुजल शकी, कर्मश्री जिन्न तुऊँ रूप रे ॥ अक्तय अकलंक वे जीवनुं, ज्ञान आनंद सरूप रे ॥ चे०॥ २४ ॥ कर्मथी कल्पना ऊपजे, पवनथी जेम जलिघ वेल है।। रूप प्रगटे सहज आपणुं, देखतां दृष्टि स्थिर मेल रे ।। चेण ॥ २५ ॥ धारतां धर्मनी धार णा, भारतां मोइ वड चोर रे ॥ ज्ञान रुचि वेल विस्तारतां, वारतां कर्म नुं जोर रे ॥ चे० ॥ २६ ॥ राग विष दोष कतारतां, जारतां देव रस दोष रे ॥ पूर्व मुनि वचन संज्ञारतां, सारतां कर्म निःशेष रे ॥ चे० ॥ २७ ॥ देखियें मार्ग शिव नगरनो, जे जदासीन परिणाम रे ॥ तेइ अणजे। इत चालियें, पामियें जिम परम धाम रे ॥ चे०॥ १०॥ श्रीनयविजय गुरु शिष्यनी, शीखडी अमृत वेख रे ॥ एइ जे चतुर नर आदरे, ते खहे सुयश रंगरेल रे ॥ चे० ॥ १ए ॥ इति श्री दितशिक्षा सञ्चाय समाप्त ॥

॥ अय श्री बिच्धविजयजी कृत जीवहित शीखनी सञ्चाय प्रारंत्र ॥

॥ जोये जतन करी जीवडा, आयु नजाणुं जाये रे ॥ वहे वाहों व खमीतणो, पनेतां कांइ निव धाय रे ॥ जो०॥ १॥ इवहो जन माणस तणो, इवहो देह निरोगो रे ॥ इवहो दयाधरम वासना, इवहो सुगुरु संजोगो रे ॥ जो० ॥ १॥ दिन क्रों दिन आध्रमे, न वले कोइ दिन पा नो रे ॥ अवसर काज न कीधलुं, ते मनमांहि पष्टाशो रे ॥ जो०॥ ३ ॥ लोज लगें लख वंचिया, तें परधन हरी लीधां रे ॥ केडे न आवे कोइनें, के हे करम रह्यां कीधां रे ॥ जो०॥ ४॥ माता नदर नंधो रहे, कोडि गमें इ:ख दीनां रे ॥ योनि जनमइ:ख जे हुवे, ते तुज लागे ने मीनां रे ॥ जो०॥ ५॥ है है जव आलें गयो, एको अरध न साध्यो रे ॥ सहगुरु शीख सुणी घणी, तो पण संवेग न वाध्यो रे ॥ जो०॥ ६॥ मान मनें कोइ मत करो, यम जीत्यों निव केणें रे || सुकृतकाज न की धं सुं, वे जन् व हास्त्रों हे तेणें रे || जोण || छ || जप जगदी इग्ना नामने, कांइ निर्विन्तों सुं सुं रे || काज करे अवसर खही, सिव दिन सरखा न हुवे रे || जोण || छ || जग जातों जाणी करी, तिम एक दिन तुज जावों रे || कर करवों ज तुज हुवे, पढ़ी होवे पसतावों रे || जोण || ए || तिश्चि परवें तप निव कस्त्रों, केवल काया तें पोषी रे || परज्ञव जातां जोवने, संवल विण किम होति रे || जोण || १० || सुण प्राणी प्रेमें कही, लिख खही जिन वाणी रे || संबलसाथें संग्रहो, इम कहे जिन केवल नाणी रे || ११ ||

॥ अय श्रीजिनहर्षजीकृत पांचमा आरानी सञ्चाय ॥

श वीर कहे गौतम सुषो, पांचमा आराना जाव रे ॥ इखीया पाणी श्रित घणा, सांजल गौतम सुजाव रे ॥ वीरण्॥ १ ॥ शहेर होशे रे गाम-डां, गाम होशे समशान रे ॥ विण गोवालें रे घण चरे, ज्ञान नहिं निरवा ण रे ॥ वीरण ॥ २ ॥ मुज केडे कुमती घणा, होशे ते निरधार रे ॥ जि-नमतिनी रुचि नवि गमे, थापशे निजमति सार रे ॥ वीरण ॥ ३॥ कुम-ति जाजा कदाग्रही, थापशे आपणा बोत रे ॥ शास्त्र मारग सवि मृकशे करशे जिन मत मोल रे ॥ वीरण ॥ ध ॥ पाखंकी घणा जागशे, जांगशे घ रमना पंथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करहो नवा वली ग्रंथ रे ॥ वीरण ॥ ५ ॥ चारणीनी परें चासहो, धर्म न जाणे लेहा रे ॥ आगम झाखाने टालरो, पालरो निज उपदेश रे ॥ वीरण ॥ ह ॥ चोर घरड बहु लागरो, बोली न पाले बोल रे ॥ साधुजन सीदायशे, इर्ज्जन बहुला मोल रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ राजा प्रजाने पीड्शे, हिंमशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसरो मेहुता, मिण्यात्व होशे बहु श्रोक रे ॥ वीरण ॥ ए ॥ संवत् लगणी हा चौदोत्तरें, होशे कलंकी राय रे ॥ मात ब्राह्मणी जाणीयं, बाप चंमाल कहेवाय रे ॥ वीरण ॥ ए ॥ बचासी वरणनुं आनुखुं, पामलीपुरमां होशे रे ॥ तस सुत दन नामें जलो, श्रावककुल शुज्ज पोषे रे ॥ वीरण॥ १० ॥ कौ तकी दाम चलावरो, चर्म तणा ते जोय रे ॥ चोथ लेशे जिहातणी, महा अकरा कर होय रे ॥ वीरण ॥ ११ ॥ इंड् अवधियें जोयतां, देखरो एह स्वरूप रे ॥ दिज रूपें आवी करी, इएको कलंकी जूप रे ॥ वीरण ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी, इंड् सुर लोकें जाय रे ॥ दत्त धरम पाले सदा,

नेटरो रोत्रुंज गिरिराय रे ॥ वीण ॥ १३ ॥ पृष्ठित जिन मंमित करी, पाम रे मुख अपार रे ॥ देव बोकें सुख नोगवे, नामें जयजयकार रे ॥ वीरण्य १४ ॥ पांचमा आराने ठेडलें, चतुर्विध श्रीसंघ होरों रे ॥ ठठों आरों बेस-तां, जिनधर्म पहिलों जारों रे ॥ वीरण ॥१५॥ बीजे अगनी जायरों, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे प्रहरें लोपना, ठठें आरे ते होय रे ॥ बीरण ॥१६ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ उठे आरे मानची, विखवासी सिव होय ॥ वीझ वरसनुं आइखं, य-टबचें गर्जन होय ॥ १७ ॥ सहस चोराझी वर्षपणे, जोगवशे जिव कर्म ॥ तीर्धिकर होशे जिलेर, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥ १७ ॥ तसु गणधर औं सुंद रु, कुमारपाल जूपाल ॥ आगम बाणी नोइने, रचीयां रयण रसाल ॥१७ ॥ पांचमा आराना जाव ए, आगमें जांख्या बीर ॥ ग्रंथ बोल विचार क-ह्या, सांजलनो जिव धीर ॥ २० ॥ जणतां समकित संपन्ने, सुणतां मंगल माल ॥ जिनहर्षे कही जोड ए, जाख्यां वयण रसाल ॥ २१ ॥ इति ॥ ॥ अथ कलियुगनी सद्याय ॥

॥ सरसती स्वामिनी पाय नमीने, ऊलट मनमांहे आयो ॥ तीरण न हिं कोइ इण संसारें, तेणे ए किलयुग आयो ॥ देखो व यारो कूडो किलयुग आयो ॥ ए आंकणी ॥ वावो कहे महारी नानही देही, हिन हिन मूल्य सवायो ॥ वे यारो कूडो किलयुग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पिंड, कुनर काम जलायो ॥ वोल वंप नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ वे यारो कूण ॥ १ ॥ गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पुराण पढायो ॥ सामु चूले ने वहु खाटलडे, फूकें शरीर जलायो ॥ वे यारो कूण ॥ ३ ॥ एं शी वर्षनो हीं हें होंशें, मूले हाथ घलायो ॥ पंचतणी साखे परणीने, आ. वला अर्थ गमायो ॥ वे यारो कूण ॥ ४ ॥ जोगी जंयम ने संन्यासी, जांग जले मदवायो ॥ चोर चाह परधननें खाये, साधुजन सीदायो ॥ वे यारो कूण ॥ ५ ॥ निचतणे घर अति घली लखमी, जनम जन सीदायो ॥ वे यारो कूण ॥ ।। निचतणे वाप संघातें वेटो, घणे रे मनोर्थे जायो ॥ दाण जपाडे मायनें मारे, परणीशुं नमाह्यो ॥ वे यारो कूण ॥ ४ ॥ शा घरडाने घहेलो, कहे वेटो, आप त लो मद वाह्यो ॥ वह स्ती ने वर हिंगोले, सासरे स्त्वाने घरायो ॥ वे

यारो कूण | 5 | इस खेडे बजल गो जित्त, निर्देष नाक फडायो | मा वापें बेटी वेचीने, बेटाने परणायों | वे यारो कूण | ए | रागतणे वज्ञ गुरुने गुरुणी, काम करें परायो | कांगानी पेरें कलहों मांमी, कुलगुरु ना म घरायो | वे यारो कूण | १० | वैयर बार वरसनीने बेटो, दीनो गोंद खेलायो | माग्या मेह न वरसे महीयल, लोजे घरव्यो सवायो | वे यारो कूण | ११ | कूडा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो | पजले पी-तिविमल परमारण, जिन वचनें सुख पायो | वे यारो कूण | ११ | ।इति।।

## ॥ अथ एकादशनी सञ्चाय ॥

॥ आज महारै एकादशी रे, नणदल मौन करी मुखं रहिर्ये ॥ पूज्या नो पहुत्तर पाठो, केंद्रने कांइ न किंदें ॥ आ०॥ १॥ माहारो नणहोइ तुर्फने वहालो, मुर्फने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना वाचका जरतां, हाथ न आवे दीरो ॥ आण ॥ २ ॥ घरनो घंघो घंणो कस्त्रो पण, एक न आत्रो आडो ।। परत्नव जातां पालव जाले, ते मुक्तने देखाडो ।। आए।। ३ ।। मागिहार शुदि अगीयारश महोटी, नेवुं जिननां निरखो ॥ दोहोढशो क-ख्याणिक महोटां, पोषी जोइने इरखो ॥ या ॥ ४ ॥ सुव्रत रोग पयो रा इ श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो ॥ पावकपुर सघलो परजाख्यो, एइनो कांइ न दहीयो ॥ आ०॥ ५॥ आठ पहोर पोसो ते करियें, ध्यान प्रजु नुं घरिये ॥ मन वच काया जो वश करियें, तो ज्ञवसायर तरियें ॥ था। १॥ ईर्या समिति नाषा न बोंले, थामुं अवलुं पेखे ॥ पडिक्रम णाजुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आण्॥ ज् ॥ कर ऊपर तो माला किरती, जीव फरे मनमांदी ॥ चितडुं तो चिहुं दिशि मोले, इणें जनें सुख नांदी ॥ आ०॥ ए ॥ पौषधशावें जेगां यहने, चार कथा वली सांधे ॥ कांइक पाप मिटावण आवे, वारगणुं विल बांधे ॥ आ० ॥ ए॥ एक जरंती आलस मोडे, बीजी जंधे बेरी ॥ निदयोमांथी कांइक निसरती, जइ दियामां पेठी ॥ आ०॥ १०॥ आई बाई नएंद जोजाई, न्हानी मोहोटी वहूने ॥ सासु ससरो मा ने मासी, ज्ञीखामण हे सहुने ॥ आए ॥ ११ ॥ जेदयरतन वाचक जपदेशें, जे नर नारी रहेशें ॥ पोसा मांदे प्रेम घरीने, अविचल लीला लेहा ॥ आ० ॥ १२ ॥

### ॥ अथ वैराग्य सञ्चाय ॥ मनज्ञमरानी देशीमां ॥

॥ उंचां मंदिर मालीयां, सोड्य वालीने सूलो ।। काहाडों काहाडों ए ने सह करें, जाणे जनस्यों जे नोतो ॥ १॥ एक रे दिवस एवी आवशे, मने सबलों जी साले ॥ मंत्री मह्यां सर्वे कारिमां, तेनुं कांइ न चाले ॥ एक रे दिवस ।। १॥ए आंकणी ॥ साव सोनांनां रे सांकलां, पहरण नव नवा वाघा ॥ धोलुं रे वस्तर एना कर्मनुं, तेतो शोधवा लागा ॥ एक रेण ॥ ३॥ चक कढाईया अति घणा, बीजानुं नहीं लेखुं ॥ खोलरी हांनी एना कर्मनी, तेतो आगल देखुं ॥ एक रेण ॥ ४ ॥ केनां बोह ने केनां वाबर, केनां माय ने वाप ॥ अंतकाले जावुं जीवने एकलुं, साथें पुण्यने पाप ॥ एक रेण ॥ ५ ॥ सगी रे नारी एनी कामिनी, बजी टग मग जूवे ॥ तेनुं पण कांइ चाले नहीं, बेठी प्रूसके रूवे ॥ एक रेण ॥ ६ ॥ वहालां ते वाहालां द्यं करों, वाहालां वोलावी वलशे ॥ वहालां ते वननां लाकडां, ते तो साथें जी बलशे ॥एक रेण ॥ ॥ । नहीं तापी नहीं तुंबडी, नथी तरवानो आरो ॥ वहपरतन प्रजु इम जिले, मने पार इतारो ॥ एक०॥ ॥ ॥

॥ अय अमल वर्जन संद्याय ॥ कंत तमाकू परिदरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनवाणी मन घरी, सहगुरु दीये उपदेश ॥ मेरे लाल ॥ बावी श अनस्यमांहे कहाँ, अमल अनस्य विशेष ॥ मेण ॥ अमल म खाजो सा जनां ॥ १ ॥ अमल विगोवे तत्र ॥ मेण ॥ उंघ बगासां घरणी, आवे आ खो दित्र ॥ मेण ॥ अण ॥ १ ॥ अमली अमलने सारिखो, आवे आनंद याय ॥ मेण ॥ अत्रतां आरित घणी, धीरज जीव न धराय ॥ मेण ॥ अकल न कांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मेण ॥ अण ॥ ४ ॥ काला अहिथी उपनें, नामें जे अहिफीण ॥ मेण ॥ संग करे कोण एहनो, पंनित लोक प्रवीण ॥ मेण ॥ अण ॥ ए ॥ पहेलुं मुख कडवुं हुवे, वली घांटो घराय ॥ मेण ॥ उपाय ॥ मेण ॥ अण्वा मेण ॥ कांचा कांवि मिश हुए, गावडी गांवे नूर ॥ मेण ॥ अण्वा ॥ मेण ॥ अल्वा ॥ मेण ॥ सेण ॥ मेण ॥ मेण

नाक चूए नयणां ऊरे, काम करी न शकाय भा मेण ॥ अण्॥ ए॥ अध-विश्व मारगमां पढे, जीवन मृत्यु समान ॥ मेण ॥ हाथ पगोनी नस गले अमली आवी शान ॥ मेण ॥ अण ॥ १०॥ आगराई आवो कह्यो, माल वीं मांहै जैल ॥ मैण ॥ आषद्शुं सखरुं नहीं, मिशरीशुं मन मेल ॥ मेण ॥ अण ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे, तसु अहि विष न जलाय ॥ मेण ॥ अमल घणुं खाधायकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥ मेण ॥ अण् ॥ १२॥ अमलीने उन्हें रुचे, टाढुं नावे दाय । में । खोजी रोटी खांम घी, क पर दूध सुक्षय ॥ मे॰ ॥ अए ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामिनी, जाएो जुग ति खुजाण । मेण । काति विख़ी रूपा करी, अमलीने दीए आगा । मेण ॥ अध ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश लगार ॥ मेण ॥ कथन न दोपे कंतनुं, ते विरदी संसार ॥ मेण ॥ अण् ॥ १५ ॥ इर्जागणी नारी जिका, बोले कर्कश वाणी ॥ मेण ॥ रे रे अधम अफीणिया, आलतवंत अजाण ॥ मेण ॥ अण ॥ १६ ॥ परणी जाई पारकी, जुं की धुं तें घीठ ॥ में ।। पोतानुं परा पेट ए, निवुर ज्ञराय न नीव ।। में ।। अ० ॥ १७ ॥ कान कोट जूषण सह, वेची खाधुं तेह ॥ मेण ॥ निर्दा तुऊ घरवासमां, कहें सुख पाम्युं जेइ ॥ मे०॥ अ० ॥ १०॥ अमल समो असुगो नहीं, मानी ए मुक्त शीख ॥ मेण ॥ बाले सुंदर देहडी, श्रंते मगावे जीख ॥ मेण ॥ अ०॥ १ए॥ दाविड्रीने दोहिलुं, सूर जग्यानुं शाल ॥ मेण ॥ श्रीमंतने पण नहीं जातुं, जीतां ए जंजाल ॥ मेण ॥ अण ॥ २०॥ सासु वहु वहतां वतां, रीशे अमल जखंत ॥ मेण्॥ बालक खाये अजाणतां, जो घर अमल हवंत ॥ मेण ॥ अण ॥ २१ ॥ प्राणीवघ जिएशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे॰ ॥ कर्मादान दशमुं कह्युं, विष व्यापार परूर ॥ मे॰ ॥ अ० ॥ १२ ॥ च-तुर विचार ए चिस धरी, कीजें अमल परिदारे ॥ मे० ॥ खिमाविजय पं-मित तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसानतें, किह्युं शीखामण सार ॥ मन समजावो रे आपणुं, जिम पामो जब पार ॥ १॥ कहे जाइ रूढुं तें ग्रुं करगुं, श्रात-मने हितकार ॥ इहजब परजब सुख घणां, बहियें जयजयकार ॥ कहें १ ॥ १॥ बाख चोराशी योनि तुं जिम, पाम्यो नर श्रवतार ॥ देव गुरु धर्म

न र्जलख्या, न जप्यो मन नवकार ॥ कहे ।॥ ३॥ नव मसवाका उदरें धस्त्रो, पासी पोढो रे कीध ॥ माय ताय सेवा कीधी नहीं, न्यायें मन निव दीध ॥ कहे ।। ।। चामी कीधी रे चोतरे, दंमाव्यां जलां लोक ॥ साधु सहुने संतापिया, त्र्याख चढाव्यां तें फोक ॥ कहे । ॥ ॥ खोजें खाग्यो रे प्राणियो, न गणे रात ने दीस ॥ हाहो करतां रे एकखो, जई हाथ घसीरा ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट उस जेद तें कस्त्रा, जांख्या परनारे मर्म ॥ साते व्यसनने से।वयां, निव कीधो जिनधर्म ॥ कहे०॥७॥ क्तमा न की धी तें खांतरां, दया न की धी रे रेख ॥ परवेदन तें जाणी नहीं, तो द्युं क्षीधो तें जेख ॥कहेण। ७॥ संध्यारंग सम आउखुं, जख पर्पोटो रे जेम ॥ मान अणी उपर बिंडुर्ड, अथिर संसार हे एम ॥ कहेणाए॥ अजदय अनंतकाय वावस्वां,पीधां अणगल नीर ॥रात्रिजोजन तें कस्वां, किम पामीश जवतीर ॥ कहेण ॥ १० ॥ दान शीयल तप जावना, धर्मना चार प्रकार ॥ ते तें जावे न आद्ह्या, रफ़्द्रीश अनंतो संसार ॥ कहे ॥ ११ ॥ पांचे इंडी जे पापिणी, दुर्गति घाले रे जेह ॥ तें तो मेली रे मोकली, किम जाइश शिवगेह ॥ कहे० ॥ ११ ॥ क्रोधें वींट्यो रे प्राणि यो, मान न मूके रे केम ॥ माया सापणी संबही, लोजने लीधो तें तेम ॥ कहे ।। १३ ॥ पररमणी रस मोहियो, परनिंदानो रे ढाल ॥ परझव्य तें निव पारहखुं, परने दीधी रे गाल ॥ कहे ।। १४ ॥ धर्मनी वेला तुं श्रावसु, पाप वेवा उजमात ॥ संच्युं धन कोइ खायरो, जिम मधमा-खी महुत्र्याख ॥ कहेण ॥ १५ ॥ मेखी मेखी मूकी गया, जे उपार्जी रे छा थ ॥ संचय कीजे रे पुण्यनो, जिम आवे तुक साथ ॥कहेण।१६॥ शुद्ध देवगुरु जेखखी, कीजें समकित शुद्ध ॥ मिथ्यामति घूरें करी, राखी नि रमख बुद्ध ॥ पाठांतरें ॥ ग्रुरु शिखामण ए सही, ए जाणे हित बुद्धि ॥ कहेण। १९॥ गोमीदास संघवीतणें, छादरे कीध सद्याय ॥ विनयविजय जवद्यायनो, रूपविजय गुण गाय ॥कहेण।१७॥ इति शीखामण सद्याय॥

> ॥ इप्रथ श्री बारजावनानी बार सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पय नमी, सद्युरुने आधार ॥ जवियण जनने हित

त्रणी, जणशुं जावना बार ॥ १॥ प्रथम अनित्य अशरण पणुं, एह सं सार विचार ॥ एकखपणुं अन्यत्व तिम, अशुचि ब्याश्रव संजार ॥१॥ संव र निर्ज्जर जावना, लोक सरूप सुबोधि ॥ जुल्लह जावन जिन धरम, ए णीपरें कर जीज सोधि॥३॥ रसकूपी रस वेधिन, लोह थकी होये हेम ॥ जीज इण जावन शुद्ध हुये, परम रूप लहे तेम ॥ ४॥ जावविना दाना दिकां, जाणे अलूणुं धान ॥जाव रसांग मल्या थकी, तुटे करम निदान॥५ ॥ ढाल पहेली ॥

॥ जावनानी देशी ॥ पहेली जावना एणी परें जावीयेंजी ॥ अनिक पणुं संसार ॥ मान अणी कपर जल बिंडुर्र जी, इंड धनुष अनुहार ॥ ॥ १॥ सहेज संवेगी सुंदर आतमा जी, धर जिन धर्मसुं रंग ॥ चंचल चपलानी परें चिंतवे जी, कृत्रिम सविहु संग ।। सण्॥शा इंड्जाल सुहणें द्युज अद्युजद्युं जी, कूमो तोष ने रोष॥ तिम ज्रम जूल्यो अधिर पदार्थे जी, रयो कीजें मन शोष ॥ सण ॥ ३ ॥ ठार त्रेह पासरना नेहँज्युं जी, ए यौवन रंग रोल ॥ धन संपद पण दीसे कारमी जी, जेहवा जलकह्वोल ॥ सण्॥ ध्रा सुंज सरिखे मागी जीखकी जी, राम रह्या वनवास ॥ इण संसारें ए सुख संपदा जी, संध्या राग विलास ॥ स० ॥ ५ ॥ सुं दर ए तनु शोजा कारमी जी, विणसंतां नहीं वार ॥ देवतणे वचनें प्रति बूजीयो जी, चक्री सनत कुमार ॥ सण्॥ ६ ॥ सूरज राहु ग्रहणें सम ज्जी जी, श्री कीर्त्तिधर राय ॥ करकंकू प्रतिबूक्यो देखीने जी, वृषत्र जराकुल काय ॥ स॰ ॥ ७ ॥ किहां लगें घूट्या घुवल हरा रहे जी, जल परपोटा जोय॥ आउखं अथिर तिम मनुष्यनं जी, गर्व म करसो कोय॥ जे क्षणमां खेरु होय ॥ सण्॥ ज॥ अतु ति बल सुरवर जिनवर जिस्या जी, चिक हरिबंख जोमी ॥ न रह्यो एणे जमें कोई थिर थई जी, सुरनर न्नूपति कोमी ॥ सण॥ ए॥

॥ दोहा॥

॥ पत पत ठीजे आउखुं, अंजित जल ज्युं एह ॥ चलते साथं संब लो, लेइ सके तो लेह ॥ १॥ ले अचिंत्य गलशुं ग्रही, समय सींचाणो आवि॥ शरण नहीं जिनवयण विण, तेणे हवे अशरण जावि॥ १॥

#### ॥ ढाल बीजी॥

ः॥ राग रामगिरी, राम जाणे हरि किवयें॥ ए देशी॥ बीजी अशरण जावना, जावो त्हद्य मजार रे॥ धरम विना परज्ञव जतां, पापें न सही श पाप रे ॥ जाइश नरक छवार रे, तिहां तुज कवण आधार रे ॥ र ॥ खाल सुरंगा रे प्राणीत्रा॥ मूकने मोह जंजाल रे, मिथ्या मित सवि टाल रे, माया आल पंपाल रे ॥ लाण् ॥ २ ॥ मात पिता सुत कामिनी, न्नाइ नयणि सहाय रे ॥ में में करतां रे अज परें, कर्में प्रद्यो जी जाय रे ॥ खाडो कोइ नवी थाय रे, दुःख न लीये वहेंचाय रे ॥ लाण ॥ ३ ॥ नंदनी सोवन मूंगरी, आखर नावी कोकाज रे ॥ चक्री सुजूम ते जलिथसां, हा खुं खट खंम राज रे ॥ बूड्यो चरम जहाज रे, देव गया सवि नाज रे, खोनें गइ तस लाज रे ॥ लाण ॥४॥ द्वीपायन दही द्वारिका, बलवंत गो विंद राम रे ॥ राखी न शक्यारे राजवी, मात पिता सुत धाम रे ॥ तिहां राख्यां जिननाम रे, शरण की ने मिस्वाम रे ॥ वत लेश अनिरास रे, पो होता शिवपुर ठाम रे ॥ खाण ॥ ए॥ नित्य मित्र सम देहडी, सयणां पर्व सहाय रे ॥ जिनवर धर्म जगारसे, जिस ते वंदनिक जाय रे ॥ रा खे मंत्रि उपाय रे, संतोष्यो वली राय रे, टाह्या तेहना अपाय रे।।लाणा ६॥ जनम जरा मरणादिका, वयरी लागा हे केड रे ॥ अरिहंत शरणुं ते यादरी, जब च्रमण छुःख फेड रे ॥ शिवसुंदरी घर तेड रे, नेह नवल रस रेड रे, सींची सुकुत सुरपेड रे ॥ खाण ॥ ७ ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ यावचा सुत यरहस्वो, जोर देखी जम धाड ॥ संयम शरणं संयसुं, धण कण कंचण ढांक ॥१॥ इण शरणें सुखिया यया, श्री खनाथी खणगार॥ शरण खह्या विण जीवडा, इणी परें रुखे संसार ॥१॥ इति द्वितीय जावना ॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मारुणी॥ त्रीजी जावन इणीपरें जावीयें रे, एह खरूप संसार॥ कर्मवशें जीव नाचे नवनव रंगद्युं रे, ऐ ऐ विविध प्रकार रे ॥ १॥ चेतन चेतीयें रे, खही मानव अवतार ॥ चेणा जव नाटकथी जो हुई उजगा रे, तो ठांडो विषय विकार रे ॥ चेण॥ १॥ कबही जूजल जलणानिल तरुमां जम्यो रे, कबही नरक निगोद॥ बिति चठारें दियमांहे के इ दिन वस्यो रे,

नाक खूंए नयणां ऊरे, काम करी न शकाय ॥ मेण ॥ अण ॥ ए॥ अध-विश्व मारममां पड़े, जीवन मृत्यु समान ॥ में ।। हाथ पगोनी नस गवे अमली आवी शान ॥ मेण ॥ अण्या १०॥ आगराई आवेत्कहो, माल वी मांहे जैल ॥ मेण ॥ आषद्शुं सखरं नहीं, मिश्रीशुं मन मेल ॥ मेण ॥ अण ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे, तसु अहि विष् न जाराय ॥ मेण ॥ अमल घणुं खाधायकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥ मेण ॥ अण् ॥ १२॥ अमुलीने उन्हें रुचे, टाढुं नावे दाय ॥ मेण ॥ खोली रोटी खांम घी, क पर दूध सुद्धाय ॥ मे०॥ अण॥ १३॥ कुलवंती जे कामिनी, जाले जुग ति खुजाण ।। मेणा काति विखी रूपा करी, अमलीने दीए आणा ।। मेण ॥ अए॥ १४॥ प्रीतम आझा पूरती, न करे रीझ लगार ॥ में ॥ कणन न लीपे कतर्नु, ते विरखी संसार ॥ मेण ॥ अण् ॥ १५ ॥ इर्जागणी नारी जिका, बोले कर्कश वाणी ॥ मेण॥ रेरे अधम अफीणिया, आलसवंत अजाए। । मेण।। अण।। १६।। परणी जाई पारकी, शुं की धुं तें घीठ ॥ में ।। पोतानुं पण पेट ए, निवुर जराय न नीव ।। में ।। अ०।। १७।। कान कोट जूषण सह, वेची खाधुं ते ॥ मे०॥ निर्वज तुऊ घरवासमां, कहें सुख पार्म्युं जेह ॥ मेण॥ अण ॥ १०॥ अमल समो असुगो नहीं, मानी ए मुक्त शीख ॥ मेण ॥ बाले सुंदर देहडी, अंते मगावे जीख ॥ मेण ॥ अ०॥ १ए॥ दाविद्यिने दोहिलुं, सूर जग्यानुं शाल ॥ मेण ॥ श्रीमंतने पण नहीं जातुं, जोतां ए जंजाल ॥ मे०॥ अ०॥ २०॥ सासु वहु वहतां इतां, रीई। अमल जखंत ॥ मेण॥ बालक खाये अजाणतां, जो घर अमल इवंत ॥ में ॥ अ०॥ ११॥ प्राणीवघ जिणशुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ में।। कर्मादान दशमुं कह्युं, विष व्यापार परूर ।। में।। अए।। २१॥ च-तुर विचार ए चिस घरी, कीजें अमल परिदारे ॥ मे० ॥ खिमाविजय पं-िमत तणो, कहे माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ शीखामणनी सद्याय ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसाउलें, कहिशुं शीखामण सार ॥ मन समजावो रे श्रापणुं, जिम पामी जब पार ॥ १ ॥ कहे जाइ रूडुं तें शुं करगुं, श्रात-मने हितकार ॥ इहजब परजब सुख घणां, लिह्यें जयजयकार ॥ कहें ० ॥ १ ॥ लाख चोराशी योनि तुं जिम, पाम्यो नर श्रवतार ॥ देव गुरु धर्म न र्जलख्या, न जप्यो मन नवकार ॥ कहे ।॥ ३॥ नव मसवाका उदरें धस्वो, पाली पोढो रे कीध ॥ माय ताय सेवा कीधी नहीं, न्यायें मन निव दीध ॥ कहेव ॥ ४ ॥ चामी कीधी रे चोतरे, दंमाव्यां जलां लोक ॥ साधु सहने संतापिया, आख चढाव्यां तें फोक ॥ कहे । ॥ ॥ लोजें खाग्यो रे प्राणियो, न गणे रात ने दीस ॥ हाहो करतां रे एकखो, जई हाथ घसीश ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट बख जेद तें कस्वा, जांख्या परनारे मर्म ॥ साते व्यसनने से।वयां, निव कीधो जिनधर्म ॥ कहेण॥७॥ क्रमा न की धी तें खांतशुं, दया न की धी रे रेख ॥ परवेदन तें जाणी नहीं, तो शुं खीधो तें नेख ॥कहेण। ए॥ संध्यारंग सम आउखं, जल पर्पोटो रे जेम ॥ माज अणी उपर बिंडुई, अथिर संसार हे एम ॥ कहेणाए॥ श्रजस्य श्रनंतकाय वावस्वां,पीधां श्रणगल नीर ॥रात्रिजोजन तें कस्वां, किम पामीश जवतीर ॥ कहेण ॥ १० ॥ दान शीयल तप जावना, धर्मना चार प्रकार ॥ ते तें जावे न आदस्वा, रजलीश अनंतो संसार ॥ कहे ॥ ११ ॥ पांचे इंडी जे पापिणी, डुर्गति घाले रे जेह ॥ तें तो मेली रे मोकली, किम जाइश शिवगेह ॥ कहेण ॥ १२ ॥ क्रोंधें वींट्यो रे प्राणि यो, मान न मूके रे केम ॥ माया सापणी संयही, लोजने लीधो तें तेम ॥ कहेण ॥ १३ ॥ पररमणी रस मोहियो, परनिंदानो रे ढाल ॥ परइव्य तें निव पारहखुं, परने दीधी रे गाल ॥ कहे ।॥ १४॥ धर्मनी वेला तुं **ञालसु, पाप वेला उजमाल ॥ संच्युं धन कोइ खायरो, जिम मधमा-**खी महुआख ॥ कहे ।। १५ ॥ मेखी मेखी मूकी गया, जे उपार्जी रे आ थ ॥ संचय कीजे रे पुण्यनो, जिम आवे तुर्फ साथ ॥कहेण।१६॥ शुद्ध देवगुरु जंखखी, कीजें समकित गुद्ध ॥ मिथ्यामति दूरें करी, राखी नि रमल बुद्ध ॥ पागंतरें ॥ गुरु शिखामण ए सही, ए जाणे हित बुद्धि ॥ कहेण। १९॥ गोमीदास संघवीतलें, आदरे कींध सद्याय ॥ विनयविजय जवद्यायनो, रूपविजय गुण गाय ॥कहेण।१७॥ इति शीखामण सद्याय॥

॥ छाथ श्री बारजावनानी बार सद्याय पारंजः॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पास जिनेसर पय नमी, सद्युरुने आधार॥ जवियण जनने हित त्रणी, जणशुं जावना बार ॥ १॥ प्रथम श्रनित्य श्रशरण पणुं, एहं सं सार विचार ॥ एकलपणुं श्रन्यत्व तिम, श्रश्चिच श्राश्रव संजार ॥१॥ संव र निर्ज्जर जावना, लोक सरूप सुबोधि ॥ डुल्लह जावन जिन धरम, ए णीपरें कर जीउ सोधि॥३॥ रसकूपी रस वेधित, लोहश्यकी होये हेम॥ जीउ इण जावन शुद्ध हुये, परम रूप लहे तेम ॥ ४॥ जाविना दाना दिकां, जाणे श्रद्धणुं धान ॥ जाव रसांग मह्या थकी, तुटे करम निदान॥ थ ॥ ढाल पहेली ॥

॥ ज्ञावनानी देशी ॥ पहेली ज्ञावना एणी परें ज्ञावीयेंजी ॥ अनिक पणुं संसार ॥ मान व्यणी ऊपर जल बिंडुर्र जी, इंड धनुष व्यनुहार ॥ ॥ १॥ सहेज संवेगी सुंदर आतमा जी, धर जिन धर्मसुं रंग ॥ चंचल चपलांनी परें चिंतवे जी, कृत्रिम सविहु संग॥ सण ॥१॥ इंड्रजाल सुहणें शुज अशुजशुं जी, कूमो तोष ने रोष ॥ तिम ज्रम जूख्यो अधिर पदारथें जी, रयो कीजें मन शोष ॥ सण ॥ ३॥ ठार त्रेह पासरना नेहेज्युं जी, ए यौवन रंग रोख ॥ धन संपद पण दीसे कारमी जी, जेहवा जलकह्वोल ॥ सण्॥ ध॥ सुंज सरिखे मागी जीखरी जी, राम रह्या वनवास ॥ इण संसारें ए सुख संपदा जी, संध्या राग विलास ॥ सण ॥ य ॥ सुं दर ए तनु शोजा कारमी जी, विणसंतां नहीं वार ॥ देवतणे वचनें प्रति बूजीयो जी, चक्री सनत कुमार ॥ सण्॥ ६ ॥ सूरज राहु यहणे सम जी जी, श्री कीर्तिधर राय ॥ करकंकू प्रतिबूज्यो देखीने जी, वृषन जराकुल काय ॥ सण्॥ १॥ किहां लगें भूत्रा भवल हरा रहे जी, जल परपोटा जोय॥ आजखूं अथिर तिम मनुष्यनुं जी, गर्व म करसो कोय॥ जे क्रणमां खेरु होय ॥ स०॥ छ॥ अतु बि बब सुरवर जिनवर जिस्या जी, चिक हरिबल जोमी॥ न रह्यो एए। जमें कोइ थिर थइ जी, सुरनर त्रूपति कोमी ॥ सण॥ ए॥

॥ दोहा॥
॥ पत्न पत्न बीजे आजखुं, अंजिन जल ज्युं एह ॥ चलते साथें संब लो, लेइ सके तो लेह ॥ १॥ ले अचिंत्य गलगुं यही, समय सींचाणो आवि॥ शरण नहीं जिनवयण विण, तेणे हवे अशरण जावि॥ १॥

#### ॥ ढाल वीजी॥

ा। राग रामिगरी, राम जेंण हिर किवियें ॥ ए देशी ॥ वीजी अशरण न्नावना, न्नावो त्हदय मकार रे॥ धरम विना परन्नव जतां, पापें न लही श पाप रे ॥ जाइश नरक छुवार रे, तिहां तुज कवण आधार रे ॥ १॥ खाल सुरंगा रे प्राणीत्रा॥ मूकने मोह जंजाल रे, मिध्या मित सिव टाल रे, माया त्राल पंपाल रे ॥ लाण ॥ २ ॥ मात पिता सुत कामिनी, न्नाइ जयि सहाय रे ॥ में में करतां रे अज परें, कर्में बह्यो जी जाय रे ॥ खाडो कोइ नवी याय रे, फु:ख न लीये वहेंचाय रे II लाण II र II नंदनी सोवन मृंगरी, आखर नावी कोकाज रे ॥ चक्री सुन्नूम ते जलियनां, हा खुं खट खंम राज रे ॥ वूड्यो चरम जहाज रे, देव गया सवि नाज रे, खोनें गइ तस लाज रे ॥ लाण llधा। द्वीपायन दही द्वारिका, वलवंत गो विंद राम रे ॥ राखी न शक्या रे राजवी, मात पिता सुत धाम रे ॥ तिहां राख्यां जिननाम रे, शरण की ने निस्ताम रे ॥ वत लेइ अभिरास रे, पो होता शिवपुर ठाम रे ॥ ला० ॥ ए ॥ नित्य मित्र सम देहडी, सयणां पर्व सहाय रे ।। जिनवर धर्म जगारसे, जिम ते वंदनिक जाय रे ॥ रा खे मंत्रि जपाय रे, संतोष्यो वली राय रे, टाख्या तेहना अपाय रे।।लाणा ६॥ जनम जरा मरणादिका, वयरी लागा वे केड रे ॥ अरिहंत शरणुं ते च्यादरी, जब च्रमण फुःख फेड रे ॥ शिवसुंदरी घर तेड रे, नेह नवल रस रेड रे, सींची सुकृत सुरपेड रे ॥ ला॰ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यावचा सुत यरहस्त्रो, जोर देखी जम धाड ॥ संयम शरणुं संयसुं, धण कण कंचण ठांम ॥१॥ इण शरणें सुखिया थया, श्री खनाधी खणगार॥ शरण लह्या विण जीवडा, इणी परें रुखे संसार ॥१॥ इति द्वितीय जावना ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग मारुणी ॥ त्रीजी जावन इणीपरें जावीयें रे, एह स्कूप संसार ॥ कर्मवरों जीव नाचे नवनव रंगशुं रे, ऐ ऐ विविध प्रकार रे ॥ १ ॥ चेतन चेतीयें रे, खही मानव अवतार ॥ चेण। जव नाटकथी जो हुई उजगा रे, तो ठांडो विषय विकार रे ॥ चेण॥ १॥ कवही जूजल जलणानिल तरुमां जम्यो रे, कवही नरक निगोद ॥ विति चडारेंडियमांहे केइ दिन वस्यो रे,

॥ इम जब जब जे जुख सह्यां, ते जाणे जगनाथ ॥ जयजंजण जा-वंठ हरण, न मख्यो अविहर साथ ॥ १ ॥ तिण कारण जीव एकसो, ठोमी राग गलपास ॥ सवि संसारीजीवशुं, धरी चित जाव उदास ॥१॥ ॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग गोमी ॥ पूत न कीजे हो साधु विसासको ॥ चोथी जावना जिवयण मन धरो, चेतन तुं एकाकी रे ॥ आव्यो तिम जाइश परजव वली, इहां मूकी सिव बाकी रे ॥ मम करो ममता रे समता आदरो ॥ र ॥ आणो चित्त विवेको रे ॥ स्वारिषयां सद्धान सहुए मख्यां, सुख छुल सहेशे एको रे ॥ ममणा १ ॥ वित्त वहेंचण आवी सहुये मले, वि पति समय जाय नाशी रे ॥ दव बलतो देखी दश दिशें पुले, जिम पंखी तरुवासी रे ॥ ममण ॥ ३ ॥ खट खंम नविधि चौद रयण धणी, चौसठ सहस्स सुनारी रे ॥ वेहके छोमी ते चाल्या एकला, हास्था जम जूआरी रे ॥ ममण ॥ ४ ॥ त्रिज्ञवन कंटक बिरुद धरावतो, करतो गर्व ग्र मानो रे ॥ नागा विण नागा तेष्ठु चल्या, रावण सिरला राजानो रे ॥ ममण ॥ १ ॥ ममण ॥ १ ॥ ममण ॥ १ ॥ ममण ॥ १ ॥ नत्य लगें काया रे आलर एकलो, प्राणी चले परलोको रे ॥ ममण ॥ ६ ॥ नित्य कलाया रे आलर एकलो, प्राणी चले परलोको रे ॥ वलयानी परें विह लहों बहु मेलें देखी । वस्तुं नमीरायो रे ॥ ममण ॥ ९ ॥ इति चतुर्थ जावना ॥ रिस एकलो, इम बुज्यो नमीरायो रे ॥ ममण ॥ ९ ॥ इति चतुर्थ जावना ॥

ा। दोहा ॥

ा जवसायर बहु डुख जखें, जामण मरण तरंग ॥ ममता तंतु तिणें यहां, चेतन चतुर मतंग ॥ १॥ चाहे जो ढोकण जणी, तो जज जग-वंत महंत ॥ दूर करे पर बंधने, जिम जखथी जलकंतु ॥ १॥ ॥ ढाख पांचमी ॥

॥राग केदारो गोमी ॥कपूर हुवे ख्रित जजलो रे॥ ए देशी ॥ पांचमी जावन जावीयें रे, जिंछ ख्रन्यत्व विचार॥व्यापसवार्थी ए सहु रे, मिल्र तुज परिवार ॥ १ ॥ संवेगी सुंदर, बूज मा मूंज गमार ॥ तहारुं को नहीं इण संसार, तुं केहनो निह निरधार ॥सं० ॥ १ ॥ पंथितरे पंथी मद्धा रे, कीजें किण्छुं प्रेम ॥ राति वसे प्रह छठ चले रे, नेह निवाहे केम ॥ सं० ॥ ३ ॥ जिम मेलो तीरथ मले रे, जन वणजनी चाह ॥ के त्रोटो के फाय दो रे, लेइ लेइ निजघर जाय ॥ सं० ॥ ४ ॥ जिहां कारज जेहनां सरे रे, तिहां लगें दाले नेह ॥ सूरीकंतानी परे रे, छटकी देखामे छेह ॥सं०॥४॥ चुलणी ख्रंगज मारवा रे, कूछं करी जतुगेह ॥ जरत बाहुबल फूजीया रे, जो जो निजना नेह ॥ सं० ॥ ६ ॥ श्रेणिक पुत्रें वांधी रे, लीधुं वेहेंची राज्य ॥ इःल दीधुं वहु तातने रे, देखो सुतनां काज ॥ सं० ॥ ७ ॥ इणजावन शिवपद लहे रे, श्री मरुदेवी माय ॥ वीरशिष्य केवल लहुं रे, श्री गौतम गणराय ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति पंचम जावना ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोह वसु मन मंत्रवी, इंडिय मख्या कलाख ॥ प्रमाद मदिरा पाइ के, वांध्यो जीव जूपाल ॥ १ ॥ कर्म जंजीर जमी करी, सुक्रत माल स वि लीध ॥ अशुज विरस पुरगंधमय, तनगो तहरें दीध ॥ १ ॥ ॥ ढाल वही ॥

॥ राग सिंधु सामेरी ॥ वही जावना मन धरो, जीव श्रश्चित्र जरी ए काया रे, शी माया रे, मांके काचा पिंक्शुं ए ॥ १ ॥ नगर खाल परें नितु वहे, कफ मल मूत्र जंकारों रे, तिम द्वारों रे, नर नव द्वादश नारिनां ए ॥श॥ देखी छुरगंध छूरथी, तुं मुद्द मचकोंके माणे रे, निव जाणे रे, तिण पुद्गल निज तनु जखुं ए ॥ ३ ॥ मांस रुधिर मेदारसें, श्रस्थि मज्जानर वीजे रे, शुं रीजे रे, रूप देखी देखी श्रापणुं ए ॥४॥ कृमिवालादिक को थली, मोहरायनी चेटी रे, ए पेटी रे, चर्म जडी घणा रोगनी ए ॥५॥ ग जीवास नव मासतां, कृमिपरें मलमां विसयो रे, तुं रिसयो रे, उंधे माथें इम रह्यो ए ॥ ६ ॥ कनक कुमरी जोजन जरी, तिहां देखी फुरगंध बूज्या रे, अति जूज्या रे, मिल्लि मित्र निज कर्मशुं ए ॥॥। इति उठी जावना ॥ ॥ दोहा ॥

॥ तन विद्वर इंडी महा, विषय कलण जंबाल ॥ पाप कल्लुष पाणी जख़ं, आश्रव वहे गडनाल ॥१॥ निर्मल पख सहमें सुगति, नाण विनाण रसाल ॥ ग्रुं बगनी परें पंकजल, चूंथे चतुर मराल ॥ १॥

॥ ढाल सातमी ॥

ी। राग धोरणी ॥ व्याश्रवजावना सातमी रे, समजो सुगुरु समीप॥ क्रोधांदिक कांइ करो रे, पामी श्रीजिन दीपो रे ॥१॥ सुण सुण श्राणीया, परिहर आश्रव पंचो रे ॥ दशमे अंगें कह्या, जेहना दुष्ट प्रपंचो रे ॥सुण। र ॥ होंशें जे हिंसा करे रे, ते खहे कटुक विपाक ॥ परिहोसें गोत्रासनी रे, जो जो श्रंगविपाको रे ॥ सुण ॥ ३ ॥ मिथ्या वयणें वसु नड्यो रे, मंनि क परधन खेई ॥ इण अब्रह्में रोखव्या रे, इंडादिक सुर केई रे ॥ सुणाधा महा आरंज परियहें रे, ब्रह्मदत्त नरय पहुत्त ॥ सेव्यां शत्रुपणुं जजे रे, पांचे प्ररगति घूतो रे ॥ सु॰ ॥ ५ ॥ विद्र सहित नावा जहें रे, बूढे नीर जराय ॥ तिम हिंसादिक आश्रवं रे, पापें पिंम जरायो रे ॥ सुण ॥ ६ ॥ अविरति लागे एकें दिया रे, पाप स्थान अहार ॥ लागे पांचेही कीया रे, पंचम खंग विचारो रे ॥ सु॰ ॥ ७ ॥ कटुक किया थानक फलां रे, बोख्या बीजे रे छंगं।। कहेतां हीयमुं कमकमे रे, विरुष्ठ तास प्रसंगो रे॥ सुण॥ ए ॥ मृग पतंग छिति मावलो रे, करी एक विषय प्रपंच ॥ छित्या ते किम सुख खहे रे, जस परवस एह पंचो रे ॥ सुण ॥ ए॥ हाल्य निंद वि कथा वसें रे, नरक निगोदे रे जात ॥ पूरवधर श्रुत हारीनें रे, अवरांनी शी वातो रे ॥ सुण ॥ २० ॥ इति सप्तम जावना ॥ ॥ दोहा ॥

ा। शुज मानस मानस करी, ध्यान अमृत रस रेखि ॥ नवदल श्रीनव कार पय, करी कमलासन केखि ॥ १ ॥ पातक पंक पखालीनें, करी संव रनी पाल ॥ परम इंस पदवी जजो, बोडी सकल जंजाल ॥ १ ॥

#### ॥ ढाख ञ्राप्तमी ॥

॥ उल्नी देशी ॥ श्राहमी संवर जावनाजी, धरी चितसुं एक तार॥स मिति ग्रिप्त सूधी घरोजी, श्रापो श्राप विचार ॥ सलूणा, शांति सुधारस चाल ॥ ए श्रांकणी ॥ विरस विषय फल फूलडेजी, अटतो मन श्राल रा ल ॥ सण् ॥ १ ॥ लाज श्रालाजें सुल छुलेंजी, जीवित मरण समान ॥ शतु मित्र सम जावतो जी, मान श्राने श्रापमान ॥ सण् ॥ १ ॥ कहीयें परिप्रह ग्रांमग्रं जी, लेग्रं संयम जार ॥ श्रावक चिंते हुं कदा जी, करीश संया रो सार ॥ सण् ॥ ३ ॥ साधु श्राशंसा इम करे जी, सूत्र जणीश ग्रुरु पा स ॥ एकल मल्ल प्रतिमा रही जी, करीश संलेषण खास ॥ सण् ॥ ४ ॥ सर्व जीविहत चिंतवे जी, वयर मकर जगिमत ॥ सत्य वयण मुल जां खियें जी, परिहर परनुं विच ॥ सण् ॥ ५ ॥ काम कटक जेदण जाणी जी, धर तुं शीलसनाह ॥ नविध्य परिप्रह मूकतां जी, लहियें सूख श्रयाह ॥ सण् ॥ ६॥ देव मणुश्र जपसर्गशुं जी, निश्चल होइ सधीर ॥ बावीश प रिसह जीपीयें जी, जिम जींत्या श्रीवीर ॥सण्।।।। इति श्रष्टम जावना ॥ ॥ दोहा ॥

॥ दृढ प्रहारि दृढ ध्यान धरी, गुणनिधि गज सुकुमाख ॥ मेतारज सद न जमो, सुकोशल सुकुमाल ॥ १॥ इम अनेक मुनिवर तस्त्रा, जपशम संवर जाव ॥ कठिन कम सवि निर्ज्जस्यां, तिण निर्ज्जर प्रस्ताव ॥ १ ॥ ॥ दाल नवमी ॥

॥ राग गोडी, मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ नवमी निर्कार पावना ॥ चित चेतो रे ॥ आदरो वत पचरकाण ॥ चतुर चित चेतो रे ॥ पाप आ खोचो ग्ररु कने ॥ चि० ॥ धरियें विनय सुजाण ॥ च० ॥ र ॥ वेयावच चहुविध करो ॥ चि० ॥ ध्रवेल बाल गिलान ॥ च० ॥ आचारज वाचक तणो ॥ चि० ॥ शिष्य साधर्मिक जाण ॥ च० ॥ श्र ॥ तपसी कुल गण संघनो ॥ च० ॥ श्रिवर प्रवर्त्तक वृद्ध ॥ च० ॥ वेल जृक्ति बहुनिर्कारा ॥ च० ॥ दशमे अंग प्रसिद्ध ॥च०॥३॥ जजय टंक आवश्यक करो ॥ च०॥ सुंदर करि सद्याय ॥ च० ॥ पोसह सामायिक करो ॥ च० ॥ निल्य प्रत्यें नियमन जाय ॥च०॥॥ कर्मसूडन कनकावली ॥ चि० ॥ सिंह निक्रीडित दोय ॥ च० ॥ श्रीगुण रयण संवत्सरू ॥ चि०॥ साधु पितम दश दोय ॥

चंग ॥ ए ॥ श्रुत आराधन साचवो ॥ चिग ॥ योग वहन उपधान ॥ चग ॥ श्रुक्षध्यान सूर्धुं धरो ॥ चिग ॥ श्री आंबिल वर्क्षमान ॥ चग ॥ ६ ॥ चौद सहस्स आणगारमां ॥ चिग ॥ धन धन्नो आणगार ॥ चग ॥ स्वयमुख वीर प्रशंसी ॥ चिग ॥ खंधक मेघकुमार ॥ चगा।॥ इति नवम जावना ॥ ॥ दोहा ॥

ा मन दारु तननाखि करि, ध्यानानख सखगावि ॥ कर्मकटक जेदण जणी, गोला ज्ञान चलावि ॥ १ ॥ मोहराय मारीकरी, उंचो चढी छ-वलोय ॥ त्रिजुवन मंक्प मांकणी, जिम परमानंद होय ॥ १ ॥

॥ ढाख दशमी ॥

॥ राग गोमी, जंबूद्दीप मजार ॥ ए देशी ॥ दशमी क्षोक सक्ष्प रे, जा वन जावीयें, निसुणि गुरु जपदेशयी ए ॥ १ ॥ जर्ध्वपुरुष श्राकार रे, पग पहूला घरी, कर दोर्ज किट राखियें ए ॥ १ ॥ श्रण श्राकार लोकरे, पुद्गल प्रिश्तं, जिम काजलनी क्रूपली ए ॥ ३॥ धर्माधर्माकाश रे, देश प्रदेश ए, जीव श्रनंतें प्रीठं ए ॥ ४ ॥ सात राज देशोन रे, जर्क तिरिय मली, श्रधोलोक सात साधिकूं ए ॥ ५ ॥ वीदराज त्रसनामी रे, त्रसजीवाल य, एक रक्कू दीर्घ विस्तरू ए ॥ ६ ॥ वर्ध्वसुरालय सार रे, निरय जुवन नीचें, नाजें नर तिरि दो सुरा ए ॥ ९॥ द्वीप समुद्ध श्रसंख्य रे, प्रज मुख सांजली, राय क्रिव शिव समजीठं ए ॥ ० ॥ लांबी पोहोली पण्याल रे, लखजोयण लही, सिद्धशिला शिर कजली ए ॥ ए ॥ वंचा धनुसय तीन रे, तेत्रीश साधिकें, सिद्ध योजननें ठेहमे ए ॥ १०॥ श्रजर श्रमर निकलंक रे, नाण दंसण मय, ते जोवा मन गह गहे ए॥ १०॥ इति दशम जावना ॥ ॥ दोहा ॥

॥ वार अनंती फरसीर्छ, ढांखी वाटक न्याय ॥ नाण विना निव संज रे, खोक ज्रमण जमवाय ॥ १ ॥ रत्नत्रय त्रिहुं जुवनमें, डुख़ह जाणी द्र याख ॥ बोधि रयण काजें चतुर, आगम खाणि संजाख ॥ १ ॥

॥ ढाख अगीआरमी॥

॥ राग खंजाती ॥ दश दष्टांते दोहिसो रे, साधो मणुळ जमारो रे॥ इ ह्महो जंबर फूलज्युं रे, ळारज घर ळावतारो रे ॥ मोरा जीवन रे, बोधि जावना इग्यारमी रे, जावो त्द्दय मजारो रे ॥ मो० ॥ १ ॥ ए ळांकणी ॥ उत्तम कुल तिहां दोहिलो रे, सहग्रह धर्म संयोगो रे ॥ पांचें इंडिय परव डां रे, छुल्लहो देह निरोगों रे ॥ मो० ॥ १ ॥ सांजलबुं सिद्धांतवुं रे, दोहि खुं तस चित्त धरबुं रे ॥ सूधी सहहणा धरी रे, छुक्कर छांगें करबुं रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सामग्री सघली लही रे, मूढ मुधा ममहारो रे ॥ चिंतामणि देवें दी हो रे, हास्त्रों जेम गमारों रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ लोह कीलकने कारणे रे, कु ण यान जलधिमां फोडे रे ॥ गुण कारण कोण नवललो रे, हार हीयानो त्रोडे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ बोधि रयण ठवेलीनें रे, कोण विषयार्थें दोडे रे ॥ कांकर मणि समोविड करे रे, गज वेचे लर होडे रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गीत सुणी नटणी कने रे, छुल्लकें चित्त विचाखं रे ॥ कुमारादिक पण समजी या रे, बोधि रयण संजाखं रे ॥ मो० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परिहर हरिहर देव सवि, सेव सदा अरिहंत ॥ दोष रहित गुरु गणधरा, सुविहित साधु महंत ॥ १ ॥ कुमति कदायह मूकतुं, श्रुत चा रित्र विचार ॥ जवजस तारण पोतसम, धर्म हियामां धार ॥ २ ॥

॥ ढाख वारमी॥

॥ गुंगरीयानी देशी ॥ धन धन धर्म जगहित करु, जांख्यो जलो जिनदेन रे ॥ इह परजन सुख दायको, जीवडा जनम लिंग सेन रे ॥ र ॥ जानना सरस सुर नेलडी, रोपि तुं हृद्य व्याराम रे ॥ सुकृत तरु लिह्य वहु पसरती, सफल फलरो व्यजिराम रे ॥ जाण ॥ १ ॥ क्तेत्रशुद्धि करिय करुणा रसें, काढि मिथ्यादिक शाल रे ॥ गुपति त्रिहुं गुपति रूडी करें, नीक तुं सुमतिनी वाल रे ॥ जाण ॥ ३ ॥ सींचजे सुगुरु नचनामृतें, कुम ति कंथेर तजी संग रे ॥ क्रोध मानादिक सूकरा, वानरो वारि व्यनंग रे ॥ जाण ॥ ४ ॥ सेनता एहने केनली, पन्नर सय तीन व्यणगार रे ॥ गौतम शिष्य बिनपुर गया, जानतां देन गुरु सार रे ॥ जाण॥ ५ ॥ शुक्र परिवाजक सीधलो, व्यर्जनमाली शिन वास रे ॥ गाय परदेशी जे पापिन, कापिन ता स जुलपास रे ॥ जाणा ६॥ जुलमाली शिन वास रे ॥ गाय परदेशी जे पापिन, कापिन ता स जुलपास रे ॥ जाणा ६॥ जुलम समय जुप्पसह लगें, व्यवहल शासन एह रे ॥ जानशुं जनियण जे जजे, तेह गुजमति गुण गेहरे ॥ जाणा ९ ॥

॥ दोहा ॥ तपगहरपति विजय देवगुरु, विजयसिय मुनिराय ॥ शुक्र धर्म दायक सदा, प्रणमो एइना पाय ॥ १॥

1

#### ॥ ढ़ाख तेरमी ॥

॥ राग धनाश्री ॥ तुमें जावो रे, जिंव इणी परें जावना जावो ॥ तन मन वयण धर्म खय खावो, जिम सुख संपद पावो रे ॥ जिंग ॥ र ॥ खंबना खोचन चित न मोखावो, धन कारण कांइ धावो ॥ प्रजुद्युं तारो तार मि खावो, जो होय शिवपुर जावो रे ॥ कांइ गर्जावास न खावो रे ॥ जिंग शिख श ॥ जबूनी परें जीव जगावो, विषय धकी विरमावो ॥ ए हित शीख खमारी मानी, जग जस पडह वजावो रे ॥ जण्॥ ३ ॥ श्री जशसोम विबुध वैरागी, जग जस चिंहु खंम चावो ॥ तास शिष्य कहे जावन जण तां, घर घर होये वधावो रे ॥ जण्॥ ४ ॥ दोहा ॥ जोजन नज गुण वरस शुचि, सित तेरस कुजवार ॥ जगित हेतु जावन जणी, जेसखमेर मजार ॥ जणाय॥ इति श्री जशसोम शिष्यजयसोम कृत द्वादश जावना संपूर्णा॥ आध्य सीताजीनी सञ्चाय प्रारंज ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम वे श्रंतरजामी ॥ पाखव श्रमारो मे खने पापी, कुखने लागे हे खामी ॥ अडहाो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ०॥ माहारो नाहली छहवाय ॥ अ०॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ छा ॥ महारुं मन मांहेथी छकुलाय ॥ छा ॥ १ ॥ ए छांकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पहर पंकज करो ॥ जो जलिध मर्यादा मूके, पांग हो अंबर पूर्गे ॥ अ० ॥ १ ॥ तो पण तुं सांजलने रावण, निश्चय शील न खंकुं ॥ प्राणे अमारो परखोक जाये, तो पण सत्य न ढंकुं ॥ अ० ॥ ३॥ कु ण मणिधरना मणि लेवाने, हैयडे घाले हाम॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ छा।।।।। परदारानो संग करीने, छाखो कोण उ गरियो ॥ उंदुं तो तुं जोए आलोची, सही तुज दाहाडो फरियो ॥ अणा ॥ ५॥ जनकसुता हुं जग सहु जाणे, नाममल हे नाइ ॥ दशरथ नंदन शिर हे खामी, खखमण करशे लड़ाइ ॥ अ०॥ ६॥ तुं धणीयाती पीछ गुणराती, हाथ वे महारे वाती॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये हे काती ॥ छण। उदयरतन कहे धन्य ए छवला, सीता जेहनुं ना म॥सतियांमांहे शिरोमणि कहीयें, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अणाण ॥ ॥ अय नोकारवाखीनी सद्याय ॥

॥ बार जपुं ऋरिहंतना, जगवंतना रे गुण हुं निशदीस ॥ सिद्ध आठ गुण

जाणियं, वलाणीयं रे ग्रण सूरि बत्रीश ॥ नोकारवाली वंदीयं ॥ १॥ चिर नंदियं रे जठी गणीयं सवेर ॥ सूत्रतणा ग्रण गूंथिया, मिएक्या मोहन रे मह मोटो मेर ॥नोक०॥१॥ पंचवीश जवद्यायना, सत्तावीश रे गुण श्रीळण गार ॥ एकशो ळाठे गुणें करी, इम जपीयें रे जिवयण नवकार ॥नोक० ॥ १ ॥ मोक् जाप अंगुठहे, वैरी जूठहे रे तर्ज्जनी अंगुली जोय ॥ बहु सुख दायक मध्यमा, ळनामिका रे वश्यारथ होय ॥नोक०॥४॥ छाकर्षण टची अंगुली, वली सुणजो रे गणवानी रीति ॥ मेरु जल्लंघन म म करो, म म कराजो रे नख अयें प्रीति ॥नोक०॥५॥ निश्चल चित्तें जे गणे, जे गणे संख्या दिकथी एकांत ॥ तेहने फल होए ळातिघणुं, इम वोले रे जिनवर सिक्जांत ॥ नोक०॥६॥ शंख प्रवाल फटिक मिण, पत्ता जीव रतांजली मोती सार॥ रूप सोवन रथण तणी, चंदन ळवर ळागरने घनसार ॥ नोक०॥ऽ॥ सुंदर फल रुप्तक्ती, जपमालिका रे रेशमनी ळापार ॥ पंच वरण सम सूत्र नी, वली वस्तुविशेष तणी जदार ॥ नोक० ॥ ए ॥ गौतम पूर्वतें कह्यो, महावीरें रे ए सथल विचार ॥ लिध्य कहे जिवयण सुणो, गणजो जण जो रे निल्य निल्य नवकार ॥ नोक० ॥ ए ॥ इति ॥

#### ॥ अथ वर्णजारानी सद्याय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणुं ॥ घण्कारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायकरे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ वण् ॥ पोठी जरजे उदार ॥ अण् ॥ १ ॥ शुज परिणाम विचित्रता ॥ वण् ॥ करियांणां वहु मूल ॥ अण् ॥ मोक् नगर जावा जणी ॥ वण् ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अण् ॥ १ ॥ कोध दावानल उलवे ॥ वण् ॥ मान विषय गिरिराज ॥ अण् ॥ उलंघजे हलवें करी ॥ वण् ॥ साधधान करे काज ॥ अण् ॥ ३ ॥ वंशजाल माया तणी ॥ वण् ॥ नवि करजे विश्वराम ॥ अण् ॥ खामी मनोर्थ जट तणी ॥ वण् ॥ प्रण्तुं नहीं काम ॥ अण् ॥ आण् ॥ शा मनोर्थ जट तणी ॥ वण् ॥ प्रण्तुं नहीं काम ॥ अण् ॥ अ॥ रागद्वेष दोय चोरटा॥वण् । वाटमां करशे हेरान ॥ अण् ॥ विविध वीर्य जल्लास्थी ॥ वण् ॥ ते हण् जे रे ठाय ॥ अण् ॥ थ ॥ एम सवि विधन विदारीने ॥ वण् ॥ पहोंचजे शि वपुर वास ॥ अण् ॥ क्याजपशम जे जावना ॥वण् ॥ पोठें जस्त्रा गुण राश । अण् ॥ ६ ॥ खायक जावें ते थशे ॥ वण् ॥ वाज होशे ते अपार॥अण्॥ उत्तम वण्ज जे एम करे ॥ वण् ॥ पद्म नमे वारं वार ॥ अण् ॥ इति ॥

॥ अय सोदागरनी सद्याय॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघां मुलनां मोती ॥ ए देशी ॥
॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें सोदागर घूर विदेशी,
सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतनपुरीमां गया ॥
॥ सुण ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समृकाया, जिनसें बहोत न फाया ॥
पांचुं दीवानुं पाऊं जडाया, एककुं चोकी विगया ॥ सुण ॥१॥ नफा देल
कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां॥ दोनुं दगाबाजी घूर करनां,
दीपकी ज्योतें फिरनां ॥ सुण ॥३ ॥ ठरदिन वली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं
न हिलानां ॥ दश सहेरसें दोस्तिहिं करनां, जनसें चित्त मिलानां ॥सुण॥
॥ ४ ॥ जनहर तजनां जिनवर जजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसर
हार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सुण ॥ ४ ॥ शिरपर मुगट
चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाइ ॥ श्रीशुजवीर विजय घर जाइ, होत
सतावी सगाइ ॥ सुण ॥ ६ ॥ इति ॥ सोदागरनी सलाय ॥

॥ अथ आपख़जावनी सद्याय ॥

॥ आप खजावमां रे, अबधू सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे कर माधीना, अचरिज कबुअ न लीना ॥ आण्॥ १॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पास, अवर सबे अने रा ॥ आण्॥ १ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनको विलासी ॥ वपु संग जब इर निकाशी, तब तुम शिवका वासी ॥ आण्॥ ३॥ राग ने रीसा दोय खबीसा, ए तुम इखका दीसा ॥ जब तुम जनकुं इर करी सा, तब तुम जगका ईसा ॥ आण्॥ ४॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अज्यासा, बहो सदा सुखवासा ॥ आण्॥ १ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अप जा जी ॥ कबहींक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुजलकी बाजी ॥ आण्॥ ६ ॥ शुद्ध जपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कमें कखंककुं इर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आण्॥ ९॥ इति सद्याय ॥

॥ श्रा सहजानंदीनी सद्याय ॥ बीजी श्रासरण जावना ॥ ए देशी ॥ ॥ सहजानंदी रे श्रातमा, सूतो कांइ निश्चित रे ॥ मोह तणा रणीया जमे, जाग जाग मतिवंत रे ॥ खूंटे जगतना जंत रे, नाखी वांक श्रसंत रे, नरकावास ठवंत रे, कोइ विरखा उगरंत रे ॥ से०॥ १॥ राग द्रेष परिएति जजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुंसुम परें जीवडो, फ़ोगट जनम गमाय रे, माथे जय जमराय रे, इयो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ से ।। १॥ रावण सरिला रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रडवंड्यां, चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि जाग रे, न रह्यो माननो छाग रे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो जाइलंना राग रे ॥ से० ॥ ३॥ केइ चाखा केइ चालरो, केता चालणहार रे॥ मारग बहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोतां लग्न हजार रे ॥ देश विदेश सधार रे, ते नर एणें संसार रे ॥ जातां जम दर वार रे, न जुवे वार कुवार रे॥ से०॥ ४॥ नारायण पुरीद्वारिकां, बखती मेखी निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु बाया त्रावास रे ॥ जल जल करी गयो सास रे ॥ बलजड सरोवर पा स रे, सुणी पांकव शिववास रे ॥ से० ॥ थ॥ राजी गाजीने बोखता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए इन्छि अधिर निदान रे ॥ जेवुं पींपल पान रे, म ध रो जूठ गुमान रे ॥ से० ॥६॥ वाखेसर विना एक घडी, निव सोहातुं ख गार रे ॥ ते विना जननारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे ॥ नहीं कोइ केइनो संसार रे, स्वारचीयो परिवार रे ॥ माता मरुदेवी सार रे, पोहोतां मोक् मोजार रे॥ से०॥ ७॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार र ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंढे विषय गमार रे, जुवो सूरिकांता जे नार रे, विख देती जरतार रे, नृप जिन धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे॥ से०॥ ७॥ इसी इसी देता रे ताखीयो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर छाते माटी थया, खोक चणे घर बार रे, घड ता पात्र कुंजार रे, एहवुं जाणी श्रसार रे ॥ ढोड्यो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे॥ से०॥ ए॥ यावचासुत शिव वस्वा, वली ए लाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् । वषया रे जीवने, लइ वैराग्य रसाल रे, मेहेखी मोह जंजाख रे, घर रमे केवख बाख रे, धन्य करकंकू जूपाल रे ॥ से ।। १०॥ श्री शुज्जविजय सुगुरु खही, धर्मरयण धरो हेक रे ॥ वीर वचन रस शेखडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर जेक रे, धरता ध

## र्मनी टेक रे, जवजल तरिया अनेक रे॥ से०॥ ११॥ इति॥ ॥ अथ चेतन शिखामणनी सञ्चाय॥

॥ चेतन अब कतु चेतीयं, ज्ञान नयण जवाडी ॥ समता सहजपणुं जज़ो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ या छनीयां हे बावरी, जेती वा जीगर बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले, ज्युं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ माया तरुवाया परें, न रहे थिरकारी ॥ जानत हे दिलमें जनी, पण क रत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोण्झुं यारी ॥ पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४ ॥ परमातम अविच ल जजो, चिदानंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुख कारी ॥ चे० ॥ ४ ॥ इति ॥

### ॥ अथ आत्मबोधनी सञ्चाय ॥

॥ हो सुण आतमा मत पड मोहपंजर मांहे ॥ साया जाल रे ॥ धन रा ज्य जोवन रूप रामा, सुत सुता घरबार रे ॥ हुकुम होदा हाथी घोडा, कारिमो परिवार ॥ माया जाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ आतुल बल हिर चकी रा मा, जुजोर्जित मदमत्त रे ॥ कुर जमबल निकट आवे, गिलत जाये सत्त ॥ माया० ॥ हो० ॥ १ ॥ पुह्वीने जे ठत्र परें करे, मेरुनो करे दंग रे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंग ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥ जे त खत बेसी हुकुम करता, पेहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा घरत टेडा, मरी गया जमदेश ॥ मा० ॥हो० ॥ ४ ॥ मुल तंबोलने अधर राता, करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल पुष्य घाठे, करत परघर टेल ॥ मा० ॥ हो० ॥ ४ ॥ जज सदा जगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥ रूप कहे कस्य धर्मकरणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ मा० ॥ हो० ॥ इति० ॥

# ॥ अथ आत्मबोधनी सद्याय ॥

॥ स्रांजल संयणा साची सुणावुं, पूरव पुर्णे तुं पाम्यो रे जाइ ॥ नरक निगोदमां जमतां नरजव, तें निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सांण ॥ १ ॥ जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरि खा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ साण ॥ १ ॥ कल्पवृक्त कू हाडे काषी, धंतुरो घर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग उडाडण डारे रे जाइ॥ सां०॥ शं॥ एम जाणी जावा निव दीजें, नर ना री नर जवनें रे जाइ॥ उंलखी शुद्ध धर्मने साधा, जे मान्यो मुनि मननें रे जाइ॥ सां०॥ ४॥ जे विजाव परजावमां जिजेयें, रमण खजावमां करीयें रे जाइ॥ उत्तमपदपद्मने अवलंबी, जावयण जवजल तरीयें रे जाइ॥ सां०॥ ४॥ इति आदम हित शिक्ता सञ्चाय॥

### ॥ अर्थ रात्रिजोजननी सञ्चाय प्रारंजः॥

ी। पुएय संजोगें नरत्रव लाधो, साधो त्र्यातम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरखो, एम जांखे जिनराज रे ॥प्राणी॥ रात्रिजोजन वारो ॥ त्रागम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे ॥ प्राणी ॥ रात्रिणा र ॥ ॥ ए आंकणी ॥ अनद्य वावीशमां रयणीनोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मृत जमजो ॥ जो हुवे हृइडे शान रे ॥ प्राण्॥ १ ॥ दान स्नान आयुधने जोजन, एटलां रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन समजीजें रे ॥ प्राण ॥ ३ ॥ जत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले जोजन टालो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरावो, किम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीडी कोलीआवडो, जोजनमां जो श्रांबे ॥ कोढ जलोद्र वमन विकलता, एवा रोग जपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५॥ वन्नं जब जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥ एक तलाव फोडंतां ते टब्लं, दूपण सुगुरु वतायुं रे ॥ प्रा०॥ ६॥ एकबोत्तर जन सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप॥ अठलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥प्रा०॥॥। एक शा चुम्माखीश जब खगें कीथा, कुवणिजना जे दोष ॥ कूर्नु एक कलंक दियंतां, तेह्वो पापनो पोष रे ॥ प्रा०॥ ए॥ एक शो एकावन जब लगें दीधां, कूडां कलंक अपार॥ एक वार शील ल ड्या जेवो, श्रनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा०॥ ए॥ एक शो नवाशुं जव क्षरें खंड्या, शीयल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिजीजनमां, कर्म निकाचि त वंध रे ॥प्रा०॥रण। रात्रिजोजनमां दोष घणा हे, रयो कहीयें विस्तार ॥ केवली केहतां पार न पावे, पूरव कोडी मजार रे ॥ प्रा॰ ॥ ११ ॥ एवं जा णीने उत्तम प्राणी, नित्य चोविहार करींजे ॥ मासें मासें पासलमणनो, खाज एणे विधे लीजें रे ॥ प्राण्॥ ११ ॥ मुनि वसतानी एह शिखाम ण, जे पाले नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक् तणा श्रिष कॉरी रे ॥ प्राण्॥ १३ ॥ इति रात्रिजोजननी सद्याय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सद्याय ॥ राग प्रजाती ॥

॥ जोवितयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडी घडी घडी घडी यांतां वाजे, तोही न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्तसी जोर करे हे, फेलावी फजेती रे ॥ आवी अवधें ठंशंके नहीं, लखपितने लेती रे ॥ जो० ॥ १ ॥ मालें बैठो मोज करे हे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो जमरो ताणी लेशे, गोफण गोला सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जे ते ऊपर जोर करो हो, चतुर जुवोने चेती रे ॥ मांधाता सरखा नरबित्या, राजिवया थया रेती रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ जिनराजाने शरणे जाठं, जोरालो को न जेथी रे ॥ छिनयामां छुजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दंत पड्याने मोसो थयो, काज सखुं नहीं केथी रे, उदयरत कहे आपं सम जों, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥ ६ ॥

॥ अथ शीयल विषे पुरुषने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शील सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, परना री तणी ॥ जयलो ॥ परनारी साथें प्रीत पिछडा, कहो किए परें की जियें ॥ जंघ वेची आपणी, जजागरो किम ली जियें ॥ काठडी तूरों कहे लंपर, लोकमांहे लाजियें ॥ कुल विषय लंपण रखे लागे, सगामां केम गाजियें ॥ रा। चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां वीही जीयें ॥ रखे को इ जाणे रे, मन गुं प्रूजीयें ॥ उ० ॥ प्रूजीयें मनगुं फूरीयें पण, जोग मलवो हे नहीं ॥ रात दिन विलयतां जाये, अवटाइ मरवुं सही ॥ निज नारियी संतोष न वल्यो, परनारियी कहो गुं हशे॥जो जरे जाणे तृति न वली तो, एठ चारे गुं हशे ॥ १ ॥ चाल ॥ मृग तृक्षायी रे, तृक्षा निव रले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांलणनो व ली ॥ बूडतां वाचक जन्त्या केणें, ते तन्त्या वात न सांजली ॥ तेम नार रम तां परतणी, संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित्त चटपटी जचार लागे, नय णें नावे निज्जी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो लोटो रे. रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्री संगनो ॥ उ० ॥ परत्रीयाकेरो प्रेम पिछडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो, पठी नहीं रहे निधरो ॥ जे घणा साथें नेह मांके, दिन चार रंग सुरंग रूडो, पठी नहीं रहे निधरो ॥ जे घणा साथें नेह मांके,

बांन तेह्युं प्रीतडी ॥ एमं जाणी म म कर नाह्खा, परनारि साथें प्रीतडी ॥ ४॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परद्युं प्रेमें रे, राचे सा पिणी ॥उ० ॥ सापिणी सरखी वेंण निरखी, रखें शीयखयकी चले ॥ आं खने मटके र्थंग खटके, देव दानवने बखे ॥ ए मांहे काली अति रसा खी, वाणी मीठी शेखडी II सांजली जोखा रखे जूलो, जाणजो विष वेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ जणा शोंक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिल्लं॥ किए मेडियें किए शेरीयें, जमतां न खागे सोहि छुं। जञ्चासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे।। विल कामिनी देखी देह दांके, अन दीतुं निव गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे, मनशुं कल मले ॥ जन्मत्त थइनें रे, अलल पलल लवे ॥ उ०॥ लवे अलल पलल जाणे, मोहघेलो मन रहे ॥ महामदन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु श्रेवहे ॥ ए दश श्रवस्था कामकेरी, कंत कायाने दहे॥ एम चित्त जाणी तजे प्राणी, पार की ते सुख बहे ॥ ७ ॥ चांख ॥ परनारीना रे, पराज्ञव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जाव ते निर्मेखो ॥ उ०॥ निर्मेखें जावे नाह समजो, परव धूरस परिहरो ॥ चांपी कीचक जीमसेनें, शिखा हे उख सांजलो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक, रडवड्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तिम मुंजपति छुख पुंज पाम्यो, अपजरा जगमांहे खह्या।। ए॥ चाल ।। शीयल सलूणा रे, माणस सोहि ये ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीयें ॥ उ० ॥ मोहियें सुर नर करे सेवा, विष अमिय यह संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाए, अनल अति शीतल करे।। सापं थाए फूलमाला, लहा। घर पाणी जरे।। परनारि परि हरि शीयल मन धरि, मुक्तिवधू हेला वरे ॥ ए॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे चवुं ॥ उ० ॥ वयण माहारुं मानीयें, परनारी थी रहो वेगला । अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें यह यें दोहिला॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे जग, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगत माहि, क्रमुद चंद सम जजलो ।। १०।। इति ।।

॥ श्रथ शीयलविषे नारीने शिखामणनी सञ्चाय ॥ ॥ चाल ॥ एक श्रनोपम, शिखामण खरी ॥ समजी लेजा रे, सघली सुंदरी ॥उणा सुंदरी सेहेजें हृदय हेजें, पर सेजें निव बेसीयें ॥ चित्तथ

की चूकी लाज मूकी, पर मंदिर निव पेसीयें ॥ बहु घेर हीं की नार नि-र्खज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दृष्टें पड्युं जोजन, जमवुं ते जु गतुं नहीं ॥ १॥ चास ॥ परशुं प्रेमे रे, हसीय न बोसीयें ॥ दांत देखा-डी रे, गुह्म न खोलीयें ॥ उ० ॥ गुह्म घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रका शीयें ॥ वली वात जे विपरीत जासे, तेह्यी दूरे नाशीयें ॥ असुर सवा रा अने अगोचर, एकखां निव जाइयें ॥सहसातकारें काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे, आधुं उंढीयें ॥ उए॥ आधुं ते उंढी वात करतां, घणुंज रूडां शोजीयें ॥ सासू अने माना जाखा विण, पत्नक पास न योजीयें ॥ सुख डुःख सरज्युं पामीयें पण, कुखाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्रा-ण तजतां, शीयलयी निव चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, ताली न लीजीयें ॥ उ०॥ ताली न लीजें नजर न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केहनी, हाथे पण निव कालीयें ॥ कोटि कंदर्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४॥ चाल ॥ पु-रुष पीयारो रे, विल न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ उण् ॥ जाणीयें पियु विण पुरुष सघला, सहोदर समो वडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें ॥ कुरूप कुष्टी कूबडो ने, प्रष्ट पुर्वल निर्श णो ॥ जरतार पामी जामिनी ते, इंडची अधिको गुणो ॥ य ॥ चाल ॥ अमरकुमारे रे, तजी सुरसुंदरी ॥ पवनंजये रे, अंजना परिहरी ॥ उ० ॥ परिहरी सीता रामे वनमां, नलें दमयंती वली ॥ महासती माथे कष्ट पड्यां पण, शीयसथी ते निव चली ॥ कसोटीनी परें कसीत्र जोतां, कं-तद्युं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुस थइने रे, मन न बगाडीयें ॥ उ० ॥ मन बगाडीयें पण पुरुषपरनुं, जोग जोतां निव मसे ॥ कलंक माथे चढे कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अण्सरज्यो उच्चाट थाये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह स्रोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७॥ चाल ॥ रामने रूपें रे, शूर्पनला मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ॥ उण॥ इजत खोइ देख अजया, शेव सुदर्शन निव चखाे॥

जरतार आगल पढ़ी जोंठी, अपवाद सघले उष्ठलो ॥ कामनी बुद्धें का-मिनीयें, वंकचूल वाह्यो घणुं ॥ पण शीयलथी चूक्यो नहीं, दृष्टांत एम केतां जणुं ॥ ७ ॥ चाल ॥ शीयल प्रजावे रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिजुवन मांहे रे, जेह घई ठती ॥ उ० ॥ सती थइने शीयल राख्युं, कहपना की धी नहीं ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां उगी रही ॥ विविध रहें जित जूपण, रूपसुंदरि किन्नरी ॥ एक शीयल विण शोजे नहीं, ते सल्य गणजो सुंदरी ॥ ए॥ चाल ॥ शीयल प्रजावें रे, सहु सेवा करे ॥ नवे वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उ० ॥ धरे निर्मल शीयल उज्जल, तास कीर्त्ते जल हले ॥ मनकामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट जय दूरें दले ॥ धन्य धन्य ते जाणो धरा, जे शीयल चोखुं आदरे, आनंदना ते उध पामे, उदय महा जस विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने शिलामणनी सद्याय ॥

॥ अथ धोवीडानी सद्याय ॥

ा धोवीडा तुं धोजे मनतुं घोतीयुं रे, रखे राखतो मेख लगार रे ॥ एणे रे मेखें जग मेखो कस्त्रो रे, अण धोयुं न राखे लगार रे ॥ घो० ॥ र ॥ जिनशासन सरोवर सोहामणुं रे, समिकत तणी रूडी पाख रे ॥ दाना दिक चारे वारणां रे, मांही नवतत्त्व कमल विशाल रे ॥ घो० ॥ र ॥ ति हां जीले मुनिवर हंसला रे, पीये ठे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदें जे सिला रे, तिहां पखाले आतम चीर रे ॥ घो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करी रे, जालवजे नवब्रह्म वाड रे ॥ ठांटा उमाडे पाप अहारना रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे ॥ घो० ॥ श ॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चें पित्रपणुं राखजे रे, पठें आपणा नियम संजाल रे ॥ घो० ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, पड मेलीने संकेल रे ॥ समय सुंदरनी शीलडी रे ॥ सुखडी अमृतवेल रे ॥ घो० ॥ ६ ॥ ॥ अश्व जरतचकीनी सद्याय ॥

॥ मनहीमें वैरागी जरतजी, मनहीमें वैरागी ॥ सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडजागी ॥ चोसठ सहस खंतेजरी जाके, तोहि न हुवा ख्रनुरागी ॥ ज० ॥ १ ॥ खाख चोराशी तुरंगम जाके, बन्नुं कोड हे पागी ॥ खाख चोराशी गज रथ सोहीयें, सुरता धर्मशुं खागी ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ चार करोड मण खन्नज जपडे, खूण दश खख मण खागे ॥ तिन कोड तो गोकुल इजे, एक कोड हल सागी।। जणा३॥ सहस बत्रीश देश वडतागी, जये सरवके त्यागी।। वत्रुं कोड गामके अधिपति, तोहे न हुआ सरागी।।जणा४।। नव निधि रतन चोगडा बाजे, मन चिंता सब जांगी।। कनक कीर्त्ति मुनिवर वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी।।जणाए।। इति॥ ॥ अथ बाहुबलजीनी सद्याय।।

॥ बहेनी बोले हो, बाहुबल सांजलो जी ॥ रूडा रूडा रंगनिधान ॥ गयवर चिट्या हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाएयुं जाएयुं पुरुष प्रधान ॥ बण् ॥ १ ॥ तुज सम जपशम जगमां कुण् गणे जी, श्रकल निरंजन देव॥ जाइ जरतेसर वाहाला वीनवे जी, तुज करे सुरनर सेव ॥ वण् ॥ १ ॥ जरवरसालो हो वनमां वेठील जी, जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ जरमर वरसे हो मेहुलो घणुं जी, प्रगट्या पुण्य श्रंकूर ॥ बण् ॥ ३ ॥ चहु दिसी वींट्यो हो वेलडीण घणुं जी, जम वादल लायो सूर ॥ श्री श्रादिनाथें हो श्रमने मोकल्यां जी, तुम प्रतिबोधन नूर ॥ बण् ॥ ४ ॥ वर संवेगरसें हो मुनिवर जन्या जी, पाम्युं पाम्युं केवल नाण् ॥ माणकमुनि जस नामें हो हरस्यो घणुं जी, दिन दिन चढतो हे वान ॥ बण्॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ढंढण क्षिजीनी सञ्चाय ॥

कहो कृपास रे ॥ हुं० ॥ सिव्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपित सिव्धि निहास रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ छ ॥ तो मुजने सेवो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्यो परवण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजाडे जाइने ॥ हुं० ॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ छ ॥ श्रावी सूधी जावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवसनाण रे ॥ ॥ हुं० ॥ ढंढण क्रि मुगतें गया ॥ हुं० ॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ छ । इति ढंढण क्रिमी सञ्चाय ॥

॥ अथ अइमंताजीनी सद्याय॥

॥ श्री श्रइमंता मुनिवरजूकी, करणीकी बिह्नहारी वे ॥ खट वर्षनके संजम सीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री०॥ १॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन, पोक्षासपुर श्रवतारी वे ॥ श्रंग श्रग्यार पढे ग्रण श्रादर, त्रि विध त्रिविध श्रविकारी वे ॥ श्री०॥ १॥ तप ग्रण रयण संवढर श्रादिक, करकें काय उद्धारी वे ॥ श्रग्र श्रादेशें विपुत्ताचल पर, करी श्रणसण श्रित जारी वे ॥ श्री०॥ ३॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवा री वे ॥ श्राटारमें श्रडताले तिहिं गिरि, कीनी श्रापना सारी वे ॥ श्री०॥॥॥ वाचक श्रमृत धर्म सुग्रुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्रमा कल्याण हरल धर, ग्रण गावे जयकारी वे ॥ श्री०॥ १॥ इति श्रइमंता मुनिनी०॥ ॥ श्रथ करकंकू प्रत्येक बुधजीनी सञ्चाय ॥

॥ चंपा नगरी श्रित जली ॥ हुं वारी लाल ॥ दिधवाहन जूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूलें उपनो ॥ हुं०॥ कमें की था चंमाल रे ॥ हुं०॥ र ॥ करकं कूने करुं वंदणा ॥ हुं०॥ पहिलो प्रत्येक वुध रे ॥ हुं०॥ र ॥ करकं कूने करुं वंदणा ॥ हुं०॥ पहिलो प्रत्येक वुध रे ॥ हुं०॥ र ॥ लाधी वांशनी लाकडी ॥ हुं०॥ श्रयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं०॥ श्रा लाधी वांशनी लाकडी ॥ हुं०॥ श्रयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं०॥ वापशुं संप्राम मांभी छं॥ हुं०॥ साधवी ली छं समजाय रे ॥ हुं०॥ ३॥ वृषज रूप देली करी ॥ हुं०॥ प्रतिवोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं०॥ उत्तज संजम त्रादस्त्रो ॥ हुं०॥ देवता दीधो वेश रे ॥ हुं०॥ ४॥ कर्म लपाय मुगतें गया ॥ हुं०॥ करकं कू किराय रे ॥ हुं०॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं०॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं०॥ य ॥ इति ॥ करकं कू सद्याय ॥

॥ अथ मनोरमा सतीनी सद्याय॥

॥ मोहनगारी मनोरना, शेव सुदर्शन नारी रे ॥ शीख प्रजावें शासनसु

री, यइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मोण ॥ १॥ दिधवाहन नृपनी प्रिया, अजया दीए कर्लक रे ॥ कोप्यो चंपापित कहे, शूली रोपण वंक रे॥ मोण ॥ १॥ ते निसुणीने मनोरमा, कर काजसम्म धरी ध्यान रे ॥ दंपती शिल जो निर्मलुं, तो वधो शासन माम रे ॥ मोण ॥ ३ ॥ शूली सिंहासन यह, शासन देवी हजूर रे ॥ संजम मही चयां केवली, दंपती दोय सन्र रे ॥ मोण ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण शिलची, शासन शोज चढावे रे ॥ सुर नर सिंव तस किंकरा, शिवसुंदरी ते पावे रे ॥ मोण ॥ ॥ इति ॥

॥ चोपाई॥ सरसती माता प्रणमुं मुदा, तुं तृठी आपे संपदा॥ शोख सतीनां खीजें नाम, जेम मनवांठित सिक्ते काम॥१॥ ब्राह्मी सुंदरी सु खसा सती, जपतां पातक न रहे रती॥ कौशख्या कुंती सित सार, प्रजा वती नामें जयकार॥१॥ जगवती शीखवती जय हरे, सुखसंपत्ति पद्मा वती करे॥ जोपदी पांचव घरणी जेह, शियल अखंम वलाएयुं तेह ॥३॥ चूला दमयंती जुःख हरे, शिवादेवी नित्य सान्निध्य करे॥ चंदनवाला चडती कला, वीरपात्र दीधा बाकुला॥४॥ राजिमती निव परण्या नेम, तोहे राख्यो अविहड प्रेम॥ सीतातणुं शीयल जग जयो, अन्नि टलीने पाणी थयो॥३॥ धन्य धन्य सती सुजडा धीर, काचे तांतणे चालणी नीर॥ चंपापोलि जघाडी चंग, मृगावती प्रणमुं मनरंग॥६॥ प्रह जठी सती जिपयें शोल, जिम लहियें इक्ति वृद्धि घृत गोल॥ श्रीविनयविजय वाचक सुपसाय, रूपविजय जावें गुण गाय॥आ इति शोल सतीनी सञ्चाय॥ अथ जीवदयानी सञ्चाय॥ चोपाइनी देशी॥

|| आदि जिणेसर पाय प्रणमेव, सरसती खामीनी मन घरेव || जी व दया पालो नर नार, जेम तरो निश्चें संसार || १ || पाणी गलतां जय णा करो, खारां मीठां ज्दां घरो || जेहने मनें दया परधान, ते घर दी से बहु संतान || १ || मारे जूने फोडे लीख, नर नारीनें एहज शीख || तेहनें घरे निहं संतान, जुःख देखे ते मेरु समान || ३ || पक्षी उंदर मा णसनां वाल, जे पापी मारे चिर काल || तेहने परजवें एहज जुःख, ढोरु तणां निव होये सुख || ४ || माखण मधु बीली अथाण, आइ सूरण व जें जाण || गाजर मूला रताल जेह, शुद्ध श्रावक ते ढंमे एह || ५ || फो

गट फूले माया करे, कहो केम ते जबसागर तरे ॥ जेहने देव गुरुशुं देष, रूप न पामे ते खब खेश् ॥ ६॥ बहु दाहाडानुं मेखी करी, माखण तावे श्रमियें धरी ॥ ते मरीने नरके जाय, मानव होय तो दाघज्वर थाय ॥ ॥ । प्रभ तणे वसी सोनें जेह, पाना जूखे मारे तेह ॥ फरता ढोरमां ते जाये वेखी, जूखे तरशे मरे टेखवेखी ॥ ए।। श्रांख्य फूटी दीये जे गास, परंत्रर श्रांधा थाये वाल ॥ मरो फीटो दीये जे गाल, परंत्रव सुख न पा मे वास ॥ ए ॥ पाट पाटसानें वस्र दान, सिवसेक्युं वसी रांध्युं धान ॥ मु निवरने दे मन जल्लास, तस घर सक्ती रहे थिरवास ॥ १० ॥ देतां दान विमासण करे, देइ दान मन चिंता धरे॥ सुखसंपत्ति पामे अनिराम, बे हड़े न होये वसवा ग्राम ॥ ११ ॥ धन्य था कुं ने दिये दान, महिश्रख ते हने वाधे वान ॥ क्रियेन देइ करे रंगरोल, तस घर खलमी करे कल्लोल ॥ १२ ॥ सुलसंपत्ति जो आवी मली, मोसाने देवा मित टली ॥ धन ज पर राखे जे नेह, परजव सापपणे याय तेह ॥ १३॥ अधिको उठो वांधे तोख, दे वाचा निव पाले वोख ॥ तेहनी क्षोकमां न होय लाज, परजव तेहनां न सरे काज ॥ १४॥ पोथी वाले वोले जेह, परजव मूरख थाये तेह् ॥ जणे गुणे दे पोथीदान, परजव नर ते विद्यावान ॥ १५ ॥ नाना महोटा कुवला हरि, खांते चूटे खीला करी ॥ कीधां कर्म निव वेलाय, मरीने नर ते कोढीयो थाय ॥ १६॥ पांख पंखीनी काढे जेह, परजव हूं हो याये तेह ॥ पग कापे ने करे गल गलो, मरी नर ते याये पांगलो ॥ १७ ॥ पाडोशीशुं वढे दिन रात, परजवे तेसो न पामे संघात ॥ मात पिता सुत वज्ञर धणी, परजव तेहने वढावढ घणी॥ १०॥ अण दीवुं श्रण सांजब्युं कहे जेह, परजव बहेरो थाये तेह ॥ पारकी निंदा करे नर नार, यश निव पामे तेह लगार ॥ १७॥ परना अवगुण ढांके जेह, नर नारी यश पामे तेह ॥ निंदा करे ने दीये जेगाल, परजव नर ते पामे आ ल ॥२०॥ रात्रिजोजन करे नर नार, ते पामे घुळाड ळावतार ॥ राते पंखी न खाये धान, माणस हैये न दीसे शान ॥ ११ ॥ सूर्य सरखो आय मे देव, मानवने खावानी टेव॥ धर्मी खोकज होये जेह, रात्रिजोजन टासे तेह ॥११॥ गौतम पृष्ठाने अनुसार, ए सद्याय करी श्रीकार ॥ पंकित हर्ष सागर शिष्य सार, शिवसागर कहे धर्मविचार ॥१३॥ इति सद्याय संपूर्ण॥

#### .॥ अथ कोधनी सञ्चाय॥

॥ करुवां फल वे कोधनां, क्वानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोलें ॥ क० ॥ १ ॥ कोधें कोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ कोध सहित तप जे करे, तेतो लेलें न थाय ॥ क० ॥ १ ॥ साधु घणो तपी यो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना कोधथकी थयो, चंककोशीयो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ त्याग उठे जे घरथकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जलनो जोग जो निव मले, तो पासेनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ कोधतणी गित ए हवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ ॥ क० ॥ ४ ॥ उदयरतन कहे कोधने, काढजो ग्रले साही ॥ काया कर जो निरमली, उपशम रस नाहीं ॥ क० ॥ ६ ॥ इति कोधनी सञ्चाय ॥ ॥ अथ माननी सञ्चाय ॥

। रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न त्रावे रे ।। विनय विना विद्या नहीं, तो किम समिकत पावे रे ।। रे ।। रे ।। समिकत विण चा रित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ।। मुक्तिनां सुख हे शाश्वतां, ते के म ख़िह्यें जुक्ति रे ।। रे ।। १।। विनय वड़ो संसारमां, गुणमां अधिका री रे ॥ मानें गुण जाये गक्षी, प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे ०॥ ३॥ मान कखुं जो रावणें, ते तो रामें मास्त्रो रे ॥ ड्योंधन गरवे करी, श्रंतें सवि हास्त्रो रे ॥ रे ०॥ ४॥ शूकां खाकड़ां सारिखो, डु:खदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशोटों रे ॥ रे ०॥ ५॥ इति ।।

॥ अय मायानी सद्याय ॥

॥ समिकतनुं मूल जाणीयं जी, सत्य वचन साकात ॥ साचामां समिकत वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया खगार ॥१॥ ए श्रांकणी ॥ मुल मीनो जुनो मनें जी, कूड कपटनो रे कोट ॥ जीनें तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्राण्॥१॥ श्राप् गरजे श्राघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे श्रांतरो जी, ए माया नो पास रे ॥ प्राण्॥ ३॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकृत ॥ मेल न ढंमे मन तणो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्राण्॥ ४॥ तप की धं माया करी जी, मित्रशुं राख्यो रे जेद ॥ मलीजिनश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे ॥ प्राण्॥ ॥ जदयरतन कहे सांजलो जी, मेलो माया

# नी बुद्ध | मुक्तिपुरी जावा ताँगो जी, ए मारग वे शुद्ध रे | प्राण ॥ ६ ॥ ।। श्रथ खोजनी सञ्चाय ॥

॥ तुमें सक्ष जो जो सोजनां रे, खोजें जन पामे कोजना रे॥ सोजें महा मन मोखा करे रे, खोजें छुर्घट पंथें संचरे रे ॥ तु०॥ १॥ तजे सोज तेहनां लेखं जामणां रे, वली पाये नमी ने करं खामणां रे ॥ सोजें मरजादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ १॥ सोजें घर मेहेली रणमां मरे रे, लोजें खंच ते नीचुं आखरे रे ॥ लोजें पाप जणी पगलां जरे रे, लोजें अकारज करतां न ठसरे रे ॥ तु० ॥ ३॥ लोजें मनमुं ने रहे निर्मलुं रे, लोजें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोजें न रहे प्रीति ने पावतुं रे, लोजें घन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥ ४॥ लोजें पुत्र प्रतें विता हणे रे, लोजें हत्या पातक नित्र गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोजें करित हणे रे, लोजें हत्या पातक नित्र गणे रे ॥ तो तो दाम तणे लोजें करि रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे ॥ तु० ॥ ४॥ लोजें चकी सुजुम नामें जुनो रे, तेतो समुद्र मांहे मृत्री मुन्नो रे ॥ तु० ॥ ६॥ एम जाणीने लोज ने ठमजो रे, एक धर्मग्रुं ममता मंग्जो रे ॥ किव जदयरल जांले सुदा रे, वंट्रं लोज तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ १॥ इति लोजनी सचाय ॥ अथ श्री श्रावकनी करणीनी सचाय ॥

॥ चोपाई॥ श्रावक तुं ऊठे परजात, चार घडी ले पाठली रात ॥ मन मां समरे श्री नवकार, जेम पामे जवसायर पार ॥१॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण श्रमारं ठे कुलकर्म ॥ कवण श्रमारो ठे व्यवसाय, एवं चिंतव जे मनमांय ॥१॥ सामायिक लेजे मन शुऊ, धर्मनी हैंडे धरजे बुऊ॥ पडि क्रमणुं करे रयणीतणुं, पातक श्रालोई श्रापणुं ॥३॥ कायाशक्तें करे पचला ण, स्धि पाले जिननी श्राण ॥ जणजे गणजे स्तवन सद्याय, जिण हुंति निस्तारो थाय ॥४॥ चितारे नित्य चजदे नीम, पाले दया जीवतां सीम॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥५॥ पूजा करतां लाज श्रपार, प्रजजी महोटा मुक्ति दातार॥ जे जहापे जिनवर देव, तेहने नव मंकक नी टेव ॥६॥ पोशालें गुरु वंदजे जाय, सुणे वलाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दू पण सुजंतो श्राहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ७ ॥ सामिवत्सल करजे घणं, सगपण मोहोंद्र सामितणुं ॥ इःलिया हीणा दीनने देल, करजे ता

स दया सुविशेष ॥ ए॥ घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाशुं म करे अजि मान ॥ गुरुने मुख क्षेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ए॥ वार शुद्ध करे व्यापार, जंबा अधिकानो परिहार ॥ म जरजे केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥१०॥ अनंतकाय कही बन्नीश, अन्नह्य बा वीशे विश्वावीश ॥ ते जद्मण निव कीजें किमे, काचां कूलां फल मतिज मे ॥ ११ ॥ रात्रिजोजनना बहु दोष, जाणिने करजे संतोष ॥ साजी साबु लोहने गली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ १२ ॥ वली म करावे रंगणे पास, दूषण घणां कह्यां हे तास ॥ पाणी गखजे वे वे वार, ऋणगख पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ढंकी करजे पुण्य ॥ ढांणां इंधण चूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४॥ घृतनी प्रें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मवत सूधुं पालजे, अति चार सघला टालजे ॥ १५ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाए ॥ माथे म क्षेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेख म जरजे पिंम ॥ १६॥ समिकत गुद्ध हैडे राखजे, बोख विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करे आरंज, पाले शीयल तजी मन दंज ॥ १७॥ तेल तक घृत दूधने दहि, जघाडां मत मेले सही ॥ जत्तम ठामें खरचे वित्त, पर जपगार करे शुज चित्त ॥ १०॥ दिवसचरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम जांजे सघला संताप ॥ १ए॥ संध्यायें व्यावश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण जवजवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणुसण दे सोय ॥ २० ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शेत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, नेटीश हुं धन्य धन्य अव तार ॥ ११ ॥ श्रावकनी करणी हे एह, एहथी याय जवनो हेह ॥ श्राहे कर्म पडे पातलां, पापतणा बूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर वि मान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह, करणी इःखहरणी वे एह ॥ १३ ॥ इति श्री श्रावकनी करणीनी सद्याय ॥ ॥ व्यथ श्रीव्यनाथी मुनिनी सद्याय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखीयो मुनि एकंत ॥ वर रूप कांतें मो हीर्ज, राय पुढे रे कहोने विरतंत ॥ श्रेणिक राय, हुरे छनायी निर्धय ॥ तिण में लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणिक० ॥ १ ॥ ए छांकणी ॥ इणें कोसंवी नयरी वसे, मुज पिता परिघल धन्न ॥ परिवार पूरें परिवस्तो, हुं हुं तेहनो रे पुत्ररतन्न ॥ श्रेण ॥१॥ एक दिवस मुजनें वेदना, उपनी में न खमाय ॥ मात पिता जूरी रह्या, पण किणिहें रे ते न लेवाय ॥ श्रेण ॥ ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मण्डिरडी, डिरडी अवला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, न केणें कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रेण ॥ ४ ॥ वहु राज वैद्य वोलावि या, कीधला कोडि उपाय ॥ वावना चंदन चरिया, पण तोही रे समाधि न थाय ॥ श्रेण ॥ ५ ॥ जगमां को केहनो नहीं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना श्रम वाहिरो, नीहें कोइ वीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रेण ॥६ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेडं संजम जार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, वत लीधुं रे हर्प अपार ॥ श्रेण ॥॥। कर जोडी राय गुण स्तवे, धन्य धन्य ए अणगार ॥ श्रेणिक समिकत तिहां लह्यो, वांदी पोहतो रे नगर मजार ॥ श्रेण ॥ गीन अनाथी गावतां, तूटे कर्मनी कोडि ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वंदे रे वे कर जोडि ॥ श्रेण ॥ ए॥ इति अनाथीनी सञ्चाय ॥ अथ सार वोलनी सञ्चाय लिख्यते ॥

॥ सरसती सामिनी पय प्रणमेव, सहग्रहनाम सदा समरेव ॥ वोिलश एणि परें श्राचार, जोड़ लेजो जाण विचार ॥ र ॥ पंक्तित ते जेनाणे गर्व, क्रामी ते जे जाणे सर्व ॥ तपस्वी ते जे नाणे क्रोध, कर्म श्राम जींत ते जोध ॥ र ॥ उत्तम ते जे वोले न्याय, धर्मी ते जे मन निरमाय ॥ ठाकुर ते जे पालें वाच, सहग्रह ते जे जांखे साच ॥ ३ ॥ गिरु ते जे गुण श्राम लो, स्त्री परिहार करे ते जां ॥ मेलो ते जे निंदा करे, पापी ते हिंसा श्राचरे ॥ ४ ॥ मूर्ति ते जे जिनवरतणी, कीर्ति ते जे बीजे सुणी ॥ खि विध ते गोतम गणधार, बुद्धि श्रिधको श्रामय क्रमार ॥ ४ ॥ श्रावक ते जे खहे नवतत्व, कायर ते जे मूके सत्व ॥ मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो जे मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थंकर तणी, मित ते जे उपजे श्रा पणी ॥ समिकत ते जे साचुं गमें, मिथ्यामित ते जूलो जमे ॥ ४ ॥ मोटो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे जांगे जीड ॥ मनवश श्राणे ते वखवंत, श्रा लसशी श्रवगो पुण्वंत ॥ ७ ॥ कामी नर ते कहीयें श्रंभ, मोहजाल ते मोटो वंध ॥ दारीडी जे धर्में हीन, द्वर्गतिमांहे हले ते दीन ॥ । श्राम म ते ज्यां वोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सुलिया श्राम ते ज्यां वोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सुलिया श्राम

1

या, इ: खिया ते जे लोजें यहा।। २०॥ नारी ते जे होये सती, दर्शन ते जियो मुहपति।। राग देष टाले ते यति, सुधूं जाणे ते जिन्मती।। २१॥ काया ते जे शीलें पित्रत्र, मायारहित होए ते मित्र ।। वृहपणुं पाले ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ २१॥ वैरागी ते विरमे राग, तारू ते जव तरे अथाग ॥ रोरव नरकतणो ए माग, ठाग हणीने मागे लाग॥ २३॥ देहमांहे ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेले दीह ॥ रसमांही उपशम रस लीह, श्रूलीजड मुनिवरमां सिंह ॥ १४॥ साचुं ते जे जिननुं नाम, जिन वुं देरुं ज्यां ते गाम ॥ न्यायवंत किह्में ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥ २५॥ एइ बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा॥ कहे पंकित लक्षी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोल ॥ २६॥ इति सल्लाय॥

अथ सामायिकना बन्नीश दोषनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ ग्रुज ग्रुरु चरणें नामी शीश, सामायिकना दोष बत्रीश ॥ किह्युं त्यां मनना दश दोष, छुशमन देखी घरतो रोष ॥१॥ सामायिक अविवेक करे, अर्थ विचार न हैंडे घरे ॥ मन उद्घेग वंडे यश घणो, न करे विनय वंडेरातणो ॥ १ ॥ जय आणे चिंते व्यापार, फल संशय नीआणुं सार ॥ हवे वचनना दोष विचास्त्र, कुवचन बोले करे ढुंकार ॥ ३ ॥ ले कुंची जा घर उघाड, मुख लवरी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गा ल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ कायाकरां छूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार ॥ ४ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग लंबे बेसे अवनीत, उठिंगन ल्ये थांजो जींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग ऊपर चढावे पाय ॥ अति उघानुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उ पंग ॥ ७ ॥ निजायें रस फल निर्गमे, करहा कंटक तरुए जमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ७ ॥ समता ध्यान घटा जज ली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीग्रुजवीर वचन पालती, स्वर्गें गइ सुल सा रेवती ॥ ए ॥ इति सामायिकना बत्रीश दोषनी सद्याय ॥

॥ डाख ॥ सिरि जंब रे, विनयज्ञक्ति शिर नामिने ॥ करजोडी रे, पूर्वे सोहमस्वामीने ॥ जगवंता रे, कहो शिवकांता किम मखे ॥ कहे सोहम रे,

मिथ्या जम दूरें टखे ॥ त्रुटक ॥ दूरें टखे विष गरख ईहा, जनय मार्ग छ। नुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत किरिया, छन्नेदारोपण करी ॥ जिम पंगु दर्शित चरण कर्षित, श्रंध बिद्धं निज पुर गया ॥ तिम सत्त्व सजता तत्व जजतां, जविक केइ सुखिया थया ॥ १॥ ढाख ॥ वैकल्य ज्युं रे, कष्ट ते करवुं सोहिखुं ॥ पण जंबू रे, जाणपणुं जग दोहिखुं ॥ तेणें जाणी रे, आ वश्यक किरिया करो ॥ जपगरणें रे, रजहरणो मुहपत्ती धरो ॥ त्रुटक ॥ मुहपत्ती श्वेतें मानोपेतें, शोख निज अंगुल जरी ॥ दोय हाथ जाली हग, निहाली, दृष्टि पडिलेहण करी ॥ त्यां सूत्र अर्थ सुतत्व करीने, सदृ ए म जाविये ॥ नचा वचा रूप तिग तिग, पखोडा पट खाविये ॥ १॥ ढाल ॥ समकित मोहनी रे, मिश्र मिथ्यात्वने परिहरं ॥ काम राग् रे, स्नेह दृष्टि राग संहरं ॥ ए साते रे, बोल कह्या हवे आगलें ॥ अंगुलि वच्चे रे, त्रण वधूटक कर तलें ॥ त्रुटक ॥ करतलें वामें खंजली धरि, खलोडा नव की जियें।। प्रमार्जन नव तिमज करियें, तिग तिगंतर खी जियें।। सुदेव सु गुरु सुधर्म आदरं, प्रतीपक्ती परिहरं॥ विल ज्ञान दर्शन चरण आदरं, विराधन त्रिक अपहरं ॥३॥ ढाल ॥ मनोग्रिप्ति रे, वचन कायग्रिप्त जजुं॥ मनोदं ने रे, वचन काय दं नने तजुं ॥ पचवीश रे, बोल ए मुह्पत्तीना ल ह्या ॥ इवे अंगना रे, परिहरं एम सुघला कह्या ॥ त्रुटंक ॥ कह्या वधूटक करि परस्पर, वाम हाथें त्रिक करो ॥ हास्य रतिने छरति ढंकी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥ तय शोक छुगहा तजीने, पयाहिणे आचरो ॥ कृक्ष ले च्या नील कापोत, ललाटें त्रिक परिहरो ॥४॥ ढाल ॥ रस गारव रे, रिकि शाता गारवा॥ मुख हैंडे रे, त्रख त्रखं एम धारवा॥ माया शब्य रे, निया ण मिथ्यात्व ढालियें ॥ वाम खंधें रे, कोध मान दोय गालियें ॥ ब्रुटक ॥ गालीयें माया लोज दक्तिण, खंध ऊर्ध्व अधो मली।। त्रिक वाम पादें पु ढवी अप वली, तेजनी रहा करी॥ जमणे पंगे त्रण वाज वणसंइ, त्रस कायनी रक्ता करुं॥ पंचाश बोखें पडीखेहण, करत ज्ञानी जब हरुं॥५॥ ढाल ॥ एह मांहेथी रे, चालीश बोल ते नारीने ॥ शीश हृदयना रे, खंध वोल दश वारीने ॥ इंणविधिरयुं रे, पडिलेहणयी शिव लह्यो ॥ अविधिक री रे, ठकायनो विराधक कह्यो ॥ त्रुटक॥ कह्यो किंचित् आवश्यकथी, तथा प्रवचन सारथी।। जावना चेतन पावना कहीं, गुरु वचन अनुसारथी॥

शिव सहे जंबू रहे जो शुज, वीरविजयनी वाणीएं॥ मन मांकर्जुं वनवास रमतुं, वश करी घर छाणिएं॥ ६॥ इति मुहपत्तिनी सचाय संपूर्ण॥ ॥ छाथ काया छपर सद्याय॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सीचंतां रे शूके ॥ उंठ कोड रोमावली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ र ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग केजो मोक्तो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥ श ॥ छरिहंत छांबो मोरीयो, सामायिक थाणे ॥ मंत्र नवकार संजारजो, समिकत शुद्ध ठाणे ॥ का० ॥ श ॥ वाडी करो विरतां तणी, सिव खोज निवारो ॥ शील संयम दोनुं एकठां, जलीपेरें पारो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, बेठा एणी मा ली ॥ फल चूंटीने चोरीछां, न करी रखवाली ॥ का० ॥ थ ॥ श्वा वाडी एक शृडलो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन करी राखिठ, जातो किणही न दीठो ॥का०॥६॥ कां जोलपणें जव हारीयो, मित मोडी संजाली ॥ सल चिंतामणि सारिली, कांइ गांठ न वाली॥का०॥ श तिलक सेवक जणे, सुणजो वनमाली ॥ वाड जली परें पालजो, करजो ढंग वाली ॥ का०॥ ॥

॥ श्रय श्री श्रगियार गणधरनी सद्याय ॥ ॥ श्रजित जिणंदशुं त्रितडी ॥ ए देशी ॥

॥ वीर पटोधर वंदीयं, गणधार हो श्रीगौतमस्वाम ॥ इकि वृक्षि सुख संपदा, नवे निधि हो प्रगटे जस नाम ॥ वी० ॥ १ ॥ श्रिफ्राचित वायुजू तिज्ञुं, पन्नर सत्त हो छहे संजम जार ॥ व्यक्त सुधर्मा सहसग्रं, ते तिरया हो श्रुतदरीया संसार ॥ वी० ॥ श। मंित मौरिय पुत्रजी, साडा त्रण हो शत संयम छीध ॥ श्रकंपित त्रण सत्तग्रं, श्रवखन्नाता हो त्रण शत प्रसीध ॥ वी० ॥ ३ ॥ मेतारज प्रजासना, ग्रुद्ध साधुजी हो त्रण त्रण सत्त ॥ विव ॥ ३ ॥ मेतारज प्रजासना, ग्रुद्ध साधुजी हो त्रण त्रण सत्त ॥ विव ॥ ४ ॥ विव वंदिये, साहुणी हो वन्नीश सहस महंत ॥ वी० ॥ ४ ॥ वीर विमल कहे विधि ग्रुद्धिग्रं, विग्रुद्ध वंदो हो एवा श्रणगार ॥ तरण तारण तरी समा, समरथ हो शासन शणगार ॥ वी० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री शोख सतीयोनी सद्याय ॥

॥ शोख सतीनां खीजें नाम, जेथी मन वंढित शुज काम ॥ जिक्ते जा व अति आणी घणो, जाव धरीने जवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदन बा खा नाम, राजिमती झौपदी अजिराम ॥ कोशख्याने मृगावती, सुखसासी ता ए महासती ।। १ ।। सती सुजड़ा सोहामणी, पोल उघाडी चंपा त णी ॥ शिवा नाम जपो जगवती, जगीश छापे कुंती सती ॥ ३ ॥ शीलव ती शीलें शोजती, जजो जावें ए निर्मल मती ॥ दमयंतीने चूला सती, प्रजावतीने पद्मावती ॥ ॥ शोल सतीनां नाम उदार, जणतां गणतां शिव सुलकार ॥ शाकिनी माकिनी व्यंतर जेह, सित नामें न पराजवे तेह ॥ ॥ ५ ॥ छाधिव्याधि सिव जाये रोग, मन गमता सिव पामे जोग ॥ संक ट विकट जाए सिव इर, तिमिर समूह ज्यम क्रगे सूर ॥ ६॥ राज इद्धि घरें होए वहु, राय राणा ते माने सहु ॥ वाचक धर्मविजय गुरुराम, रल विजय जावें गुण गाय ॥ ९ ॥ इति शोलसतीनी सद्याय ॥

॥ श्रथ वीशस्थानकना तपनी सद्याय॥

॥ श्रीसीमंघर साहेव आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहें बे यानक गणी यें, वीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थराणं रे ॥ जिवया ॥ वीश यानक तप कीजें ॥ उंकी वीश करीजें रे ॥ ज० ॥ गएणुं एह गणीजें रे ॥ ज० ॥ जिम जिनपद पामीजें रे ॥ ज० ॥ नर जब साहो सीजें रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उवज्जाए उठे सबसाहूणं, सातमे आठमे नाण ॥ नवमे दंसण दसमे विणयस्त, चारित्र अगियारमे जाण रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ १ ॥ वारमे वंजवय धारीणं, तेरसमे किरियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें नमो जिणाणं रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीयें, अहारसमे नाणस्स ॥ उगणी शमे नमो सुयस्स संजारो, वीशमे नमो तिल्लस रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संघ विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचारो रे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ शीयलविषे शीखामणनी सचाय॥

॥ ढाख ॥ एतो नारी रे, वारी वे छुर्गति तणी ।॥ वांम संगत रे मूरख तुं परस्री तणी ॥ जीव जोखा रे, मोखा तेह्झुं म म करे ॥ शीख मानी रे, वानी वात तुं परहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश परनारी सार्थे, खोक सहु हेरे अवे ॥ राय रांक यइ ने रख्या रानें, सुखें नहीं बेसे पवें ॥ ए मदनमाती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहे्बुं तो वखी सुख देखाडे, पवे पढाडे जामिनी ॥ १ ॥ ढाख ॥ कर पगना रे, नयण वयण

चाला करी।। बोलावी रे, नर लेड् धाइ सुंदरी।। जोलावी रे, हाव जाव देखांडशे ॥ पर्गे लागीरे, मरकखंडे मन पांडशे ॥ ३/॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खंगे से खढ़ी ॥ बोसंती रूड़ी चित्त कूड़ी, कूड कप टनी कोयदी ॥ ए नर अमूखक व्यसन पडिल, पहे न पोसाय पायको ॥ दीवान दंने मान खंने, मार सहे पढ़े रायको ॥ ४॥ ढाल ॥ ठांनी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी पूरें करा ॥ जा नाशी रे, रूप देखी जीव एह तणुं॥ जज़ो रही रे, एह साहामुं समजो घणुं ॥५॥ त्रुटक॥ घणुं म जोइश एह साहामुं, कुलस्त्री दीवे निव गमे॥ जिम शूनी पूर्वे श्वान हीं में, तिम परनारि पूर्वे का जमे ॥ जिम बिह्वाडो रूभ देखे, मोले मांग न देख ए॥ परनार पेथो पुरुष पापी, किस्यो जय न लेख ए ॥ ६॥ ढाल ॥ फूल वेणी रे, शिर सिंट्स सेंथो जस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्त्रो ॥ देखी टीलां रे, दीलां इंडिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखड़ी रे, आंखें देइ तुं कां रह्यो ॥७॥ त्रुटक॥ कां रह्यो मूरल आंखें देइ, शणगार नार एणें धस्ता ॥ ए जली जीहा, आंखे पी हा, कान कूपा मल जस्या ॥ नारी अग्नि, पुरुष माखण, बोल बोलतां वी गरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार दीठो, मूढ महित्रां कां करे ॥ ७॥ ढाल ॥ इंडिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिन ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीर्ज ॥ कां जूलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणो प्राणी रे, ए हे कुःखनी श्रंगना ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ श्रंगनाः तुं होडी होकरे, जश कीर्ति सघ बे बहे ॥ कुर्राबनुं जो नाम बीए को, परबोक दुर्गति दुःख सहे ॥ विजयज्ञ बोले जे निव मोले, शीयल्यकी जे नरवरा ॥ तस पार्चे लागुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयकरा॥ ४०॥ इति॥ शीख सखाय॥

॥ अथ प्रजातें वाहाण्यां गावानी सञ्चाय॥
॥ मिथ्यामित रे रजनी असरायके॥ वाहाण्यां जले वायां रे॥ जिहां उघे रे प्राणी बहुकाल के॥ वाहाणांण॥ निव जाणे रे जिहां यमनी फाल के॥ वाण॥ तिहां पामे रे पग पग जंजाल के ॥ वाण॥ रे॥ जिहां जड पे रे कोध दवनी जाल के ॥ वाण॥ मानरूपी रे अजगर विकराल के ॥ वाण॥ कंसे माया रे सापणी रोषाल के ॥ वाण॥ जिहां चावो रे खोज रूप चंकाल के॥ वाण॥ शाहिक रे राक्स महावृंद के ॥ वाण॥

आठकर्मना रे जिहां मांड्या फंद के ।।वाण। जिहां देखे रे प्ररगति पुःख दंद के ॥ वाण ॥ नवी दीसे रे जिहां ज्ञान दिणंद के ॥ वाण ॥ ३ ॥ धस मसतां रे जिहां विषयनी जाल के ॥ वाण ॥ सीये खूंटी रे नगणे पलिवाल के ॥वाण। अटवी अनंती रे जिहां विकट उजाड के ॥ वाण ॥ चाले नही रे जिहां व्रतनी वाड के ॥ वाण ॥ ध ॥ निरखंतारे श्रीजिनमुख नूर के ॥ वाण। हवे जग्यो रे महासमकेत सूर के ॥वाण। पुःखदायी रे दोषि गया हूर के ॥ वाण ॥ वसी प्रगट्या रे पुर्खतणा अंकूर के ॥ वाण ॥ ५ ॥ सुता जागो रे देसविरतिना कंत के ॥ वाण ॥ वली जागो रे सर्वविरति गुणवंत के || वाण || तमे जेटो रे जावें जगवंत के || वाण || पिडक्रमणां रे करो पुएयवंत के ॥ वाण् ॥ ६ ॥ तमे लेजो रे देवगुरुनुं नाम के ॥ वाण् ॥ वली करजो रे तमे धर्मनां काम के ॥ वाण ॥ गुरुजनना रे गार्छ गुण्याम के ॥ वाण ॥ प्रेम धरीनें रे करी पूज्य प्रणाम के ॥ वाण ॥ ७॥ तमे करजो रे दशंविध पच्चरकाण के ॥वाण्॥ तुमे सुणजो रे श्रीसूत्रवखाण के ॥ वाण॥ आराधो रे श्रीजिननी आण के ॥ वा० ॥ जिमपामो रे शिवपुर संठाण के ॥ वाण ॥ जां जां जां जां ने वे श्रीमुखनी वाण के ॥ वाण ॥ तमे करजो रे सही सफल विहाण के ॥ वा० ॥ वदे वाचक रे जदयरत सुजाण के ॥ वा० ॥ एह जणतां रे बहीये कोड कख्याण के ॥ वाण ॥ ए ॥ इति वाहणखां ॥ ॥ अय क्रमानत्रीशी प्रारंजः॥

॥ आदर जीव क्मागुण आदर, म करिश रागने देष जी॥ समताथें शिव सुख पामीजें, कोधें कुगति विशेष जी॥ आ०॥ १॥ समता संजम सार सुणी जें, कल्पसूत्रनी साख जी॥ क्रोध पूर्वकोडि चारित्र बाले, जग वंत रूणी परें जाख जी॥ आ०॥ १॥ कुण कुण जीव तस्या उपशमधी, सांजल तुं दृष्टांत जी॥ कुण कुण जीव जम्या जवमांहे, कोध तणे विरतं त जी॥ आ०॥ ३॥ सोमिल ससरे शीश प्रजाल्युं, बांधी माटीनी पाल जी॥ गजसुकुमाल कमा मन धरतो, मुगति गयो ततकाल जी॥ आ०॥ ४॥ कोणिकनी गि कुलवालुर्ज साधु कहातो, कीधो कोध अपार जी॥ कोणिकनी गि णिका वश पडियो, रडविथो संसार जी॥ आ०॥ ५॥ सोवनकार करी अति वेदन, वाधशुं वींट्युं शीश जी॥ मेतारजक्ष मुगतें पोहोतो, उप श्रम एह जगीश जी॥ आ०॥ ६॥ कुरूड अकुरुड वे साधु कहाता, रह्या कु

णाला खाल जी।। क्रोध करी कुगतें ते पहोता, जनम गमायो आल जी ॥ त्राव्या व ॥ कर्म खपावी मुगतें पहोता, खंधक सूरिना शिष्य जी ॥ पालक पापीयें घाणी पीखा, नाणी मनमां रीश जी ॥ त्राव्या ॥ छ। कारी नारी अवंकी, त्रोड्यो पीयुशुं नेह जी ॥ बब्बर कुल सह्यां पुःख ब हुलां, क्रोध तणां फल एहं जी ॥ आण्॥ ए॥ व घर्षे सर्व शरीर वलूखुं, ततक्ण बोड्यां प्राण जी।। साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, एह कमा गुण जाण जी ॥ आ०॥ १०॥ कुण चंमाल कहीजें बिहुमें, निरित नही कहे देव जी ॥ ऋषि चंमाल कहीजें वढतो, टाले वेढनी टेव जी ॥ आण ॥ ११ ॥ सातमी नरक गयो ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आंख जी ॥ क्रोध तणां फलं कहुआं जाणी, राग द्वेष द्यो नाख जी॥ आ०॥ ११॥ खंधक क्षिनी खाल जतारी, सह्यो परिसह जेण जी ॥ गरनावासना पुःखयी तृत्वो, सवल कमा गुण तेण जी ॥ आण ॥ १३॥ क्रोध करी खंधक आचा रिज, हुर्न अग्निकुमार जी॥ दंमक नृपनो देश प्रजाख्यो, जमशे जवह मजार जी ॥ त्राण्॥ १४॥ चंद्ररोद्ध त्राचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहा र जी ॥ क्रमा करंतां केवल पाम्यो, नव दी क्तित ऋणगार जी ॥आ०॥१५ ॥ पांच वार क्षिनें संताप्यो, आणी मनमां द्वेष जी ॥ पंच जब सीम द ह्या नंद नादिक, क्रोध तणां फल देख जी ।।आणा१६॥ सागरचंदनुं शीस प्रजाली, निशि नजसेन निरंद जी ॥ समता जाव धरी सुरलोके, पहुतो परमानंद जी ॥ आ०.॥ १७ ॥, चंदना गुरुणीयें घणुं निचंढी, धिग् धिग् तुक आचार जी ॥ मृगावती केवलिसिर पामी, एह कमा अधिकार जी ॥ आव ॥ १७ ॥ सांब प्रद्युम्न कुमारें संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध करी तपनुं फल हास्त्रो, कीधो द्वारिकादाह जी॥ आव॥ रए॥ ज रतने मारण मूठी जपाडी, बाहबल बलवंत जी ॥ जपशम रश मनमांहे खाणी, संजम **से मतिमंत जी ॥ खा०॥ १०॥ काउसगमां च**ियो खति क्रोधं, प्रसनचंद क्रिषराय जी॥ सातमी नरक तणां दल मेखां, करुआं तेण कषाय जी॥ आ० ॥ ११॥ आहारमांहे क्रोधें कृषि श्रृंक्यो, आखो अमृत जाव जी ॥ कूरगरूयें केवल पाम्युं, क्तमात्रेण परजाव जी ॥ आण ॥ १२ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधा, कमठ जवांतर धीठ जी ॥ नरक ति र्यंच तणां डुःख लाधां, क्रोध तणां फल दीव जी ॥ आ० ॥१३॥ क्रमावंत

ŧ /

दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो काउसग्ग जी ॥ कौरव कटक हएयो ईटा क्षे, त्रोड्या कर्मना वर्ग जी ॥ आण ॥ १४॥ सज्यापालक कानें तरुर्ज, नाम्यो क्रोध उदीर जी ॥ बिहुं कानें खीला ठोकाणा, निव बुटा महावीर जी ॥ आए॥ १५ ॥ चार हत्यानो कारक हुंतो,, दृढप्रहार अतिरक जी ॥ क्तमा करीने मुक्तें पहोतो, जपसर्ग सह्या अनेक जी ॥ आण ॥ १६ ॥ पो होरमांहे जपजंतो हास्वो, क्रोधें केवल नाण जी॥ देखो श्रीदमसार मुनी सर, सूत्र गुण्यो उठाण जी '॥ आ०॥ २७॥ सिंह गुफावासी कृषि की धो, श्रु लिजड रूपर कोप जी ॥ वेश्या वचन गयो नेपालें, कीधो संजम लोप जी ॥ त्राण ॥ २० ॥ चंद्रावतंसक काउसग रहियो, क्रमा तणो जं मार जी ॥ दासी तेल प्रस्वो निशि दीवो, सुरपदवी लही सार जी॥आण ॥ १ए॥ इम अनेक तस्या त्रिज्ञवनमें, क्तमागुणें चित्र जीव जी ॥ कोध क री कुगतें ते पहोता, पाढंता मुख रीव जी ॥ त्राव ॥ ३० ॥ विष हलाहल कहीयें विरुष्ठं, ते मारे एक वार जी ॥ पण कषाय अनंती वेला, आपे म रण अपार जी ॥ आठ ॥ ३१ ॥ क्रोध करंतां तप जप कीधां, न पडे कांई गम जी ॥ त्याप तपे परने संतापे, क्रोधशुं केहो काम जी ॥ त्या ॥ ॥ १३॥ क्मा करतां खरच न लागे, जांगे कोड कलेश जी ॥ अरिहंत देव आरा धक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ आण ॥ ३३ ॥ नगरमांहे नागोर न गीनो, जिहां जिनवर प्रासाद जी॥ श्रावक खोक वसे श्रति सुखिया, धर्म तणे परसाद जी ॥ अ१० ॥ ३४ ॥ इतमा छत्रीशी खांतें की धी, आतम पर जपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण समज्या, जपशम धस्त्रो त्रपार जी ॥ ॥त्र्याण। ३५ ॥ जुगप्रधान जिएचंद सुरीसर, सकलचंद तसु शिष्य जी॥ समयसुंदर तसु शिष्य जाणे इस, चतुर्विध संघ जगीश जी ॥३६॥ इति॥ ॥ अथ श्रावकना एकवीश गुणनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ सजुरु कहे निसुणो जिव खोक, धर्म विना जिव होये फो क ॥ गुण विण धर्म किन्ने पण तथा, आंक विना मीडां होय यथा ॥ १ ॥ धर्मरयणने तेहज योग, जेहने अंगें गुण आजोग ॥ आवकना गुण ते ए कवीश, सूत्रें जांख्या श्रीजगदीश ॥१॥ पहेंखे गुणें ठल ठिखियो न होय, वीजे इंडियपदुता जोय॥त्रीजे सौम्यस्वजावी जाण, चोथे खोकित्रय शुज वाण ॥ ३ ॥ चित्त संक्षेश तजे पांचमे, ठठे अपजसधी वीशमे॥ प्रने वंच क निहें सातमे, दाहिणवंत होए आठमे ॥ ४॥ खजावंत नर नवमे क
हो, करुणाकारि दशमें लहो। ॥ एकादशमे होए मध्यस्य, द्वादशमे गुण
रागी प्रशस्त ॥ ५॥ धर्मकथा वल्लन तरमे, शुजपरिवार सहित चल्रदमे॥
उत्तर कालें निजहितकार, करे काज पत्ररमे विचार ॥ ६॥ षोडशमे गुण
दोष विशेष, जाणे निज पर समवडलेख ॥ सदाचार ज्ञानादिक वृद्ध, सत्त
रमे सेवे ते तिद्ध ॥ ५॥ अडदशमे गुणवंत महंत, तेहनो विनय करे म
न खंत ॥ न वीसारे कीधो जपगार, श्रावकगुण उंगणीशमो सार ॥ ७॥
गीतार्थ साधे परअल, वीशमा गुणनो धारो अल ॥ धर्मकार्य करवे होए
दक्त, एकविशमो गुण ए प्रत्यक्त ॥ ए॥ ए मांहेला उंगणीश विरहिति,
श्रावक धर्मनी निहं प्रतिपत्ति॥ चोथा चल्रदशमा गुण विना, अंगीकस्रो
पण हारे जना ॥१०॥ ते माटे गुण अंगें धरो, जिम श्रावकपणुं सूधुं वरो॥
पंकित शांतिविजयनो शिष्य, मानविजय कहे धरी जगीश ॥११॥ इति॥

## ॥ अथ नोकरवालीनी सञ्चाय॥

।। ढाख ।। एक नारी रे, धर्म तणे धुरि जाणियें ।। तस महिमा रे, मन रंगें वखाणियें ।। तेह नारी रे, आपण मन आणियें ।। पटदर्शनी रे, ते पण सघले मानीयें ।। १ ॥ त्रूटक ।। मानियें पण नारी रूडी, निहं कूडी ते वली ।। करकमल की जें काज सी फे, ध्यान धरियें मन रूली ।। त्रिज्जवन सोहे रूप मोहे, देव दानव कर चडी ॥ नोकरवाली मुहपत्तीने, आदिपुरुषें आदरी ।। १ ॥ ढाल ॥ जिनशासन रे, नोकरवाली सहु कहे ॥ परशासनी रे, जपमाली किह सिव गणे ।। तुरकाणे रे, तसबी बोले मन रूली ।। अक्तमाला रे नाम किहयें, चोशुं वली ।। ३ ॥ त्रूटक ॥ तसनाम ली जे काम सी फें, लोक बुके अति घणा ॥ दरसण दी ठे प्रुःख नी ठे, पाप जाये जव तणां ॥ हिर हर पुरंदर सकल मुनिवर, हाथे रूडी दीस ए ।। नोकरवाली हाथ लेतां, देव दानव तूस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक शोहे रे, मूरित मोहनवेलडी ॥ शोहामणी रे, चतुरपणे ते गुणें चडी ॥ दोय चोपन रे, मली करी अष्टोत्तरी ॥ ध्यान धरियें रे, तिरयें जवसायर वली ॥ योग वृटक ॥ संसार तिरयें ध्यान धरियें रे, तिरयें जवसायर वली ॥ नोक रवाली ध्यान धरतां, मुक्ति पामे केवली ॥ सिव आश पूरी कर्म चूरी, सहे रवाली ध्यान धरतां, मुक्ति पामे केवली ॥ सिव आश पूरी कर्म चूरी, सहे

जें सोहे मन रुखी ॥ कहें कवित्रण सुणो खोको, श्राराधो एक मन वली ॥ ६ ॥ इति नोकरवाली सद्याय ॥

॥ अय तेर काठीयानी सद्याय॥

॥ श्राखस पहेखो जी काठियो, धर्में ढीख कराय रे, निवारोजी काठि या तेर घूरें करों ॥ वीजो ते मोह पुत्र कलत्रशुं, रंगें रहे लपटाय रे ॥ निवारोजी ॥ काण् ॥ १ ॥ त्रीजो ते व्यवरण धर्ममां, बोले व्यवरण वाद रे ॥ निवारोजी ॥ काण ॥ चोथो ते दंज्ञज काठियो, न लहे विनयें सवाद रे ॥ निवारोजी ॥ काण्॥ १॥ कोध ते काठियोः पांचमो, रीशें रहे श्रम खाय रे ॥ निवारोजी ॥ काण ॥ विद्यो प्रमाद तें कावियो, व्यसनें विगूतो श्राय रे ॥ निवारोजी ॥ का॰ ॥ ३ ॥ कृपण काठियो सातमो, न गमे दा ननी वात रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ आठमो जयथी नवी सुणे, नरका दिक अवदात रे ॥ निवारोजी ॥ काण्॥ ४॥ नवमो ते शोक नामें क ह्यो, शोकें ठांने धर्म रे ॥ निवारोजी ॥ काण्॥ दशमो अज्ञाने ते निव बहे, धर्म अधर्मनो मर्म रे ॥ निवारोजी ॥ का० ॥ ए ॥ विकथा नामें श्रग्यारमो, लोक वातें धरे प्रीत रे॥ निवारोजी ॥का० ॥ कुतुहल कारियो वारमो, कौतुक जोवा धरे चित्त रे ॥ निवारोजी ॥ काण्॥ ६ ॥ विषय ते काठियो तेरमो, नारि साथें धरे नेह रे॥ निवारोजी ॥ काण॥ श्री महि मा प्रजसूरिनो, जाव साधु धन तेह रे॥ निवारोजी ॥ काण ॥ ७॥ इति श्री तेर काठियानी सद्याय॥

॥ अय महोटी होंस न करवा आश्रयी सद्यायं॥

।। होंजीडा जाई (प्राणि) होंज्ञ न कीजें महोटी ॥ वावी वे वरटी बा जरी, तो शाली केम लिह्यें मोटी रे॥ हों० ॥ प्राणी जेणें दीधुं तेणे ली धुं, जे देशे ते लेशे ॥ जेणे निव दीधुं तेणे निव लीधुं, दीधा विना केम लेशे रे॥ हों० ॥ १ ॥ वाव्या विना कर्षण केम लिह्यें, सेव्या विना केम विरों ॥ पुण्य विना मनोरथ मोटा, दीधा विना केम करियें रे॥ हों० ॥ ॥ १ ॥ शींसानी अकोटी आपी, आपी तरुवानी त्रोटी ॥ ते सोनार कने कम मागीश, सोनानी करी मोटी रे॥ हों० ॥ ३ ॥ शालीज धन्नो कयव न्नो, मूलदेव धनसार ॥ पुण्य विशेषें प्रत्यक्त पाम्या, अलवेसर अवतार रे

॥ हों० ॥ ४ ॥ एवं जाणी रूमुं पामी, करजो धर्मसखाई ॥ साधु हर्ष कर जोडी विनवे, दीधुं लेशे लाई रे ॥ हों० ॥ ४ ॥ इति होंसीडा सखाय॥ ॥ अथ रसनानी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ बापडली रे जीजडली तुं, कां निव बोले मीतुं ॥ विरुट्या वचन तणुं फल विरुटं, ते ग्रुं तें निव दीतुं रे ॥ बापडण ॥ १ ॥ अन्न पान अण ग मतुं तुफ्नें, जो निव रुचे अनीतुं ॥ अण बोलावी तुं शा माटें, बोले कुव चन धीतुं रे ॥ बाण ॥ १ ॥ असियेंद शुं नवपह्मव थाये, कुवचन प्रगित घाले ॥ अप्रिथकं कुवचन, तेतो क्रण क्रण शाले रे ॥ बाण ॥ ॥ ३ ॥ क्रोध जखुं ने कूर्डं बोले, अजिमानी अणशक्ति ॥ आप तणा अव गुण निव देले, ते केम जाशे मुक्ति रे ॥ बाण ॥ ४ ॥ ते नर मान महोत निव पामे, जे नर होय मुखरोगी ॥ तेहने कोई निव बोलावे, तेह तो प्र त्यक्त शोगी रे ॥ बाण ॥ ४ ॥ जनम जनमनी प्रीति विणाशे, कडवे वयणें बोले ॥ मीठां बोलथकी विण गरथें, जग लीजें सिव मोलें रे ॥ बाण॥ ६ ॥ आगम वयण तणे अनुसारें, जे जिब रुद्धं जांकें ॥ प्रगट थई परमेश्वर तेह नी, लाज जगमांहि राखे रे ॥ बाण ॥ आ। सुवचन कुवचननुं फल जाणी, गुण अवगुण मन आणी ॥ वात कही जें अमिय समाणी, लिब्ध कहें सुण प्राणी रे ॥ बाण ॥ ए ॥ इति रसनागीत समाप्तम् ॥

॥ अथ सचित अचित विचार सञ्चाय ॥

॥ प्रवचन श्रमरी समरी सदा, गुरुपयंपकज प्रणमी मदा ॥ वस्तु त णुं कहुं काल प्रमाण, सचित श्रचित्त विधि जिम दियो जाण ॥ १ ॥ बेहु कृतु मदी चोमासा मान, षदकृतु मिलने वर्ष प्रमाण ॥ वर्षा कीत जक्ष त्रिहुं काल, त्रिहुं चोमासे वर्ष रसाल ॥ १ ॥ श्रावण जाड़वो श्रा शो मास, कार्तिके वरसालो वास ॥ मागशीर पोष माहाने फाग, ए चारे शीयाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र वैशाख ने जेठ श्राषाढ, जक्षकाल ए चारे गाढ ॥ वर्षा शरद शिशिर हेमंत, वसंत ग्रीष्म षदकृतु एम तंत ॥ ४ ॥ वर्षा पनर दिवस पकवान, त्रीश दिवस शीश्राले मान ॥ वीश दिवस ज नाले रहे, पठी श्रतस्य श्री जिनवर कहे ॥ ४ ॥ रांघ्युं विदल रहे चिहुं जाम, उदर श्राठ प्रहर श्रितिराम ॥ शोल प्रहर दिहं कांजी ठास, पठी रहे तो जीवनिवास ॥ ६ ॥ पापड लोइया वटक प्रमाण, चार प्रहर पो खीनुं मान ॥ मात्र प्रमुख निविगय पकवान, चिखतरसें तस काखनुं मान ॥ छ॥ धान धोयण ठ घडी परमाण, दोय घडी जलवाणी जाण ॥ फल धोयण एक प्रहर प्रमाण, त्रिफलांजल वे घडीने मान ॥ ७॥ त्रण वार जकाले जेह, शुद्ध उछांजल किहेंयें तेह ॥ प्रहर तीन चल पंच प्रमाण, वर्षा शीत जनाले जाए॥ ए॥ श्रावए नाष्ट्रवडे दिन पंच, मिश्र लोट अ णचालित संच ॥ आशो कार्त्तिक चिहु दिन जाण, मागशीर पोष दिन तीन प्रमाण ॥ १० ॥ माह फागणे कह्या पण जाम, चैत्र वैशाख चिहुं पो र अजिराम ॥ जेठ आपाढ प्रहर त्रण जोइ, तद उपरांत सचित्त ते होइ ॥ ११ ॥ अलसी कोड्या कांग ने ज्वार, साते वरसें अचित्त विचार ॥ वि दल सर्व तिल तूयरी वाल, पांचे वरसें अचित्त रसाल ॥ १२ ॥ गहुं शा क्षि खडधान कपास, जव त्रिहुं वरसे अचित्त ते खास ॥ सीत ताप वर्षा दिक जोइ, सचित्त योनी ऋचित्त ते होइ॥ १३॥ हरडे पींपर मरिच व दाम, खारेक झाख एला अनिराम ॥ शत जोयण जंबवटमां वहे, शाव जोयण थलवटमां कहे ॥ १४ ॥ धूम अग्नि परियष्टण करी, अचित्तयोनि तस थाये खरी ॥ सचिन वस्तु प्रवहण्नी जेह, थाये अचिन प्रवचन क हे तेह ॥ १५ ॥ गेरु मणशिल लूण हरियाल, आवे जलवट मांहे रसाल ॥ ते अचिन होये प्रवचन साख, पण खेवानी नहिं तस जाख ॥ १६॥ धोलो सिंधव कह्यो अचिन, श्राद्धविधें अक्र परतीत ॥ इलादिक उला जे थाय, तेह अचित्त थापना निव थाय ॥ १७ ॥ खोरुं घृत जे कालातीत, पलटाए वरणादिक रीत॥ काचूं इध विदल संयोग, याये अनद्य कहे मुनि लोग ॥ १७ ॥ वार प्रहर रहे ज्यली राव, शोल प्रहर राइतुं अजाव ॥ दहिं राई विदलें देवाय, उस करे तो शुद्धज याय ॥ १ए॥ कडाविगय परि शेक्युं धान, मुहूर्न चोवीश गोमूत्रनुं मान ॥ ढुंढणियादिक विदलनी दाल, शेक्यां धान परें तस काल ॥ २०॥ चार प्रहर शीरो लापशी, विद ल परें ते प्रवचन वशी ॥ जिहां जेहनो काल पूरो याय, तिहां ते वस्तु अजदय कहेवाय ॥ ११ ॥ अथाणा प्रमुख सहु जाण, चितत रसें तस कालनुं मान्॥ वीलवणादिक केरो काल, शास्त्रमाहे हे तेह विशाल॥ ।। ११ ।। तेह जाणी इहां नाण्यो एह, अल्पबुक्तिने पडे संदेह ।। आईधान श्रंकूरा निकले, ते सहु वस्तु अजदयमां जले॥ १३॥ ए बोल्यो लव लेश

विचार, विस्तार प्रवचनसारोद्धार ॥ धीरविमल पंक्ति सुपसाय, कवि नय विमल की धी सद्याय ॥१४॥ इति सचित्त अचित्तविचार सद्याय संपूर्ण॥ ॥ अथ वैराग्य सद्याय ॥

॥ कों काज न आवे रे डिनियांके लोको, कों काज न आवे ॥ जूठी बातका आनि जरोंसा, पीढ़े सें पस्तावे रे ॥ डु० ॥ १ ॥ मतलबकी सव मिल लोकाई, बहोतिहं रंग बनावे रे ॥ डु० ॥ १ ॥ अपना अर्थ न देले सो तो, पलकमें पीठ देलावे रे ॥ डु० ॥ ३ ॥ बाजीगरकी बाजी जेसा, अजब दिमाक देलावे रे ॥ डु० ॥ ४ ॥ देलो डिनियां सकल लीली है, युंहीं मन ललचावे रे ॥ डु० ॥ ४ ॥ जिनें जान्या तिने आप पिठान्या, बे लब री डु:ख पावे रे ॥ डु० ॥ ६ ॥ हंस सयाने एक सांइंसुं ठर, काहेकुं चित्त न लावे रे ॥ डु० ॥ ॥ ९ ॥ इति

॥ अथ चैतन्यशिकानास प्रारंत ॥

॥ आप विचारजो आतमा, जांते हां जूखे अधिर पदारथ उपरें, फोगट शुं फूले ॥ आए ॥ १॥ घटमांहे वे घर्षणी, महेलो मननो जामो ॥ बोले ते बीजो नथी, जोने धरी तामो ॥ त्राण।। श। पामीश तुं पासे थकी, बाहेर शुं खोले ॥ बेसे कां तुं बूडवा, मायानी जेले ॥ आए ॥ ३॥ श्रीज्या विण केम पामीयें, सुण मूरख प्राणी ॥ पीवाये किम पशलीयें, जांजवानां पाणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ आप स्वरूप न उंखखे, मायामांहे जूखे ॥ गरय पो तानी गांवनो, व्याजमां जिम मूखे ॥ श्राण्॥ ॥ जोतां नाम न जाि यें, नहिं रूप न रेख ॥ जगमांहे ते केम जड़े, अरूपी अलेख ॥ आण्॥ ६॥ अंध तणी पेरें आफले, सघला संसारी॥ अंतरपट आफो रहे, को ण जूवे विचारी ।। आण ॥ ७ ॥ पहेले पड पाढुं करी, पठी जोने निहा ली।। नजरें देखीश नाथने, तेह्शुं के ताक्षी ॥ आए॥ ए॥ बंधणहारो को नथी, नथी होडावण हारो ॥ प्रवृत्तें बांधीयें पोतें, निवृत्तें निस्तारो ॥ आ। ॥ ए ॥ नेदानेद बुद्धें करी, जासे हे अनेक ॥ नेद त्यजीने जो जजे, तो दीशे एक ॥ आण ॥ १ण॥ काले घोलुं नेलियें, तो ते याये वे रंगुं ॥ वे रंगें बुडे सहि, मन न रहे चंगुं ॥ आण ॥ ११ ॥ मन मरे नहिं जिहां लगें, घुमे मद घेस्यो॥ तब लगें जग जूह्युं जमे, न मटे जब फेरी ॥ आण्॥ ॥११॥ उंघ तणे जोरें करी, शुं मोह्यो सुहणे ॥ अलगी मेली उंघने, खो

सी जोने खूणे ॥आण। १३॥ त्यारें जगमां तुजितना, बीजो नवी दीशें॥ जिन्न जाव मटशे तदा, सेहेजें सुजगीशें ॥ आण ॥ १४॥ मारुं तारुं निके करे, सहुची रहे न्यारो ॥ इणे एहिनाणे जेखस्यो, प्रजु तहने प्यारो ॥ आण ॥ १५॥ सिद्धदिशायें सिद्धने, मिलयें एकांति॥ जदयरत कहे आ तमा, तो जांगे जांति॥ आण ॥१६॥ इति चैतन्धशिकाजास संपूर्ण ॥

॥ श्रय वैराग्य सञ्चाय ॥ राग श्राशावरी ॥

॥ किसीकुं सब दिन सरखे न होय॥ प्रह्र जगत ऋसंगत दिनकर, दि नमें श्रवस्था दोय॥किण।१॥ हिर बिलिजड पांक्व नल राजा, रहे षटखंक रििं लोय॥ चंकालके घर पाणी आएयुं, राजा हिरचंद जोय॥ किण।१॥ गर्व म कर तुं मूढ गमारा, चडत पडत सब कोय॥ समय सुंदर कहे इ तर परत सुख, साचो जिनधर्म सोय॥ किण।३॥ इति वैराग्य सद्याय॥ ॥ श्रथ निद्यानी सद्याय॥

॥वेटी मोह निरंदकी, निद्धा नामे विख्यात वे॥ धर्म द्वेषिणी पापणी, न गमे धर्मनी वात वे॥ निंद न सहे जे सक्जानां, सक्जानां वे छु:खनंजना वे ॥टेक॥निंण॥१॥ घरे सघला जीवने, जिहां जमनो पास वे॥ जा घि िनिंद न पाइयें, ता घि प्रजुको वास वे॥ निंण॥१॥ आलस जमराव एहनो, जालिम जोऊ जुवान वे॥ इत वगासू जाणजो, चाले आगेवान वे॥निंण॥३॥ जाति पांच वे जेहनी, पसरी विश्व प्रमाण वे॥ केवली विना एक जेहनी, कोई न सोपे आण वे॥ निंण॥ ४॥ कर्में न आवे द्वकडी, धर्में पाडे नंगाण वे॥वाजां वाजे जिहां उंघनां, तिहां होय सुखनी हाण वे॥ निंण॥ ४॥ उद्यरत कहे उंघने, जीत्यानो एइ उपाय वे॥ पहेलां आहार जो जीतियें, तो निद्धावश थाय वे॥ निंण॥ ६॥ इति॥

॥ अजन्यने जपदेश न खागवा विषे सद्याय॥

॥ उपदेश न लागे अजन्यने, बहुविधशुं बूजवे कोय रे ॥ गंगाजल न वरावीयें, पर वायस हंस न होय रे ॥ उ० ॥ १ ॥ जेम जेम प्रतिबो धियें, तिम तिम बमणो थाय रे ॥ हांजी कुटिल अश्वतणी पेरें, अवलो अवलो उजाय रे ॥ उ० ॥ १ ॥ पयंने शाकर पातां थकां, विषधरने वधे विषपूर रे ॥ हांजी हाण करे हित दाखतां, ते माटें वशीयें पूर रे ॥ उ० ॥ ३ ॥ अजाण प्रःखें समजावीयें, सुजाण घणुं सुलज रे ॥ हांजी दाधा रंगी मानवी, बूजवंतां महाडुर्खज रे॥ उ०॥ ४॥ मारक उदाइ रायनो, नमुची नामें प्रधान रे॥ ते तो बार वरस क्षगें बूजव्यो, पण न वक्षी तस शान रे॥ उ०॥ ॥ शिलामण देतां थकां, जे समजे निहं कलपंत रे॥ हांजी अवग्रणकारी जाणवो, सुग्रीव वानर दृष्टांत रे॥ उ०॥ ६॥ कुसंगा संग न कीजीयें, धरियें नवपद ध्यान रे॥ उदय सदा सुख संपजे, उत्त म संग निदान रे॥ उ०॥ ९॥ इति उपदेश न क्षागवा विषे सद्याय॥ ॥ अथ वैराग्य सद्याय॥

।। प्राणी काया माया कारमी, कूडो वे कुटुंब परिवार रे जीवडला॥ स मरण कीजें सिऊनुं॥ माहरुं माहरुं मकर रे मानवी, पंथ बहेवुं परले पार रे जीवडला ॥ समण ॥ १॥ प्राणी सहुने वलावे सांकख्या, मिलया वे मोइने संवंध रे जीवडला ॥ प्राणी आयु क्यें अलगां थयां, धीवो ए वो संसारी धंध रे जीए ॥ समण ॥ श। प्राणी काष्ट्र परें रे काया बले, व खीं केश बले जेम घास रे जीए ॥ प्राणी मानवी मर्कट वैरागीया, वली पडे माया विश्वास रे जीए॥ समण॥ ३॥ प्राणी पडाइ उमे जीव ऊपरें, दोरी पवन वर्ले खेइ जाय रे जीए॥ प्राणी त्रूटी दोरी संधाय हे, आउखुं त्रूदुं न संधाय रे जी० ॥ सम० ॥ ४ ॥ प्राणी काचे कुंनें पाणी केम रहे, इंस उडी जाय काय रे जीए ॥ प्राणी आख्या अतिघणी आदरे, यावा वालो तेहिज थाय रे जी० ॥ समण ॥ याणी जेने घरे नोबत गडगडे, गावे वली पट राग रे जी। प्राणी गोखें तेहने घूमता, शून्य थये वली जडे काग रे जी<sup>0</sup> ॥ सम०॥ ६॥ प्राणी एम संसार असार हे, सारमां श्री जिनधर्म सार रे जी ।। प्राणी शांति समर समता धरी, चार त्यजी वली आदरो चार रे जीए॥ समण॥ ।।। प्राणी पांचे तजो रे पांचे जजो, त्रख जीपो त्रण गुणधार रे जी०॥ प्राणी रयणी जोजन परिहरो, सात व्यसन तजो सुविचार रे जी०॥ सम०॥ ७॥ प्राणी समता करो व काय नी, सांजलो सद्युरुनी वाण रे जीए॥ प्राणी साची शीलामण एह हे, एम कहे वे मुनि कख्याण रे जीए॥ समण॥ ए॥ इति॥

॥ अथ वखाण सुणती वखते स्त्रीयोना कथलानी सद्याय ॥ ॥ आघा आम पधारो पूज्य अमघर वोहरण वेला॥ ए देशी ॥ अथवा आज महारे एकादशी रे, नणदल मौनधरीने रहियें॥ ए देशी ॥ आठम पाली पडवे दिवसें, जपासरामां श्रावे ॥ नारी वीश पचीश मिलने, वला ण सुणवा नावें ॥ १ ॥ रूडे रंग धरीने राज, सुणजो वात सयाणी ॥ ए श्रांकणी ॥ पाटें बेसी पूज्य तिवारें, धर्मकथा उपदेशे ॥ श्राविका मलीने मांहोमांहे, कथलो करवा बेशे॥ रूण॥ १॥ एक कहे सांजुल रे सजनी, महारी सासु महोटी ॥ महारा ऊपर मन निव राखे, ए वाँतो हे खोटी ॥ रूण ॥ ३॥ बीजी नारी कहे सुण बाइ, मुजं सासु मुखंमीठी ॥ पण सारी वस्तु संग खेइ, आपे जइने बेटी ॥ रू० ॥ ४ ॥ त्रीजी नारी तुरत कहे तव, मुज सासु सुकुलीणी ॥ महारी ऊपर कदीय न कोपे, जतन करे मनजीणी॥ रूण॥ य ॥ चोथी नारी बोखे बाइ, मुज वहुअर गुणवंती, घरनुं काम जपाडी लीधुं, मुजने करी निचिंती ॥ रू० ॥ ६ ॥ पांचमी ना री प्रेमधरीने, बोले सांजल बाइ॥ विनयवती हे महारी वहू अर, रीश न ही तिल राइ॥ रूण॥॥। ववी नारी बोले वानी, तुज वहू और गुणनारी॥ वातो करती किमहि न थाके, बेसे पर घर बारी ॥ रूण ॥ ए ॥ सातमी नारी कहे सुण सजनी, शी कहुं मुजघर वातो ॥ माहारी सासु माहरी साथें, वट्याकरे दिनरातो ॥ रूण ॥ ए॥ आठमी नारी कहे सुण आइ, मुज प्रीतमने नचावे ॥ मुज सासु हे अति अणखीली, ते देखी जुःख पावे ॥ रूण ॥ १ण ॥ नवमी नारी बोले नेहें, मुजपुत्र मुजने ठारे ॥ बहू अर क्यारें वेढ करेतो, आवी तेहने वारे ॥ रूण ॥ ११ ॥ दशमी दियता बोले देखी, बाइ तुम बलीहारी ॥ वहू अरने हुं रीश करुंतो, पुत्र्यी याउं खारी ॥ रू० ॥ १२ ॥ एकादशमी इणिपरे आखे, मुज बहू अर विकराली ॥ शीख देयंता सूखी दे हे, चपल महा चंमाली ॥ रू० ॥ १३॥ प्रादश मी इम बोले बाला, मुजवहु घणिज सयाणि॥ सघली घरनी त्रेवड सम जे; पण आंखे वे कांणी ॥ रू०॥ १४॥ एक कहे सांजल रे अंबा, मुज पाडोसण पापी ॥ विना सवारथ वेढ करावे, थोथी वातो थापी ॥ रूण ॥ १५॥ एक कहे बाई हुं शुं श्रावुं, उपासरे इण्वेला॥ सूख्यो वैयो जोजन मागें, टखेजो रांघण वेला ॥ रू० ॥ १६॥ एक कहे मुज वहु अर जोली, हर घणुं ते ताणे ॥ एकण् हाथें कामज करवुं, ते परमेश्वर जाणे ॥ रूणारे ॥। एक कहे सुण सजनी माहरी, छःखनी शी कहुं वातो॥ सासु सूखी नणंद हठीखी, तिम दीखरीर्ड तातो ।।रूण।।रण। एक कहे सुण महारी माता,

में इवे किम रहेवाय ॥ सासू ससरो पीछ पनोतो, समसां खावा धाय ॥ ॥ रू० ॥ रए ॥ एक कहे सुण सायण आपणे, एकज सगने परणी ॥ ता हारे छैया ठाकम ठोला, महारे नहीं अघरणी ॥ रू० ॥ १० ॥ एक कहे माहारे पानी ॥ बाई तुं लेवाने आवजे, बास करेशुं जाकी ॥ रूणाश्र ॥ एक कहें इस महारी सासु, मुजने खाड खडावे, वस्त्रे वावस्त्रे सारो सुधरो, मुजविण मृख न जावे ॥ रू०॥ ११॥ एक कहे तुं वहू अर वारु, तुजने जखेंज जाइ ॥ माहारी वहुअर मुजने विगोवे, खटरस जोजन खाइ॥ रू०॥ १३॥ एक कहे सांजल तुं फूइ, स खर बाइनी वातुं ॥ महारे व्हाणुं ठीं मिलियुं, में जोवराव्युं खातुं ॥ रूण ॥ १४॥ एक कहे सुण अमुकी बाइ, आघरणीने खोले ॥ सात सोपारी मु जने नापी, में आपीती शोले ॥ रूणाश्य ॥ जोइती बाइयें जमवा तेड्यां, सीरो सघलो खूटो ॥ शाठ दिवसनी सुखडी आणी, खबरावी करी कूटो ॥रू।।।१६॥ एक कहे मुज मांचो त्रूटो, पायो एकज जांगो ॥ सज्ज कस्वा विण केम सूवाये, अणचिंत्यो डुःख खागो ॥ रू०॥ १५॥ एक कहे मुज श्रंग श्रकलाये, श्रालस अधिकुं श्रावे ॥ मांकण मुश्रा करडे रातें, तेहथी उंघज नावे॥ रू०॥ १०॥ एक कहे मुज चूलो जांगो, ते जइ करवो रू डो ॥ एक कहे मुज प्रीतम प्यारे, चूंपे आखो चूडो ॥ रूण॥ एक कहे महारा रेंटीयडानो, त्राकलडो त्रटकाणो ॥ एक कहे मुज मालज का पी, किशुं नहीं कंताणो ॥ रू० ॥ ३० ॥ एक कहे जपासरें आज्या, कहो किशुं कीई आखे, वे कोकडी कांतुं जो बाई, घरमां शाकज चाले ॥ रूष ॥ ३१ ॥ एक कहे धोवाने जझ्यें, जो बाई तुं त्र्यावे ॥ एक कहे मुज धान्य सख्यो ते, घर धंधे मन धावे ॥ रूण ॥ ३१ ॥ एक कहे हे माहा री साथण, जो तुं मुजघर छावे॥ माथो गुंथीने मनगमती, करशुं वातो जावें ॥ रू० ॥३३ ॥ एक कहे में कुखथी रांधी, एक कहे में चोला ॥ एक कहे में वाल वघात्वा, ते यया ठाकमठोखा ॥ रू० ॥ ३४॥ एक कहे मुज घेवर मीठा, एक कहे दक्ष खाजां ॥ एक कहे मुज खारु जावे, सखर ज लेबी जाजां ॥ रू०॥ ३५॥ एक कहे देशमाखव मीठो, एक गुजरात वलाणे ॥ एक कहे वे मरुधर महोटो, सोरव सकक्ष सुजाणे ॥ रूण॥ ॥ ३६॥ एक तो आपणुं राज वलाणे, अपरराज एक निदे ॥ एक कहे

राजातो तेहज, नहीं वेरो नहीं दंने ॥ रू० ॥ ३७ ॥ एहवे एक बुद्धिवंति बोखी, शुं वाझ्यो तुम कहियें ॥ कचपच करीने कानज फोड्या, वंखाण केणीपरें सुणीयें ॥ रू० ॥ ३० ॥ धर्मयानकें खावो धाइ, वातो करवा मां डो ॥ पापपोटलां बांधो प्रायं, कार्य धर्मनां ठांडो ॥ रूण ॥ ३० ॥ एहवे श्रकास थयो इम जाणी, उपदेश पूरो की थो ॥ श्राविका सरवे वांदी गुरु ने, मारग घरनो सीधो ॥ रू० ॥ ४० ॥ रे बाइयो तमे इण्विध आवी, वि कथा वातज वारो ॥ मनशुद्धि विण मुक्तिपुरीनो, कारज किणिविध सा रो॥ रू०॥ ४१॥ वली कहे गुरुजी सुणों श्राविका, कथलो कांइ न कीजे ॥ श्रुतवाणी मनशुद्धे सुणतां, सघलां कारज सीजे ॥ रूण ॥ ४१ ॥ परनो दोष देखाडी पोतें, निजञ्जातम निव वंचो ॥ दोष पोतानो देखी हुष्टें, सुकृत इणिपरें संचो ॥ रूण ॥ ४३ ॥ दशहष्टांतें दुर्खन एहवुं, मनुष्यपणुं जो पायो ॥ देव ग्रह धर्म तत्व ए त्रएये, सेवो सदा सुखदायो ॥ रू०॥ ॥ ४४ ॥ कथलो सुणीने कथलो वारो, गुरुवाणी रस चालो ॥ परनिंदा थी डुर्गति पामे, निजमन निर्मक्ष राखो ॥ रूण ॥ ४५ त्रिकरण शुद्धें ती र्थंकरनी, शुद्धकथा जे सुणशे ॥ महानंद कहे मनने रंगें, ते जवसायर त रशे ॥ रूण ॥ ४६ ॥ संवत् अढारशत दशने वर्षे, आसोमास उदारो ॥ पाखणपुरमां प्रीतें कीधो, विकथानो विस्तारो ॥ रूण ॥ ४७ ॥ इति ॥

॥ श्रथ क्षोजनी सञ्चाय ॥ इनर श्रांवा श्रांवली रे ॥ ए देशी ॥ ॥ क्षोज न करीए प्राणीया रे, क्षोज बुरो संसार ॥ क्षोज समो जगमां नही रे, डुगतीनो दातार ॥ जिम पामो जवपार ॥ ज० ॥ क्षोज बूरो रे संसार ॥ र ॥ कर जो तुमें निरधार ॥ ज० ॥ जिम पामो जवपार ॥ ज० ॥ क्षोज बूरो रे सं सार ॥ ए श्रांकणी ॥ श्रती क्षोजे क्षकमीपती रे, सागरनामे शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो रे, जई वेठो तस हेठ ॥ ज० ॥ क्षो० ॥ २ ॥ सोवन मृ गना क्षोजथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता नारि गमावीने रे, जमीयो ठामो ठाम ॥ ज० ॥ क्षो० ॥ ३ ॥ दशमा ग्रणठाणां क्षों रे, बोज तणुं ठे जोर ॥ शिवपुर जातां जीवनें रे, एइज महोटो चोर ॥ ज० ॥ क्षो० ॥ श ॥ क्रोध मान माया क्षोजथी रे, दुर्गति पामे जीव ॥ प्रवश पडीयो वापडो रे, श्रहोनिश पांडे रीव ॥ ज० ॥ क्षो० ॥ थ ॥ परिमहना परिहारथी रे, खहीं शिवसुक सार ॥ देव दाणव नरपति थई रे, जाशे मुक्ति मकार॥

त्रण ॥ सोण ॥ ६ ॥ जावसागर पंकित जाणे रे, वीरसागरबुध शिष्य ॥ सोज तणे त्यागं करी रे, पहोचे सयस जगीश ॥ जण् ॥ खोण ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री उद्यरलजी कृत शीयलनी नववाड प्रारंजः॥

्रा दोहा।। श्री गुरुनें चरणे नमी, समरी शारद माय ॥ नवविध शीखनी वाड़नो, जत्तम कहुं जपाय ॥ १॥

॥ ढाल पहेली ॥ वधावानी ॥ पहेलोने पासो होजी ॥ए देशी॥

॥ पहेलीने वाँड होजी वीर जिनवरें कहा, सेवो सेवो हो वस्ति विचा रीनें जी ॥ स्त्री पशु पनंग होजी वासो वसे जिहां, तिहां निव रहेवं हो शीलव्रतधारीनें जी ॥ १ ॥ जिम तरुमालें होजी वसतो वानरो, मनमां बीये रखे जुंड पशुं जी ॥ मंजारी देखी होजी पिंजरमांहेथी, पोपट चिंते हो रखे दोटें चमूं जी ॥ ३ ॥ जिम सिंहलंकी होजी सुंदरी शिर धरी, ज खनुं बेमुं हो जुगतिशुं जालवे जी ॥ तिम मुनि मनमें होजी राखे गोप वी, नारीने निरखी होजी चित्त निव चालवे जी ॥ ४ ॥ जिहां होवे वा सो होजी सेहेजे मंजारनों, जोखम लागे हो मुषकनी जातने जी ॥ तेम बहाचारी होजी नारीनी संगतें, हारे हो हारे रे शीयल सूधांतनें जी ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ एम वाड विघटे विषय प्रगटे, शंका कंखा नीपजे ॥ तीव कामें धातु बिगडे, रोग बहु विध ऊपजे ॥ मन्नमांहे विषय व्यापे, विषयशुं मन रहे मली॥ उदय रल कहे तिले कारण, नव वाड राखो निर्मली ॥६॥

॥ ढाल बीजी ॥ विदर्जदेश कुंमनपुर नयरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिज्ञवन धणी, अज्ञान तिमिरहर दिनमणि॥ शीय खरलनां जतन तंते, जांखी वाड बीजी जगवंते ॥ १॥ त्रुटक ॥ जगवंत जाखे संघ साखे, शीयल सुरतर राखवा॥ मुक्ति महाफल हेतु अद्भुत, चा रित्रनो रस चाखवा॥ १॥ मीठे वचनें माननीशुं, कथा न करे कामनी॥ वाड विधशुं जेह पाले, बिलहारी तस नामनी॥ ३॥ वात वतने घातका री, पवन जिम तरुपातनें॥ वात करतां विषय जागे, ते माटे तजो ए वात ने ॥ ४॥ लींखु देखी दूरशी जिम, खटाशें माढा गले॥ गगनें गर्जारव सु णीनें, हडकवा जिम जञ्जले ॥ था। तिम ब्रह्मचारीना चित्त विणसे, वयण सुं दूरीनां सुणी॥ कथा तजो तिणे कारणे, इम प्रकाशे त्रिज्ञवन धणी॥ ६॥

# जदयरत्रजी कृत शीयखनी नववाडोनी सद्याय. ( एष )

॥ ढाख त्रीजी॥ तट जमुनानो रे अति रक्षीयामणो रे ॥ ए देशी॥ ॥ त्रीजीने वाहें रे त्रिज्ञवन राजीयो रे ॥ एणी परे दीये उपदेश ॥ आ सन उंगोरे साधुजी नारीनो रे, मुदूर्त्तखर्गे सुविशेष ॥ हुं विखहारी रे जा उं तेहनी रे ॥ १ ॥ धन्य धन्य तेहनी हो मात ॥ शीख सुरंगी रे रंगाणी रागशुं रे, जेहनी साते हो धात ॥ हुं० ॥ १ ॥ शयनासने रे पाटीने पाटि से रे, जिहां जिहां वेसे हो नार ॥ वेघडी खगे रे तिहां बेसे नहीं रे, शी खत्रत राखणहार ॥ हुं० ॥ ३ ॥ कोहेखा केरी रे गंधसंयोगथी रे, जेम जाये कणकनो वाक ॥ तिम अवलानुं रे आसण सेवतां रे, विणसे शियलं सुपाक ॥ हुं० ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ हुं वारी रंगढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोथीने वाढे चेतजो हो राज, इम जांखे श्रीजिन जूप रे ॥ संविगी सूधा साधुजी ॥ नयण कमल विकासीने हो राज, रखे निरखो रमणीनुं रूप रे ॥ सं० ॥ १ ॥ रूप जोतां रह लागशे हो राज, हेला जल्लसशे श्रनं ग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे जागशे मोहनी हो राज, त्यारें होशे व्रतनो जंग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे जागशे मोहनी हो राज, त्यारें होशे व्रतनो जंग रे ॥ संजाशा दिनकर साहामुं देखतां हो राज,नयण घटे जिम तेज रे ॥ सं०॥ तम तरुणी तन पेखतां हो राज, हीणुं थाये शीयलग्रुं हेज रे ॥ सं०॥ ॥ ॥ खंचमी ॥ थांपरवारी मारा साहिवा कंवल मत चालो ॥ ए देशी॥ ॥ पंचमी वाडी परमेसरें, वलाणी हो वारू ॥ सांजलजो श्रोता तुमें, धर्मी व्रतधारू ॥ १ ॥ कुड्यांतर वरकामिनी, रमे जिहां रागें ॥ स्वरकंकणा दिकनो सुणी, जिहां मन्मथ जागे ॥ १॥ तिहां वसवुं ब्रह्मचारिनें, न कर्धुं वीतरागें ॥ वाह जांगे शील रलनी, जिहां लांग्न लागे ॥ ३ ॥ श्रिप्रपासें जिम जंगले, जाजनमांहे धरिया ॥ खालने मीण जाए गली, न रहे रस जरिया ॥ ४ ॥ तिम हाव जाव नारीतणा, वली हांसुंने रदना ॥ सांजल तां शीयल वीघरे, मन वेधे हो मदना ॥ ४ ॥

॥ ढाल बढ़ी ॥ सहीयां मारा नयण समारो ॥ ए देशी ॥ ॥ बढ़ीने वाडे बयल बबीलो, गुण रहें गाढो जालो जी ॥ सिकारथ ने कुलें नगीनो, वीर जिणंद इम उच्चलो जी ॥ १॥ अवतीपणे जे जे आगें, काम कीडा वहुविध करी जी ॥ वत लेइनें विलसित पेहेलां, रखें संजारो दील धरी जी ॥ १॥ अगनि जास्त्रां कपर पूलो, मेले जिम ज्वाला वसे जी।। वरस दिवसें जिस विषधरतुं, शंकार्ये विष संक्रमे जी॥ ॥३॥ विषय सुख जे विखसित पेइखां, तिम शीयख व्रती संजारतो जी॥ व्याकुख यहनें शीयल विराधे, पढें याय विक्ष उरतो जी ॥ ४॥ ॥ ढाख सातमी ॥ गढ बुंदीरा वाखा ॥ ए देशी ॥

॥ सातमी वार्डे वीर पर्यपे, सुणो संजमना रागी हो ॥ शीखरथना हो धोरी ॥ सूधा साधु वैरागी, मुक आणाकारी, ब्रह्मचारी विषय रस त्या गी हो ॥ शीण ॥१॥ सरस आहार ते तजजो सहेजें, विगय थोडी वावर जो हो ॥ शीव ॥ मोदक आहारें मन्मथ जागे, ते जाणी परिहरजो हो ॥ शी ।। १ ॥ सन्निपातें जिम घृत जोगें, ऋधिज करे उखाला हो ॥ शी ॥ पांचे इंडिय तिम रसें पोख्या, चारित्रमीं करे चाखा हो ॥ शीव ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग मारु गोवण खोलो कमाड ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशसा सुत हो त्रिगडे बेसी एम, आठमी वाड वखाणी शीसनीजी ॥ अतिमात्रा हो आहार तजो अएगार, खाखच राखो जो संयम शीख नी जी ॥१॥ अतिआहारें हो आवे उंघ अपार, खपनमांहे हो याये शीख विराधना जी ॥ वली थाये हो तेणे मदवंत देह, संयमनी हो नवी थाये व्याराधना जी ॥ १ ॥ जिम शेरना हो मापमांहि दोढ शेर, उरीने जपर दीजें ढांकणुं जी ॥ जांजे तोलडी हो विचडी खेरु थाय, तेम अतिमा त्राए वत बिगडे घणुं जी ॥ ३॥

॥ढाख नवमी॥काय थके सवारे ॥ अथवा गरवानी देशी॥ ॥ नवमी वाढें ।नवारजो रे, साधुजी शाणगार ॥ शरीर शोजाए शोजे नही रे, अवनीतले अणगार ॥ १॥ एम उपदेशे वीरजी रे, मुनिवर धर जो रे मन्न ॥ शीखामण ए माहरी रे, करजो शीख जतन्न ॥श। स्नान विखे पन वासना रे, जत्तम वस्त्र अपार ॥ तेल तंबोल आदें तजो रे, जद्भट वेश म धार ॥ ३ ॥ धोई नें धरणी धृस्त्रो रे, जिम रत्न हास्त्रो कुंनार ॥ तिम

शीखरलने हारशो रे, जो करशो शएगार ॥ ४ ॥

॥ ढाख दशमी ॥ जटीयाणीनी देशी ॥

॥ एकली नारी साथें, मारगें निव जावुं हो, विकी वात विशेष न की जियें॥ एक सेजें नर दोय, शीखवंत निव सूवे हो, वसी सहेजें गास न दीजियें॥ १॥ न सूवारे निज पास, साडा व वरसनी हो कांइ, पुत्रीने

पण हेजमां॥ सात वरस उपरांत, सुतने पण न सुवारे हो, कांइ शीखवंति तेम सेजमां ॥ १॥ स्त्रीसंगें नव खाख, जीव पंचेंद्रि हणाये हो, कांड् जग वंतें जांख्युं इस्युं ॥ श्रसंख्याता पण जीव, संमूर्श्विम पंचें दिय हणाये हो, वसी घणुं कहीएं किस्युं ॥ ३ ॥ इम जाणी नर नार, शीयसंनी सदहणा हो, सूधी दिलमां धारजो ॥ एह पुर्गतिनुं मूल, अब्रह्मसेवामांहि हो, जातां दिखने वारजो ॥ ४॥ तपगन्न गयण दिणंद, मन वंश्वित फख दाता हो, श्री हीररत्सूरीश्वरू ॥ पामी तास पसाय, वाडो एम वखाणी हो, शीयलनी मनोहरू ॥ ॥ खंजातं रही चोमास, सत्तरशें त्रेशवें हो, श्रांव ण वदि वीज बुधें जाणे ॥ उदयरत कहे कर जोड, शियखवंत नर नारी हो, तेहनें जाऊं जामणे ॥६॥ इति श्रीशीयलनी नववाडनी सञ्चाय संपूर्ण॥ ॥ अथ श्रीयानंदमुनिजीकृत तमाकू परिहारनी सद्याय बिख्यते ॥ ॥ प्रीतमसेंती वीनवे, प्रेमदा गुणनी खाण ॥ मेरे खाख ॥ मन मोइन एकण् चित्तें, सांज्खो चतुर सुजाण्॥ मेण्॥ १॥ कंत तमाकू परिहरो॥ ए आंकणी ॥ मूको एहनो संग ॥ मे० ॥ पंचमांहे जिम जस खीजीयें, मीलें वाधे रंग ॥ मेण ॥ कंण ॥ १ ॥ तमाकू ते जाणिये, खुरासाणीनो व्याक ॥ मेण ॥ जत्तम जन ते इम कहे, पीवानी तलाक ॥ मेण ॥ कंण ॥ ॥ ३॥ इध दहीं ते पीजियें, पीजियें साकर खांम ॥ मे०॥ घृत पीधे तन जल्लसे, तमाकू परि डांम ॥ मे० ॥ कं० ॥ ४ ॥ मोहोटा साथें बोखतां, म नमां आवे खाज ॥ मेण ॥ दिवस ते एखें नीगमे, वीणसाडे निज काज ॥ मे० ॥ कं० ॥ ५ ॥ होठ लिहाला सारिला, श्वास गंधाये जेण ॥ मे० ॥ दांत होवे पण श्यामला, हैयकुं दाजे तेण ॥ मे० ॥ कं० ॥ ६ ॥ एठ पराइ श्राचरे, विटलावे निज जात ॥ मे० ॥ व्यसनी वास्त्रो निव रहे, न गणे जात परजात ॥ मे० ॥ कंण ॥ एक ए फूंकें जेटला, वायुकाय इणाय, ॥ मे॰ ॥ खस खस सम काया करे, तो जंबुद्धीप न माय ॥ मे॰ ॥ कं॰ ॥ छ ॥ गुडाकू करी जे पीये, ते नर मूढ गमार ॥ मे॰ ॥ जख नाखे जे स्थानकें, माखीनो संदार ॥ मे॰ ॥ कं॰ ॥ ए ॥ चोमासाना कुंथुआ, ते किम शुद्धज थाय ॥ मेण ॥ तमाकू पीतां थकां, पापें पिंम जराय ॥ मेण ॥ ॥ कंण॥ १०॥ तलक तमाकू वापस्थां, परोणाने ज्ञांग ॥ मेण॥ आगें। करता लापसी, इवे ठीकरुं ने आग ॥ मेण्॥ कंण॥ ११॥ पाणी एक

ते विंडुयें, जीव कहा जिनराय ॥ मे० ॥ वडबीज सम काया करे, जेंबु द्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १२ ॥ श्रिप्त एकने खोडखे, जीव कहा जिन राय ॥ मे० ॥ संरश्वसम काया करे, तो जंबूद्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १३ ॥ श्रूकें समूर्विम लपजे, नर पर्चेडिय जाण ॥ मे० ॥ तेह असं ख्याता कहा, श्री जगदीशनी वाण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १४ ॥ जखमां जीव कहा वली, संख्य असंख्य अनंत ॥ मे० ॥ नीख फूल तिहां लपजे, श्रिप्त प्रजाले जंत ॥ मे०॥कं०॥ १५॥ तमाकू पीतां थकां, पट काय जीव हणाय ॥ मे० ॥ ज्योति घटे नयणा तणी, श्रासें पिंड जराय ॥ पार्गतरें ॥ जनम कोई पीये नही, पंचोमां पत जाय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १६ ॥ तमाकूनी संगतें, आवे सात व्यसन ॥ मे० ॥ दोय घडी निवृत्त करों, सेवो श्रीजगवंत ॥ मे० ॥ कं० ॥ १९ ॥ दया धर्म जाणी करी, सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ श्रानंद मुनि एम ज्वर, ते लहे कोडि कल्याण ॥ मे० ॥ कं० ॥१० ॥ इति श्री तमाकूपरिहार सवाय संपूर्ण ॥

॥ अय अरिषक मुनिनी सञ्चाय ॥

णवाणे र वेखू परजले, तनु सुकुमाल मुनीशो जी।। घरणि०॥१॥ मुख करमाणुं रे मालती फूल ज्युं, जजो गोलनी हेठोजी।। खरेरे वपोरें रे दी ठो एकलो, मोही माननी देठो जी।। खरिणि०॥१॥ वयण रंगीली रे न यणें वेधियो, क्रि यंज्यो तेणें ठाणो जी।। दासीने कहे जारे उतावली, ए क्रि तेडी आणो जी।। अरिणि०॥३॥ पावन कीजें रे क्रि घर आं गणुं, वहोरो मोदक सारो जी।। नवयोवनवय काया कां दहो, सफल क रो अवतारो जी।। अरिणि०॥४॥ चंडावदनी रे चारित्र चूकव्युं, सुल विलसे दिन रातो जी॥ एकदिन रमतां रे गोलें सोगठे, तव दीठी निज मातो जी।। कहो केणें दीठो रे महारो अरिणको, पूठे लोक हजारो जी।। अरिण ।। धा चंडावदनी निज मातो जी।। कहो केणें दीठो रे महारो अरिणको, पूठे लोक हजारो जी।। अरिण ।। धा हुं कायरहुं रे मारी मावडी, चारित्र खांकानी धारो जी।। धिग्धिग विषया रे माहरा जीवने, में कीधो अविचारो जी।। अरिण ।। धा उतस्थो तिहांथी रे जननी पाय पड्यो, मनद्युं लाज्यो ति वारो जी।। वह तुज न घटे रे चारित्र चूकतुं, जेहथी शिवसुल सारो

जी ॥ खरिए० ॥ छ ॥ एम समजावी रे पाछो वाखीयो, आखो गुरुने पासो जी ॥ सद्गुरु दीए रे शीख जखी परें, वैरागें मन जास्यो जी ॥ ॥ खरिए० ॥ छात्र धखंती रे शिखा ऊपरें, खरिएकें अणसण की धो जी॥ रूपविजय कहे धन्य ते मुनिवरू, जिणें मनवं छित खी भो जी॥ अ०१०॥

॥ अथ मेघकुमारनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ धारिणी मनावे रे मेघकुमारने रे, तुं मुफ एकज पूत ॥ तुफ विण् सुनां रे मंदिर मालियां रे, राखो राखो घर तणां सूत ॥ धारिणी० ॥ १ ॥ तुफने परणावुं रे त्राठ कुमारिका रे, सुंदर त्रात सुकुमाल ॥ मलपति चा ख रे वन जेम हात्रणी रे, नयण वयण सुविशाल ॥ धारिणी० ॥ १ ॥ मुफ मन त्राशा र पुत्र हती घणी रे, रमाडीश वहूनां रे वाल ॥ देव त्रारो रे देखी निव शक्यो रे, जपायो एह जंजाल ॥ धारिणी० ॥ ३ ॥ धण कण कंचन रे क्षि घणी त्राठे रे, जोगवो जोग संसार ॥ ठती क्षि विलसो रे जाया घर त्रापणे रे, पठें क्षेजो संयम जार ॥ धारिणी० ॥४॥ मेघकुमारें रे माता प्रत्यें बुजवी रे, दीका लीधी वीरजीनी पास ॥ प्रीतिविमल रे इणि परें जबरे रे, पोहोती महारा मनडानी त्राश ॥धारिणी०॥४॥ इति॥

### ॥ श्रथ वैराग्य सञ्चाय ॥

॥ या मेवासमें वे, मरदो मगन जया मेवासी ॥ कायारूप मेवास व न्यो है, माता ज्युं मेवासी ॥ साहेवकी शिर आण न माने, आखर क्या से जासी ॥ याण ॥ १॥ खाई अति छुर्गध खजाना, कोटमां वहुंतर कोठा ॥ वणसी जातां वार न लागे, जेसा जल पंपोटा ॥ याण ॥ १॥ नव दरवाजा वहे निरंतर, छखदायी छुर्गधा ॥ क्या छसमें तल्लीन जया हे, रे रे आतम अंधा ॥ याण॥ ३॥ ठिनमें छोटा ठिनमें मोहोटा, ठिनमें छेह दिखासी ॥ जव जमरेकी नजर लगेंगी, तव ठिनमें छड जासी ॥ याण ॥ ४॥ मुलक मुलककी मली लोकाइ, वोहोत करे फरीयादी ॥ पण मुजरो माने नही पापी, अति ठाक्यो छन्मादी ॥ याण ॥ ४॥ सारा मुलक मेळ्या संतापी, काम किराडी कोटो ॥ खोज तलाटी लोचा वाले, तो किम नावे त्रोटो ॥ ॥ याण ॥ ६ ॥ उदयरत कहे आतम मेरा, मेवासीपणुं मेलो ॥ जगवंतने जेटो जली जांतें, मुक्तिपुरीमें खेलो ॥ याण ॥ ९ ॥ इति वैराग्य सञ्चाय ॥

्॥ अथ कृतकर्मफल सद्याय प्रारंजः॥ ्

ादिवदाणव तीर्थंकर गणधर, इरिहर नरवर सब्द्धा ॥ कर्म संयोगे ते सुख जुःख पाम्या, सबख हुन्ना महा निबक्षा रे ॥१॥ प्राणी कर्म समो न ही कोय ॥ की धां कर्म विना जोगवीयां, बूटकबारो न होय रे ॥ प्राणी कर्मण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आदीसरने कर्म अटारे, वर्ष दिवस राख्यो न्नूखें ॥ वीरने बार वर्ष पुःख दीधुं, जपना ब्राह्मणी कूखें रे ॥ प्राणी कर्मण ॥ ३॥ शाठ सहस सूत मूळा एक दिन, योध युवान नर जैसा ॥ सगर हुर्ज निज पुत्रें छुखीयो, करम तणा फल ऐसा रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ बन्नीश संदस देसारो साहेंब, चक्री सनतकुमार ॥ शोख रोग शरीरें जपना, करमें कीयो तस खुवार रे ॥ प्राणीण ॥ ए ॥ सुजूम नामें आठमो चकी, कमें सायर नाख्यो ॥ पचीस सहस यहां जन्नो दीवो, पण किण्हीं निव राख्यो रे ॥ प्राणीण ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्में कीधो श्रंधो ॥ एम जाणी प्राणी विण कामें, कर्म कोई मत बंधो रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ वीश जुजा दश मस्तक हूता, खखमणें रावण माखो॥ एकखडे जग सहु ने जीत्यो, कर्मथी ते पण हास्त्रो रे ॥ प्राणीण ॥ ए॥ खलमण राम महा 'बलवंता, वली सत्यवंती सीता॥ बार वरस लगें वनमांहे जिमया, वीतक तस बहु वीता रे ॥ प्राणी ॥ ए॥ व्यन्नकोड यादवनो साहेब, कुस मदाबि जाणी॥ अटवीमांहे मूर्च एकखडो, विख विखतो विण पाणी रे ।। प्राणीव ॥ १० ॥ पांकव पांच महा जुजारा, हारी औपदी नारी ॥ बार वरस खगे वन दुःख दीवां, जिमया जेम जिलारी रे ॥ प्राणीण ॥ ११ ॥ सतीय शिरोमणी द्रीपदी कहियें, ए सम अवर न कोय ॥ पंच पुरुषनी थई ते नारी, पूरव कर्मशुं होय रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ कर्में इवाल कीया इरिचंदने, वेची सुतारा राणी ॥ बार वरस खगें माथे आएयुं, नीच तणे घर पाणी रे ॥ प्राणीण॥ १३॥ दिधवाइन राजानी बेटी, चावी चंदनवा ला ॥ चोपदनी परें चजटे वेचाणी, करम तणा ए चाला रे ॥ प्राणीव ॥ १४॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसके ॥ धर्मी नर पण कर्में दुवाया, करमथी जोर न किसके रे ॥ प्राणी ।। १५॥ ईश्वरदेवने पार्वती राणी, करता पुरुष कहावे ॥ छहोनिशि महोखमसाणमां वासो जिक्ता जोजन ख़ावे रे ॥ प्राणीण ॥ १६॥ सहस्र किरण सूरज परतापी,

रात दिवस रदे अटतो ॥ शोखकखा सिसदर जग जाचो, दिन दिन जाये घटतो रे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥ एम अनेक नर खंड्या कर्में, जांज्या जब ते साजा ॥ इद्धिदरख करजोडीने कदे, नमो कर्म मदाराजा रे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ इति कृतकर्मफख जपर सद्याय ॥

॥ अथ आत्मप्रवोध सद्याय प्रारंज ॥

॥ जीव क्रोध म करजे, सोज म धरजे, मान म साईश जाइ ॥ कूडां करम म वांधीश, धर्म म मूकीश, विनय म चूकीश ॥ जाई रे जीवडा ॥ दो दि ॥ ए खांकणी ॥ रा। घर पठवांडे देरासर जातां, वीशविमासण थाय॥ जूख्यो तरइयो राठतें रोक्यो, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवडा दोहि ॥ ॥ धर्मतणी पोसातें चात्या, सुणवा सद्गुरु वाणी ॥ एक वात करे वीजो उठी जाये, नयणे निंद जराणी रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामें वेठो लोजें पेठो, चार पोहोर निश जाग्यो ॥ वे घडीनुं पडिक्रमणुं करतां, चोलो चिन न राख्यो रे ॥जीव०॥॥॥ खाठम चठदश पूनम पाखी, पर्व पर्यूपणा सारो ॥ वे घडीनुं पचकाण करंतां, एक वीजाने वारो रे ॥ जीव० ॥ था। कीर्ति का रण पगरण मांभी, अरथ गरथ सवि खूंटे, पुण्यने कार्जे पारकुं पोतानुं, गांठडीयें नवी ढूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्या, पहेरण खाठा वाघा ॥ दश खांगुली दश वेढज पहेस्या, निर्वाणें जावुं ठे नागा रे ॥जीव०॥॥। वांको अक्तर माथे मींगुं, नीलवट खाधो चंदो ॥ मुनि लाव एस समय इम वोले, जिम चिरकालें नदो रे ॥ जीव०॥ण इति सद्याय ॥

॥ अय रहनेमि राजीमतीजीनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ काउस्सग्गथकी रे रहनेमि राजुल निहाली, चितमुं चितमुं तव वोले नार रे ॥ देविरया मुनिवर ध्यानमां रेजो, ध्यानथकी होये जव नो पार रे ॥ देव० ॥ १ ॥ उत्तम कुलना यादव कुल रे अजुआली, लीधो हे संयम जार रे ॥ देव० ॥ हुं रे बती रे तुं हे संयमधारी, जाशो सरवे बतहारी रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ १ ॥ विषधर विष वमी आप न लेवे, करे पावक परिचार रे ॥ देव० ॥ तुं रे वांधव नेमजीयें मुजने रे वामी, व म्यों न घटे तुमने आहार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ नारी अहे रे जग मां विषनी रे वेली, नारी हे अवगुणनो जंगार रे ॥ देव० ॥ नारी मोहें

रे मुनिवर जेह विग्ता, ते निव खहे जब पार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ नारी हुं रूप देखी मुनिने न रहेवुं, ए वे आगममां अधिकार रे ॥ देव० ॥ नारी निःसंगी तेतो मुनिवर कहीयें, न करे फरी संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ ए रे सतीनां मुनिवर वयण सुणीने, पास्या जव प्रतिबोध रे ॥ देव० ॥ वे मजी जेटीने फरी संयम खीधो, कस्बो वे आतम शोध रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ धन्य रे सती रे जेणे मुनि प्रतिबोध्या, धन धन ए अणगार रे ॥ देव० ॥ ए रे वसता रे मुनिवर वयण सुणीने, फरी न करे संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शाबिजड़नी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ प्रथम गोवालियातणे जवें जी रे, दीधुं मुनिवर दान ॥ नयरी राज गृही अवतस्वो जी रे, रूपें मयण समान ॥ सोजागी रे ॥ शाखिज इं जोगी रे होय ॥१॥ ए आंकणी॥ बत्रीश सक्तण गुणें जस्बो जी रे, परखो बत्री श नार ॥ माण्सने जवें देवनां जो रे, सुख विखसे संसार ॥ सो०॥१॥ गोजडशेव तिहां पूरवे जी रे, नित नित नवला रे जोग ॥ करे सुजडा व वारणां जी रे, सेव करे बहु खोग ॥ सोवाइ॥ एक दिन श्रेणिक राजियो जी रे, जोवा खाठ्यों रे रूप ॥ छंग देखी सकोमलां जी रे, थयो मन हर षित जूप ॥सोण।।।। वह वैरागी चिंतवे जी रे, मुक शिर श्रेणिक राय।। पूरव पुष्य में निव कियां जो रे, तप आदरशुं माय ॥ सो० ॥ ४॥ इणे व्यवसरें श्रीजिनव्रू जी रे, व्याव्या नयरी ज़वान ॥ शासिज्य मन ऊज म्यो जो रे, वांचा प्रजुजीना पाय ॥ सो०॥६॥ वोरतणी वाणी सुणी जी रे, वूठो मेह अकाल ॥ एकेको दिन परिहरे जी रे, जिम जल ठंमे पाल ॥ सो ।। ।। ।। माता देखी टलबले जी रे, माठलडी विण नीर ॥ नारी सघली पायें पड़े जी रे, म म हंनो साहस धीर ॥ सो०॥०॥ बहुअर स घली वीनवे जी रे, सांजल सासु विचार ॥ सर हांकी पासें चड्यों जी रे, हूंसको जमण हार ॥ सो० ॥ ए॥ इण अवसर तिहां नावतां जी रे, धना शिर आंसु पढ़त ॥ कवण पुःख तुक सांत्रखं जी रे, ऊंचुं जोइ कहंत ॥ सोण॥ १०॥ चंद्रमुखी मृगलोचनी जी रे, बोलावी जरतार ॥ बंधव वात में सांजली जी रे, नारीनो परिहार ॥ सो०॥ ११॥ धनो जणे सु ण घेलडी जी रे, शालिजड पुरो गमार ॥ जो मन आएयुं हंमवा जी रे,

विसंव न की जें ख़गार ॥ सो० ॥ रे१ ॥ कर जोडी कहे कामिनी जी रे, वंधव समो नही कोय।। कहेतां वातज सोहखी जी रे, मूकतां दोहखी होय ॥ सो०॥ १३ ॥ जारे जा तें इम कह्यों जी रें, तो में डांमी रे खांछ ॥ पिजडा में हसतां कह्यं जी रे, कुणशुं करशुं वात ॥ सोण ॥ १४॥ इणे वचने धनो निसम्बो जी रे, जाए पंचायण सिंह ॥ जइ साखाने साद क खो जी रे, घेला ऊठ अवीह ॥ सोण ॥ १५॥ काल आहेडी नित जमे जी रे, पूँठे म जोईश वाट॥ नारी बंधन दोरडी जी रे, धव धव छंमे निराश ॥ सो०॥ १६॥ जिम धीवर तिम माउखो जी रे, धीवरें नाख्यो रे जाख ॥ पुरुष पढ़ी जिम माठलो जी रे, तिमहिं श्रीचेलो काल ॥ सो० ॥ १९॥ जोवन जर विहुं निसस्या जी रे, पहोता वीरजीनी पास ॥ दीहा खीधी रूखडी जी रे, पाले मन जल्लास ॥ सोण ॥ १७ ॥ मास खमणने पारणे न्जी रे, पूढे श्री जिनराज ॥ अमने शुद्धज गोचरी जी रे, खाज देशे कुण त्राज ॥ सोए ॥ १ए ॥ माता हाथें पारेणुं जी रे, थारो तुमने रे आज ॥ वीर वचन निश्चय करी जी रे, छाव्या नगरीमांज ॥ सोण ॥ १० ॥ घरे छा व्या निव जेलख्या जी रे, फरिया नगरी मकार ॥ मारग जातां महिया रडी जी रे, सामी मिल तेणि वार ॥ सो० ॥ ११ ॥ मुनि देखी मन जल्ल स्युं जी रे, विकलित थइ तस देह ॥ मस्तक गोरस सूजतो जी रे, पिंडला ज्यो धरि नेह ॥ सो० ॥ ११ ॥ मुनिवर वोहोरी चालीया जी रे, आव्या श्रीजिनपास ॥ मुनि संशय जर् पूठियो जी रे, माय न दीधुं दान ॥सो० ॥ १३ ॥ वीर कहे तुमें सांजलो जी रे. गोरस वोहोस्यो रे जेह ॥ मारग मली महियारडी जी रे, पूर्व जन्म माय एह ॥ सो० ॥ १४॥ पूरव जव जिनमुखें बही जी रे, एकत्र जावे रे दोय ॥ आहार करी मुनि धारियो जी रे, अणुसण शुक्कज होय ॥ सोण ॥ १५ ॥ ।जन आदेश लही करी जी रे, चढिया गिरि वैजार ॥ शिखा ऊपर जइ करी जी रे, दोय मुनि अणसण धार ॥सोण।१६॥ माता जड़ा संचर्छा जी रे, साथें बहु परिवार ॥ अंतेजर पुत्रज तणो जी रे, खीधो सघखो सार ॥ सो० ॥ १७ ॥ समय सर्गें आवी करी जी रे, वांचा वीर जगतात ॥ सकल साधु वांदी करी जी रे, पुत्र जोवे निजमात ॥ साण ॥ १०॥ जोई सघली परषदा जी रे, नवि दीवा दोय अणगार ॥ कर जोडी करे विनति जी रे, जांखे श्रीजिन

राज ॥ सो० ॥ १ए ॥ वैजार गिरि जाइ चंड्या जी रे, मुनिद्दिसण कर्मग् ॥ सहु परिवारें परवस्था जी रे, पहोता गिरिवरश्रंग ॥ सो० ॥ ३० ॥ दोय मुनि अणसण उच्चरी जी रे, जीवे ध्यान मकार ॥ मुनि देखी विलखा यया जी रे, नयणें नीर अपार ॥ सो० ॥ ३१ ॥ गदगदशब्दें बोलती जी रे, मिली बत्रीशे नार ॥ पिउडा बोलो बोलडा जी रे, जिम सुख पामें चिन्न ॥ सो० ॥ ३१ ॥ अमे तो अवगुणें जस्यां जी रे, तुं सही गुण जंमार ॥ मुनिवर ध्यान चूका नही जी रे, तेहने वचनें लगार ॥ सो० ॥ ३३ ॥ वीरा नयणें निहालीयें जी रे, जिम मन थाये प्रमोद ॥ नयण उघाडी जो स्यें जी रे, माता पामे मोद ॥ सो० ॥ ३४ ॥ शालिज माता मोहने जी रे, पोहोता अमर विमान ॥ महाविदेहें सीकशे जी रे, पामी केवलज्ञान ॥ सो० ॥ ३५ ॥ धनो धर्मी मुक्तें गयो जी रे, पामी शुकल ध्यान ॥ जे नर नारी गावशे जी रे, समयसुंदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥

॥ अथ अज्ञान दोष अधेर नगरीनी सद्याय॥

॥ अज्ञान महा अंधेर नगरें, जेहनी नहीं आदि रे ॥ मिथ्यात्व मंदि र मोह महानिशि, पखंग जिहां प्रमाद रे॥ र ॥ जीव जाग तुं गइ रात डी, जगवंत जग्यो जाए रे॥ गति च्यार ते इश उपलां ने, कषाय पाइया चार रे ॥ च्रांति जरडें सुजर जरियो, वाहण वेद विचार रे ॥ जीवण॥ १॥ तृष्णा तलाइ पायरीने, गोदडां महा गर्व रे ॥ गति जंग गालमसू रीयां ते, सज्या कुमति सर्व रे ॥ जीवण ॥ ३॥ रुशनाइ वनी तिहां राग नी ने, श्राठ मद उल्लोच रे, पड्यो पासुं न पालटे ते, तज्या सहु संको च रे ॥ जीवण ॥ ४॥ स्नेह सांकलें सांकल्यों ने, मोहनी मदिरापान रे ॥ सूतो पण निव सल सले, नहीं शुक्ति सुमितने सान रे ॥ जीवण ॥ थ ॥ खख चोराशी सुपन खाधां, फरी फरी बहु वार रे ॥ कुमति वास्यो बके बहुविध, हजी न आव्यो पार रे॥ जीवण ॥ ६॥ इर्षने रह्यो शोक हेरी, संयोगने वियोग रे॥ जोग जवनी जासकीने, रूप त्यां बहु रोग रे॥ जी वण्॥ ७॥ उंघे त्यां वसे आपदाने, जागे त्यां वसी जोख रे ॥ कुटुंव मेलो कारमो जेम, गगन वादल गोख रे ॥ जीवण ॥ छ॥ आखरे जावुं एकखाने, कोइ न आवे केड रे॥ वालां, वलावी वले पाढां, सहु स्नेही नेह निमेड रे ॥ जीवण॥ ए॥ जिनवचनें जे नर जागिया ते, पाम्या

परम कल्याण रे ॥ जंबू आदें जोइ लेजो, जगमांहे जे होये जाण रे ॥ जीव०॥ १०॥ एम जन्यने उपदेश जांखे, उदयरत उवजाय रे ॥ सार श्रीजिन वयण हे जग, मुक्ति जेहथी थाय रे ॥ जीव०॥ ११॥॥ अथ अध्यातम सद्याय प्रारंजः॥

॥ शांति सुधारस कुंन्मां, तुं रमे मुनिवर हंस रे ॥ गारव रेणुशुं म म रमे, मूकजे शिथिख मुनि संग रे॥ शांतिण॥ रे॥ खहित कर म कर ज वपूरणा, म कर तुं धर्ममां कूड रे॥ स्रोक रंजन घणुं म म करे, जाणतो क्युं होये मूढ रे ॥ शांतिण॥ १॥ जो यतिवर थयो जीवडा, प्रथम तुं आपनें तार रे॥ आप साखें मुनि जो तस्वो, तो पठी खोकनें तार रे॥ शांति ॥ ३॥ तुज गुणवंत जाणी करी, खोक दीये आपणा पुत्त रे॥ अशन वसनादिक जरी दीये, खोटमुं म धर मुनि सुत्त रे ॥ शांतिण॥॥॥ नाण दंसण चरण गुणविना, तुं केम होय सुपात्र रे ॥ पात्र जाणी तुज खोक दे, म जर तुं पाप निज गात्र रे ॥ शांतिण ॥ ए ॥ सुधीय सुमति गु प्ति नही, नही तप एपणा शुद्धि रे॥ मुनि गुणवंतमां मूलगो, केम होये लिंधनी सिक्ति रे ॥ शांति ॥ ६ ॥ व्याप मांड्यो घणो गुण विना, जूरि आनंबर इह रे॥ घर त्यजी मान माया पड्यो, केम होये सिंह गति रीं ष्ठ रे॥ शांतिण॥ ॥ ।। जपशम श्रंतरमें नहीं, नहीं तुज चारु निवेंद रे॥ नित युति पूज्य तुं अजिलपे, म कर अणमानी वे खेद रे ॥ शांतिण ॥ ए॥ उदर जरणादि चिंतानही, सज्जन सुत कलत्र घर जार रे॥ राज चोरादि नय तुज नही, तोही तुज शिथिल श्राचार रे ॥ शांतिण ॥ ए॥ विविध प्तःख देखी तुं खोकनां, तुज किसि चिंत मुनिराज रे ॥तुं जना वर्जीनादि क पड़्यो, चूक म आपणुं काज रे ॥ शांति ॥ १०॥ आपणुं पारकुं म म करे, मूक ममता परिवार रे॥ चित्त समता रहें जावजे, म कर बहु बाह्य विस्तार रे ॥ शांति ॥ ११ ॥ श्राति सत्कार पूजे स्तवे, मुज मली लो कना वृंद रे॥ मुज यश नाम जग विस्तखुं, इश्युं अजिमान मुणिंद रे॥ शांति ॥११॥ पूरव मुनि सारिखी नही किशि, आपणी खिडिधने सिकि रे॥ श्रातशय गुण किश्यो तुज नही, तोही तुज माननी बुद्धि रे ॥ शां तिण॥ १३॥ पूरव प्रजावक मुनि हुआ, तेहने तुं नही तों हो । आप हीणुं घणुं जाव जे, मुख वाह्युं घणुंत्र्य म बोख रे ॥ शांति ॥ १४॥ निय डिकरी जे जन रंजीया, वश कस्ता बहु जन लोक रे ॥ पूठ दीधे न ते ताहेरा, गृहिमुनिना तरु फोक रे ॥ शांति ॥ १५ ॥ गुरुप्रसादें गुण्हीन ने, होवे ठे तुं गुण् क्रिक रे ॥ तुं गुण् मत्सरी मत होये, कर निज जीव नी गुक्ति रे ॥ शांति ॥ १६ ॥ संयम योग मूकी करी, वश कस्ता जे जन लोक रे ॥ शिष्य गुरु जक्त गुस्तक जस्ता, श्रंते दीये समित्रणुं शोक रे ॥ शांति ॥ १९॥ प्रशम समता सुल जलधिमां, सुर नर सुल एक बिंद रे ॥ शोंति ॥ १९॥ प्रशम समता सुल जलधिमां, सुर नर सुल एक बिंद रे ॥ तेणें तुं सिंच सम वेलडी, मूकी दे स्वयर सम दंद रे ॥ शांति ॥ १८॥ एक क्रण विश्व जंतु परें, तुं वस जीव समजाव रे ॥ सर्व मैत्री सुधापान पें, सकल सुल सन्भुल लाव रे ॥ शांति ॥ १०॥ श्राप गुण्वंत गुण रंजी तुं, दीन दुःली देली दुःल चूर रे ॥ निर्गुणी देसविरित रही, सकल मुनि सुल गुनि पूर रे ॥ शांति ॥ १०॥ इति स्वध्यात्म सद्याय ॥

॥ अथ मधुविं इञा दृष्टांत संवाय प्रारंजः॥

॥ ढाल ॥ सरसती मुज रे, माता चो वरदान रे ॥ पूछे गौतम रे, जांखे श्रीवर्द्धमान रे ॥ वंको गिरुष्या रे, विरुष्टा विषयनुं ध्यान रे ॥ विषयारस रे, हे मधुबिंड समान रे ॥ त्रुटक ॥ मधुबिंड सरिखो विषय निरखो, जोइ परखो चित्त शुं ॥ नर जनम हास्यो मोह गास्यो, पिंम जास्यो पापशुं ॥ कंतार पडियो नाग नडियो, कोइ देवाणु पियो ॥ वडवृक्त जडियो वेगें चडीयो, रंक रडीयो उप्पियो ॥ १ ॥ ढाल ॥ वड हेठल रे, कूप अठे अस राख रे ॥ दोय अजगर रे, मगर जिस्या विकराख रे ॥ चिहुं पासे रे, चार जुयंगम काल रे ॥ वली ऊपर रे, महोटो हे महुयाल रे ॥ त्रुटक ॥ महु याख माखी रगत चाखी, चंचु राखीनें रही ॥ धंधोखतो गज़राज धायो, पडत वडवाइ यही ॥ वडवाइ कापे उंदर त्र्यापे, ताप संतापें यहाो ॥ मधु यकी गिलयो बिंड ढलीयो, तेणे सुखलीणो रह्यो ॥ १ ॥ ढाल ॥ एह सं कट रे, छोडण देव दयाल रे॥ डुःख हरवा रे, विद्याधर ततकाल रे॥ उ द्धरवा रे, धरियुं तास विमान रे ॥ उ छावे रे, मधुबिंछ करे सान रे ॥ ॥ त्रुटक ॥ मधुबिंडु चाखे वचन जांखे, करे खाखच खखवली ॥ वार वार राखें सान पाखे, रहो क्रणएक पर रखी॥ तस खेचर मिखयो वेग विख यो, रंक रू क्षियो ते नरु ॥ मधुविं चु चाटे विषय साटे, कह्यो जपनय जग गुरु ॥३॥ ढाल ॥ चोराशी खख रे ॥ गतिवासी कांतार रे ॥ मिथ्यामति

रे, जूसो जमे संसार रे ॥ जरा मरणा रे, अवतरणा ए कूप रे ॥ आठ खा णी रे, पाणी पगइ सरूप रे ॥ त्रुटक ॥ आठ कर्म खाणी दोय जाणी, ति रिय निरया अजगरा ॥ चारे कपाया मोह माया, खंवकाया विषहरा ॥ दोय पक् उंदर मरण गयवर, आयु वडवाइ वटा ॥ चटका वियोगा रोग शोगा, जोग योगा सामटा ॥ ४॥ ढाल ॥ विद्याधर रे, सहग्रह करे संजा ख रे ॥ तेणें धरीयुं मे, धर्मिवमान विशाल रे ॥ विषया रस रे, मीठो जेम महुयाल रे ॥ पडखावे रे, बाल योवन वयकाल रे ॥ त्रुटक ॥ रह्यो बाल योवन काल तहणी, चित्तहरणी निरखतो ॥ घरजारयुनो पंक खुनो, मद विग्रनो पोषतो ॥ आनंद आंणी जैनवाणी, चित्त जाणी जागीये ॥ चरण प्रमोद सुशिष्य जंपे, अचल सुख एम मागीयें ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अय वैराग्य सञ्चाय प्रारंजः ॥ ॥ श्रीसीमंधर साहेव सांजलो ॥ ए देशी ॥

॥ कां निव चिंते हो चित्तमें जीवडा, आयु गले दिन रात ॥ वात वि चारी रे पूरवजव तणी, कुण कुण ताहरी जात ॥ कांण ॥ १ ॥ तुं मत जा णे रे ए सहु माहरां, कुण माता कुण जात ॥ आप स्वारय ए सहुको म खा, म कर पराइ रे तात ॥ कांण ॥ १ ॥ दोहिलो दीसे रे जब माणस तणो, श्रावक कुल अवतार ॥ प्राप्ति पूरी रे ग्रुरु गिरुआ तणी, नहीं तुज वारो रे वार ॥ कांण ॥ ३ ॥ पुण्य विहूणो रे जुःख पासे घणुं, दोष दीये किरतार ॥ आप कमाई रे पूरव जवतणी, निव संजारे गमार ॥ कांणाशा कितन कमेंने रे अहिनश तुं करे, जेहना सवल विपाक ॥ हुं निव जाणुं रे कुण गित ताहरी, ते जाणे वीतराग ॥ कांण ॥ १ ॥ तुज देखंतां रे जोने जीवडा, केइ केइ गयां नर नार ॥ एम जाणीने रे निश्चें जायवुं, चेतन चे तो गमार ॥ कांण ॥ ६ ॥ तें सुख पाम्यां रे वहु रमणीतणां, अनंत अनंती रे वार ॥ लिब्ध कहे रे जो जिनशुं रमे, तो सुख पामे अपार ॥ ९॥ ॥ अथ परस्त्रीत्याग सद्याय ॥

॥ प्रज्ञ साथं जो प्रीत वंद्यों तो, नारीसंग निवारों रे ॥ कपट निपटने कामणगारी ॥ निश्चे नरक छवारों ॥ एइनी गत एह जाणों ॥ राजकृषि कोइ संदेह आणों ॥ एइ०॥ ए आंकणी ॥ १॥ अवला एइदुं नाम धरा वे, पण सवलाने समजावे रे ॥ इरि हर ब्रह्म पुरंदर देवा, ते पण दास

कहाने ॥ एहण ॥ १ ॥ पगले पगले नाम पखटाने, श्वास जलासे जूदी रे॥
गरज पडे त्यारें घेली थाये, काम सरे जाये कूदी रे ॥ एहण ॥ ३ ॥ जंघा
चीरी मांस खनाडे, तोय न थाये तेहनी रे ॥ मुखनी मीठी दिखनी रे जू
ठी, कामिनी न थाये केहनी रे ॥ एहण ॥ ४ ॥ करणी एहनी कही न जा
ये, कामिन तणी गति न्यारी रे ॥ गायुं एहनुं जे नर गाशे, तेहने शिवग
ति वारी रे ॥ एहण ॥ ५ ॥ जो लागी तो सर्वे खूंटे, रूठी राक्स तोलें रे
॥ इम जाणीने अलगा रहेजो, जदयरल एम बोले रे ॥ एहण ॥६॥

॥ अथ स्त्रीवर्ज्जन शिखामण सद्याय॥

॥ धर्म जणी जातां धरा, वनमांहे पाडे वाट ॥ खिष्ठ खीए सर्व छूंटीने, व्रतनी जे वहे उवाट ॥ बला हो, बहु बहु बोली ए बाल, जे अन्नता उपा ये आल, जे वाघण्यी विकराल, जे आपे मरण अकाल ॥ ब० ॥ रे॥ संसारें सहु सरिखुं नहीं, जोडें वसंतां जोय ॥ एक वांकी एक पाधरो, बोरडीयें कांटा जिम होय ॥ वण ॥ १॥ बला बला सहुको कहे, बीजी बला बलवं त ॥ ए जेवी एके नहीं, जे उसे पाडी उसंत ॥ बण ॥ ३ ॥ आखादो गादो ब्रह्यो, केई ब्रह्या नर कोड ।। गुणवंतनुं पण नहीं गजुं, जे क्रणमां खगाडे खोड ॥ वण् ॥ ४ ॥ जलाले आकाशमां एक, आंखें जलाले अनेक ॥ मही यें पग मंने नहीं वली, नासे विनय विवेक ॥ बण् ॥ ५ ॥ जशोधर जिस्या जाखमी, वली मुंजजिस्या महाराज।। पुण्यवंत परदेशी सारिखा, ते कांता यें हएया निजकाज ॥ बण्॥६॥ जोरावर जंबू जिस्या, वंकचूल सरिखा वीर ॥ समर्थ थू खिजड सारिखा, जेहनां नारियें न उतास्वां नीर ॥ व० ॥ ५॥ शोख सती आदें थइ, महासती न जग हितकार ॥ अनेक नर तेणें जऊ स्वा, रहनेमि आदें निरधार ॥ व० ॥ ७॥ सुदर्शन वसतां निव वस्यो, थयो केवल कमलाकंत ॥ परमोदय पामे सही, जे पास एहने न पडंत ॥ बण्॥ ॥ ए॥ इति स्त्रीवर्क्जन सद्याय॥

॥ त्राय परस्री वर्ज्जन सद्याय ॥ धणरा ढोखा ॥ ए देशी ॥ ॥ शीख सुणो पीछ माहरी रे, तुजने कहुं कर जोड ॥ धणरा ढोखा ॥ प्रीत म कर परनारीशुं रे, त्रावे पग पग खोड ॥ ध० ॥ कहुं मानो रे सु जाण, कहुं मानो ॥ वरज्यां वर्ज्जो मारा खाख, वरज्यां वर्ज्जो, परनारीनो नेहडखो निवार ॥ धणरा ढोखा ॥ १ ॥ जीव तपे जिम वीजखी रे, मन

कुं न रहे ठाम ॥ अ०॥ काया दाह मिटे नहीं रे, गांठे न रहे दाम ॥ अ० ॥ १॥ नयणें नावे निकडी रे, आहे पोहोर छहेग ॥ धण्॥ गसीआरे ज मतो रहे रे, खागू खोक श्रनेक ॥ धण ॥ ३॥ धान न खाये जापतो रे, दी वं न रुचे नीर ॥ थ०॥ नीसासा नाखे घणा रे, सांजल नणदीना वीर ॥ घ०॥ ४॥ जूतलमें निशि नीसरे रे, जूरी जूरी पिंजर होय ॥ घ०॥ प्रेमतणे वश जे पड़े रे, नेह गमे तव दोय ॥ ध०॥ थ॥ रात दिवस स नमां रहे रे, जिएशुं अविहंड नेह ॥ ४०॥ वीसास्या निव वीसरे रे, दर जे क्ल क्ल देह ॥ ४० ॥ ६ ॥ माथे वदनामी चढेरे, खागे कोड कलं क ॥ घण ॥ जीवितनो संशय पडे रे, जूवो रावण पति खंक ॥ घण ॥ छ॥ परनारीना संगधी रे, जलो न थाये नेत ॥ ध०॥ जुवो कीचक जीमडे रे, दीधो कुंत्री हेन ॥ धण ॥ ए ॥ याये खंपट खालची रे, घटती जाये ज्योत ॥ ध० ॥ जींत न थाये तेहनी रे, जिम रायचंद प्रद्योत ॥ ध० ॥ ए॥ पर नारी विषवेलडी रे, विषफल जोग संयोग ॥ धण्॥ आदर करी जे आदरे रे, तेहने जवजय शोग ॥ ध० ॥ १० ॥ वाहाखा माहारी विनती रे, साची करीने जाए।। ध॰।। कहे जिनहरप तुमें सांचलो रे, हियडे आणि मुज वाण ॥ घ० ॥ ११ ॥ इति परस्री वर्जान सञ्चाय ॥

॥ श्रय ॥

॥ श्रीनयविमल विबुधविरचित दशदृष्टांताधिकार सञ्चाय ॥ ॥ तत्र प्रथम चुलकनामा दृष्टांत सद्याय प्रारंजः ॥ ॥ श्री पार्श्वनायाय ऐं नमण ॥ पंकित पर्षद्वनस्थलीव संतपंक्ति श्रीधीरविमलगणिचरणसहस्रपत्रेज्योनमः॥

॥ दोहा ॥ प्रेमें पास जिएंदनां, पदकज युग प्रणमेवि ॥ सानिध्यकारी शारदा, श्रीसदगुरु समरेवि ॥१॥ दश दष्टांतें दोहिलो, मानवनो जब एह ॥पामी धर्म न आदरे, ऋहेखें गमावे तेह ॥श। वार अनंती फरसीयो, ए सघदो संसार ॥ ठादी वाटक न्याय परें, विण समकित श्राधार ॥ ३॥ कंचनगिरि गिरिमां वडो, नदीयोमां जिम गंग। जिम गजमां श्रेरावतो, जिम तनुमां हि वरंग ॥ ४ ॥ तरुमां हे जिस कल्पतरु, तेजवंतमां जाए ॥ पद्मीमां जिम गरुड खग, जिम चक्री नरराण ॥५॥ जैन धर्म जिम धर्म

मां, श्रीष्पमां जिम श्रन्न ॥ दातामां जिम जलधर, जिम पंतितमां मन्न ॥ ६ ॥ महगणमां जिम चंडमा, मंत्रमांहि नवकार ॥ सघला जवमांहे ज लो, ।तम नरजव श्रवतार ॥ ७ ॥ बोधिलाज नीमीसमो, बोल्यो नरजव एह ॥ ते हास्यो निव पामीयें, जिम निधि छुर्गति गेह ॥ ७ ॥ विप्र जिमण तिम पाशका, धान्यराशि ने ज्ञा ॥ रयण सुमिणने चक्र हरि, जूंसर पर माण्श्रा। ए ॥ विप्र जमणनो दाखीयो, पहेलो जे दृष्टांत ॥ सुणजो तेह कहुं हवे, श्रालस मूकी संत ॥ १० ॥

॥ ढाख पहेखी ॥

ा राग गोडी ।। फकडीनी देशी ।। कंपिल पुरवर राजियो, इस्काग वंश दीणंदो जी ॥ नामें बंजनरेसरू, चुलणी देवी इंदो जी॥ १॥ ब्रुटक ॥ इ रिगीत ढंद।। मुखचंद चजदस सुमिण सूचित, सहस अठ खरकण धरू। संजूति सुनिनो जीव तस सुत, ब्रह्मदत्त नामें वरू॥ अनुक्रमें मस्तक शूल रोगें, पिता परखोकें गयो ॥ तस राजकाजें मित्र तेहनो, दीर्घपृष्ठ जूपति य यो ॥ १ ॥ चंचल चित्त चुलणी चई, दीर्घ नराधिप संगे जी ॥ लोपी ला ज ते कुछतणी, सेवे विषय प्रसंगे जी॥ त्रुटक ॥ प्रसंग वर् घणुं ताम सचिवरे, अनाचार तेहनो लह्यो ॥ दृष्टांत प्रूध बिखाड केरो, कुमरनी आगल कह्यो ॥ कोकिला वायस हंस लायक, हाथणी खर जिम रमे ॥ इ ष्टांत असंमंजस देखाडे, कुमर ते एकण समे ॥ १ ॥ जावी चक्री कुमरने, देखी मनमां है कंपे जी ॥ एक दिन ते चुला प्रत्यें, लंपट एम पशंपे जी ॥ त्रुटक ॥ इम पयंपे सुणो चुलणी, मुज हे जय तुज सुत घणा ॥ निःशं क सघलां विषयसुख्युं, पूरियें मनकामणा ॥ बल नेद दाय उपाय कर तां, ब्रह्मदत्त सुत जो मरे, धिक कामने गत माम चुलणी, वयण ते छं गीकरे ॥ ३॥ मोहोटो एक मंमावीयो, लाख तणो आवासो जी॥ वल विवाह तणुं करी, नव परिणीत स्त्री पासो जी ॥ त्रुटक ॥ वीसास आणी मांहि पोढ्यो, दीपयोगें ते गले॥ सुरंगमांहे सचिव वरधणुं, कुमरनी पासें मिले ॥ पाइनी प्रहारें गंगतीरें, अश्वयोगें निकल्या॥ पंचास जोयण गया बेहु, जुष्टदीहा जय टल्या ॥॥। पुएय बलें ते जतस्या, अटवी आपद रूप जी ॥ कुमर वैताट्य गिरं गयो, तिहां विद्याधर जूप जी ॥ जुदक ॥ अतिरूप कुमरी जाणे अमरी, नृपति विद्याधर तणी।। बहु तिहां परणी

तेजि नरणी, क्रिक जोडी श्रित घणी ॥ षट पंग्न साधी शते वरसें, श्रावी या कंपिलपुरें ॥ नवनिधें चलदस रयण मंग्ति, चक्री पदवी श्रनुसरें॥ था। पूरव परिचित वंजणो, दोइग जंजण देतें जी ॥ चक्री दर्शन देखवा, श्रद्ध जित करत संकेतें जी ॥ त्रुटक ॥ संकेत जीरण वस्त्रनो ध्वज, करी चक्री निरखीयो ॥ लपकार जाणी कहे वाणी, माग वर संतोषियो ॥ तव कहे वंजण पडस्व नरपित, घरणोने पूढ़ं जई ॥ तस वयणथी तुज पास माग्रं, वस्तु एकमनो थई ॥ ६ ॥ घरणीवयणें वंजणो, मागे जोजन तेहजी ॥ कपर सोवन दक्तणा, वर दीयो नरपित एह जी ॥ त्रुटक ॥ वर एह श्रापी कुमित व्यापी, वारके जोजन करे, कंपिलपुरमां जमण काजें, घर घरें वं जण फरे ॥ वर्ष सहस प्रमाण जीवित, फरी जोजन निव लहे ॥ एणी परें नरजव हारीयो वली, दोहिलो किव नय कहे ॥ ॥ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम छविवेकपणायकी, हाखो नर छावतार ॥ पुनरिप तेह न सो हिलो, जिस मरुमां सहकार ॥ १ ॥ पूर्वाग्वारित दाखियो, उपनय एह विशेष ॥ छानुपम उपमा एहनी, जिम सोवननी रेख ॥ १ ॥

।। ढाल वीजी ॥

॥ माइ धन सुपन तुं, धनजीवितण॥ ए देशी॥ जिम साधित जनपद, चकीसर जयवंत॥ तिम करुणा सागर, जिम सुखकर जगवंत॥१॥ जिम दोहग पीड्यो, छु:खियो वंजण जीव॥संसारी प्राणी, छुरित मिथ्यात अतीव॥१॥ जिम चकी दर्शन, दौवारिक देखाडे॥ तिम कर्म विवरवर, मोह मिथ्यातने पाडे॥३॥ जीरण ध्यज करीने, चकीसर घर पष्टि॥सामग्री धज श्री, सुखकर जिनवर दीठो॥४॥ जिम तृठो चकी, वंढित वर तस आपे॥ तिम नाण चरणयुत, दंसण गुण तस थापे॥६॥ जिम तेहने घरणी, अल ही तणी सहनाणी॥ तेम कर्म प्रकृतितति, तरुणी तास वखाणी॥ ॥ ॥ जम तेहने वयणें, आगत नृप सुख होडी॥ जिह्ना वर मागे, चकीने कर जोडी॥७॥ तेम मुक्तिपुरीनुं, आव्युं हंमे राज॥ जिह्नासम विषयिक, सुख श्री हारे काज ॥ए॥ जिम ते बंजणीन, वारो फरीने नावे॥ षटखंम जरत मां, फरी जोजन नाव पावे॥ १०॥ तिम जीव संसारी; मानवनो अवता र॥ समिकत विण्व हास्थो, न खहे पुनरिण सार॥१४॥ जपदेश परें इम,

वाख्यो जपनय सार ॥निसुणीने समजो, नरजंव सर्वि सुखसार॥११॥हष्टांत प्रथम इम, दाख्यो में खब खेशा। कवि धीर विमखनो, नयविमख कहे शिष्य ॥१३॥इति नरजव दश दष्टांताधिकारे चुल्लक नामा प्रथम दृष्टांतःसमाप्तः॥१ ॥ अथ पाशकनामा द्वितीय दृष्टांत प्रारंजः॥

।। दोहा ॥ जिम चंदन तरुमां अधिक, धातुमांहि जिमहेम॥ जिमम णिमांहे हीरलो, उत्तम नवजव तेम ॥१॥ तिरि नर देवयकी श्रधिक, नरजव ज्तम जाणि॥नरजव तस्वर फूलडां, श्रमरजोग गुणलाणि ॥श।गुरुसानिधि बीजो कहुं, पाशकनो संबंध ॥ नरजव शोजे दर्शनें, जिम अर्विद सुगंधार॥ ॥ राग देशाख ॥ ढाख एकवीशानी ॥ इह जरतें रे, गोख्न देशें चणा कापुरी।। चिण बंजण रे, घरणी तस चलकेसरी ॥ सुत जायो रे, दाढा खो चाणिक जलो ॥ लघुवयथी रे, सकल कलागण गुणिनिलो ॥ हुटक ॥ अतिजलो तापस वेश पहिरी, मयूर पोष गामें गयो ॥ गर्जिणी तिहां नृ पति घरणी, चंडपान दोहलो थयो ॥ मनतणी इन्ना पूर्ण न होवे, तिणे थाये द्ववली ॥ पूछियुं तापस तेह अर्थे, कहे मित तुज निर्माखी ॥१॥ जो एहनो रे, गर्ज दियो मुजने वली॥ तो एहनी रे, पूरुं हुं मननी रखी ॥ तस सयणें रे, तेह वयण छंगीकखुं ॥ निजबुद्धें रे, तृणकेरुं मंदिर क खुं ॥ त्रुण् ॥ करी मंदिर थाल मोहोदुं, रूध साकरशुं तखुं ॥ प्रतिबिंव चं इतर्णुं धरीने, तेहनी आगल धर्खुं ॥ एम चंड पीधो काज सीधो, अनुक नें सुत जनमियो ॥ दोइलानुसारें सुदिन वारें, चंड्युप्त नामज दियो॥ १॥ चणीपुत्रें रे, सकल कला ते शीखव्यो ॥ निजपासें रे, नरपति करिने ते ठव्यो ॥ कल बलशी रे, नंद हणी पामलि पुरी ॥ बेसास्वो रे, चंड्युप्त नरपति करी ॥ त्रु० ॥ करी जूपति आप मंत्री, थयो चाणिक तेहनो ॥ बहु बुद्धिसागर सुगुण आगर, विस्तस्वो जस तेहनो॥ बहु प्रव्य हेतें सुर संकेंतें, पाशका दोइ पामिया॥ दीनार जरियो थाल आणी, जुळ रम वा दामिया॥ ३॥ चाणायक रे, व्यवहारी मेली सहु ॥ रमे रामत रे, कोश तरे गरथें बहु॥ एम बखथी रे, तृपति जंगार जरावियो॥ ज्थारम तें रे, सारो नगर हरावियो ॥ हुण्॥ हरावियो एम खोक सघलो, कोइ जीती निव शके ॥ ते श्रदा सानिधि थइ बहु इंदि, सकल नृपमां हीज के ॥ यद्यपि सांनिधि देवकेरी, तेह पाशा जींत ए॥ पण नृजव दोहिलो फरो लेहवो, नय कहे सुविनीत ॥ ए० ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ए पाशक दृष्टांततुं, कह्युं संहेपि चरित्र ॥ अंतर्गत जपनय कहुं, एहनो अने पवित्र ॥ १ ॥

॥ ढाख वीजी ॥

॥ ए विंसी किहां राखी ॥ ए देशी ॥ चाणायक सम चारित्र जूपति, विभेव मित गुण्लाणी ॥ कर्मनृपति पासें ते मागे, एक संसारी प्राणी हे ॥ शा जिन्न ए उपनय चित्त धारो, तुम्हें मानव जब मत हारो रे ॥ जा। वली समिकत तत्त्व विचारों रे ॥ जा। ॥ ए आंकणी ॥ ते प्राणीने यतनें राखे, सकल कला शीखांवे, शास्त्र जणांवी समिकत करी, सित समशेर वंधावे रे ॥ जा। ॥ ३ ॥ नंदपरें नव नरपित जाणो, आठ करम मिथ्यात॥ दूर निकंदी विरतिपुरीनुं, राज लहे सुविख्यात रे ॥ जा। ॥ ॥ श्रीजि नगर अनुकूलपणांथी, शुजयोगें उपन्ना ॥ अनुपम समिकत चारित दोइ, पाशा गुण निपन्ना रे ॥ जा। ॥ ॥ ॥ माणजंनार जरेवा कारण, सोवन था ल विवेक ॥ मांनीने नितु रामत रमते, जींत्यो सचलो लोक रे ॥ जा। ॥ इणिपरे सुजस लह्यो तिणि सघले, उत्तम नरजव पामी ॥ अकल अरूप अने अविनाशी, होवे अंतरयामी रे ॥ जा। ॥ ॥ धीरविभल गुरुराज पसायों, ए उपनय एम दाख्यो ॥ नय कहे ए परिणतिमां रमतां, सरस सुधारस चाख्यो रे ॥ जा। ॥ ॥ मर्वगाथा ॥ १५ ॥ इति नरजव दशह ष्टांताधिकारे पाशकनामा दितीयदृष्टांतः सञ्चाय समाप्तः ॥ १ ॥

॥ अश्र धान्यराशिनामा तृतीयदृष्टांतस्वाध्यायः प्रार्ज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ हो मत वाखे साजनां ॥ ए देशी ॥ जंबूद्वीपें जरतमां घन घनने परजावें जी ॥ शुद्ध सुगाल सुवायथी, अन्न जातिबहु थाये जी ॥ १ ॥ नरजव सुरमणि सारिखोः॥ पामीने म म हारो जी ॥ फ्री फरी लेहवो दोहिलो, जिम पंग्रल जलनिधि पारो जी ॥ न०॥शा राशि करीजें धान्य

नो, जंचपणे गिरि जींपे जी॥ शश्घर पण तस ऊपरें, रजत कुंजपरें दीपे जी॥ नर०॥ ३॥ पाखो सरशव तेहमां, अतिगाढो जेखीजेंजी॥ गिख त पिखत तनु जाजरी, मोसी तिहां जोडीजें जी॥ नर०॥ ४॥ ते सरशव वेंची करी, जरी फिरि न शके पाखो जी॥ निजबल जरती अजाणती, जिम जिनमत मतवालो जी॥ नर०॥ ४॥ यद्यपि तेह जरी शके, देवतणे अनुसार जी॥ विणु पुण्णें पामे निहं, फरी नरजव अवतार जी॥ नर०॥ ६॥ कर्म शुजाशुज वर्गणा, धान्य जाति ते जाणो जी॥ नास्ति कजाव जरा मिखी, अविरित जरती जाणो जी॥ नर०॥ ॥ सरशव सद् गुरु वयणलां, कर्मराश्मिमां जिल्यां जी॥ ते जूदां कर्ी निव शके, नास्ति कजावें मिखयां जी॥ अथवा॥ विषय कषायें मिखयां जी॥ अविरित जरती मिखयां जी॥ नर०॥ णा इम अविरित विश्वों जी॥ अथवा। विषय कषायें मिखयां जी॥ अविरित जरती मिखयां जी॥ नर०॥ णा इम अविरित विश्वों जी॥ नरणाण॥ अविरात जी।। जीजो जपनय नय कहे, आगमने अनुसार जी॥नरणाण॥ इति नरजव दश दृष्टांताधिकारे धान्यराशिनामा तृतीयदृष्टांतःसमाप्तः॥ ॥ अथ जूवटनामा चतुर्थ दृष्टांत प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥ सुग्रुरु पदेन सुधर्मनुं, खहियं सकस सरूप॥ ते माटे उत्तम कह्यो,नरजव सुकृत सरूप ॥१॥ नरगति विणुंनहिं मुगति गति, तिम नहिं केवलक्षान॥तिर्वंकर पदवी नहिं, नरजव विणु नहिं दान॥१॥तेह जणी न रजव तणो, कहुं चोथो दृष्टांत॥ज्वटकेरो सांजलो, आदर आणी संत॥३॥ ॥ ढाल पहेली ॥

॥ राग गोडी धमाल ॥ जीवन जीवन हो सनतकुमार ॥ ए देशी ॥ ॥ धीरविमल पंितपद प्रणमी, जाणी जिनवर वाणी ॥ उपनय चोथो नरजव केरो, कहुं सुणजो गुण खाणी ॥ १ ॥ सोजागी सज्जन सांजलो जी ॥ रतनाकरसम रतनपुरीनो, नृपित शतायुध नाम ॥ किलशायुध परें जास पराक्रम, राणी रंजा नाम ॥ सोण॥ १ ॥ लख्कण सदन मदन त स खंगज, खंगज सम जस रूप ॥ मितसागर खागर सिव गुणनो, मंत्री सर गुण्यूप ॥ सोण॥ ३ ॥ नृप खास्थान सजायें वेसी, सुतने करे युव राज ॥ पीवरकुचयुगकुंजा रंजा, विलसे जिम सुरराज ॥ सोण॥ ४ ॥ ला जें लोज घणेरो वाधे, ए किलयुगनी रीति ॥ सुत चिंते जूपित मारीने, हुं करुं राजनी नीति ॥ सोण॥ १॥ एइ मंत्र मंत्री कहे नृपने, एकांते

धरी प्रेम ॥ अण्जाणीतो थइने जूपति, अंगज प्रत्यें कहे एम ॥ सोण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ एण ए नीति वे निज कुलकेरी, सुण तुं सुंदर पुत्र ॥ सोण ॥ ॥ ॥ छ ॥ कुलवट ए ज्वटथी लिहेयें, पृथिवीकेरं राज ॥ अठोतर सो मिणमय थंजा, ए आस्थानस माज ॥ सोण ॥ ण ॥ थंज थंज आरा अति ती छी, अठोत्तरशत मान ॥ मुजशुं सारी पाशें रमतां, कींप तुं पुत्र निधान ॥ सोण ॥ ए॥ अनुक्रमें पहिलो बीजो त्रीजो, चोथो तिम वली पंच ॥ एणी परें अठोत्तर सो खूणा, कींपवा ज्वट संच ॥ सोण ॥ १० ॥ एक वार जो खलना पामे, रमतां सारी पासे ॥ मूलथकी ते रामत हारे, मंमे पुनरि वासें ॥ सोण ॥ ११ ॥ अठोतर सो थंजा इणिपरें, जींते जे नर तेह ॥ राज लहे ते निज कुलके रं, नीति अठे गुणगेह ॥ सोण ॥ ११ ॥ जनक अने सुत एणीपरें वेठा, रमवाने सहु साख ॥ पण सुत निव जींते नृप आगल, दाय करे जो लाख ॥ सोण ॥ १३ ॥ देवतणी सानिधिथी कोई, जींते तेह कदाि ॥ विणु समिकत नरजव जे हास्त्रो, कहे नय तिम छःप्रािण ॥ सोण ॥ १४ ॥

॥ दोहा॥ ॥ श्रंतरगत उपनय कहुं, सुणि गुरुनो उपदेश ॥ विस्तर वे एहनो घणो, पण इहां कहुं बवबेश ॥ १॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ जंबुद्धीप मकार्॥ ए देशी ॥

॥ तृप ते संसारी जीव, शुजपरिणति पति ॥ उपशम पुरनो राजियो ए॥ १ ॥ सुगुण विवेक प्रधान, मान घणुं छहे ॥ जूपतिनी पासें रहे ए ॥ १ ॥ माठा मनवचयोग, श्रंगज जाणीयें ॥ जनक ऊपर ते श्रमणा ए ॥ १ ॥ शा माठा मनवचयोग, श्रंगज जाणीयें ॥ जनक ऊपर ते श्रमणा ए ॥ १ ॥ अठोत्तर सो खाणि, जीवतणी कही ॥ श्रंजसमान ते जाणीयें ए ॥ १ ॥ अवि जीव प्रस्थें जेह, कर्मप्रकृति सवे ॥ तीखा श्रारानी परें ए ॥ ५ ॥ दर्शन चारित्र दोय, पासा पाधरा ॥ ज्ञानफूछक ऊपर धस्त्रा ए ॥ ६ ॥ रमत रमतां एम, जो खलना छहे ॥ तो फरी रामत मंभीयें ए ॥ ७ ॥ जो जीते सवि दाव, तखत छहे तदा ॥ कीण मोहसिंहासनें ए ॥ ७ ॥ एणी परें प्रकृति विचार, साधे जे नर ॥ तेहिज श्रवचल पद छहे ए ॥ ए ॥ छप्ट सुतें जिम राज, निव ते पामीये ॥ तिम श्रशुज योगशी नर जवो ए ॥ १० ॥ एम चोथो दृष्टांत, मानवजवतणो ॥ नयविमल पंकि

त जाए ए ॥ ११ ॥ सर्वगाया ॥ १ए ॥ इति श्रीमानवज्ञव दश दष्टांताधि कारे ज्वटनामा चतुर्थ दष्टांतस्वाध्यायः समाप्तः ॥ ४॥

॥ अथ रयण्राशिनामा पंचमदृष्टांतः स्वाध्याय प्रारुचते॥ ॥ दोहा॥

॥ अण्चिंत्यो नर्जन खह्यो, घूणाक्तरने न्याय ॥ गिरिसरिड्डपखतिण् परें, कर्मनृपति सुपसाय ॥ १ ॥ विणु धर्में जन हारियो, जिम जूआरी दाय ॥ आने हर्षे धन यही, धन खोईने जाय ॥ १ ॥ रयण्राक्षिनो पंच मो, बोढ्डं हुं दृष्टांत ॥ बंधन त्रोडे कर्मनां, जिम जलकृमि जलकांत ॥ ३॥

॥ ढाल पहेली ॥

n चालनी देशी ॥ जरत विजूषण उक्षितद्रूषण, नयर सुकोशंख नाम ॥ सुंदर मंदिर मंदरगिरिसम, सोहे धविति धाम ॥ अतिधनवंत महंत युणाकर, रत्नाकर इति नाम ॥ विवसे विकसे संपद सुखर्युं, जिम माध्वे व्याराम ॥ १ ॥ देशविदेशें नयरें निवसइ, विविध रयणनी जाति ॥ दाय जपाय करी ते मेखी, जिम जखनिधि जख जाति॥ राज परिदानी गिरि परे मानी, बेटा महोटा तास ॥ एक दिन कुखधज कोटिध्वज घर, देखे केतुविखास ॥१॥ अंगज त्यारे एम विचारे, निह सारे अम तात ॥ निर्धन स्यणतणी परि रयणें, नोहे धनविख्यात ॥ अंतर्वाणीनी जिम वाणी, न वि जाणीजें केण ॥ केवल घटदीपकपरि निःफल, बहुपरि रयण ध्एेण ॥ ३॥ इम चिंतवतां तात तेहनो, धन मेखणने काज खोजाज्यंतर दूर देशांतर, चढियो चतुर फहाज।। उहृंखल तस पाछल छंगज, वेचे रयणां मूले ॥ उठे अधिके दशदिशि वेस्वा, जिमवातूली तूले ॥ ४ ॥ रयणराशि खोपी आरोपी, धज पह्मव निज वास ॥ कोटिध्वज निज नाम धरावी, पूरी निजमन आस ॥ वात सुणीने तात पधास्त्रो, वास्त्रा अंगज तेह ॥ धजपट घर घट जपर देखी, चटपटि लागी देह ॥ ५॥ रे अज्ञानी बाला व्याला, परनाला अविनीत ॥ धन तरुकंद कुदाला हाला, विणसाड्युं घर सूत ॥ इणीपरें हांकी बाहिर काढ्या, श्रंगज यही यही बांहि ॥ रयण राशि दिशिषी आणो, तो आवो घरमांहि ॥६॥ निज वांके ते रंक तणी परें, पुह्वीमंगल फिरतां ॥ कुटिलसुनावें रयण अनावें, बहु इख

ने अनुसरता ॥ यद्यपि देव प्रजावें रयणां, सयख ग्रही ग्रही आवे॥ पण नय कहे धर्मविना नरजव ए, हास्त्रो वखीय न पावे॥ ॥ इति ॥

॥ दोहा॥ ॥ हवे एनो उपनय कहुं, सुणजो सहु जिलाक ॥ मा

॥ ढाल वीजी॥

॥ वात म काढो हो व्रततणी ॥ ए देशी ॥ सुविहित हित कर जंतुने, मारगने श्रवुसारी रे ॥ ते गुरुव्यवहारी समो, श्रागम रयण जंमारी रे ॥ रे ॥ सोजागी जन सांजलो ॥ पंचप्रकारें जाणीयें, श्रंगज परि तस शि प्या रे ॥ धज परिजन पूजा लही, पामे परिगल त्रिख्या रे ॥श्रामोणाश्रा गम रयणां वेंचियां, पेटजराइ मूले रे ॥ उंचे पद चढ्या लोकमां, कोटि ध्वज नामें जूले रे ॥शासोण। तातें तेह छशिष्य ते, छुर्विनाजना ढाक्या रे ॥ परंपर घरधी काढिया, हाथें यहीने हांक्यारे ॥ ४ ॥ सोण ॥ रंकपरें निज वांकथी, रुले चजगित संसारे रे ॥ ते पाठा नावी शके, परंपरा घर वारें रे ॥ श्रागमरयण प्रही सारें रे ॥ थ ॥ सोण ॥ एम हास्यो नरजव वक्षी, छष्करपणे ते लहियें रे ॥ धीर विमल कविराजने, नयसीसे एम कहियें रे ॥ हा। सोण ॥ सर्व गाथा ॥ १७ ॥

॥ दोहा॥ ॥ श्री आवश्यक चूर्णिने, अनुसारें कह्यो एह ॥ पण उ पदेश पदें कह्यो, अन्य सरूपें एह ॥ १॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नमो नमो मनक महामुनि ॥ ए देशी ॥ तामिलित्ति नगरें वसे, सा
गरदत्त इति सेठ रे ॥ रयण राशि करी एकठो, खि करे जसवेठ रे ॥ र ॥
मानव जब मीठो खही, मूरख मिह्यां महारो रे ॥ महोटो मिह्मा एह
नो, मुगतितणो संचकारो रे ॥ मा० ॥ श ॥ प्रवहण पूरी एकदा, रयण
द्वीवें ते जाय रे ॥ प्रवहण रयणें जरी फरी, आवे जलिधिमांय रे ॥मा०
॥ ३ ॥ प्रवहण जांग्युं तेहनुं, रयण गयां विरलाइ रे ॥ फलग खही घर
आवीयो, हियडे छःख न समाइ रे ॥ मा० ॥ श ॥ रयणराशि तेणे शेठिए,
ते जेम दोहिलो छहियें रे ॥ तेणीपरें नरजव हारियो, दोहिलो वली व
ली कहियें रे ॥मा०॥ थ ॥ जीव संसारी शेठियो, सुगुरु सुधर्मने नेकरे ॥ स
मिकत गुणवर रयण्डें, पूखुं पोत विवेक रे ॥ मा०॥ ६ ॥ संयम मारग

रूयडो, रयणद्वीप समानो रे ॥ अनुक्रमें अनुसरीने थयो, आगम रयण निधानो रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ विकथा उत्सूत्र वायथी, हास्त्रो रयणनी राशि रे ॥ आस्ता प्रवहण जांजियुं, थयो चउगति वासी रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ पंच म रयणतणो कह्यो, नरजवनो दृष्टांत रे ॥ धीरविमख गुरु सानिधं, कवि नय कहे गुणवंत रे ॥ मा० ॥ ए ॥ सर्वगाथा ॥ १७ ॥ इति नरजव दृष्टांता धिंकारे रक्तराशिनामा पंचम दृष्टांत सञ्चाय समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ स्वप्तनामा षष्टदृष्टांताधिकार स्वाध्याय प्रारंजः॥ ॥ दोहा॥

॥ समिकत विण जवमां फखो, काल अनंता जंत ॥ पंचप्रमादवर्षे करी, आठे कमे महंत ॥ १॥ नर जव सुणवुं श्रुततणुं, सहहणा तिम चं ग ॥ बल करवुं धर्में वली, ए चारे परमंग ॥ १॥ चंद्रपान सुहणा तणो, ए ठठो संबंध ॥ कहुं श्रीगुरु सानिधियकी, मूलदेव परबंध ॥ ३॥

॥ ढाख पहेखी ॥

॥ सारद बुद्धिदायी ॥ ए देशी ॥ पामलिपुर नयरी, वयरी सिव वश कीध ॥ शंखोजल गुणधर, नरपति शंख प्रसीध ॥ जयसिरिःतस राणी, रूपें जित इंडाणी॥ तससुत अतिसुंदर, मूलदेव गुणवाणी॥ त्रुटक॥ गु णखाणी ज्वट विन्नाणी, असल तणी सहनाणी ॥ जिहां जेवुं तिहां तेवुं दीसे, जिम जलधरनुं पाणी ॥ जूनट दहवट करवा हेते, तातें दूर करी तो ॥ बहु धनवंती स्वर्गहसंती, नयरी अवंती पहोतो ॥ १ ॥ ढांख ॥ गु टिकाने कंपटें, ते थयो वामनरूपी ॥ गणिकामां माणिक, देवदत्त गुणकू पी ॥ अति जीणा वीणा, वाहे तिम वली गाय ॥ गणिका तस गुणथी, तिम अनुरागिणी थाय।।त्रुटक।। थाइ अनुरागी जावन जांगी, वणिकमां सीजागी।। अचलनाम गांथापति धनपति, आञ्यो तिहां वहजागी॥दान मान सतकारी सारी, गणिकाघर ते विखसे ॥पण वामन देखी गणिकातुं, श्रंतर हियडुं हीसे ॥१॥ढाखा। श्रका कहे गणिका, सुण तुं निश्चल चित्त॥ जर्ज अचल धनीने, तज वामन निर्वित्त॥तव बोली गणिका, वामनकामन रूप ॥ ए अचल अचल परे, निर्गुण पन्नर रूप ॥ तुटक ॥ पन्नर रूपी अति अविवेकी, ए माहारे मन नावे॥ शेखडीनो दृष्टांत देखाडी, अकाने सम् कावे ॥ अका ढकानीपरं खागी, मूखदेवने नाम।। अनुचित स्थानक जाणी

चाख्यो, उद्देशी कोइ गाम ॥ ३ ॥ ढाख ॥ वेना तटवाटें, मखीयो बंजण एक ॥ तेह साथें चाख्यो, विण्संवल सुविवेक ॥ उद्रंत्तरि बंजण, जोजन करवा काज ॥ सरपालें बेठो, काढी साथुष्ठ्य साज ॥ तुटक ॥ साथु साजें निर्लंजने वंजण, कुंवरने निव संजलावे ॥ निर्पृण शर्म निज नाम यथार थ, लोकें कीधुं पावे ॥ एणीपरें त्रण्य दिवसनो जूख्यो, श्राटवीथी ऊतरियो ॥मूलदेव जोजनने हेतें, वसतीमां संचरियो ॥४॥ ढाल ॥ वाटे एक गामें, कोइ कुलपतिने धामे ॥ जोजनने कामें, बेठो करी विश्राम ॥ मनमांहे चिं ते, संत होये जो कोय ॥ जइ तेहने याचुं, उद्रपूर्ति जिम होय ॥श्रुटक॥ उद्रपूर्ति करवाने काजें, एकघरें फरता दीठा॥श्रुडद वाकुला जिक्ककनी परं, मोदकथी पण मीठा ॥ कुधित थकोपण निश्वलचित्ते, वाकुल लेइ विश्वीयो ॥ वर्मलनीर सरोवर तीरें, वेठो पुण्यें व्यवीयो ॥ य ॥ इति ॥ ॥ ढाल वीजी ॥

॥ चतुरसनेही मोहना॥ ए देशी ॥ मूखदेव मन चिंतवे, ए कुलमाष में पाया रे ॥ खांख पसायतणी परें, मोदकथी सुखदाया रे ॥ मूण् ॥ १॥ किहां मुज राज्य पितातणुं, किहां उद्धोणि विखासो रे ॥ किहां ए जिख कुलगामनी, ए सवि कर्मविलासो रे ॥ मू०॥ १॥ एक दिवस पण ते हतो, देतो बहुने अहो रे॥ एक दिवस पण एह हे, उदर जरण असम हो रे ॥ मू० ॥ ३ ॥ अहम अंते पामीया, रंक परें केम खाउं रे ॥ जिक्क कने आपी त्रखुं, जेहवुं तेहवुं खाउं रे ॥ मूण्॥ ४॥ एहवुं नाग्य किहां थकी, साधु सुपात्र बहीजें रे ॥ आ अवसर नहिं तेहवो, तो पण देइ ज मीजें रे ॥ मूण ॥ ए ॥ एम चिंतवतां पुख्यी, मासोपवासी मुणिंदो रे ॥ पुण्य पुंज आयो तिहां, मलपंतो जाणे गयंदो रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ अज गमें गज मुज मख्यो,पहर गमें रयणां रे॥जल गमें अमृत मिट्युं, एम जचर तो वयणां रे ॥ मू० ॥ ९॥ राज्य रोरसुत रिंजियो, जडश्रुत अंध जिम निरखे रे ॥ मूंगो वचन खही यथा, तेणीपरें मनमां हरखे रे ॥मूण ॥ ज ॥ तुम सरखी जिद्धा नथी, पण मुज जाव अपारा रे ॥ यहा कृपा करो अनु यह करी, मुज गरिव निस्तारों रे ॥ मू० ॥ ए॥ छरित समुद्रने तारवा, पात्रपोत तेणें धरीयो रे॥ अनाकुलमने वाकुला, देतां चित्तडुं ठरियुं रे॥ मृण ॥ १०॥ सुरवाणी आकाशथी, थइ तस पुण्यनी साखी रे ॥ जे याचे

ते ताहरे, दिजं तुंकने हित दाखी रे ।। मूण्या रेर्या राज्य दियो मुकने तुम्हें, देवदत्ता सुखजोगरे॥ हाथी सहसतणुं ज्ञां, सुमतितणो संयोग रे ॥ मृण्॥ ११॥ त्र्याजयकी दिन सातमे, याइश तुं त्रूपाल रे॥ एम निसु णि दर्षे जस्वो, छायो पंथी सालें रे ॥ मूण्॥ १३॥ निजमुखमांदे पेस तुं, चंडमंगल तिहां दीतुं रे ॥ रात्रि घडी दोय पाठली, अमृतथी पण मीवुं रे ॥ मू० ॥ १४ ॥ कोइक तिहां सूतो कापडी, दीवुं स्वम् तिणें विह सी रे॥ अर्थ करे ते माहोमां, गुडयुत मंकक बहसी रे ॥ मृण्॥ १५॥ श्रीफल कुसुम मही करें, स्वप्नजाण घर आवे रे॥ ए सुपने तुं आजशी, सातमे दिन राज्य पावे रे ॥ मू० ॥ १६ ॥ देव वाणी सुहणे मिली, चंप क तरुतल सूतो रे ॥ इण समयें तिण पुरनो धणी, अपुत्रियो गति पहो तो रे ॥ मूण्॥ १७॥ पंच दिव्य शणगारियां, पुर बाहेर ते आवे रे॥ कखश ढाख्यो शिरजपरें, राज तेज तिहां पावे रे ॥ मूण ॥ रेठ ॥ देवदत्ता श्रावी मखी, गज रथ तुरग श्रपारो रे ॥ वासव परे वसुधापति, पासे राज़ जदारों रे ॥ मृ० ॥ १ए ॥ राज्य सुणी मूलदेवनुं, चिंते इम मनमां बहुवी रे ॥ एके सुपन विचारणा, फेर किस्यो ए पहियो रे ॥ मूण ॥ २०॥ सुपतुं सहेवा कापडी, मोहोढुं मांभी सूवे रे॥ सुपन गमें वागुस तणी, वीठ पड़े मुख धोवे रे॥ मू०॥ ११ ॥ कापड़ी फरीने निव खहे, सुहणुं जड जिम वाणी रे ॥ तेणी परें न्रजव दारीयो, न खहे पुनरपि प्राणी रे ॥ मृण ॥ ११ ॥ ए खवलेश थकी कह्यो, मूखदेव अवदातो रे ॥ धीरविम स कविराजनो, शिष्य कहे ए वातो रे॥ मू०॥ १३॥

॥ दोहा॥ हवे पहनो उपनय कहुं, सुणि ग्रह्मुखर्थी आज ॥ ते चि

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ करेखडां घडदे रे ॥ ए देशी ॥ मूखदेवसम जाणीयं, जीव संसारी सार ॥ नवनव वेशें मठ परें, जमतो इण संसार ॥ जिवकजन सुणिखे रे॥ समिज समिज घटमांहि, जिवक जन सुणिखे रे ॥ धरीयें समिचित्र चाहिं ॥जणार॥काढ्यो कर्मनृपें तिहां, तिर नयरीथी जाणि॥ व्यसनिमध्यात्व निवारणां, करवा गुणनी खाणि॥ जण्॥श॥ नरगति उद्धोणी समी, मिल यो जइ तहमांहि ॥गुजरुचि वारवध्न मिली, पूरण प्रेम उष्ठाहिं ॥जण्॥श॥ यो जइ तहमांहि ॥गुजरुचि वारवध्न मिली, पूरण प्रेम उष्ठाहिं ॥जण्॥श॥

श्रुक्ति श्रक्कायें काढीयों, ते प्राणीनें जोर ॥ चंद्र पान सम पामीयों, शु-द्ध समिकत चित्त ठोर ॥ ज० ॥४॥ पंचिद्वयसम चारित्र, तेह श्री सीधां काज ॥ पामे श्रनुपम जीवडा, मुगतिपुरीनुं राज ॥ ज० ॥ ४॥ कपटी प्राणी कापडी, सुहणासम समिकत्त ॥ पेट जराइ कारणें, खोहे ते श्रप वित्त ॥ ज० ॥ ६ ॥ एम नरजव समिकत तिणे, हास्यों फिर न बहंत ॥ चंद्रपान सुहणा समो, न बहे तेह श्रत्यंत ॥ ज० ॥ ९ ॥ वठा सुपन तणों कह्यों, ए जपनय खबंदेश ॥ धीरिवमल किव नय कहे, एम कस्यों जप-देश ॥ ज० ॥ ० ॥ मूलदेव नरपित तणों, मोहोटो वे संबंध ॥ स्वम कार्य जणी श्राणियों, नरजव समिकत संध ॥ ज० ॥ ए॥ सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

॥ इति नरनव दशदृष्टांताधिकारे सुपननामा षष्टदृष्टांतः समाप्तः ॥

॥ अथ चक्रनामा सप्तमदृष्टांताधिकारः खाध्याय प्रार्ज्यते ॥ ॥ दोहा ॥ जिनचक्री हिर प्रतिहरि, चारणमुनि बलदेव ॥ विद्याधर व ली पूर्वधर,तिम गणधर जिनदेव॥१॥क्षित्रंत ए नर कह्या,सूत्रमांहि गुण गेह॥नरजव विणुं ए निव हुवे, तिणे करी जत्तम एह ॥१॥ राधावेधतणो कहुं,सुणतां अधिक अःणंद ॥चक्रनाम ए सातमो, ए दृष्टांत अमंद ॥३॥ ॥ हाल पहेली ॥

॥ पुत्र तुमारा राणी देवकी ॥ ए देशी ॥ इंड्रपुरी श्री श्रिषक विराजे, इंड्र पुरानिध नयरी ॥घर घर ईसर ग्रुरुजन बुधजन, घर घर सोहे गोरी॥ रूडे रंगें रे नरजव सुरतरु सारिखो, परखो हृदय मजार ॥ रू० ॥ इंड्र त णे श्रनुहार ॥ रू० ॥ समिकत जस सणगार ॥ रू० ॥ रे ॥ ए श्रांकणी ॥ इंड्रदत्त जूपाल विराजे, इंड्रतणी परें फावे॥श्याम खडगवल्ली पण तेहनी, निर्मल जस प्रगटावे ॥ रू० ॥ १ ॥ जिन्न जिन्न जननीना जाया, तेहने सुत वावीसा ॥ कलाचार्यपासें जणवाने, मूक्या ते सुजगीसा ॥ रू० ॥३॥ एक दिन सचिव सुबुद्धि घरजपर, सुमित सुता खेलंती ॥ ते निरली नर पित मन हरख्यो, ए कन्या ग्रुणवंती ॥ रू० ॥ ४ ॥ नरपित मोह्यो तेहने रूपें, ते कन्याने परणी ॥ रागवंत नरपित ते विलसे, जिम पूरव दिशि त रणी ॥ रू० ॥ ४ ॥ शीप शहे जिम मुक्ताफलने, तिम सा गर्ज धरंती ॥ जिम श्राक्षस विद्या विसारे, तिम सा नृपग्रुणवंती ॥ रू० ॥६॥ संध्यावाद स परें निजपितनो, राग लही परधानें ॥ निजपुत्री निजगेहें तेडी, देइ

निज बहुमानें ॥ रू० ॥ ॥ शुजदिवसें सुंदर सुत जायो, सुरेंडदत्त अजि धाने ॥ मुडालंकृत प्रेम धरीने, राखे जेम निधाने ॥ रू० ॥ ७ ॥ अप्रिक पर्वत बहुली सागर, दासेरा नृपनंद ॥ सुरेंडदत्त साथें ते जणवा, बेठा अति आणंद ॥ रू० ॥ ए॥ मांहोमांहे जणे ते पंचे, पण दीसे बहुजेद ॥ एक नीक जल पाया तो पण, करीर कल्पतरु कंद ॥ रू० ॥ १० ॥ जिम कायर रण अंगण नासे, तिम विद्यायी जागा ॥ ते दासेरा सुत बावीसा, विषय प्रसंगें लागा ॥ रू० ॥ ११ ॥ अस्कर पालर योग्य निहं ए, खबंदी परमादी ॥ कलाचार्य पण एम क्रवेखे, जिम इष्ट तुरंगने सादी ॥ रू०॥ ११ ॥ सुमतिपुत्र एकतान थइने, सकल कलाने शीखे ॥ राधावेधादिक जे दुधर, ते पण न गणे लेखे ॥ रू० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ इण अवसर मधुरापुरी, तस जितशत्रु जूप ॥ निवृत्ति नामे रूअडी, कन्यारत अनूप ॥ १ ॥ प्रकटीत यौवन देखिने, पूठे तृप तस तात ॥ वस्से ! वर कुण तुज मनें, ते किह्यें अवदात ॥ १ ॥ साधे राधावेध जे, ते माहारे जरतार ॥ इम निसुणी मंगावियो, स्वयंवर मंग्य सार ॥ ३ ॥ आव्या देशाधिप घणा, पण न धरे सा राग ॥ जिम जमरी धनूरने, कुसुमित बंधे राग ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ 🗸

॥ देशी यत्तनी ॥ इंद्रदत्त नरेसर आवे, सघला सुत साथे लावे ॥ वली साधे सिव वप्र सीधो, पेसारो सबलो कीधो ॥ १ ॥ स्वयंवर मंनप मांहे आवे, कन्या देखी सुल पावे ॥ धन धन मुंज पुत्र सोजागी, जेहने ए कन्या रागी ॥ १ ॥ तिहां रोप्यो यंज उत्तंग, जाणे मेरु महीधर शृंग ॥ आठ चक्र ते ऊपर विवरलां, चार अवलां ने चार सवलां ॥ ३ ॥ वायु वेगनीपरें जमंत, विज्ञानी एम रचंत ॥ तस ऊपर पूतली एक, तस राधा नाम विवेक ॥ ४ ॥ नीचुं एक तेलनुं कूंछुं, तेलें जरीयुं अति उंछुं ॥ प्रतिविंबें पूतली जेह, माबी आंखे वींधे तेह ॥ ५ ॥ नीचें मुखें वींधे कीकी, तस विद्या किसेंग नीकी ॥ एम राधावेध करेइ, ते कन्याने परणे इ ॥ ६ ॥ एम निसुणी राजा चिंते, ऐ ऐ ए कार्य महंते ॥ श्रीमाली प्र अम बोलायो, जेहने घणे हर्षे लडायो ॥ ९ ॥ सुण पुत्र अठे लाजदोइ, इहां कन्या इहां यश होइ ॥ तुं पहेलो था हवे वहेलो, आयो लाज ठां

मे ते गहेलो ॥ ७ ॥ आयो पए पाढुं ताके, बाए नाख्यो फीटें बांके ॥ राधाची वाणज टलियो, बुंब पाडी पाठो वलियो ॥ ए॥ बीजो आयो सुजगीस, निव पोहोती तास जगीस ॥ एम आयो त्रीजो चोथो, शर नाखे त्रशिय अवोध्यो ॥१०॥ एम आया सुत वावीस, निजन्ज प्रतें कर ता रीस ॥ तिहां केइ तालोटा वाय, हांसुं मुखमां न समाय ॥ ११ ॥ को लाहल काको थाय, बीजा पण निव संजलाय-॥ मंकप बाहिर शर जा य, जाणे पाश्यी हरिण उजाय ॥ ११ ॥ दांते होठ चांपे जार, केइ पाडे मुख बहु शोर ॥ कोइकना हाथज धूजे, कोइकनां शर नवि पूजे ॥ १३ ॥ जे नृपित हुता सामान्य, तेहने मुख वाध्यो वान ॥ जे वर्लीयाने वली महोटा, तस वद्नें ढल्या जल लोटा ॥ १४ ॥ परमेसर अमने तूठो, इंड दत्त नुपति थयो जूंगे।। जो अधिकी काटत रेख, तो फूलत एह विशेष ॥ १५ ॥ पासें मंनप अजुवाख्यो, जसवाद कुणें निव वाख्यो ॥ कोइक आ गेंथी थाका, कोड़क थया हाका वाका॥ १६॥ वाहिरें दीसे सिंह सरी खा, जंबुक सरीखा परिख्या॥ कन्यापण मनविखखाणी, जुर्न कर्मतणी श्रद्भाणी ॥ १९॥ श्राब्या तव चार दासेरा, कहे श्रवसर हे हवे मेरा ॥ एकने तो धूजणी बूटी, बीजानी पण चीज त्रृटी ॥ १७ ॥ एकने जूइ लागे जारी, चोथें जोइनासण वारी ॥ इंडदत्त नृपति विल्लाणो, किहां ञावी एच नराणो ॥ १ए॥ ए सुतयी यशनी हाण, हसतां सहु राजा राण ॥ नीचें मुखें धरती ताके, खाजें पेसेवा वांके ॥ १० ॥ सुत न होत जो एकज नाम, इए ठाम न जावत माम ॥ जिम यंत्रा कदलीके रां, जला वाहिर जींतर कोरा ॥ ११ ॥ जिम हास्त्रो जुआरी शोचे, तिम राजा मन श्रालोचे ॥ एहवे नय सुबुद्धि प्रधान, श्रावी नृप करे साव धान ॥ ११ ॥ सर्वेगाया ॥ ४१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सचिव कहे सुण नृपति तुं, म म कर मनविषवाद ॥ पुण्यबलें छे ताहरो, इह निश्चें जयवाद ॥ १ ॥ मुज दोहित्रो गुण्यिनेलो, ताहरो पुत्र रतन्न ॥ ते राधावेध साधशे, करशे प्रसन्न वदन्न ॥ १ ॥ सिंह श्वान पटं तरो, जाणीजें निरदंज ॥ छ जेदे मृत हाडकां, छ जेदे गजकुंज ॥ ३ ॥ए म निसुणी विस्मय पड्यो, नृपति कहे परधान ॥ मुजने सांजरतो नथी, जिम छाजानी ज्ञान ॥ ४॥ खिखित पत्र देखाडियुं, प्रगट्यो छिषक उष्ठा इ॥ चिर विखोकित स्वप्त परें, पुत्रीनो वीवाह ॥ ५॥ ॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ कडखानी देशी ॥ नृपती आणा खही तेडियो तिहां वही, सुबुद्धि प्रधान नृप मान पामी ॥ सार शृंगार वर हार पहिरावीयो, आवीयो नृपतिपद शीश नामी ॥ १॥ जयो कुमर सिरताज महाराज सुत जगज यो, जे थयो सकल विज्ञान वेदी॥ सचिव कहे नृपति सुण एह सुत तुम्ह तणो, श्रम्ह तणो शीखव्यो बाण नेदी ॥जणाश ॥ हृदय श्रासिंगियो मस्त कें चुंबियो, यापीयो कुमरने निज उठंगे ॥ एह निई त्तिवरं वंश उज्जख करो,, जय वरो एए ठामे प्रसंगें ॥ जयोष ॥ ३॥ तातवाएी खही धनुष शर संयही, तिहां वही आवीयो यंज पासे ॥ वंदिया निजकलाचार्य आ नंदिया, सज्जना बहुजना मन विमासे ॥ जयोग ॥४॥ बंधु बावीस धरी, रीस मनमां इसे, अमथकी अधिकशुं एहं दीसे ॥ चार दासे दासेरपरें बुरबरे, हाथ ताली दीये दांत पीसे ॥ जयो। ॥ थ।। विकट दोइ सुजट बि हुं प्रास जना किया, हृदय महर धरी खन्न हाथें ॥ वाण शर मूकता जो विचें चूकता, जालजो एहने जोर बाघें ॥ जयो० ॥ ६ ॥ धनुषनी पण्ड पूजी अधूजे मनें, बाए तीखो तस अगिन जोड्यो ॥ तैलप्रतिबिंब अ विलंब राधा प्रत्यें, बाल ततकाल तिहां बाण ढोड्यो ॥ सकल नरपति तणो मान मोड्यो ॥ जयो०॥ १॥ वक व्यव चक उद्घंष्य खघु खाघवी, कलथकी बाणगति सरल कीधी ॥ जाणीयें सापराधा यथा राधिका, पूत खी वामदृग तुरत वींधी ॥ जयोण ॥ ए॥ सयण **छावी मिख्या दुष्ट पू**रें ट ह्या, कुसुमनी वृष्टिशुं सुर वधावे ॥ निर्वृति बालिका कंठ वरमालिका, थापती जमर रवि गीत गावे ॥ जयोण ॥ ए॥ जूप मन हरखीयो सुतरयण परखीयो, सुबुद्धिने कृद्धि बगसीसदीनी ॥ सुजस जयवाद में पामीयो नृपतिमां, त्राज ए सहाय तें सबस कीनी ॥जयोणारणा एम त्रनज्यास वश साधवो दोहिलो, वेध राधातणो मेरुतोले ॥ हीनपुण्यें तथा नरजवो दोहिलो, धीर गुरुसीस नय सुकवि बोले।।जयोण।११॥ सर्व गाथा ॥५ण। ॥ दोहा ॥ राधावेंधतणो कहुं, श्रंतरगत सुविचार ॥ श्रावश्यकनी

चूर्णिमां, जपनयनो अधिकार ॥ १॥

## ॥ ढाख चोथी ॥

॥ तुज साथे नहिं वोक्षं महारा वाहासा, तें मुजने वीसारी जी ॥ ए देशी ॥ कर्मनृपतिने अविरति प्रमुखा, बहुखी घरणी दीसे जी ॥ जिन्न जिन्न जननीना जाया, परिसह सुत बावीसे जी ॥ दासीसुत वसी चार विचारो, विरुष्टा विषम कषाया जी ॥ राग देष दोइ विकट महाजट, श्रंग रक्तक पद पाया जी ॥ १॥ नरजव सुरतरु सरिखो पामी, महियां मृढ म हारो जी ॥ क्रोध मान मायाने खोजह, चार कषाय विचारो जी ॥ त्रार्तरीद्वरोरध्यान खप्त कर, धरीने तेहज रहियां जी ॥ नो कषाय तासादिक देवे, व्ययकरणजमहियां जी ॥ २ ॥ जवमंगपमां विविधप्रका रें, जंतु जात तस पद्म जी ॥ कर्मनृपति श्रतुजावि कोइक, नय साधन नो दक्त जी ॥ एकदिन सुबुद्धि सचिवनी तनया, विरितकनी नृप देखे जी ॥ ते परणीने विखसे जूपति, जनम सफल मन खेले जी ॥ ३ ॥ ठार त्रेहपरें नेह नृपतिनो, देखी जनकने गेह जी॥ श्रावी गर्जवती ते तनयां, सुत प्रसच्यो गुणगेह जी ॥ संयमनामा सुतनें जनकें, सकल कलाशीला ब्यो जी ॥ श्रानुक्रमें जिनवर नृपति मोहोटो, स्वयंवर मंगाव्यो जी ॥४॥ निर्वृतिनाम सुता परणावा, मोहोटो यंज आरोपे जी॥ शुजसामग्री द्रोणी पासें, विधिमर्याद न खोपे जी ॥ अवलां सवलां चक्र फरे ते, घाति अघा ती कमों जी ॥ मोहनीय स्थित राधा जाणो, वेधे तेहनो ममों जी ॥५॥ ते विद्या साधनने काजें, परिसह अने कषाया जी।। आया पण तिहां मान गमाया, कन्या लाज न पाया जी ॥ नरजव समिकत संयुत पामी, सर्व विरति अनुसरीयें जी ॥ राधावेध कहीजें तेहने, जवजल निधि एम तरी यें जी ॥६॥ एम निर्वीर महीतल देखी, संयमसुत सावधान जी॥ सचिव पुत्र विद्यानो आगर, पामी नृपनुं मान जी।। ज्ञान कवाण पण्ठ श्चन किरिया, जोडी दरिसण वाण जी।। आतमवीर्य तिहां प्रगटावे, राधा वेथ सुजाण जी ॥॥। घाति कर्मथिति वेध करीने, निवृत्तिकन्या परणेजी॥ जयजय शब्द थयो जिन शासन, जिनवर न्नूपति वरणे जी ॥ इणि परें रा धावेध तणी परें, दोहिलो नर अवतारो जी ॥ विषय कषाय वशें म महा रो, श्रंतरवेरी वारो जी॥ छ॥ नरजव समिकत संयुत पामी, सर्वविरति स्रं नुसरियें जी ॥ राधावेध कहीजे तेहने, जवजखनिधि एम तरियें जी ॥ अ

कतणो दृष्टांत कह्यो ए, शास्त्रतणे अनुसार जी ॥ धीरविमल गुरुराज पसायें, नयविमल सुखकार जी ॥ ए ॥ सर्वगाया ६० ॥ इति नरजव दश दृष्टांताधिकारे चर्कनामा सप्तम दृष्टांतः स्वाध्याय समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ अथ कूर्मनामा अष्टम दृष्टांत स्वाध्याय प्रारंजः॥

॥ दोहा॥ ॥ मानवजव विणु निव हुवे, समवसरण मंनाण॥ क्षपकश्रेणि परमावधि, तिम मणपज्जवनाण॥ १॥ तेमाटे उत्तम कह्यो, चिहुं गतिमांहे एह ॥ पंचम गतिने पामवा, मूलमंत्र विल जेह ॥ १॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ नायकानी देशी ॥ इवे बोह्यं हुं आठमो रे, कन्नपनो दृष्टांत रे ॥ चतुरनर ॥ वीरजिएंद कहे इस्युं रे, गौतमने हितवंत रे ॥ चतुण्॥ १॥ जविजन जाव धरी सुणो हो लाल ॥ नीर जस्बो जह रूखडोरे, अनेक जोयणने मान रे ॥ च० ॥ कहियें नीर खुटे नहिं रे, जिम नाणीनं नाणरे ॥ चणा जणा र ॥ मीन पाठीन घणा तिहाँ रे, जलचर जीव अनेक रे ॥ चंण ॥ जाति घणी जिम नयरमां रे, निवसे तिम अति ढेक रे ॥ चण ॥ ज० ॥ ३ ॥ पाखरनी परें त्राचस्वो रें, तस ऊपर सेवाल रे ॥ च० ॥ पव ने पण निव नेदियें रे, जिम कमलें करवाल रे ॥ च० ॥ न० ॥ ध ॥ ति हां निवसे एक काठ्वो रें, जूनो थिर जस आय रे ॥ च०॥ पुत्रादिक परि वारद्यं रे, सुखमांहे दिन जाय रे ॥ च०॥ ज०॥ ५॥ वायुवरों तिहां एक दा रे, विखरीयो सेवाल रे ॥ च० ॥ देखे यहगण परवखुं रे, शशधरिबंब विशाल रे ॥ च० ॥ ६ ॥ हरख्यो हियडे चितवे रे, वस्तु अनोपम एह रे ॥ च ॥ देखाडुं परिवारने रे, एम चिंती गयो तेह रे ॥ च ॥ ।। तेडी कुटुंब आवे जिसे रे, ते काठब ततकाल रे ॥ चणा पवन जकोल्यो तेटलें रे, ऊपरवाख्यो सेवाल रे ॥ च० ॥ छ॥ जमी जमी इह सघलो तिहां रे, मनमांहे थयो खिन्न रे ॥ च॰ ॥ पण निव दी वो चंडमा रे, जिम पुर्गति सुररत रे ॥ च० ॥ ए ॥ वली एहमां क हियेंक काठवो रे, शशी दर्शन ते लहंत रे ॥चणा मिथ्याबलें तेम हारीयो रे, नरजव फरी न लहंत रे ॥चण ॥ १०॥ जन्म जरा जलपूरियो रे, इह सम ए संसार रे ॥ च०॥ ति हां संसारी जीवडो रे, जलचरने अवतार रे ॥ चण॥ ११॥ ज्ञान पवनें नवि जेदियें रे, मिथ्यामत सेवाल रे ॥ चण्॥ तिहां काढीब सम जाणीयें

रे, मानवजव सुकुमाल रे ॥ च० ॥ ११ ॥ मोहं मिथ्यात्वहायें करी रे, दी हो जिनवर देव रे ॥ च० ॥ अथवा समिकत रूआ हुं रे, कर्मविवर सिव शेष रे ॥ च० ॥ १३ ॥ तत्व वस्तु पामी करी रे, लाज लह्यो निव तेण रे ॥ च० ॥ सोह कुटुंब तणे वशें रे, ते करे जवह ज्रमेण रे ॥ च० ॥ १४ ॥ जिम चिंतामणि सिंधुमां रे, पिंडयो नावे हाथ रे ॥ च० ॥ तेम मिथ्यात्वी ने कह्यो रे, दोहिलो श्रीजगनाथ रे ॥ च० ॥ १५ ॥ श्रीविनयविमल कि रायनो रे, धीरविमल कि ईश रे ॥ च० ॥ एम दृष्टांत कहे जलो रे, नय विमल सुशिष्य रे ॥ च० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा १० ॥ इति नरजव दशहष्टांता धिकारे कूम नामा अष्टम दृष्टांत सद्याय संपूर्ण ॥ ०॥

॥ अथ नवम युगनामा द्रष्टांतः प्रारच्यते ॥

। दोहा ॥ ॥ मानवजवमां पामियं, आहारक तनु खास ॥ दान सुपात्रें तिम वली, खायक समिकत वास ॥ १॥ नरजव उत्तम ते जणी, सिवगतिमांहि सार ॥ कहुं युगधूंसर में खनो, हवे नवमो अधिकार ॥१॥॥॥ हाल पहेली॥

॥ राग आशावरी ॥ मित्रपरं आर्तिंगी रहियो, जंबुदीपने जेहो जी ॥ बाख दोइ जोयण विस्तारं, खवणजखिषजख गेहो जी ॥ १॥ पुण्य करो रे पुण्य करो नर, मानवजव मत हारो जी ॥ सरख स्वजावें समिकत पा मो, सफल करो अवतारो जी ॥श॥ पुणा पंचदशादिक योजनखक्का, परि धितणुं तस मान जी ॥ पटशत अधिक सहस एक योजन, तसजल शिख परिणाम जी ॥ ३ ॥ पुण्॥ चार पाताल कलश ठे तेहमां, सहस जोयण अवगाहे जी ॥ मनु कमलोघ वधारण काजें, जाणे करसणिया जलमांहे जी ॥ ४॥ पुण्॥ मीन अदीन पाठीन घणा तिहां, वदन पसारी रंगें जी ॥ कीडे जलिमिध लोले खेले, जिम सुत जनक उठंगे जी ॥थ॥ पुण्॥ जेहनी नीरशिलामांहे लीना, अरुणादिक होय शीत जी ॥ जाणे लोक ने आतपें पीड्या, लाजथकी जयजीत जी ॥ ६ ॥ पुण्॥ दो तिहां अ मरिवनोदि तेहमां, पूरव पश्चिम कूलें जी ॥ युग समेली जुजुइ नाले, प् वन करी प्रतिकूले जी ॥ छ॥ पुण्॥ धूसर पश्चिमदिशि प्रति द्रोडे, पूरव दिशिने समेल जी ॥ जलियमांहि प्रतिकूल पवनथी, न लहे तेहज मेल जी ॥ उ॥ पुण्॥ निव रंधी अचलादिक अंतरें, नसडी नीरप्रवाहें जी

॥ फूंसर विवरमांहे ते कदाचित, पेसे समेखी उठाहें जी ॥ ए॥ पु०॥ तेम प्रमादबढेंथी हास्त्रो, मानवनो अवतार जी ॥ युगसमेखी दृष्टांत तणीपरें, फरी न खहे सुख कार जी ॥ १०॥ पु०॥ जलिपरें संसार क हीजें, ग्रुजसामग्री समेख जी ॥ नरअनुपूर्वी सरखी जूंसर, वायुप्रमाद फकोल जी ॥११॥ पु०॥ कर्म विवरसम अमरविनोदी, जोये तेह विनोद जी ॥ एम अनंत पुदगल परिवर्त्तन, करतां पामे खेद जी ॥११॥पु०॥ एम जपदेश पदेंथी दाख्यो, आठमो जपनय एह जी ॥ धीरविमल गुरुराज पसायें, जांखे नय गुणगेह जी ॥१३॥पु०॥ सर्वगाथा ॥१५॥ इति श्री नर जब दश दृष्टांताधिकारे युगनामा नवम दृष्टांत सद्याय समाप्त ॥ए॥

॥ अथ दशम परमाणुक दष्टांत सद्याय प्रारच्यते ॥ ॥ दोहा ॥ सर्वविरति मानव छहे, पामे अवर न कोइ ॥ ते माटे उत्तम कह्यो, नरजव आगम जोइ ॥१॥ परमाणुकनो हवे कहुं, ए दशमो दष्टांत ॥ जविजन जाव धरी सुणे, जे गिरुवा गुणवंत ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ धर्महिये धरो॥ ए देशी॥ शक्ति पोतानी देखवा, कोश्क स्थमरिव शेष॥ कोतकशुं एक यंजनो, करे चूरण स्खम रेखो रे ॥ १॥ चेतन चेतीयं, धरीयं धर्मनुं ध्यानो रे, स्थाबस परहरी ॥ बहियं जिम जस मा नो रे ॥ चे०॥ ए स्थांकणी ॥ मेरुशिखर ऊपर जई, सूक्ष्म चूरण जेह ॥ निक्षकायंत्र प्रयोगधी, दशदिश विखरे तह रे ॥ चे०॥ १॥ वायुवशें परमाणुस्था, द्वीपंतर ते जाय ॥ ते परमाणु फरी मखी, कहो किम धंज ते साय रे ॥ चे०॥ ३॥ यद्यपि देवनी सान्निध्यें, ते यांजो वली थाय ॥ पण नरजव हास्यो वली, विणुं पुण्यें न बहाय रे ॥ चे०॥ ४॥ शुद्धधर्म यांजो कह्यो, कर्मविवर ते देव ॥ संशयिगिरि शिखर ऊपरें, करे विनोद स्वयमेव रे ॥ चे०॥ १॥ शंका निक्षकाशुं करी, ते थांजो शत संक ॥ स्क्ष्म चूरण दशदिशें, वायुप्रमाद प्रचंक रे ॥ ६ ॥ चे० ॥ एणी परें नरजव दोहिलो, दशहष्टांतें सार ॥ ते पामीने निगमे, विणसमिकत निरधारो रे ॥ चे० ॥ ३॥ कह्मतक ऊखेडीने, वावे ते एरंड ॥ लोडी संगित सिंहनी, सेवे ते फेरंक रे ॥ चे० ॥ ए॥ गज वेची खर स्थादरे, उपल प्रहे मणि लोडी ॥ स्थिर कथीरने संप्रहे, लोडी कंचन कोडी रे ॥ चे० ॥ ए॥ ए सं

क्रेपथको कहा, अनुपम दश दष्टांत ॥ धीरविमल गुरुसानिधें, कवि नय अति गुण्वंत रे ॥ चे० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ ॥ जे मानवजव पामीने, सेवे विषय प्रमाद ॥ ठंमे धर्म सुहंकरुं, छविरति ते जनमाद ॥ १॥ अमृत फखने ठोडीने, जाणे ते खख खाय ॥ साहेव जपरांठो करी, जीते रांक मनाय ॥ १॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ सकल मनोरथ आपे ए॥ ए देशी ॥ आवश्यकचूणें कह्यो, अन्य प्र कारें ए खह्यो, सदद्यो, श्रीसद्गुरुना वयणथी ए ॥ १॥ यंत्र श्रनेकें शोह ती, शाखा मनडुं मोहती, जेहती, द्रव्य असंख्यें नीपनी ए ॥ १॥ को इक समयवशें करी, जलए जील कवलितकरी, विस्तरी, अणुक श्रेणि पवने करी ए॥ ३॥ इंद चंद नरपित मली, ते परमाणुक सिव मली, व ली वली, ते शाला न करी सके ए॥ ४॥ देवप्रचावे कोइ नर, यद्यपि तेह शाखा करे, (पण निव) अनुसरे, नरजव हास्यो वली वली ए॥ ५॥ शुद्ध धर्मशाला कही, सद्गुण्यंने गहगही, ते दही, विषय कषाय अगति ज ले ए ॥६॥ विषय कपाय निवारीयं, जिम आतमने तारीयं, निव हारीयं, र्डुक्न नरनव पामीयो ए ॥९॥ नरनव एम वखाणीयें, दश द्द्यांते जाणी यें, आणीयें, सदद्या साची सदा ए ॥ ए ॥ पहिलां सिक्कपें करी, नर जवं जपनय सित्तरी, ते खरी, गाथा प्राकृत वंध हे ए॥ए॥ तस अनुसा रें ए कहा, जपनय सघला तिहां लहा, इम कहा, जिवजनने जएवा ज णी ए॥ १०॥ उत्तराध्ययनं दाखीया, अन्ययंत्र पण साखीया, नांखीया, नयविमलें जलट धरी ए॥ ११॥ सर्वगाथा॥ १३॥ इति नरजव दश दृष्टांताधिकारे परमाणुकनामा दृशम दृष्टांतः स्वाध्याय संपूर्णः ॥ १०॥

॥ इणि परें जान करी जाणो, ए जिन्न सञ्चाय ॥ अंतर्गत उपनय खहो, जिम समाधि सुख थायं ॥ १॥ श्री उपदेशपदे अने, एहनो बहु अधिकार ॥ तिम आनश्यक चूर्णिमां, उपनयनो निस्तार ॥ १॥ वचन कला तेहनी निह, पण उपनय एहमांहि ॥ सज्जन सघला एहने, आद रशे उन्नांहि ॥ ३॥ एकत्रीशे ढाले करी, एहनो वांध्यो वंध ॥ त्रणसें पं चासी एहनी, गाथामां कृत वंध ॥ ४॥

## ॥ कलश् ॥

॥ रागधन्वाश्री ॥ श्रुणिर्श श्रुणिर्श रे में राम मुनिसर श्रुणिर्शाए देशी॥ जविष रियें रे जवि ए उपनय चित्त धरियें ॥ सुगति संयोग करी निज हा थे, सहेजें शिवसुखवरियें रे ॥ १॥ ज० ॥ इस्तर श्रपरंपर जव जखनिधि, मूरतपणे जिम तरियें ॥ ए दृष्टांत सदा जे समरे, तस जस जग विस्तरि यें रे ॥ र ॥ तण ॥ ए सञ्चाय अनोपम गुणमणि, त्रविजन कंठें करीयें ॥ सरक्ष स्वजाव धरी मन समता, ग्रुद्ध समोकत व्यनुसरियें रे ॥ ३ ॥ ज०॥ समकितथी जिनसारग पामी, जब छाटवी निव फरीयें ॥ फुःख दोहग जिम दूर करीजें, शिवसुख संपद वरियें रे ॥ ४॥ नण्॥ तपगञ्च श्रंबर तरिष समोवड, श्री विजयप्रत सूरि करीयें।। जैंहनी आण कुसुमची माला, शेष परें शिर घरीयें रे॥ ए॥ त्रण॥ जस अतिघान मृगाधिपति सुणी, प्रतिवादी गजमरीयें ॥ छह निश की ति कनी गष्ठपतिनी, त्रिजुवन मंगपे फरियें रे ॥ ६॥ जण्॥ विद्यागुरु विक अमृतविमल कवि, मेरुविम ख मन धरीयें ॥ जसहित शीख सुणीने खोका, जविजन हियडे ठरिये रे ॥ ७॥ ज० विनय विमल कविराज शिरोमणि, सुविहित मुनि धुरि धरी यें ॥ धीर विसल पंकित तस सेवक, जसयश त्रिजुवन चरियें रे ॥ ए॥ ॥ ज०॥ श्रीनयविमल विबुध तस सेवक, तिणे ए उपनय करीयें ॥ ए उ पनय जणतां ने सुणतां, मंगल कमला वरीयें रे ॥ ए॥ ज० ॥ इति नय विमख विबुध विर्चित नरजव दशहष्टांताधिकार सञ्चाय समात।।

## ॥ अथ समकेतनी चोपाइ ॥

॥ धुर प्रहमुं जिनवर चोवीश, सिव गणधरने नामुं शीश ॥ तेहनां व यण सूणे जे कान, मन राखे समिकतने ध्यान ॥ १॥ साचो देव एक वीतराग, धर्म तणो जेणें दाख्यो माग ॥ ते जिनवरनी पाखें आण, जे होये साचा सुगुरु सुजाण ॥ १॥ पंच महाव्रत मनमां धरे, राग देष पेहे खुं परिहरे ॥ चारित्र पाखे टाखे दोष, खीये आहार थोडे संतोष ॥ ३॥ दोषमांहे जे आधाकर्म, टाखे ते त्रोडे आठ कर्म ॥ आधाकर्म करे नर ना र, ते पण घणुंए रुखे संसार ॥ ४॥ मूकी देह तणा सुखवास, सहे परी सह बारे मास ॥ तये करिने जेणे जस खाध, वंदनिक ते त्रिज्ञवन साधा। ॥ ए। एक संयमने वीजी कमा, शत्रु मित्र जेहने बेहु समा ॥ दृष्टिराग तरी ऊतरी, ते जाशे जवसायर तरी ॥ ६॥ एक आपणुं करी मन ठाम, जाएं गुएं सिद्धांत प्रमाए ॥ सज्जरनो उपदेश आचार, जोइ समजो हैये विचार ॥ ७॥ एक पहेरे सुनिवरनो वेश, एए साची न दीये उप देश ॥ जेह उहापे जिनवर वयण, तेहने किहां हियाना नयण ॥ ए॥ घर मूकीने थया माहातमा, मसता जइ लागा आतमा ॥ सहारुं सहारुं एम कहे घणुं, तेह मूरख बदनतापणुं ॥ए॥ एक तजी दीसे वे इस्या, लोजे शिष्य करे अण करया।। पंच महावत कहे उचरे, उपशम रस ते कहो किम ठरे ॥ १० ॥ श्राधाकर्सी वहोरे घणो, धर्म विगोवे जिनवर तणो ॥ यं त्र तंत्र मूली करी करी, चूरण आपे घर घर फरी ॥ ११ ॥ कुगुरु तणा जाणी छहि नाण, सेवा न करे जे होये जाण ॥ जिनवाणी सांजलीवें इसी, सोनुं गुरु वे लीजें कसी ॥ १२ ॥ सोनाथी होय एक जब हाण, कुगुरु करे जवजर्वनी हाण ॥ सोने घाठा पण ते मले, कुगुरु पसायें जव नव रुखे ॥ १३॥ सर्प मसे हुए नवनो अंत, कुगुरु करे संसार अनंत ॥ एम जाणी वली लीजे साप, कुग्रुरु निम निव वोलिये आप ॥ १४ ॥ एक वहे जिनवरनी आण, वैर वहे तिहां एक अजाए॥एह आपणा नही ग्रह एम, वोली लीये वदंतुं तेस ॥१५॥एक जणे माहारा ग्रह देव, में करवी एहि जनी सेव॥ पद्य तणा खामीने मान, अवर पद्यने दे अपभान॥१६॥ एक सगा जाणी माहातमा, गुण पार्खे तारे आतमा ॥ पात्र जणी पूजे तेहने, कहो समकित केम वे तेहने॥१९॥ देखी परखी गुरु गुण्वंत,श्रावंकने सन संयमवंत॥ एह आपणा नही इम जणे, दान सान सघछे अवगणे॥१०॥ एका ने गहनो श्रनुराग, पण न लहे साचो जिनमाग ॥ वीर यचन लेइने पाधरं, कुगुरु सुगुरु जोइ आदरं॥ १ए॥ जेइने आगमनुं बहु मान, तेहना उघडे एए कान ॥ए साधारए गुरुनी वात, जोइने खेजो मुक्ति मात॥ ए०॥ हृदय नयन तमे जूर्ड सुजाण, हंमो कुगुरु ए जिन व्याण ॥ सद्गुरु तणा चरण आचरो, जेम जवसायरलीखार्ये तरो ॥१४॥ जे जिन आए वहे निश दीश, ते ऊपर जे नाणे रीश ॥ नवे तत्व निरता सदहे, सूधुं समकित हे ते क न्हे।।११॥ एहवुं समकित सूधुं जाण, धर्भकाजनुं मक्रीश काण।। जिनवर पूजा सज्जुरु जिक्त, जावें करवी आतम शक्ति।।१३॥पडिक्रमणुंने फासुं नीर,

कीजें धर्म कह्युं जे वीर॥धर्में क्रिक्क सिक्किघर हूंत, धर्में संकट सिव जाजं त॥१४॥ धर्में सूर्य निरतो तपे, धर्में पाप करम सिव खपे॥धर्में होये रूपनो योग,धर्मपसायें संपत्ति जोग ॥१५॥ जणे गुणे ने बहु तप करे,पण समिकत सूर्युनादरे॥समिकत विण ते सहुए फोक, समिकत ब्रादर करवुं रोक॥१६॥ समिकत माय वाप संसार, समिकतथी सुख संपति सार॥ समिकत ए ह धर्मनुं मूख, समिकतथी सहुए अनुकूछ ॥१९॥ समिकत क्रिक्क सिक्किघर घणी, समिकत लों होये सुर धणी॥ समिकत सीके सघछां काज, समिकत खगें त्रिज्जवननुं राज ॥ १०॥ समिकत सिकत सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुने मंनाण॥ तपिण श्रेणिक राजह धणी, सेशे पदवी अरिहंत तणी॥१ए॥ समिकत पाले जे नर नार, वली न आवे ते संसार॥ एम जाणी समिकत आदरो, सिक्किर सम्णी जेम खीछा वरो ॥३०॥ इति॥ एम जाणी समिकत आदरो, सिक्किर सम्णी जेम खीछा वरो ॥३०॥ इति॥

॥ सुगुरु पीढाणो एणे याचारें, समकेत जेहनुं शुद्ध जी ॥ ए यांकणी n कहेणी करणी एकज सरखी, ऋहर्निश धर्म विद्धुक्र जी ॥ सुण्॥ १॥ निरतिचार महाव्रत पाखे, टाले सघला दोष जी ॥ चारित्र शुं लय लीन रहे नित्य, चित्तमां सदा संतोष जी ॥ सु०॥ १॥ जीव सहुना जे हे पी यर, पीडे नहीं खटकाय जी ॥ आप वेदन पर वेदन सरखी, नहणे न करे घाय जी ॥ सु॰ ॥ ३ ॥ मोह कर्मनें जे वश न पडे, नीरागी निरमा य जी ॥ जयणा करतो हलुये चाले, पूंजी मूके पाय जी ॥ सु॰ ॥ ४॥ अरहो परहो दृष्टि न देखे, न करे चालतां वात जी।। इषण रहित सूज तो देखे, तो लिये पाणी जात जी ॥ सु॰ ॥ थ।। जूख तृषा पीड्याङुःख पी डे, ढूटे जो निज प्राण जी॥ तोपण अशुद्ध आहार न क्षेत्रे, जिनवर आ ण प्रमाण जी ॥ सु॰ ॥ ६॥ अरस निरस आहार गवेषे, सरस तणी न हीं चाह जी ॥ इस करतां जो सरस मखे तो, हरख नहीं मनमांह जी ॥ ॥ सुण ॥ छ॥ शीतकालें शीतें तनु सूके, जनाले रवी ताप जी ॥ विकट परीसह घट अहीयासे, नाणे मन संताप जी॥ सुण॥ ए॥ मारे कूटे करे जपड़व, कोइ कलंक दो शीश जी॥ कर्म तणा फल जाणी उदीरे, पण नाणे मन रीश जी॥ सु०॥ ए॥ मन वच काया जे निव दंके, ढंके पांच प्रमाद जी ॥ पंच प्रमाद संसार वधारे, जाणे ते निःस्वाद जी ॥ सु०॥

॥ १०॥ सरस स्वजाव जाव मन रूडो, न करे वाद विवाद जी ॥ चार कषाय करमना कारण, वरजे मद् जनमाद जी ॥ सु०॥ ११ ॥ पापस्थान श्रहारे वरजे, न करे तास प्रसंग जी ॥ विकथा मुख्यी चार निवारे, स मिति गुपतिशुं रंग जी ॥ सुण ॥ ११ ॥ श्रंग जपांग सिद्धांत वलाणे, दो सूधो जपदेश जी ॥ सूधे मारगे चाले चलावे, पंचाचार विशेष जी ॥ सु० ॥ १३ ॥ दशविध यति भूर्म जिन जांख्यो, तेहना धारण हार जी ॥ धरम थकी जे किमहीन चूके, जो होये कोडि प्रकार जी ॥ सु० ॥ १४॥ जीव तणी हिंसा जे न करे, न वदे मिरषावाद जी ॥ तृण मात्र अण दीधुं न खीये, सेवे नही अब्रह्म जी ॥ सुण्॥ रथ्॥ नवविध परियह मूख न राखे, निशि जोजन परिहार जी ॥ कोध मान मायानें ममता, न करे खोज ख गारजी ॥ सुष् ॥१६॥ ज्योतिष आगम निमित्त न जांखे, न करावे आरंज ली ॥ श्रीपंघ न करे नाडी न जूने, सदा रहे निरारंज जी ॥ सुणार्शामा किणी शाकिणी जूत न काढे, न करे हलवो हाय जी॥ मंत्र यंत्रने रा खडी करी ते, नवी आपे परमार्थ जी ॥ सु० ॥ १० ॥ विचरे गाम नगर पुर सघले, न रहे एकण ठाम जी॥ चोमासा जपर चौमासुं, न करे एक ण याम जी ॥ सु॰ ॥ १७॥ चाकर नफर पासें निव राखे, न करावे कोइ का जजी ॥ न्हावण धोवण वेस वनावण, न करे शरीरनी साज जी ॥ सुव ॥ ॥ १०॥ व्याजवटानुं नाम न जाणे, न करे वणज व्यापार जी ॥ धर्म हाट मांमीने वेठा, विण्ज हे पर उपगार जी ॥ सु०॥ ११ ॥ ते गुरु तरे अव रांने तारे, सायरमां जिम जिहाज जी॥ काष्ट्र प्रसंगें लोह तरे जिम, तेम गुरु संगते पाग्य जी ॥ सु० ॥ २२ ॥ सुगुरु प्रकाशक लोचन सरिखा, ज्ञान तणा दातार जी ॥ सुगुरु दीपक घट अंतर केरा, दूर करे अंधकार जी ॥ सु॰ ॥ १३ ॥ सुग्रुरु अमृत सरिखाशीखा, दीये अमरणति वास जी ॥ सुग्रुरु तणी सेवा नित्य करतां, ढूटे करमना पास जी॥ सुण॥१४॥ सुग्रह पचीशी श्रवण सुणीने, करजो सुग्रुरु प्रसंग जी॥ कहे जिनहरख सुग्रुरु सुपसायें, कान हरेल उन्नरंग जी ॥सु<sup>०</sup> ॥१५॥ इति श्री सुगुरु पचीशी समाप्त ॥ ॥ अय आत्मशिका सञ्चाय॥ राग रामग्रीमां ॥ सहेजानंदीनी देशी॥ ॥ आतमरामें रे मुनि रमे, चित्तविचारीने जोय रे ॥ ताहारं दीसे न कोय रे, सहु स्वारथी मख्युं तोय रे, जन्म मरण करे खोय रे, पूछे सवि

मली रोय रे ॥ आ०॥ १॥ सजन वर्ग सिव कारिमं, कूडो कुटुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पामें जब पार रे ॥ आ०॥ १॥ अनंत कलेवर मूकीयां, तें कीयां सगपण अनंत रे ॥ जव उद्देश रे तुं जम्यो, तोही न आव्यो तुज अंत रे ॥ चेतो इदयमां संत रे ॥ आ०॥ ३॥ जोग अनंता से जोगव्या, देव मणुश्र ग तिमांहे रे ॥ तृक्षि न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांढा हे त्यांहि रे, आण संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ०॥ ४॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तु यी चित्त वारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चें इम धारी रे, इण्विध निज चित्त ठारी रे, मण्चिंद्र आतम तारी रे ॥ आ०॥ ॥॥॥॥ ॥ अथ समयसंदर्जीकृत मायानी सद्याय ॥

॥ भाया कारमी रे, माया मकरो चतुर सुजाए ॥ मा०॥ ए छांकए।॥ मायार्थे वाह्या जगत विद्धुद्धा, दुखीया याये अजाण ॥ मा० ॥ १॥ न्हा ना महोटा नरने माया, नारीने छिधिकेरी ॥ वली विशेषें छितिघणी व्यापे, घरडाने जाजेरी ॥ मा०॥ शा योगी जंगम यती संन्यासी, नम्नथइ प्रवस्ता ॥ उंधे मस्तक अगनी धखंती, मायाथी निव दिरया ॥ माव ॥३॥ माया मेखी करी बहु जेखी, खोजे खक्तण जाय रे॥ चोर करे धर तीमां घाले, जपर विसहर थाय ॥ माण ॥ ध ॥ माया कारण दूरदेशांतर, श्रदवी वनमां जाय रे॥ प्रवहणा बेसी द्वीप द्वीपांतर, सायरमां जंपाय ॥ माण ॥ य॥ शिवजूति सरिखा सत्यवादी, सक्गोष कहावे ॥ रतन देखी मन तेहनुं चिल्छं, मरीने छुर्गति जावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ खब्धिदत्त मायायें नडीयो, पडीयो समुद्रमजार रे॥ मुख माखणी उं यइने मरीयो, पडीयो नरक छुवार ॥ मां ॥ ७ ॥ इंद्वेतो सिंहासने थापी, संजूयें माया राखी ॥ नेमीसर तो माया मेली, मुगतीमां थया साखी ॥ माण ॥ ए॥ मन वचन कायार्थे माया, महेखी वनमां जाय रे ॥ धन्य धन्य तेह मुनिसर जेईना, तीन जवन गुणगाय।।माणाणाएवं जाणीने जविप्राणी, माया मूको अस गी॥ समयसुंदर कहे सार हे जगमां, धर्म रंगद्युं वलगी ॥माण।१०॥इति॥ ॥ अथ शिलविषे सखाय ॥

॥ रखेकोइ रमणी रागमां, प्राणी मुंजार्छ ॥ खिथर ए बाखा ऊपरे, थि रशाने थार्छ ॥ र० ॥ र ॥ एता खनरथनुं खाश्रम हे, क्षेत्रानो हे कंदो ॥ वैगेदधी पूर वधारवा, चावो पूनमचंदो ॥ र०॥ १ ॥ कुलटा नारीने का रणें, केई कुलवंता ॥ आचरण हीणा आचरे, वाहालाद्युं वेढंता ॥ र०॥ ३॥ जुलनी दरी ए सुंदरी, जुरगतीनी दाता ॥ आगमथी ख्यो जेलली, गुण एहना ज्ञाता ॥र०॥४॥ खांक मीठी करी खेलवे, मलतां मूढ प्राणी॥ जदयवदे ककूइ एठे, जिनमतीयें जाणी॥ र०॥ ५॥ इति नारी सञ्चाय॥

॥ अथ मुनिदानविजयजी कृत कर्म जपर सद्याय॥

॥कपूर होये श्रित जजलो रे ॥ ए देशी ॥ सुखडुःख सरज्या पामीये रे, श्रापद संपद होय ॥ बीखा देखी परतणी रे, रोष मधरजो कोयरे ॥प्राणी मन नाणो विषवाद ॥ एतो कर्मतणा परसाद रे ॥ प्राण् ॥ मण् ॥ र ॥ फलने श्राहारे जीवीडं रे, बार वरस वन राम ॥ सीता रावण खद्द गयो रे, कर्म तणा ए काम रे ॥ प्राण् ॥ १ ॥ नीरपाखें वन एकलो रे, मरण पाम्यो मुकुंद ॥ नीच तणे घर जल वह्यो रे, शीसधरी हरिचंद रे ॥ प्राण् ॥ ३ ॥ नले दमयंति परिहरी रे, रात्रि समय वन वाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निरवाह्यो काल रे ॥ प्राण् ॥ ४ ॥ रूप श्रिक जग जाणी ये रे, चक्री सनतकुमार ॥ वरस सातशें जोगवी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥प्राण् ॥ थ ॥ रूपें वली सुर सारिखा रे, पांकव पांच विचार ॥ ते वनवासे रहवड्या रे ॥ पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्राण्॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रिज्यनपति विख्यात ॥ ते पण कर्म विटंवीया रे, तो माणस केइ मा त रे ॥ प्राण् ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, कर्मविटंवण हार ॥ दानमुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥प्राण्॥ इति कर्मनी सद्याय ॥

॥ अय श्री ज्ञानविमलस्रिक्त वणजारानी संद्याय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणो वणकारा रे, न्यायें वणज करेय छहो मो रा नागक रे॥ जार जरे ग्रुज वस्तुनो व०॥ छतिहि छमूलक लेय छ० ॥ १॥ सात पांच पोठि जरे व०॥ संवल लेजो साथ छ०॥ वहोरत वाह राखजे व०॥ शेठसुं सूधो व्यवहार ॥ छ०॥ १॥ सहरो रहेजे सा छमां व०॥ वशकरजे चारे चोर छ०॥ पांच पाडोसी पाडुछा व०॥ छाठे मदको दोर॥ छ०॥ ३॥ वाट विषम जव पाठले व०॥ राग देष दो जील छ०॥ चोकस चोकी ते करे व०॥ पामीश छविचल लील छ० ॥ ४॥ काया कामिनी इम कहे व०॥ सुण तुं आतमराम अ०॥ ज्ञान विमल नरजव थकी व०॥ पामीस अविचल ठाम॥ अ०॥ ५॥ ॥ अथ सुमति विलास सञ्चाय प्रारंज॥

॥ पडजो कुम।तगढना कांगरा, मरजो मोहमहराण ॥ वालो माहरो निजघरें नावीयो, एणे परघर कीधा प्रयाण ॥ वा० ॥ इम कहे सुमती सु जाण ॥ वा० ॥ १ ॥ दांत पाकूरे द्भ्ती तणा, पाडोसणना खं प्राण ॥ जेणें महारो जीवन जोलव्यो, लइ नाख्यो नरकनी लाण ॥ वा० ॥ १ ॥ मा यायें मद पाइने, वास्यो पोताने वास ॥ माहारोने वासो एणें टालियो, हणे मुज कीधी निरास ॥ वा० ॥ ३ ॥ गुणवंतना गुण गोपवी, निगुणाशुं मांने गोठ ॥ आप स्वरूप न र्ठलखे, एतो पापनी चलवे पोठ ॥ वा० ॥ ४ ॥ अपूज्य साथें घरे आसकी, एतो पूज्यना पूजे पाय ॥ परम महोदय पामरो, ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ४ ॥ श्रीदादापास पसाठखें, मेंतो कुमतीनो पाड्यो कोट ॥ घरें आखो निज घरधणी, मेंतो शोकनी चूकवी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ उदयरतन वाचक वदे, पूजशे जे प्रजना पाय ॥ ते परमपदें पधारशे, वली संपद लेशे सवाय ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री कुगुरु पचीशी ॥ प्रारंजः ॥

॥ दोहा॥ ॥ श्रीजिनवर प्रणमुं मुदा, बही सद्गुरु आधार॥ कुगुरु तणा बद्दण कहुं, सुणजो सहु नर नार॥ १॥

॥ ढाल ॥ चोपाइनी देशी ॥ मन शुक्कें सुणजो नर नार, रीश म धर जो हृदय मजार ॥ पंच प्रमाद जे नवी ढंक्शे, ते ग्रह केम तरशे तारशे ॥ १ ॥ कंठ खगें नित्य जोजन करे, जे परखोक थकी नवी करे ॥ समी सां जथी संथारशे ॥ ते ग्रह ॥ ३ ॥ दिन जग्या विण दातण करे, मनमां सूगपणुं छादरे ॥ न करे किह्यें नोकारशी ॥ ते० ॥ ४ ॥ पटीयां पाढे समारे केश, नित्य नित्य नवा बनावे वेश ॥ मुख धोवे जोवे छारशी ॥ ते० ॥ ४ ॥ हसे धसे बोले पारसी, न्हाइ धोइ जोवाना रसी ॥ वेश बना वे कस्थाना रसी ॥ ते० ॥ ६ ॥ साकर प्रथ पीये परजात, चावल दाल जमे नित्य जात ॥ सत्वर शाकविण नवी जिमशे ॥ ते० ॥ ७ ॥ उनुं नीर न पीवे कदा, सजल कुंज जरी मूके सदा ॥ जर जरीयें पाणी ठारशे ॥ ते० ॥ ७ ॥ जे नित्य राते दीवो करे, पडदो बांधे खूणे तरे ॥ जहया

चदय न विचारशे ॥ ते०॥ ए॥ सेवे मेथुन राखे दाम, नाम धरावे गौत्म खाम ॥ विषय कषाय जे नवि ठांकरो ॥ तेण॥ १ण॥ धम धम मारग चासे जेह, ईर्या समिति न शोधे तेह ॥ मनमां जबणा निव धारशे ॥ ते० ॥ ११ ॥ दिवर्से जे मुनि जमता जमे, राते सारी पासे रमे ॥ एक जीते एक हारशे ॥ ते० ॥ ११ ॥ जडी बूटीनें जनमोत्तरी, हखवो हाथ करे हित घरी ॥ साप वींठी जे ऊतारशे ॥ ते० ॥ १३ ॥ एक घरें खसा समण दीये, अशनादिक सघला तिहां सीये।।वीजाघर तिण दिन वार हो ॥ तेण ॥ १४ ॥ गाडे चार चडावे वली, विणज व्यापार करे मन रुखी ॥ सावद्य कारज संजारशे ॥ ते०॥ १५॥ पांचे आश्रव सेवे सही, सूधे मारग चाले नहीं ॥ हाथे करी फल विदारशे ॥ ते० ॥ १६ ॥ जाडे बलद चलावे पंथ, नाम धरावे हे निर्मंथ ॥ वाटे बलद पोतें चारशे ॥ तेण॥ १७॥ गांडे वेठा करे विहार, गांडा पालें न चले जार ॥ ईया समिति किसी शोधशे ॥ ते० ॥ १० ॥ उठांने श्रधिकां काटलां, साथे राखे पाट पाटलां ॥ मानव जव टले हारशे ॥ ते० ॥ १ए ॥ क्रूड प्रपंच करे जे घ णा, मनमां कांइ न राखे मणा ॥ पोते पिंक पापें जारहो ॥ ते०॥ १०॥ गुणवंतना अवगुण दाखवे, आप तणा अवगुण छेलवे ॥ आधाकभी जे श्राहारशे ॥ तेण ॥ ११॥ सूरज ऊगे जे करे स्नान, धूप जखेंवे वेसे ध्या न ॥ मिथ्या सुर मनमां धारशे ॥ ते० ॥ ११ ॥ गारवता धरे मनमां सही, नव विध परिश्रह डांमे नहीं ॥ खघु अजा रखे खारशी ॥ तेण॥ १३॥ पांचे पर्वी वोहोरे वेग, जमणवार देखे तिहां रेग ॥ नित्य देव निव जु हारशे ॥ ते० ॥ १४ ॥ धुरथी पंच महाव्रत धरे, सर्व सावसं जचरे ॥ प बी करणी खोटी कारशी॥ तेण॥ १५॥ महोटी पदवीनां जे धणी, खो कमांहे जस प्रजुता घणी॥ धर्मरीति पण ते नही कशी ॥ ते ॥ १६॥ गृहस्य ताणी परें करे व्यापक्षर, वेचे पुस्तक वस्त्र छापार ॥ पार पंच देखाडे इसी ॥ तेण ॥ १७ ॥ चीपीनें थरमां पांगरे, वेष खड्ने तोरा करे ॥ मीठी वाणी निव वोखसी ॥ ते०॥ १० ॥ कालो साप कुगुरुथी जिला, जे एकवार करे मामलो ॥ क्रुगुरु जवो जव छःख देहसी ॥ तेव ॥ १ए ॥ कुगुरु ता चावाए चरित, धर्मविना बोखे विपरीत ॥ कुगुरु त णो संग नहीं गंडशे ॥ तेणा ३०॥ कुगुरु तणा बद्दाण ए अनंत, मु

खथी कहेतां नावे श्रंत ॥ तेहनी संगत निव बांक्शे ॥ तेण ॥ ३१ ॥ श्री श्रानंदिवमल गुरुराज, पंचम श्रारे दीवा श्राज ॥ ते गुरुनुं पामी सुपस्म य, तेजपाल पजणे सुखदाय ॥ ३१ ॥ इति कुगुरु सद्याय ॥

॥ श्रय श्री शांतिनाथनो दशमो जव मेघरथराजानी सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ दशमे जवे श्रीशांतिजी, मेघरथ जीवडो राय ॥ रूडा राजा ॥ पोस हशाखामां एकला, पोसह लीयो मन जाय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य धन्य मेघरय राय जी, जीवदया गुण खाण ॥ धर्मी राजा ॥ धन्यण ॥ १ ॥ ए व्यांकणी ॥ ईशानाधिप इंडजी, वखाखो मेघर्य राय ॥ रूडा राजा ॥ धर्मे चलाञ्यो निव चले, महासुर देवता आय ॥ रूडा राजा ॥ धन्यण ॥ १॥ पारेवुं सींचाणा मुखें अवतरी, पडीयुं पारेवुं खोखा मांहे ॥ रूडा राजा ॥ राख राख मुज राजवी, मुज़ने सींचाणो खाहे ॥ रूडा राजा ॥ धन्य०॥ ॥ ३॥ सींचाणो कहे सुणो राजीया, ए वे महारो आहार॥ रूडा राजा॥ मेघरथ कहे सुए पंखीया, हिंसाथी नरक अवतार ॥ रूडा पंखी॥ धन्य० ॥ ४॥ शरणे व्याव्युं रे पारेवडुं, नहीं ब्रापुं निरधार ॥ रूडा पंखी ॥ मा टी मगावी तुजने दीजं, तेहनुं तुं कर छाहार ॥ रूडा पंखी ॥ धन्यण ॥ ॥ ५॥ माटी खपे मुज एहनी, कां वली ताहरी देह ॥ रूडा राजा॥ जी वदया मेघरथ वसी, सत्य न मेखे घर्मी तेह ॥ ऋडा राजा॥ धन्य०॥॥६॥ काती लेइ पिंड कापीनें, ले मंस तुं सींचाण॥ ऋडा पंखी॥ त्राजु यें तोलावी मुजने दीर्ड, ए पारेवा प्रमाण ॥ रूडा राजा ॥ धन्यव ॥ ॥ ॥ त्राजुर्ज मगावी मेघरथ रायजी, कापी कापी मूके हे मंस ॥ रूडा राजा॥ देवमाया धारण समी, नावे एकण अंश ॥ रूडा राजा ॥ धन्यण॥ ए॥ नाई सुत राणी वल वले, हाथ जाली कहे तेह ॥ घेला राजा ॥ एक पारे वाने कारणे, द्युं कापोठो देह ॥ घेला राजा ॥ धन्यण ॥ ए ॥ महाजन लोक वारे सहू, म करो एवडी वात ॥ रूडा राजा ॥ मेघरथ कहे धर्म फ ल नलां, जीवदेयां मुजघात ॥ रूडा राजा ॥ धन्य ॥ १०॥ त्राजुयें वे ठा राजवी, जे जावे ते खाय ॥ रूडा पंखी ॥ जीवथी पारेवो अधिको ग एयो, धन्य पिता तुज माय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य ।। ११॥ चडते परि णामे राजवी, सुर प्रगट्यो तिहां आप ॥ रूडा राजा ॥ खमावे बहु विधें क री, लली लली लागे हे पाय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य० ॥ ३२ ॥ ईडे प्रशंसा

ताहारी करी, तेहवो तुं हो राय॥ रूडा राजा॥ मेघरथ काया साजी क री, सुर पोहोतो निज गय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य० ॥ १३ ॥ संयम खीयो मेघरथ रायजी, लाल पूरवनुं श्राय ॥ रूडा राजा॥वीशस्थानक विधें से वियां, तीर्थंकर गोत्र वंधाय ॥ रूडा राजा ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ इग्यारमे जवें श्रीशांतीजी, पोहोता सरवारयसिद्ध ॥ रूडा राजा ॥ तेत्रीस सागर त्राज खुं, सुख विखसे सुर रिद्ध ॥ रूडा राजा ॥ धन्य ॥१५ ॥ एक पारेवा दया थकी, वे पदवी पाम्या नारिंद् ॥ रूडा राजा ॥ पांचमा चक्रवर्ति जाणिये, शोलमा शांतिजिएंद् ॥ रूडा राजा ॥ धन्यण ॥ १६ ॥ वारमे जवे श्रीशां तिजी, अचिरा कूलें अवतार ॥ रूडा राजा ॥ दीक्ता लेइने केवल वस्त्रा, पहोता मुगति मोजार ॥ रूडा राजा ॥ धन्यण ॥१७॥ त्रीजेजने शिवसस्व लह्यो, पाम्या अनंतु ज्ञान ॥ रूडा राजा ॥ तीर्थंकरपदवी लही, लाखवर्ष श्रायु जाए ॥ ॥ रूडा राजा ॥ धन्य० ॥ १० ॥ दयायकी नवनिधि होवे, दया ते सुखनी खाए ॥ रूडा राजा ॥ जव अनंतनी ए सगी, दया ते मा ता जाए।। रूडा राजा ॥धन्य०।।१ए॥ गजनवे शशलो राखियो, मेघकुमार गुण जाण ॥ रूडा राजा ॥ श्रेणिकराय सुत सुख खद्यां, पोहोता अनुत्तर विमान ॥ रूडा राजा ॥ धन्य ॥ १०॥ एम जाणी दया पालजो, मनमांहे करुणा आण ॥ रूडा राजा ॥ सयमसुंदर एम वीनवे, दयाथी सुख निर वाण ॥ रूडा राजा ॥ धन्य० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्रथ श्री एलाची कुमरनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ नाम एखापुत्र जाणीये, धनदत्त रोठनो पुत्र ॥ नटवी देखीने मो हीयो, निव राख्युं घरतुं सुत्र ॥ १ ॥ करम न दूटे रे प्राणीया, पूरव ने ह विकार ॥ निजकुल ठंभीरे नट ययो, नाणी शरम लगार ॥ कर्मण ॥ १ ॥ मात पिता कहे पुत्रने, नट निव यश्यें रे जात ॥ पुत्र परणावुं रे पदमिणी, सुख विखसो संघात ॥ कर्मण ॥ ३ ॥ कहेण न मान्युं रे ता ततुं, पूरव कर्म विशेष ॥ नट यश् शिख्यो रे नाचवा, न मटे लख्या रे सेख ॥ कर्मण ॥ ४ ॥ एक पुर खाठ्यो रे नाचवा, जंचो वंश विशेक ॥ तिहां राय जोवाने खावियो, मलीया लोक खनेक ॥ कर्मण ॥ १ ॥ ढोल वजावे रे नहवी, गांवे किन्नर साद ॥ पायतल पूघरा घम घमे, गांजे खं वर नाद ॥ कर्मण ॥ ६ ॥ दोय पग पहेरी रे पावडी, वंश चळ्यो गज गे ख ॥ नोधारो यह नाचतो, खेले नव नवा खेल ॥ कर्मण ॥ ६ ॥ नटवी रंजारे सारिली, नयणे देले रे जाम ॥ जो अंते उरमा ए रहे, जनम सफ ल सुफ ताम ॥ कर्मण ॥ छ ॥ तव तिहां चिंते रे जूपति, खुक्यो नटवीनी नाथ ॥ जो नट पड़े रे नाचतो, तो नटिव करुं मुज हाथ ॥ कर्मण ॥ ए॥ कर्म वहाँ रे हुं नट थयो, नाचुं ढुं निराधार ॥ मन निव माने रे रायनुं, तो कोण करवो विचार ॥ कर्मण ॥ १० ॥ दान न आपे रे जूपति, बटें जाणी ते वात ॥ हुं धन्य वां ढुं हुं रायनुं, राय वं हे मुज घात ॥ कर्मण ॥ ११ ॥ दान खहुं बो हुं रायनुं, तो मुज जीवित सार ॥ एम मनमां हे चिंतवी, यहिन कोशी रे वार ॥ कर्मण ॥ ११ ॥ याखजरी झुक मोदके, पद मही जजी है बार ॥ छो छों कहे हे लेता नथी, धन अन मुनि अवतार ॥ कर्मण ॥ १३ ॥ एम तिहां मुनिवर वोहोरता, नटें पेख्या महाजाग ॥ धिग् धिग् विषया रे जीवने, एम नट पाम्यो वेराग ॥ कर्मण ॥ १४ ॥ सं वर जावे रे केवली, थयो ते कर्म खपाय ॥ केवल महिमा रे सुर करे, ल विधविजय गुण गाय ॥ कर्मण ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ मनके मुनिनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ नमो नमो मनक महामुनि, बालपणे व्रत खीधो रे॥ प्रेम पिताशुं रे परठी छ, मायशुं मोह न कीधो रे ॥ नमोण ॥ १॥ प्ररण चीद प्रत्व धणी, सिक्तंचव जस तातो रे ॥ चोथो पटोधर वीरनो, महीपल मांहे वि ख्यातो रे ॥ नमोण ॥ १ ॥ श्री सिक्तंचव गणधरे, छहेशी निज पुत्रो रे ॥ सथल सिक्तंतथी छक्तरी, दशवैकालिक सूत्रो रे ॥ नमोण ॥ ३ ॥ मास छयं प्रण जाखो, दश अध्ययन रसालो रे ॥ आखसे अंगथी परहरी, धन धन ए मुनि बालो रे ॥ नमोण ॥ ४ ॥ चारित्र षट मसवाडला, पाली पुण्य पवित्रो रे ॥ स्वर्ग समाधें सधावीयो, करी जग जनने मित्रो रे ॥ नमोण ॥ ४ ॥ पुत्र मरण पाम्या पठी, सक्तंचव गणधारो रे ॥ बहु श्रुत छःख मनमां धरे, तेम नयणे जलधारो रे ॥ नमोण ॥ ६ ॥ प्रज हमे बहु पिडवोहिया, समसंवेगीया साध रे ॥ अमें आंसु निव दीठडां, हम नयणें निरावाध रे ॥ ॥ नमोण ॥ ७ ॥ अमने ए मुनि मनकलो, सुत संबंधि मलीयो रे ॥ वीणसे अरथ कह्यां थकां, पण केणे निव कलीयो रे ॥ नमोण ॥ ७ ॥ श्रु कहीयें संसारमां, ए एहवी स्थिति दीसे रे ॥ तन

दीने मन उद्घसे, जोतां हियड्छं दींसे रें ॥ नमों ॥ ए ॥ खिंध कहे ज वियंण तुमें, म करो मोंह विकारों रे ॥ तो तुमें मनक तणी परें, पामो सद्गति सारों रे ॥ नमो० ॥ र० ॥ इति मनक मुनीनी सद्याय ॥ अविवार ॥

॥ व्यातमराम संयुन्ने तुंतो जूवे जरम जुखाने ॥ जूवे जरम जुखाने, तूंतो जुठे जरम दुखाने ॥ आण्॥ ए आंकणी ॥ किसकिमाइ किसके जोइ किसके खोग खुगाइबी ॥ तुं न किसीका को नहीं तेरा, आपो आप सहाइ ॥ आतमण ॥ १॥ चारदिनोका सबहे मेखा, थिर कोइ न रहाइ नी ॥ इटवारे ज्युं इनिया सवहीं, मिलि मिलि खाइ जाइ॥ खा०॥ श प्त मेंदिर मेडी महेल चणावे, जालिवंध जरुखा जी ॥ जंगस पाउं पसा रकें पडना, धरमा कतु न घोला ॥ खाण ॥ ३॥ पघडी खूंव इजार छुप द्या, जामा जरकसी वागा जी ॥ साज सवि इहां ग्रांन चर्लेगा, धागाविनु तनु नागा ॥ आ०॥ ४॥ सहस्सई। जोडी लखनी जोडी, अरव खर वकुं घ्याया जी ॥ तृष्णा सोन पितता साया, फरि फरि ढूंढे माया ॥ आ०॥ य॥ चूवा चंदन फूख फूखेंखें, करता है खुसवोइ जी ॥ इंस जहे तव गिरे जमीपर, तन वगदोइ होइ ॥ आण्या ६ ॥ या संसार सरा हिमांड्यो हे, घरघर खंखचारासी जी ॥ नामकरम घर सवहीं चूंणे है, जीव वटाखवासी ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ खोही मांस वनीया है गारा, पहरहाड सगाइ जी ॥ ऊपर खेपन चमडी खाइ, श्रोतंडुवार देखाइ॥ श्राण॥ ण॥ श्रायुकरम से घरका जाडा, दिन दिनका करि खेला जी ॥ महस्रिथ पु ग्यां पखक न राखे, ऐसा वडां छादेखा ॥ छा। ॥ ए॥ सांज सवेर छावेर न जाने, निगने धूप अरु वरखा जी ॥ न गिने नेह मुखाजा किसका, आयु सवोक्नं सरिखा ॥ आ०॥ ४०॥ जीव वटाऊ के फिर होवे, कर्म बनजारा संगी जी ॥ जाइ खगाज गेह बनावे, प्रीति बनावे चंगी ॥ खा०॥ ११॥ जवलग घनमें आप वसेहें, तवलग प्रीति वनावो जी॥ मुख्या पिछे तुं गा ढ जहोंगे, जावे नीर वहावो ॥ खाण ॥ १२ ॥ जिस घर खंदर खाइ चढा है, सो घर नाही तेरा जी ॥ ऐसेसे घर वहुत वनाए, राह चलत ज्युं देरा॥ आ०॥ १३॥ जिस घरकुं जग होड चलाहे, तिसकी चित्त न आ नी जी ॥ निव निव फिर माया जोडी, तोडी प्रीत पुरानी ॥ आण ॥१४॥

जे आये ते सब जावेगे, जीव सबे जगबासी जी॥ अपनी बुटी कमाई के बिनुं, जीउके संग न जासी॥ आण्॥ १५॥ यह हे जीव सदा अवि नासी, मर मर जाय शरीरा जी॥ इसकी चिंता कबु न करनी, हुइ अप ने धर्मधीरा ॥ त्राण् ॥ १६ ॥ सहस खावसुं जुद्ध जुजाबल, खडतहे जग एकेखे जी ॥ ब्रह्मा विष्णु महासुर दानव, काल सबे संकेखे ॥ आए ॥१९॥ वाडी यह संसार बन्या है, काल तिहां है माली जी ॥ काचे पाके चून सहे फल, लगे ज्युं दरखत माली ॥ आण ॥ १०॥ तन धन जोबनका मतवाला, गिणत किसीकुं नाहीं जी ॥ बादशाह बत्रपति त्रूपति, मोत गले जवांही ॥ आ०॥ १ए॥ नातो गोती सज्जन संबंधी, सब स्वारयमें बूडे जी ॥ स्वारथ विण मूके दरखत ज्युं, देख पंखेरा जडे ॥ आ० ॥१०॥ पवन खरूपी काया श्रंदर, हंस खीयाहे वासा जी॥ पख पख श्रायु घटत हे जैसे, पाणीमांहे पतासा॥ आण्॥ ११॥ मुरख करी करी मेरी मेरी, परसंगत जुःख पावे जी॥ ममता ठोडी सहेज सुख पावे, जो समता घर खावे || खा<sup>0</sup> || ११ || तनपंजर बीच जीव पखेर, ऊडत ऊडत खाया जी ॥ आवत जावत कीसी न इनकी, खोज कहु नव पाया ॥ आणाश्रा मोखत बोखत तन श्रंदर वसी, चेतन चिन्ह दिखावे जी॥ ज्युं बाजीगर काठ पुतरीयां, नव नव जात नचावे ॥ आण ॥ २४॥ काया पाटण चे तन राजा, मनकोटवाख बेठाया जी ॥ पंच ठगोसुं एका कर कर, सब पा टण मुसि खाया ॥ त्रा०॥ १५॥ नवा नवा तनजामा पहेरी, नव नव घाट घटे हे जी॥ तीन क्रीं हे तीन अवस्था, चोथे क्रीं करे हे ॥ आ ॥ १६ ॥ तेराहे सो कबु न जावे, तुं आपणां ना खोवे जी ॥ बिगड्या न या विमाणां थाशे, तुं मूरख कहा रोवे ॥ आण ॥ १९॥ जला बुरा तुज कबु करनेका, जो कबु तुंही करेगा जी॥ पंथ बीच होयगा सो संबख, तेर्इ संग चलेगा ॥ त्रा० ॥ १० ॥ मोरी ज्युं श्रंगुल श्रटकाइ, चकरी श्रा वे जावे जी ॥ मोरी तूटत आत न चकरी, ना आवे ना जावे ॥ आए ॥ ॥ श्रूष ॥ यह करतां हुं यह में कीया, यह में सही करुंगा जी॥ मेरे मो त खगीहे खारे, गणे निह ज्यूं गूंगा ॥ आ०॥ ३०॥ आवत जावत सास उसासा, करत हे कोन अन्यासा जी ॥ जानेका कह अचरन ना ही, रहणेका हे तमासा ॥ व्याण ॥ ३१ ॥ इसकाया पायाका खाहा, सु

कृत कारज कीजे जी ॥ राज कहे उपदेश बत्रीसी; सदग्रह शीख सुणी जे ॥ आ॰ ॥ ३१ ॥ इति श्री उपदेश बत्रीसीनी सद्याय संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीवीरविजयजीकृत गृहनेमीजीनी सद्याय प्रारंजः ॥

।। वाह्यावाह्या उत्तरदिशिना वाय जो।।ए देशी।। रहनेमि अंबर विण राज्य देखि जो, मदनोदय मोह्या मुनि चित्त गवेषि जो, कहे सुंदरी सुं दर मेखा संसारमां जो ॥१॥ संसारे मेखा आवे शे काज जो, चीर धरी क हे राजुख तुमे मुनि राजजो, आज किस्युं संजारो मेखा वीसखा जो॥शा वीसरे नही रागीनें पूरव प्रीत जो, प्रीत करी रहे घूर ए मुरखरीत जो, चतुरशुं चित्त मेलावो चतुरनें सांजरे जो ॥ ३॥ सांजरे पण व्यमशुं तुम स्यो मेखाप जो, दीयर जोजाइपणानी जगमां छाप जो, तेमां स्यो चित्त मेखी फोगट रागनो जो ॥ ४॥ फोकट रागे रोतां तुम्हे घरमांहि जो, त जि तुमने मुज जाई गया वनमांहि जो, अम्हे तुम्ह घरे नित वात वीशामे आवता जो ॥५॥ आवता तो हुं देती आदरमान जो, प्रीतम खघु बंधव मुज जाइसमान जो, कंतवियोगें तुमशुं वात विसामती जो ॥ ६॥ वी-सांमा वनिताने बह्नज केरा जो, अण परणी कन्याने कंत घणेरा जो, ए क पखो जे राग ते धरवो निव घटे जो ॥ ७ ॥ निव धरे सतीयो जे नाम धरावे जो, वीजो वर वरवा इहा निव जावे जो, न फरे पंचनी साखे जे तिखक धस्त्रों जो ॥ जा तिखक धरे ते तो सामान्य ठराय जो, मंगख वर ते कर मेलापक थाय जो, माय पढ़ी वोलावे कन्या सासरे जो ॥ ए॥ सा सरियें कुंवारी जमवा जाय जो, वस्तु सामान्य विशेषे लइ समवाय जो, करमेलावा पेलां मनमेला करे जो ॥ १०॥ मेला करवा अमें तुम घेर व्यावंता जो, जूषण चीवर मेवाफल खावंता जो, तुमे खेतां व्यमने यइ आश्या मोटकी जो॥ ११॥ मोटी आश्या शी यइ तुम दिलमांहि जो, देवर जाणी हुं खेती उछांहि जो, ससरानुं घर छहि न धरी शंका अमे नो ॥ ११ ॥ अमे जाएयुं पतिविण राजुल उसीआली जो, एहने परणी सुखन्नर प्रीतडी पाखी जो, दंपती दीका खेशुं जोवनमां नही जो ॥१३॥ न्ही उत्तीयाखी हुं जगमां कहेवाणी जो, त्राख जगतना राजानी हुं राणी जो, जूतल सरगे गवाणी प्रजूचरणे रही जो ॥ १४॥ रही चरणे तो सु ख संसार वगाणी जो, चंपकवरणी तुज काया सोसाणी जो, तप जप क

ष्ट्री करवुं ते ब्रुट्धापणे जो ॥ १५ ॥ वृद्धापणे मुनिने नवि श्राये विहार जो, थिरवासे एक ग्रामे रहें छाणगार जो, जे जे कारज साधवं ते योवन वर्षे जो ॥ १६ ॥ जोवनवयं जगमगतो तुम हम योग जो, चालो घर ज इ विखसीयें ख़ुखजोग जो, वात बनी एकांते गुफामां पुएयथी जो ॥१७॥ पुष्ये दीका खीधी प्रजनी पास जो, संयमधी सुर मुगती तणा सुखवास जो, वीरुआं विषफल खावा इहा सी करों जो ॥ रहा। सीकरो तो पास प्रज अणगार जो, उपदेशे घर ढंकी थशे मुनिच्यार जो, ते जब मोक् सु मीनें किम जह घरे वश्या जो ॥ १ए॥ घरे वश्या पण मुनि दीवा तप क रता जो, पश्चात्ताप करी फरी संयम घरता जो, परिशाटन करी परमात म पदवी वस्त्रा जो ॥१०॥वरी पदवी पण जुक्त जोगी यह तेह जो, तुम जपर अमने पूरवनो नेह जो, अधुराने दुःखकर संजम साधन विधि जो ॥ ११॥ विधियें व्रत धरी यावचा कुमार जो, सिधगिरि सीधा साथे सा धु हजार जो, वीरनी वारे श्रयमंता मुगति जसे जो ॥ ११॥ जसे खरा पण बाखपणामां जोगी जो, वात न जाणे सा संसारिक जोगी जो, जुग त जोगी यई छंते संयम साधशुं जो ॥ १३॥ साधशुं छंते संयम ते स वि खोदुं जो, जरापणानुं दुःख संसारे मोदुं जो, वत जांगीने जीव्या ते नरकें गया जो ॥ १४॥ गया नरकें ते जेणे फरी, वत नवि. धरीयां जो, नागे परिणामे संयम श्राचरीयां जो, चारित्रें चित्त ठरसे इहा पूरणे जो ॥ १५ ॥ इहा पूरण कोइ काले निव याने जो, स्वर्भ तणां सुख वार अनं ती पावे जो, जव जय पामी पंकित दीका निव तजे जो ॥ १६ ॥ निव त जे तो पूरवधर किम चूक्या जो, रहि घरवासे तप जप वेशज मूक्या जो, अरिहावात एकांते सासन नवि कहे जो ॥ १९ ॥ कहे एकांतें ब्रह्मचरज जिनवरिया जो, वत तजी पूरवधर निगोदें पडिया जो, विष खातां संसा रे कूण सुखिया थया जो ॥ २०॥ थया जिनेसर सुख विलसी संसारे जो, केवल पामी पढ़ी जगतने तारे जो, दीक्षा खेशुं आपणे सुखलीला करी जो।। १ए॥ करी ह्या संजम जिन ह्याणा सिरधारो जो, चलचित्त करीने चरणतणुं फल हारो जो, वमन जखंतां श्वानपरें वांठा करो जो ॥ ३०॥ कस्बो अमने तुमे श्वान बरोबर साचो जो, तो तुमग्रुं हवे राग ते धरवो काचो जो, खागों तमाचो शिकानो मुंजने घणो जो ॥ ३१ ॥ मुंजने घणो वे दीयिरयानो राग जो, तेणे कहुं अगंधक अंगकूलना नाग जो, अगनी पढ़े पण विष वमी युं चूसे बही जो ॥ ३१ ॥ चूले नहीं तिरजंच पशु वि स्यात जो, तेथी सूंमो हुं नर क्त्री जात जो, तुं गुरु माता वात किहां करसो बहीं जो ॥ ३३ ॥ करशो नहीं पण जाणे जिनवर ग्यानी जो, ग्या नी आगल वात न जगमां वानी जो, प्रञु पासे आलोयण लेइ निरमल युं जो ॥ ३४ ॥ निरमल यावा जइशुं प्रजुनी पासे जो, मिल्लामि छुकड़ करी तुमशुं शुज वासे जो, कूप पढ़तां तुमे कर फाली राखियो जो ॥३५॥ राखे आतम पोतानो मुनिराया जो, स्वामी सहोदर मात शिवाना जाया जो, रहेनेभी संयमे ठरीया इम सांजली जो ॥३६॥ सांजली जइ प्रजुच रणे सीस नमावी जो, आलोयण लेइ जज्जल जावना जावी जो, केवल पामी शिवपदवी वरिया सुखे जो ॥३९॥ सुखे रहि घरमां सय वरस ते च्यार जो, एक वरस ठम्मस्या राजूल नार जो, एक विहूणां पांचसें वरस ज केवली जो ॥३०॥ केवली अइने विचस्त्रां देश विदेश जो, बहुजन ता स्या देई वर उपदेश जो, शिवसुख सञ्चायें पोढ्या अगुरु लघुगुणे जो ॥३ए॥ गुणेकरी दोइ गाया सुणजो सयणा जो, एक एक गाथा अंतर वेहुनां वयणा जो, श्रीशुजवीरविवेकी नित्य वंदन करे जो ॥ ४०॥ इति ॥

श्रथ हीत शिक्तोपदेश सद्याय ॥
॥ प्रथम प्रण्मुं सरसतीपाय, श्राठी वाणी यो मुजमाय ॥ तुम प्रसादे सजाय जाणुं, देशतणुं फल हियहें धरुं ॥ १ ॥ चतुर चोमासुं जाड़व मास, सहु संघकेरी पूरे श्राश ॥ वर्ष दिवस दिन त्रण्से साठ, तेमांथी काढ्या श्रादहंते श्राठ ॥ १ ॥ श्रमंतकोटि हुवा केवली, तिणे पर्यूपण कीधा वली ॥ पर्व वडो पर्यूषण तणो, दान पुष्य हुए श्रतिघणो ॥३॥ येलां तेलांने उप वास, श्राठांइ कोइ पच्चले मास ॥ पोशा पिकमणां जावे करो, जव जव पातिक दूरे हरो ॥ ४ ॥ देहरे जइनें वांदो देव, साधु तणी नित करजो सेव ॥ चैत्यवंदन करजो चित्त लाय, तेथी पाप खेरु रे श्राय ॥ ५ ॥ सत रजेदी जित्र पूजा करो, धूप दीप लेइ श्रागल घरो ॥ केसर चंदन श्रमर कपूर, प्रतिमा पूजो उगते श्रूर ॥६ ॥ जणो स्नात्र मंगल श्रारती, कल्प सूत्र वांचे तिहां यती ॥ जल्लर तणो हुउ जमकार, वाजां वाजे श्रनेक प्रकार ॥ ९ ॥ करो ग्रह श्रागल ग्रंहली, गावे नारी मन हियहे धरी ॥ सू

त्र तणा श्रक्तर सांजलो, वेर विरोध सिव दूरे हरो ॥ 0 ॥ जणो जक्तामर गणो नवकार, श्रजियसंतो गणजो त्रण वार ॥ इरिया विह्या तस्त्रजत री, खोगस उज्जीयगरे जणजो खरी ॥ ए ॥ पर्यूषणमां पाखे हरी, रोग शोग तस जाये फरी ॥ पर्यूषणमां पाखे शिख, तस घर होवे बहुजी जीख ॥ १० ॥ पर्यूषणमां दीजें दान, तसघर होवे नवे निधान ॥ श्रावक धर्म वडो संसार, पहवुं जाणी करजो नरनार ॥ ११ ॥ श्रावक धर्मश्री पूरण शेठ, स्वयंपद पोहता मुक्ति ठेठ ॥ ए धर्म कीधो वीर वर्ळमान, जिणे प्रज दीधा वरसी दान ॥ ११ ॥ सद्याय जणतां ए फल सोय, शेत्रंजय यात्र तणां फल होय ॥ श्राबु श्रष्टापद गिरनार, शेत्रंजे जह करो जूहार ॥ १३॥ नंदीसर सीमंधर स्वामि, श्रडी दिपमां उत्तम ठाम ॥ सुदर्शन शेठे काउ सग्ग कियो, शूजी फीटी सिंहासन हुयो ॥ १४॥ चोवीश जिणवर थाप्या रूप, वंदन श्राठ्या मोटा त्रूप ॥ महिमा सागर ग्रहिर गंजीर, निर्मल शीख गंगानुं नीर ॥ १५ ॥ तपगडमांहें गौतम खामि, शीख सुधर्मा श्रृखिजड नाम ॥ श्रीविजयाणंद सूरिश्वर राय, तसुपय जगवल्लज ग्रण गाय ॥ १६॥ ॥ श्रय श्री श्राठमदनी सल्लाय प्रारंजः ॥

॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥ मदआठ महा मुनि वारियें, जे ड्रगतिना दातारो रे ॥ श्रीवीर जिणेश्वर उपदेस्या, जालें सोहम गण धारो रे ॥ मद० ॥ १॥ हांजी जातिनो मद पहेलो कह्यो, पूर्वें हरिकेसियें कीधो रे ॥ चंमाल तणे कुलें उपनो, तपथी सिव कारज सीधो रे ॥ मद० ॥ १ ॥ हांजी कुलमद बीजो दालियो, मिरयच जवे कीधो आणी रे ॥ कोडा कोडी सागर जवमां जम्या, मद म धरो एम मन जाणी रे॥ मद० ॥ १॥ हांजी बलमदथी छल पामिया, श्रेणिक वसुजूति जीवो रे ॥ इत्रव नरक तणां जह जोगव्यां, मुख पाडतां नित रीवो रे ॥ मद० ॥ ४ ॥ सन तकुमार नरेसरू, सुर आगख रूप वलाण्यो रे ॥ रोम रोम काया विगडी गई, मद चोथानो ए टाणो रे ॥ मद०॥ थ॥ मुनिवर संयम पालतां, तपनो मद मनमांहे आव्यो रे ॥ थया कूरगडु क्षीराजिया, पाम्या तपनो अंतरा यो रे ॥ मद० ॥ ६॥ हांजी देश दशारणनो धणी, राय दशार्णजड अनि मानी रे ॥ इंडनी क्रिड देखी बूजिया, संसार तजी थया क्रानी रे ॥ मद० ॥ ९ ॥ हांजी शुक्षिजडे विद्यानो कस्त्रो, मद सातमो जे इखदाई

रे ॥ श्रुत पूरण अर्थ न पामिया, जुवो मानतणी अधिकाई रे ॥ मदण॥ ॥ ण ॥ रायसुजूम षटखंमनो धणी, खाजनो मद कीधो अपारो रे ॥ हय गय रथ सब सायर गढ्युं, गयो सातमी नरक मजारो रे ॥ मदण॥ ए॥ इम तन धन योवन राजनो, म धरो मनमां अहंकारो रे ॥ एह अधिर असत्य सिव कारमूं, विणशे क्षणमां बहुवारो रे ॥ मदण॥ १०॥ मद आठ निवारो व्रतधारीया, पाखो संयम सुखकारी रे॥ कहे मानविजय ते पामीया, अविचल पदवी नरनारी रे॥ मदण॥ ११॥

॥ अय श्रीमद्यशोविजयजीकृत शिखामण्नी सद्याय॥

॥ हमचडीनी देशीमां ॥ चड्या पड्यानो अंतर समजी, सम परिणामे रिहेयें।। थोडो पण जिहां गुण देखीजें, तिहां खतिहि गहगहियें रे॥ खो को जोलविया मत जूलो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अंतर मुहूरत अंबे गुण वुही, अंतर मुहूरत हाणी ॥ चडवुं पडवुं तिहांथी मुनिने, ते गति किण ही न जाणी रे ॥ लोव।।१॥ वाह्य कप्टथी उंचुं चढवुं, तेतो जडता जामा ॥ संयम श्रेणी शिखर चढावे, श्रंतरंग परिणामा रे ॥ लोण ॥ ३ ॥ तिहां निमित्त हे वाहिर करिया, ते जो सूत्रे साची ॥ नहितो दुःख दायक पग साहमुं, मोर जुवे जिम नाची रे ॥ खो०॥ ४॥ पासहादिक सरखे वे वे, जुनं कारण दाखे ॥ इम विष पाणी खप नवि करता, मीनां पाणी चाखे रे ॥ खो० ॥ ५ ॥ परिचित्त घरनी जीका खेवे, न करे ते समुदाणी ॥ वसति दोष न तजे क्रीतादिक, जिन आणा मन आणी रे ॥ लोण॥ ॥६॥ वस्र पात्र दूषण निव टाले, करे पतितनो संगो ॥ कलह वैरनी वात उदीरे, मन मान्यो तिहां रंगो रे ॥ खो०॥ छ॥ हीणो निज परिवार टलावे, आप कष्ट वहु दाखी ॥ चढियो तेहनें किए परे कहिये, सूत्र न ही जिहां शाखी रे ॥ लोण ॥ जा गणी उत्तर गुणनी हाणी, सूत्र किया मां पंगु ॥ इःख सहेशे जिम उपदेशमाले, बोख्यो मथुरा पंगु रे ॥ लो० ॥ ए॥ एक मूल कारण चिंतवतां, आवे मोद्धं हासुं ॥ पंच महावत्त कि हां उचिरियां, सेव्युं कुण्नुं पासुं रे ॥ खो०॥ १०॥ पहिला बत जे जूठ उ चिरियां, तेतो नाव्या लेखे॥ वली फरीने इवे ते उचिरियां, पंच लोक जेम देखे रे ॥ खो० ॥११॥ मुनिने तो सघखुं साचवबुं, वात घटे निव कूडी ॥ शुद्ध परूपकनीतो जे जे, यतना ते पण रूडी रे ॥ लोण ॥ ११ ॥ पोहला मूल गुणे जो हीणो, फीरी दिका ते खेवे॥ चरण अंश होय ते तप वेदे. ज्यम गारव सेवे रे ॥ खोण ।।१३॥ एइ बुं जाष्य कह्यं व्यवहारे, तेतो मर्म न जाए।। अधिकाइ बाहिर देखाडी, मत वाखो मत तोए रे ॥ खोणारु॥। कहे ते शुद्ध कथक छाजानी, जपि घणेरी धारे॥ दिविध बाल ते मारग लोपी, जांख्युं श्रंग श्राचारे रे ॥ लोण ॥ १५॥ पासक्वादिक जाति न त जियें, तो किम उंचा चढियें ॥ ज्ञानाधिक आणायें रहियें, ते साथे निव विदयें रे ॥ खो०॥ १६॥ पासछो पण तेहने किहेयें, जे बत खेइ विराधे॥ ध्रुरथकी जेणे व्रत निव खीधां, तेतो मारग साधे रे॥ खोण॥ १७॥ सर्व शुद्धि विण पण व्रतयतना, शुद्ध कथक ते ठाजे॥ इहा योगी छाप हीन ता, कहेतो ते निव खाजे रे ॥ खो० ॥ १० ॥ कुसुमपुरे एक शेठ तणे घर, हेठे रहियो संवेगी ॥ जपरे एक संवर ग्रण ही णो, पण ग्रणनिधि ग्रण रं गीरे ॥ खोण ॥ १ए॥ संवेगी कहे जपरं जे हे, ते महामोकलो पापी ॥ ग्रण रंगी कहे जे व्रत पाले, तस कीरति जग व्यापी रे ॥ लोग ॥ २०॥ संवे गीना बाह्य कष्टयी, यया लोक बहु रागी।। कोइक शुद्ध कथकना पण मति, जेहनी क्वानें खागीरे॥ खोण॥ ११॥ चोमासु पूरी बेहु विचरि या, तिहां आव्या एक नाणी॥ बिहुमां अष्टप अधिक जन कुणना, पूछे इस बहु प्राणी रे ॥ लोण ॥ २२ ॥ ज्ञानी कहे संवेगी निया, करी घणा जव ते रखरो ॥ गुद्ध कथक वहेलो शिवसुखमां, पाप पखाली जलरो रे॥ लो। १३॥ सुणी एइवुं बहुजन समज्या, जावमार्ग रूचि जागी ॥ ए उपदेश पदे सवि जोयो, जो तुमें गुणना रागी रे ॥ खो० ॥ २४ ॥ शुद्धा चारी कलिमांहे विरला, गुद्ध कथक पण थोडा ॥ इन्नाचारी बहुला दी हो, जाणे वांका घोडा रे ॥ लो० ॥ १५ ॥ पासलादिकमां पण संयम, था नक कह्युं कोइ ही णुं ॥ शुद्ध प्ररूपक वयणे सासन, किह्यें नहोय खी णुं रे ॥ लोव ॥ १६ ॥ जिन विण अवतुं चरण न करियें, होय तेतो जरूरि यें ॥ नवो मार्ग जन आगे जांखी, कहो किणि परें निस्तरियें रें ॥ लोग ॥ १९ ॥ संयम ठाण विचारी जोतां, जो न खहे निज साखें ॥ तो जुटुं बोलीने डुर्मति, शुं साधे गुण पाखे ॥ लोण ॥ २०॥ संयम विण संयत ता थापे, पाप श्रमण ते जाख्यो ॥ उत्तराध्ययने सरख खंजावें, शुरू प्ररू पक दाख्यो रे ॥ लो० ॥ १ए॥ सुविहित गन्न किरियानो घोरी, श्रीहरिज़िक

कहाय ॥ एह जाव धरतो ते कारण, मुज मन तेह सुहाय रे ॥ खोण ॥ ।। ३० ॥ शुद्ध द्रव्य संयत ते इणिपरें, जाव चरण पण पावे ॥ प्रवचन व चन प्रजावक तेंहनां, सुरपति पण ग्रण गावे रे ॥ खोण ॥ ३१ ॥ शुद्ध क थक वचने जे चाले, मूल उत्तर गुण धारी ॥ वचम क्रमांदिक रंगे लीना, ते मुनिनी विलिहारी रे ॥ लो० ॥ ३१ ॥ पूजनीक न्यानी नाणाधिक, संयत चरण विलासें।। एके नहि जेहने विहुं माही, किम जझ्ये तस पा सें रे ॥ खोण ॥ ३३ ॥ जिम जिम प्रवचन काने जीखे, तेम संवेग तरंगी॥ एक व्यावश्यक वचन विचारी, होजो ज्ञानना रंगी रे ॥ खो० ॥ ३४॥ ज्ञा नाधिकमां जे गुण दृषे, कष्ट करे अजिमाने॥ प्राये गंठी लगे नवि आञ्या, ते खूता अज्ञाने रे ॥ खो० ॥ ३५ ॥ तेहनी कष्ट किया अनुमोदे, जन्मा र्ग थिर थाय ॥ तेहथी छुरगतिनां छुःख लहियें, पंचाशक कहिवाय रे ॥ लो॰ ॥३६॥ छुल गण संघ तणी ते लङ्जा, आपठंद ते टाले॥ पाप नीरू गुरु आणाकारी, जिन मारग अजुआले रे ॥ लोव ॥ ३७॥ ज्ञानाधिक नी दीका लेखे, करे तस वयणे परखी । वीजानी घोडशकें जाखी, होली नृप रिक्कि सरखी रे ॥ लोण ॥३ण। ज्ञानाधिकनो विनय विराधी, श्री जि नवर छुहवाय ॥ विनय जेद समजे ते किंकर, ज्ञानवंतनो थाय रे ॥ क्षोण ॥ ३ए॥ ते माटे ज्ञानाधिक वयणे, रहि किया जे करशे ॥ अध्यातम प रिएति परिपाकें, ते जनसायर तरशे रे ॥ लोण ॥ ४० ॥ वाचकयशविजय इम दाखी, शीख सर्वने साची ॥ पण परिणमसें तेइतणे मन, जेहनी म ति निव काची रे ॥ लो० ॥ ४१ ॥ इति शिखामण्नी सञ्चाय ॥

॥ अथ वैराग्य सद्याय प्रारंजः॥

॥ ए संसार असार हे रे जीवडा, वूजे विरखों कोय: ॥ ए संसार तजी गया रे जीवडा, ते नर सुखीया होय ॥ चतुरनर चेतो रे चित्तमांही ॥ ॥ १॥ ए आंकणी ॥ मान अणी जलविंछ्यो रे जीवडा, जेहवो संध्या नो राग ॥ इणिपरे चंचल आंजलुं रे जीवडा, जागी सकेतो जाग ॥ च० ॥ १ ॥ धन धन रामा कांइ करे रे जीवडा, कारमो एह संसार ॥ सोवन मय नव मृंगरी रे जीवडा, नंदे तजी निरधार ॥ च० ॥ ३ ॥ माता मयग लनी परे रे जीवडा, मन्मथ थयो रे अपार ॥ नरक निगोदमां जायशो रे जीवडा, तेहवो जाणी संसार ॥ च० ॥ ४ ॥ यौवन वय वइ जाशे रे जी

वडा, घरढपणानी वार ॥ खूणे घाट्यो खाटलो रे जीवडा, कोइ न पूछे सार ॥ च० ॥ थ ॥ छंग गट्युं ने माथुं फरतुं रे जीवडा, फाफरी हुये देष्ट ॥ सगांसणीजा इम जणे रे जीवडा, कोसो करावे वेठ ॥ च० ॥ ६ ॥ मगध देशनो राजियो रे जीवडा, श्रेणिक नामें नरेस ॥ कठिंपजर कोणिकें करी रे जीवडा, सातवेरी सुवेस ॥ च० ॥ आ दिसर खंगज उपना रे जीवडा, जरत बाहूबल जाइ ॥ मांहो मांहि फूफिया रे जीवडा, ए संसारनी सगाइ ॥ च० ॥ ए ॥ परमेश्वर नित पूजियें रे जीवडा, नित्य जियें नवकार ॥ सुगुरु शिलामण मन धरो रे जीवडा, जिम पामो जव पार ॥ च० ॥ ए ॥ खरिहंत निश्चदिन ध्याइयें रे जीवडा, पुगे मनना कोड ॥ पं ितत शियल विजय तणो रे जीवडा, शिष्य कहे कर जोड ॥ च० ॥ १० ॥

॥ श्रथ श्रीपरमक्रपालजीकृत चलगतीवेलनी सद्याय प्रारंजः॥
॥ वर्द्धमान जिन वीनवुं, साहिब साहस धीरोजी॥ तुम दिरसण विण कुं जम्यो, चिहुंगतिमां वह वीरोजी ॥१॥ प्रज नरकतणां छल दोहिलां, में सद्यां काल श्रनंतो जी॥ सोर कियां निव को सुणे, एक विना जगवंतो जी॥ प्रण ॥ १॥ पाप करीनें प्राणीयो, पोहोतो नरक मजारो जी॥ कि ण कुजाषा सांजली, नयण श्रवण छलकारो जी॥ प्रण॥ ३॥ सीतल योनें ऊपजे, रहवे वधते ठामो जी॥ जानुं प्रमाणे रुधिरना, कीचकद्यां बहु तामो जी॥ प्रण॥ ४॥ तव मनमांहें चिंतवे, जाञ्चें किणि देशे ना सो जी॥ परवश पहियो प्राणीयो, करतो कोडी विलासो जी॥ प्रण॥ ॥ ५॥ मंद्र न त्यां सूरज न त्यां, घोरघटा श्रंधकारो जी॥ श्रानक श्रति श्रसहामणा, फरस जिस्यो खुरधारो जी॥ प्रण॥ ६॥ नवो नरकमां जप जे, जाणे श्रसुर तिवारो जी॥ कोप करी श्रावे तिहां, हाथ धत्यां हिंथ यारो जी॥ प्रण॥ ॥ ॥ किरय कतरणी देहना, करतां लंको लंक जी॥ रीव श्रतीव करे बहु, पामे छल प्रचंको जी॥ प्रण॥ ण॥

॥ ढाल बीजी ॥ वैरागी ययो ॥ ए देशी ॥ ॥ जांजे काया जांजतो रे, मारे फेंचामांय ॥ जंधे माथे अगनी देश रे, जंचा बांधे पायो रे ॥१॥ जिनजी सांजलो ॥ कडुआ करम विपाको रे॥जीणा वैतरणी तटिनीतणां रे, जलमां नाखे पास ॥ करीय कुहाडो तरुपरे रे, ठेदे अधिक ठलासो रे ॥ जिण्॥ १॥ जंचा जोयण पांचसें रे, जठाले श्राकाश ॥ स्वानरूपे करहे तिहां रे, मृग जिम पाढे पास रे ॥ जिणा ३ ॥ पनरे जे दे सुर मिखी रे, करवत दीये रे कपाछ ॥ श्रारोपि शूखी शिरे रे, जांजे जिम तरु माखो रे ॥ जिण् ॥ ४ ॥ वोले ताता तेलमां रे, तली करी काढे ताम ॥ वली जोजरमां केपवे रे, विरुष्ट्या तास विरामो रे ॥ जिणा ४ ॥ खास उतारे तेहनी रे, श्रामीष दीये श्राहार ॥ बहु श्ररहाट ते पा हता रे, तन विच घाले खारो रे ॥ जिण् ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग मारु ॥

॥ तापकारी ते जूमीका रे, वनसुशीतख जाए॥ आवी वेसे तरु डां हड़े रे, पडतां जांजे प्राए॥ र॥ चतुर म राचजो रे, विरुष्ठा विषय विखा स ॥ च०॥ सुख थोडां छुख वहुखां जेह्थी रे, खहीये नरकनिवास॥ च०॥ श॥ कुंजीमांहे पाक करी तस देहना रे, तिखिजम घाणि माहिं॥ पीखिने रस काढे तेहना रे, मिहर न आवे कांहिं ॥ च०॥ ३॥ नाठा जाए त्रीजी नरकखो रे, मन धरतां तपज्ञांत ॥ पठी परमाधरमी सुर मि खे रे, जेहवा कालकृतांत ॥ च०॥ ४॥ खाल जतारे तेहनी खंतछुं रे, खार जरें तस देह ॥ पूरानी पेरें ते तिहां टखवखे रे, मेहेर न आवे केह ॥ च०॥ ४॥ दांतां विच दे दस आंगुखी जी, फिरि फिरि खागे पाय॥ वेदन सहतां काल थयो घणुं जी, हवे ए सहिष्य न जाय॥ च०॥ ६॥ जिहां जाये तिहां ऊठे मारवा रे, कोई न पूठे सार॥ छखनरी रोवे दान से न कस्यो रे, निपट थइ निराधार॥ च०॥ ॥ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रे जीव धरम न कीधलो ॥ ए देशी ॥

॥ परमाधामी सुर कहे, सांजल तुं जाई॥ केहा दोष अमारहा, निज देल कमाई॥ प०॥ १॥ पापकरम कीधां घणां, वहु जीव विणास्या॥ पीड न जाणी परतणी, कूडां मुख जाख्या॥ प०॥ १॥ चोरी लीधां धन पारकां, सेवी परनार॥ आरंज काम कीयां घणां, परिमह नहीं पार॥ प० ॥३॥ निसि जोजन कीधां घणां, वहु जीवसंहार॥ अजह्य अथाणां आ चह्यां,पातिक नही पार॥ प०॥ ४॥ मातिषता ग्रह जेलव्या, कीधा को ध अपार॥ मान माया लोज मन धर्ह्यां, मितहीण गमार॥ प०॥ ४॥ ॥ हाल पांचमी॥

॥ एम कहीं सुरवेदनाए, चलावे उदीरे तेहितो ॥ सिलाकंटाला वज्र

तणा ए, तिहां पढ़ांडे सोहितो ॥ १॥ तरसवसें तातो तरू ए, मुखमां घाढ़ों तामतो ॥ अगनिवरणे प्रति ए, आिंगन दो जामतो ॥ १॥ सय खबदन कीडो वहे ए, जीज करे शतखं तो ॥ ए फख निसिजोजन तणा ए, जाणो पास ए दंसतो ॥ ३॥ अति उंनो अति आकरो ए, आणे तातो नीरतो ॥ ते घाढे तस आंखमे ए, कांने जरे कथीरतो ॥ ४॥ का खा अधिक बिहामणा ए, वढी निरधारा प्राण तो ॥ ४॥

॥ ढाख ग्रही ॥

॥ इणिपरें बहु वेदन सही चित्त चेतोरे, वसतो नरकमकार ॥ चित्त० ॥ ज्ञानी विण जाणे न को ॥ चि० ॥ कहेतां नावे पार ॥ चि० ॥ १ ॥ दशहष्टांते दोहिलो ॥ चि० ॥ लीघो नरजवसार ॥ चि० ॥ पाम्यो एले म हारजो ॥ चि० ॥ करज्यो एह विचार ॥ चि० ॥ १ ॥ सूधो संयम आ दरो ॥ चि० ॥ टालो विषयविकार ॥ चि० ॥ पांचे इंडी वसकरो ॥ चि० ॥ जिम होये बुटकबार ॥ चि० ॥ ३ ॥ निडा विकथा परिहरो ॥ चि० ॥ आराधो जिनधर्म ॥ चि० ॥ समिकत रतन हिये धरो ॥ चि० ॥ आरों मि थ्या जर्म ॥ चि० ॥ ४ ॥ वीर जिणंद पसावलें ॥ चि० ॥ अहीपुर नगर मकार ॥ चि० ॥ स्तवन रच्यो रलीयामणो ॥ चि०॥ परमकृपाल उदार ॥ चि० ॥ ४ ॥ इति चलगतीवेलनी सद्याय समाप्त ॥

॥ अथ श्रीलक्षीरलसूरिकृत अनद्यअनंतकायनी सद्याय ॥

॥ ढाल ॥ जिनशासन रे सूधी सहहणा धरे, सुणी ग्रुहमुख रे नवे तत्व निरता करे ॥ मिथ्या मित रे कपट कदायह परिहरे, सही पाले रे ते नर समिकत मन खरे ॥ त्रुटका। मनखरे समिकत ग्रुद्ध पाले, टाले दोष दया परो।।धुर पंच श्राणुव्रत त्रण ग्रुण वत, च्यार शिक्ता वत धरो॥ इम देशिवर ति कियानिरित, करो जिवयण मन रुली।।दाखवी नियग्रण परह केरा, दोष मम काढो वली॥१।।ढाल॥मम काढो रे लोजी नर कूडो करो, जाणी सावय रे श्रुज्जक्यबावीसे परिहरो॥ वड पींपलरे पीपरीने कत्रुंबरो ॥छंबर फल रे रखे तुमे जक्तण करो ॥त्रुटक ॥ रखे जक्तणकरो माखण, मय मधु श्रामिष तणुं॥विष हिम करहा छांनी परहा, दोष मूल माटी घणुं॥परिहरो सज्जन रयणिजोजन, प्रथम दूरगित बारणुं॥ममकरो च्यालु श्रुति श्रमुहं,रविछ दयविण पारणुं॥श।।ढाल॥श्राथाणुं रे श्रनंतकाय सिव निमीयें, काचुंगोरस रे मांहे कठोल निव जिमीयें॥ वली वेंगण रे तुष्ठफल सिव हंकीये, छाप ण्युं रे त्रत लीधुं निव खंकीयें॥ जुटक॥ निव खंकीये सिव नीसलेइ, देइ फल वतनंगनुं ॥ अज्ञातफल बहुवीज नक्तण, चितत रस हुये जेहतुं॥ संवरत्राणी त्रजस्यजाणी, तजो ए वाबीश ए॥ गुरुवयण विगते विलय प्रीठो, अनंतकाय वत्रीश ए॥ ३॥ ढा़ल ॥ अनंती रे कंदजाति जाणो सहु, जस नक्षारे पातिक वोख्या वे वहु । कचूरं रे ह्लदर नीली आ जु वखी, वजसूरण रे कंदवेहु कुमली फ़्ली॥ त्रुटक ॥ जै फली अ कुमली वीज पाखे, चाखे चतुर न छांवली॥ छाखू पिंमालू थेग छुहर, शतावरी खसणकली,॥ गाजर मूला गस्रो गिरणी, विरहाली टंकवहुलो, पहुंक सू रण घोख बीली, मोथनीली सांजलो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ वंश करेलां रे कुंपल कुअला तस्तणा, श्रंकूरारे खोढा ते जल पोयणा ॥ कुंत्रारी रे जमरवृक्त नी ठालडी, जे कहियें रे खोके अमृत वेलडी ॥ त्रुटक ॥ वेलडी केरा तंलु ताजा, सिसोडाने खरसूत्र्या, जूइंफोडी बत्राकार जाणो, नीलफूल ते सवि ज्ञा ॥ वत्रीस खोक प्रसिद्ध बोख्या, खङ्मीरत्रसूरी इमकहे ॥ परिहरे हो वहु दोप जाणी, प्राणी ते शिव सुख खहे ॥ ५ ॥ इति ॥ अनक् अनंणा ॥ अथ श्रीन्यायशिवलठीकृत असर्काइ वारकनी सञ्चाय प्रारंज॥

॥ ढाख चोपाइनी ॥ पत्रयणदेवी समरी सात, कि हुंगुं सधुरी सासनतात ॥ धर्म आसातन वर्जिकरो, पुष्ण खजानो पोते जरो ॥ १ ॥ आसातन क हिंगें मिध्यात, तस वरजन समकित अवदात ॥ आतातन करवा सनकरे, द्रार्धजन दृख पोते वरे ॥ १ ॥ अपिनत्रता आसातन मूल, तेह जुं घर कृतु वंती प्रतिकृख ॥ ते कृतुवंति राखो दूर, जो तुमें वांठो सुख जरपूर ॥ ३ ॥ दर्शन पूजा अनुक्रमें घटे, चारे साते दिवसें मटें ॥ परसासनपण इम स इहे, चारे सुद्ध होये ते कहे ॥ ४ ॥ पहेंछेदिन चंघाखणी कही, तीजेदिन त्रह्मचातिनी सही ॥ त्रीजेदिन धोवण समजाण, चोये गुद्धहोये गुणला ण ॥ ५ ॥ कृतुवंती करे घरनुं काम, खांमण पीसण रांधण ठाम ॥ ते अझें प्रतिखाज्या सुणी, सक्ति सघली पोते हणी ॥ ६॥ तेहज अञ्च जक्तीदिक जिमे, तेणे पापे धन दूरेगमे ॥ अञ्चलाद न होये खबलेश, सुजकरणी जा ये परदेश ॥ ९ ॥ पापड वही केरादिक खाद, कृतुवंती संगतिथी खाद ॥ सृक्षणजूकणनें सापणि, परजवें ते थाये पापणि ॥ ७ ॥ कृतुवंति घरे पा

णी जरे, ते पाणी देहरासरे चडे ॥ बोधवीज निव पामे किमें, आसातन थी बहुजव जमे ॥ए॥ असफाइमां जिमवा धसे, विचे बेसीने मनमां हसे ॥ पोतसवे अजडावी जिमे, तेणे पापे अर्गति जुःखखमे ॥ १० ॥ सामा यक पडिकमणुं ध्यान, असफाईयें निव सूफे दान ॥ असफाईयें जो पुरुष आजडे, तिणे करसे रोगादिक नडे ॥ ११ ॥ रुतुवंती एक जिनवरनमी, तेणे करमे ते बहुजव जमी ॥ चंगावाणी चई ते वखी, जिन आसातन तेह ने फली ॥ ११ ॥ एमजाणी चोखाई जजो, अवधि आसातन दूरे तजो ॥ जिनसासन किरिया अनुसरो, जेम जवसायर हेखां तरो ॥ १३ ॥ अऊखु सेवा विधिसार ॥ अनुष्ठान निजशिक अपार॥ अव्यादिक दूषण परिहरो, पक्पातपण तेहनो करो ॥ १४॥ धन्य पुरुषने होयविधि जोग, विधिपक्तारा धक सिवजोग ॥ विधि बहुमानी धन्य जे नरा, तिमविधि पक्त अदूस्सग खरा ॥ १५ ॥ आसणसिक्ति ते होवे जीव, विधिपरिणामी होये तसपीव ॥ अविधि आसातन जे परिहरे, न्याये शिववाडी तस वरे ॥ १६ ॥ इति ॥ अविधि आसातन जे परिहरे, न्याये शिववाडी तस वरे ॥ १६ ॥ इति ॥ अविधि आसातन जे परिहरे, न्याये शिववाडी तस वरे ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली॥ रुषजनोवंश रयणायरू॥ए देशी॥ सदगुरु एहवा सेवि ये, जे संयम गुण राता रे॥ निजसम जगजन जाणता, वीरवचनने ध्या ता रे॥ र॥ सदगुरु एहवा सेविये॥ ए खांकणी॥ चार कषायने परिहरे, साचूं सुजनित जाषें रे॥ सजस वंत ख्रिकंचना, संनिधि कांट्रं न राखे रे ॥ स०॥ १॥ खाणिय जोजन सूजतूं, साहमीनें देश जूंजे रे॥ कलह क था स्विपरिहरे, श्रुत सद्याय प्रयुंजे रे॥ स०॥ ३॥ कंटक गाम नगर त णा, सम सुख जुल ख्रहिखासे रे॥ निरजय हृदय सदाकरे, बहुविध तप सुविलासे रे॥ स०॥ ४॥ मेह मेदिनी परें सिव सहे, काउस्सगों परि तापो रे॥ खिमय परीसह उद्धरे, जाति मरण जुय व्यापो रे॥ स०॥ ॥ ए॥ करे कम वचन सुसंयता, अध्यातम गुणलीना रे॥ विषयविज्ञति न ख्रजिलके, सूत्र अरथ रस पीना रे॥ स०॥ ६॥ एह कुशील न भ्रम कहे, जेहची परजन रूपे रे॥ जातिमदादिक परिहरी, धरमध्यान विज्ञ्षे रे॥स०॥आ द्याप रहे व्रतधर्ममां, परने धर्ममां थापे रे॥ सर्व कुशील ख क्षण ह्यजी, बंधन जवतणा कापे रे॥स०॥६॥ ख्रध्यने कह्या गुण घणा, दश वैकालिक दशमे रे॥कंचन परें तेह परखीयें, एकालें पण विषमें रे॥स०॥०॥ ॥ ढाख बीजी ॥ चोपाइनी देशी ॥

ा। उत्तराध्ययने कह्या ते तणो, मारग ते हवे जवियण छुणो ॥ हिंसा श्रिलय श्रदत श्रवंज, ग्रांने वली परियह आरंज ॥१०॥ धूप पुष्प वासित घरचित्र, मनें न वंग्ने परम पवित्र ॥ जिहां रहेतां इंडिय सविकार, काम हेतु होवे ते निवार ॥ ११ ॥ श्री पशु पंकक वर्जित ताम, प्रामुक वासकरे श्रिताम ॥ घर न करे न करावे कदा, त्रस थावर वध जिहां ग्ने सदा ॥ ११ ॥ श्रव्र पान न पचावे पचे, पचतुं देखी निव मन रूचे ॥ धान नीर पृथवी तृण्पात, निश्चित जीवतणो जिहां घात ॥ १३ ॥ दीप श्रगनी दीपावें नही, शस्त्र सरव दाहते सही, कंचन तृणसम वडी मनधरे, क्रय विकय कहियें निव करे ॥ १४॥ खरीदार क्रय करतो रह्यो, विकय करतो विद्या ॥ क्रयविकयमां वर्जे जेह, जिह्यजाव निव पाले, तेह ॥ १५॥ क्रयविकयमा बहुली हाणि, जिक्तवृत्ति महागुण खाणि॥ इमजाणी श्रा गम श्रवसरी, मुनि समुदाय करे गोचरी ॥ १६ ॥ रसलालची नकरे गुण वंत, रसत्रश्चें निव जुजें दंत ॥ संयमजीवित रक्ताहेत, संतोषी मुनि जो जन क्षेत ॥ १९ ॥ श्रचेन रचना परजानती, निववंग्ने श्रुजध्यामी यती ॥ करी महात्रत श्राराधना, केवलक्षान खहे श्रुजमना ॥ १० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीसीमंधरिजन त्रिजुवन नाण ॥ ए देशी ॥

॥ मारग साधुतणो हे जावे, दर्शन ज्ञान चारित्रस्वजावे ॥ चरकादिक आचार कुपंथे, पासहादिकना निजयूथें ॥ १ए ॥ आधाकमीदिक जे से वे, कालहाणी मुख पूषण देवे ॥ जिनमारग होडी जवकामी, थापें कुमत कुमारग गामी ॥१०॥ मारग एक अहिंसा रूप, जेहची जतरीयें जवकूप ॥ सर्वयुक्तियी एहज जाणो, एहज सार समय मन आणो ॥ ११ ॥ जर ध अध तीरहा जे प्राणी, त्रस यावर ते न हणे नाणी ॥ एषण दोष राजे हहेशी, कीधुं अन्न न खीये शुजलेशी ॥११॥ आधाकमीदिक अविशुद्ध, अवयव मिश्रित जे हे अशुद्ध ॥ तेपण प्रति दोषची टाले, ए मारगी संय म अजुआले ॥१३॥ हणताने निव मुनि अनुमोदे, कूपादिक न वखाणें मोदें, पुष्थपाप तिहां पूछे कोइ, मौनधरे जिन आगम जोइ ॥ १४॥ पुष्य कहेतो पातक पोषे, पापकहे जनवृत्ति विशोषे, केइजाषे निरदोष आहार, सूंफे अमने इहां अधिकार ॥१५॥ मुगतिकाजें सिव किरीया करतो, पू

रण मारग चाषे निरतो, जवजब वहता जनने जह, द्वीपसमान करे हुः ख वेह ।।। १६ ॥ एह धरम न खहे खड़ानी, विध्य अपंक्ति पंक्ति मा नी ॥ बीज उदक उद्देशिक जंजी, ध्यान धरे असमाधि प्रयंजी ॥ १९ ॥ माठां जक्षण ध्याये पंखी, ढंकादिक जिम आमिष कंखी ॥ विषय प्राप्ति ध्यायेतिम पापी, बहुखारंज परीमह यापी ॥ १८ ॥ विषयतणां सुख वंवे प्राणी, परीमह वंत न ते सुह फाणी॥ ते हिंसाना दोष न दाखे, निजमति कि कि कारण जाखे ॥ १ए ॥ अध्यखावे काणी नावा, तेह समर्थ न तीरंजावा ॥ मिध्यादृष्टि जवजब पढिया, पार न पामे तिम छख निषया ॥ ३० ॥ जेह अतीत अनागत नाणी, वर्तमान तस एक कहाणी ॥ द यामूल समतामय सार, धर्म वे तेहनो परमाधार ॥ ३१ ॥ धर्म खही उप सर्ग निपातें, मुनि न चले जिम गिरि घनवातें ॥ इग्यारमुं अध्ययन सं जारो, बीजे अंगे इम मन धारो ॥ ३१ ॥

॥ ढाख चोथी ॥ इणपुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥

॥ ते मुनीने जामण्डें जड़यें, जे वत किरियापाखे रे ॥ सूधुं जाले जे वखी जगलां, जिनमारग अजुआले रे ॥ '३३ ॥ ते मुनिनें नामण्डें जङ्यें ॥ ए आंकणी ॥ जे सूधी मारग पाले ते, शुक्क कहियें निरधारे रे ॥ बीजो शुक्र कहे जजनायें, कहिनं जाप्य व्यवहारे रे ॥ ते ।। १४॥ दिविधवाल ते शुद्ध न जाखे, जाखे संवेम पाखी रे ॥ ए जजनानो जाव विचारो, गा णांगादिक साखी रे ॥ तेण ॥ देए ॥ कुगुरुवासना पाशपड्याने, निजबस थी जे होडे रे ॥ शुद्धकथक ते गुणमणिजरिया, मार्ग मुगतिने जोडे रे॥ तेण ॥ ३६ ॥ बहुल असंयतनी जे पूजा, ए दसमुं अहेर रे ॥ षष्टिशतकें चाल्युं ठाणांगे, किस सक्तण अधिकेहं रे ॥ तेण॥ ३७ ॥ एहमां पण जि नशासन बखर्थी, जे मुनि पूज चलावे रे।। तेह विशुद्ध कथक बुध जन ना, सुरपतिपणं गुणगावे र ॥ तेण ॥ ३०॥ करतो अति इः करपण पडियो, अगीतार्थ जंजाले रे ॥ शुद्धकथक हीणों पण सुंदर, बोल्युं उपदेशमाले रे॥ तेण॥ ३ए॥ शुक्तप्ररूपक साधु नमी जे, शरण ते तेहनुं की जे रे॥ तासवचन अनुसारे रहीने, चिदानंद फल लीजे रे ॥ तेण ॥ सिरि णयविजय गुरुणं, श्रांसाय मासज्ज सयल कम्मकरं॥ जिल्या गुणगुरुणा णं, साहुण जसं सिंगं ए ए॥ ते०॥ ४१॥ इति श्रीसुगुरुनी सद्याय ॥

॥ श्रा श्रीमेरुविजयजीकृत पृथवी सचितश्रचितनी सद्याय प्रारंज॥
॥ चोपाइनी देशी ॥ प्रथमनमुं सहग्रुरुनुं नाम, जेम मन वांवित सीके काम ॥ प्रथवी सचित श्रचित विचार, ते कहीय सूत्रने श्राधार ॥ १ ॥ श्रात्मापार केन्न जूमिका, श्रंगुल चार श्रचितहोथे तिका ॥ राजमागें श्रंगुल ले पंच, सेरीजिहां सात श्रंगुल संच ॥ १॥ ग्रह्मजूमिकायें दश श्रांगुलां, सलमूत्रवामें पनर ते जलां ॥ चवपद वामे श्रंगुल एकवीस, चूलाश्रध श्रंगुल बत्रीस ॥ ३ ॥ निमाहाहेव बहोतर श्रचित्त, पढी जिमकहे होये संचित्त ॥ ईटवाहे वे हवे ते जोय, एकसो व श्रंगुल श्रचित्तज होय॥ ॥ फा सुक जूमि जाणे ते यति, तेहने पाप न लागे रती ॥ लाखविजय शिष्यमे रुक्हे, श्रीसुगडांग वृत्तिथी लहे ॥ थ। इति प्रथवी सचितश्रचित सद्याय॥ ॥ श्रथ श्री सुमतीहंसकृत करमपचीसीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ ढाल ॥ पेल करमगति प्राणिया, सायर जेम अथाहो रे ॥ अलल र्थ्यगोचर ए सही, इम जाषे जिए नाहो रे ॥ पे०॥ १॥ ब्रह्माविष्णु महे सरा, करता जावे जेहो रे ॥ मारग चूकीया धीर ते, उजाडे पड़्या तेहो रे॥ पे०॥ २॥ एह करम करता सही, मत बीजो मन जाणो रे॥ करम पसायें जोंगवे, रांक छने वली राणो रे ॥ पे० ॥ ३॥ पापपमल संहिपरि हरो, साचो जिनधर्म संचो रे॥ पोषी पोढो म करमनें, जीव जाणी मत' वंचो रे ॥ पे० ॥ ४॥ करमवंसे सुख इख हुवे, खीलालखमी खाहो रे ॥ जलाजला जूपती नड्या, रणहुंताजिम राहो रे ॥ पेण ॥ ४ ॥ करकंतूनें साधवी, परववीयो समसाणो रे ॥ बेहु देशनो राजीयो, इकर करम प्र माणो रे ॥ पेणां६॥ सोल ग्रणगार बनावता, जरतेसर सुविचारो रे॥ तपं जपविण ते पामीया, केवस महल मकारो रे ॥ पे० ॥ ७ ॥ राणा रावणनो कियो, खखमण वीरे संहारो रे ॥ खंक विजिषण जोगवे, करमवडों संसा रो रे ॥ पे॰ ॥ ७॥ अरीसेना अर्कतूल ज्युं, कृष्णेगसी जुजपाणे रे ॥ दाह देखी निजपुर तणों, मरणबहे एकठाणे रे ॥ पे० ॥ ए॥ दढप्रहारी पापी वडी, हत्या कीधी चारो रे ॥ केवलपामी तिणेजवे, पोहोतो मोक मजारो रे ॥ पे० ॥१०॥ शेठ सुता शिरपरिहरी, ईलाची पुत्र रसालो रे ॥ उपसम रस जर पूरियो, मुक्तिगयो ततकालो रे ॥ पेंण ॥ ११ ॥ वंदनश्रीश्रेणिक तणो, नंदीषेण रीषी रायो रे॥ चारित्र शुं चित चूकवी, महीखाशुं मन

खायो रे ॥ पे० ॥ ११ ॥ व्याषाढमू ति महामुनी, मोदकसुं खखचाणो रे ॥ सदग्रह वचनने उंखंगी, नटविद्युं जंमाणों रे॥ पेणा १३॥ दासीमोहे मो हियो। मूंज वडो राजानो रे॥ घरघर जीख जमाडीयो, मत कोई करो ग्र मानो रे॥ पेण ॥१४॥ घणादिवस जोसे वहे, बिल्जिड कांधे वीरो रे ॥ ह रीचंदराजायें आणीयो, नीचतणे घरे नीरो रे ॥ पे० ॥१५॥ साठसहसस्तत सामटा, सगररायना सारो रे॥ नागकुमारे बाखीया, करमतणो परिचारो रे ॥ पे॰ ॥१६॥ तीर्थंकर चक्रवर्ति हरी, जे सुखजोगवे देखे रे॥ साखिज इ सुख जोगवे, ते सहु करम विशेषें रे ॥ पे० ॥१७॥ सींहगुफा वासी मुनी, दोड्यो कोस्या बोले रे॥ रतनकंबल कारण गयो, चोमासे नेपाले रे॥ पे० ॥१०॥ साधु वर्इ चंमकोशीयो, पामी वीरसंयोग रे॥ अणसण बही सूधे मने, विखसे पुरना जोग रे ॥ पे० ॥ १ए॥ अबखा सबलो जाणीने, सू तीकंत विमासी रे ॥ राति मांहि मूकी करी, नखराजा गयो नासी रे ॥ पेणाश्णा सतीय शिरोमणी डौपदी, नामथकी निस्तारो रे ॥ करम वशे तेणे सही, पंच वस्ता जरतारो रे ॥ पेण ॥ ११ ॥ सहस पचीस सेवा करे, सुर खखमी विण पारो रे॥ सुजुमचक्रीस नरकें गयो, ब्रह्मदत्त ए अधिका रो रे ॥पेवा ११॥ धन्य धन्य धनो धीर जे, पगपगरिक विशेषो रे॥ करम पसाय थकी सहे, कयवन्नो वसी देशो रे ॥ पे० ॥ १३ ॥ वस्तुपास तेज पाल जे, करण छने वली जोजो रे ॥ विकम विकम पूरियो, करमतणी ए मोजो रे ॥ पे० ॥ १४॥ संवत सतर तेरोतरे, श्रीसूमतीहंस जवजाय रे॥ करमपचीसी ए जाणी, जाणतां आणंद थाय रे ॥ पे० ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ ऋथ श्रीरूपविजयजीकृत मनथिरकरणनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ मन थिर करकी रे समिकतवासीनें, चपल म करसो रे कुगुरु जपासी नें ॥ए आंकणी ॥समजणकरिनें चित्तमां राखे, संका कंखा वारी॥वितिगि डानें फलनो संसय, परदरसण संगडारी॥दीपक सरिखो रे ज्ञान अज्यासी नें॥मणारे॥ धनुष तीर यदी चक्र धरे जे, वयरी मारण काज॥ अरधंगे जे रमणी राखे, तेहनें नहीं कांइ खाज॥देव न किह्यें रे नारी जपासीनें, पगे निवपिडियें रे कोधनिवासीनें॥तसपय नमतां रे पामसो हांसीनें॥मणाश॥ धनकण कंचण कामनी राता, पापतणा जंगर ॥ मारग खोपी कोपीन पेहेरी, किम लहसे जवपार ॥ परियहसंगी रे रह्या घरमांनीने, विषय प्र

संगी रे खजा गंभीने ॥ मत ग्रह करजो रे जोगविखासीने ॥ मणा रे ॥ गो महीखी श्रजी अवी पय माखण, खरी करजी सुनी दूध, रोकी श्ररंक युत्रर खुरसाणी, पय माखण नही सुद्ध ॥ छरगित पडतार रहेजो साइने, भरम ते कहीयें रे निश्चय लाइने ॥ नामे म जूखो रे जूर्ज तपासीने ॥ मण् ॥ शा चोरी जारि दूर निवारो, मतकरो खोज श्रपार ॥ क्तमा दया मनमां नित थारो, जिम निस्तरीयें संसार ॥ पाप म करजो रे जीव विनासीनें, जुठ न केहेशो रे ग्रुख मनवासीने, सुख जस खिहयें रे धरम जपासिने ॥ मण् ॥ थ ॥ पंचसमिति त्रण ग्रपतिना धोरी, धरम ध्यान धरनारा ॥ श्रुकस ध्यानमां जस मन वरते, ते ग्रह तारणहारा ॥ तसपद पूजो रे सरधा धारीनें, सेवना करजो रे जुमित निवारीनें ॥ सेवो ध्यावो रे परम निराशिनें ॥ मण् ॥ ६ ॥ जिन जत्तमपद पदमनी सेवा, करजो साचे चित्त ॥ रूपवि जय कहे श्रमुजव लीला, घटमां प्रगटे नित्य ॥ तिम नित्य करजो रे क्रान श्रज्यासीने, सम दम धरजो रे, ध्यान ग्रपासीने ॥ शिवसुख वरजो रे चिद्यन रासीने ॥ मण् ॥ १ ॥ इति मनस्थिर करणनी सञ्चाय ॥

॥ अथ श्रीनेम राजूलनो पत्र प्रारंजः ॥ राग सामेरी ॥

॥ स्वस्तिश्री रेवयगिरिवरा, वाहाला नेमजी जीवनप्राण ॥ खेल सखुं होसें करी, राणी राजूल चतुर सुजाण ॥ रा। वहेला घरें आवजो ॥ महारा जीवन यादवराय, वार म लावजो॥में तो लिख्यो होसें लेख, मनमां जा वजो ॥ वली जे होय वेधक जाण, तास संजलावजो ॥ १ ॥ महारा जीवन यादवराय ॥ वेण ॥ ए आंकणी ॥ केम कुशल वरते इहां, वाहाला जपतां प्रज्ञजीनुं नाम॥साहिच सुख शाता तणो, मुज लिखजो लेखताम॥वेलाण ॥ ३ ॥ साव सोवन कागल करं, वाहाला अक्तर रयण रचंत ॥ मणि माणक मोती लेखण जडुं, हुंतो पीयु गुण प्रेमें लखंत ॥ वेहेलाण ॥ ४ ॥ जे तोरणथी पाठा वल्या, तेहने कागल खखुं कई रीत ॥ पण न रहे मन माहरं, मुने साले पूरव प्रीत ॥ वेहेलाण ॥ ४ ॥ दिवस जेम तेम किर निगमुं, मुने रयनी वरष हजार ॥ जो होय मन मलवा तणुं, तो वेहेला करजो सार ॥ वेहेलाण ॥ ६ ॥ नवयोवने पीछ घर नहिं, वसबुं ते इिजन वास ॥ वोले बोले दाखवे, वाहाला जंमा मर्म विमासि ॥ वेहें लाण ॥ ४ ॥ सहुको रमे निज मालिये, वाहाला कामिनी कंत सेहेंज ॥

थर थर धुजे माहारी देहडी, महारी सुनी देखीने सेज ॥ वेहेखाण ॥॥॥ वीसी इशे ते जाणशे, वाहाला विरहनी वेदन पूर ॥ चतुरा चित्तमां सं मजरो, शुं खहे मूरख जूर ॥ वेहेखा०॥ एतंग रंग दिसे जलो, वाहाला न खसे तावड रीठ॥ फाटे पण फीटे नहीं, हूं तो वारी चोल मजीठ॥ व हेला०॥ रूगा उत्तम सज्जन प्रीतडी, जेम जलमां तेल निरधार॥ ग्रांयडी त्रीजा पहोरनी, तेतो वड जेह्वी विस्तार ॥ वेहेखा०॥११॥ द्वरश्रकी गुण सांज्ञा, वाहाला मन मलवाने थाय ॥ वाहालेसर मुज वीनती, ते तो जिहां तिहां कही न जाय ॥ वेण ॥ १२॥ एके मेहली बीजे मखे, वाहला मनमां नही तस नेइ॥ बीधा मूकी जे करे, तेतो आखर आपे वेह॥वे० ॥ १३॥ जे मन तें तेह मिलि रह्या, वाहाला उत्तम उपम तास ॥ जो जो तिल फूलनी प्रीतडी, तेहनी जगमां रही सुवासः॥ वेण ॥ १४॥ खावा पीवा पहिरवा, वाहाखा मन गमता संखगार ॥ जरयोवन पीज घर नहीं, तेह्नो एखें गयो अवतार ॥ वे० ॥ १५ ॥ बाह्यपणे विद्या जणे, जरयीवन जावे जोग ॥ इऊपणे तप आदरे, तेतो अविचल पाले योग ॥ वे०॥ १६॥ कागल जग जलें सरजियो, वाहाला साचो ते मित्र कहाय॥ मननुं डुःख मांकी खखुं, तेतो आंसुडे गिं गिं जाय ॥ वे० ॥ १७॥ क्षेख खाखेणो राजुल लख्यो, वाहाला नेमजी ग्रण अनिराम ॥ अक्तरे अक्तर वांचजो, माहरी कोडा कोड सलाम ॥ वेण ॥ १०॥ नेम राजुख शिवपुरि मह्यां, पूर्गी ते मनकेरी आस ॥ श्री विनयविजय जवजायनी, शिष्य रूप सदा सुखवास ॥ वेहेला० ॥ १ए ॥ इति ॥

॥ त्रय घडपण्नी संद्याय ॥ त्रयवंति सुकुमर सुणो वित्तखाय ॥ ए देशी ॥

॥ घडपण तुं कां आवियो रे, तुज कुण जोये वे वाट ॥ तुं सहुने अखला मणो रे, जेम मांकण जरी खाट रे ॥ घडण ॥ १ ॥ गतिजांजे तुं आवतां रे, जद्यम ऊडीजाय ॥ दांतडला पण खसी पडे रे, खाखपडे मुख मांय रे ॥ घण॥ श बलजांगे आंखो तणो रे, अवणे सुणियो न जाय ॥ तुज आवे अवगुण घणा रे, घवली होये रोमराय रे ॥ घण॥ ३ ॥ केड इः ले गूमा रहे रे, मुखमां सास न माय ॥ गाले पडे करोचली रे, रूप शरीरतं जाय रे ॥ घण॥ ४ ॥ जीजडली पण लड्यडे रे, आण न माने कोय ॥ घरे स हुने अखलामणो रे, सार न पूठे कोय रे ॥ घण॥ थ ॥ दीकरडा नाशि

गया रे, वहुत्रार दीये हे गाल ॥ दीकरी नावे हुकडी रे, सवल पड्यो हे जंजाल रे ॥ घ० ॥६ ॥ काने तो ढांको वली रे, सांजले नहीं त्र्र लगार ॥ व्यांके तो हाया वली रे, एतो देखी नशके लगार रे ॥ घ० ॥ घ॥ छंवरोतो कृंगर श्रयुं रे,पोल श्रद्ध परदेश॥गोलीतो गंगा श्रद्ध रे, तसे जूर्ल जराना वेस रे ॥ घ० ॥ घ ॥ घ ॥ घ हपण वाहाली लापसी रे, घडपण वाहाली जीत, घड पण वाहाली लाकडी रे, जूर्ल घडपणनी रीत रे ॥ घ० ॥ ए॥ घडपण तुं त्रकह्यागरो रे, श्रणतेड्यो मावेस ॥ जोवनीयुं जगवालहो रे, जतन हुं तास करेश रे ॥ घ० ॥ १० ॥ फट फट तुं श्रजागीया रे, योवननो तुं का ल ॥ रूपरंगने जंगीजतो रे, तुंतो महोटो चंगाल रे ॥ घ० ॥ ११ ॥ नीसा से जसासमें रे, ॥ देवनें दीजीयें गाल ॥ घडपण तुं कां सरजीयो रे, ला गो महारे निल्लाड रे ॥ घ० ॥ ११ ॥ घडपण तुं सदावडो रे, हुं तुज करूं रे जुहार ॥ जे में कही हे वातडी रे, जाणजे तास विचार रे ॥ घ० ॥ १३॥ कोई न वंहे तुजने रे, तुंतो इर वसाय ॥ विनय विजय जवज्ञायतुं रे, रूपविजय गुणगाय ॥ घ० ॥ १४ ॥ इति घडपणनी सञ्चाय ॥ श्रथ श्रासहित शिक्कानी सच्चाय प्रारंजः ॥

॥ प्यारीते पियुने इस प्रीठवे, पेखी नजीक प्रयाण रे॥ पंथीयडा, वटा उडा॥त्राजनो वासोरे तुंतो इहां वस्यो,कालनां किहां होशे मेलाण रे॥ राथीयडा वटाउडा ॥चार दिशे रे फरे चोरटा, जीवन सूतो जाग रे॥ पंणा चरणे चारित्र धर्म रायनें, लागी सकेतो लाग रे॥ पंण्॥ वण्॥ ते त्रावे ठे ते छुं तेडा उपरें, वहुकालनुं ताहरे वार रे॥ पंण्॥ वण्॥ ते त्रावे ठे ते छुं तेडा उपरें, सासरवासो सज्य रे॥ पंण्॥ वण्॥ साथ चलंते जग वंतने, जजी सकेतो जज्य रे॥ पंण्॥ वण्॥ आम नगारां वाजे मरणनां, हाथे ते त्रावे साथ रे॥ पंण्॥ वण्॥ साथ चलंते जग वंतने, जजी सकेतो जज्य रे॥ पंण्॥ वण्॥ आम नगारां वाजे मरणनां, हाथे ते त्रावे साथ रे॥ पंणावणाखाशे कुटुंव खुंखारा करी, वाकी ताहरी त्राय रे॥ पंणावणा जो तुं वाले रे तो जाणुं खरो, खोहा जवना खां गरे॥ पंणावणा ६॥ सुख तुं माणे हे धणनी सेजमां, धण ते धूतारी हे धीह रे॥ पंणावणा गरच खाइनें गणिकानी परे, आखर होशे व्यदीह रे॥ पंणावणी ममता वाह्यो रे तुं थइ मोटको, परशुं मांभे हे प्रीत रे॥

पं० ब० आपस्वरूप निव र्जलां अनेक चलां अनीत रे ॥ पं० ब० ॥ उ ॥ जुत जुतमां हैं जाशे जली, दावो रहेशे दाम रे ॥ पं० ब० ॥ बाह्य कु टंब मल्युं हे बहू, पण कोइ नांवे काम रे ॥ पं० ब० ॥ ए॥ चेतन निज पियुने चेतना, वाला बूजवे एम रे ॥ पं ब० ॥ अचेतनसांथे एहवी आ शकी, कहोंने की जें केम रे ॥ पं० ब० ॥ २० ॥ उदय वदे जे अरिहंतना, आशक होशे अतीव रे ॥ पं० ब० ॥ पडशे नहीं जे मोहना पासमां, सु गतें जाशे ते जीव रे ॥ पं० ब० ॥ १८ ॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीसीतासतीनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ गाथा ॥ सरस्वती जगवती जारती, प्रणमी तेइना पाय रे ॥ ॥ सी ताना गुण गाय शुं, जिम मुज आणंद थाय रे ॥ १ ॥

॥ उथलो ॥ आणंद थाये गुणज गातां, जनकराय सुतासही ॥ अयोध्या पति दशरथ नंदन, वरी रामें गहगही ॥१॥ अतिरूप सीता त्रिजग वदीता, तस उपम नही रती ॥ कर्मवसे वनवास पाम्यां, राम सीता दंपती ॥ ३॥

॥ गाथा ॥ लंका गढनो जे रावण धणी, तेढनें दश शीश सोढाय रे ॥

सतीरे सीता तेषे अपहरी, जग सघले तेस कहेवाय रे॥ ४॥

॥ उथले ॥ कहेवाय सीता हरिय रावण, लंपट पण लाव्यो सही ॥ श्री रामे युद्ध करीय हणियो, पाठी लाव्या गहगही ॥ थ।। अयोध्या आवे बहु सुख यावे, हर्ष विषाद अतिवणो॥ लोक अपवाद सुण्यो श्रवणे, सही रामे सीता तणो ॥ ६॥ गाथा॥ सहू मन मांडे चिंतवे, लोकतणी मुख बोकजी॥ तिणें वचने मन इश्वधरे, चिंता अने अती शोकजी ॥ ॥ उ०॥ शोकधरे राजाराम लक्षमण, चिंतवे तेह उपाय ॥ अम बोलजो निकलंक थाये, तो स ही आणंद थाय॥ ७॥ तिण समे सीता हाथ जोडी, राम चरणे शीश नामें वली ॥ रघुनाथ नंदन धीज करावो, जिम पोढोचे मननी रली ॥ ए॥

॥ ढाल ॥ रामसीताने धीज करावे रे, सुरनर बहु जोवाने आवे ॥ आवे इंद्र इंद्राणी जोडी रे, अमरी कुमरी बहुकोडी ॥ १०॥ मिलया तिहां राणो राण रे, नरनारी चतुर सुजाण ॥ महाधीज सीता तिहां मंके रे, देली शूर सुजट सत ढंके ॥ ११॥ कायर नरकेता नासे रे, जइ रह्या गुफावन वासे ॥ त्रणसें हाथनी खाइ खणावे रे, खेइ अगर चंदने जरावे ॥ ११ ॥ मांहे विस्वानर परजाले रे, उपर नामें घृतनी धारे ॥ ज्वाला ते

दशो दिशे जाय रे, सहु आकुलव्याकुल थाय ॥ १३ ॥ तिहां अति दीशे विकराल रे, जाणे जगतो सूरज वाल ॥ वालतो तस्वरनी ते माल रे, जाएं कोपें चढ्यो विकराल ॥ १४॥ तेएं समे सीता इम वोले रे, रुडां वयण अमीरस तोले ॥ राम विना अवर मुज जाइ रे, तिहां की धी अभि सखाइ॥ १५॥ इम सहूकोने संजलावे रे, सीता अभि कुंगमां जं पावे ॥ मुख नवकार गणंती गेंले रे, सीता शीतल जलमां खेले ॥ १६॥ जलना तिहां चाले कलोल रे, जलचर जीव करे रंग्रोल ॥ चक्रवाक सार स तिहां वोले रे, इंस इंस तणी गति खोले ॥ १७॥ तिहां कनक कमल दल शोहे रे, जपर वेठी सीता मनमोहे ॥ अग्नि कुंम थयो पुष्करणी रे, जूनो शील तणी ए करणी ॥ १७॥ जलकीडा करी तटें आवे रे, सुर नर नारी गुण गावे ॥ पांच पुष्प वृष्टि शिरकीधी रे, सीता त्रिज्ञवन हुइ प्रसि कि ॥ १ए॥ सुरनर नारी तिहां नाचे रे, देखी सीताना गुण साचे ॥ देव दानव वाजित्र वाये रे, इंद्रादिक अधिक जमाहे ॥ २०॥ घरघरनां वधा मणां आवे रे, साणक मोतियें थाल जरावे॥ सती सीतानें सर्व वधावे रे, सोहासण मंगल गावे ॥ २१॥ जामंगल शत्रुघन होइ रे, वांधव सीता ना दोइ॥ रूपें अलीज करे गुण याम रे, तुं हे असकुल तिलक समान ॥ ११ ॥ शशि वरसे किम विपधारा रे, गंगाजल न होये खारा ॥ सायर केम जलंघाय रे, मेरु त्राजुवे केम तोलाय॥ १३॥ चिंत्तामणि न होये का चे रे, किम पांगलो नाटक नाचे ॥ कामधेनुं ठाली किम कहिये रे, आ काश मान किम लिहियें ॥ १४ ॥ इंडने घर दारीड नावे रे, पुण्यहीणो ते किम सुख पावे॥ महीप ऐरावण किम जीपेरे, वंश पुत्र विना नव दी पे॥ १५॥ मान सरोवर तेह न शुके रे, सायर मर्यादा निव मूके॥ ध्रुनो तारों कदी निव चाले रे, मंदिर गिरि कवही न हाले ॥ १६॥ जाचो ही रो कहो किम चूरे रे, आकाश खाड कोण पूरे ॥ हरिजड वाचा नवि लोपे रे, कहा मुनि गांल दियेनविकोपें ॥१९॥ वांक नारी जणे किस वेटो रे, सू मने कहा कोण कहे मोटो ॥ सिंहने कुण कहे शियाल रे, नव नंद न होय द्याल ॥ १७॥ सूर्य जग्यो पश्चिम किस पेखो रे, जीना धर्म विना निव लेखो ॥ शेषनाग घरणी केम मुके रे, तो सीता शीयल न चूके ॥ १ए॥ रघुपति कहे रथ बेशीजे रे, अयोध्या पवित्र करीजे॥ सीता कहे नीम ख

गार रे, शिरखोच कियो ततकाख ॥ ३०॥ पाखी संयम खंका धार रे, क री अणसण विकट उदार॥ बारमें देवक्षोके थया खामी रे, सीता इंडनी पदवी पामी ॥ ३१ ॥ शी खें खुख दारी इ जाय रे, शी खें सहु लागे पाय ॥ शीखें सो परिया तारे रे, तेतो त्रिज्ञवनने सणगारे ॥ ३१॥ तपगन्न विजय सेन सूरि राया रे, बोले विमल हर्ख उवजाया ॥ मुनि प्रेमविजय मन जा वे रे, सती सीताना गुण गावे॥ ३३॥ इति सीतानी सद्याय समाप्तः॥ ॥ अथ आत्मशिकानी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ समय संजालो रे आखर चालवुं, संबल क्षेजे साथ होरे ॥ होरे सुण पंथीडा ।।साथी ताहारा रे पिंके परवस्था, ताली लेइ लेइ हाथ होरे॥होरे ।।सुगार।।वाह्लां वोलावी रे वलशे ताहरां, वचमां विषमी हे वाट होरे ॥ होरे ।। विण विसामे रे पंथ जलंघवो, जतरवो नर्कनो घाट होरे।।होरे सुण ॥ श ।। त्याजनो वासो रे इण मंदिर वस्यो, विषयनो मांड्यो व्यापार होरे ॥ होरेण ॥ कालना जतारा रे कहोनें किहां होसे, नही तहनो निरधार होरे ॥ होरेण ॥ ३॥ जिहां तिहां लागे रे जमनो जी जियो, बेसे बहु बे सराण होरे ॥ होरे ० ॥ घरनां जाडां रे विश्व जरवां पडे, नित्य नवलां रह जाण होरे ॥ होरे । ॥ ४॥ मगले मगले रे दाण चूकावतुं, नित्य नवलां मेहलाण होरे ॥ होरेण ॥ परवसपणे रे पंथे चालवुं, नहि कोइ आगें व्हां गा होरे ॥ होरे । ॥ थ। यौवन ससलो रे जरा कूतरी, काल आहेडी कवा ण होरे ॥ होरेण ॥ बाण पूरीने रे पंथे बेसी रह्यो, नहि मेहले निरवाण होरे ॥ होरे ॥ ६ ॥ तुं नथी केहनो रे कोइ नथी ताहरें, छोत लगें एह वें लोक होरे ॥ होरे०॥ परदेशीशुं रे कोण करे प्रीतडी, कां पड्या फंद मां फोक होरे ॥ होरे ।। ।।। वीरा वटाजरे सुण एक वीनती, चास तुं मुक्तिनें पंथ होरे ॥ होरे० ॥ सदग्रह तुजने रे संबल आपशे, जागशे जव नी सह जांति होरे॥ होरेण॥ जा कासीदी करतां रे काल बहु गयो, तो हे नाठ्यो पंथनो पार होरे॥ होरे०॥ जदय कहे अरिहंतने जजो सही, तो तरसो संसार होरे ॥ होरेण ॥ ए ॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथ आतमा ऊपर सद्याय प्रारंजः॥ रसियानी देशी॥ ॥ सुमतिसदा सुकु लिए। वीनवे, सुणि चेतन महाराय सुगुणनर।।कुमति कुनारी दूरे परिहरो, जिम बहो सुखसमुदाय सोजागी।।सुमण।१॥ आवी

रे रंगविवेक घरे प्रजु, करियें के लि अनंग पनोताण। ज्ञान पसंग बिठाह्यो श्रतिज्ञक्षो, वेशीजें तस संग रंगीला ॥ सुण् ॥१॥ निष्टारुचि विहु चामर धारिका, वींजे पुएय सुवाय सदाय ॥ उपसमरस खुसबोइ महमहे, किम निव आवे ते दाय ॥ उवीला ॥सुण।३॥ हृद्य जरूले वेसी होंसशुं, मुजरो बीजे रे सार सखूणा॥ कायापुर पाटणनो तुं धणी, कीजे निजपुर सार सनेही ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ जे तें चोकी करवा नयरनी, थाप्या पांच सुजह म हावल ॥ तेतो कुमति कुनारी शुं मल्या, तेणे लोपी कुलवह करे बल ॥ सुण।। ५।। पंच प्रसादनी मदिरा ठाकथी, न करे नयर संजाल महारा य ॥मन मंत्रीसर जे तें थापियुं, गुंथे तेह जंजाल छहोनिशि ॥ सु॰ ॥६॥ चौवटे चार फरे नित चोरटा, मूसे अति घणुं पुर्ण तणुं धन।। वाहर बुंब खवर निह तेहनी, गजपरे ममकरो निंद महामन ॥सुण ॥॥॥ कपटी का ख अठे वहु रूपियो, डेरु परें फिरे नयर समीपें ॥ जोर जरा यौवन धन अपहरे, साहरीनीपरे नित्य नहींपे॥ सु॰॥ ०॥ वयण सुकोमल सुमति तणा सुणी, जाग्यो चेतनराय रसीको ॥ तेग संवेग यही निज हाथमां, तेड्यो ग्रुद्ध समवाय वसीलो ॥ सुण॥ ए॥ मन मंत्रीसर कबज कीयो घणुं, तव वश आव्या रे पंच महाजड ॥ चारे चोर चिहुं दिशी नाशिया, टाख्यो मोह प्रपंच महाजड ॥ सु० ॥ १० ॥ सुमति सुनारी साथें प्रीतडी, जोर जड़ी जेम खीर अने जल ॥ रंग विलास करे नित नवनवां, जेली हियडानुं हीर हिलिमिल ॥ सु॰ ॥ ११ ॥ इणीपरें चतुर सनेही आतमा, जीं समरसपूर सदाइ॥ अनोपम अविचल आतम सुल लहे, दिन दि न अधिकसनूरे जलाइ ॥सु०॥ ११॥ पंकित विनयविमल कवि राजियो, संवेगी शिरताज जयंकर ॥ धीरविमल पंडित पद पंकजे, सेवक नयजाएँ श्राज सुहंकर ॥सुण।१३॥ पाठांतर गाथा ॥ पंक्ति विनय विमल कविरा यनो, धीरविमल कविराय जयंकर ॥ सेवक विनयी नयविमल कहे,सुम ती शिवसुख थाय सुहंकर ॥सुण॥१३॥ इति आत्महित सद्याय समाप्तः॥ ॥ अर्थ आशातनानी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रीजिनवरने करी प्रणाम, बोधुं चोराशी आशाता नाम॥ श्रीजिन मंदिर जातां सही, आशातनाए टाखी नही ॥१॥ खेल शुकरा मत कलगला, कीधुं लेखुं शीखी कला ॥ मैथुन मज्जन मर्दन करे, जिन जुवने कोइ हैडे धरे ॥ २ ॥ ठाण कापड पापडने वडी, नव जगविये देहरे चडी ॥ शिर कर श्रंग पखाले पाय, विंकणे करी विंकावे वाय ॥ ३॥ ना च्यानख निमार्खा पखी, जानर वत्र ढलावे वली ॥माथे मुग्रट पगे लासडां, धवराव्यां देहरे वावडां ॥४॥ दोरजरे पेहरे चाखडी,नाखी गड गुंबड खास डी ॥ बेशे पगऊपर पगकरी, रांध्युं अन्न अंगीठी करी ॥ ए॥ रगतपित ना ख्या ख्रोघला, नकरे निद्या जुंमाजला ॥नकरे विणिज न रमे जुबटे, निल्ये बस्तु ब्यालट पालटे ॥६॥ खाय तंबोल जली सुंखडी, करे नित्य ते लहुडी वडी ॥ षग चंपावे कलदो करे, दिये सराप के होडज धरे ॥ ७ ॥ नाले प गरज सुये निशंक, जंमकखा ने मारी ढंक ॥ नकरे जोजन नहि फीखणुं, वेणसमारे पारिख पणुं ॥ ए ॥ पढे मंत्र राखे हिश्यारः चोरी करे ने छे तु कार ॥ सचित्र न राखे न दिये गाल, नकरे बालक स्त्रीनी आल ॥ ए॥ नक रे वैंडु नकरे होड, जिनदी हे न करे करजोड ॥ आहपडो न कस्बो मुखको ष, विण उत्तरासंग खागे दोष ॥१०॥ पहेरे थोती शान विणजेह, बेठापग पसारी बेह ॥ नंकरे ठगाने हां चुं वली, दांत न खोतरे खेइ शली॥ ११॥ न करे दातण विकथा वात, नकरे क्रोध वली उत्पात ॥ लीधा शाक नीलां मनरखी, स्त्री संघातें बेठामखी ॥ ११ ॥ कीधो दीवो देहरा यकी, वस्तु वावरीजे देवकी ॥ नखमां निव राखे दीवेख, दीवे निव पूरीजे तेख ॥१३ ॥ आखस मोडे दीखे बहु, आशातना ए जाणे सहु ॥ आशातनाना बहु ला पाप, जे करशे ते लेहशे संताप ॥ १४ ॥ श्रीविजयसेन तणो अधिका र, जिन सेवाथी खहे जवपार ॥ पंक्ति राज विजय इमजणे, श्रीजिनवर ने जाउं न्नामणे ॥ १५ ॥ इति श्राशातनावर्क्जन सद्याय समाप्तः ॥

॥ संसार रे जीव छनंत जवे करी, करे बहुला रे संबंध चिहुंगति फरि फरी ॥ निवराखे रे कोइने तवनिज करधरी, सगाई रे कहा किणिपरे क हिंधें खरी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ कहो खरी किणि परी एह सगाइ, कारमो संबं धए ॥ सिव मृषा माता पिता बहिनी, बंधुतेह प्रबंधए ॥ धरि तरुण घरणी रंगे परणी, त्राण कारण ते नही ॥ मिण कणग मुत्तिछा धन्न धान्यकण, संपदा सब संग्रही ॥१॥ ढाख ॥ एह थावर रे जंगम पातिक दोइ कहा, जेह करतां रे चछगइ छख जीवे सह्या ॥ तेह टाखो रे पातिक दूरे जित्रेश

णा, जिम पामो रे इह परजव सुख छतिघणां ॥ ३॥ त्रुटक ॥ छतिघणां सुख ते खहो जवियण, जैनधर्म करी खरो ॥ परदार परधन परिहरी ति णे, जैनधर्म समाचारो॥ जे मदे माचे रूपराचे, धर्म साचे निव रमे ॥ अं जली जल परि जनम जातो, मूढ ते फख विण्गमे ॥ ४ ॥ ढाल ॥ अध्य यनें रे विष्ठे श्रीजिनघर कहे, शुजडिष्ट रे तेह जाली परे सहहे॥ ते सहही रे तप नियमादिक आदरे, आदरतो रे केवल लहीपण वरे ॥ ॥ त्रुटक ॥ लहीवरे जिनधर्म करतो, हलुअकर्मि जे हुये ॥ पांचमो गणधर स्नामी जंबू, पूरियो इणिपरे कहे ॥ श्रीविजयदेवसूरिंद पटधर, विजयसिंह मु णीसके॥ तस शिष्य वाचक जदय इणिपरें, जपदिशे जबहित करू॥६॥ ॥ अथ प्रमादवर्ज्जन सद्याय ॥ मुनि जन मारग चाषतां ॥ ए देशी ॥ ॥ अजरामर जगको नही, परमाद ते गंको रे ॥ मिथ्या मति मुकी क री, गुण ब्यादर ते मांको रे ॥ १ ॥ शुद्ध धरमनो खप करो, टाछी विषय विकारो रे ॥ चोत्रे अध्यवने कहे, भीवीर एह विचारो रे ॥ शुण ॥ १॥ ए खांकणी ॥ पापकरस करी मेखवे, धनना खख जेह रे ॥ मूरख धन डांमी करी, नरके जमे तेह रे ॥ ग्रु० ॥ ३॥ पंथव जनने पोपवा, करे ते मरण परे पाप रे।। तेंद्रनां फल दोहिलां, सहे एकलो आप रे ॥ ग्रुणा ४॥ खात्र तणे मुखे जिम यहा, एवो चोर अजाए रे ॥ निज करमें छुख देखतां, तेहनो कुण जाण रे ॥ ग्रु०॥५॥ इम जाणी पुण्य की जियें, तेइ थी सुख याय रे ॥ दिनदिन संपद् अनुजवी, वखी सुजस गवाय रे ॥ शुण्॥ ६ ॥ विजय देव गुरु पाटवी, चित्रसिंह मुणिंदो रे॥ शिष्य उदय कहे पुण्यथी, हुए परम आएंदो रे ॥ ग्रु॰ ॥ इति प्रमादवर्क्कन सचाय समाप्तः॥

॥ अथ संयाम सानीनी सद्याय ॥

॥ दोहा ॥ श्रीशंखेश्वर पायनमी, शारद मात पसाय ॥ सोनी श्रीसंत्रा मना, गुणगाय नवनिधि थाय ॥१॥मांक्वगढनो राजिया, ग्यासुदीन पत शाह॥एकदिन वहार खेखवा,चाछो धरी उमाइ॥१॥ साथे सीतेर खांन हे, वोहोतेर उमराव जाए ॥ सोनीपए संयाम हे, तेहनां करं वखाए ॥ ३॥ ॥ ढाल पहेली ॥ राग वेलाउल ॥

॥ मारग माथे कलपवृक्त, जग्यो अतिसार ॥ ते देखी कोइ इष्टजीव, बोख्यो तेणि वार॥ ए आंकणी ॥ १॥ ए आंवाहै वांकिया, सुणो साहिब मेरा॥ जूप कहे तुम दूर करो, राखो मत नेडा ॥ मारगण॥ १॥ वसतो सोनी उचरे, हुं करुं अरदाश ॥ आंबो मुजने शांनकरे, कहोतो जाउं पाश ॥ मा० ॥ ३ ॥ हूकम लेइनें त्यां गयो, दिये आंबाशुं कान ॥ मांभी वात ठांनी कही, आठ्यो ते बुद्धिनिधान ॥ माण्॥ ४॥ सुणो सुलतांन आंबे कही, मुजने एकवात ॥ आवते वर्षजो निव फल्लं, तो करजो मुज घात ॥ माण्॥ थ ॥ ग्यासुदीन जानू कहे, जूठे हो संग्राम ॥ मोंगुं नवो ले रखंडा, यह बकालके काम ॥ माण्॥ ६॥ वलतुं सोनी उच्चरे, न फले जो एह ॥ एने करता ते तमे, मुजने करज्यो तेह ॥माण॥ ।। निजनिज स्थानक सहूवद्युं, सोनी करे जपाय ॥ देव गुरुनी पूजा करे, आंबा पासें जाय ॥ मा० ॥ उ ॥ प्रेमसहित गुंहली करे, समरे गुरु देव ॥ जो मुज ध र्मनी आसता, फलजो नीत मेव ॥ए॥पूर्यवंदित सब फले॥ए आंकणी॥ अनुक्रमें आंबो मोरियो, माली आवी वधावे॥ सर्व आंबा पहेलो फल्यो, सोनी त्यां त्रावे ॥ पुण्॥ १०॥ पुत्र बेसारी हाथियें, कर सोवनथाल॥ श्रांब तरी पतशाहने, मूक्या रे रसाल ॥ पुण्या ११॥ रूमाल पाठो करि पूर्वियो, तुम आंबके तांइ॥ गाजते वाजते हरख्युं, क्या करी बडाइ॥ पुणारशा वलतो सोनी उचरे, वांकिया सहकार ॥ तेणे में पेककसी करी, खाणी हर्ख खपार ॥ पुण्॥ १३॥ ग्यासुद्दीन घोडे चडी, साथे सब परि वार ॥ ए आंबा फूल्या फूल्या, देखी हर्ख अपार ॥ पुण ॥ १४॥ ग्यासुदीन जानु कहे, न फल्याए आम्र ॥ तैरा ए सूधा फल्या, ए धर्मके काम॥ पुण ॥ १५॥ सोनेरी वाघा सबे, पहेराव्या सहु साथ ॥ धनधन तेरी मात कुं, धन्य तेरी जात ॥ पुण ॥ १६॥ केतादिन वोख्या पहे, जगवती सूत्र॥ गोर कने जह सांजले, करे जनम पवित्र ॥ पुण्॥ १७॥ मेलें सोनैयो दिन प्रतें, जग उत्तम नाम ॥ बत्रीस सहस्स शंख्या हुये, की धां धर्मनां काम ॥ पुण् ॥ १७ ॥ सकल वाचक शिरोमणी, जानुचंद कहावे ॥ तासशिष्य जाणुचंद जाणे, सुणे दोलत पावे ॥ पुण् ॥ १ए ॥ इति समाप्तः ॥ ॥ श्रय चेलणानी सद्याय॥

॥ वीर वंदी घरे श्रावतां जी, चेलणा दीठोरे नियंथ ॥ वनमांहि राते काउसग्ग रह्योजी, साधतो मुक्तिनो पंथ ॥१॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतीय शिरोमणि जाण॥ ए श्रांकणी ॥ चेडानी साते सुताजी, श्रेणिक शियक्ष परिमाण ॥ वी० ॥ १ ॥ शीत ठार सबको पडे जी, चेलणा श्रीतम साथ ॥ चारित्रियो चित्तमां वस्यो जी, सोड बाहिर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ फवकी जागी कहे चेलणा जी, केम करतो हशे तेह ॥ कामनीने मन कोण वस्यो जी, श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ श्रंतेजर परजालजो जी, श्रेणिक दीयो रे श्रादेश ॥ जगवंते संशय जांजियो जी, चमकियो चित्त नरेश ॥ बी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पेसतां नगरमकार ॥ ध्वांध तिहां देखी कहे जी, जा जा ग्रंग श्रजय कुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनुं वचन ते पालवाजी, वत लीयो श्रजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामशे जवतणो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति समाप्तः ॥

॥ श्रथ श्रीजयसोमजीकृत शिखामणनी सद्याय ॥

॥ कामनी कहे निजकंतने, सुणो प्रीतम प्यारा ॥ नाह कुनाह न होइ यें, मेरे नयनथी न्यारा॥अवहीं अचानकक्या हूआ, पीयु चालणहारा॥ रहो रहो रंगरसें करी, मन मोहनगारा ॥१॥ सुण सांइं हो अरदास हमा री ॥ मेंतो तेरी हो हुं खिजमतगारी ॥ तुं तो चाखे हो ठोडी निरधारी, में तो तोशुं हो कीनी एक यारी ॥ सु०॥ श। वहुत कालकी प्रीतडी, युं तटकी न त्रोडो ।।कांत्रनारीना सूत ज्युं, त्रूटे तिहां जोडो।। मैरी शीख जली सुणी, क्युं मुह मचकोडो ॥ कंचुकी श्याम जुजंग ज्युं, मुजकुं क्युं क्यों ॥ सु०॥ ॥ ३॥ इमसी तेरे वहुत है, मैरे तुंहिज खाखा ॥ होंस हैयाकी पूर ख्यो, सुणि श्रातम वाव्हा ॥ फिर मोसुं जोइ नही, मत हो मतवाला ॥ संवल वीये विण नहीं चले, होये कोण हवाला॥ सुग्। ४॥ आलम एते दिन किया, दमरी न कमाइ॥ व्याजें खंइ धन वावस्वो, रह्या पूंजी खाइ॥ पह्ने एक पइंसा नहीं, नहीं संवल सखाइ॥ आगल तेरे कारणें, कही सेज वि ढाइ।।सुण। था। ऐसे मुखसें सुंदरी, डुख़्ही तें पाइ।। तें ए कदी विखसी नही, रह्यो आस विलाइ ॥ पोढी रह्यो रे प्रीतमा, मोकुं रयण जगाइ ॥ चतुर सहेलीके वीचमें, मोक्कं लाज लगाइ ॥ सु० ॥६॥ जड़ा जरणी जोग णी, जोई नही वेखा ॥ तेरे घुशमन बहुत है, तुंतो चखे एकीखा॥ वाटें विषम जय धाडिनो, नही सूणि तमेला। कुण मुहूरत बिढुडे के, कब हो शे जेला ॥ सुण।।।।। पीयु कहे सुण सुंदरी, हूंतो घणीई बुलाया ॥ रहणा इक रात्रि होवे नही, करं कोडी उपाया ॥ जेणे जेर जगत कीया, कुण

राणा राया ॥ फिर फुरमान फिरे नहीं, जे उनहीं पठाया ॥ सु० ॥ ठ॥ तम विण इःखमें दीहरा, कहों कैसे जरुंगी॥ तरे विरह वियोगगुं, इःख जार जरुंगी ॥ तेरीगुं तेरीगुं प्रीतमा, निव प्राण धरुंगी ॥ में कुखवंती का मिनी, पठी काठ करुंगी ॥ सु० ॥ त्था शीख करी प्यारी कन्हें, दरहाल ते हाल्या ॥ मंदिर मुलक ठोडी करी, बे खरची चाल्या ॥ वोलावीने दुःख धरी, वली मन वाल्या ॥ केडें सती हुइ कामिनी, नेव नीक्य पाल्या॥ सु० ॥ २० ॥ काया कामिनी जीउ धणी, मत ठर विचारो ॥ तप जप संयम संप्रहो, नर कांइ म हारो ॥ किलकालें जब तेरी है, तब क्यां तुम चारो ॥ राज रंक सब एक है, आगें नहीं कोइ टारो ॥ सु० ॥ ११ ॥ अधिर ए सं सार है, कोण केइनो जाइ ॥ मोहनिंद ठोडी करी, करो सुकृत कमाइ ॥ शीख सुणी जयसोमकी, सीज सुजस जलाइ ॥ शिवसुख केरे कारणे, करो धर्म सस्याइ ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति शीखामणनी सखाय समास ॥

॥ श्रय कार्यापुर पाटणनी सखाय प्रारंजः

॥ कायापुर पाटण रूखडों, पेखों पेखों नव पोख मान रे ॥ इंसराजा रंगे रमें राजीयों रे, मिलयों मिलयों मन परधान रे॥ १॥ काया कारमी ॥ जीव जाणे जे सर्व माई हं, कूडों कूडों कुड़ेंब संघात रे ॥ रात्रे जेम पंखी बेसे एकठां, उड़ी उड़ी जाय प्रजात रे ॥ काण ॥ १ ॥ एक जीवतणी वेख डी, करहला दोय चरंत रे ॥ एक कालोंने बीजों कजलों, दिनदिन वेख घटंत रे ॥ काण ॥ ३ ॥ एक तहवर घनरस चढ़े, एक पड़े पींपल पान रे ॥ चतुरपणे जोजों पारखुं, हीयडें धरजों खरिहंत ध्यान रे ॥ काण ॥ ४ ॥ इणवाटे नथी बेठा वाणीया, वली नथी दाटनुं ठाम रे ॥ एवं जाणी साथे लेजों संबलों, वेगहुं हे मुक्तिनुं गाम रे ॥ माण॥ ५ ॥ खापणों आ तमा बालुडों, सरस जोबन लहे वेश रे ॥ मुक्तिरमणी परणावजों, सहज सुंदर उपदेश रे ॥ माण॥ ६ ॥ इति कायापुर पाटणनी सञ्चाय ॥

॥ अब मांकडनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ मांकडनो चटको दोहिखो, केइने निव लागे सोहिलो रे ॥ मांकड मू ढालो ॥ एतो निर्लक्षिन नही कान, एइने हीयडे नहीं शान रे ॥ मांणाशा एतो पाट पलंगमां आवे, चटको देइ ढानो जावे रे ॥ मांण्॥ राते राणो श्वास फरतो, राजा राणीशी निव करतो रे ॥ मांण्॥ १॥ एतो चरणा चीर ठोड़ावे, नर नारीनी निंद गमावे रे ॥मांण॥ गिरुष्या गुणसागर साध, तेह्नी तुनें राखजो खाज रे ॥ मांण॥ ३॥ वरसाखे थाये मदमातो, सी याखे सुंहालो सातो रे ॥मांण॥ खाटमांहे खल गोत्रज खोटा,सिव सिरखा न्हाना महोटा रे ॥ मांण॥ ४॥ एतो न जूए ठाम कुठाम, एहने पेट ज खाशुं काम रे ॥मांण॥ एतो हरामि हठीली जात, एहने रूडी लाने ठे रात रे ॥ मांण॥ ए ॥ बोही पी थाये रातो खाल, एतो सोड मांहेलो सा ल रे ॥मांण॥ ए जपकारतणी मित आणी, चटको देई सज करे प्राणी रे ॥मांण॥ गुणी हूर्ज तो गुणकरी लेजो, मांकडने दोष म देजो रे॥मांण॥ मांकण जरुष्यच नगरथी आव्यो, एतो राधनपुरमां गवरायो रे ॥ मांण॥ माणक मुनि कहे सुणो सयणा, तुमे जीवनी करजो जयणा रे।।मांण॥॥

॥ अथ होकानी सद्याय ॥ इकर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥ ॥ होको रे होको ग्रुं करो रे, होको ते नरकनुं ग्राम ॥ जीव हणाये छा तिघणा रे, वायुकाय अतिराम ॥ जविक जन, मूको होकानी टेवा। सुख पामो खयमेव ॥ जण ॥ मूकोण ॥ १॥ ए आंकणी ॥ ज्यां लगें होको पीजीयें रे, तिहां लगें जीवविनाश ॥ पाप वंधाये आकरो रे, दया तणी नही आशा ॥ जि ॥ शा जे प्राणी लोको पीये रे, ते पामे बहु छु:ख ॥ एम जाणीने परिहरो रे, पामो बहुद्धं सुख ॥ जण्॥ ३॥ गज लगें धरती वले रे, जीव हणाये अनंत ॥ जे नर होको मेलशे रे, तस मलशे जगर्वत ॥ जण् ॥ ४ ॥ दावानल घणा परजले रे, होकानां फल एह ॥ नरकें जाशे चापडा रे, धर्म न पामे तेह ॥ प्रण ॥ ए ॥ एकेंद्री वेइंद्रीमां रे, फिरे अनंती वार ॥ हेदन जेदन ताडना रे, तिहां बहे छःख अपार ॥ ज॰ ॥ ६ ॥ व्यसनी जे होका तणा रे, तख़प खागे जव आय ॥ वनमां वृक्त वेदी करी रे, श्रक्षि प्रज्वलित कराय॥ जा ॥ १ ॥ तिहां षट काय ना जीवनी रे, हिंसा निरंतर याय ॥ होकानुं जल जिहां ढोलीयें रे, ति हां वहु जीव हणाय ॥ जण्॥ जा पोते पाप पूरण करे रे, अन्यने दे ज पदेश ॥ वसी अनुमोदन पण करे रे, त्रिकरणे थाये जदेश ॥ जण्॥ ए॥ मुख गंधायें पीनारनुं रे, वेसी न शके कोइ पास ॥ जगमां पण रूडुं नही रे, पुख तणो थाय नाश ॥ जण्॥ १०॥ संवत् अहार हहोतरे रे, जज्ज्व स श्रावण मास ॥ वार वृह्स्पति शोजतो रे, पूनमदिब शुज खास ॥ जण

॥ ११ ॥ तपगञ्च मंमन सेहरो रे, दानरतन सूरिराय ॥ महुकरतन शिष्य शोजता रे, ञ्चानंद हरख न माय ॥ ज० ॥ ११ ॥ परता पूरण गिरुञ्चा ध णी रे, शिवरतन तसु शिष्य ॥ होकानां फल इम कह्यां रे, खुशालरतन सुजगीश ॥ ज० ॥ १३ ॥ इति होका फल सद्याय ॥

॥ अथ बादशाह प्रतिबोधन वैराग्य सद्याय ॥

॥ राग काफी हुसेनी ॥ या इनिया फना फुरमाए, आप रहो हुसिया री ॥ माल मुलक सब किसकूं दिखावे, यमकी जह असवारी ॥ र ॥ सां ह्यांके बंदे बे, शिर मत ह्यो बुजगारी ॥ महेर करोगे बंदगी खुदाके, दील याके क्युं प्यारी ॥ सां० ॥ र ॥ ए आंकणी ॥ दोलत ठोड ठोड केइ गये साहेब, केइ केइ गये जीलारी ॥ घसते हाथ गये वीन सरखी, हाम्या ज्युं अ जुआरी ॥ सां० ॥३॥ रोज निमाज फिरावे तसबी, सब सखीयन क्युं मा री ॥ सब हीमनकूं दोई ठाप है, दरद कीयें युं जारी ॥ सां०॥॥ कीटिका वेखून खुदाके, खिखित न है दरबारी ॥ सब हिसाब जब वे पूठेगा, तब होवेगी खुवारी ॥ सां०॥था। खानेकुं शिरकाट बिराना, महिरमान पुकारे ॥ युंबि ज्यस्त होवे सबहनकूं, बूडी ज्यस्त तुंहारी ॥ सां० ॥ ६ ॥ पातसाह श्रीबाबा आदम, सुण चेतन इमारी ॥ शीख जली ए सकलचंदकी, इ मकुं पूना तुंहारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ इति बादशाह प्रतिवोधन सखाय ॥

॥ अथ श्रीप्रतिक्रमण हेतुगर्जित संद्याय प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी, पामी सुग्रह पसाय ॥ हेतुगर्ज पिडक्रमण्बो, करशुं सरस सद्याय ॥ १॥ सहज सिद्ध जिन वचन हे, हेतुहिचने हेतु ॥ देखाडे मन रीजवा, जे हे प्रवचन केतु ॥ १॥ जस गोहें हित उल्लसे, तिहां कहीजें हेतु ॥ रीजे नही बूजे नही, तिहां हुइ हेतु छहेतु ॥ ३॥ हेतु युक्ति समजावीयें, जे होडी सिव धंध ॥ तेहिज हित तुमें जाणजो, छा छपवर्ग संबंध ॥ ४॥

॥ ढाल पहेली ॥ क्षत्रनो वंश रयणायरू ॥ ए देशी ॥

॥ पडिक्रमणं ते आवश्यकं, रूढि सामान्य पयहो रे॥ सामायिक चडवी सहो, वंदन पडिक्रमणहो रे॥ श्रुतरस जिवयां चावजो, रावजो गुरुकुल वासो रे॥ जांखजो सत्य असत्यने, नाखजो हित ए अज्यासो रे ॥ श्रुतरसण ॥ २॥ ए आंकणी॥ काउस्सग्ग ने पच्चकाण हे, एहमां पद श्रिथकारों रे ॥ सावद्य योगथी विग्मवुं, जिनगुण कीर्तन सारों रे ॥श्रुत० ॥ १ ॥ गुणवंतनी प्रतिपत्ति ते, श्रितिक्रम निंदा घणेरी रे ॥ विण चिकि त्सा गुण धारणा, धुरें गुक्ति चारित्र केरी रे ॥ श्रुत० ॥३॥ बीजे दर्शनना श्राचारनी, ज्ञानादिक तणी त्रीजे रे ॥ चोथे श्रुतिचार श्रपनयननी, शेष गुक्ति मंचने लीजें रे ॥ श्रुत० ॥ ४॥ बठे गुक्ति तपना श्राचारनी, वीर्याचारनी सर्वें रे ॥ श्रुत० ॥ ४॥ बठे गुक्ति तपना श्राचारनी, वीश्रुत० ॥ ४॥ श्रुत० ॥ ६॥ मध्यान्ह्यी ग्रुत० ॥ ४॥ श्रुत० ॥ ६॥ मध्यान्ह्यी श्रुत० ॥ ६॥ मध्यान्ह्यी श्रुत० ॥ १॥ श्रुत० ॥ १॥ सफल सकल देव ग्रुह नतें, इति वारे श्रिकारें रे ॥ देव वांदी ग्रुह वांदीयें, वर समासमण ते चारें रे ॥ श्रुत० ॥ ०॥ सिक्ति लोकें पण कार्यनी, नृप सिचवादिक जकें रे॥ ग्रुह सिचवादिक थानकें, नृप जिन सुजस सुगुक्तें रे॥ श्रुत० ॥ ०॥

। विख बीजी।।राग मारुणी।।गिरिमांगिरुष्ठं गिरुष्ठं मेरु गिरिवरू रे ॥ ए देशी।।
।। पढम ऋहिगारें वंष्ठं जावि जिलेसरु रे, वीजे दव जिलेद ॥ त्रीजे रे त्रीजे रे इग चेइय ठवणा जिला रे ॥ र ॥ चोष्ठे नाम जिल तिहु ऋण ठवण जिना नमुं रे, पंचमे ठि तेम ॥ वंष्ठं रे वंष्ठं रे पिह्रसाम जिन केवली रे ॥ श। सत्तम ऋधिकारें सुयनालं वंदीयें रे, ऋहिम शुए सिद्धाण ॥नवमें रेन वमें रे शुइ तिहाहिव वीरनी रे ॥ ३॥ दशमे ठजणंत शुइ वलीय इग्यारमें रे, चार आठ दल दोइ ॥ वंदोरे वंदोरे ऋष्टापद जिन कहा रे ॥ ४॥ वार में सम्यग्द शि सुरनी समरणा रे, ए वारे ऋषिकार ॥ जावो रे जावो रे दे ववांदतां जिन जना रे ॥ ४॥ वांठुं ठुं इहकारी समसुआवको रे, खमासम ण चठ देइ ॥ आवक रे आवक रे, आवक सुजस इस्युं जाले रे ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ साहिवा रंगीला हमारा ॥ ए देशी ॥ ॥हवे आचारनी शुक्ति इहायें, अतिचार जार जरित नत कायें ॥ उद्य मी उपयोग संजालो, संयमी सिव पातक टालो ॥ सबस्सिव देवसिय इ चाइ, प्रतिक्रमण वीजक मन लाइ ॥जद्यणारा ए आंकणी ॥ ज्ञानादिक माहे चारित्र सार, तदाचार शुक्ति अर्थ उदार ॥जद्यणा करेमि कंते इत्या दिक सूत्र, जणी काउस्सग्ग करो पवित्र ॥ उद्यणा १॥ चिंतवो तिहां अ

तिचार ते प्रात, पिंबहिण्यी लागा जे ज्ञात ॥ ज्या ॥ स्यणासण इसा दिक गाया, जावजो तिहां मत होजो थांथा ॥ जया ॥ ३ ॥ इम मन सा चिंतन ग्रह साखें, आलोवा अर्थे ग्रह दाखें ॥ जया ॥ आऊ जणे श्रह गाया अहो, काजस्सग्ग पारी कहे चड़ितसहो ॥ जया ॥ अ ॥ संकासा पिंडलेही बेसे, मुह्पचि तनु पिंडलेहे विशेषे ॥ जया ॥ काजस्सग्ग श्रव धारित अतिचार, आलोवा दिये वंदन सार ॥ जवा ॥ ४ ॥ अवग्रहमांहे रिह जन्नत अंग, आलोप देवसी जे जंग ॥ जया ॥ सबस्सवि देवसिश्र इचाइ, जचरतो ग्रह साखें अमाइ ॥ जया ॥ ६ ॥ मन वचन काय सक ल अतिचार, संग्रहक ए हे सुविचार ॥ जया ॥ इहाकारेण संदिसह जगवन्न, पायित तस मागे तप धन्न ॥ जया ॥ १ ॥ पिंडकमह इति ग्रह पण जांखे, पिंडकमणाच्य पायित्त दाखे ॥ जया ॥ सस्थानकथी जे व हि समण, फिरी आवे ते हे पिंडकमण ॥ जया ॥ निंदा गरहा सोही श्र रण पवित्त, पिरहरणा वारणा नियत्ति ॥ जया ॥ निंदा गरहा सोही श्रह ए पर्याय सुजस सुगरिष्ठ ॥ जवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोषी ॥ प्रथम गोवाला तणे जवें जी ॥ ए देशी ॥
॥ बेसी नवकार कही हवे जी, कहे सामायिक सूत्र ॥ सफल सकल
नवकारथी जी, पिंडकमें समिचित्त ॥ महाजस जावो मनमां रे हेत ॥ १॥
ए आंकणी ॥ चत्तारि मंगल मिथ्यादिकंजी, मंगल अर्थ कहेइ ॥ इष्ठामि
पिंडकमिं इत्यादिकं जी, दिन अतिचार आले । ॥ महाण ॥ १॥ १रियाव
ही सुत्त जणे जी, विजाग आलोयण अष्ठ ॥ तस्स धम्मस्स लगें जणे जी,
शेष विद्युद्धि समञ्चामहाण। ३॥ श्रावक आचरणादिकें जी, नवकार सामा
यिक सूत्र ॥ इष्ठामि पिंडकमीं अवक आचरणादिकें जी, नवकार सामा
यिक सूत्र ॥ इष्ठामि पिंडकमीं अही कही को, श्राद्ध सूत्र सुपिवत्त ॥ म
हाण।। ॥ अतिचार जार निवृत्तिथी जी, हलु हो इ उठेश। अजु ि हे मिला
दिकाजी, सूत्रें निःशेष कहेइ ॥ महाण ॥ १॥ अवरा समासण वंदणं जी,
तीन समावे र देइ ॥ पंचादिक मुनि जो हुए जी, काउस्सम्मार्थ फिरेइ
॥ महाण ॥ ६ ॥ त्रुमि पुंजी अवग्रह वही जी, पाठे पगे निसरेइ ॥ आय
रिय उवकाय जले जणे जी, अजिनय सुजस कहेइ ॥ महाण ॥ ९ ॥
॥ ढाल पांचमी ॥ रिसयानी देशी ॥

॥ आक्षोग्रण पिकमणे अगुरु जे, चारित्रादिक अतिचार ॥ चतुरनर

॥ काजसग्ग तेहनी शुद्धि श्रर्थैं कह्यो, पहिलो चारित्र शुद्धिकार ॥ १॥ चतुरनर ॥ परीक्तक हो तो हेतुने परखजों, हरखजो हिश्रडखामांहि ॥ ॥ च ॥ निरखो रचना सद्गुरु केरडी, वरषो सरस उठाही ॥ च ॥ प री। ।। १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र कषाय विरह्यी ग्रुद्ध होये, जास कषा य उद्य ॥ च॰ ॥ वंढुं पुष्फ परि निःफ़ख तेइ वुं, मानुं चरण समय ॥च० ॥ परी ॥ ३॥ तेणे कपाय तणा उपशम जणी, आयरिय उवजाय इ त्यादि ॥च० ॥ गायात्रय जाणी काजस्सग्ग करो, लोगस्स दोइ अप्रमादि ॥ च॰ ॥ परी॰ ॥४॥ करेमि जंते इत्यादि त्रय कदी, चारित्रनो ए उस्सग्ग ॥ च० ॥ सामायिक त्रय पाठ ते जाणीयें, श्रादि मध्यांत सुहसग्ग ॥ च० ॥ परी ॥ ॥ ।। पारी जिल्लोख ने सबलोए कही, दर्शनाचार शुक्ति सह ॥ ॥ च० ॥ एक चजवीसहानो काजस्सग्ग करे, पारी कहे पुरकरवरदीवहु॥ च0 || परी0 || ६ || सुयस्स जगवर्ड कही इग चर्विस हवं, कार्डस्सग्ग करिया रे दंत ॥ च० ॥ सकलाचार फलसिक्त तणी शुइ, सिक्ताणं बुक्ताणं कई महंत ॥ च० ॥ परी० ॥ ।। तिल्लाधिप वीरवंदन रैवत मंगन, श्री ने मि नित तिल्लार ॥ चणा अष्टापद नित करी सुयदेवया, काजस्मग्ग न वकार ॥ च० ॥ परी० ॥ ७ ॥ क्षेत्र देवता कार्यस्यग इम करो, अवग्रह याचन हेत ॥ च० ॥ पंच संगल कही पुंजी संमासग, मुहपत्ति वंदन हेत ॥च०॥ परी० ॥ए॥ इहामो अणुसि कही जाले, स्तुति त्रय अर्थ गंजीर ॥ च० ॥ आङ्गा करणने देवन वंदन, गुरुणादेश शरीर ॥च०॥ परी० ॥१० ॥ दिवसियें गुरु इक शुति जब कहे, पिक्छाइक कहें तीन ॥ चण्।।सा धु श्रावक सहु सार्थे युइ कहे, सुजस उच्चखर खीन ॥ च० ॥ परीणा ११॥ ॥ ढाल ठि ॥ नमस्कार स्वकृत जगन्नाय जेता ॥ श्लोकनी देशीमां ॥ ॥ श्राद्धी सुसाध्वी ते कहे उछाहा, संसार दावानुख तीन गाहा ॥ न संस्कृतें वे अधिकार तास, केही कहे ए कही पूर्व जास ॥ १॥ अवे ती र्थ ए वीरनुं तेणे इर्लें, प्रतिक्रमण निर्विद्य श्रुष्ट तास कर्षे ॥ कही शकस्त व एक जिन स्तवन जाले, कृतांजिल सुण्य अपर वरकनक साथे ॥ १ ॥ नमोईत् थकी देव गुरु जजन एह्, धुरे अंते वली सफलता कर अवेह ॥ यथा नमुहुणं धुरि श्रंत नमो जिणाणं, जिणवंदण इक सक्कह्य पुग पमाणं ॥ ३॥ इवद्धं सुबद्धं तिलोगस्स चार, कारुस्सग्गकर देवसी सु

किकार ॥ पारी कहीय लोगस्स मंगल उपाय, खमासमण दोइ देहीने करे सद्याय ॥ ४ ॥ जाव पोरिसी जूलविधि होइ सद्याय, उत्कृष्ट ते द्वाद शांगी अध्याय ॥ परिहाणिथी जाव नमुकार होइ, सामाचारि वश पंच गाथायलोइ ॥ ५ ॥ कही पडिक्रमणे पंच आचार सोही, तिहां दीसए तिएह छुएहं ण होही ॥ इस्यु पंजणि तप वीर्य आचारशुक्ति, अवश्यें हुइ जो होई जिक । वशुक्ति ॥ ६ ॥ प्रतिक्रमण पचकाण चठविहार मुनिने, यथाशक्ति पचकाण आवक सुमननें ॥ काउस्सग्ग अंतरंग तपनो आचा रे, वली वीर्य नो फोरवे शक्तिसारें ॥ ५ ॥ प्रतिक्रमण पदथी किया कर्चृ कम्मी, जणाइ तिहां प्रतिक्रमण कियाममें ॥ प्रतिक्रमण कर्जा ते साध्या दि कहियें, सुदृष्टि सु उपयुक्त यतमान लहियें ॥ ० ॥ प्रतिक्रमण कर्जा ते साध्या दि कहियें, सुदृष्टि सु उपयुक्त यतमान लहियें ॥ ० ॥ प्रतिक्रमण केम को स्वार्य ते कर्म को पादि जाणो, टले तेह तो सर्व लेखे प्रमाणो ॥ मले जो सुजन संग दृढ रंग प्राणी, फले हो सकल कक्का ये सुजस वाणी ॥ ए ॥

॥ दोल सातमी ॥ जूर्र जूर्र अचरिज अतिन हुं ॥ ए देशी ॥ ॥ देवसी पडिक्रमण विधि कह्यो, कहे हवे राइनो तेह रे॥ इरिय पडि क्रमिय खमासमण्युं, कुसमिण इसमिण जेह रे॥ १॥ चतुरनर हेतुम न जावजो ॥ ए आंकणी ॥ तेह उपशम काउस्सग्ग करो, चार लोगस्स मने पाठ रे ॥ दि हिविपरियास सो उस्सासनो, धी विपरियास शतकाठ रे ॥ चण्॥ श॥ चिइवंदन करिय सञ्चाय मुख, धर्म व्यापार करे ताव रे ॥ जांव पिकक्रमण वेला हुये, चं खमासमण दीये जाव रे ॥ च०॥ ३॥ राइ पडिक्रमण ठाउं इम कही, सबस्सवि राइ कहेइ रे ॥ सक्रवय जणी सामायिक कहि, उस्सग्ग एक चितेइ रे॥ च०॥४॥ बीजे एक दर्शनाचार नो, त्रीज अतिचार चिंत रे ॥ चारित्रनो तिहां एक हेतु हे, अब्प व्यापा र निसि चित्त रे ॥ चण्॥ थारी सिक्तस्तव कही पढे, जाव काजस्सम्ग विहि पुत्र रे।। प्रत्येक काउस्सम्ग पडिक्रमण्यी, अशुद्धनो शोध ए अपुत रे ॥चणा६॥ इहां वीर बमासी तप चिंतवे, हे जीव तुं करी शके तेह रे ॥ न सकुं एगाइ इगुण तीसतां, पंच मासादि पण जेह रे ॥चणाण। एक मास जावतेर ऊंणडो, पढे चडितस मांहि हाणी रे॥ जाव चडिय अंबि ल पोरिसी, नमुकारसी योग जाणी रे॥ च०॥ ए॥ शक्ति तांई चित्त ध री पारीयें, मुह्पत्ती वंदण दाण रे ॥ इहामो अणुति कही तिगशुइ,

थव चिइ वंदण सुह जाण रे ॥ चण ॥ ए ॥ साधु वली श्राककृत श्रीषधो, मागे आदेश जगवन्न रे ॥ बहुवेल संदीसांबु, बहुवेल करं लघुतर अनु मति मन रे ॥ च० ॥ १० ॥ च खसासमण वंदे मुनि अहाइ जोसं ते कहे सहारे ॥ करे रे पडिलेहण जावथी, सुजसमुनि विदित सुग्रणक रे ॥ ११ ॥ ॥ ढाल आठमी ॥ सरसंती मुक रे मातादियो बहुमान रे ॥ ए देशी॥ ॥ हवे पिक्य रे चडदिस दिन सुधि पिङक्रने, पिडक्रमतां रे नित्य न पर्व अतिक्रमे ॥ यह शोध्युं रे प्रतिदिन तो पण शोधीयें, पखसंधि रे इम ए मन अनुरोधियें ।। रु॥ जुटक ॥ अनुरोधियें गुरुक्रम विशेषें, जत्तर करण ए जाणीयें ॥ जिम धूप लेपन वर विजूषण, तैल न्हाणे माणीयें ॥ मुह्य त्ती वंदण संबुद्ध खामण, तीन पांच पांच शेष ए॥ पिक आलोयण अति चारा, खोचना सुविशेष ए॥१॥ ढाल ॥ सबस्सवि रे पिकयस्स इत्यादि क जाणी, पायि चित्त रे जपवासादिक पडीसुणी ॥ वंदणं देइ रे प्रत्येक खा मणां खामीयें, देवसियं ऋालोइऋ रे इत्यादिक विश्रामियें ॥३॥त्रुटक ॥ विश्रामियें सामायिक सूत्रें, खमासमण देइ करी ॥ कहे एक पाखी सूत्र वीजा, सुणे काउस्लग्ग धरी॥ पाखी पिकक्षमणा सूत्र किहने, सामायि क त्रिक जचरी ॥ जज्जोत्र्य वार करे काजस्सग्ग, हर्ष निज हित्र्यडे धरी॥ धाढाला। मुहपत्ती रे पिंडलेही वंदण दीये, समास खामणां रे खमासम ण देइ खामियें ॥ खमासण चारे रेपाखी खामणां खामजो, इहामो श्रणु सिं रे कही देवसी परिणामजो ॥५॥ त्रुटक॥ परिणामजो सिव ज्वन दे वि, देत्र देवीमां जली॥तो पण विशेषें इहां संजारो, अजितशांति स्तव वखी ॥इहां ज्ञानाचारनी ग्रुद्धि वंदन संबुद्ध खामणे जाणीयें ॥दर्शनाचा रनी लोगस्स प्रगटे, काउस्सग्ग प्रमाणीयें ॥६॥ ढाल ॥ परिमाणे रे अति चार प्रत्येक खामणें, पाखीसूत्र छुगई रे चारित्रशुद्धि पाखी खामणे॥काज स्सग्गे रे, तप आचारना जांखजो ॥ सघले आराध्ये रे वीर्याचारनी दाख जो ॥।।। त्रुटक ॥ दाखजो चल मास वरसी, पिक्कमणनो जेद ए ॥ चल मास वीस इवीस मंगल, उसगा वरिस निवेद ए॥पाली चोमासी पंचवरसें सग डुरोंने खामीयें॥सञ्चाय ने गुरुशांति निधिशुं,सुजस खीखा पामीयें॥ण॥

॥ दाल नवमी ॥ लूखो ललना विषयनो ॥ ए देशी ॥ ः ।। ।। निज यानकथी पर यानकें, मुनि जाय प्रमादे जेह मेरे लाल ॥ फ

री पांडुं यानकें आवंदुं, पडिक्रमणुं किह्यें तेह मेरे खाख ॥ १॥ पडिक्रम जो आनंद मोजमां, त्यजी खेदादिक अडदोष मेरे खाख ॥ पडि० ॥ १॥ ए अध्यातम जागरो, तिम तिम होरो गुणपोष मेरे खाख ॥ पडि० ॥ १॥ ए आंकणी ॥ पडिक्रमण मूल पदें कह्युं, आणकरवुं पापनुं जेह ॥ मे० ॥ श्रप वादे तेहनुं हेतु ए, अनुबंध ते समरस मेह ॥ मे० ॥ पडि० ॥ ३॥ प्रतिक्र मकनें प्रतिक्रमणे करी, अध्यतिकर्तव्य अनाण ॥ मे० ॥ राडदार्श्व सामा न्यें जाणीयें, निंदा संवर पच्चकाण ॥ मे० ॥ पडि० ॥ ४ ॥ पडिक्रमणुं ने पचकाण वे, फलथी वर आतम नाण ॥ मे० ॥ तिहां साध्य साधन वि धि जाणजो, जगवइ अंग सुजस प्रमाण ॥ मे० ॥ पडि० ॥ ४॥

॥ ढाल दशमी ॥ तुं मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ पडिक्रमण पदारथ आसरी, कहुं अध्वतणो दिछंतो रे ॥ इक पुरें नृप हे ते बाहिरें, घर करवाने संज्ञंतो रे ॥१॥ तुमें जोजो रे जाव सोहामणो, जे वेधक हुए ते जाएं रे॥ मूरख ते श्रीषध काननुं, श्रांखे घाले निजम ति ताणे रे ॥ तुमें । ॥ ए आंकणी ॥ तिहां बांध्युं सूत्र जलेदिने, रख वाला मेख्या सारा रे ॥ हणवो ते जे इहां पेसरो, इस्या की धा तेणे पुका रा रे ॥ तुमें ।।। ३ ॥ जे पाछे पगक्षे र्जसरे, राखीजें तेहनां प्राण रे ॥ इम कही ते सज्ज हुइ रह्या, धरी हाथमां धनुष ने बाए रे ॥ तुमें गाधा तस व्यासंगें दोइ गामडी, तिहां पेठा तेणे दीठा रे ॥ कहे कां तुमे पेठा पा पीया, तिहां इक कहे करि मन धीठा रे॥ तुमें ।॥ ५॥ इहां पेठां इयो मुज दोष हे, तेणे ते हणीयो वाणे रे॥ पाहे पगले बीजो उसस्हो, मूक्यो कहे पेठो छाणाणे रे ॥ तुमें० ॥६ ॥ ते जोगनो छाजागी इूर्ड, बीजे न स ह्या जोग संयोग रे ॥ ए डव्यें जावे जाएजो, इहां जपनय धरि जपयोग रे॥ तुमें ॥ । । राजा तीर्थंकर तेणे कह्यं, मारग संयम रहो राखी रे॥ चूक्यों ते रखवालें हएयो, सुख पाम्यों जे सत्य जांखी रे ॥ तुमें ॥ ॥ ॥ ॥ प्रतिक्रमण प्रमाद अतिक्रमे, इहां रागादिक रखवाला रे ॥ ते जो रूप प्रशस्तें जोडीये, तो होवे सुजश सुगाला रे ॥ तुमें ॥ ए॥

॥ ढाख अगीयारमी ॥ प्रीत पूरव पामीयें ॥ ए देशी ॥ ॥ कांइ जाणां किऊं बनी आवेखो, माहरो मोहनगारीशुं संग हो मित्त ॥ माहारा प्राण पियारारो रंग हो मित्त ॥ कांइ०॥१॥ नदियां होये तो बांधि ये, कांइ समुद्र बांध्यो न जाय हो मित्त ॥ खघु नग होय तो आरोहियें, मेरु आरोह्यों न जाय हो मित्त ॥ कांइ० ॥१॥ बाथ शरीरें घालीयें, नगने न वाथ घलाय हो मित्त ॥ सरोवर होये तो तरी शकां, नदी साहामी गंग न तराय हो मित्त ॥ कांइ० ॥ ३ ॥ वचन काया ते तो बांधीयें, मन निव वांध्यो जाय हो मित्त ॥ मन वांध्या विण प्रज ना मिले, किरिया निष्फल याय हो मित्त ॥ कांइ० ॥ ४ ॥ एक सहज मन पवनरो, जुठ कहे यंथ कार हो मित्त ॥ मनरी दोर ते दूर हे, जिहां नही पवन प्रचार हो मित ॥ कांइण ॥ ए॥ मित्त कहे सन चल सहि, तोपण वांध्यो जाय हो मि त्त ॥ अज्यास वैरागें करी, आदर श्रद्धा वनाय हो मित्त ॥ ६ ॥ हुं जाणुं युं वनी आवेलो ॥ ए आंकणी ॥ किण्हि न वांध्यो जलनिधि, रामें यां ध्यो सेत हो मित्त ॥ वानर तेही ऊपर चट्या, मेरु गंजीरता खेत हो मि त्त ॥ हुं जाणुंव ॥ ४॥ शुजयोगें जड वांधीये, अनुजवें पार लहाइ हो मि त्त ॥ पडित्र्यरणा पडिकमणनो, इमज कह्यो पर्याय हो मित्त ॥ हुं जाणुं । ॥ ए ॥ पडित्ररणा गति गुणतणी, त्राशुनिषी ते पडिकंती हो मिन ॥ ति हां प्रासाद द्रष्टांत हे, सुणो टाली मन ज्रांति हो मिन ॥ हुं जाणुं ॥ ए॥ कोइ पुरें एक विषक हुई, रहें पूर्ण प्रासाद हो मित्त ॥ सोंपी जार्याने ते गयो, दिग्यात्रायें अविषाद हो मित्त ॥ हुं जाणुं० ॥ १० ॥ स्नान विले पन जूपणें, केश निवेश शृंगार हो मित्त ॥ दर्पण दर्शन व्यय ते, लागे वीजुं श्रंगार हो मिन ॥ हुं जाणुंण ॥ ११ ॥ प्रासाद तेणीयें न जोइऊं, खू णो पडियो एक हो मिन ॥ देश पडि इस्युं तेहनें, सा कहे धरी अ विवेक हो मित्त ॥ हुं जाणुंण ॥ १२ ॥ जीतें पीपल अंकूर हुर्ड, ते पण न गणे साइ हो मित्त ॥ तेणे वधते घर पडियुं, जिम पूरें वनराइ हो मित्त ॥ हुं जाणुं ।। १३ ।। देसाजरी आव्यो घरधणी, तेणे दीन्रो जग्न प्रासाद हो मित्तणा नीसारी घरणी जामिनी, ते पामीयो अतिहि विषाद हो मित्त ॥ हुं जाणुंण ॥१४॥ तेणे फरी प्रासाद नवीन कस्त्रो, श्राणी बीजी घरनार हो मित्त ॥ कहे जो प्रासाद ए विएसशे, तो पहिलीनी गति धार हो मि त्र ॥ हुं जाणुं० ॥ १५ ॥ फरि गयो देशांतरे वाणीयो, ते त्रिहुं संध्या ए जोइ हो मित्त ॥ नागुं कांइ होय ते समारतां, प्रासाद ते सुंदर होइ हो मित्त ॥ हुं जाणुं० ॥ १६ ॥ धणी आवे दीठो तहवो, घर खामीनी कीधी

तेह हो मित्त ॥ बीजी हुइ दुःख आजागिनी, जपनय सुणजो धरि नेह हो मित्त ॥ हुं जाणुंण ॥ १९ ॥ आचारय ग्रह प्रज वाणीयो, प्रासाद ते संयम रूप हो मित्त ॥ तेहने ते राखवो जपदिशे, न करे ते थाये विरूप हो मित्त ॥ हुं जाणुंण ॥ १० ॥ प्रासाद ते जेणे थिर कस्यो, ते पाम्यो सु जस जगीश हो मित्त ॥ इहां पृठक कथक ते एक हे, नयरचना गुरुने शिष्य हो मित्त ॥ हुं जाणुंण ॥ १ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ बन्यो रे विद्याजीरो कलपडो ॥ ए देशी ॥

॥ इवे मन हरणा पडिक्रमणनो, पर्याय सुणो एणी रीति हो मुणिंद॥ परिहरणा सर्वथी वर्जना, अज्ञानादिकनी सुनीति हो मुणिंद ॥ १॥ प डिक्रमण ते अविशद योगथी॥ ए आंकणी॥ एकगामे एक कुलपुत्रनी, जिनी दोइ यामें जह हो मुणिंद॥ पुत्री एक तस दोइ बहिनना, हुआ सुत युवनाव प्ररूढ हो मुणिंद ॥पडिण॥१॥ पुत्रीअर्थे ते आविया, कहे सुविवेकी कुलपुत्र हो मुणिंद ॥तुम सुत दोइ मुज् एकज सुता, मोकली दिजं जे होय पित्र हो मुणिंद ॥ पिडण ॥ ३॥ ते गइ सुत दोइ ते मो कुखा, घट आपी कह्या आणो पूध हो मुणिंद ॥ कावड जरी पूध निव र्तिया, तिहां दोइ मारग अनुरुद्ध हो मुर्णिद् ॥ पडि० ॥ ४ ॥ एक निकट ते अतिहिं विषम अहे, दूरें ते सम हे मग्ग हो मुणिंद ॥ समे आव्यो एक विषम त्यजी, बीजो निकटथी विषम ते मग्ग हो मुणिंद ॥ पडिण॥ ॥५॥ घट जागो तस इक पग खळा, बीजो पण पडते तेण हो मुणिंद॥ समे आव्यो तेणे प्यरा दीयो, सुता दीधी तेण गुणेण हो मुणिंद ॥ पडि ।। ६ ॥ गति त्वरितं आव्यो निव कह्यं, पय लावजो में कह्यं एम हो मुणिंद ॥ कुलपुत्रें वक तिरस्कस्यो, धरो जाव ए उपनय प्रेम हो मु णिंद् ॥ पडि० ॥ उ ॥ तीर्थंकर ते कुलपुत्र हे, चारित्र ते पय अजिराम हो मुणिंद ॥ ते राखे चारित्र कन्यका, परणावे ते निर्मल धाम हो मुणिंद ॥ पडिण ॥ ज ॥ गोकुख ते मानुष्य जनम हे, मारग ते तप जप रूप हो मु णिंदं ॥ ते थिविरने दूर नजीक हे, जिनकस्पीने तो अनूप हो मुणिंद् ॥ पडिण ॥ए॥ निव अगीतार्थ राखी शके, चारित्र पय उपविहार हो मुणि द ॥ निवृत्ति छुर्बन हे तेहने, बीजो पामे वहेलो पार हो मुर्णिद ॥पडिण ॥ १०॥ द्वाध काय द्रष्टांत ए, दूध कावड तस्स अत हो मुर्णिद ॥ परि

हरणा पद वर्णव्यं, इम सुजस सुहेतु समन्न हो मुर्णिद ॥ पडिणा ११॥॥॥ द्वास तरमी ॥ आसण्रा जोगी ॥ ए देशी ॥

वारणा ते पडिक्रमण प्रगट ए हे, मुनिने ते प्रमाद थी जाणो रे।। सुणो संवर धारी ।। इहां विष जिस्त ते तावरों जांख्यों, दृष्टांत ते मन आणो रे ।। सुणो ।। ।। ।। एक पुरें एकराजे हे राजा, तेणें जाए पुं परद ल आव्युं रे ।। सुणो ।। ।। जह्य जो जने मीठा जलमां, गाम गाम विष जाव्युं रे ।। सुणो ।। प्रति नृप पडह इम घोषावे, जे जह्य जो ज्य ए खाशे रे ।। सुणो ।। पशि मीठा जल हुइ होंशी, ते यम मंदिर जाशे रे ।। सुणो ।।।३।। दृरथी आणी जो ज्य जे जमशे, खारां पाणी पीशे रे ।। सुणो ।।। ते जीवी होशे सुल लहेशे, जय लियें वरशे रे ।। सुणो ।।। ॥ जेणे नृप आण करी ते जीव्या, बीजा निर्धन लहंत रे ।। सुणो ।।। प्रा जेणे नृप आण करी ते जीव्या, बीजा निर्धन लहंत रे ।। सुणो ।।। इव्य वारणाइ ए इहां, जावो जावें उपनय संत रे ।। सुणो ।।।। जिनवर नृपति विषम विष मिश्रित, जिन जो ज्य निवारे रे।। सुणो ।।।। जावा जो देशी ।।

॥ पिडक्रमण निवृत्ति प्रमाद्यी रे ॥ रायकनी दिछत ॥ इक नगरें इक शालापित, धूर्त सूता तस रत ॥ जर यौवनमां कांइ न दीधां हे, मन मय माचते कांइ न दीधां हे, अवसरें ठयल ठवीलाने कांइ न दीधां हे, ला वर्ण लहरें जातें कांइ न दीधां हे ॥१॥ जोम्लमांमली ते कहे आपण ना सियें, सा कहे सली मुफ नृप पुत्ति ॥ संकेत तिण्छुं ठे किक रे तेडी लावी सा जित ॥ जरण ॥ १ ॥ तेणे गीत परजातें सुएयुं, पाठी निवृतिं ताम ॥ आणं करंमीयो रलनो, इम वचन जांली साम ॥ जरण॥३ ॥ फूल्यां तोछुं किण्आरडां, अहिसास वुठे अंव ॥ तुज फूलवुं जुगतुं नहीं, जो नीच करें, विडंव ॥ जरण ॥ ४ ॥ कोलीक सुता किण्आरडी, हुं लत्ता बुं सहकार ॥ अधि मास घोषण गीतए, काल हरण अग्रुजनुं सार ॥ जरण ॥ ४ ॥ तस तात शरणे आवीयो, नृपगोत्र एक पित्र ॥ परणात्री पटराणी करी, निज राज्य आपे जैत्र ॥ जरण ॥६ ॥ कन्या थानक मुनि विषय ते, धूरत सुजा वित गीति ॥ निवर्तें ते जसनें सुल लहे, बीजो न ए ठेरीति ॥ जरण।।॥॥ ॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ वीजो पण दृष्टांत हे रे, एक गहें एक साधरे ॥ यहण धारण कम

तेहने रे, आचार्य जणावे अगाध रे ॥ १॥ धारो रे जाव सोहामणो रे, तुह्में सारो रे आतम काज रे ॥ वारो रे तेहने पापथी, संतारो पाम्युं वे राज रे ॥ धारो रे जाव सोहामणो रे ॥ ए आंकणी ॥ पापकर्म तस अन्यदा रे, हुर्ज ऊदयागत अति घोर रे॥निकल्यो गन्नथी एकलो रे, जाणे विषय जोगवुं जोर रे ॥ धारो रे० ॥ १ ॥ कहे सुत तरुण मंगल तदा रे, ज पयोगे सांजले तेह रे ॥ जिम ते जट पाना फर्ह्या रे, तेणे कीथो चारित्रसुं नेह रे ॥ धारो रे० ॥३॥ गाथा ॥ तिरि अवाय पइनिआ, मरियवा वा स मरेसमन्नेणं ॥ असरीस जण जल्लावाणं, सहीअवा कुल प्यसुएणं ॥धाणा ॥ ४ ॥ साधु चिंतवे रे सारांसमां रे, प्रवज्या हुं जग्न रे ॥ लोक हीलाथी निवर्तिन रे, हुओ सुजस गुरु पय लग्न रे ॥ धारो रे० ॥ थ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥ अहो मतवाले साहिबा ॥ ए देशी ॥ ं।। निंदा ते पडिक्रमण हे, दृष्टांत चित्रकर पुत्री रे॥ एक नगरें एक नृष ति हे, ते सन्ता करावे सचित्री रे ॥ नावि सुनाषित रस यहो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥आपी चित्रकार सर्वने, तेणे चित्रवा जू समजागे रे॥ चित्रे ते ए कने दीवे, जात छाणी पुत्री रागे रे ॥ जावि० ॥ १ ॥ राजा छावे वेगे हयें, कष्टीयें नावी ते आवे रे ॥ जात आणी तेम ते रही, तात देह चिंता ये आवे रे ॥ जाविव ॥३॥ आलेखे शिखिपिन्नमां, वाने करी कुहिम देशे रे॥ गत आगत करतो तिहां, नृप देवे लिलत निवेशें रे॥ जाविण ॥ ४॥ ते यहवा कर वाहियो, नख जागी हसी सा बोले रे॥मूर्खमंच त्रिक पाद घो, तुं हुर्र चोथाने तोले रे ॥ जाविण ॥५॥ नृप कहे किम तव सा कहे, राज मारगें घोड़ो दोडावे रे॥ जीवी पुण्यें हुं तेहची, ए पहेलो पायो मने खावे रे ॥ जाविध ॥६ ॥ बीजो पायो नरपति, समजाग सजा जे**णे खापी** रे ॥ वृद्ध तरुण कोइ निव गएयो, त्रीजो तात न जेणे मतथापी रे॥ जाविण ॥ । । देह चिंतायें ते गयो, अन्न टाढुं थाये ते न जाणे रे ॥ चोथो तुं शिखि पिन्न क्यां, किम संजवे इणे टाणे रे ॥ जाविण ॥ जा चित्त चमक्यों राजा गयो, घरे सा गइ बाप जमाडी रे॥स्मर सरस्या तास गुणे हखुं, नृप चित्त ते मूक्युं जमाडी रे ॥ जाविण ॥ए॥ वेधक वयणे मारके, पारकें वश की थो राजा रे ॥ विण मस्तक ते आशकी, कहो केम करी रहेवे ताजा रे ॥ जाविष ॥१ण हुई त्रियामा शत यामसी, तस मात ते प्रात बोलावी रे

॥कहे तुम पुत्री दीजीयें, किमे दारिडीयें वात ए थावी रे ॥जाविण। ११॥ राजायें घर सधन जखुं, मनोहरणा ते विधिद्युं परणी रे॥ दासी कहे नृप जिइां लगें, नावे कथा करो इक वरणी रे ॥ जाविष ॥ ११ ॥ सा कहे ए क पुत्रीतणा, समकाले त्रण वर आव्या रे ॥ निज इष्टार्ये जूआ ज्ञा, माय जाइयें वापें वराव्या रे ॥ जाविण ॥ १३ ॥ रात्रि सा सापें मशी, ते सार्थे वाख्यो एक रे॥ अणसण एक करी रह्यो, सुर आराधे इक सिववेक रे॥ जाविण्॥ १४॥ त्रावी संजीविनी मंत्र ते, जीवाड्या ते बिहुं तेणी रे॥ त्रएये मिलिया सामटा, कहनें दीजें कन्या केणें रे॥ जावि०॥१५॥ दासी कहे जाणुं नहीं, तुं कहे जे जाणे साचुं रे॥सा कहे अब निद्राखूं बुं काले कहेरां जाणुं जे जाचुं रे ॥ जाविष् ॥ १६ ॥ राजा प्रवन्न ते सांजले वीजे पण दिन दीये वारो रे ॥ गुण करी वेचातो खीये, चीतारी कहे उर्न र सारो रे ॥ जाविण ॥ १७ ॥ साथें जीव्यो ते जाता हुर्ज, जेणे जीवाडी ते तातो रे॥ अनशनीयानें दीजीयें, एतो प्राणनुं पण विख्यातो रे ॥ नाविष ॥ १७॥ दासी कहे वीजी कहो, सा कहे एक नृपने सारी रे ॥ घडे आ जरण अंतेजरें, जोंयरमां रह्यां ते सोनार रे ॥ जावि० ॥ १ए॥ तिहांथी नीकलवुं नथी, मणि दीपतणुं अजवालुं रे ॥ कुण वेला एकें पूर्व्युं कहे, ते राति श्रंधारं हे कालुं रे ॥ नाविण ॥ २०॥ किम जाणे दासी कहे, जे सूर्य चंड न देखे रे॥ काले कहेशुं आजे उंघशुं, मोजमां कहियें ते लेखे रे॥ जाविण॥ ११॥ वीजे दिन सा तिम वदे, रात्यंध ते जाणे चेली रे॥ अवसर कथा पूठी कहे, नृप एकनें चोर वे जेली रे ॥ जाविण ॥ ११ ॥ पेटीमां घाली समुद्रमां, वाहीसी तट किहां लागी रे।।केले उघाडी देखी या, पूज्युं केते दिने त्यागी रे ॥ जाविण ॥ १३ ॥ चोथो दिन हे एक कहे, दासी कई ते किम जाणे रे॥ बीजे दिने सा हसी कहे, तुर्यज्वर ने परमा णे रे ॥ जावि० ॥ १४ ॥ पूछी कहे दो शोक्य हे, एक नगरें रत्नवती पहेली रे ॥ विश्वास बीजीनो नही करे, घटे घाले रतन ते वहेली रे ॥ जाविष ॥ श्या लीपी मुंदी घट मुख रहे, बीजी रतन खेइ घट मुंदे रे ॥ रतन ग यां तेणीयें जाणीयां, दासी कहे ते किम विंदे रे ॥ जाविण ॥ १६ ॥ बीजे दिन कहे घट काचनो, उतां हरियां केम न दीसे रे ॥ पूठी कहे बीजी क था, इक नृपनें सेवक चार हीसे रे ॥ जाविण ॥ २७ ॥ सहस्रयोधी वैद्य

रथकरु, चोथो निमित्त वेदि हे सारो रे॥ पुत्री एक हे मनहरू, किहां खइ गयो खेलर प्यारो रे॥ जवि०॥१०॥ ते आणे तस नृप दीये, निसुणी नि मितियो दिशि दाले रे ॥ रथकार ते रथ खग करे, चारे चाल्या रथ छा खेरे ॥ जावि० ॥ १ए ॥ सरस्रें खेचर हण्यो तेणे, भरते कन्या मारी रे ॥ वैद्यं जीवाडे छोषधें, चारने दीये नृप छविचारी रे । जाविजाइणा कन्या कहे एक चारनी, निव थाउं जे पेसे आगें रे ॥ हुं तेहनी हुं स्त्री हवे, क हे पेसशे तिहां कुण रागें रे ॥ जाविणा ३१ ॥ दासी कहे बीजो कुण कहे, बीजे दिने कहे सा ते निभिन्ती रे ॥ जे निभिन्ते जाणे मरे नहीं, चय साथें पेठो सुचिनें रे ॥ जावि० ॥ ३२ ॥ रंगे सुरंगें नीकली, अंगे साजो परणे कन्यारे ॥ बीजी कथा कहे एक स्त्री, भागे हेम कटक छुग धन्यारे ॥ जाविण् ॥ ३३॥ मृख्य रूपक देइ कोइ दीये, तेणे घाट्यां सुतानें हाथे रे ॥ प्रौढ यह ते न नीसरे, मागे मूलरूपक साथें रे ॥ नाविण॥ ३४॥ बीजां दीधां वांके नही, शुं करवुं कहे इहां दांसी रे ॥ सा कहे अवर न चतुर हे, तुं कहे ने करे शुं हांसी रे ॥ जाविण ॥३५ ॥ बीजे दीने कहे तेह जो, रूपक दीय कटक तो दीजें रे ॥ जूप आख्याने एहवे, निजघरे पट मास व्याणीजें रे ॥ जाविष् ॥ ३६ ॥ शोक्यें जूवे हे तेहनां, छरडामां रही ची तारी रे ॥ पहेरी बस्तादिक मूलगां, जीवने कहेजो जारी रे ॥ जाविष्ती। ३७॥ राजयवंश पत्नी घणी, राजाने तुं शीकारू रे ॥ नृपमानें जे पुर्ण ते, बीजी मूकी रूपें वारू रे॥ जाविण॥ ३०॥ इम करती ते देखी सदा, रा जाने शोक्य जणावे रे ॥ कामण ए तुक्तने करे, राखो जीवने जो चित्त जा वे रे ॥ जावि० ॥३ए॥ आत्मनिंदा करती नृपें, देखी की घी सा पटराणी रे॥ इट्यनिंदा ए जावथी, करे जे संयत सुहनाणी रे॥ जाविण॥ ४०॥ दश दशांते दोहिलो लही, नरजव चारित्र जो लहियुं रे ॥ तो बहुश्रुत म द मत करा, बुद्ध कहेवुं सुजस ते कहियुं रे ॥ जाविण्॥ ४१॥ ॥ढाल शतरमी॥राणीजी हो जातीरो कारण माहरे कोइ नहींजी ॥एदेशी॥

॥ गही ते निंदा परसाखरां जी, ते पिडक्रमण परयाय ॥ दृष्टांत ति हां पितमारिका जी, वर्णव्यो चित्त सुद्दाय ॥ साचलो जाव मन धारजो जी ॥ १॥ किहांएक अध्यायक विप्र हे जी, हे रे तरुणी तस जिल्ला ॥ का क बिल देहि प्रियेश कहे जी, सा कहे बिहूं अजा ॥ साचण् ॥ १॥ जीरु ते जाणी राखे जसे जी, वारे वारे घणा ठात्र. ॥ उपाध्यायना रे आदेश यो जी, मान्य हे तेह गुण्पात्र ॥ साचण ॥ ३॥ माहा हम ते हमीने ह गे जी, एक कहे मुग्ध न एह॥ जोउं हुं चरित्र सवि एहतुं जी, सहजयी कपट अवेह ॥ साचण ॥ ध॥ नर्भदाना पर कूलमां जी, गोपशुं सा निशि, आय ॥ अन्यदा नर्मदा उतरे जी, कंने सा चोर पण जाय ॥ साचण॥ थ ॥ चोर एक ब्रह्मो रे जल जंतुचें जी, रोइ कहे सा हग टांकी ॥ तीरथ मेलीने म ऊतरो जी, जाइ कुतीर्थ ते वांकी ॥ साचण॥ ६॥ जोइ इम बात्र पाढ़ो वख्यो जी, बीजे दिने बिख देत ॥ राखतो बात्र जली परे कहे जी, श्लोक एक जाएए होत ॥ साचा ॥ । । श्लोक ॥ दिवा विनेति का केल्यो, रात्रौ तरित नर्भदां ॥ कुतीर्थं नीच जानासि, जलं जंत्विहारोध नम् ॥ १॥ ढाल पूर्वली ॥ सा कहे हुं करुं जपवरे जी, तुक सरिखा निव दक्त ॥ ते कहे विहुं तुज पति थकी जी, हुइ ते पति मारी विखक्त ॥ सा च0 ।। ए।। पोटले घाली अटवी गइ जी, अंजे शिर व्यंतरी तेह ॥ वन जमे मास जपर गले जी, जूपने तृबी रे अंबेह ॥ साचण॥ ए॥ घर घर इमज जिक्ता जमे जी, पतिमारीने दियो जिस्क ॥ इम घणे कार्ले जाते थके जी, चित्तमां बही अतिसिक्त ॥ साच० ॥ १० ॥ अन्यदा संयतणी वंदता जी, शिरथकी पड़ीयो ते जार ॥ वत यही ते हख़ुई थइ जी, गर्हा यें सुजस सुखकार ॥ साच० ॥ ११ ॥

॥ढाख अढारमी ते तिर्यारे जाइतेतिरिया, जे विषय न सेवे विरुट्यारे॥एदेशी ॥ ते तिरया रे जाइ ते तिरया, कोधादिकथी जे उत्तरीया रे ॥ सोही पिडक्रमणे आदिरया, वस्त्र दृष्टांत सांजरीया रे ॥ ते तिरयाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वस्त्र अमूख्य राजादिक धिरया, मिलन जाणी परहरिया रे॥ रजक लेइ अंथि बांधी फरीया ॥ राजज उपरें किरयां रे ॥ ते तिरण ॥ १॥ लेइ जल शिलकूटें पाथिरया, पगमदीं ऊंविरया रे ॥ खार देई वरनीरे जाखो, अग्रुरु वासरे सूरिया रे ॥ ते तिरण ॥ ३ ॥ जूपितने जूपित पी तिरया, तस शिरपर संवरीया रे ॥ एम जे रागादिकगण वरीया, अष्ट थइ नीसिरया रे ॥ ते तिरण ॥ ४ ॥ मिहमा मूकी हुआ ठाकिरया, विरुद्ध कर्म आचारियां रे ॥ प्राथि के सिरया पाखिरया, ते पण गुरु उद्धिरया रे ॥ ते तिरण ॥ ४ ॥ ते फिर हूआ मिहमाना दिरया, शिष्ट जनें आदिर

या रे ॥ पाली ज्ञान सहित वर किरिया, जनवनें ते निन फरिया रे ॥ ते तिरिण ॥ ६ ॥ जीत तणा हुआ ते विहरिया, घर राखण पीयिया रे ॥ अनुजन गुणना ते जाहिरिया, मुनि मनना माहिरिया रे ॥ ते तिरिण ॥ ७ ॥ पाले ते अनुइ जागिरिया, बुद्धसमा वारारिया रे ॥ एम शोधे बहुजन नीसिरिया, सुजसें गुण जन्निरिया रे ॥ ते तिरियाण ॥ ए ॥

॥ दोहा॥ वली आगें दृष्टांत हे, शोधि तणे अधिकार ॥ परदल परपुर आवते, अधिपति करे विचार ॥ १ ॥ वैद्य तेड्या जल नाशवा, विषादियें जब एक ॥ जूंकुं देखी नृप कोपियो, दाले वैद्य विवेक ॥ १ ॥ सहस्रवेधि ए कोपसां, करिने मूर्डा देइ ॥ ते विष हुर्ज तक्कियो, एम सही शाता धरेइ ॥ ३ ॥ राजा कहे हे वालना, वैद्य कहे हे सार ॥ औषध लव देइ विष हरे, व्यापक जीव हजार ॥ ४ ॥ अतिचार विष जे हुर्ज, ओसरे ते थी साध ॥ निंदा अगदें सुजस गुण, संवर अव्याबाध ॥ ५ ॥

॥ ढाल र्वगणीशमी ॥ टोमरमल जीत्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ हेतु गर्ज पूरो हू छ रे, पहोता मनना कोड ॥ वैराग बल जीतीयुं रे ॥ दिलय ते छुजैन देखतां रे, विझनी कोडा कोडा ॥ वै० ॥ १ ॥ गृष्ठ आपदा संपदा रे, आवी होडा होडी ॥ वै० ॥ सज्जन मांहे मलपता रे, चाले मोडा मोडी ॥ वै० ॥ १ ॥ जिम जिन वरसी दानमां रे, नर कर जडा ऊडी ॥ वै० ॥ तम सजुरु उपदेशमां रे, वचन विचारशुं ठोडी ॥ वै० ॥ ३ ॥ लीयो लियो घरमां मोहरा रे, हरव्यो मुंठ मरोडी ॥ वै० ॥ अशुज प्रकृति सेना दली रे, शुजनी तो नही खोडि ॥ वै० ॥ ४ ॥ कर्म चीवर वर पोलीयो रे, पोली दीये ठे ठोडी ॥ वै० ॥ तखत वखत हवे पा मशुं रे, हुई रही दोडादोडी ॥ वै० ॥ थ ॥ सूरत चोमासुं रही रे, वाचक जस करी जोडी ॥ वै० ॥ युग युग मुनि विधु वत्सरें रे, (१९११) देख मं गल कोडी ॥ वै० ॥ ६ ॥ इति श्री उपाध्याय श्रीयशोविजयगणिकृत प्र तिक्रमणहेतुगर्जितसमुद्धरित सद्यायः संपूर्णः ॥

॥ ख्रय श्री शियल विषे सद्याय ॥

॥सोमविमल गुरु पय नमीजी, निजगुरु चरण वंदेवि ॥ शीलतणा गुण् गायशुं जी, हियडे हर्ष धरेवि रे ॥जीवडा॥ धरीयें शीलवत सार ॥१॥ शी लविण वत सवि खडहडे जी, शील विण संयम सार रे ॥ जीवडा॥ धरिण

॥ ए आंकणी ॥ तोरणथी रथ वालियोजी, जाग्यो नेमकुमार ॥ राजीम ती विनवे घणुं जी, न धरे मोह लगार रे ॥ जी ॥ धरि ॥ श ॥ श्रू लिज द्र कोश्याघर रहे जी, चतुरपणे चडमास ॥ खटरस नितः जोजन करे जी, न पड्यो कोश्या पास रे ॥जीणाधरिण।३॥ नवाणुं कंचन कोडी धणी जी, कहीयें जंबुकुमार ॥ आठे कन्या परहरी जी, खीधो संयम जार रे॥जी० ॥ध्याधा। धन संचय पुत्री त्रणे जी, परणुं वयर कुमार ॥ वयरस्वामी मन निव चट्यो जी, जाणी अथिर संसार रे ॥ जी०॥ध०॥५॥ शेव सुदर्शनने दीये जी, अजया किपला रे आला। शूली सिंहासन ययुं जी, जाणे बा ल गोपाल रे ॥जीवाधवा६॥ वंकचूर चोरी करे जी, पेठो राय जंमार॥ रा णीयें घणुं जोलव्यो जी, न चल्यो चित्त लगार रे ॥जी० ॥घ०॥७॥ कलह करावे अतिघणो जी, मनमां मेलो रे जाव॥ नारद जे सफति लहे जी, ते तो शील प्रनाव रे ॥जीवाधवाद्याचंदनवाला महासती जी, जगमां हुइ विख्यात॥जस हाथे वीर पारणुंजी, हुइ असंजव वात रे॥जीणाधणाए॥साठ सहस वर्ष आंविल करी जी, जरतशुं ढंमे रे प्रेम।। क्षत्र पुत्री ते सुंदरी जी, मुक्तें पहोती खेम रे ॥जीवाधणारवा शीखवती जरतारनें जी, कमिखनी व्यापे सार । क्यारे कुर माथे नही जी, शीखतणे अनुजाव रे। जीणाधणा ११ चालणीयें जल काढियुं जी, सती सुजड़ा नार ॥ चंपा बार उघाडीयां जी, लोक करे जयकार रे ॥जीवा धणारशा सतीमांहे सीता जली जी, जेहने मन श्रीराम ॥ अग्नि टली पाणी थयुं जी, राख्युं जगमां नाम र ॥जीणा धणारु ॥ शीलें हरी युं हरण हुं जी, शीलें संकट जाय ॥ शीलें साप न श्रालंड जी, पावक पाणी याय रे ॥जी०॥घ०॥१४ ॥ जे प्राणी स्वकाय थ की जी, शीख पाले गुण्वंत ।। ब्रह्म लोक ते अवतरे जी, इम जांखे जगवंत रे ॥जीणाधणारपाशील ऋखंफित पालशे जी, इए जुग जे नर नार ॥ हं ससोम जवद्याय जाएं जी, तेइने जयजयकार रे ॥ जोणाधणा १६॥ इति॥ ॥ अथ श्रीपंद्र तिथिनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ सकल विद्या वरदायिनी, श्रीसरसितमाय॥ श्रहोनिशि तेहना प्रेम शु, प्रणमी जिन पाय ॥ १॥ तास पसायें गायशुं, पन्नरितिथ वारु ॥ मत्स रथी कहेतो नथी, महारी मित सारु ॥ १॥ पडवा कूप संसारमां, निव इ क्षे प्राणी ॥ तो सेवो श्रीसाधुने, मित निर्मल श्राणी ॥ ३॥ बोध बीज तुने आपरो, वली कहेरो मर्म ॥ दुर्गति पडतो राखरो, शीखवरो धर्म ॥ ध ॥ त्रिहुं जगमांहे कोइ नही, एहवा उपगारी ॥ गरथ विना जे शीखवे संयममति सारी ॥ थ ॥ चिहुं गतिमांहे को नही, जिमयो बहुवार॥ वि विधपरे डुःख जोगव्यां, नवि पाम्यो पार ॥ ६ ॥ पंचें द्विय ते छापणां, प हेलां वश कीजें ॥ चार कषाय निवारियें, परदोष न दीजे ॥ ७ ॥ ठकाय जलीपरे राखीयें, निज आतम तोले ॥ कुटुंब सहु ए आपणी, इम जिनव र बोले ॥७॥ सात मख्या निव चालीयें, तेतो कुव्यसन जाणी ॥सहग्रहनी ए शीखडी, यही ज्ञानज आणी ॥ए॥ आठ मद इंडियतणा, जींपो जि नसाखें ॥मनवं वित फल पामीयें, परप्राणी राखे ॥१०॥ नवविध वाड वि शुद्धशुं, जे ब्रह्मव्रत पाले।। ते धीरा संसारमां, जव फेरा टाले ॥११॥ दश विध धर्म यति तणो, सेवो मन सुधो।। आराधो अरिहंतने, घ्याउं निर्मख बुद्धो ॥११॥ एकादश प्रतिमा वहो, श्रावकनी सार ॥ संतोषे सुख उपजे, मानो निरधार ॥१३॥ द्वादशांगी सिद्धांतमां, इम जिनवर बोले ॥ सुमति युप्ति सेवे जिके, नहीं को तस तोखे ॥ १४ ॥ ते रस खीणा जे रमे, धनिते नर नारी ॥ वार वार वांदूं वली, तस हुं बिलहारी ॥ १५॥ चौदराजमांहे जीवडो, जिमयो बहुवार ॥कुगुरु कुदेवे जोलव्यो, निव पास्यो पार ॥१६॥ पूने मखीया सज्जुरु, सही सेवो चरण ॥ जवनो पार जतारशे, सही तारण तरण ॥ १७ ॥ सहग्रुरु बिरुद वहे बहु, पर तारण काजा ॥ छुर्गति पडतो राखीयो, परदेशी राजा ॥१७॥ एह आदि बहु उद्घ्या, केता हूं दाखुं॥ पंक्तित होय ते प्रीठजो, थोडामां बहु जांखुं ॥ १ए ॥ पन्नरतिथिमां प्राणि या, नित्य सुकृत कीजे॥ दान शियल तप जावना, करि लाहो लीजें॥१०॥ ध्यान धरीजें धर्मनुं, पहोंचे मन आशा। हरष धरी सुणजो सहु, कहे से वक गंगदास ॥ ११ ॥ इति पन्नरतिथि सद्याय ॥

॥ अथ रेंटीयानी सञ्चाय प्रारंज ॥

॥ बाह रे अमने रेंटीयो वालो, रेंटीयो घरनुं मंगाण जो ॥ परणी त्रिया होडीने चाह्यो, गयो परदेशे कंघ कमाण जो ॥ बा० ॥ १ ॥ बारे वर्षे पर एयो आठ्यो, दोढ त्रांबीयो लाठ्यो रे ॥ गंगामांहे न्हावा पेठो, दोढ त्रांबीयो पाड्यो रे ॥बा०॥१॥ माय तायने ससरे सासुयें, अमने कीधां अल गां रे ॥ जुःखनिवारण रेंटीयो धास्यो, तेहने जहने वलगां रे ॥ बा० ॥३॥

देणुं उताखुं सघक्षुं पीयुनुं, व्याजें रुपैयो वाध्यो रे ॥ सुखने कारण रुपै यो रूडो, पुष्पे कंत ए खाधो रे ॥ वाण ॥ ४ ॥ देराणी जेठाणी आवी, वोले मीठी वाणी रे ॥ रेंटीयाना पतायथी तो, बीजी आणे पाणी रे ॥ ॥ वाण ॥ य ॥ रेंटीयाना पसायथी तो, कोडी काम में की घां रे ॥ दान दी धां अमें अति घणां ने, महियलमां यश लीधां रे ॥ बाणाहा। तुं आबू ती रथथी उपनो, रूडी ताहारी जात रे॥ दिवसें रात्रें रेंटीयो कांतुं, चढीयो महारे हाथ रे ॥ वा० ॥ उ ॥ रेंटीयाथी आजूषण जारी, पहेस्यां चीर ने सालू रे ॥ मोंघा कमखानी कांचली पहेरी, जोजन कीधां वारू रे ॥ बाण ॥ ७ ॥ सासरीयां पीयरीयां आवे, बाइ घर तमें आवो रे, ढोकरडानें टा हाड वाहे हे, जूलडीयो शिवडावो रे ॥ वाण ॥ ए॥ शेंत्रुंजानी यात्रा की थी, साथें सासरियां पीयरियां रे ॥ गोत्र कुटुंव सहु नर ने नारी, संघवी नाम ते धरियां रे ॥ वा० ॥ १० ॥ त्रण्डें। एकावन माफानी वहेलो, गाडां चारशें पंचाशी रे ॥ वशें जपर पंचाणुं घोडा, उंट त्रणशें वली ठ्याशी रे ॥ वाण ॥ ११ ॥ हीरविजय सूरि पांत्रीश जपाध्याय, पन्यास गौतम जेह वा रे ॥ तेरशें पांत्रीश तपगन्नना साधु, शीलें श्रु लिजड़ जेइवा रे ॥ वाणा ॥ ४२ ॥ पालीताणे संघवण जतिरया, यात्रा नवाणुं की धारे ॥ केशर चं दने क्षजजी पुज्या, रैवतें जइ लाज लीधा रे॥ वाण ॥ १३॥ समेत्रशिख रने आबु गोडी, संखेश्वरो श्रीपास रे ॥ न्हानां महोटां तीरय जेट्यां, म ननी फली सिव आश रे ॥ वाण ॥ १४॥ शिखर वावननुं चैत्यज की धुं, जिनप्रतिमा उदार रे ॥ पंच पाषाण्ने त्रीश धातुनी, रूपैया सहसज चा र रे ॥ वाण॥ १५ ॥ चिहुं बारे रूडी वाव्य करावी, हशे ने रूपैया ह्याशी रे ॥ कूवा तलाव वलियासुं चंगी, नवशें उपर ठ्याशी रे ॥ बाण्॥ १६॥ दीरविजयसूरि पंदर उपाध्याय, ठाणुं त्रणशें त्याशी रे ॥ नवछंगें पूजी पारणां कराव्यां, गुरु जिक्त करी बारेमासी रे ॥ बा० ॥ १९ ॥ आंबिल जे ली पांचम अगियारस, तप सघलां में की धां रे॥ ठवणी चावली सिद्धांत खलावी, साधु साध्वीने दीधां रे ॥ वाज् ॥ १० ॥ जजम्णां घर हाट करा व्यां, सासु ससरानो खप की घो रे॥ दीकरा दीकरी जावेंज परणाव्यां, रतन रेंटीय जस खीधो रे ॥ वाण ॥ रए॥ घेवर जलेबीये गोरणी कीधी, खाइाणी याखीनी कीधी रे॥ सवाशेर खांम ने एक रूपैयो, चोराशी नाते

दीधी रे ॥ बाण ॥१०॥ बाप जाइने ससरो प्रीतम, ठामे सगपण तेह रे ॥ रतन रेंटीयो जीवुं तिहां लगें, कदीय न आवे छेह रे ॥ बाण ॥११॥ धरी प्राक्ते माल चमरखां, तेल लोट वली प्राणी रे ॥ अहप मागे ने घणुं दीये रेंटीयो, नारीयें करी घणी पूंजी रे ॥ बाण ॥११॥ सायरने वनस्पति मूंगर, ध्रुव तारा सूरज चंदो रे ॥ कोडी युग लगें रहो रेंटीयो, स्त्री घर सदा आणंदो रे ॥ बाण ॥१३॥ शोल पांत्रीशो मेडता नगरें, शुदि तेरश माहा मा स रे ॥ रत्नबाइयें रेंटीयो गायो, सफल फली मन आश रे ॥ बाण ॥१४॥ ॥ अश घीनी सञ्चाय ॥

॥ दोहा ॥ जिवयण जाव घणो धरी, छाणी गुणनी श्रेणि॥ सूपड सर खा याय जो, चालणी परें मह जेणि॥ १॥ साप तणा गुण माणजो, गा य तणा गुण छाण॥ जूर्ड चार नीरस चरी, छापे घृत छहिनाण॥ १॥ घृ ततणा गुण वर्णवुं, सांजलजो नर नारी॥ वस्तु सघली जोइ सही, घृत समो नहिं संसार॥ ३॥

॥ ढाल चोपाइनी देशीमां।। घृतें रूप वाधे बल कांति, घृतें कोध थाये जपशांति ॥ ख़ूखुं धान्य ते दोहिं एचे, घृत सहित सहुकोने पचे ॥४॥ कूकस बाकस जेइमां घृत, तेह धान्य खागे अमृत ॥ वाणिया ब्राह्मण सर्व सुजाण, घृत पाखें ते धूजे प्राण ॥ ५॥ हाय पग उतस्वा संधाय, दी ख तणा ते खोडा जाय ॥ घृतनी परें विगल कहेवराय, ए जपम घृतने देवराय ॥ ६ ॥ बालकने घृत वाहालुं सही, रोईने रोटी घी लेही ॥ वली लहे एकवार ते रंगे, घृत जिमे देही तगतगे ॥९॥ घृतथकी नारां बूराय, स्वावडी ते घीत्रज खाय ॥ बलद पीये ते मातो थाँय, घी खाधे नेवला इ जाय ॥ ७ ॥ जन्ना रहीने घी पीजीयें, तेज सबल आंखे कीजीयें ॥ गा यनुं घी हरे सिव वाय, व्याधि सर्वे घी घी जाय ॥ ए॥ शाक पाक याय जला घीथी, बीजुं एहवुं उंसड नथी॥ घीनो दीवो मंगलिक कह्यो, घीयें जमाइ रीसातो रह्यो ॥ १०॥ न्हाना महोटा कुलर करे, थीणुं होय तो स वको जरे॥ सूंहाह्यं गलगल ऊतरे, सीहांरी होय तो मालण हरे॥ ११॥ सासु जमाइ करवा मेल, कोष उपाडी कीधो जेल ॥ खलहल नामे जिल कहेवाय, घी पीरसे तो प्रीतज याय ॥ १३ ॥ वरे पूढे घी केतुं वखुं, घीय पखें ते लेखुं कखुं ॥ घी संचोरे विवाह अहे, बीजी वस्तु लेशुं पहें

॥ १३ ॥ घृत दाने समिकत छाणियं, धन्नो सार्थपित जग जाणियं ॥ ब्रा ह्मणिन घी वखाणीया, नित्य जमे पुष्यवंत वाणिया ॥ १४ ॥ पामर खाये परिववाहें, करपी खाये परघर जाये ॥ उंदर साप वृक्त ते थाय, धन उ पर परित्वाहें, करपी खाये परघर जाये ॥ उंदर साप वृक्त ते थाय, धन उ पर परित्वाहें, करपी खाये परघर जाये ॥ उंदि हुं करे, शूल रोग उपज्ञव हरे ॥ घरडाने घी वालुं सही, जूना हाड रहे घीथी खही ॥ १६ ॥ पाटी पी हें घी मूकीयें, घाव वली गुंवड त्रह दीये॥ घी खाधे तप सोहिलो थाय, पग वल नयणें तेज कहाय ॥ १५ ॥ उतुं घीय जे पीरसे नही, नरणां ना म तस लीजें नहीं ॥ सघला ऊपर घृत हे सार, ते मत वारो वारोवार ॥ १७ ॥ घीना गुणिन उत्तमनां वयण, ए हे सरखां जाणो सयण ॥ ग्रुजिन जय पंकितथी लह्यो, लालविजय घीनो गुण कह्यो ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ स्त्रीने शीखामणनी सद्यान .

॥ नाथ कहे तुं सुण रे नारी, शीखामण हे सारी जं; ॥ वचन ते सघ खा वीणी खेशे, तेहनां कारज सरशे॥ शाणां यश्यें की ॥१॥ जातरा जागरणने विवाहमां, माता साथे रहीयें जी ॥ सासरीयामां जल जर वाने, सासु साथें जर्द्ये ॥ शा० ॥ १ ॥ दिशा ऋंधारीने एकलङां, मार्गमां निव जर्थें जी।। एकली जाणी आल चढादे, एवडुं शाने सहियें॥ शाण ॥ ३॥ व्हाणामां वहेलेरां जठी, घरनो धंधो करियें जी ॥ नणंद जेठाणी पासे जइने, सुख इःख वात न करियें ॥ शाण ॥ ध ॥ चोकामां चतुराइ ये रहिये, रांधतां निव रमीयें जी ॥ सहुकोने प्रसाद करावी, पाउल पोते जमीयें ॥ शा॰ ॥ ५ ॥ गांठे पहेरी घरमां रहिये, वाहार पग निव जरिये जी ॥ सप्तरा जेवनी लाज करीने, मों आगलेथी टलियें॥ शाण ॥६॥ बूटे केशे शिर जघाडे, आंगणमां निव जइये जी ॥ पुरुष तणो पडढायो देखी, मों आगल निव रिहये॥ शा०॥ । एकांते दीयरीया साथे, हाथे ताली न लइये जी ॥ प्रेमतणी जो वात करे तो, मों आगलयी खिशये ॥ शाण। ए॥ आजरण पहेरी अंग शोजावी, हाथे दर्पण न लइये जी॥ पीयुडो जो परदेश सधावे, तो काजल रेख न दश्यें ॥ शा० ॥ए॥ पीयुडा साथे क्रोध न करीये, रीसावी निव रहीये जी ॥ वैयां बोरु बोकरडांने, ताडन कदीय न करीयें।।शाण।१ण। ठजंड मंदिरमांहि क्यारे, एकखडां निव जध्यें जी॥ ,एकली जाणी त्र्याल चढावे, एवडुं शाने सहियें ॥ शा०॥ ११ ॥ फिरियल

नारीनो संगं न करियें, तस संगें निव फरियें जी ॥ मार्ग जातां विचार करीने, जंको पाव न धरियें ॥ शाण ॥ ११ ॥ जदयरतन वाचक इम बोखे, जे नर नारी जणशे जी ॥ तेइना पातक इरें टखशे, मुक्तिपुरीमां मखशे ॥ शाण ॥ १३ ॥ इति स्त्रीशिखामण सञ्चाय ॥

॥ अथ श्रीसकलचंद उपाध्यायजीकृत वारजावनानी सञ्चाय प्रारंजः॥
॥ ढाल पहेली ॥ राग रामग्री ॥

॥ विमखकुल कमलना इंस तुं जीवडा, ज्ञवनना जाव चित्त जो विचारी ।। जेणे नर मनुज गित रल निव केलव्युं, तेणे नरनारी मिण कोडि हारी ॥ १ ॥ विमलण ॥ ए आंकणी ॥ जेणे समिकत घरी सुक्रत मित आपुस री, तेणें नरनारी निज गित समारी ॥ विरित्तनारी वरी कुमित मित पर इरी, तेणें नरनारी सब कुगित वारी ॥ विण् ॥ १ ॥ जैन शासन विना, जीव यतना विने । जे जना जग जमे धर्महीना ॥ जैनमुनि दान बहुमान हीरा नरा, पशुपर ते मरे त्रिजगदीना ॥ विण ॥ ३ ॥ जैनना देवग्रुरु धर्म ग्रुण जावना, जावी नितु ज्ञान लोचन विचारी ॥ कर्मजर नाशनी वारवर जावना, जावि नित जीव तुं आप तारी ॥ विण ॥ ४ ॥ सर्वगितमां इ वर नरजवो छल्लहो, सर्वग्रण रलनो शोधकार ॥ सर्वजगजंतुने जेणे दितकी जियें, सोइ मुनि वंदीयें श्रुत विचारी॥ सफलसुनि वंदीयें श्रुत विचारी॥ ॥ ।। डाल वीजी ॥ राग केदारो ॥

॥ जावना मालती चूशीयं, जमरपरं जेण मुनिराज रे ॥ तेणे निज आतमा वातियं, जरतपरं मुक्तिनुं राज रे ॥ जाव ॥ १ ॥ जावना कुसु मग्रुं वासिया, जे करे पुण्यनां काज रे ॥ ते सवे अमर तरू परं फले, जा दना दिये शिवराज रे ॥ जाव ॥ १ ॥ जूमि जननी थकी ऊपना, मुतपरं जे जगें जाव रे ॥ ते सवे प्रू जुजंगी गले, जिम गले वनतरु दाव रे ॥जाव ॥ ३ ॥ जूमिना वर अनंता गया, जूम निवि गई किए साथ रे ॥ क्रिक्वहु पापी जे तस मली, ते न लीधी कुणें साथ रे ॥जाव॥ शा गह्य द्वारावती हरि गयो, अथिर सव लोकनी कुक्ति रे ॥ सुणी अंते पंचवा मुनि इवा, तेणे वरी अचलपद सिक्ति रे ॥ जाव ॥ ४ ॥ राजना पापजर शिर थकें, जस इवा शुक्त परिणाम रे ॥ जरतजूपति परें तेहने, जावना पुष्यनां गाम रे॥जाव॥ ६॥ राजनां पाप जर शिर थकें, जस इवा शुक्त मन जाव रे ॥ जावनासिंधुमां ते गते, ऊतरे मोहपद ताव रे ।। जा० ॥ छ।। जे पदारथ तुऊ आपणो, निव गणे प्रेमरितवंध रे ॥ जो गणे ते हतुं आपणुं, जीव तूंहीं मित अंध रे ॥ जा० ॥ छ।। कृष्णलेश्यावशें की अधिं, कर्म जे रौड्रपरिणाम रे ॥ ते सवे धर्म निव जाणियें, ग्रुष्त हवे ग्रुद्ध परिणाम रे ॥ जा० ॥ ए॥ जे जग आ श्रव जिनें जएया, ते सवे संवर होइ रे ॥ धर्म जे अग्रुज जावें करे, ते तस आश्रव जोइ रे ॥ जा० ॥ १० ॥ इति पी ठिका ॥

॥ अथ प्रथमा अनिलक्तावना ॥ ढाल त्रीजी ॥ राग रासयी ॥

॥ मूंज मां मूंज मां मोहमां जीव तुं, शब्द वर रूप रस गंध देखी ॥ अथिर ते अथिर तूं अथिर तनु जीवितं, जाब्य मन गगन हिर चाप पेखी ॥ मूं० ॥ १॥ विष्ठ सिरयति परें एक घर निव रहे, देखतां जाय प्रज्ञ जी व खेती॥ अथिर सव वस्तुने काज मूढो करे, जीवडो पापनी कोडी केती ॥ मूं० ॥ १॥ कपनी वस्तु सिव कारिमी निव रहे, ज्ञानशुं ध्यानमां जो विचारी॥ जाव उत्तम हस्त्रा अथम सव उद्ध्या, संहरे काल दिन राति चारी ॥ मूं० ॥ ३॥ देख किल कूतरो सर्व जगनें जखे, संहरी जूप नर को िट कोटी ॥ अथिर संसारने थिरपणे जे गणे, जाणी तस मूढनी बुद्धि खोटी ॥ मूं० ॥ श॥ राच म म राजनी क्दिशुं परिवस्त्रो, अंत सव क्दि बिसराल होशे॥ क्दिसार्थे सव वस्तु मूकी जते, दिवस दो तीन परिवार रोशे ॥ मूं० ॥ १॥ कुसुमपर योवनं जलविं जु जीवितं, चंचलं नरसुलं देव जोगो ॥ अवधि मन केवली सुकिव विद्याधरा, किल्युगें तेइनो पण वियो गो ॥ मूं० ॥ ६ ॥ धन्य अनिका सुतो जावना जावतां, केवल सुरनदीमां हे लीधो ॥ जावना सुरलता जेणे मन रोपवी, तेणे शिवनारि परिवार कं ध्यो ॥ मूं० ॥ १॥ इति प्रथम अनित्यजावना ॥ १॥

॥ अर्थ दितीया अशरण जावना ॥ ढाल चोथी ॥ राग कालहरो ॥ सांजलजो मुनिसंयमरागी ॥ ए देशी ॥

॥ को निव शरणं को निव शरणं, मरतां कुणने प्राणी रे। ब्रह्मदत्त मरतो निव राख्यो, सजं हय गय बहु राणी रे, जस नवनिधिधन खाणी रे॥ कोण ॥१॥ मातिपतादिक टग मग जोतां, यम खे जनने ताणी रे॥ मरण्यकी सुर पित निव बुटे, निव बुटे इंडाणी रे॥ कोण॥ १॥ हय गय रथ नर कोडि विद्याधर, रहे नित रायां राय रे॥ बहु जपाय ते जीवनकाजें, करता अश

रण जाय रे ॥को०॥३॥ मरण्यी जीति कदाचित जीवो, जो पेसे पाया हैं रे ॥ गिरिदिर वन अंबुधिमां जावे, तोजी हरियें का हैं रे ॥ को०॥४॥ श्राष्ट्र जोणें बहें ऊपाड्यो, सो दशमुख संहरियों रे ॥ को जग धर्म विना निव तरियों, पापी को निव तरियों रे ॥ को०॥ ५॥ श्रारण अनाय जी वह जीवन, शांतिनाय जग जाणों रे ॥ पारेवों जेणे शरणे राख्यों, मुनि तस चरण वखाण्यों रे ॥ को०॥६ ॥ मेघकुमार जीव गजगतिमां, शशकों शरणें राख्यों रे ॥ वीर पास जेणे जव जय कच्च्यों, तप संयम किर नाख्यों रे ॥ को० ॥ ६ ॥ को० ॥ को० ॥ वि सुख करियों रे ॥ श्रारणें राख्यों रे ॥ वीर पास जेणे जव जय कच्च्यों, तप संयम किर नाख्यों रे ॥ को० ॥ अशरण श्रारण श्राया जावना जिस्से स्थान स्था मिन निसरीयों रे ॥ को० ॥ अशरण श्रारण श्राया जावना जिस्से, श्रायों मिन निसरीयों रे ॥ को० ॥ वि

॥ श्रथ तृतीया संसारजावना ॥ ढाल पांचमी ॥ राग केदारो ॥
सर्व संसारना जाव तुं, समधरी जीव संजारी रे ॥ ते सवे तें पण श्रनु
जव्या, हृदयथी तेह उतारी रे ॥ स० ॥ रे ॥ सर्वतनुमां वसी नीसखो,
तें लीया सर्व श्रधिकार रे ॥ जाति नें योनि सब श्रनुजवी, श्रनुजव्या सर्व
श्राहार रे ॥स०॥१॥ सर्व संयोग तें श्रनुजव्या, श्रनुजव्या राग ने शोग रे ॥
श्रनुजव्या सुख इःखकाल तें, पण लियो निव जिनयोग रे ॥ स०॥३ ॥ सर्व
जन नातरां श्रनुजव्यां, पहेरिया सर्व सणगार रे ॥ पुजल तें परावर्तिया, न
वि नम्या जिन श्रणगार रे ॥ स० ॥ ४॥ पापनां श्रुत पण तें जएयां, तें क
खां मोहनां मान रे ॥ पापनां दान पण तें दियां, निव दीयां पात्रनां दा
न रे ॥ स० ॥ ४ ॥ वेद पण तीन तें श्रनुजव्या, तें जएया परतणा वेद रे
॥ सर्व पाषंक तें श्रनुजव्या, तिहां न संवेग निर्वेद रे ॥स०॥६ ॥ रहवड्यो
जीव मिन्नामृति, पशु इएया धर्मने काज रे ॥ काज कीधां निव धर्मनां,
हरिवयो पापने काज रे ॥ स० ॥ ९ ॥ कुगुरुनी वासना काकिणी, तिण
दम्या जीव श्रनंत रे ॥ तिहां निव मुक्तिपंश जीवख्यो, तेणे हवो निव
जव श्रंत रे ॥ स० ॥ इति तृतीया संसारजावना ॥ ३ ॥

॥ ए तुंहि छापकूं तूंहि ध्यार्ज जी, ध्यानज्ञान एकेखा ॥ जिहां तिहां तूं जाया एकेखा, जावेगा एकेखा ॥ ए० ॥१॥ हरि हर प्रमुखा सुर नर जा या, तेजी जग एकेखा ॥ ते संसार विविध पर खेखी, गया तेजी एकेखा॥ ए० ॥१॥ कोजी खीना साथ न तेखे, क्रिक्षण्य निव साथें॥ निज निज कर

णी खेइ गया ते, धन विण गखे हाथे॥ ए०॥ ३॥ बहु परिवारें म राजो खोका, मुधा मह्यो सब साथो॥ किंद्ध मुधा होशे सब चिंतो, गगनात णी जिम वाथो॥ ए०॥ ४॥ शांतिसुधारस सरमां फीलो, विषय विषं च निवारो॥ एकपणुं गुज ध्यानें चिंती, आप आपकुं तारो॥ ए०॥ ४॥ हिं सादिक पापें ए जीवो, पामे बहुविध रोगो॥ जलविण जिम माने एके लो, पामे छःख परलोगो॥ ए०॥ ६॥ एकपणुं जावी निमराजा, मूकी मि थिलाराजो॥ मूकी नरनारी सवि संगति, प्रणमे तस सुर राजो, प्रणमे सकल मुनिराजो॥ ए०॥ ॥ ॥ इति चतुर्थी एकत्वजावना संपूर्णो॥ ४॥

॥ अथ पंचमी अन्यत्वजावना ॥ ढाल सातमी ॥ ॥ राग केदारो गोडी ॥

॥ चेतना जागि सहचारिएी, आलस गोद्डं नाखी रे।।हृदयघर ज्ञान दीवो करे, सुमति उघाडी निज आंख रे ॥ चे ॥ १॥ एकशत अधिक अगवना, मोहि रणीया घरवारी रे ॥ हुं सदा तेह विंट्यो रहुं, तुऊ न चिंता किसि मारी रे॥ चे०॥१॥ जइ मुऊ ते अलगो करे, तो रमुं हुं तुऊ साथें रे॥ तेहथी हुं अलगो रहुं, जो रहे तुं मुक हाथें रे॥ चे०॥३॥ मन वचन तनु सने इंदिया, जीवधी जुजुआ होय रे ॥ अपरपरिवार सन जी वथी, तूं सदा चेतना जोप रे ॥ चे०॥ (पाठांतरे) तनु वचन सवे इंदिया, जीवथी ज्जूआ जोय रे॥ जो रमे तुं इणे जावना, तो तुज केवल होय रे ॥ चे०॥ ४ ॥ सर्व जग जीव गणि जूजुआ, कोइ कुणनो निव होय रे ॥ कर्मवशें सर्व निजनिज तणे, कर्मथी निव तस्त्रों कोय रे ॥ चे ॥ । । देव गुरु जीवपणे जूजुआ, जूजुआ जगतना जीव रे॥ कर्मवश सर्व निज निज तणे, जद्यम करे निव क्लींब रे ॥ चेण ॥६॥ सर्व शुज वस्तु महिमा हरे, क लियुगो छुष्ट जूपाल रे ॥ तिम छुकालोपि जनने हरे, अपरानी आश मन वाख रे ॥ चेण ॥ । विंता करे छाप तुं छापणी, म म करे परतणी छाश रे ॥ आपणुं आचखुं अनुज्ञव्युं, विचरि परवस्तु उदास रे ॥ चेण ॥ ए ॥ को किए जग निव उद्धरों, उद्धरे आपएो जीन रे ॥ धन्य जे धर्मी आ दर दिये, ते वसे इंद्र समीव रे ॥ चे० ॥ ए ॥ जो जुवे जूजुवा आतमा, देह धन जनकथी ध्यान रे॥ ते ग्रन्थ दुःख निव जपजे, जेहने मन जिन ज्ञान रे || चे० || १० || इति पंचमी छन्यत्व जावना ॥ ५ || .

॥ अथ षष्टी अशुचिजावना ॥ ढांख आठमी ॥ राग केदारो गोडी ॥ ॥ मंस मख मूत्र रुधिरे जच्चा, अशुचि नरनारीना देह रे ॥ वारुणी कुंज परें जावियें, अंते दिये जीवने ठेह रे ॥ मं० ॥ १ ॥ अशुज बहु रोग कफ नितु वहे, ए जखे जह्य अजह्य रे ॥ देहने जाणि जोखम घणां, देह बहु जीवनो जह्य रे ॥ मं० ॥ १ ॥ इति षष्टी अशुचिजावना ॥ ६ ॥

॥ अग्र ससमी आश्रवजावना ॥ ढाल नवमी ॥ राग मधुमाद ॥ ॥ जम शुजाशुज जेणे कर्म ति वेशिजें, शुज अशुजाश्रव ते वलाणों ॥ जलधरों जेस निद वर सरोवर जरे, तिम जरे जीव बहु कर्म जाणो ॥ ॥जणार॥ स म करे जीव तुं अशुज कर्मादरा, वासवा पण सकर्मा न बू टे ॥ जेणे जल दान वर पुण्य निव आदस्यां, ते कृपण निर्धना पेट कूटे ॥ जण ॥ १ ॥ सन वचन काण विषया कषाया तथा, अविरति अशुज ध्यान अमादों ॥ सृकि मिण्यामित वर उपासक यती, जग शुजाश्रवथकी नोविषादो ॥ जणार ॥ राच म म जीव तुं कुंदुंब आमंबरें, जल विना मे घ जिम फोक गाजे ॥ धर्मनां काजविण म कर आरंज तूं, तेणे तुज कर्म नी जीड जांजे ॥ जण। ॥ ॥ ते अशुज आश्रव कंधतां जीवने, संवरों संवरे कर्म जालं ॥ नावनां छिद्ध कंध्या यथा नीरने, तेणे करी जीत संवर विशालं ॥ जण। ॥ ॥ । इति सप्तमी आश्रवजावना ॥ ॥ ॥

॥ अथाष्ट्रमी तपोन्नावना ॥ ढांख दशमी ॥ राग गोडी ॥

॥ तापें मीण गखे जिम माखण, तथा कर्म तपतापें रे ॥ कंचनकाट गखे जेम आगें, पाप गखे जिन जापें रे ॥ ता० ॥ १॥ ते तप बार जेद शुं की जें, कर्मनिर्जरा होवे रे ॥ सो मुनिवरनें होय सकामा, अपर अकामा जोवे रे ॥ ता० ॥ १ ॥ अनशन जनोदरी रसत्यागों, की जियें वृत्तिसंकेषों रे ॥ संखीनता करी काय किखेशों, टखें कर्मना खेशों रे ॥ तो० ॥ ३ ॥ पा यित्र विनय वेयावच, सखायों वर खाण रे ॥ काउस्सग्य की जें जेणे जिन जन, तस तप मुक्ति निदान रे ॥ ता० ॥ ४ ॥ इत्यष्टमी तपोजावना ॥ ।।

॥ अय नवसी धर्मजावना ॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ राग केदारो गोडी ॥ धर्मथी जीवने जय होये, धर्मथी सिव डुःखना श रे ॥ रोग ने शोक जय उपशमे, धर्मथी श्रमर घरवास रे ॥ धर्मण ॥ १॥ पुर्गतिपापथी जीवने, धर्मविण निव धरे कोइ रे ॥ वांबित दिये सुरतरु परें, दान तप शीलथी जोइ रे ॥ ध० ॥ १ ॥ धर्मवर साधु श्रावक तणो, श्रावस्थो जावशुं जेह रे ॥ सर्व सुख सर्व मंगल तणुं, श्रादखुं कारण तेह रे ॥ ध० ॥ ३ ॥

॥ अथ दशमी दानजावना ॥ ढाल बारमी ॥ राग धन्याश्री ॥ ॥ जे नरा साधु आधार वरदायका, ते नरा धन्य जगविबुध गायाः॥ जे वते योगवर साधुने निव दिये, ते काशकुसुमपरें फोक जाया ॥ जेष्णा ॥ १॥ निर्मलो मुक्तिनो मार्ग जिनशासनं, साधु विण दान विण क्ष न चाले ॥ पामतो मनुज जो साधुने निव दिये, सो करो कपिल दासीय वाले ॥ जे०॥ १॥ अकलतुं हाट नर मुक्तितुं वाट नर, नाट तुं म कर तप पुष्य केरो ॥ कर्मने काट जतार नरजन बही, धीठ म म बोख जन वारि फेरो ॥ जे० ॥ ३ ॥ ज्ञान विज्ञान छाचारपद नरजवो, पामियो पूर्व जव पुष्ययोगें ॥ पुण्यविण पद्यजवें जीच परवश पड्यो, अस्त्रद्यं मारियें अधम लोगें ॥ जेव ॥ ४ ॥ जीव ते नरचवें अशुप्तचवें पशुपणे, जीवतां जीवनी कोडि मारी ॥ पुर्णाविण पशुनवें रासन उकरडे, मल नखे पूंठ तृण गुणि धारी ॥ जेण ॥ ए ॥ जीवहिंसा सनि पाप ए जीवने, पापीयें आदस्या जीव साटे ॥ खाटकी हाट ते विविधपरें काटियें, अमिमां दा टियें पाप माटे ॥ जे० ॥ ६ ॥ पुएयथी दैव दुक्त देह रूडो घड्यो, आणी यो जैनकुल पुएय काजें ॥ धर्म नरजन्म जो जीव हारीश तुं, घशिश नि ज हाथडा श्रशुत्र राजें ॥ जे॰ ॥ ७ ॥ दान तप शील संयम दयाधर्मथी, सर्वसुख इक्षि जो तुं विचारी॥ सर्वशुत्रयोग हारीश जो तुं पढें, घशिश जिम हाथ हास्वो जुआरी ॥ जे० ॥ ७ ॥ जिसीअ गणिकातणी खाट सा धारणी, तिसित्र मिथ्यामति जग न रूडी ॥त्यजिष्य हिंसां कुधमीदि स वि पाप तुं, विश्वमां मोकले कीर्त्ति रूडी ॥ जे०॥ ए॥ पाट म म राखजे पाप आचारनो, फांट म म पाडजे धर्स वाटें ॥ जाट परें अणविशास्युं कि शुं म म करे, खोट म म पाडजे धर्म हाटें ॥ जे०॥ १०॥ जो तुरु सुख गमे सर्वेडु:ख निव गमे, विषय सो वीर रस त्यजिय खाटो॥(पाठांतर) विषय सोवीर तो त्यजीय गाढो।।आत्म अध्यात्मवर ध्यान कुंजे रमी,धर्म वर जावना श्रमृत चाटो ॥ जे० ॥११॥ इति दशमी दानजावना ॥११०॥

॥ अथैकादशी शमरसन्तावना ॥ ढाल तेरमी ॥ राग वैराडी ॥ जे त्रीजे

ा जिवक जीव पूछे निज गुरुने, अगुज कर्म किम कारे ॥ अमण्धर्में निःसंज्ञी जीवो, जो शमतारस चारे रे ॥ जिवका शमरस अमृत चारो ॥ शा कुव्यसन मूको मननो आंटो, सदोष पिंमे म जरो ठाठो ॥ सब परसुखें म म विषवारो ॥ जण्॥शण्ण ए आंकणी ॥ वींध्यो जीव कर्मविष कांटें, पीड्यो चारगति फांटे ॥ गुजजावें देतां दृढ पाटें, कर्म गूंबकूं फाटे रे ॥ जण्ण ॥ शा पापपिंम असत्यज दूजो, जो कषाय मद मारे ॥ निखिल पाप निःसंगी जीवो, रहेतो सम छुःख कारे रे ॥ जण्ण ॥ शा जननां सब सुखगुज ध्यान सुलेश्या, छुकाल मूसो कारे ॥ दान पुण्य जननां सब तेणे, वादल परें सब फाटे रे ॥ जण्ण शण ॥ शा रोग शमे जेम अमृत छांटे, हृदय पडी निव आंटे ॥ धर्म करंतां जिवकजीवनें, शिव सुख आंवे आंटे रे ॥ जण्ण शण ॥ शा शण श्वा स्वा सुलेश्या सुलेश्या सुलेश स्व करंतां जिवकजीवनें, शिव सुख आंवे आंटे रे ॥ जण्ण शण ॥ शण विण किम शिविगरिवर चढियें, हीण पुण्य जन रांटे ॥ वेसे जो जिन गुण्मणि साटे, तो सब जव छुःख कारे रे ॥ जण्ण ६ ॥ इति एकादशी शमरसजावना ॥ ११ ॥

॥ अय द्वादशी लोक जावना ॥ हाल चौदमी ॥ राग परजीयो ॥ ॥ ज्ञान नयनमांहे त्रिजुवन रूपी, जेणें जिन दीठो लोगो ॥ धणी श्राव्यो षट्डव्य रूपो, प्रणमो तस जिनयोगो ॥ र ॥ मुनिवर ध्यावो अहियदीव लोगो ॥ए आंकणी ॥ जिहां जिन मुनिवर तिरू अनंता, तिहां निहें ज्ञान वियोगो ॥मु०॥ध्याण॥१॥ आपें सीधो केंणे न कीधो, लीधो केंणे निव जावे ॥ आदि निहें जस होये एतो, केवल नाणी जावे ॥ मु०॥ध्याण।३॥ अधो लोक वत्रासन सम वहे, तीठों जल्लरी जाणो॥ ऊर्ध्वलोक मृदंग समाणो, स कल मुनि चित्त आणो ॥मु०॥ध्याण।४॥ इति द्वादशी लोकजावना ॥इति महामहोपाध्याय श्रीसकलचंद्रमुनिविर चित द्वादशाजावनाः सञ्चायसमाप्तः

॥ अय अष्टमीनी सद्याय ॥ हो सुंदर ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसरखती चरणे नमी, आपो वचन विखास ॥ जिवयण ॥ अष्टमी
गुण हुं वर्णवुं, कि सेवकने ऊद्धास ॥ जि ॥ १ ॥ अष्टमी तप जावें करो
॥ ए आंकणी ॥ आणी हर्ष उमेद ॥ जि ॥ तो तुमें पामशो जव तणो,
करशो कर्मनो हेद ॥ जि ॥ अष्ट प्रवचन ते पाछीयें, टाखीयें

मदनां गम ॥ ज०॥ अष्ट प्रातिहार्य मन घरी, जिपये जिननुं नाम ॥ ज०॥ अ०॥ ३॥ एहवुं तप तुमें आदरो, घरो मनमां जिनधर्म ॥ ज०॥ त्रि तो तुमें बुटशो आपदा, टाक्षशो चिहुं गित मर्म ॥ ज०॥ अ०॥ ४॥ ज्ञान आराधन एइथकी, लिइयें शिवसुख सार ॥ ज०॥ आवाग मन जन निव हूर्ज, ए वे जग आधार ॥ ज०॥ अ०॥ ४॥ तीर्थंकर पदवी लहे, तपथी नवे निधान ॥ ज०॥ जूर्ज मिल्ली कुमरी परें, पामे ते बहु गुण ज्ञाम ॥ ज०॥ अ०॥ ६॥ ए तपना वे गुण घणा, जांखे अीजिनज्ञ ॥ ज०॥ अशिवजयरलसूरींदनो, वाचकदेव सूरीश ॥ ज०॥ अ०॥ ३॥

॥ अय त्रावित्रावनी सञ्चाय ॥ राग वंगाली ॥

॥ कर्में लखीयुं निश्चय र होय, नहिं होय जोर जावीशुं कोय ॥ नावि नां मिटे ॥ जद्यम है सा ना।वके दाथ, नाविकुं नदी किसहीको साथ ॥ जावि०॥१॥ जावि तुं है आपही राजान, उद्यम है राजाको हीवान ॥ जावि० ॥ सादेवको तव हुए रे मिलाप, पहेलां प्रधानने मिलियें छाप ॥ जावि० ॥ १ ॥ धर्म कर्म र्टर सब हुवे काम, निश्चय पूरे मनकी हाम ॥ जावि०॥ होणहार जे हुवे अधिकार ॥ मति उपजे तैसी तेणि वार ॥ जाविण ॥ ३ ॥ कर्मे राम खक्कण वनवास ॥ सीता वचनें मति गइ नास ॥ जावि० ॥ न सुखो कनक वेद पुराख, धाया मारख नावि प्रमाण ॥ नावि०॥ ४॥ त्रिकूट वेट लंकानुं रे राय, रावणना सुर सेवे पाय ॥ जावि० ॥ योगी वेश करी अपहरि सीत, युद्ध करंतां न यइ जीत ॥ जावि०॥ ५ ॥ कृष्णपुत्रः सांवादि कुमार, द्वैपायन् कृषि खुट्यो खपार ॥ जावि ॥ द्वारिकानो तेणे कीधो रे खोप, जावीथी न गयो तस कोप ॥ नावि० ॥ ६॥ आठमो वारमो विख चक्रीश, इणिया ब्राह्मण आणी रीष ॥ जाविष ॥ ब्रह्मदत्तनी गइ दोय आंख, तमस्तमा गयो सूत्र दे साख॥ नावि०॥ ॥ गुंव घरे वह्यं नीर हरिचंद, राज पाल्युं नावि नवनंद ॥ जाविष् ॥ वीरतणो हुउं गर्जापहार, ते सवि जा वीनों अधिकार ॥ नाविण ॥ ज ॥ नरतेश्वरनी खटखंम आण, आरसी खद्दीनं **ल**ह्युं केवलनाण ॥ जावि० ॥ तप जप की घो नही रे लगार, जावि थकी लह्यों संसार ॥ जावि०॥ ए॥ स्त्री वचनें करि आईकुमार, दीहा तजी रह्यो घरवार ॥ जाविण ॥ वरस चोवीश खर्गे पाख्यो रे नेह, चरम

शरीरी हे पण तेह ॥ जावि०॥ १०॥ दीका खेतां सुर दीये रे शीख, श्र वसर निहं तुफ नंदीषण दीख ॥ जावि०॥ बार वरस रह्यो गणिकाने गेह, जोग कर्में दीधो निहं हेह ॥ जावि०॥ ११॥ चहिर सय बावन गणधार, तेसांहे गौतम लिब्धजंमार ॥ जावि०॥ जे दिखे ते पहेला मुक्तें रे जाय, पही पोताने केवल थाय ॥ जावि०॥ ११॥ एम श्रनेक सं बंध श्रपार, समजो सहुकोइ हैडा मफार ॥ जावि०॥ कोडी सया बुद्धें कर जोड, पण जाविनी न करे कोइ होड ॥ जावि०॥ १३॥ हिम चंड पणि परें बोले श्रायम, जावि करे ह्यमनी जीत ॥ जावि०॥ मिन चंड पणि परें बोले श्राणगार, शास्त्र हपरें कीधो श्रिकार ॥ जावि०॥ १४॥ इति॥ ॥ श्रथ सुगुरु गुणनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ पंच महावत सूधां पाले, अंतरंग मल टाले ॥ वत दूषण क्षण क्षण संजाले, झान किया अजुवाले ॥ १ ॥ सुसाधु ग्रुरुगुं मेरो मन माने ॥ ए आंकणी ॥ आगम कसतां जे कस पहोंचे, ते कसने ग्रुरु माने ॥ सोना तणी परें जे कस पहोंचे, दिनदिन चढते वानें ॥ सु० ॥ १ ॥ सूत्र अर थशुं प्रीत करीनें, आपण्डं मन रहे ॥ उत्तयकाल जे जाजन उपकरण, संजाली पिं लेहे ॥ सु० ॥ ३ ॥ खरारे वपोरे अतिथिनी वेला, गोचरीवें मुनि जावें ॥ निर्टूषण आहारादिक न मले, तो मन ऊणो न आवे ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ आणगालादिक पूषण पांचे, जोजन वेला टाले ॥ आवे प्रवचन माता निरतें, जयणाशुं प्रतिपाले ॥ सु० ॥ ४ ॥ कर्मकथा जे वचनपरीसह, ते मनमांहे अहियासें ॥ सु० ॥ ६ ॥ धर्मतणुं कांद्र कारण जाणी, निज शरीर पण उंमे ॥ उपसर्गादिक आवे हूंते, व्रत पच्चकाण न खंमे ॥ सु० ॥ १ ॥ काल प्रमाणे संयमनें खप, जोईने ग्रुण लीजें ॥ विनयविमल पंकित एम बोले, तसु पाय वंदन कीजें ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ मायाने वश खोढ़ं बोखें, पुष्यनी वात बिगाडे रे ॥ उंमा जलमां जे नर पेसे, बीजाने बूमाडे रे ॥ १ ॥ मूरखडां खोको आसम अनुजव जाणो ॥ ए आंकणी ॥ चूवा चंदन अंग खगावे, जे नर हींमे आठा रे ॥ तेहनुं जल पण तो हुं जाणुं, जो जमने वाले पाठा रे ॥ मू० ॥ १ ॥ पापसंघातें माया मांके, मोह तणे वश पडिया रे ॥ माहरुं माहरुं करता हीं में, ते नर कमें नडिया रे ॥ मूº ॥ ३ ॥ अहं कारीने खोज घणेरो, मनमां राखे काती रे ॥ जीवतणी जयणा नहिं जाणे, ते सरिखो नहिं घाती रे ॥ मूण्॥ ४ ॥ रूडुं कहेतां रीष चढावे, राचे मूरख साथें रे ॥ पाप ताणी गांगडली बांधी, मरवुं लीधुं माथे रे ॥ मूण ॥ य ॥ घोडा वहे ख पालखीयें चढवुं, जोंय पगहुं निव धरवुं रे ॥ जातजातनां जोजन क रवां, तो, ए आखर मरवुं रे ॥ मूण ॥ ६ ॥ हाथीनी अंबाडीयें चढवुं, जपर उत्र ते धरबुं रे ॥ आगल पाला झोड करे पण, तो ए आलर मरबुं रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ नोवत ने निशान गडगडें, हाकम थइने फरवुं रे ॥ आगल हाथी वेसण हाथी, तोये आखर मरवुं रे ॥ मूण ॥ ज ॥ गर्वे मातो द्रव्यें तातो, मारुं मारुं करवुं रे ॥ रखी रखी जंमारज जरीया, तो पण आखर मरवुं रे ॥ मूण ॥ ए॥ मंदिर मालियां गोख जालियां, मेडी जपर चढवुं रे ॥ सुंदरस्त्रीं द्युं जोगं जोगवता, तोए आखर मरवुं रे ॥ मू० ॥ १० ॥ परमातमशुं प्रीति बनाबो, नीच संग न करियें रे ॥ सुमतिमंदि रमां वासो वसियें, तो जवसायर तरीयें रे ॥ मू० ॥ ११ ॥ नाना महोटा राजा राणा, सहुनो मारग एक रे ॥ मूरख कहे धन मारुं मारुं, पण मेखी जावुं रे ढेक रे ॥ मूण ॥ ११ ॥ शीयल अमूलक वगतर पेरी, जीतो मोइ मेवासी रे ॥ दुर्जनेथी जो दूरे रहीयें, तो यइयें सुखवासी रे ॥ मू० ॥ १६॥ केवलरूपी साहेब मेरा, तास जजनमां रहियें रे॥ निल्याज कहे प्रजु गोडी पारस, तेहं थी अनुजन सहियें रे ॥ मू<sup>ं</sup> ॥ १४ ॥

॥ अय अध्यातम सद्याय ॥ राग काफी ॥
॥ किसके चेले किसके वे पूत, आतमराम एकिले अवधूत ॥ जीव जान ले ॥ अहो मेरे ज्ञानीका घर सूत, दिल मान ले ॥ १ ॥ आया ए किला जावेगा एक, आप स्वारयी मिलया अनेक ॥ जी० ॥ मिटय गरीं दकी जूठ ग्रमान, आजके काल गिरेगी निदान ॥ जी० ॥ १ ॥ तृष्णापा वलडी वर जोड, वालु काहेकुं सींच्यो गोर ॥ जी० ॥ आगों अंगीठी नावे गी साथ, नाथ रहोगे खाली हाथ ॥ जी० ॥ ३ ॥ आशा जोली पातरां खोज, विषय जिक्ताचर नायो थोज ॥ जी० ॥ कर्मकी कंथा मारो पूर, वि नय विराजो सुल जरपूर ॥ जी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंकित श्री देवचं प्रजीकृत समक्रितनी सद्याय ॥

॥ समिकत निव बहुं रे, ए तो रुखो चतुर्गित मांहे॥ त्रस थावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीन काल सामायिक करतां, शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ समिकत० ॥ १ ॥ जूव बोखवाको व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक महानिपुण जयो, पण श्रंतर्हिष्ट न जागी ॥ स० ॥ १ ॥ अर्ध्वजुजा करि उंधो लटके, जस्म लगा धूम गटके ॥ जटा जूट शिर सूंमे जूवो, विण श्रद्धा जव जटके ॥ स० ॥ ३ ॥ निज परनारी त्यागज करके, ब्रह्मचारी व्रत लीनो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निजकारज निव सीध्यो ॥ स० ॥ ४ ॥ बाह्य किया सब त्याग परिमह, प्रव्य लिंग थर लीनो ॥ देवचंद्र कहे श्राविध तो हम, बहूत वार कर लीनो ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

H अय श्री आत्मोपदेश सद्याय ॥

॥ सासरीय एम जर्थे रे बार्, सासरीयें एम जर्थे ॥ जिनधर्म ते सासरं कहीयें, जिनवर देव ते ससरो॥ जिनळाणा सासू रढीयाखी, तेना कह्यामां विचरो रे बाइ ॥ सासरीये० ॥ १॥ अरां ने परां क्यांहि न ज मीयें, जमतां जस निव बहीयें रे बाइ ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ शियल स्वजाव सोहे घाघरीयो, जीवद्या कांचलडी ॥ समिकत उंढणी उंढीरे जीएी, शंकामेखे न खरडी रे बाइ ॥ साण ॥ १ ॥ निश्चय ने व्यवहार तणा वे, पाये नेजर खलके ॥ वेजविध धर्म साधु श्रावकनो, कानें अको टा फलके रे बाइ ॥ सा॰ ॥ ३ ॥ तपतणा वे बेरखा बांहे, तगतगे तेजे सारा ॥ ज्ञान परमत तणुं ते अर्चा, मांहे परिणामनी धारा रे बाइ॥सा० ॥ ४॥ राग सिंदूरनुं की धुं टी खुं, शियखनो चांमखो शोहे ॥ जावनो हार हैयामां बहेके, दाननां कांकण सोहे रे बाइ ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुमति सा हेली साथें लेइनें, दीठे मारग वहीयें।। क्रोध कषाय कुमति अज्ञानी, तेह्थी वात न करीये रे बाइ ॥ सा० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्वी पीयरमां न वसी यें, रहेतां अलखामणां यश्यें ॥ मोह माया मावतर वीरुआं, दोहिलो काल निगमीयें रे बाइ॥ सा०॥ ७॥ अनुजवप्रीतम साथे रमतां, प्रेमे आनंदपद सिहयें ॥ विनयप्रज सूरी प्रसादें, जावें शिवसुख सहीयें रे बाइ ॥ सा॰ ॥ ७ ॥ इत्यात्मोपदेश सद्याय संपूर्णः ॥

## ॥ अय द्वितीय श्री आत्मोपदेशनी सञ्चाय ॥

॥ हुं तो प्रणमुं सद्गुरु राया रे, माता सरसतीना वंद्सं पाया रे, हुं तो गाऊं आतम राया ॥ जीवनजी वारणें मत जाजो रे, तुमे घेर बेठा कमा वो चेतनजी, वारणें मत जाजो रे ।। रा। ताहरे वाहिर दुर्मति राणी रे, के तासुं कुमति केहेवाणी रे, तुनें जोलवी वांधरो ताणी रे ॥ जी० ॥ बा० ॥ श। ताहारा घरमां हे त्रण रतारे, तेनुं करजे तुं तो यत रे, ए अखूट खजीनों हे धन रे ॥ जी० ॥ बा० ॥ ३ ॥ ताहरा घरमां पेठा हे धूतारा रे, तेने काढोने प्रीतम प्यारा रे, एथी रहो ने तुमें न्यारा ॥ जी० ॥ वा० ॥ ४॥ सत्तावनने काढो घरमांथी रे, त्रेवीशने कहो जाये इहांथी रे, पढी अनुजन जागरो मांहेथी ॥ जीण ॥ वाण ॥ ए॥ शोख कषायने दीयो शी खर, अहार पापस्थानकने मगावो जीखरे, पहे आठ करमनी शी बीक ॥ जी० ॥ वा० ॥ ६ ॥ चारने करोने चकचूर रे, पांचमीशुं थार्ड हजूर रे, प्वे पामो आनंद नरपूर ॥ जीए॥ वाण ॥ छ॥ विवेकदीवे करो अजुवा सो रे, मिध्यात्व **छांधकारनें टालो रे ॥ प**ढें छानु जब साथें मालो रे ॥ जीव ॥ वाव ॥ व ॥ सुमित साहेखी हुं खेलो रे, डुमीतिनो हेडो मेहलो रे, परे पामो मुक्ति गढ हेलो रे ॥ जी ॥ वा ॥ ए॥ ममतानें केम न मारो रे, जींती वाजी कांइ हारो रे, केम पामो जवनो पारो रे ॥ जी०॥ ॥ वा०॥ १०॥ शुद्ध देवगुरु सुपसाय रे, मारो जीव त्रावे कांइ ठाय रे, पढे आनंदघनमय थाय रे ॥ जी० ॥ वा० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ त्र्यथ शियल विषे शिलामण्नी सचाय॥

॥ ढाल पहेली ॥ सुण सुण प्राणी शीखडी, लंपटशुं लोजाणो रे ॥ खल नाशुं लागी रह्यो, वदन जोइ विकलाणो रे ॥१॥ नारीने निरखी रखे, जा णो चंपकली ए फूली रे ॥ समजे विषनी वेलडी, मत रहे तिण पर फूली रे ॥ ना० ॥ १ ॥ क्रण रोवे क्रणमें इसे, क्रण वली विरहें प्रजाले रे ॥ प्री त घरे क्रण पापिणी, क्रण वली रोष देखाडे रे ॥ ना० ॥ ३ ॥ जन पूछे तव जारने, कहे मुज बांधव एहो रे ॥ सूंस करी अति आकरा, कूड कप टनो गेहो रे ॥ ना० ॥ ४ ॥ समजावी करी सानशुं, केने नयननी शा ने रे ॥ पमनी गति शानें करी, वचन तणे अनुमानें रे ॥ ना० ॥ ५ ॥ मुख मरडीने कोइशुं, वात करे विषयाली रे ॥ पाडी पुरुषने पाशमां, देइ मीट ने चाली रे॥ ना०॥६॥ धन वीर्य चित्त रूपनी, हरिणाक्ती हरना री रे॥ कामिनि सरखी को नहिं, धरतीमां धूतारी रे॥ ना०॥ ॥॥ जे हवे चंचल वीजली, चंचल कुंजर कानो रे॥ चंचल वान संध्या तणो, चं चल पींपल पानो रे॥ ना०॥ जा। जेहवो रंग पतंगनो, जेहवी वादल ग्रंहो रे॥ नेह इस्यो नारी तणो, जेहवी कायर बांहो रे॥ ना०॥ ॥॥ ॥ ढाल बीजी ॥ देशी नाराणानी॥

॥ अथिर मूछ उंदर ताी रे, अथिर ज्युं ठारनो त्रेह ॥ प्राणीडा ॥वर्जे वबीखडी जी ॥ मुग्ध किर्युं मोही रह्यों रे, अथिर तो नारीनो नेह ॥ प्राण ॥ वरण ॥ र ॥ कामिनी फूली केलशी रे, रखे मन समजे एमं ॥ प्राण् ॥ वण् ॥ क्रांकचना कांटा जिसी रे, जाणे कोची जेम ॥ प्राण् ॥ वण ॥ १ ॥ एकने मूकी आदरे रे, वली बीजानो संग ॥ प्राण्॥ वण॥ बीजाथी त्रीजो जुवे रे, जेहना नव नव ढंग ॥ प्रा० ॥ व० ॥ ३॥ निज स्वारथ अण पूगते रे, वदन करी रे विकराख ॥ प्रा०॥ व०॥ प्रीति पूरवनी मूकीने रे, दे मुखमांथी गाल ॥ प्राण ॥ वण ॥ ४ ॥ जोया विण् जिम तिम खवे रे, नारी निद्धर निटोख ॥ प्राण्॥ वण्॥ खवती पण खाजे नहीं रे, बोले इलका बोल ॥ प्रा० ॥ व० ॥ ५ ॥ कदिय न होये केहनी रे, नीच नारीनी जात ॥ प्रा० ॥ व० ॥ विश्वास करे जे तेइनो रे, तेनो करे ते घात ॥ प्राण्॥ वण्॥ ६॥ विषयथकी विष देइने रे, सूरिकंता रे नार ॥ प्राण् ॥ वण्यो प्रति परदेशी मारियो रे, जो जो कामविकार ॥ प्रांण ॥ व०॥ ७ ॥ दीधेशुं खपटी करे रे, पाप वली प्रजूत ॥ प्रा०॥ व०॥ लाखमांहे परजालियो रे, चुल्लाणीयें निज पूत ॥ प्राण्॥ वण्॥ ए॥ इंस वह निज पुत्रने रे, हंसाविधयें हेज ॥ प्राण् ॥ वण्॥ प्रार्थना करी लोक नी रे, देखी करुणा तेज ॥ प्राण्॥ वण्॥ ए॥ कुमरी कहेण मान्युं नहीं रे, करियो प्रार्थना जंग्॥ प्राण्॥ वण्॥ स्थापी सुतने स्थापदा रे, जुर्व रम णीना संग ॥ प्रा० ॥ व० ॥ १० ॥ खीलावतीयें प्रार्थियो रे, विक्रम चरित्र निज जात ॥ प्राण्॥ वण्॥ श्रंग वसूरी त्रापणुं रे, दियुं पुःख सुतनी मात् ॥ प्रा० ॥ व० ॥ ११ ॥

॥ ढाख त्रीजी ॥ जंबू द्वीपना जरतमां ॥ ए देशी ॥ ॥ वरवी तो वाघण जेसी, वीठण जेहवी रे ॥ सापणी शाकिणीथी बूरी, नारी वे एह्वी रे ॥ नारी जूंमी ॥१॥ फटकी रे मटकी वेह दे, एह्वी जा णी जूलो रे ॥ विकसित वदन तुम देखीने, मत जाणो मुख फूलो रे ॥ नाण् ॥ १ ॥ इत्यादिक श्रवगुण घणा, जाणी धरजे शीलो रे ॥ प्राणीयडा सुण शिलथी, लिह्यें श्रवचित लीलो रे ॥ नारीण ॥ ३ ॥ एक मूरख माली परें, मधुयें जिम वींटाय रे ॥ ज़मर सरीला जाण ते, रस लेई दूर याय रे ॥ नारीण ॥ ४ ॥ शेव सुदर्शन सारिला, जंबू वयर कुमारो रे ॥ नारीण ॥ ४ ॥ बेलहारी जंदनी, चरण शरण मुफ तेहनुं रे ॥ पातक सर्व पखालीयें, ध्यान धरी वली एहनुं रे ॥ नारीण ॥ ६ ॥ कामिनी फुल किंपाक शी, ज्ञान सागर एम लिह्यें रे ॥ तन मन चपल त्रिया तणां, जाणी श्रवणा रिह्यें रे ॥ नारीण ॥ ९ ॥ इति शियलविये शिखामण सञ्चाय ॥

॥ श्रथ कुगुरुनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ वेडो नांजी॥ए देशी॥शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मू के ॥ बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अन्यंतरथी चूके ॥ १॥ कपटी कहिया एह जिएंदें, डुष्टनुं नाम न लीजें ॥ ए आंकणी ॥ कालां कपडां खंने धावली, काख देखाडी बोले।।तरुणी सुंदर देखी विशेषें, पुस्तक वांचवा बोले॥कण ॥ १ ॥ पेंमा देखी काढे पडघो, पडघा मान करावे ॥ खाजां वहोरे खांत क रीने, पूरीने वोसिरावे ॥ कण ॥ ३ ॥ ज्ञानिमधें उपदेश देशने, सूक्ष्म परि मह राखे ॥ ए कपटीनुं नाम न लीजें, इम जत्सूत्र जे जांखे ॥ क० ॥ ॥॥ ताल कूटवा साथें हीं में, श्राविका हे दश वार ॥ यात्राने मिष एणी परें विचरे, घूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणुं, व खी खावे अधरोर ॥ तो**दी ता**खा इणि परें वोखे, उपवासें आवे फेर ॥ ॥ क०॥ ६॥ वगलानी परें पगलां मांने, आडुं नोढुं जोवे ॥ महिला साथें वोले मी हुं, साधु वेष वगोवे ॥ कण ॥ छ ॥ आचारांगें वस्त्रनो जांख्यो, श्वेतने मानोपेतें ॥ ते तो मारग दूरें मूक्यो, कपडां रंगें हेतें ॥ क०॥ ७॥ वाजीगर जेम वाजी खेले, धीवरे मांकी जाल ॥ ते संवेगी सूधा मत जाणो, ए सहु आल जंजाल ॥ कण्॥ ए॥ ऊंचुं घर अगोचर होवे, मासकब्प तिहां कीजें ॥ सुखशातायें पडिखेहण चाले, साधु जन्म फल लीं जें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

मलीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कथानां कर्मज बांधे, मनमां थइ उज माल ॥ कण ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिलाने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अहा रमो जपधान वहो तो, अम तुम मलशे धात ॥ क०॥ रेश॥ तव ते का मिनी हसीने बोले, साचुं कहो हो स्वाम ॥ गहवासी गुरु आवीने वढशे, तव तुम जारो महाम ॥ क० ॥ १३ ॥ नीचुं जोइने इणीपरें जांखे, जणवा नो खप कीजें ॥ नानी वय हे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजें ॥ कण ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पंथें चाले, शहरमां नीचूं जोवे ॥ गड बड गाडांनी परें चाले. जिनशासनने वगोंवे ॥ कण ॥ १५ ॥ रुमाल पाठां रूडां वेचे, जूनां हाथमां काले ॥ तृष्णा तोये किमहि न मुके, वली जा णे कोइ आले ॥ कण ॥ १६ ॥ ठकाय जीवनो दाह करावे, ठाम ठाम पाप बंधावे ॥ आंबिल तपनुं उंतुं लक्ष्ते, कांक् अमने वहोरावे ॥ कः ॥ ॥ १७ ॥ कदाग्रहमां पहेला व्रतनो, एहने लागे दोष ॥ मृषावाद तो पग पग बोले, तेहनो न करे शोष ॥ कण ॥ १० ॥ अदत्तं वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा वतनी वात हे महोटी, तहमां काम जगावे ॥ कण्॥ १ए॥ विधवा पासे विद्वल यहने, काम कुसंगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सेवे, चोथा वतने जांगे ॥ कुण्॥ १०॥ मैथुन सेवे परिग्रह मांहे, प्रौढां पातक बांधे ॥ रासजनी परें लोट्या हींने, वली उ घाडे खांधे ॥ कण ॥ ११ ॥ वह श्रष्ठमादि ने श्रष्ठाई, नाम धरावे तप सी ॥ महिमा कारण राखें खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ कण ॥ ११ ॥ नगर पिंमोलीया यइने विर्लज, पासहा यइ बेसे ॥ चोराशी गष्ठ वहो री खावे, महोटा घरमां पेसे ॥ कण ॥ १३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोबे, आंखे करे वे चाला ॥ मांहो मांहे शानें समजे, आंखे करे वे टाला॥ का।। १४॥ ए कपटीनो संग निवारो, जेखे ए जेख वगोयो ॥ जेखन्हा पी महा ए जूंको, मनुष्य जनम फल खोयो ॥ क०॥ १५॥ आदियकी अरिहंत आचारिज, जपाध्याय ने साधु ॥ धोले नेखें सहु एम बोले, वारुने आराधुं ॥ कपटी० ॥ १६ ॥ मूल पंथ मिथ्यात्वें चाले, समजतो नहीं लेश ॥ जिनमतनो मारग ठांमीने, कलहों करे विशेष ॥ क० ॥ १९ ॥ श्राप मतीनो संग तजीने, साधु वचने रहियें ॥ वाणी वाचकजस एम बोखे, जिन आज्ञा शिर गहियें।। कण ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ षद्साधुनी सद्याय ॥

॥ राग गोडी खथवा रामधी ॥ मनडुं ते मोह्युं मुनिवर माहरुं रे, देव की कहे सुविचार रे ॥ त्रीजी ते वार आव्या तुमो रे, मारो सफल कस्चो अवतार रे ॥ मनडुं० ॥ १॥ ए आंकणी ॥ साधु कहे सुण देवकी रे, अमो बुं बए चात रे ॥ त्रोहि संधाडि धर ताहरी रे, अमो बेवा आहारनी दात रे ॥ म० ॥ १ ॥ सरखी वय सरखी कला रे, सरखा संप शरीर रे ॥ तन वान शोजे सारिखा रे, जे देखी जूखी धीर रे ॥ मण ॥ ३ ॥ पूर्व नेह धरि देवकी रे, पूछी साधुनी वात रे॥ कोण गाम वसता तमो रे, कोण पिता कोण मात रे ॥ मण ॥ ४ ॥ जिह्न अपुरवासें पिता रे, नाम गा हावई सुखसा मात रे ॥ नेम जिएंद वाणी सुणी रे, पाम्या वैराग्य विख्यात रे॥ मण्॥ ५॥ वत्रीश कोडि सोवन तजी रे, तजी वत्रीश नार रे ॥ एक दिने संयम खीयो रे, जाणि अविर संसार रे ॥ मण ॥ ॥ ६ ॥ पूर्वकर्मने टालवा रे, धर्यो व्यवहम जदार रे ॥ आज व्यवसण नहिं वाणी रे, त्र्याच्या नगर मकार रे ॥ म०॥ ॥ नानी महोटी बहु धरी रे, फरतां पहोता एज आवार्ते रे॥ एम कही साधु वल्या रे, चाल्या नेम जिएंदनी पासें रे ॥ मण ॥ ण ॥ साधु वचन सुणि देवकी रे, चेलां हृदय मजार रे ॥ वालपणे मूजने क्ह्युं रे, निमित्ती पोलासपुरी सार रे ॥ म०॥ ए॥ त्राव पुत्र ताहरे थशे रे, तेहवा न जनमे अनेरी मात रे॥ ए जरत केत्र मध्ये जाणी रे, तेतो जूठी निमित्तनी वात रे ॥ मण ॥१०॥ ए संशय नेम जिन टालशे रे, जइ पूर्वं प्रश्न उद्दार रे ॥ रथमां बेसी चा 'ख्यां देवकी रे, जइ वांचा नेमिजिन सार रे ॥ मण् ॥ ११ ॥ तव नेमि जिएंद कहे देवकी रे, सुणो पुत्रनी वात रे ॥ व व्यणगार देखि तिहां रे, तव जपन्यों स्नेइ विख्यात रे ॥ म०॥ ११॥ देवकी सुत उए ताहरा रे, तें धस्त्रा उदर नव मास रे ॥ हरिएगमेषी देवता रे, जन्मतां हर्या तुर्फ पास रे ॥ म० ॥ १६ ॥ सुलसानी पासें ठव्या रे, पहोती सुलसानी आश रे ॥ पुर्खप्रजावें ते पामिया रे, संसारना जोग विलास रे ॥ मण ॥ ॥ १४ ॥ नेम जिणंद वाणी सुणी रे, पामी हर्ष जल्लास रे ॥ वली उ अ णगार जइ वांदिया रे, निरखे नेह जरि तास रे ॥ मण्॥ १५ ॥ पाहा नो प्रगट्यो त्यां कने रे, विकश्या रोमकूप देह रे ॥ अनिमिष नयणे निर

खीया रे, धरी पुत्र प्रेम स्नेह रे॥ म०॥ १६॥ वांदी निज घेर आवियां रे, होंश पुत्र रमावण जास रे॥ कृष्णजीयें देव आराधियों रे, मातने सुख निवास रे॥ म०॥ १९॥ गजसुकुमाल खेलावती रे, पोहोती देवकी नी आश रे॥ कर्म खपावि मुक्तें गयां रे, र आणगार सिक्त वास रे॥ म०॥ १०॥ साधु तणा गुण गावतां रे, सफल होये निज आश रे॥ धर्मासिंह मुनिवर कहे रे, सुणतां लीलविलास रे॥ मन०॥ १ए॥ इति॥॥ शिलामण कोने आपवी १ ते विषे सक्षाय॥

॥ रे बेटी, जली रे जणी तुं आज॥ ए देशी॥ शीखामण देतां खरी रे, मूढ न माने मन्न ॥ शीखायें जल सींचतां रे, जगे नहीं जेम अन्न रे ॥ बे हेनी, त्यां बोल न बोलो एक ॥ ज्यां नही विनय विवेक रे बेहेनी ॥ एवा माण्स अनेक रे ॥ बेण ॥ त्यां बोल म बोलो एक ॥ १॥ ए आंकणी॥ शिक्ता दीजें संतने रे, जेहनी उत्तम जात।। काटे पण कीटेनही रे, जिम पडी पटोले जात रे ॥ बेव ॥ त्यांव ॥ १ ॥ विघटाव्यां विघटे नही रे, गालें घेहेला थाय ॥ कसोटीयें कुंदन परें रे, कसतां निव क्रण साय रे।। बेहेण। त्यांण।। ३॥ मग मग दीसे मूंगरा रे, पग पग पाणी पूर॥ हीरों ने अमृत बने रे, शोध्या न मक्षे सनूर रे ॥ बेहे ॥ त्यां ॥ ४॥ आवल रूपें रूअडी रे, ममरो मरू सोय ॥ रूप रहित सहु आदरे रे, आवल आदरे न कोय रे ॥ बेहे० ॥ त्यां० ॥ ५ ॥ आपमतीला आदमी रे, इन्नाचारी अपार ॥ हास्वां दोस्वां हारमां रे, नावे ते निरधार रें ॥ बेहे । त्यां ।। ६॥ पडसूदी वाली वले रे, वाली वले वली वेल ॥ कुमा शस ने काठनी रे, वाली न वले वेल रे ॥ बेहे ।। त्यां प ॥ उदयरतन उपदेशथी रे, रीजे जे पुरुष रतन्न ॥ तेहनां खीजें नामणां रे, जे करे शियख जतन्न रे ॥ बेहें जा त्यां जा जा इति॥

॥ अथ सातवारनी सद्याय ॥

॥ आदित्य कहे ने मानवीने, आदीश्वरने ध्यार्ज ॥ पांचें ईडिय वश करो तो, वेला मुक्तें जार्ज ॥ १ ॥ सोम कहे हुं सोम वारने, दृष्टि जलेरी जावे ॥ परस्त्रीने मा करी थापे, फरि गर्जावासो नावे ॥ १ ॥ मंगल कहे सदा शिव रामा, मन विचारी जोइ ॥ जेहने मुख नही प्रजनी वाणी, ते जीव तो मूढ होइ ॥ ३ ॥ बुद्ध कहे ने काला वाला, अवर न बीजो जाचुं ॥ महारे मंदिर महोटा श्रावे, प्रज विना निव राचुं ॥४॥ बृहस्पति वारें धन संचयजे, ते श्रनरथनुं मूख ॥ मूश्रा पढ़ी साथें निहें श्रावे, पढ़ी रहेशे धूख ॥५॥ शुक्रें सुकृत करणी कीजे, संसार मांहे सार ॥ तेणे त्रिज वन तहने माने, एवी दीन दयाख ॥ ६ ॥ शनैश्रर वारे धन सांचीयने, कारज पूरां थाय ॥प्रजुजीनी जो योजण होय तो, वेहेलो मुक्तें जाय ॥॥॥ ॥ श्रथ प्रसन्नचंद्रराजर्षिनी सञ्चाय ॥

॥ मारगमां मुनिवर मह्यो ॥ कृषि ए रूडो ॥ साधतो मुक्तिनो पंथ ॥ कृषिश्वर ए रूडो ॥ उत्कृष्टी रयणी रहे ॥ कृण । सूधो साधु निर्मंथ ॥ कृण ।। १ ॥ एक पगे उनो रह्यो ।।कृण। सूरज सामी दृष्टि ॥ कृण ॥ बोलाव्यो बो से नहीं ॥ कृण ॥ ध्यान धरे परमेष्टी ॥ कृण ।। १ ॥ श्रेणिक कहे खामी सुणो ॥ कृण ॥ जो मरे तो जाये केय ॥ कृण ॥ खामी कहे जाये सातमी ॥ कृण ॥ तीव्र वेदन वे तथ ॥ कृण ॥ ३ ॥ वाग्यां देवनां छुंछिति ॥ कृण ॥ उपन्युं केवल ज्ञान ॥ कृण ॥ श्रेणिकने समजावियो ॥ कृण ॥ श्रामु श्रवे शुजध्यान ॥ कृण ॥ अणिकने समजावियो ॥ कृण ॥ श्रामु श्रवे तर्कं ततकाल ॥ कृण ॥ छुषम कालें दोहिलो ॥ कृण ॥ समयसुंदर मनवाल ॥ कृण ॥ एत प्रसन्नचंद्रराजिनी सञ्चाय ॥

॥ अथ जीवोपदेशनी सञ्चाय ॥

॥ सेवो सह ग्रह जिवजना, नामें नविनिध यायो रे ॥ पंच महावत पा खनां, समताछुं चित्त खायो रे ॥ से० ॥ १ ॥ हित चिंत सिव जीवछुं, षट् काय दोष विचार रे ॥ त्रिविध त्रिविध किर वोसिरे, ममता मोद निवार रे ॥ से० ॥ १ ॥ पृथिवी अप तेज वायुनुं, एनुं सत्तज नामो रे ॥ रूप्य सिव जूत जाणीयं, जूत रहे तिण ठामो रे ॥ से० ॥ ३ ॥ वि ति चलिंडिय प्राणीया, जांख्या सिरि अरिहंतो रे ॥ सुर नर तिरि वखी नारकी, जीव ना म कहंतो रे ॥ से० ॥ ।।।।।। षट्काय हिंसाथकी घणुं, ध्रींडियनां छे पापो रे॥ अनंत असंख्यात जाणीयं, बोले ए जिनवर आपो रे ॥ से० ॥ १ ॥ ध्रींडियने हणवाथकी, चलिंडिय पाप विशेषो रे ॥ सदस्स ग्रणुं अधिकुं सही, जिणवर ए लपदेशो रे ॥ से० ॥ ६ ॥ चलिंडियथी जाणजो, पूरव संख्या सारी रे ॥ शत वली पंचेंडिय घड, जाले पर लपकारी रे ॥ से० ॥ १ ॥ पीत वर्ण पृथ्वी जणी, पाणी राते हं होय रे ॥ धवल वर्ण विल तेमनी,

नीखो वायरो जोय रे ॥ सेवो० ॥ ० ॥ पंचवरण राजिका रे, व्यागमें किर ए जाणो रे ॥ पंच थावर जयणा करो, तो ते चतुर सुजाणो रे ॥ सेवो० ॥ ए ॥ षट्काय दोष खही करी, मितमंता तेह निवारे रे ॥ जप तप किया साचवी, जिनवचन नेमने थारे रे ॥ से० ॥ १० ॥ दमदंत मुनिवरनी परें, शमरस मनमां जावे रे ॥ कर्म कठोर खपा थने, शिवपद नगर सिधावे रे ॥ से० ॥ ११ ॥ गुण गिरुवा गुरु सेवियें, खिह्यें पुण्य संयोग रे ॥ निव चिं ते जग माहरों, धिक् धिक् जव तणो जोग रे ॥ से० ॥ ११ ॥ रागनी हा नि उंची रही, जिनशुं चित्त खगावे रे ॥ जित जरा जय टाखीने, व्यजरा मर पद पावे रे ॥ से० ॥ १३ ॥ समिति गुप्ति धर साधुजी, सेवी सुजस सवायो रे ॥ गुणवंत शुरुना नामधी, शिव सुख संपद थार्ज रे ॥ से० ॥ १४ ॥ तपगछ नायक गुण्यनिखों, श्री विजय सूरिदों रे ॥ तस पदस्रि शि रोमणि, श्री विजयप्रज मुण्विदों रे ॥ से० ॥ १५ ॥ तसगछ पंकित सोह तो, पुण्यरुचि पंकित शिक्यों रे ॥ जीवरुचि ए गुण गावतां, मंगल होय निश दीसो रे ॥ से० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ तेर काठियानी सद्याय लिख्यते ॥

॥ जांजरिया मुनिवर, धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥ सोजागी जाई, काठीया तेर निवार ॥ उत्तम पदवी तो बहो जी, जय जय जंपे रे संसार ॥ सोण ॥ काण ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साधु समीपें आवतां जी, आ बस आणे अंग ॥ धर्मकथा निव्न सांजबे जी, मोडे अंग बहु जंग ॥ सोण ॥ काण ॥ शा बीजो सोह महाबबी जी, पुत्र कबत्रशुं बीन ॥ प्राणी धर्म न आचरे जी, घर धनने आधीन ॥ सोण ॥ काण ॥ ३ ॥ त्रीजो अवङा का ियो जी, शुं जाणे गुरु एह ॥ व्यापारें सुख संपजे जी, कीजें हर्षे तेह ॥ सोण ॥ काण ॥ बोथे मान धरे घणुं जी, मुज सम अवर न कोइ ॥ के म बंडुं जण जण प्रत्ये जी, एम महोटी माम मन होइ ॥ सोण ॥ काण ॥ य ॥ वाणे म न होई ॥ सोण ॥ काण ॥ य ॥ वाणे गुरु सन्मान ॥ सोण ॥ काण ॥ धर्मखाज मुजने न वि दीयो जी, निव दीयो गुरु सन्मान ॥ सोण ॥ काण ॥ धर्मखाज मुजने न वि दीयो जी, करे मदिरादिक सेव ॥ गुरु वाणी निव सहहे जी, निव मा ने जिनदेव ॥सोणाकाणाशा सातमे कृपण्णण्णाथकी जी, नावे साधु समी प ॥ धर्मकथा निव सांजबे जी, मंगाशे धन टीप ॥सोण ॥काण ॥वा। आव

मे गुरुजय जयन्यो जी, कहेशे नरकनां छुःख ॥ के कहेशे केम नाविया जो, पामशो कहो केम मोक् ॥सो०॥का०॥ए॥ नवमे देहरे आवतां जी, दाखवे शोक विशेष ॥ घरनां कारज सवि करें जी, धर्मनां काज जवेख ॥ सो०॥का०॥१०॥ अङ्गान दशमे काठिये जी, देवतत्व गुरुतत्व ॥ धर्मतत्व गुरु सहहो जी, एम आणे मिथ्यात्व ॥सो०॥का०॥११॥ अव्याह्मेपक अग्यारमे जी, जलपलतो दिन रात ॥ प्राणीधर्म न उलले जी, समजाव्यो बहु जात ॥सो०॥का०॥११॥ बारमे धर्मकथा तजी जी, कौतुक जोवा जा य ॥ रात दिवस जजो रहे जी, नयणेनिंद न जराय ॥सो० ॥का० ॥१३॥ विषय तरमो काठियो जी, विषयग्रुं राता लोक ॥ विषय साकर लेखवे जी, अवर सवे जी फोक ॥सो० ॥का०॥१४॥ सिद्धकेत्र जातांथकां जी, काठिया ए अंतराय ॥ इव्य जावथी टालियें जी, तो मनोवंठित थाय ॥ सो० ॥ का० ॥ १५ ॥ तर काठिया जिने कह्या जी, समजी वर्जी एह ॥ कुशल सागर वाचक तणो जी, जत्तम कहे गुणगेह ॥ सो० ॥ का० ॥१६॥ इति॥

## ॥ अय श्रीषट्नावनी संद्याय पारंनः॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ श्री सद्गुरुना प्रणमी पाय, सरसित सामिणी समरी माय ॥ उए जावनो कंढुं सुविचार, अनुयोगद्वारतणे अनुसार ॥१॥ पहेलो जाणो श्री दियक जाव, बीजो किहियें उपशम जाव ॥ त्रीजो कायिक जाव पिवत्र, चोथो उवसम जाव विचित्र ॥१॥ पारिणामिक ते पंचम जाण, उठो सां श्रिपातिक सुवलाण ॥ एहनो अर्थ यथारथ कहुं, जेहवो ग्रुरु आगमथी लहुं ॥ ३॥ उदयावलीमां आञ्यां जेह, कर्मदिलक जोगवीयें तेह ॥ जेम गति स्थिलादिक पर्याय, तेहथी थयो ते श्रीदियक जाव ॥ ४॥ रस प्रदेश वेदन जिहां नही, सत्तामांहे सर्वे सही ॥जरमे आछादित जेम आग, तेम श्रीपशमिक कह्यो वहजाग ॥ ४॥ उदयें श्राव्यां ठे जे कर्म, क्रय की जें तेहनो गत जर्म ॥ जेम लपुष्प अत्यंताजाव, तेहथी उपनो कायिक जाव ॥६॥ उदयागत दिलयां संघात, प्रज्ञल वेदे तिहां विख्यात॥ मिश्र जाव परिणमीयो जेण, क्रायोपशमिक कहीयें तेण ॥ ५॥ जीव श्रजी वर्जु नव नव पणे, परिणमवुं थावुं विधि घणे॥ जेम रिवनो उदयास्त स्व जाव, तेहथी थयो पारिणामिक जाव ॥ ७ ॥ ए जे जाव पंचनो योग,

िक त्रिक चतु पंचनो संयोग ॥ तेहना थाये बढ़ीस त्रेय, ते सान्निपा तिक ज्ञानी कहेय ॥ ए॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥

आगमवाणी सांजलो, टोका ने निर्युक्ति सुङ्गानी ॥ जाष्य अने चूणी वली, ए पंचांगें जुत्त ॥ सु॰ ॥ स्थागम॰ ॥ १ ॥ ए स्थांकणी ॥ जेद कहुं वए जावना, ते सुणजो एक चित्त ॥ सुङ्गानी ॥ एकवीश जेद कह्या जला, श्रीदियकजावना मित्त ॥ सु० ॥ श्रा० ॥१॥ मिध्यात्व मोहतेषे उदें, होय श्रज्ञानी जीव ॥ सुण ॥ श्राठे कर्म उदयें करी, श्रसिकता होय सदीव ॥ ॥ सु०॥ छाए ॥ ३॥ बीजी कषायनी चोकडी, तेहनो उदय जव याय ॥ सु०॥ श्रविरतिता होय जीवनें, जेद त्रीजो चित्त लाय ॥ सु०॥श्राणा ॥ ४ ॥ योगजनक कर्मने उदें, खेर्या प्रगटे उक्त ॥ सुण ॥ किन्न नील कपोत ए, तेज पजमा सुक्र ।। सु० ।। आ० ।। ५ ॥ कोध मान माया व खी, खोज त्रयोदश जेद ॥ सु० ॥ निरय तिरिय मणु सुरगई, इडी पुरुष नपुं वेद ॥ सुण ॥ छाण ॥ ६ ॥ वली कही मिथ्यात्व मोहनी, ए यया एकवीश जेय ॥ सु॰ ॥ उपशमना वे जेद है, ते कहुं चित्त धरेय ॥ सु॰ ॥ आ। ।। ।। दर्शन सोह जपरामथकी, जपराम समिकत होय ॥ सुन्। चारित्रमोहने उपशर्मे, उपशम चारित्र होय ॥ सु० ॥ आ० ॥ जेद ए जपशमना जएया, ते चित्तमाहे धार ॥ सु॰ ॥ परमानंद पद पाइयें, खहीयें ज्ञान अपार n सु। आणे ।। ए॥ इति ।।

॥ ढाख त्रीजी ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ जेद सुणो नव काथिक जावना, केवल दर्शन ज्ञान ॥ सुण्णनर ॥ काथिक समकेत त्रीजो जाणियें, अहरकाय चरण प्रधान ॥ सुण्॥ ४॥ धन धन जिनकर वचन सोहामणां ॥ सजुरुषी लहीयें तेह ॥ सुण्॥ जेम रयणायरमांथी पामीयें, रख अमुलक जेद ॥ सुण्॥ धण्॥ १ ॥ दान लिंदि ने लाजलिंद वली, जोगलिंद जपजोग ॥ सुण्॥ वीर्यलिंद ए नव जेदें थयो, काथिकजावनो योग ॥ सुण्॥ धनण्॥ ३॥ जेद अहार खजवसमना जाला, मित श्रुत अविध सुज्ञान ॥ सुण्॥ मनःपर्यव वली ज्ञान सोहामणुं, मइ सुअ हि कुज्ञान ॥ सुण्॥ धनण्॥ ४ ॥ चर्कु अचर्कु हि दंसणा, दानादिक पण लिंदि ॥ सुण्॥ क्रयोपश्चम समिकत

॥ हवे सांजल सिन्नवायना रे, ब्रहीश याये जंग ॥ वीश जंग शून्य ते हना रे, खामी बकना चंग ॥ १ ॥ जिनक जन, सुणियं जिनवर वयण ॥ ए श्रांकणी ॥ नरय तिरिय मणु सुरगई रे, ए चारे गितमां हि ॥ मिश्र उदय पिणामनो रे, त्रिक योगिक जंग श्रांहि, ॥ जिन ॥ १ ॥ ए श्रणमां उपशम मले रे, चलक संयोगीयो याय ॥ ते पण चलगइमां श्रवे रे, जेद वीजो चित्त लाय ॥ जिन ॥ ३ ॥ पिणामुदय लय मिश्रनो रे, हुर्ज संयोगीयो एह ॥ चलगइमांहे ए हुनो रे, त्रीओ जेद ससनेह ॥ जिन ॥ ४ ॥ पिणाम जदय कायिके रे, वरते केवली संयोग ॥ चोथो जंग ते ए कह्यो रे, थाये त्रिक संयोग ॥ जिन ॥ ५ ॥ क्वांयिक ने पारिणामिको रे, दिक संयोगीयो एह ॥ सिद्ध परमात्माने हुने रे, पंचम जंग कह्यो तेह ॥ जिन ॥ ६ ॥ विण्याम श्रेणीगत जीवने रे, पंच सयोगी होय ॥ चारित्रश्रीपश मिकें लहो रे, कायिक समकेत जोय ॥ जिन ॥ छ ॥ जीवपणुं पारिणा मिकें रे, जदयजावें मणुगित ॥ खलवसम इंडिय तणो रे, ठिने जंग एह मित्त ॥ जिन ॥ ए ॥ ए वए जंग सिन्नवायना रे, खामी पण दश जास ॥ निरुपयोगी वीश वे रे, जांगा न कह्या तास ॥ जिन ॥ ए ॥

॥ ढाख पांचमी ॥ रातडी रमीने रे, किहांची ख्राबिया ॥ ए देशी ॥

॥ इवे सुणजो गुणगणा जपरें रे, जत्तर जाव विचार ॥ मिथ्यादृष्टि गुणगणा विषे रे, जदयना एकवीश धार ॥ र ॥ जवियण श्रीजिनवाणी सांजलो रे ॥ ए आंकणी ॥ क्योपशमना दश जेदज कहा रे, दानादि क लिंध पंच ॥ चक्क अचकु दंसण वे वली रे, तीम अज्ञान सुचंग ॥ जवि० ॥ १ ॥ पारिणामिकना जेद होये त्रणे रे, सर्व मही चज्तीश ॥ इवि साखादन गुणगणे जाला रे, मिष्ठ विण जदयना वीश ॥ जवि० ॥

॥ इ॥ मिश्र तणा दश नेदज तेह हे रे, पारिणामिकना दोय ॥ अजन्य पणुं माहे थी टाली यें रे, सरवे बत्रीश होय ॥ जविण् ॥ ४॥ मिश्रगुणना णे औदियक जावना रे, विण अङ्गानी निर्णाश ॥ द्वादश नेद खनस मना जण्या रे, पांच लिब्ध सुजगीश ॥ जिवण् ॥ ४॥ त्रिक दर्शन त्रण ङ्वान कह्यां जलां रे, समिकत मिश्रज रूप ॥ पारिणामिकना जेद दिक व ली रे, तेत्रीश सर्व अनूप ॥ जविण ॥ ६ ॥ अविरित सम्यगृदृष्टि गुणपरें रे, निर्णाश जदयना तेज ॥ जपशम जावें समिकत सुंदर रे, हायिक समिकत हेज ॥ जविण ॥ ५॥ पूर्वोदित वली द्वादश मिश्रना रे, दोय जेद परिणाम ॥ सर्व मलीने पांत्रीश ए थया रे, चन्यतिना जस स्वामि॥ जविण ॥ ए॥ देश विरित विषे सत्तर जेद हे रे, औदियक जावना धार ॥ देव निरय गइ वे ए काठीये रे, जवसम सम्यक्तव विचार ॥ जविण ॥ ए॥ का यिक जावें समिकत जाणीयें रे, पारिणामिकना दोय ॥ देशविरित युत तेरह मिश्रना रे, सहु मली चोत्रीश होय ॥ जविण ॥ १०॥ इति ॥ ॥ ढाल हि ॥ वयुं जाणुं वयुं बनी आवशे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रमत्त संयत गुणपद विषे, दश्पंच उदयना नेद हो राज ॥ असंब मताने तिरिय गइ, कीजें तास विश्वेद हो राज ॥ १ ॥ जिनवचनामृत पी जीयें ॥ ए आंकणी ॥ उपशम समिकत सुंदर, क्रयनावें समकेत हो राज ॥ मिश्रना तेरह नेद हे, सर्वविरित संयुत हो राज ॥ जिनण ॥१॥ कीण मोह पर्यंत जाणीयें, पारिणामिकना दोय हो राज ॥ जिनण ॥१॥ कीट या, बन्नीश नेद खुं जोय हो राज ॥ जिनण ॥३ ॥ सातमे औद्धिकनाव ना, द्वादश नेद प्रधान हो राज ॥ जिनण॥ ॥ शास निक लेश्या विना, उपशम समिकत जाण हो राज ॥ जिनण॥ ॥ समिकत क्रयनावें हुवे, चउदश मिश्र प्रकार हो राज ॥ मनःपर्यव संयुत करो, ए यया त्रीश विचार हो राज ॥ जिनण ॥ १॥ समिकत जपशम सार हो राज ॥ तिनण ॥ १॥ अपूरवकरण गुण आठम, दश नेद उदयना धार हो राज ॥ तेजो पद्म लेश्या विना, समिकत उपशम सार हो राज ॥ जिनण ॥ ६ ॥ क्रयनावें समकेत वरू, मिश्रना तेर जगीश हो राज ॥ मिश्रसमकेत ते टालीयें, सहु मली सत्तावीश हो राज ॥ जिनण ॥ ९॥ नवमे औदियक नावना, पूर्वीदित दश नेद हो राज ॥ पाठांतर (पूर्वोक तेरह मिश्रनां) कायिक समिकत जाणीयें, उपशमना बे नेद हो राज ॥ तेरह हो राज ॥

जिनण ॥ ७ ॥ पूर्वोक्त तेरह मिश्रना, सघला श्राचीश हो राज ॥ एनव मा गुण पद तणा, उत्तर जाव जगीश हो राज ॥ जिनण॥ ए॥ इति ॥ ॥ ढाल सातमी ॥ धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे दशमा गुणठाण विषे सुण, उदय तणा नेद चारो रे ॥ लोन संजलए मणुगइ असिक्ता, लेश्या शुक्क चित्त धारो रे ॥ १ ॥ जय जय स्वामी वीर जिलेसर॥ ए आंकणी॥ जस वाणी अति मीठी रे॥ सुणतां शुजमित श्रंकुर विकसे, निकसे दुर्मित धीठी रे ॥ जय जय स्वामी वीर जिणेसर ॥ १॥ जपशम समकित जपशम चारित्र, काथिक समकित एको रे ॥ जेद कहो तेर मिश्रना तेहज, वावीश सर्व विवेको रे ॥ जयण ॥ ३ ॥ जपशांतमोहें तीन जदयना, मणुश्र नइ शुद्धा श्रिसिको रे ॥ जपशमना वे जेद लहीजें, हायिक समिकत प्रसिद्धो रे ॥ जयण ॥ ।। ।। चारित्र विर हित मिश्रना द्वादश, सहु मली बीश ए जाणो रे ॥ हवे द्वादशमे श्रीद्यि क जावना, एइज त्रख वखाणो रे ॥ जयणाए॥ क्वायिक समकेत क्वायिक चारित्र, पूर्वोक्त मिश्रना वारो रे॥ सर्व मलीने एं गुणठाणे, र्जगणीश नेद विचारो रे ॥ जयण ॥ ६ ॥ तेरमे श्रीद्यिकना त्रेण तेहिज, क्रांयिकना नव जेदो रे ॥ जीवपणुं पारिणाभिक जावें, सह मली तेर उमेदो रे ॥ जयण ॥ १॥ चलदशमे वे नेद लदयना, मणुत्र गइने असिद्धो रे॥ कायि कन्नावें नव निधि सम प्रगट्यां, परिणामी जीव लीधो रे ॥ जयण ॥ ७॥ द्वादश नेद ए सर्व मलीने, चौदशमे गुणगणे रे ॥ सिद्धने दश नेद त्रोद्यिक विरहित, धारो ज्ञानी वाणे रे II जय**ा। ए।। इति ॥**ं

॥ ढाल ञ्राठमी ॥ देशी फुमकानी ॥

॥ वीर जिणेसर वालहा, अतिमीठी जस वाणि॥ चतुर नर सांजलो॥ हवे सुणो जाव विषे कहुं, ग्रणपदनुं वलाण ॥ चतु०॥ १॥ मिण्यात्व मोह् तणे उदें, पामे पढम ग्रणठाण ॥ चतु०॥ औदियक जावणकी होये, ग्रणपद पहेलुं जाण ॥ चतु०॥ १॥ पहेला कषायना उदयथी, चोथाथी पहे जेण ॥ चतु०॥ वमतां सास्वादन लहे, औदियक जावणी तेण॥ चतु०॥ ३॥ कोइ आचारज एम कहे, पारिणामिकथी होय ॥ चतु०॥ पंचसंग्रह टीका तणो, एहवो आश्रय जोयन ॥ चतु०॥ ४॥ क्रांथिश मिक जावणी, लहे त्रीजुं ग्रणठाण॥ चतु०॥ प्रथमथी चढतो चोथाथी,

पडतो पामे ए गण ॥ चतु०॥ ४॥ दर्शनमोहनी कर्मनो, क्य उपशम जब थाय ॥ चतु०॥ तेमाटे त्रण जावथी, हुवे चोथुं ग्रणगय ॥ चतु० ॥ देश प्रमत श्रामत हिन कर्मनो, क्योपशम जव थाय ॥ चतु०॥ देश प्रमत श्रामत हिन क्योपशमिक तत्त्व ॥ चतु०॥ उ॥ उपशम चारित्र मोहनो, श्रपूर्वथी उवसंत जाव ॥ चतु०॥ उपशम श्रेणिने श्राशरी, चारे उपशम जाव ॥ चतु०॥ उ॥ चारित्र मोहना क्यथकी, श्रपूर्वथी क्षीण मोहांत ॥ चतु०॥ काथिक जावथकी होये, क्पकश्रेणि ग्रणतंत ॥ चतु०॥ ए॥ क्य हुर्ज धाती कर्मनो, काथिक जाव प्रधान ॥ चतु०॥ त्रयोद शमे ग्रण स्थानकें, योग सहित जगवान ॥ चतु०॥ १०॥ योग जनक कर्म क्रय थयुं, तव हुइ होस्या सुक्क ॥ चतु०॥ क्यजावे श्रयोगी केवली, कम्म कर्छक विसुक्क ॥ चतु०॥ ११॥ इति॥

॥ ढांख नवमी ॥ हो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

पति, विधिसागर सूरिराया रे ॥ वुरहानपुर शहेरे ग्रुहमहेरें, जावप्रकाश में गाया रे ॥ तेण ॥ १ण ॥ इति ॥

॥ कलश् ॥

॥ एम कह्या जाविवार सुंदर, जेहवा ग्रुरुजि मुखें सुखा ॥ जिनराज वाणी हैये आणी, निर्ज्ञरा कारण शुण्या ॥ सतर नय मद (१७७५) मास आश्विन,सिक्षियोग ग्रुरु वास रे ॥श्रीसूरिविद्यातणो विनयी, ज्ञानसागर सुख करे ॥ १ ॥ इति श्रीपद्जाव अथवा जावप्रकाशः सद्याय समाप्तः ॥

## ॥ इप्रथ श्रीपडावअपकनी सद्याय पारंजः॥

॥ ढाल पहेली ॥ साहेवा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसद्गुरुने सदा प्रणमीजें, पिकक्षमणानो सह खप कीजें ॥ साधु जी पडिकमणुं कीजें, मुनिजी परमारथ लहीजें ॥ स्यादाद मुद्धा चित्त धारी, पट् त्र्यावस्यक कीजें सुविचारी ॥ लाधुजी० ॥१॥ ऋष्यातम मारग श्राचरीयें, सप्तत्रंगी नय मनमां धरियें ॥ श्रावश्यक निर्धुक्तयनुसार, करूं खाध्याय संक्षेपे सार ॥ साधु<sup>0</sup> ॥ श ।। आवश्यकादि सहुना निक्तेपा, ते करतां निव लागे लेपा ॥ नाम स्थापना ड्यं ने जाव, अनुपयोग जपयो गी जीव ॥ साण ॥ ३ ॥ क्रेत्रथकी जरतह ऐरावत, काखथकी वेसंज प वित्त ॥ पासहादिक संगति टाले, धर्मविना जय जाये आलें ॥ साण ॥ ४ ॥ पहें छुं श्रीगुरुवंदन करतां, आर्जवता मनमांदे धरतां ॥ करेमिनं इरि यावहि पडिक्कमियें, कृतकारि तनु पाप जपशमियें ॥ सा० ॥ ५ ॥ विधि परके पडिक्रमणुं सार, तिहां पहें छुं सामायिक धार ॥ चलवीसहें नामें वीय, वंदण पिकमणुं चलियं ॥ सा० ॥ ६ ॥ कालस्सग्ग ने छहुं प्र चक्काण, पट् आवस्यक आतम शुक्ति गण ॥ नयनिक्रेप प्रमाणीने जा णी, निमित्त सहित करजो जित प्राणी ॥ सा० ॥ ७ ॥ मांहोमांहे अं गुल जेली सार. दोय इस्तनी कोशाकार ॥ पेट उपर कोहणी संववीयें, योगमुद्रा चेलवंदन स्तवियें ॥ सा० ॥ ७ ॥ जनो श्रंतर पग श्रंगुल चारः पुंठलयी कांइ ऊणा चार ॥ एहवी कही जिनमुद्रा सार, हाथ प्रलंब उन्नत निरधार ॥ साण ॥ ए ॥ ग्रुक्तिसमा दो गार्नितहस्त, मुक्ताग्रुक्ति मुद्रा शस्त ॥ खलाड खग्ग अलग्ग किंचित्त, नमोहुणं कहीयें इग चित्त

॥ सा० ॥ १० ॥ तस्मुत्तरी करणादिक चार, सद्धाए आदिक पण सार ॥ काजस्मग्ग करतां ए हेतु नव, मनमां विचारे जे जन जव ॥ सा० ॥ ११॥ अन्न छणादिक बार आगार, आगल पणिंदीदण सार ॥ बोही खोजाई म कोय, शोल आगारें काजस्मग्ग होय ॥ सा० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ इवे कहुं काउस्सग्ग उंगणीश दोष, ते टलतां होये संतोष ॥ घोडग खय खंजाइ माल, उद्ध सुजट खलिण सुविशाख ॥ १॥ वहूवानी परे वजा धरे, निखयादिकले आश्रय करे ॥ संब यण जू संज्ञ वायस्स, कोठ खूक सुर कंप पहेरल ॥ १ ॥ काजस्मग्ग दोष कह्या र्रगणीश, ते टाली करीयें सुजलीश ॥ दृष्टि पहिलेहण पहेली कही, सूत्र अर्थ तु ज्य सहही ॥ ३ ॥ अस्कोडा परकोडा करे, अणवार ऊर्क अधारां धरे ॥ समकित मिश्र मिश्या मोह खरे, काम स्नेह दृष्टि राग परिहरे ॥ ४॥ त्रणवार विधानइ तंत, देव युरु धर्म आदरवा खंत ॥ वखी कुगुरू कुदेव कुधर्म, परिहरवुं तुम जाणो मर्म ॥ ए॥ ज्ञान दर्शन चारित्र आदरं, तेह विराधन टाली खरं॥ अन वच काय ग्रुप्ति आदरं, मन वच काय दंग परिहरं ॥ ६ ॥ पडिलेहण मुह्पांच पणवीस, हवे बोलुं काया पचवीश ॥ हास्य रित छरित वामे जुजें, जुगंहा शोक नय दक्षिण जुजें ॥ ७ ॥ कृष्ण नील कापोत मस्तकें, ढांमो रस शुद्धि गारव मुखें ॥ माया निदान मिथ्या त्राख शहय, परिहरो हृदय मध्य त्रण शहय ॥ जो को मान नाबे बाहु मूल, माया लोज दक्षिण जुज मूल ॥ वाम पग पृथिवी जल तेव काय, वाज वनस्पति त्रस दक्षिण पाय ॥ ए॥ ए पडिलेहण मुनिने पचारा, श्रावकने मुहपत्तिनो नाश ॥ आगम निश्चय विधि मन धरे, नाविकिया कीधे नव तरे ॥ १०॥ अहो कायं काय ए त्रस, जना जवणी ज्ञयं च जे त्रस ॥ पहिले षद् बीजे षद् जाण, वंदन बार आवर्त अहिनाण ॥ ११ ॥ आदर रहित वंदे गुरु सार, जात्यादिक मद स्तब्ध अपार ॥ वांदण देइ नासे ततकाल, घणा मुनि वांदे समकाल ॥ ११ ॥ तीड फाल देइ वंदन करे, अंकुश जिम ठिघो कर धरे ॥ कष्ठप चालें पुन वंदन करे, मत्स्य तणी पेरें पासुं फरे ॥ १३ ॥ देष जय मैत्री गारव कारणे, जानु उपर कर वे धारणे ॥ मुजने जजे. एहवुं मन जाण, आहा रकाखें ते वंदन काण ॥ १४ ॥ चोरी तर्जित हेखना रुष्ट, ग्लानिविकथा करदृष्टादृष्ट ॥ नृपकंर हीण मोचन अस्पर्श, अधिक ठठर करिशर संस्पर्श ॥ १५ ॥ मूक रजोहरण जमाडि, ए वन्नीशे चूषण ढांकि ॥ एणी परें वांदणां देतां सार, कृष्णपरें होये लाज अपार ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ढाल त्रीजी ॥ यत्तिनी देशी ॥

॥ पडिकमण अध्ययन मजार, एकादिक तेत्रीश सार ॥ आशातना ग्र रुनी तेत्रीश, सांजलजो जवियण सुजनीश ॥ १॥ गुरुने त्रागल पाठल पासें, दुकडो चाले वेसे पासें ॥ उनो रहे एम त्रण त्रि नव, पाणी ग्रह प हेबुं शिष्य लेव ॥ १ ॥ गुरु पहिलो श्रावक वोलाव, गुरु पहिलो श्रालो याव ॥ गुरुने अणदेखे आखोय, वीजाने देखे आखोय ॥ ३॥ गुरु विण वीजाने निमंत्रे, गुरु पूठ्या विए वीजाने निमंत्रे ॥ स्निग्ध मधुर खय चक्षण करतो, निशि बोलावे मौन धरंतो ॥ ४ ॥ वीजे कार्य जत्तर निव दीये, तेड्यो तक्रथी जत्तर दिये ॥ गुरु घूढे मस्तक वंदेइ, गुरुने तुंकारे बोलेइ॥ ५॥ कार्य कहे ते किम न करेइ, कर्कश वचन कही सपरेइ॥ दौर्मनस्य कथाछेदन, गुरुपद घटन पर्यदा नेदन ॥ ६ ॥ इत्य उठे पोते क्ता करे, गुरु संथारे वेसे सुए ॥ गुरुथी उंचे आसन बेसे, समासन वेसे सुविशेषे ॥ ॥ ।। नसवुं यथाजात वे वार, शिरने नमवुं चऊ वार ॥ त्राख गुप्त वारह आवर्त, प्रयवेश एक निर्गल ॥ ए॥ पंचवीश आवश्यक ए कहीया, ग्रह शिष्यना षट वच लहीया ॥ दोष पट तेम षट् हे ग्रणा, योग्य अयोग्य पणे वंदन जण्या ॥ ए ॥ मण तण वयण कृत कारित्त, श्रनुमोदन उपयोग पवित्त ॥ ग्रुज जावें करो पचरकाण, षट श्रावश्यक पुरण जाण ॥ १०॥ रयणत्रय शून्य जे आया, इण वासित करो जवि राया ॥ शुद्धातम ग्रण तव प्रगटे, जेस रविथी कजबंध विघटे ॥ ११ ॥ एह आतम शुद्ध करेवा, सुनि वहुयें ए चित्त धरेवा ॥ तदा ज्ञानादिक ग्रण सार, वरलही शिव सुख अपार ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ ढाख चोथी ॥ चोपाइनी ॥

॥ आगल पूर्वाचार्य विशेष, सामायिक पालण सुविशेष ॥ संजाखुं असंजाखुं होय, ते संजारी आगल जोय ॥१॥ निकेपा नय कारण जाण, जत्पाद व्यय धौव प्रमाण ॥ हेय क्षेय प्रव्य ने तत्त्व, आवश्यक प्रत्येकें सत्व ॥१ ॥ नाम मात्र निस्केपो तेह, जीवाजीवाकृति ठवणेह ॥ अनु पयोग ज्ञ्य अक्र उचार, उपयोगी जावें किर सार ॥३॥ जीवाजीव चोवीशे खाम, ठवणा प्रतिमा सत्वय नाम ॥ जीवा चोवीश ज्ञ्य प्रसिद्ध, तद्गुणधारी जाव प्रसिद्ध ॥४॥ नाम ठवणा सुगम व्याख्यान, क्रिया यथास्थित ने अनुमान ॥ अनुपयोगी ज्ञ्य वंदन सार, उपयोगी जाव वंदन सार ॥ ८ ॥ जाव विना आलोइ ज्ञ्य, जाव पिडक्कमणुं जावे ज्ञ्य ॥ काउस्सग्ग तेम जाणो सार, पच्चकाण निकेप विचार ॥६॥ हवे आ वश्यक नव संयुत्त, जिण वयणे जिवयण सुण तत्व ॥ नयविण जाणे ज्ञानी केम, ते उद्यम करीयें जिव जेम ॥ ॥ ॥ प्रथम नय ज्ञ्यार्थिक जाण, तेतो सिव जीव ज्ञ्य समाण ॥ सामायिक बोले निश्वदीस, गुण तो तेहिज ज्ञ्य सुजगीश ॥ ७॥

॥ ढाल पांचमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी

॥ संवर रूपें सामायिक श्रस्ति, श्रग्जुजबंध पण करणे नास्ति॥ साधुजी स्याद्वाद विचारों, जवियां सप्त जंगी धारों ॥ स्वपर कारण श्रस्त नास्ति, श्रवक्तव्य चोथे प्रतिशस्ति॥ साधुजी ॥ १॥ श्रिष्ठ न कहेवाये समकाल, निव्च न कहेवाये ततकाल ॥ वे निव्च जणे न कहेवाये, सप्त जंगी नय शब्द पर्याय ॥ साधुण ॥ १॥ चव्रविसत्वो एहज रीतें, श्रास्म स्तव तुं जाणे चित्त ॥ सामान्य विशेष ग्रणने प्रहीयें, सम्यक्त्वादिक ग्रण संप्रहीयें ॥ साधुण ॥ ३॥ श्रास्मा तो मिथ्यात्वी होये, तेहने स्तवनें शुं ग्रण होये ॥ व्यवहारें जिनवर चव्रवीश, स्तवनें मोक्त होये सुजगीश ॥ साधुण ॥ ४॥ हवे बोखुं क्रजु सूत्र विचार, वर्त्तमान काले व्यवहार ॥ तीतानागत विण्ठानुरूपन्न, सम कालें चोवीश प्रसन्न ॥ साधुण ॥ ४॥ चोथे निक्तेये जिनवर धरजो, जिवयण मोक्तार्थीं श्रादरजो ॥ जावनिक्तेयें जे पर्याय, तेहने मोक्त शब्दनय मनाय ॥ साधुण ॥ ६॥ जे जेहनां रूढें जेम होय, पज्जय तेहना श्रन्य केम होय ॥ समित्रकृत्व एहवुं माने, सिवग्रण कर्ष्य पज्जय शिवयानें ॥ साधुण ॥ ९॥ श्राईतपणुं सघलुं श्रनु जवतां, एवंजूत श्रद्धित तव वदतां ॥ एम वदण पडिक्रमण नय जाणो, गीतारथ पासें मन श्राणो ॥ साधुण ॥ ७॥ कारण पांच मले सहु कोइ, निपजे विणसे कारज जोइ ॥ एक्तेके निव निपजे कृत्य, पांचे मली माने

समिकत्त ॥ साधु ॥ ॥ ॥ जिएकार्खे करीयें ते काख, जीव खजाव बीजो संजाल ॥ नियत थावा हिं ने तो थाये, आवश्यक जाणो मनमांहे ॥ साधु ॥ १०॥ क्तयोपराम मोहादिक कर्म, आधे उदय आवस्यक धर्म ॥ धर्म विषे जद्यम फोरववी, कारणपंच मखे करणी करवी ॥ साधुण ॥ ११ ॥ आ व्ययक शुजगुण उप्पाय, अशुजकर्मनो नाशज थाय ॥ जीव खजाव निं र्मल तिहां घोव, एणिपरे उत्पाद व्यय घोव ॥ साधुण ॥ १२ ॥ श्रीजिएव रें जे जे शास्त्र, ते अनुसारें आगम शास्त्र ॥ शब्द प्रमाण कहीजें एहंनें, श्रावर्यक षट् वली तेहनें ॥ साधुण ॥ १३॥ श्रावस्यक नय निकेषा क्षेय, त्रण निकेप मोक्तार्थें हेय ॥ चोथो जपादेय निकेप, हेय क्रेय जपादेय संदोप ॥ साधुण ॥ १४ ॥ षटड्य मांहे व्यवहारें कहीयें, आत्मा बांधे बोडे सहीयें ॥ निश्चयनय आतमा अवंध, पुजल वंधाये घणुं वंध ॥ साधुण ॥ १५॥ तत्त्वमांहे संवर आश्रव, मोक्ष ए आवस्यक अंतर्जव ॥ सामायि क संवर निरधार, चलविसहो मोक्त लदार ॥ साधुण ॥ १६ ॥ शुन त्र्या श्रव त्रावश्यक शेष, त्रातमस्वरूपें संवर विशेष ॥ ए दश द्वार विचारी करीयें, आवश्यक किरिया आदरीयें ॥ साधुण ॥ १७ ॥ एणीपरें षद् आ वश्यक नित्य करतां, केवल कमला मुनिवर वरता ॥ शुद्धातम निज रूपें थरेता, ज्ञान समुद्र सुख संपत्ति न्नरता ॥ साधुण ॥ १० ॥

॥ कलश् ॥

॥ एम डव्यनय पर्यायनय मुख, आवश्यक षट् आदरो ॥ जिनराज वाणी हिये आणी, प्राणी संशय मत धरो ॥विधिपक्तगन्नपति सूरिविद्या, उद्धिसूरि शिरोमणि ॥ तस शिष्य पत्रणे ज्ञानसागर, त्रणो जवियण शिव जणी ॥ १ ॥ इति श्रीषडावश्यक सञ्चायः संपूर्णः ॥

॥ अथ श्रीमणिचंदजी कृत वैराग्यकारक सञ्चायो प्रारंतः॥

॥ चोपाई॥ श्रवण कीर्तन सेवन त्राखसार, वचन वंदन ध्यान मन्धार॥ खघुता एकता समता सही, नवधा किया त इम सहही ॥ १ ॥ गुण श्रवंत जीवड्व्यनां कह्यां, ज्ञान दर्शन सुख वीर्ये यहां ॥ तेह तण्ं सांज्ञखं करे, प्रथमिकया पातक परिहरे॥ १ ॥ कीर्तन कथनी करे श्रविद्या, जे ड्व्यगुणपर्याये जाणी ॥ वचनयोगी पातक परिहरे, बीजी किया सज श्रई श्रादरे॥ ३ ॥ सेवन करतो हृदयमजार, गुण संज्ञारे

वारोवार ॥ दुर्गति कापे निश्चें सही, त्रीजा बोखयकी ए खही ॥४॥ वंदन करतो जावयी वली, चेतन प्रव्यना गुणकेवली॥ घणे वीर्य जल्लासें जेह, चोथी कियानों म धर संदेह ॥ ५ ॥ निंदाकरे विजावज तणी, रा गादिक दुःख देता जणी ॥ लघुकर्मी तिणे निश्चे थाय, पंचमिकयायें गुण बोलाय ॥६॥ ध्यान धरंतो तेहनो धणी, थिर करी थापे बहुगुण जणी ॥ घातिकर्ननो वेदक तेह, वृद्धी किया धर संदेह ॥ ९ ॥ इमलघुता यें चिते घणुं, घणा मोक गया हुं जमुं ॥ तो हुं हीणपणाथी बहु, गुण सातमे ते इम सहहुं ॥ ६ ॥ एकलो मरे एकलो जन्मीजें, सलायिकणें नवी नीपजे ॥ सुलद्धाख तेतो एकलो एह, सर्वथी अलगो आठमे तेह ॥ ए॥ रस समता ते नवमो जाणी, सर्वजूतिज जूत समाणी ॥ सरला खजाव चतुर्गुणना कह्या, नवसे बोलेशिवपद लह्या ॥१०॥ एहवा जव जे धरे मुणिंद, कथनी कथी ए गणि मुणिचंद ॥ विनय करीने जणशे जेह, आविचल पदवी लेहरो गेह ॥ ११ ॥ इति ॥

ा। अय दितीय सवाय प्रारंजः॥

॥ जे देखुं ते तुफ नहीं, निव देखूं ते तूही ॥ इणजावे वरते सदा, सघले तुंहिं जतुंहिं ॥१॥ जेणें तुफकुं पिठाणीयों, निव जूवे पारकी खार ॥ आपसजावमें ते रह्यों, निव लीयें मनकी सार ॥ १॥ दोहा ॥ मनें जे आणी में लीयों, आतमगुणने सार ॥ मनकूं दूरे मूकीनें, शून्य न करे व्यापार ॥ ३ ॥ ताली लागी आपकुं, परकूं देखत नांहिं ॥ आप सजा वमें फीलतों, जाणे सब वस्तु याही ॥ ४ ॥ एणीपरे ज्योति जगायकें, जयोत जये सब ठोर ॥ अंतरंग प्रगटी कला, हुवे ठरकी ठर ॥ ४ ॥ हाल ॥ जीत्यों जीत्यों रे मोटो मोहराय के, दीठी दीठी रे लोकालोक आज के ॥ जाण्या जाण्या रे स्थूल सूक्षम काज के, पाम्या पाम्या रे आतम गुणराज के ॥ ६ ॥ नामगोत्र उदयंथी पूजे सुरराज के, वेदनी आठ थी विचरे महाराज के ॥ शैलेशीकरणे शिवराजके, जणे मणिचंद्र सिद्ध लां हवे काज के ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय सद्याय प्रारंजः॥

॥ राग केदारो ॥ जेहने अनुजब आतम केरो रे, होवे ते धन्य धन्य रे॥ सारपणुं चित्तमें ते जावे, जेद अजेद जिल्लाजिल रे ॥ जे०॥१॥ डव्य ग्रण पश्चव में खेखे, परपरिणितिथी न्यारो रे॥ श्राप सजावमें श्राप खेखे, केवल नणा जस प्यारो रे॥ जे०॥ १॥ पुजल वस्तु देखीने न धसे, श्रामात काल न निरखे रे॥ वर्त्तमानमां रहवे लुखा, श्रातीत काल निव परखे रे॥ जे०॥ ३॥ बाह्य श्रातमातणां जे कारण, तेहने जाणी जवेले रे॥ सार पणुं जगतमां देखे, श्रानंतचतुष्ट्य लेले रे॥ जे०॥ ४॥ श्रांतर श्रातम मांहे रहेतो, परमातमने ध्यातो रे॥ जणे मण्चिंद तेहने नमीयें, श्राप सजावमें रातो रे॥ जे०॥ ४॥ इति॥

॥ अथ चतुर्थ सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ राग केदारो ॥ श्रातम श्रमुजद जेहने होवे, चारिचत्तिन जाणे रे॥ विक्तिस जातायत सुश्लिष्ट, सुद्धीनतायें खय श्राणे रे ॥ श्राण ॥ १ ॥ विक्तिस ते श्रवसर चित्र जाणे, जातायत खेंची श्राणे रे ॥ प्रथम श्रम्यास एणि परें होवे, किंचित श्राणंद जाणे रे ॥ श्राण ॥ १ ॥ सुश्लिष्ट ते वद्धी गाड्युं रहवे, स्काय ध्यानमें योगें रे ॥ सुद्धीन से निश्चस चित्र रहेवे, पर मानंद उपयोगें रे ॥ श्राण ॥ ३ ॥ का चि श्रातमा शरीरादिक जाणो, श्रंतर श्रातमें करी गंमो रे ॥ परमात्मा ते साक्तात् देखे, केवद्धी सिद्ध पिगणें रे ॥ श्राण ॥ ४ ॥ परमातमानुं ध्यान करंतां, रसत्वोहें सुवन्न रे ॥ जाणे मणिचंद तेहने ध्यार्ड, जेनुं परमातममें मन्न रे ॥ श्राण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सञ्चाद प्रारंजः॥

॥ राग केदारो ॥ अनुजव सिद्ध आतम जे होवे, यसचतुष्टय जोवे रे ॥ इडा प्रवृत्ति स्थिरसिद्ध यममां, निज शक्तें चित्त जोडे रे ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रथमयमें अहिंसादिक वारता, करतां सुणतां मीठी रे ॥ जाणे जिननी आण आराधुं, बीजी वात अनिष्ठी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ बीजे खमे प्रवर्तें यो गी, जिनआणा मांहे मागी रे ॥ यम पाखवानें तत्पर योगी, प्रमाददशा तस जागी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ त्रीजे यममें यमी निरतिचारी, अप्रमत्त जुज रूपें रे ॥ परिसह परनां वेरी तेह पासें, होवे ते शांतरसरूपें रे ॥ अ० ॥ ४॥ सिद्धयम ते चोथो कहियें, परार्थक साधक शुद्ध रे ॥ जाणे मणिचंद्ध योगदृष्टि तंत्रें, वचन श्रीहरि बुद्ध रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ त्रय षष्ट सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ राग केदारो ॥ कोये किनहींकू काज न त्र्यावे, मूढ मोहें वेला ग

माव रे ॥ शब्द रूप रस गंध फरसावे, शुजाशुजे सुखडुःख पावे रे ॥ को० ॥१॥ जडसजावमें चैतन मूं ज्यों, यथास्थितजाव ते बूज्यों रे ॥ तेरी करत अंखुंज्यों, शांतरसजाव न सूज्यों रे ॥ को० ॥१ ॥ जडकी संगते जडता व्यापे, ज्ञानमार्ग रह्यों ढांकी रे ॥ योग करे ते आपें ए जाणे, हुं करतां कहें थाकी रे ॥ को० ॥ १॥ अज्ञानी मिथ्यात्वी योगें, प्रकृति प्रदेश दल बांधे रे ॥ कावयरसस्थित न र् किरतां, संसारस्थित बहु बांधे रे ॥ को० ॥ ४ ॥ सर्व पदार्थथी हुं अलगों, ए बाजीगरकी बाजी रे ॥ उदयागति जावें ए निपजें, संसारावर्त्तन हुं को साजी रे ॥ को० ॥ ४ ॥ अंतर आत म ते नर कहियें, लागजोंग निव इहे रे ॥ जणे मणिचंद यथास्थित जा वें, सुखडुःखादिकनें प्रीठे रे ॥ को० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अध सप्तम संदोय प्रारंजः ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतना चेत तोकूं संज्ञलावे, अनादि सरूप जणावे रे ॥ सुमितकुमितदोय नारी ताहरे, कुमित कहे तिम चाले रे ॥ चे०॥१॥ कुमित तणो परिकर वे बहुला, राति दिवस करे एवलो रे ॥ विषयकषाय मां जीनो रहवे, निव जाणे ते जोकुलो रे ॥ चे०॥ १॥ सुमितने मिलवा निव दिये, तुक्कने मोहनी वाक्यो रे ॥ जहयाजह्य तुक्कने करावे, अनंत कालतां इ राख्यो रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ अवसर पामी चेतना बोली, प्रज्ञ सुमितने घर राखो रे ॥ कुमितने मुखमी ठाइ देइ, सुमित तणा ग्रण चाखो रे ॥ चे०॥ ॥ एणे अज्यासे देशवत आवे, अवसरे कुमितने वोडे रे ॥ सुमिततणुं बल वाध्युं जाणी, संयमस्त्री तव आणे रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ सुमितस्त्री परिवारे वाधे, तव मुक्तिस्त्री मेलावे रे ॥ आपस्वरूपे चेतन थावे, तव निर्जय स्था नक पावे रे ॥चे०॥६॥ आपसरूप यथास्थित जावे, जोइने चित्ते आणो रे ॥ सुमित कुमित ते पटंतर देखी, जणे मिणचंड ग्रण जाणोरे ॥ चे०॥॥॥ सुमित कुमित ते पटंतर देखी, जणे मिणचंड ग्रण जाणोरे ॥ चे०॥॥॥ सुमित कुमित ते पटंतर देखी, जणे मिणचंड ग्रण जाणोरे ॥ चे०॥॥॥ ॥ अथ अष्टम सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन चेतनमें धरी रागो, ज्ञान दिस्सन सुख वीर्य गुणे खागो ॥ उर वात दीसे धंधा, एह संसारमें मांड्या फंदा ॥ चे०॥ १ ॥ चेतन बाह्यसर्ववस्तु ढांको, अंतर आतममें स्थिर मांको रे ॥ गुऊ वस्तु परमातम कामे, तेह उपाय अडे इण ठामें ॥ चे०॥ १ ॥ आतम गुणमें चित्त निज घाखो, तेहमांहे जो क्षण एक मालो ॥ ध्यान अग्निजल पूरी जाखे, कर्मरूपी तिहां काष्ट प्रजाले ॥ चे०॥ ३॥ राग देष खोह जस्मज थावे, शांत रसें सोवझ गुण गावे ॥ निरालंबन मन थोजे सोये, घातिकर्म तिहां रहे निव कोये ॥ चे०॥ ४ ॥ एणिविध असंख्य प्रदेश इव्य जावे, प्रदेश प्रत्ये अनंत गुण थावे ॥ गुणे अगुरुख प्रयव अनंत, जाणे मणिचंद होय एम जव अंत ॥ चे०॥ ५॥ इति॥

## ॥ अथ नवम सञ्चाय प्रारंज ॥

॥ जगसरूप चेतना संजलावे, नरजव श्रिषर देखावे रे ॥ दश हष्टांते दोहिलो श्रावे, पुष्णपसायें ते जब पावे रे ॥ जि ॥ र ॥ श्रार्थकेत्र उत्तम कुल श्रावे, योगइंद्रिय पग्वडां पावे रे ॥ सजुरु सामग्री मेलावे, तिहां श्रं तराय काठिया नावे रे ॥ जण्णशा सांजलवानी जे श्रद्धा श्रावे, श्रव्यश्रा उसे शुं थावे रे ॥ श्रथवचाले मरण जो पावे, खोटो मोह लगावे रे ॥ जण्णशा मेरो मेरो करे जे घेलो, सब सारथको मेलो रे ॥ उठि चलेगो हंस एकेलो, विठड्यां मिलणो दोहिलो रे ॥ जण्णशा को इःख वांटी न लहे कोइ, इःख जोगवो तुम्हो जाह रे ॥ मसाणतांह पहोंचाडे लोगा, बूटी जाण सगाइ रे ॥ जण्ण थ ॥ सब मिलि श्रापणो स्वारथ रोवे, पराइगित कुण जोवे रे ॥ उठुं श्रिषकुं कहुं कर्युं होवे, पूंठे कहीय वगोवे रे ॥ जण्ण ६ ॥ पुष्णपाप साथें सलाई, तेणे एहवी गित पाइ रे ॥ तिहां जीव जूख्यो जले पटकाय, पण धर्मवात न सुहायी रे ॥ जण्णशा धन रामाने कारणे ध्यातो, श्रारंत्रे करी होय मातो रे ॥ जन्म गमाठ्यो न जूखो जातो, फरे कर्मे करी तातो रे ॥ जणाणा पंच कारणे जो एकता पावे, कर्मराशि तुटी जावे रे ॥ मुक्तियोग्य ते चेतन थावे, मिण्चंद्र गुण श्रावे रे ॥ जण्णाणा एवा कारणे जो एकता पावे, कर्मराशि तुटी

## ॥ श्रथ दशम सद्याय प्रारंतः॥

॥ समिकती तेह यथास्थिति जावे, तेह मनपज्जव होये सजावे ॥ तेह पज्जव जिए देखे जाएं, उदयवेला ते छावी टाएं ॥ सण्॥ १॥ वाफ नि मित्त घणी रीतें जासे, पण तथाविध कारण हे पासे ॥ तेह देखी उदा सी न रहेवे, कोइनो दोष तेहने निव देवे ॥ सण्॥१॥ हुंकरता मानी कर्म वंधावे, तेह कर्म्म सत्तायें थावे ॥ उदय माफक वंध उदयें छावे, तेह विना कोइ उदीरणा पावे ॥ सण्॥ ३॥ निकाचना विण वंध खरी जावे, निकाचना विण कोइ उदयें छावे ॥ वंधवेलायें जेहवो रस होये, उदय

वेला तेहवो तिहां सोये॥ स०॥ ४॥ इव्य केत्र काल जब मिलि आवे, तब विपाक ते पूरो थावे॥ तिण कारणे समता आणो, जले मिलचंड यथास्थित जाणो॥ स०॥ ४॥ इति॥

॥ अथैकादश सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ राग रामग्री ॥ श्रात्मारामें रे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोय रे ॥ ता हरुं दीसे निव कोय रे, सहु खारण मह्युं जोय रे, जन्म मरण करे खाय रे, पूठें सब मिखि रोय रे ॥ श्राण् ॥ र ॥ सजनवर्ग सिव कारिमो, कूढ़ो छुं दंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुर्फ सार रे, धर्मविण निह कोइ श्राधार रे, जिणें पामे जवपार रे ॥ श्राण् ॥ श्र ॥ श्रानंत कखेवर मूकीयां, तें कियां स गपण श्रानंत रे ॥ सब छहेंगें रे तुं जम्यों, तोहि न श्राञ्यों तुर्फ श्रंत रे ॥ चेतो हृदयमांहे संत रे ॥ श्राण् ॥ रे ॥ जोग श्रानंता तें जोगञ्या, देवमनु श्रातमांहि रे ॥ स्वित न पाम्यों रे जीवडों, हजी तुर्फ वांठा हे सांह रे, श्राणों संतोष चितमांह रे ॥ श्राण् ॥ ध ॥ ध्यान करों रे श्रातम तण्ं, पर वस्तुश्री चित्त वारी रे ॥ श्राण् ॥ ध ॥ ध्यान करों रे श्रातम तण्ं, पर वस्तुश्री चित्त वारी रे ॥ श्राणाद संबंध तुर्फ को निहें, श्रुक्त निश्रय एम धारी रे ॥ इण्विध निज चित्त कारी रे, मणिचंडे श्रातम तारी रे ॥ श्राण।। थ॥

॥ अथ द्वादश सवायं प्रारंजः॥

॥ चेतन जब तूं ज्ञानिवचारे, तब पौजलिकसंगित गंमे ॥ आपिह आ
प सजावमें आवे, परपिणित हूरें गमावे ॥ चे० ॥ १ ॥ चेतन जब तुं ज्ञा
नथी न्यारो, तब पुजल तुज लागे प्यारो ॥ मोहनीकरमें तुजने मायों,
चेतन तें तो कलु न विचायों ॥ चे० ॥ १ ॥ मोहराजकी बहु राजधानी, ते
माहि सूता जे अज्ञानी ॥ कर्मरायकी हुंकी लखाणी, नरक निगोदे जइ
शकराणी ॥ चे० ॥ ३ ॥ जब लगे आतमड्य निव चुजे, तब लग मिथ्या
मनके मुछे ॥ क्रियाकष्ट ते करे घणेरा, कर्म तणा निव आवे गेडा ॥ चे०
॥ ४ ॥ धर्म धर्म सहुको करी माने, धर्म मर्म तो विरला जाणे ॥ बाहिर
दृष्टि बाहिर ध्यावे, कारज सो कारण करी जावे ॥ चे० ॥ ४ ॥ क्रानी ते
जो ज्ञान विचारे, कारज कारण दो नय धारे ॥ कारण यही कार्यमां आवे,
तव सो ज्ञानी शिवपद पावे ॥ चे० ॥ ६ ॥ आपिह आप सजावमें
खेले, परपरिणीत सिव हुर मेढहे ॥ आरहंत जाषित धर्म आराधे, मुकि
मार्ग ते निश्चय लाधे ॥ चे० ॥ ३ ॥ तेह तणां कारण जे जोये, निश्चय

वत हृदयथी न ठांमे ॥ ज्ञान दिस्तिन चारित्र आराधे, सेवकने सुख सं-पति वाधे ॥ चे०॥ ए॥ एति ॥

॥ श्रथ त्रयोदश सञ्चाय प्रारंतः॥

ाराग जैरव ॥ अणविमास्युं करे कां मूढा, लोज लागे वंग ठे जूं का ॥ माया करे तुफ सहु कहे कूडा, माने विजय तुफ नावे रूडा ॥ अ०॥ १॥ कों घे करीने तपो कां जाई, अचंकारि परहाथे विकाइ ॥ हास्य रित जय शोक निवारों, देव छुगंग्रा तुमें चितमांथी मारो ॥ अ०॥ १॥ अध्यासित तुफ बहुत फर्माई, ए महामोह सवहिं छु: खदायी। चारचग्रकं करी चग्गति पाय, न्यायेंरित मणु देव गित थाय ॥ अ०॥ १॥ मोही मग्ज अणुवंध खपावे, यथास्थिति जावें समहिष्ट आवे॥ ते झानी जगमें सुख पावे, जवतणां छु: ख सर्व गमावे ॥ अ०॥ शा अप्रत जावें समहिष्ट आवे॥ ते झानी जगमें सुख पावे, जवतणां छु: ख सर्व गमावे ॥ अ०॥ शा खीण वीतराग नर होय जे कोई, छु: ख दोहग तस नाशज हो इ॥ नाण दंसण च रणविधन खपावे, केवलनाण दंसण तव पावे॥ अ०॥ ६॥ तथा जव्यत्व सामग्री आवे, गुरुक्वरूप छपरुचि कहावे॥ अ०॥ ६॥ तथा जव्यत्व सामग्री आवे, गुरुक्वरूप छपरुचि कहावे॥ अ०॥ १॥ शा चतुर्दश सद्याय प्रारंजः॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन जब त्मिहं आपें न्यारा ॥ परवस्तु उपर क्या धरे प्याग ॥ जिणें करी वंधण होइ जाइ, हारी मूकी आपणी ठक्ठराइ ॥ चेणा १ ॥ साया करि पाशमां तुम पाड्या, मुखे मीठाई देई जमाड्या ॥ ठांमी निद्धा जब मोह केरी, तब जाणे सोये दुर्गति फेरी ॥ चेण ॥ १ ॥ आगम पढी आगमी नाम कीना, मानें चढी उपदेश वहु दीना ॥ खयोप शम विणु किया वहु किन्ही, ताको फल सुरपदवी लीनी ॥ चेण ॥ ३ ॥ जवतांइ प्रमाददशा निव जावे, तब तांइ तुम संसार जमावे ॥मोह पिशा च तुह्य दुःख देखावे, अप्रमत्त जवके सूड हाथे आवे ॥ चेण ॥ ४ ॥ उद यागत वस्तु यथास्थित जावो, वंध नीकाचनो निहंं कोई दावो ॥ जाणे मिण्चंद इम कर्म खपाई, जिम पामो आपणी ठकुराई ॥ चेणाया इति॥ आथ पंचदश सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ जो चेते तो चेतजे, जो बुके तो बुक ॥ खानारा सहु खाइ

जरो, माथे पडरो तूज ॥ १ ॥ त्रापसवारथ सहु मिल्युं, न करे तुज कोय सार ॥ परमारथ जाण्यो नहीं, जूल्यो तुंहि गमार ॥ १ ॥ परमारथ जब जाणीयों, चिहुंगति देखे पास ॥ पद्मव सिव दूर खेखवे, त्रापही रहे उ दास ॥ ३ ॥ निराशपणे चिंतवे सदा, त्रापहि मन्नता होय ॥ मुहूर्त एक रहे मन मन्नता, शांतिरस पावे सोय ॥ ४ ॥ कायावचन मन त्याग करी, त्रापही ज्योति जगाय ॥ घातीकर्मकुं क्तय करी, केवललही पाय ॥ ५ ॥ त्रापही ज्योति जगाय ॥ घातीकर्मकुं क्तय करी, केवललही पाय ॥ ५ ॥ त्रापही ज्योति जगाय ॥ घातीकर्मकुं क्तय करी, केवललही पाय ॥ ५ ॥

॥ अथ षोडश सद्याय प्रारंजः॥

। राग केदारो गोडी ।। शिवपुर वासतां सुख सुणो प्राणी, कहेतां पार न आवे नाणी ॥ कोयक राय वनमांहे गयो जूलो, तृषाक्रांत पडियो प कीलो ॥ र ॥ तव एक जील आव्यो राय पासें, पायुं नीर आणी जब्हा सें ॥ राय पल्लीपतिने तेडी घर आवे, तस इन्जायें सुख जोगवावे ॥ २ ॥ केतो काल तिहांकणे रहियो, निजयानक जावा गहगहियो ॥ पूठे कुढुंव तुद्धा सुख अवदात, तेह जपम देखाडो तात ॥ ३ ॥ तेह वनचर किसि जपम कहावे, तिम सिद्धसुख नाणी कीशुं देखावे ॥ मणिचंद्र कहेनिराश धावे, शांतिरस पार किमे न आवे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तदश सातवारनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ आदि तुं जोजे र आपणी, अनादि निगोदहमां हि ॥ अनंत चतु एय तिहां हूंता, हवडां ठतां ठे आहि ॥ १ ॥ सोमतणी परें शियलो, शां तिरसें करी जाण ॥ तेणे उंका ग्रण हशे, होशे केवल नाण ॥ १ ॥ मंगलें मांगलिक करे, जिणसिक साहू धर्म ॥ पापति मिर पूरें जशे, पामीश तुं शिव शर्म ॥ ३ ॥ बुक्ति बुध जली करे, ठांमे जे पाप ॥ ज्ञान दिसन चा रित्र खहे, टालीश संताप ॥ ४ ॥ गुरुतणी संगति करे, पामीश तेणे नाण ॥ कर्म खपावी आपणां, पहोंचीश तुं निर्वाण ॥ ४ ॥ शुक्र राखे निज म सतकें, बल वीर्य तिणे होये ॥ संयम साधीश आपणों, कर्म क्य तेणे होये सतकें, बल वीर्य तिणे होये ॥ संयम साधीश आपणों, कर्म क्य तेणे होये ॥ ६ ॥ शनैः शनैः अज्यासथी, कोधादिकनो त्याग ॥ केवल नाण मले सही, होशे शिवमाग ॥ ९ ॥ कलंक राहुने ठांकजे, मार्गशुक्त ए जाणी ॥ पृष्टियह नवमो जशे, मणिचंद शुक्तवाणी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथाष्ट्रादश पन्नरतिथिनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ शुक्कपक्त पडवेथी निश्चल, धर्मकला तस वाधे जी ॥ विविध विघन बीजे डुविध धर्म, यति श्रावकनो साधे जी ॥ १॥ त्रीजे त्रण तत्व श्रारा थो, चारित्र दर्शन ज्ञान जी ॥ चोथे चीर प्रावना प्रावो, मैत्रादिक शुप्तः ध्यावाजी ॥ १ ॥ पंचमीयें नाण पंच पामे, पंचमगति पहुंचावे जी ॥ विष्ठ ये वही क्षेत्रया आणे, वकाय रखावे जी॥ ३॥ सप्तमीयें सप्त जय निवारी, सातेसुख उपजावे जी ॥ अष्टमीयें अष्ट कर्म निवारी, सिद्धना आठ गुण पावे जी ॥ ४ ॥ नवमीयें नव तत्त्व विचारी, नववाड ब्रह्मवत राखे जी ॥ दशमीयें दशविधसंयम पाली, दशरुचि समकित राखे जी ॥ ५ ॥ एका दशें एकादश खंगा, श्रावक एकादश पहिमाजी ॥ द्वादशमी यें, साधुनी द्वादश पिडमा जी ॥६॥ तेरशीयें तेर काठिया वारि, तेर कि या निवारे जी ॥ चनद्रशीयें चनद्र पूर्व आराधो, चनद् राज पार नतारे जी ॥ 9॥ पन्नरशीयें योग पन्नर निवारी, लंका पन्नर ढांको जी ॥ कृष्णप क्रपडवेथी ठंठी कला, अमावास्यातांइ जाणोजी ॥ ए ॥ शुक्कपक्षि चढ तो कला, सही धर्मतणी वलाणी जी ॥ कृष्णपक्तनी पडती कला कही, मणिचंद्र एहं खखाणी जी ॥ ए॥ इति॥

॥ अधैकोनविंशति सञ्चाव प्रारंजः॥

॥ राग केदारो गोडी ॥ मिछत्व कही जें कुत्त्व वाचानो, यथास्थिति जाव नावे।। आसना ड्रव्यपद्यविपर आश धरावे, खनंतानुवंधीयो इन क रावे॥ १॥ गुणवंत जाखो तोहे देष छावे, मुहूर्त्तथी मांकी जावजीव क हावे॥ छनंतानुवंधीयो क्रोध छावे, जवानुवंधी ते छुर्गति पावे ॥१॥ गुण वंत प्रतिदेख्याथी हीणो, अवग्रण आगस करी खूवे दीणो ॥ माने चढ्यो निज पराक्रम वोले, दुर्गति तणुं वारणुं ते खोखे ॥ ३॥ धर्म थोडो करी वहु प्रकासे, आपे एम जाणे मेरो यश जासे, धर्म देखाडी ठरो बहु खोक, अनंतानुवंधी माया करे फोक ॥ ४ ॥ परवस्तु अपनो करीने माने, नगमे रंगाये रह्यो निज ठाणे ॥ स्रोजसागर पूरो निव थावे, तुष्णार्ये करी छ र्गति जावे ॥५॥ ए अनंतानुवंधी कह्या चारे, एकनी मुख्यतागुण्ता त्रण धारे ॥ नरकिनगोद पहूंचाडे जाई, हारीने जाये आपणी ठकुराई ॥ ६ ॥ यथास्थितित्रव उपर मेन रंजे, गुण जाएया पढे ते न गंजे ।। धर्मे माया

न करे पुण्य वंचे, जणे मणिचंड परवस्तु न संचे॥ ७॥ इति॥
॥ अथ विंशति सञ्चाय प्रारंज॥

भाराग केदारो गोडी ॥ आजको साहो लीजीयं, कालकेणे दीठी ॥ जो जे आप सजावमे, जब बात अनीठी ॥ १ ॥ कण कण तुं मत चले, वि रह उपजावे ॥ आप सजावमें आवतां, बहु प्राप्तज यांवे ॥ १ ॥ विजंब जसाए, पुजलातीत तुं रंजे ॥ आपसजावमां अमीरसा, तहने देली तुं गंजे ॥ ३ ॥ सुपन जसी ए घातडी, राधावेधज साधो ॥ एकांते ते स्वाद न चाखवो, उर सनेह न बांधो ॥ ४ ॥ अखोबो नाटक रमे, नाटक लय लागी ॥ आपसजावमां आवियो, लह्युं नाण सीजागी ॥ ४ ॥ स्विवे अण देखवे, परोवाए दोरो ॥ राग देष धारा विचें, वर्ते चेतन गोरो ॥ ६ ॥ महर्त्तमात्रस्थिरतावशें, तूटे घातीयां कर्म ॥ तथा जव्यत्व कारण मिले, पानियें शिवशर्म ॥ ५ ॥ ए अज्यास करतां थकां, स्थिरतां जो वाधे ॥ म णिचंद्र खय लागी रहे, परमाणंद साधे ॥ इति ॥

॥ श्रयेकविंश सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ राग केदारो गोडी ॥ साघे ते पथास्थित जाव, अप्रत्याख्यानीनो एह स्वजाव॥ जाणे सर्वपद्यव होडावे, पद्ययोगे प्रच्यकाण न थावे ॥ १॥ कांगे हां कुं कांगे राखुं योग, एटहा विण निव चाहे जोग ॥ तेतो देशथी पच्यका ण थावे, प्रत्याख्यानीयो उद्देष बती पावे ॥ १॥ संजह सर्व सावद्य योग हां के, कर्मसंतो ते उदय वही मंके ॥ चारित्रयोगें करी मन पाढुं उसारे, हुं करता नही इम ते संजारे ॥३॥ इत्यचारित्रियानो एह स्वजाव, तेने जाणे इति। विजाव ॥ समकितसहित चारित्र ग्रुणएक, हेय उपादेय उने निव वेक ॥ ४॥ जाणे आप सवे हुं थावे, ग्रुजाग्रुज उंभी सुख पावे ॥ आतम स्वजावमां मन खय हायो, सर्व मूकी मनें शूना थार्ज ॥ ५॥ जो एहवुं चित्त चिते थिरता पावे, तिणे अपमत्त दशा जीव थावे ॥ इम करतां उंच हाय खावे, तो घातीयां वही कर्म खपावे ॥ ६॥ कपक श्रेणी आवी जो हाथ, खमावीने हुर्ज सनाथ ॥ यथाख्यात संयम तव पावे, तेथी सा वद्य योगज पावे, केवही संजलण थावे ॥ ९॥ जब शैक्षेशीकरणें आवे, योग हुं ता ते सर्व हंथावे ॥ जणे मिणचंद्र सम श्रेणीसिक्ष पावे, तेथी आनंत सुख जीव थावे ॥ हि ॥ इति ॥

॥ श्रय श्री ज्ञानविमसजी कृत शोससुपननी सचाय प्रारंजः॥ ॥ दोहा ॥ श्री गुरुपद प्रणमी करी, शोख सुपन सुविचार ॥ फुःसम स मय तणा कहुं, शास्त्रतणे अनुसार॥१॥शारद बुधदायी॥ ए देशी॥ ढाल॥ पाढलीपुर नयरे, चंद्रगुप्ति राजान॥चाणायक नामें, बुद्धिनिधान प्रधान॥ एकदिन सुखसेजें, सूतो रयण मजार।।तव देखे नरपति,सोख सुपन सुख कार ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ सुखकारक वरक छुःख केरां, निरखे नृप वडवखतें ॥ वाजीत्रतूरे जगतसूरें, आवी वेठो तखतें ॥ चाणायक नायक मति केरो; त्रावी प्रणमे पाय ॥ सोख सुपन रयणांतरें लाघ्यां, ते बोखे नरराय ॥ ३ ॥ ढाल ॥ धुरि सुहणे देखे, सुरतरु जांगी माल ॥ बीजे छाथमीयो, सू रज विंव अकाल ॥ त्रीजे चंड्रचालाएी, घोषे नाच्यां जूत ॥ पांचमे बार फणाखो, दीनो अहि अङ्गत ॥ ४॥ तु०॥ अति अङ्गत विमान वढ्युं, ति म ठठे सुहणे देखे॥ कमल जकरहे सातमे, आठमे आगियो अंधारे पेलें ॥ सुको सरोवर नवमे, दक्षिषपासे जरीयो नीर॥ दशमे सुहर्षे सोवनया बे, कूतर खाये स्त्रीर ।।।।। ढाढ ॥ गज छपर चढिया, वानर देखे इग्यार ॥ मर्यादा लोपे, सागर सुपन ए दार ॥ सोटे रथ जुता, वाढडा तेरमे देखे॥ जांखां तिम रयणां, चजदमे सुपने पेखे ॥ ६ ॥ व्रु० ॥ तिस देखे पनरमे वृपर्ने, चिंद्या राजकुमार्॥ काला गज वेहुमांह मांहे, वढता सोल ए सा र ॥ एहवां सोख सुपन जे खाध्यां, संजारे नृप जाम ॥ एहवे आवी दिये वधाइ, वनपालक अनिराम ॥ ७ ॥ ढाला। खामी तुह्म वनमां, श्रुतसागर गुण खाणि॥जडवाहु मुनीसर, चौद पूरवधर जाणि॥ आव्या निसुणीने, वंदन काजें जाय ॥ चाणायक साधें, नरपित प्रणमे पाय ॥ ए ॥ त्रुण ॥ पाय नमीने नृपति पूढे, सोख सुपन सुविचार ॥ कृपा करी जगवन् मुज दाखो, एइ करो जपगार ॥ तव गिरुष्ठा गणधर, बोख्या नरपति श्रागें॥ इसम् आरें सुपननो, होशे बहुद्धो साम ॥ ए॥ ढाल ॥ सुरतरु केरी शा खां जांगी, तेह्नुं ए फलसार जी ॥ आज पढ़ी कोय राजा जाने, नही लिये संयम नार जी ॥ श्राथम्ये। सूरज विंव श्रकाले, ते श्राथम्यं, केवल नाण जी ॥ जातिसमरण निर्मेख उहिण, मण पद्धव नाण जी ॥ ॥ १० ॥ त्रीजे चालणी चंद्र थयो जे, जिनमत एणिपरे होशेजी ॥ श्राप उत्थाप करशे बहुसा, कपटी कुगुरु विगोशे जी ॥ जूत नाच्या जे जूतले.

चोथे, ते कुंगुरु कुदेव मनाशे जी ॥ दृष्टिराग व्यामोह्या श्रावक, तेहना जका याशे जी ॥ ११ ॥ बारफणो विषधर जे दीठो, तेहनुं ए फख जाणो जी ॥ बार वरस छुर्जिक् पडशे, दोशे धर्मनी हाणी जी ॥ वह्युं विमान श्रावत जे पाढुं, ते चारण मुनि निव होशे जी ॥ सातिचार श्राचारी शो डा, धर्म अधर्मे जारो जी॥ ११॥ कमल उकरडानुं फल एही, नीच उंच करी गणीयें जी ॥ क्तिय कुल शूरा तेहि पण, पेसासीते हणीयें जी ॥ व्यागिया सुहणानुं फल जाणो, जिनधर्मे दढ थोडा जी ॥ किथ्याकरणी करता दीले, श्रावक वांका थोडा जी ॥ १३॥ सूका सरोवर दक्षिण पासें, नीर तरीयुं सुविलास जी ।। आप जगारण काजे मुनिवर, दक्षिण दिशमां जारो जी ॥ जिहां जिहां जिनकख्याणिक तिहां तिहां, धर्म विहेद यारो जी ॥ संत श्रसंत परे मनाशे, धर्मीजन सीदाशे जी ॥ १४ ॥ सोवनवासे खीर त्रखे जे, कूतर दसमे सुहणेजी ॥ उत्तमनी उपराजी खद्मी, मध्यम बहुपरिमाणेजी॥गज उपर जे वानर चढीया, ते होशे मिथ्यात्वी राजाजी॥ जिनधर्में वली संशय करता, मिथ्यामतमां ताजाजी ॥ १५॥ मर्यादा खो पे जे सागर, ते ठाकुर मुकरो न्याय जी ॥ जूठ साचा साचा जूठा, करशे खांच प्सायजी ॥ जेइ वडेरा न्याय चलावे, तेह करे अन्याय जी ॥ कूड कपट बलबद्ध चर्णेरा, करता जूब जपाय जी ॥ १६ ॥ मोटें रथे जे वाबडा जुत्या, तेरमे सुपने नरेराजी ॥ घडपणे संयम नही खीय कोये, खघुपणे कोयेक लेशे जी ॥ सूखें पीड्या डुःखे जीड्या, पण वैराग न धरशे जी॥ गुरवादिक मूकीने शिख्या, आपमति यइ फरशे जी ॥ १७॥ जांखां रत चौदमे दीवां, ते मुनिवर गुण हाणी जी ॥ आगम गत व्यवहारनें बंभी, द्रव्यनी ब्रतं लीणा जी ।।कहणी रयणी एक न दीसे, होशेचित्त अनाचारे जी॥ शुद्ध परंपर वृत्ति उवेखे, न वहे व्रतनो जार जी ॥ १०॥ राजकुमर जे वृषने चढीया, ते मांहोमांहे निव सखरोजी ॥ विरुष्टां वयर सगां संघा ते, परशुं नेह ते धरशेजी ॥ काला गज बेहु वढता दीवा, ते माग्या मेह न वरसे जी ॥ वणज व्यापारें कपट घणेरा, तोही पेट न प्ररशे जी ॥ रए॥ सोल सुपननो अर्थ सुणीने, जडबाहु ग्ररु पासें जी ॥ इसम समय तणां फल निसुणी, राजा हिये विमासे जी।। समकित मूल बारवत लेवे, सारे आतमकाजजी ॥ जविक जीव बहुखा प्रतिबोध्या, जडबाहु गुरुराज जी

॥ १०॥ गुण्रागी उपशमरस रंगी, विरित्यसंगी प्राणी जी॥ साची स इहणाशुं धारे, समिकत ए सिंह नाणी जी॥ निंदा न करे वदनें केहनी, बोले अमृतवाणी जी॥ अपरंपारजवजलिध तरेवा, शमता नाव समाणी जी॥ ११॥ श्रीजिनशासन जासन सुंदर, बोधिबीजसुलकारंजी॥ जीव दया मनमांहे धारो, करुणारस जंडार जी॥ ए सकाय जणी ने समजो, जिसम समय विचार जी॥ धीरिवमल कविराज पसायें, कवि नयविमल जयकार जी॥ ११॥ इति॥

॥ अथ श्री उद्यवीजयजी कृत उत्तराध्ययनपट्त्रिंश सञ्चायोः प्रार्प्यते॥ ॥ तत्र प्रथम विनयाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ श्रीनेमीसरिजनतणुं जी ॥ ए देशी ॥ पयत्रण देवी चित्तघरी जी, वि नय वलाणीश सार ॥ जंबूने पूठे कह्यों जी, श्रीसोहम गणधार ॥ १ ॥ जितकजन विनय वहों सुलकार ॥ ए श्रांकणी ॥ पहिले श्रध्ययने कह्यों जी, जत्तराध्ययन मजार ॥ सघला ग्रणमां मूलगों जी, जे जिनशासन सार ॥ जित्रण ॥ १ ॥ नाण विनयथी पामीयें जी, नाणें दिस्सण ग्रुद्ध ॥ चारित्र दिसण्यी हुवे जी, चारित्रथी पुण सिद्धि ॥ ज० ॥ ३ ॥ ग्रुरुनी श्राण सदा धरे जी, जाणे ग्रुरुनो जाव ॥ विनयवंत ग्रणरागीयों जी, ते मु निसरल सजाव ॥ ज० ॥ ४ ॥ कण्तुं कुंगुं परहरी जी, विष्टाग्रुं माने राग ॥ ग्रुरुद्धोही ते जाणवा जी, सूत्र्यर कपम लाग ॥ ज० ॥ ५ ॥ कोह्या कान नी कूतरी जी, ठाम न पामे र जेम ॥ शील हीण श्रकह्यागरा जी, श्राद र न लहे तेम ॥ ज० ॥ ६ ॥ चंदतणी परें जजली जी, कीरित तेह लहंत ॥ विषयकषाय जीती करी जी, जे नर विनय वहंत ॥ ज० ॥ ७ ॥ वि जयदेव ग्रुरु पाटिव जी, श्रीविजयसिंह सूरिंद ॥ शिष्य जदयवाचक जणे जी, विनय सयल सुलकंद ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दितीय परिसह अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ शांतिसुधारस कुंममां॥ ए देशी॥ सोहमसामि जंबूप्रतें, उपदेशे ध में सुविचार रे॥ उत्तराध्ययन वीजें कह्यों, परिसहतणों अधिकार रे॥ र ॥ इंडियजय तुम्हें आदरों॥ ए आंकणी॥ जिम सहो सुख संसार रे॥ अनुक्रमें नाण किरिया थकी, शाश्वतां सुख सहो सार रे॥ इंण्॥ १॥ खुह तृषा सीत नें तावडों, कंस अचेल तिम होय रे॥अरतिरति नारि चर्या वसी, निसी हि राय्या पुण जोय रे ॥ इं० ॥ ३॥ तेम आकोश वध याचना, रोग अलाज तृणफास रे ॥ मल स्नतकार मितमूढता, होय समिकत सुखवास रे ॥ इं० ॥ ४॥ एह बावीश पिरसह कह्या, प्रथम तिहां क्रषज जिणंद रे ॥ इं० ॥ ४॥ एह बावीश पिरसह कह्या, प्रथम तिहां क्रषज जिणंद रे ॥ संसही वरसना पामी थुं, केवल नाण सुखकंद रे ॥ इं० ॥ ५ ॥ ढंढ ण मिनवरे सांसहो, पिरसह माम अलाज रे ॥ तेहथी तेहने जपनो, के वल संपदा लाज रे ॥ इं० ॥ ६ ॥ बहुविध पिरसह सांसहा, शासननाय क वीर रे । दंह नाण अविचल लह्यं, मेरुगिरि साहस धीर रे ॥ इं० ॥ ९ ॥ अविजयदेवगुरु पाठवी, अविजयसिंह सूरिंद रे ॥ शिष्यवाचक जदयविजयनी, वाणी अवधारी नरवंद रे ॥ इं० ॥ ए ॥ इति ॥

n अय तृतीय चतुरंगी अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ वीरमाता प्रीति कारणी ॥ ए देशी ॥ प्रथम मानवजन दोहिलो, सु णाने चित्त आणो ॥ पाद्यन सदहणा खरी, धर्मश्रंग एह जाणो ॥ १ ॥ चा रशुज अंग जिन धारीयें ॥ ए आंकणी ॥ कहे सोहम सामी ॥ त्रीजे अ ध्ययन निसुण्यो, जंबू शिरनामी ॥ चा० ॥१॥ मणुश्र जन इलहता कारि णी, दश होइ दिलंत ॥ सांजलनो नली दोहिलो, जिनराय सिद्धंत ॥चा० ॥३॥ जइनि ते सांजलनुं मले, तोहि रुचि किहां साची ॥ कबहुं कि स्था तणी रुचि हुइ, बल शक्ति तेहि काची ॥ चा० ॥ ४ ॥ जाग्ययोगी लहे, चार ए, कोइ जिनयण प्राणी ॥ धर्मनुं आलस मत करो, तुम्हेतेणहित जाणी ॥ चा० ॥ थ ॥ श्रीविजयदेव गुरु पाटिव, विजयसिंह मुनिराय ॥ शि ष्यतस लपदिशे एणिपरं, नदयविजय नवकाय ॥ चा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अय चतुर्थलंस्कृताध्ययन सद्याय प्रारंजः॥

॥मुनिजन मारग चालतां॥ ए देशी॥ अजरामर जग को नहिं, प्रमाद ते ठांको रे॥ मिथ्यामित मुकी करी, ग्रंण आदर मांको रे॥ रे॥ ग्रुकधर्म नो खप करो॥ ए आंकणी॥ टाली विषयविकारो रे॥ चलथे अध्ययने कहे, वीर एह विचारो रे॥ ग्रु०॥ शा पाप करम करी मेलवे, धनना लख जेहरे॥ मूरखधन ठांकी करी, नरके जमे तेह रे॥ ग्रु०॥ ३॥ बंधव जनने पोषवा, करे जे नर पाप रे॥ तेह तणां फल दोहिलां, सहे एकलो आप रे॥ ग्रु०॥ ४॥ खात्रतणे मुखे जे मह्यो, एक चोर अयाण रे॥ निज कर्मे पुःख देखतां, तेहने कुण त्राण रे॥ ग्रु०॥ ४॥ इम जाणी

पुष्य की जियें, जेहची सुख याये रे ॥ निव निव संपद अजिनवी, वसी सुजश गवाये रे ॥ शु० ॥ ६॥ विजयदेव ग्रह पाटवी, विजयसिंह मुणिं दो रे ॥ शिष्य उदय कहे पुष्यची, होइ परम आणंदो रे ॥ शु० ॥ शाइति ॥ अथ पंचम अकामाध्ययन सद्याय प्रारंजः ॥

॥ सकल मनोरच पूरवे ॥ ए देशी ॥ पंचम अध्ययने कहे ए, पंचम गण धर नियजीए सहहे ए, जंबुस्वामी ते सही ए ॥ १ ॥ मरण सकाम अका म ए, मूरलमरण अकाम ए, सकाम ए, बीज उजाण पणायकी ए ॥ १ ॥ प्रथम अनंती वार ए, जीव लहे निरधार ए, सार ए, बीजुं पुण्य कोइक लहे ए ॥३॥ इह परलोक न सहहे, जे जावे तें सुखी कहे, निव रहे, तत्व तणी मन वासना ए ॥४॥ पंचे आश्रव आदरे, विविध परें माया करें, निव तरें, ते अज्ञानी जीवडो ए ॥४॥ सामायिक पोसह धरे, साधु तणा गुण अनुसरे, निस्तरे, ते प्राणी नाणी सही ए ॥ ६॥ गुण अवगुण इम जाणी ए, गुण धरी एगुण लाणी ए, वाणी ए, विजयसिंह गुरु शिष्यनी॥७॥इति ॥ अथ षष्ठ गंथियाध्ययन सञ्चाय प्रारंज ॥

॥ ढाल ॥ मधुविंदू अनो ॥ ए देशी ॥ संसारें रे जीव अनंत जवे करी, करे बहुला रे संबंध चिहु गित फरी फरी ॥ निव राखे रे कोय न तव नि ज कर धरी, सगाई रे कहोकिए परें कहीयें खरी ॥१॥ त्रुटक ॥ कहो खरी किए पर एह सगाई, कारिमो संबंध ए ॥ सिव मृषा मात पिता बहेनी, बंधुनेह प्रबंध ए ॥ घरे तरुए एहिएी रंगें परणी, त्राए कारए ते नही ॥ मिए कएग मोति अध्व ध्व ध्व कए, संपदा सिव संग्रही ॥ १ ॥ ढाल ॥ ए यावर रे जंगम पातक दोइ कहां, जेह करतां रे चलगइ छुःख जीवें सह हां ॥ तेह टालो रे पातक द्रूरें जिवयणां, जिम पामो रे इहपर जवसुल अति घणां ॥३॥ त्रुणा अतिघणां सुख तुम्हें लहो जिवयण, जैनधम करी खरो ॥ परदार परधन परहरी तिणे, जैनधम समाचरो ॥ जे मदें माचे रूपें राचे, धर्म साचे निव रमे ॥ अंजलिजल परेंजन्म जातो, मृढ ते फल विण गमे ॥ शा ढाल ॥ अध्ययने रे लहें श्रीजिनवर कहे, शुजहिए रे तेह जली परे सहहे ॥ ते सहही रे तपनियमादिक आदरे, आदरतो रे केवललही पण वरे ॥ ए ॥ त्रुण ॥ लही वरे जिनधर्म करतो, हसुअकर्मी जे हुवे ॥ पंचमो गणधर स्वामी जंबू, पूठीयो इिए परें कहे ॥ श्रीविजय देवसूरिंद पटधर,

विजय सिंह मुनीसरु, तस शिष्य वाचक उदय इणिपरें, उपदिशे जिव

्।। अथ सप्तम एडकाध्ययन सद्याय प्रारंतः॥

॥ अज जिस कोइक पोषे आंगण,प्राहुणडाने हेते रे॥ते अजजव मन गम ता चरतो, तास विपाक न चेते रे ॥ १॥ श्रीजिनवीर इणीपरें जंपे ॥ए आंक णी ॥ विषयविकार म राचो रे॥तप जप संयम किरियानो खप, की जें जग साचो रे ॥ श्री० ॥ १॥ मद्य मांस आहार करंतो, विषयविकार उमाह्यो रे ॥ नरकतणुं ते आउखुं बांधे, अजपरिकरमे वाह्यो रे ॥ श्री० ॥ ३॥ को डी खोजे सहस्त गमावे, मंदमति जिस कोइ रे ॥ श्रंबतणां फलकारण डांक्ये, रा ज्यक्रिक चरी सोइ रे ॥ श्री० ॥ ४॥ तिम नरजव सुखकारणी डांके, अमर तणां सुख जोग रे ॥ तिम वली मोक्ततणां सुख मोटां, किम पामे जह खो क रे ॥ श्री० ॥ १॥ एणिपरें मृहपणुं प्रहरीयें, पंकित गुण आदरीयें रे ॥ विजयसिंह गुरुशिष्य कहे इम, उदय सदा सुख वरीयें ॥ श्री० ॥ ६॥ इति ॥ अथाष्टम कपिलाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ रकमिणी अंगज जनमीयो॥ ए देशी॥ केवलनाण ग्रण पूरीयो, चोर पांचशें हेत रे॥ सुधन किपलो मुनि उपित्से, सुणो सुग्रण सिवत रे॥ १॥ विषम ए विषयरस परिहरो॥ ए आंकणी ॥ धरो धेर्य मनमाहि रे॥ कायर निव वांमी शके, त्यजे सुर उछाहि रे॥ विण्॥१॥ एह संसार जल निधि समो, कह्यो ते छःख जंगार रे॥ वाहाण सिरस एकज साहु, तिहां धर्म आधार रे॥ विण्॥३॥ जेह मन वचन काया करी, जयणा करे सार रे॥ तेह सघलां छःख परहरी, लहे सुख श्रीकार रे॥ विण्॥ ४॥ लाज जिम जिम हुवे अति घणो, तिम तिम लोज वाधंत रे॥ दोइ मासा धन कारणे, निव कोहि सरंत रे॥ विण्॥ ४॥ पंचसय एम प्रतिबोध्या, कृषि राय उपदेश रे॥ आठमा एह अध्ययननो, कह्यो अर्थ लवलेश रे॥ विण्॥ ६॥ ६॥ विजयदेवग्रह पाटवी, विजयसिंह सूरिंद रे॥ शिष्य तस वाचक इम जणे, उदयविजय सुखकंद रे॥ विण्॥ ९॥ इति॥

॥ अथ नवम निमराय अध्ययन सद्याय प्रारंजः ॥

॥ सुहिव सुहागण सुंदरी सारी ॥ए देशी ॥ देवतणी क्रिक जोगवी आ व्यो, मिथिखानयरी नरिंदो ॥ निम नामिजें इंडे परखी, जाखो ग्रुक्र मु णिंदो रे॥ जिवका एह्वा मुनिवर वंदो ॥ सुखसंपित निज हाथे किरों, जिम चिरकाखे नंदो रे॥ ज०॥ ए०॥ रे॥ ए आंकणी॥ चारित्र खेई मि थिखा नाथो, संवेगरसमां जीनो, निमराय क्रि पंथे चाले, राग न रोष अदीनो रे॥ त्र०॥ श॥ तास परीकाहेते सुरपित, बांजणवेशे आवे॥ मि थिखा अग्निजलती देखाडे, सुरपित पूछे जावे रे॥ ज०॥ ३॥ निजनगरी जलती कां मूकी, तिम वली आथि अनेरी ॥ मुनि कहे माहरुं कांइ न विण्ये, केहनी क्रिक्त जलेरी रे॥ ज०॥ ४॥ इंडजणे नगरी समरावी, अरियण सिव वश कीजें॥ अनुक्रमें संयममारग लेक् अविचल सुखपेद खीजें रे॥ ज०॥ थ॥ मुनि बोले जे अविचल मगरी, तस मंनाण करेशुं॥ अथिरतणो प्रतिबंध ते छांकी, थिरशुं प्रीति धरेशुं रे॥ ज०॥ ॥ ॥ कोडि कटक जीते जे तहथी, मन जीते ते शूरो। ।एम प्रशंसी हिर सुरलोके, पहोतो पुखें पूरो रे॥ ज०॥ आ अविचल सुख पाम्यो मुनिराजा, नवमे अध्य यने।। वात कही कहे जदयविजय इम, विजयसिंह गुरुवचने रे॥ ज०॥ ॥ अथ दशम अमपत्राध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ प्राणिया परतांत निव की जें ॥ए देशी ॥ पंकुरपान यये परिपाके,तरुथी पढ़े कोइ काले रे ॥ तिम धन जोबन जी वित पण तुं, गौतमनाणे नियाले रे ॥ रे॥ गौतमने श्रीवीर पयंपे ॥ ए आंकणी ॥ म करे सथ प्रमाद रे ॥ तेम इह परजव सुख पामी जे, टाली जे विषवाद रे ॥ गौ० ॥ १॥ माजतणी अणी यें जलकणिका, जिम हुवे अथिर सजाव रे ॥ तिम नरनां आंखलां जा णो, धर्म सदा थिर जाव रे ॥ गौ० ॥ ३॥ षटकायामां हि काल अनंतो, जमी यो छःख सहंत रे ॥ वली जराविल केश पंकुरा, इंडिय शक्ति न हुंती रे ॥ गौ० ॥ ३॥ तहवा मां हे जिनवर निव दिनें, पंचमकाले जरते रे ॥ मतमित नव नवी वाणी दिनें, धर्म ते कहो किहां वरते रे ॥ गौ० ॥ थ॥ जिनवाणी निसुणी इम गौतम, अनुक्रमे केवलनाणी रे ॥ दशमे अध्ययनें इम जांखे, वीर जि नेसर वाणी रे ॥ गौ०॥ ह॥ विजयदेवगुरु पष्ट प्राजाविक, विजयसिंह गुरु शि ह्यो रे ॥ वाचक छदयविजय इम बोले, पुण्य पहोंचे जगीशो रे ॥ गौ० ॥ ९

॥ श्रथ एकादश बहुश्रुताध्ययन संचाय प्रारंजः ॥ ॥ सहग्रह जोवे वाटडी ॥ ए देशी ॥ वीर जिणंदनी देशना, श्रांगमग्रण देखी ॥ जे बहुसुश्र ते वरणव्यों, श्रविनीत जवेखी ॥ वीण ॥ १ ॥ जे जे जाव वखाणीया, जावो ते जिंव लोको ॥ जिम इह जव परजव हुवे, तुम सुख संयोगो ॥ बी० ॥ १ ॥ जे बहुश्चत मुनिवर हुवे, तेहने उपमान॥ सुर तरु सायर शशी रिव, गज रथ बहुमान ॥वी०॥३॥ ख्रधचक्री चक्री हरि, धनकोशिसंह ॥ सीता नदी मंदिर गिरि, जंबू तरुलीह ॥ वी०॥४॥ इत्या दिक छपम घणी, बहुसुख ख्रणगार ॥ ख्रध्ययने ख्रग्यारमे, सहु ए ख्रधि कार ॥ वी० ॥५॥ विजयदेव गुरुपाटवी, विजयसिंह सूरिंद ॥ शिष्यछदय कहे सुख्रधरा, प्रतपो दुचंद ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वादश हरिकेशी अध्ययन सवाय प्रारंतः॥

॥ जगवल्लनगुरुजी, तूं वसीयो मोरे मन्न ॥ ए देशी ॥कृषि वनवासी सुर वरसेवित,पाले पंच आचार॥पंचे निजई डिय वश करतो,तपसी उपविहार ॥१॥मातंग् मुनीश्वर॥ ए आंकणी॥ हरिकेशी धनधन्य॥सूधो मुनिवर जे कहायो, किरियागुण संपन्न ॥मातंगण।२॥मास तणो तपसी हरिकेशी, ति डुःख जखनी ठाणी ॥ मखशोजित तनु रह्यो संवेगी, निर्मल काउस्सगा जाणी ॥माण।३॥ राजसुता जङा तिहां त्यावी, यक्तें नमवा काम।। जम तीमांहे मुनिवर देखी, मुह मचकोडे ताम ॥ मा०॥ ॥ ते देखी सुरवर तव कोप्यो, कन्या कीधी छुष्ट ॥ त्रोडे हारनें मोडे तनु सा, प्रखपे जूता विष्ट ॥ माण ॥ ५ ॥ ते निसुणी राजा तिहां आव्यो, करी उपचार अने क ॥ बोखाव्यो सुर कहे सुता जो, परणे मुनि सविवेक ॥ मा० ॥ ६॥ तो साजी ततक्तण ए थाये, ते निसुणी कन्या तेह ॥ राजार्थे सुनिने पर णावी, मूकी जरकने गेह ॥ माण ॥ ७॥ राते मुनि अविचल तेणें दीठो, आवी प्रजातें गेह ॥ कृषि निरखीनें योग्य कही इम, जाणी पुरोहित तेह ॥ माण ॥ ए॥ मांके जाग पुरोहित एकदिन, वित्र मख्या खख कोडि॥ मास खमण पारणे तिहां मुनिवर, खाव्यो मनने कोड ॥ माण ॥ ए॥ आरंजी अविवेकी बांजण, न सहे धर्मविचार ॥ मुनि देखी कहे कुण तूं दीसे, जा छंत्यज अवतार ॥ मा० ॥ १० ॥ यक् तदा मुनिमुखर्थी बोले, यागनुं फल तुम्ह एह ॥ शुद्धपात्र गोचरीयें पहोतो, हूं तुम्ह बारणि जे ह ॥ माण ॥ ११॥ रोषें बांजण सुत तव मुनिनें, करवा यष्टिप्रहार ॥ उठ्या तव ते जहों की था, रुधिर वमंत कुमार ॥ माण ॥ १२ ॥ पाय खागी मुनि ने ते खामे, पुरोहित सुत अपराध ॥ प्रतिलानी प्रतिबोध खह्यों तिए,

वालकने यहरे समाधि ॥ माण ॥ १३ ॥ मुक्तिमुनि पहोतो जय वरत्या, ए श्रिकार श्रशेष ॥ श्रध्ययने वारमें वत्वाष्यो, श्रीमहावीर जिणेश ॥माण ॥ १४ ॥ विजयदेव ग्रहपाट प्राजाविक, श्रीविजयसिंह सूरिराय ॥ तेह तणो वालक इम बोले, जदयविजय जवकाय ॥ माण ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ श्रय त्रयोदरा चित्रसंत्रुति श्रध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥ ॥ सकल मनोरथ पूरवे ॥ ए देशी ॥ चित्र श्रने संजूत ए, गजपुरमां विहरंत ए, महंत ए, दोइ मातंग मुनीश्वरा ए ॥ १ ॥ एक दिन तेहने वंदे ए, चकीनियम निढंद ए, आणंदे ए, पटराणी पण वंदती ए ॥ श। नारी रयण ते दीठी ए, काम श्रम्भ श्रंगीठी ए, पईठी ए, मनमां ते सं जूतनें ए॥३॥ चक्रतणुं नियाण ए, करे ते अजाण ए, जाएए, चित्रे वा यों निव रहे ए॥ ४॥ चित्र नियाणां विणशुद्ध ए, संजूतो मुनि अविशु ऊए, सुरक्रि ए, जिन वीजे दोइ पामीया ए॥ ए ॥ त्रीजे जिन मुनि संजूत ए, चक्री थयो नरपुर हुंत ए, धन्यपूत ए, चित्र पुरिमतालें थयो ए।।६॥ सुविहिताने ते अनुसरे ए, अनुक्रमे संयम आदरे ए, विचरे ए, एकदिन ते कंपिलपुरे ए ॥ ७॥ पुरकंपिलें दोइ जणा ए, यथा एकठा ब हुगुणा ए, स्रति घणा ए, चक्री कहे सुख जोगवो ए ॥ ए॥ चिंत्र कहे सीजें दीख ए, ते न सहे चक्री शीख ए, सुपरिख ए, कर्मतणी जग एह वी ए॥ ए॥ चक्री अपैठांण ए, मुनि निज पुष्प प्रमाण ए, जाण ए, ज त्तम पदवी पासीयो ए ॥१ण। विजयदेव पटधारक ए, विजयसिंह प्राजा विक ए, वाचक उद्य ए, कहे गुण मुनितणा ए॥ ११॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दश इक्तकार कमसाध्ययन सद्याय प्रारंजः ॥

॥ देवतणी रे वाणी सुणी रे ॥ ए देशी ॥ देवतणी क्रिक्क जोगवी रे,
पुर इस्कुकार मकार ॥ मोरा लाल रे ॥ पृष्ठ पुरोहित कुल व्याविया रे, सुर
दोइ ग्रुज तिथिवार ॥ मोरा०॥१॥ ते मुनि वालक वंदीयें रे ॥ए व्यांकणी
॥ मातिपतानी साथ ॥ मो० ॥ दिस्क खेइ थया केवली रे, वली राणी न
र नाथ ॥ मो० ॥ ते० ॥ १ ॥ मावित्रे वीहावीथा रे, क्रिष देखीता संत ॥
॥ मो० ॥ एकदिन क्षि तेणे दीठडा रे, तस्तले व्यादार करंत ॥ मो० ॥
॥ ते० ॥ ३ ॥ जातिस्मरण जाणीयुं रे, पूरवजव विरतंत ॥ मो० ॥ मात
पिताने बूकवी रे, चारित्र तेह लहंत ॥ मो० ॥ ते० ॥ ४ ॥ मातिपता

दीका लीय रे, तिम वली राणी राय ॥ मो०॥ ए खटजेष यया केवली रे, पहोता शिवपुर मांय ॥ मो०॥ ते०॥ ए॥ विजयदेवगुरु पाटवी रे, श्रीविजयसिंह मुनिराय ॥ मो०॥ तेह तथो शिष्य उपदिशे रे, उदयविजय जवजाय ॥ मो०॥ ते०॥ ६॥ इति ॥

॥ अत्र पंचदश जिलुकाराध्ययन सद्याय प्रारंजः॥

॥ हिक्मणी रूप रंगिली नारी ॥ ए देशी ॥ तप करतां मुनिराजीया लाला, न करे जोग नियाण ॥ मुनि मारग सुधो धरे लाला, ते बोल्या गुण खाँणी ॥ मुनीश्वरं तो जिस्कु गुण गुरु ॥ पन्नरमा श्रव्ययनमां ला ला, इम जांखे संबुद्ध ॥ मु० ॥ ११॥ मंत्र तंत्र निव केलवे लाला, तस न राग न रोष ॥ गूरा परिसह जीतवा लाला, चारित्रना निह दोष ॥ मु० ॥ ते० ॥ १॥ परिचय नही गृहस्थनो लाला, श्ररसिवरस श्राहार ॥ यूजादिक वांढे नही लाला, साचा ते श्रणगार ॥ मु० ॥ ते० ॥ ३॥ इणिपरि मुनिगुण सांजली लाला, परली किरिया नाण ॥ साधुपंथ तुम्हे श्रादरो लाला, त्रण तत्वना जाण ॥ मु० ॥ ते० ॥ ४ ॥ विजयदेव गृह पाटवी लाला, विजयसिंह गृह लीह ॥ श्रिष्य वर्ष कहे पहवा लाला, मुनि प्रत पोनिश्वदीह ॥ मु० ॥ ते० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ षोडरा ब्रह्मचर्यसमाधि अध्ययन सद्याय प्रारंजः॥

॥ हस्तीनागगुर ॥ ए देशी ॥ ब्रह्मचर्यनां दश कह्यां, स्थानक श्रीवीर जिणंद रे ॥ व्यध्ययनें ते सोलमे, जे पाले गुऊमुणिंद रे ॥ १ ॥ जेह पाले गुऊ मुणिंद, संवेग रस जाविया गुणगेह ए ॥ गुणगेह निरेह निराग, विषयदल जीपतां सुविदेह रे ॥ ए व्यांकणी ॥ पशुपंमग नारी विना, वस ही पहिली निरधार रे ॥ व्यासण तिणि निव वेसीयें, वेसे जिण व्यासन नारी रे ॥ बैठ ॥ संठ ॥ १ ॥ नारीकथा निव कीजीथें, निव निरित्त इंडिय तास रे ॥ जीतीपटंतर टालीये, निव चीतियें पूर्वव्यज्यास रे ॥ न० ॥ संठ ॥ ३ ॥ सरस जोजन निव कीजियें, निव लिजियें व्यधिक व्याहार रे ॥ जिल्ला वाचक जारीयें, तिर्यें इण संसार रे ॥ तठ ॥ संठ ॥ धा छदयं विजय वाचक जाणी, शीलवंत ते पुरुष रतन्न रे ॥ श्रीविजयदेव गुरु पाट वी, श्रीविजयसिंह गुरुधन्न रे ॥ तेतो विजयसिंह गुरु धन्य रे ॥ संवेगरस जाविया गुणगेह ए ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अय सतद्श पापश्रमणाध्ययन सद्याय प्रारंज ॥

॥ श्रादि तुं जोनं जीवडा ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनधर्म सुणी खरो, खही दीका सार ॥ नियंवंदे जे संचरे, ते पुरुष गमार ॥ १ ॥ वीर्जिनेसर खप दिशे ॥ ए श्रांकणी ॥ पाप श्रमण जे तेह ॥ सत्तरमा श्रध्ययनमां, मुनि जां ख्यो जेह ॥वी०॥१॥कानदायक निज ग्रह तणो, खोपक जे साध ॥ पंच प्र माद वशें पड्यो, चारित्र न समाधि ॥ वी० ॥ ३ ॥ कंठ खरें जोजन ज्ञ छुं, करी सूवे जेह ॥ रात दिवस विकथा करे, ग्रुणनी निहं रेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ जव वेह चूकी करी, करे काय कखेश ॥ विपिमश्र तेहने परहरी, धरो सुग्रण विशेष ॥ वी० ॥ ४ ॥ विजयदेव ग्रह पाटवी, विजयसिंह सूरीश ॥ शिष्य जदय कहे पुष्यथी, पहोंचे सुजगीश ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथाष्टादश संयतिराजाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ बोकिक वाडानो ॥ ए देशी॥ कंपिलपुरनो राजीयो, जग गाजियो रे संजय नरराय के॥ पाय नमे नर जेहना रे, पहोंचे जडवाय के॥ १॥ धन धन संजय नरवरु ॥ ए त्र्यांकणी ॥जगसुरतरु रे शासन वनमां हि के॥बांह मही जनकूपथी, दुःखरूपथी रे जिनधर्म समाहि के ॥ धणाशा एकदिन केशरी काननें, रस वाह्यों रे जाये मृगया हेत के ॥ त्रास पमाडे जंतुने, एक मृगलो रे छह्व्यो तिस खेत के ॥ घ० ॥ ३ ॥ तीरपीडा में तहफड्यो, पड्यो हरणको रे मुनिवरनी पास के ॥ ते देखी चिंता करे, राय खामतो रे मुनि तेजे त्रास के ॥ ४०॥ ४॥ राय कहे मुनिरायने, हुं तो तुम्ह तणो रे अपराधी एह के॥ राख राख जगवंधु तुं, मुक जांखो रे जिन धर्म सरेह के ॥ घ० ॥ ए ॥ ध्यान पारी मुनिवर जाणे, राय कां हणे रे हरि णादिक जीव के ॥ निरपराधी जे बापडा, पाउंता रे छु:खीया बहु रीव के ॥ घ० ॥ ६ ॥ इय गय रथ पायक वली, धन कामिनी रे कारिमुँ सवि जाए के ॥ धर्मज एक साचो घ्यते, एम निसुए। रे तेह संजय राए के ॥ ४० ॥ ७ ॥ गर्दजार्ल। पासें लीये, जिनदीक्षा रे संसारी सार के ॥ ग्रह ब्यादेशें अनुक्रमें, पुह्वीतले रे करे जयविहार के ॥ ध० ॥ ७ ॥ मार्गे एक मुनिवर मख्यो, तेइ साथें रे करे धर्मविचार के ॥ जिनदीक्षा पामी तस्त्रो, चरतेसर रे चक्री सनतकुमार के ॥ धण ॥ ए ॥ सगर मधन संती अरो, कुंयू पद्म अने हरिषेण नरिंद के ॥ जयचकी नगइ नमी, करकंकू रे दो

मुह मुणिचंद के ॥ धण ॥ १० ॥ महबल राय उदायणो, वली राजा रे द शारणजड़ के ॥ नाण किया पोते करि, एतो तरीया रे संसार समुद्र के ॥ धण ॥ ११॥ विजय जयदेव सूरीश्वरू, पद्टोधर रे विजयसिंह गुणलाण के ॥ उदयविजय कहे ए कह्यो, अध्ययनें रे अढारमे जाण के ॥ धण ॥११॥ ॥ अथ एकोनविंश मृगापुत्राध्ययन सद्याय प्रारंतः ॥

॥ शारद बुधदायी सेवक ॥ ए देशी ॥ ढाल ॥ सुम्रीव नयर वर, वन वाडी आराम ॥ बलजड नरेश्वर, राज करे गुणधाम ।। इंडाणी सरखी, रा णी मृगा अजिराम ॥ मकरध्वज सुंदर, कुंअर बलश्री नाम ॥ १॥त्रु०॥ बलश्री नाम कुंवर अति सुंदर, जीत्यो कामविकार ॥ संयम लेइ कर्म ख पेइ पाम्यो जवजल पार ॥ उंगणीशमे अध्ययने जिनवर, वीर दीये जप देश ॥ जणतां गुणतां जवजवना, नासे पाप कलेश ॥ १ ॥ ढाल ॥ एकदि न वरमंदिर, अंतेजर परिवार ॥ परवरियो पेखे, नयर मकार कुमार॥ दी ठो तव सुनिवर इर्यायें मलपंत II तस ऊहापोहे, जातिसमरण हुंत ॥३ ॥ द्वण ॥ जातिसमरण पामी देखे, पूरव जव संबंध ॥ पंचमहावत सांजरे वली, चलगइ डुःख प्रबंध ॥ मात पिता आगल जइ बोले, डुःख अनंती वार ॥ जे जे में पाम्यां ते कहेतां, किमही न आवे पार ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सं सार असार ए, दीसे मलजंकार ॥ संबल विण वाटें, जातां कुः बदातार ॥ बहुजनम मरण जय, नरयतिरिय दुःख ठाण ॥ तिहां बखता घरषी, सार यहे त जाण ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सार यहे ते जाण विचारी, आपण्युं तार शुं ॥ द्यो प्रज तुम्ह आदेश अम्हे, हवे संयमगुण धारशुं ॥ शीत ताप तुह तृषा, अनंती जुःसह संबक्षि रूख ॥ प्रतली अग्नि वर्ण आलिंगी, दीगं नरके दुःख ॥ ६ ॥ ढाल ॥ दुःखधी निकलवा, मृगापुत्र नरसिंह ॥ मावित्र छादेशे, दीक लहे मुनि लीह ॥ छानुक्रमें ते मुनिवर, शिव पुर राज्य लहंत ॥ जिहां नाणदंसण वली, परमाणंद अनंत ॥ ७॥ तु०॥ परमाणंद अनंत ते बहीयें, साधुतणा गुण धरता ॥ श्री जिन्शासन उत्तम पाभी, सूधी किरिया करता॥ किरियानो ते आगर गणधर, विजयदेव पटधार ॥ विजयसिंह गुरराज विराजे, शिष्य जदय जयकार ॥ ॥ इति॥ ॥ अथ विंशतितम अनाथीराय अध्ययन सद्याय प्रारंजः ॥

॥ जोतां रे जतां रे कानन सघछुं ॥ ए देशी ॥ मगधदेश राजगृही

नगरी, राजा श्रेणिक दीपे रे ॥ ज्ञतुरंग सेनायें परवरियो, तेजें दिण्यर कीपे रे ॥१॥ धन धन श्रीक्षिराज अनाथी॥ए आंकणी ॥ रूपें देवकुमार रे॥संवेग रंग तरंगें कीले, यौवनवय ऋणगार रे॥धण।श। एक दिन कानन पहोतो श्रेणिक, वंद्या श्रीक्षिराय रे ॥ लघुवय देखी हरखें पूछे, प्रजु तुम्ह कोमल काय रे ॥ धूण॥ ३ ॥ आ तुम्ह रूप अनोपम यौवन, तरुणीजन आधार रे ॥ इति अवसर नारीरस लीजें, वडपण संयमजार रे ॥ घ०॥ ४॥ घ्यान पूरि तव मुनिवर वोले, राजन हुं हुं अनाथ रे ॥ नाथ विना संयम में लीधुं, नृप कहे हुं तुम्ह नाथ रे ॥ ध०॥ ए॥ जोईयें ते तुम्हनें हुं पूरुं, ख्यों तुम्हें ए बहु आय रे॥ मुनि कहे राजन् नाथ न ता हरे, किम थाइश मुक्त नाथ रे॥ घ०॥ ६॥ राय कहे हय गय रथ पाय क, मणि माणक झँकार रे॥ माइरे वे हुं नाथ सहूनो, तव वोले अणगार रे ॥ घ० ॥ छ ॥ कोसंवी नयरीनो राजा, मऊ पिता गुणवंत रे ॥ तास छं अर हुं अति घ्णुं बल्लन, लहु वय लीलावंत रे ॥ थ०॥ ए॥ एक दिन मुज अंगें यई वेदना, न टलें कोइ उपायें रे ॥ मात पिता माहरे छःखें प्तः वियां, नारी हैयडुं जराय रे ॥ घ०॥ ए॥ बहुल विलाप कस्या तेणी यें, मुज छु:ख निव लेवाय रे॥ तव में निर्णय एहवो की थो, धर्मज एक सहाय रे॥ धण॥ १०॥ इम चिंतवतां वेदन नाठी, प्रात संयम में लीधो रे॥ नाथ अनाथ तणो ए विहरो, सुणी नरनाथ प्रसिद्धो रे ॥ ४० ॥ ११ ॥ ते सुणी राजा समिकत पाम्यो, मुक्ति गयो अणगार रे ॥ वीशमे अध्य यने जिनवीरें, ए जांख्यो अधिकार रे ॥ ध०॥ १२ ॥ श्रीविजयदेव सूरी श्वर पाटें, विजयसिंह मुनिराय रे ॥ उदयविजय वाचक तस वालक, साधु तणा गुण गाय रे ॥ घ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अधैकविंश समुद्रपाल अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ पूज्य पधारो पाटीयें ॥ ए देशी ॥ नयरी चंपामां वसे, एतो श्रावक पालक नाम ॥ सजनी॥ एकदिन प्रवहण पूरियां, पोहोतो पिहुडपुर ठाम॥ सजनी॥ शा समुद्रपाल मुनिवर जयो ॥ ए त्रांकणी ॥ ए तो संवेगी विख्या त ॥ सजनी॥ श्रध्ययनें एकवीशमे, एह सयल श्रवदात ॥ सणासण ॥ शा ते तिहां धन जेलुं करी, पराखो विदेशें नारी ॥ सण्॥ सगर्जा नारी लेश चढ्यो, नियपुर श्रावण हार ॥ सण्॥ सण्॥ ३॥ समुद्रमांहि सुत जन

मियो, समुंडपाल तस नाम ॥ स० ॥ पुत्र कलत्र लेइ आवीयो, पालक चंपाठाम ॥ स० ॥ स० ॥ ४ ॥ अनुक्रमें ताते परणावीयो, रुक्मिणी नारी सरूप ॥ स० ॥ एक दिन गोंख विराजतो, देखे नगर खरूप ॥ स० ॥ स० ॥ स० ॥ एक चोर तव दीठडो, तस कंठ कण्यर माल ॥ स० ॥ गाढे बंधनें बांधीयो, जोगवी डुःख असराल ॥ स० ॥ स० ॥ ६ ॥ ते देखी तस उपनो, मन वैराग्य अपार ॥ स० ॥ समुद्रपाल तव चिंतवे, जुर्ज कठिन कर्म अधिकार ॥ स० ॥ स० ॥ उ ॥ माताने पूठी खीये, संयमजार कुमा र ॥ स० ॥ मुक्ति गयो मुनिराजीयो, सुख पाम्यो श्रीकार ॥ स० ॥ स० ॥ स० ॥ त्व चंचक कहे, मुनि गुणमोहनगार ॥ स० ॥ स० ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ द्वाविंश रहनेमि अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ फागनी ढाखनीवा सूरिती महिनानी देशी॥ सौरीपुर अति सुंदर, श्रीवसुदेव नरिंद ॥रोहणी देवकी राणी, राम केग्रव दोइ नंद ॥ समुद्रवि जय वली राजीयो,राणी शिवादे कंत।।मन आनंदन नंदन, नेमीश्वर अ रिहंत॥१॥ सहस खळ्योतर सुंदर, लक्त्ष खंग खन्नंग ॥ खनुक्रमे पामीयुं मोहन, यौवन नवरस रंग ॥एकदिन तेहतणे कारण, गोपीनो जरतार ॥उ यसेन पासें मागे, राजुल राजकुमारी ॥१॥ मनऋ लि मालती मालती, चा खती गजगति गेली॥ मयणतणी सेना सजी, विकसी मोहनवेली॥ वह सोजागिणी रागिणी त्रिज्यन केरो सार ॥ जान लेइ ते परणवा, आवे नेस कुमार ॥३॥ चाले हलधर गिरिधर, बंधूर बंधव जोडि ॥ रवि शशी मंग्ल फीपता, दीपता होडाहोडि ॥ शिरासिंद्वरीया साथिया, हाथिया मत्त गि रिंद् ॥बंदिजन बिरुदावली, धोले नव नव ठंद ॥४॥ मंबरें छंबर गाजे, वा जे मंगल तूर ॥ फेरी नफेरी नफेरीय, जेरीय जुंगल जूरि ॥ राचे माचे ना चे. जाचे साचे प्रेम ॥ गुंषमिष उरडी गोरडी, मोरडी पाउसि जेम ॥ ५॥ करे केइ सुकुमाली, बाली गीत कल्लोल ॥ केवि सुजग शणगारी, प्यारी चढे चकमोल ॥ चतुर चकोरडि गोरडी, खूण उतारे एक ॥ जय जय नाद मुणावती, आवती धरती विवेक ॥६॥ हय ग्य रथ पायक वली, मिलीय यादवनी जान ॥ एणिपरें बहु आमंबरे, आवे यपुसुलतान ॥ प्रहणमांहे शशीपरें, सोहे नेमि कुमार ॥ अनुक्रमें तोरण बारण, पहोता साथें मुरा

री॥ १॥ पशुवाडे,पशु जाणी, आणी करुणा तास ॥ सारिथने प्रजु पूर्वे, केम मेली पशु राशि ॥ गोरव कारण तुह्म तणी, ते जाणे ए सहु आजं॥ ते सुण पशु मूकावी, पाढा वख्या जिनराज् ॥ ७॥ सहसावन जइ बुकि यो, जुजियो कर्मह साथ ॥ वत धरी तप करी आदरी, तीर्थंकर तणी श्राय ॥ ते सुणि श्रति घणी वेयण, वेइ राजुल नारी ॥ श्रनुक्रमें जिनवर नाची, जाणी गइ गिरनार ॥ ए॥ दीख खेई प्रज पासें, अन्यासें गुणरं गी ॥ इकदिन गिरिजणि जातां, बृष्टे जीनुं अंग ॥ कंचूक चीर सुकववा, पहोती गिरिदरिमांहि॥ तव मन मीठी दीठी, रहेनमी जत्साहि॥१ण॥ नम्न नारी ते मन वसी, धसमसी वोख्यो वोख ॥ ते मुनि चारित्र चूकतो, मूकतो लाजनी ढोल॥ मुनि सुणि सुंदरी मंदिरे, फरि करि पूरियें वास॥ यौवनवय सुख खीजीयें, कीजीयें विविध विखास ॥११॥ सतीयेशिरोमणि जांखी, आखे अणी मुक शीख।। वाडी न खोपुं तेह तणी, चउणि जिम होय सील ॥ तुज पण देखी तरुणी, रमणी चूकरो चित्त।। तो हठ तरु परें होशे, चंचल तुफ चरित्र॥११॥ एम अगम धन कुल तणी, जणी उपमा सार ॥ वालकुंवारी तारिया, रहनेमी छाणगार ॥ विहुं जण ते शिवपुर ग या, गहगद्यां सुख अनंग॥ अध्ययनें वावीशमे, ए अधिकार सुचंग ॥ १३ धन् धन जपनी निय कुल, राजुलवाल कुंवारी ॥ धन धन नेमि सहोदर, रहनेमी अणगार ॥ विजयदेव गुरु पटधर, विजयसिंह मुनिराय ॥ तेह तणो एम वालक, उदयविजय गुण गाय ॥ १४॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोविंश केशीगौतम अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ मनमधुकर मोही रह्यो॥ ए देशी॥ शिष्य जिणेसर पासना, केशी कुमर मुणिंद रे॥गोयम वीरजिणंदना, एक सूरज एक चंद रे॥१॥धन धन ए दो गणधरा॥ए आंकणी॥गोयम केशी कुमार रे॥ तिंडुक वन जेला म ली, करे जिनधमी विचार रे॥धण।श॥संघाडा वेहु जिण तणा,मनमां आणे संदेह रे॥ मुक्तिमारग दोइ जिण कहे, तो कां अंतर एह रे॥धण।३॥चार महाव्रत केशीनें, गोयमनें पुण पंच रे॥केशी पूढे गोयमा, कहे उत्तर परपं चरे॥ धण॥॥॥ कजु जड पहिला जिन तणा, अंतिम वक जड होइ रे॥ जाण सरल वावीशना, तिथें हुआ मागें दोइ रे॥ धण॥ थ॥ परमारथ पूरण जोयतां, मारगजेद म लेहो रे॥ रूडि मित तुक गोयमा, केशी ट

खिया संदेहो रे ॥ धण ॥ ६॥ अध्ययन त्रेवीशमे, जे जे पूर्व तेह रे॥ गोयम स्वामीयें सह कह्यं, केशी टिखया संदेह रे ॥ धण ॥ ५॥ मुक्ति ग या दोय गणधरा, जिहां सुखखाण अजंग रे ॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वर, शिष्य उदय रसरंग रे ॥ धण॥ छ॥ इति ॥

॥ अय चतुर्विश समिति अध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥समिति ग्रित सूधी धरो॥ जिन नेतो रे॥ इम कहे नीर जिनेश॥ जिनिक नित्त नेतो रे॥ अध्ययनें चलिश ॥ जि०॥ ए अधिकार अशेष ॥ ज०॥ १॥ नाटें जोई चालियें ॥ ज०॥ जुग लग जयणा काज ॥ ज०॥ सत्य मधुर हितकारियुं ॥ ज०॥ वयण जणो मुनिराज ॥ ज०॥ श ॥ स्वालीश निवारियें ॥ ज०॥ एषणा केरा दोष ॥ ज०॥ पूंजी लीजीयें दीजीयें ॥ ज०॥ जिम हुने पुष्यनो पोष ॥ ज०॥ ३॥ मल मूत्रादिक परन्नो ॥ ज०॥ पिललेहि शुक्रनाम ॥ ज०॥ मन पहतुं थिर कीजीयें ॥ ज०॥ जिम सीजे सिन काम ॥ ज०॥ ॥ मन पहतुं थिर कीजीयें ॥ ज०॥ जीम सीजे सिन काम ॥ ज०॥ ॥ ॥ मौनी मित जाषियात ॥ ज०॥ निश्चल कालस्सग्यनो जाण ॥ ज०॥ सिमित ग्रित एम जे धरे ॥ ज०॥ निश्चल कालस्सग्यनो जाण ॥ ज०॥ सिमित ग्रित एम जे धरे ॥ ज०॥ ते साचा जग जाण ॥ ज०॥ थ ॥ निजयदेन ग्रुह पाटनी ॥ ज०॥ श्रीविजयसिंह सूरीश ॥ ज०॥ लदयविजय वाचक जणी ॥ ज०॥ बाल क तास जगीश ॥ ज०॥ ६॥ इति॥

॥ अश्र पचविंश विजयघोष जयघोषाध्ययन सञ्चाय प्रांरतः॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ वाणारसी नगरी वसे, विजयघोष जयघोष हो॥ सुंदर ॥ अध्ययने पंचवीशमे, दोइ बांजणी निदीष हो ॥ सुंगाशा ए दोइ मुनिवर वांदीयें ॥ए आंकणी ॥ जिम सी के सिव काम हो ॥ सुंगा मुक्तिपुरी मां जे वस्या, गुणमणि अविचल धाम हो ॥ सुंग ॥एणा १ ॥ जयघोषें दी का यही, करतो जयविहार हो ॥सुंग एक दिन पहोतो वणारसी, विजयघोष जिहां सार हो ॥ सुंग ॥ एक ॥ विजयघोषें तिहां मांनियो, याग ते महोटे मंमाण हो ॥ सुंग ॥ विहरवा तिहां मुनिवर गयो, उत्तर दिये ते अयाण हो ॥ सुंग ॥ एण ॥ ४ ॥ समजावे मुनिवर कहे, ते प्रतिबोधवा काज हो ॥ सुंग ॥ वेद जण्या पण तह तणो, अर्थ कहो कुण आज हो ॥ सुंग ॥ एण ॥ ४ ॥ योग अने नक्त्रनं, सुख कहो कवण कहात हो ॥ सुंग ॥ धर्मवयण कहो कहनुं, तव कहे विप्र विख्यात हो ॥ सुंग

॥ ए० ॥ ६ ॥ खामी तुम्हें सहु ए कहो, मुनि तव जांखे पवित्र हो ॥ सुं० ॥ वेद अग्निहोत्र मुख कहां, यागनुं मुनि जगिमत्र हो ॥ सुं० ॥ ए० ॥ ७ ॥ चंद्र ते नक्त्रमुख सही, धर्मनुं कासव इंद हो ॥ सुं० ॥ ५० ॥ ० ॥ श्रीवि चयदेव गुरु पाटवी, श्रीविजयसिंह सूरिंद हो ॥ सुं० ॥ ए० ॥ ० ॥ श्रीवि चयदेव गुरु पाटवी, श्रीविजयसिंह सूरिंद हो ॥ सुं० ॥ शिष्य उदय क हे मुनिवरा, दोइ प्रतपो कुलचंद हो ॥ सुं० ॥ ए० ॥ ए ॥ इति ॥ ॥ अथ षड्विंशाचार्याख्याध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ जाशो तोही राख्युं॥ ए देशी॥ दश आचार मुणिंदना, बोले वीर जिणंद लाल रे॥ गोयमस्वामी सांजले, जेह्थी सुख अमंद लाल रे॥ र॥ दश आचार समाचारो॥ ए आंकणी॥ आणी मन वैराग लाज र॥ मोक्त तणां सुख पाभीयें, जे सेवे वहजाग॥ ला ०॥ द०॥ १॥ जातां आवसही कहो, निसही पेसतां होइ॥ ला०॥ एका आपणपें करे, पिष्ठिष्ठा पर कोइ॥ ला०॥ द०॥ ३॥ पंचमें थानकें ढंमणा, इका ठठे ठाण॥ ला०॥ सातमे मिक्ठाइकडं, तहीत आठमे जाण॥ ला०॥ द०॥ ४॥ नवमे हो ये मंत्रणा, जपसंपद तिम जाण॥ ला०॥ अध्ययन ठवीशमे, ए श्रीजिन वर वाण॥ ला०॥ द०॥ थ॥ विजयसेंह गण धार॥ ला०॥ उदयविजय कहे एहथी, लहे जयजयकार ॥ ला०॥ द०॥ ६॥।

॥ अय सप्तिवंश कुशिष्याध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥
॥ मरुदेवी माता ॥ ए देशी ॥ वीर गोयमनें इम कहे, अविनीत उवेखो
|श्राच्य जी ॥ वांका वलदतणी पेरें, कामवेला आणीयें रीश जी ॥ वीरणा
१ ॥ समोल ते जांगे जोतस्वा, वली सामा मांमे शिंग जी ॥ तिम साहमा
वोले घणुं, इम अविनयथी गुण्जंग जी ॥ वीण ॥ १ ॥ आलस्आ अक
ह्यागरा, ठांमी जाये निजनिजठंद जी ॥ पोष्या गुरुए वली शीखव्या, पण
न धरे ते गुण्वंद जी ॥ वीण ॥ ३ ॥ बलदने उवेली रहे, जिम सारिथ सु
ख समाधि जी, तिम गुरु पण अविनीतनें, उवेली कारज साधे जी॥वीण
॥४॥ श्रीविजयदेवगुरु पाटवी, जयो श्रीविजयसिंह गणधार जी ॥ अध्य
यने सगवीशमें, कह्यो उदय कहे सुविचार जी ॥ वीण॥ १॥ इति ॥

॥ अथाष्टाविंश मोक्तमार्गाध्ययन सद्याय प्रारंतः॥
॥ वेस ववीसे वेतस्या॥ ए देशी॥ वर्द्धमान जिनवर कहे, दंसणनाण

चारित्त रे ॥ अध्ययनें अडवीशमे, जिए पाखे थाये पितत्र रे ॥ व०॥१॥ नाए पंचित्रह तरएव्युं, आठे ते समिकत जेद रे ॥ जेद आठ चारित्रना, तपगुण बारह जेद रे ॥ व०॥ १॥ नाएी जाव सबे छहे; दंसए सहहे ते ह रे ॥ चारित्र पातक आवतां, वारे निःसंदेह रे ॥ व०॥ ३॥ पापमेख खा गो हुवे, ते शोंधे तप शुद्ध रे ॥ इम ए चार प्रजावथी, मुनि हुवे परम्नविद्ध करे ॥ व०॥ ४ ॥ व०॥ ४ ॥ तस रे चार प्रजावथी, मुनि हुवे परम्नविद्ध करे ॥ व०॥ ४ ॥ व०॥ ४ ॥ तस रे ॥ तास शिष्य इम विनवे, उदयविजय जवकाय रे ॥ व०॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथैकोनत्रिंश सम्यत्तवपराक्रमाख्याध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ सोहम जंबूनें कहे, में जिनपासें विचार ॥ सुणीयुं र्जगणित्रशमे, अ ध्ययने सुखंकार रे ॥ रे ॥ समिकत आदरो ॥ तिहुंत्तरबोल उदार रे, वली किरिया धरों ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम बोल संवेगनो, बीजो ते नि र्वेद ॥ त्रीजो रुचिधर्मह तणी, हवे चज्यादिक जेद रे ॥ सण ॥ १ ॥ जिक्त सुग्रह साहामी तणी, पापप्रकाशन निंद ॥ गईणचा सामाईयं, चन विसन्नो अमंद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ वंदण पडिक्रमणुं वली, काजस्सग्ग पञ्च 'काण ॥ पयशूये मंगल चलदमो, बोल ते नियम नियाणो रे ॥ स॰ ॥-ध ॥ चार काल पिंडलेइणा, खामण प्रायश्चित्त ॥ सकाय जणवुं पूर्वें , गणवुं चिंतवुं चित्त रे ॥ स० ॥ थ ॥ धर्मकथाश्चृत सेवना, मन एकाय निवेश ॥ संयम तप ने निर्जरा, नाईं इसकाय प्रवेश रे ॥ स० ॥ ६ ॥ धरिय अप्रतिबंधता, सयणासण सुविवेक ॥ विषयनिवृति संजोगिया, पच्चकाणनी टेक रे ॥ सण ॥ ७ ॥ उपि आहार कषाय ए, योगशरीर सहाय ॥ जाव श्रने सद्जावना, श्रह पच्चकाण श्रमाय रे ॥ स० ॥ ७ ॥ थिविर तणी पडिरूपतां, वैयावच गुण जूरि ॥ वीतरागता पुण कमा, मु त्तिसरखता अङ्गर रे ॥ स०॥ ए॥ मार्दव जाव सुसत्यता, करणयोगना साच ॥ मण वय काय सुगुत्तता, शुज्र मन काय सुवाच रे ॥ स० ॥ १० ॥ नाण दरिसण चारित्र ए, पण्इंदिय जयकार ॥ क्रोध मान माया वर्खी, खोज तणो परिहार रे॥ स०॥ ११॥ पिखदोसिमञ्चात्तनो, जय करवो नि रधार ॥ शैक्षेशीय अकम्मया, ए तिहुत्तरि अवधार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ एता बोखयकी बहे, साधु परमपद सार ॥ विजयसिंह मुनिराजनो, जदय कहे हितकार रे॥ स०॥ १३॥ इति॥

॥ अथ त्रिंशत्तम तपोमार्गाध्ययन सद्याय प्रारंजः॥

॥ नारी रे निरुपम नागिखा ॥ ए देशी॥ श्री वीरें तप वर्णव्यो, महोटो ग्रुण जग एह ॥ पापकर्म टाली करी, मुक्ति पमाडे जेह ॥ श्री०॥ १॥ जिम सरोवर कादव जस्त्रो, शोधे नायक तास ॥ गरनालां बूरी करी, सूरिकर खनी रे वास ॥ श्री० ॥ १ ॥ ते मल जेम रिव शोषवे, जेम रुंध्यां गरनाल ॥ आश्रवें रूंध्यां तप तथा, शोधि करे ततकाल ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जपवासो जणोदरी, वृत्ति तणो रे संस्वेव ॥ रसवारण संलीनता, कायकलेश घरेव ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वेयावच आलोयणा, विनयं अने सजाय ॥ काजस्मग्ग जाणं तथा, पड् जुग वारह थाय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वारे होदें तप करो, अंगी घरो रे समाधि ॥ अध्ययने जिम त्रीशमे, वोले अर्थ अगाध ॥ श्री० ॥ ६॥ विजयदेव ग्रुरु पाटवी, विजयसिंह मुनिसिंह ॥ जदयविजय कहे गणधरा, ए दोय ग्रुरु गुणलीह ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथैकत्रिंशत्तम चरणविध्यध्ययन सद्याय प्रारंतः॥

॥ हुं विलहारी यादवा ॥ ए देशी ॥ वर्क्षमान जिन उपिदसे, धिरये संयम ग्रुक्ति के ॥ एकदिन चारित्तर दिये, किंचित्मानकी सिक्ति के ॥ र ॥ सू धी किरिया पालीयें ॥ए ख्रांकणी ॥ इंडिय निज वश की जीयें, विकया तजी मोष के ॥ समिति ग्रित ख्राराधियें, परहरीयें पुण दोष के ॥ सू ०॥ १॥ दश परें ग्रुज जाणि के ॥ सू ०॥ ३॥ जाणी के ॥ प्रतिमा मुनि श्रावक तणी, वहों धरों ग्रुज जाणि के ॥ सू ०॥ ३॥ ज्ञां जाणी सत्य के ॥ सू ०॥ ४॥ जे जे थान के इम कह्या, ते पालों सु जगीश के ॥ ख्रध्ययनें एक श्रीशमे, बोले श्रीजग दिश के ॥ सू ०॥ ४॥ विजयदेव ग्रुक पाटवी, विजयसिंह ग्रुक हीर के ॥ श्राष्य उदय कहे दोइ ए, जाणों गोयम वीर के ॥ सू ०॥ ६॥ इति ॥

॥ अय द्वात्रिंश प्रमादराम अध्ययन सञ्चाय प्रारंतः ॥

॥ कामिनी मूके न मोरो हाथ ॥ ए देशी ॥ वीर कहे बत्रीशमे रे, छध्य यनें सुविचार ॥ पापहेतु ते परिहरो रे, जिम खहो जवजल पार ॥१॥ जवि यण जाव धरो गुणराशि, जिम न पडो जुःख पाश ॥जणण छांकणी ॥ नाण धरो रे,मोह परहरो रे, जीतो राग ने रोष॥ पंचई द्विय वश करो रे, मं धरो विषय सदोष ॥ जण् ॥१॥ तृणचारी वसतो वनें रे, हरिण जुड़ वेधाय ॥ नाद तणे रसें वाहिया रे, जो खय खीणा थाथ ॥ जणा ३॥ करिणी फरसें मोहिया रे, हाथिया चूके ठाम ॥ दरबारें छावी रही रे, परवश सेवे गाम ॥ जण्॥ क्षें खुड्ध पतंगीयो रे, दीवे होमे छंग॥ गंध्र तणे रस पंकजें रे, बंधन पामे जृंग ॥ जण्॥ य॥ छामिष रस वश माठलो रे, एकमनो जो होय ॥ पेख्रो ततक्ष बापडो रे, वेदन पामे सोय ॥ जण्॥ ६॥ एके कनें परवशें रे, जो ए छु:खीया थाय॥ तो पांचे परवश तणी रे, कहो गति केण कहाय॥ जण्॥ पु॥ इम जाणी ए फीपतां रे, पामे नित्य आणंद॥ विजयसिंह गुरुनी परें रे, उदय सदा सुखकंद ॥ जण्॥ ए॥ इति॥

॥ अय त्रयोक्षिशत्तम कर्मपयडी अध्ययन सद्याय प्रारंतः॥
॥ तोगले मेवाडो राणो लों कियो रे ॥ ए देशी ॥ केवलनाणें जाणतो रे लो, बोले श्रीजिनवीर रे ॥ मुणिंद राय ॥ आठ करमने वश पद्यो रे लो, न खहे जवजल तीर रे ॥ मुण ॥ कर्म कठिन दल जीतीयें रे लो ॥ आठो ए जीते ते लहे रे लो, सुल सघलां वड वीर रे ॥ मुण ॥ कण ॥१॥ ए आंकणी ॥ नाण पंचने आवरे रे लो, नाणावरणी सोयरे ॥ मुण ॥ दंसणने जे आवरे रे लो, ते नव जेदें होय रे ॥ मुण ॥ कण ॥ १ ॥ दोय जेदें कह्युं वेदनी रे लो, मोहजेया अडवीस रे ॥ मुण ॥ नयर तिरिय नर सुर तण् रे लो, आयु कहे जगदीश रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ३ ॥ तिन्नी अधिका एक सो रे लो, नाम कर्मना जेद रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ३ ॥ तिन्नी अधिका एक सो रे लो, नाम कर्मना जेद रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ३ ॥ तिन्नी अधिका एक सो रे लो, नाम कर्मना जेद रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ४ ॥ अष्ठावनशुं आगली रे लो, ए परमारण जोय रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ४ ॥ अष्ठावनशुं आगली रे लो, ए परमारण जोय रे ॥ मुण ॥ कण ॥ ३ ॥ तिन्नी अधिकायसिंह गणभा रे ॥ मुण ॥ तेह तणो बालक कहे रे लो, उदयविजय जयकार रे ॥६॥ रे ॥ मुण ॥ तेह तणो बालक कहे रे लो, उदयविजय जयकार रे ॥६॥

॥ अय चतुर्श्चिशत्तम लेश्याध्ययन सञ्चाय प्रारंत ॥
॥ वेगें पधारो महेलथी ॥ ए देशी ॥ किसन नील कापोतें ए, तेज पद्म
चल पंच ॥ शुकल लि एहना, हवे सुणो वर्ण प्रपंच ॥ १ ॥ ल लेश्याशुं
विचारीयें ॥ए श्रांकणी ॥ जिम तरीयें संसार ॥ पहेली त्राखे परहरी, विल त्रण धरियें सार ॥ त्रण ॥ १ ॥ पहेली कडुई शामली, बीजी नीली तील ॥
त्रीजी शामल रातडी, ते कषायेली पील ॥ लण ॥ ३ ॥ चल्यी श्रांबिल रा तडी, पीली श्रासव सार ॥ पंचमी लि जलती, साकर सरली धार॥ लणी ४॥ इरिनगंध त्रण पहेलडी, त्रण आगली रे सुगंध ॥ कुगति त्रण पहे स्वी दिये, सुगति त्रणशी वंध ॥ छ०॥ ५॥ ए लेक्या रे चलत्रीशमे, अ ध्ययने कहे वीर ॥ तेमां जत्तम आदरे, लही वरे मुनि हीर ॥ छ०॥ ६॥ विजयदेव गुरु पाटवी, श्रीविजक्रसिंह सूरिश ॥ तेहतणो विश्व जपदिशे, जद्य कहे सुजगीश ॥ छ०॥ छ॥ इति ॥

॥ अथ पंचित्रंशत्तम अणगारमार्गाध्ययन सद्याय प्रारंतः॥
॥ निःस्नेही तुमही त्रये॥ ए देशी ॥ वीर कहे त्रिव खोकने, पालो
मुनि आचार राजे॥ अध्ययने पंचित्रंशिमे, तेह तणो अधिकार राजे॥
वी०॥ १॥ पापारंत्र निपेधीयें, घरियें संयम धीर राजे॥ वस्ति विद्युद्ध सेवियें, एम लहियें गुण हीर राजे॥ वी०॥ १॥ त्रस स्थावर निव हिं सियें, मृपावाद परिहार राजे॥ अण दीधुं निव लीजियें, घरियें वंत्र उदार राजे॥ वी०॥ ३॥ परिग्रह परिभित कीजियें, रालियें जय द्युत्र ध्यान राजे॥ वि०॥ ३॥ परिग्रह परिभित कीजियें, रालियें जय द्युत्र ध्यान राजे॥ एणि परें धर्म समाचरे, तस घर नवे निधान राजे॥ वी०॥ ४॥ वी०॥ ४॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह मुनिराय राजे॥ शिष्य तेहनो उपदिशे, उदयविजय जवकाय राजे॥ वी०॥ ४॥ इति॥

॥ अय पड्तिंशत्तम जीवाजीविविज्ञक्ताख्याध्ययन सद्याय प्रारंजः॥
॥ ढाल धमालनी ॥ सोहम स्वामी एम कहे रे, सुण जंबू अणगार॥ वीर जिणेसर जांखियो रे, जीव अजीव वीचार॥१॥ परमारथ परिचय कीजीयें रे, लीजें प्रवचन सार ॥ ग्रुज नाण अमीरस पीजीयें रे, पामीजें जवपार ॥ प०॥ ए आंकणी ॥ जीव अजीव दोइ वर्णव्या रे, लोकालोक मकार॥ जीव अरूवी तेहमां रे, जाणो दोइ अजीव प्रकार ॥ प०॥१॥ पुजल रूपी ए कह्यो रे, आकाशादिक अरूप ॥ संदेपयी अजीवनुं रे, वरणव्युं एह स्वरूप ॥ प० ॥ ३ ॥ जेद सुखा दोइ जीवना रे, सिरू अने जववास ॥ जेद पन्नर तो सिर्द्धना रे, जेह मत्या अलोक आकाश ॥ प० ॥ ४ ॥ पुढ वी जल जलणानिला रे, वणसे वि ति चल पंच॥ इंडिय माने जव तणो रे, जाणजो सूत्र प्रपंच ॥ प० ॥ ४ ॥ ए सिव जाव जिणेसरें रे, जांख्या जिव हित काज ॥ सूधा सहहतां थकां रे, पामीयें अविचल राज ॥ प० ॥६॥विजयदेव सूरीश्वरु रे, पद प्राजाविक सिंह॥विजयसिंह मनिराजियो रे, सुविहित गणधर लीह ॥ प० ॥ ।। तास नाम सुपसालके रे, ए ल

त्रीश सकाय ॥ उदयविजय वाचक जाणे रे, जेह्यकी नविभि थाय ॥ पण ॥ ए॥ इति श्री उत्तराध्ययन षद्त्रिंशाध्ययनानी सञ्चायोः संपूर्णाः॥ ॥ श्रथ श्रीमेरुविजयजीकृत नंदीवेण सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ राजग्रही नगरीनो वासी, श्रेणिकनो सुत सुविलासी हो ॥ मुनवर वैरागी ॥ नंदिषिण देशना सुणी जीनो, जिन कहेतां व्रत लीनो हो ॥ मु० ॥१॥ चारित्र नित्य चोखुं पाले, संयम रमणीशुं माले हो ॥ मु०॥ एक दि न जिन पाये खागी, गोन्वरीनी आङ्गा मागी हो ॥ मु०॥ १ ॥ पांगरीयो मुनि वहेरवा, कुधावेदनीकर्म हरेवा हो ॥ मु०॥ उंच नीच मध्यम कुछ मोहोटा, अटतो संयमरस लोटा हो ॥ मु०॥ ३ ॥ एक उंचुं धवल घर दे खी, मुनिवर पेठो शुद्ध गवेषी हो ॥ मु०॥ तिहां जइ दीधो धर्मलाज, वे स्था कहे इहां अर्थ लाज हो ॥ मु०॥ सावन दृष्टि हुइ बार को खी, खंक किर नांख्यो तरणं ताणी हो ॥ मु०॥ सोवन दृष्टि हुइ बार को डी, वेक्याविनता रही कर जोडी हो ॥ मु०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चोथमञ्जजी कृत आयुअस्थिरनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ आजला त्रूटानें सांधो को नहीं रे, तिण कारण म करो जीव प्रमा द रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा बोहिने दया पाल रे ॥ आ० ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणें रे, सूरख संच्यां बहुलां पाप रे ॥ चोर तणी परें बंसी फूरशो रे, सहेशो इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० ॥ १ ॥ वंचां चणाव्यां मंदिर मालियां रे, दे दे धरतीमें वंसी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्यो कठी चल्यो रे, सुख इःख सहेशे आप णो जीव रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती हरिबल राणो केसवो रे, जोजो वली इंद्र सुरांरो नाथ रे ॥ जगी वगीने ववेही आयम्यो रे, जो जो कोइ अच रिजवाली आथ रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसखा रे, करता मुनि नचल विहार रे ॥ जारंग पंत्रीनी दीधी जपमा रे, न धरे म मता मोह लगार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चारित्र पाले रूडी रीतछुं रे, देवे मुनि आपनो उपदेश रे ॥ तिको मुनिवर सीधाशे मोक्तें रे, जस लेक इहलोक परलोक रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ शब्दरूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि जिण यारो अजिमान रे ॥ कृषि चोथमल्ल सूत्र देखिनें रे, जो इ कीधी जालोर मजार रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

( 284 )

॥ त्राय श्री ज्ञानविमखजी कृत नवकारफलनी सचाय प्रारंजः॥ ॥ ए नवकार तेणुं फख सांजिक्षी, हृदयंकमंख्रं धरि ध्यान ॥ आगें आनं त चोवीशी हुइ, तिहां ए पंच प्रधान हो ॥ रे ॥ आतम, समूर समर नव कार ॥ जिन शासनमां सार, पंचपरमेष्टी उदार, त्रख काल निरधार हो श्रातम ॥समण ॥ ए श्रांकणी ॥ वनमां एक पुष्टिंद पुष्टिंदी, मुनि कहे तस नवकार॥ अंतकार्से बेहु मंत्र प्रजावें, नृप में दिर अवतार हो ॥आ०॥ संणाशारायसिंह अने रह्मवती जे, प्रमदा ने जरतार ॥ त्रीजे जुने ते मुक्ते जारो, आवर्यके अधिकार हो ॥आणासणार्भा चारदं तें अंज प्रतिबोध्यो. संजलावी नवकार॥ सुरलोकें ते सुर यह जपनो, करि सान्निधि तिणि वार हो ॥ आणासणाधा नगर रतनपुरें मिथ्या ताणी, वह वरनें दीये आखं॥ महामंत्र मुखें जपे महासती, सर्पे थयो फुलमाल हो ।। आणे।। संगा ५ ।। न्नूमि पडी समखायें देखी, दीधो मुनि नवकार ॥ सिंहखराय तथे घर कुं वरी, जरुवष्ठ कस्त्रो विहार हो ॥ आण् ॥ सण् ॥ ६ ॥ नगरं पोतनपुर रोठ तणो सुत, मसीयो त्रिदंभी साथ ॥ महासत्त्व मन मंत्र जपंतो, खज मृत कने हाथ हो ॥ आणासणा। तेह विघन सवि दूरे नाठां, सोवन पुरिसो पामी ॥ कनकतणुं जिनजुवन करावी, स्थाप्या त्रिजुवन स्वामी हो ॥ आव ॥सवाहा। यह प्रसन्न करी बीजोरं, खेवे मंत्र प्रजावें।।हुं िक जहानें पिंगल तस्कर, एहथी सुरपद पावे हो ॥ आण् ॥ सण् ॥ ए॥ सोमदत्त ने मणिरथ सिंहरथ, मावत ने कुविंद ॥ एम अनेक परमेष्टी ध्यानें, तरिया जविजन वृंद हो ॥त्राणासणारणागर्जावासें जीव इम चिंतवे, तो धर्म करशुं सार॥ जव जनम्यो तव वीसरी वेदन, एहेर्ले गयो अवतार हो ॥आण।सण।११॥ जिहां लगें आय तिहां सहु साथी, निर्द्धननें ते मूकें॥ कूड कुटुंब तणे तुं कार्जे, कां आतमहित चूके हो।। आणा सणां १२।। यम राजा केणे नि जीत्यो, सुकृत कखुं ते पोतें॥ अवसर बेर बेर नहिं आवे, जाये जनम एम जोते हो ॥ आ०॥ स०॥ १३॥ सार एह है असार संसारे, श्रीजिनसेवा करियें।। विषय कषायं करीने अलगां, ज्ञानविमख ग्रुण धरियें हो ॥आव ॥ स॰ ॥ १४ ॥ इति श्रीनवंकार सद्याय समाप्तः ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजीकृत अष्टजंगीनी सद्याय प्रारंजः ॥
॥ सुगुरु देव सुधम्मेनुं, जेह तत्व न जाणे॥ मुनि श्रावक व्रत नाद रे,

जावें पण नाणें॥ चेतन क्वान दशा जजो, तजो परनी निंदा॥ जदास जा वपणुं जजो; जिम जल अरविंदा ॥ चतेनणार्॥ ए आंकणी ॥ नवि जाणे नवि आदरे, नवि पाले श्रंगी तेह ॥ मिथ्यात्वी सवि जन कह्या, पहिले त्रंगे तेह ॥ चेण ॥ १ ॥ निव जाणे निव आदरे, अंगी पुण पालें ॥ कष्ट क्रिया शीलादिकें, तापस तनु गाले ॥ चेणा ३ ॥ निव जाणे वली आदरे, मुनिव्रत निव पाले ॥ पासलादिक छुन्नवी, त्रीजे नंगें निहाले ॥ चेणा ४॥ निव जाणे वसी खादरे, पासे पुण खंगी ॥ खजव्य उत्सूत्र कथक, मुखा लह्या चोंथे जंगे ॥चेणा ए ॥ जाणे पण निव आदरे, वत जयें निव पाले॥ श्रेणिक प्रमुख जे समिकती, शासन श्रजुवाले ॥ चे० ॥ ६॥ जाणे पण नवि आदरे, शीलादिक पाले ॥ पंचानुत्तर सुरवरा, वठो नेद निहाले ॥ चे ।।।।। जाणे अंगी आदरे, मुनि वत निव पाले ॥ गीतारथ प्रवचन स हे, सत्तम जेद विशाल ॥ चे० ॥ ए ॥ जाए पाले आदरे, जिनमतना वेदी ॥ चजविह संघ जे सुविरति, अठम नंग विनोदी ॥ चेण॥ ए॥ पढम चजजंगी मांहिला, मिथ्यात्वनिवासी ॥ परचजजंगी समिकती, श्री जिनमतवासी ॥ चे० ॥ १० ॥ ए अडचंगी जावतां, विधिनें अनुसरतां ॥ ज्ञानविमल मित तेहनी, जिन आण धरंतां ॥ चेण ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजीकृत चेतनबोधनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ चेतन अब कतु चेतियें, ज्ञाननयन उघाडी ॥ समता सहजपणुं ज जो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥१॥ या ज्ञानियां हे बाजरी, जेसें बाजीगर बारी ॥ साथ कीसीके नां चले, जित्रुं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ माया तरुं या परें, न रहे स्थिरकारी ॥ जानत हे दिलमें जना, पण करत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी ॥ पलटे एकही पलकमें, ज्युं घन अंधिबारी ॥ चे० ॥४॥ परमातम अविचल जजो चिदा नंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुखकारी ॥चे०॥४॥

॥ श्रय श्री ज्ञानविमलजीकृत आत्माने शीखनी सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ माहरा श्रातम, एहिज शीख संजालो॥ कांहि कुमति कुसंगति टालो रे ॥ माणा ए श्रांकणी ॥ सुग्रुरु सुदेव सुधर्म श्रादरजे, दोष रहित चित्त धरजे ॥ दोष सहित जाणी परिहरजे, जीवदया तुं करजे रे ॥ माण्॥ र ॥ पाछली राते वहेलो जागे, ध्यानतणे लय लागे ॥ लोक व्यवहारयकी मत

नागे, कष्ट पडे म म मागे रे ॥ मा० ॥ १॥ इःख छावे पण 'धर्म म मूके; कुल त्राचार म चूके ॥ धरती जोईने पग तुं मूके, पापें किमही म हुके रे ॥ माण ॥ ३ ॥ सजुरुकेरी शीख सुणीजें, त्र्यागमनो रस पीजें ॥ श्राली रीशें गाल न दीजे, श्राप वलाण न कीजे रे ॥ माण्॥४॥ शक्तें व्रत पचकाण श्रादिरयें, साम्न जोइ व्यय करियें॥ पर जपकारें श्रागल शाये, विधिशुं यात्रें जाये रे ॥ माण ॥ ५ ॥ समकितमां मत करजे शंका, धर्मे म थाइश वांका ॥ ढंकी सत्य न थाये ए रंका, संतोष सोवन टंका रे ॥ मा० ॥ ६॥ किमही जु हुं वयण म प्रांखे, जिन नेटे खेइ आखे ॥ शीखरतन रूडी परें राखे, ही णें दीण म दाखे रे ॥ माण ॥ ७ ॥ समकित धर्म म मूके ढीलो, व्यतनें म थाइश वीलो ॥ धर्म काजें थाये तुं पहेलो, एहिज जसनो टीलो रे ॥ माण ॥ ए ॥ झानदेव ग्रुरु साधारणतुं, झब्य रखोपुं क रजे ॥ पाखंनी अन्याय तणुं डव्य, संगति दूरें करजे रे ॥ माण ॥ ए ॥ विनय करे जे गुरुजन केरो, पंचपर्व चित्त धारे ॥ हीन महोदय अनुकं-पायें, दुः खियानें साधारे ॥ मा० ॥ १० ॥ इक्ति पाखें म करीश मोटाइ, शुजकामें न खोटाइ ॥ बोडीजें चूगल चोहाने, मलवुं न छुष्टथी कांई रे॥ माण ॥ ११ ॥ धर्मक्तेत्रें निज धनने वावे, जिम स्रांगल सुख पावे ॥ पर निंदा निजमुखें मत ख्यावे, आपे ही णुं न्नावे रे ॥ मा०॥ १२॥ उदेरी मत करजे खडाइ, आदरजे सरलाइ ॥ फुलाव्यो चित्त न धरे जडाइ, पा मीश एम वडाइ रे ॥ माण ॥१३॥ विधिशुं समकी व्रत आदरजे, त्रएय का स जिन पूजे ॥ बुध पूठीने जद्यम करजे, व्यसन अवस्य परिहरजे रे ॥ माण ॥ १४ ॥ ज्ञानिवमल ग्रेरु सेवा करियें, तो जवसायर तरीयें ॥ शिवसुंदरी नें सहेजें वरियें, ग्रुद्धमारग अनुसरियें रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ श्रय जीवजपदेशनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ सहुको सुणजो रे, करम समो नहीं कोइ ॥ ए देशी ॥ चेतन चेतजो रे, ए काल न मेहले केडो ॥ संवल शीघ साथें लेजो, कीनाश वसे हे नेडो ॥ चे० ॥ रे ॥ ह्यां शिव करी ए निलें, हल गवेष हानो ॥ व्यक्तियो व्यावी पकडी जाशे, कांईक चडावी वानो ॥ चे० ॥ १ ॥ तनुरुख ए जीव वटेरो, इहारामे रमतो ॥ कूर कीनाश ए शमली पेरें, लेई जाशे जमतो ॥ चे० ॥ ३ ॥ वाला बूढा गर्जें हुता, यौवन वय लेइ जावे ॥ काचां पाकां

सघलां बेडां, एहने दया न छावे ॥ चे०॥ ध ॥ तुं जाणे परवारी ज्इहां, खोचा सघला धोइ॥ हा हो करतां खेई जारो, सहुको रहे एम जोइ॥चे० ॥५॥ तुं अमरपरे थिर थइ बेठो, खोचा वाखे मूह ॥ खखपति नरपति शेठ सहवाह, तुक आगल केइ बुढ ॥ चे० ॥६॥ आज काल ने पोर परारें, धर्में विसंबज करतो ॥ क्षण क्षण आयु ठंडो याये, अंजिसजल जिम खरतो ।। चे० ॥ ७ ॥ तारे तो रोहणमां गाजे, बहेरो यइने बेठो ॥ तुज आगस केइ नर चाखा, तुं ए पंथे पेठो ॥ चे० ॥ ७॥ वार कवार सुखी डुःखी ए, न गणे एक ए टाणुं ॥ अवर रूठा ते दामें पाचे, नव खे एहनुं आणुं॥ चे ॥ ए। निश्चिता निव सुइयें प्राणी, जमनो जाजो जोरो ॥ मातिपता दिक जोतां लेहेरो, केहनो न चाले तोरो ॥ चे० ॥ १० ॥ समय थये चेलो नहिं प्राणी, आवे आछ बहु फूरे॥ बुडतां वारे केहवी खागे, सायरनें जि म पूरे ॥ चे० ॥ ११ ॥ रातदिवस चाले ए पंथें, किए न जाये कलियो ॥ थावचादिक ते मुनि चेला, तेहने ए जय टिखयो ॥ चे० ॥११॥ पाणी प हेली पाल जे बांधे, ते जगमांहि बिलया॥ घर लागे कूवो जे खोदे, ते मू रखमां जिल्या ॥ चे० ॥ १३ ॥ जराकृति जोबन ए ससलो, आहेडी जम जाणो ॥ जिहां जाशे तिहां ए मारे, चित्तमां कां निव आणो ॥ चै०॥१४॥ एइवुं जाणी धर्म आराधो, शुं करे ते जम बिखयो।। वीरविमल गुरुशि ष्य विद्युद्ध कहे, जइ शिवपुरमां जिल्यो ॥ चेण ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री विशुद्धविमलजीकृत जोबनअस्थिरनी सद्याय प्रारंतः॥

॥ जोजो रे ए जोवनियुं में, जाएयुं केइ दिन रहेशे रे॥ घणा दिवसनी प्रीतडी कांइ, जातुं मुक्तने कहेशे रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जोवनवय जुवती रे सरातो, धनकारण बहु धातो रे ॥ पुजलगुं निश दिन रह्यो रातो, काल न जाण्यो जातो रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जाते रे इणे जोवनीयें, वली जरा राक्त सी मेली रे ॥ सवे लोही चूशी लीये ए, तिलने जिम करे तेली रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ काला ते धोला चया ए, तननो जोरो जांगे रे ॥ इन्ना खंधेर करी बहु वाधे, लोज पिशाच ते लागो रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ श्रवणे कांहि सुणे नहीं ए आंखे पण निव सूके रे ॥ खालोगमे लालो चूने, मूरल तो हि न बूके रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दांत सिव मुखयी गया ए, हाथ पग निव हाले रे ॥ चिंत्यो काम ए निव थाने, ए घरडपण बहु साले रे ॥ जो० ॥

॥६॥ सज्जन वर्ग सहू एम जांके, जड ते शुं ए जाणे रे ॥ खब खब करतो साज नहीं ए, कोण गणे तृण तोखे रे ॥ जोण्॥ ॥ वंठ वहूरो इणपरें योखे, तातयाडीयो ताणो रे ॥ खाठी खेश खूंमीने हांके, ए ब्रुक्तणां सुख माणो रे ॥ जोए॥ ए॥ कडुक वचन सुण। एन श्रवणे, शिर धूणे वहु फूरे रे॥ जरायें जीरण कस्त्रो ए, श्रांखे श्रांसु चूबे रे ॥ जो०॥ ए ॥ सात खला आवी अड्या ए, केहने जइने कहियें र ॥ अवसर तो चेत्यो नहिं प्राणी, समतायें हवे सिह्यें रे ॥ जो०॥ र०॥ है है जन्म एलें गयो ए, स्तजन विण रंगद्यं मोहियो रे ॥ पाप करी आणीने पोष्यो, नर्जव एखें खोयो रे ॥ जो ॥ ११॥ जाणंतां पण केइ जन प्राणी, करी जिम कचरे खूचे रे ॥ मोह महालालें गूंयाणा, खेले मसक जिम गूचे रे जो। । १२ ॥ एहवुं जाणी चित्तमांहि आणी, पुख करो जवि प्राणी र ॥ जन्म जरा मरवुं निव होवे, इन कहे केवल नाणी रे ॥ जोण ॥ १३ ॥ पं िमत वीरविसल गुरु सेवक, विद्युद्ध कहे चित्त धरजो रे ॥ ए संसार अ सार मन आणी, धर्म ते वहेलो करजो रे ॥ जो ॥ १४॥ इति ॥

॥ अथ श्रीराजसमुद्धजी कृत वैराग्यनी सञ्चाय प्रारंजः॥ ॥ सुण वेहेनी पीयुडो परदेसी, ऋाजके काल चलेसी रे ॥ कहे कोण मा हरी सार करेसी, क्रण क्रण विरहो दहेसी रे ॥ सुण ॥१॥ प्रेमविद्युक्तो ने मदमातो, काल न जाखो जातो रे ॥ उचित आणुं आव्युं त्यां तो, रही न शक्यो रंग रातो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ वाट विषम कोइ साथ न छावे, पियुडो एकलो जावे रे ॥ विण साथें कहो कुण पहुंचावे, आप कियो फल पावे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जमशे पुर पुर मांहे एकी लो, जेम ग िलयामांहे घेलो रे ॥ निव जाणुं कित जाय रहेखों, विद्वडे मिखणों दोहिखों रे ॥ सु॰ ॥४॥ पोत संवल साथ न लीधो, वीजे किणही न दीधो रे ॥ मूल्य गमावे चल्यो सव सीधो, एको काम न कीधो रे॥ सुण॥ या प्रीतम विण हुं जह रे वि रानी, किण्ही मन न सुहाणी रे ॥ पीयरकी में प्रीत पिछाणी, जलबल ठार कहाणी रे ॥ सु॰ ॥६॥ दैरागी छांतर वैरागी, प्रीत सुणत निव जागी रे ॥ राजसमुद्ध नुषे वहनागी, नारी विष सोन्नागी रे ॥ सुष ॥ ७ ॥ ॥ श्रथ श्रीसुमतिविजयजीकृत श्रात्माने उपदेशनी सद्याय प्रारंजः॥ ॥ जीव वारुं द्वं मोरा वालमा, परनारींथी प्रित म जोंड ॥ परनारीनी

संगत निर्दे जली, तारा कुलमां लागशे खोड ॥ जी०॥१॥ जीव ए संसार हे कारमो, दीसे हे श्राखपंपाल ॥ जीव एहं जाणी चेतजे, श्रागल ना खी हे जाल ॥ जी० ॥१॥ जीव मात पिता जाई बहेनडी, सहु कुटुंबतणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगुं, पहे लांबा की था जुहार ॥ जी०॥३॥ जीव देहली लगें सगुं श्रांगणुं, शेरी लगें सगी माय ॥ जीव सीम लगें साजन जलो, पहे हंस एकी लो जाय ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीव जातां तो निव जाणीया, निव जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं जरी गुं इंघणे, खोलरी हां मली साथ ॥जी०॥४॥ जीव श्रां पाप॥ जीव श्रां पाप॥ जीव सुमतिविजय मुनि एम जले, जीव श्रावागमन निवार ॥ जी०॥६॥ अथ श्रीवीरकृत उपदेशनी सञ्चाय प्रारंतः ॥

॥ रात दिवस काया मूढ पोषे रे, पठे अनंत इःखी जीव होशे रे ॥जीव जुर्जनें हृदय विचारी रे, आंख मीची तो क्रिक्क पीयारी रे ॥ १ ॥ एतो काया अमर न होइ रे, वीर वचन सुणो सहु कोइ रे॥ एतो दूध दही देह खाले रे, ए तो पाणी घणुं पखाले रे ॥ १ ॥ शणगार तणे रस खागो रे, जीव निश्चें जाइश नागो रे ॥पांचें इंडियनां सुख निव ठोडे रे, धर्म स्थानक आलस मोडे रे ॥ ३ ॥ खाये खेले हसे मद आणे रे, जोला धर्मनुं नाम न जाणे रे ॥ पुत्रवंती धनने मोहे रे, घृत कारणे ते जल मोहे रे ॥ ४ ॥ जीव धनने सघलो ध्यावे रे, पण पूरव दी धे पावे रे ॥ अतिलोज किहां न समावे रे, लाख कोड तृति निव यावे रे ॥ १॥ सोनानी छुंगरी कीधी रे, नव नंदे साथें न लीधी रे ॥च्यारे चोर कायाथकी टालो रे, सूधुं समकित शि यलवत पालो रे ॥ ६ ॥ तप करी काया अजुवालो रे, राग देष वैरी दोष टालो रे ॥ एतो शीख चले जे कोई रे, तेने अविचल पदवी होई रे ॥ गुरु क्लानीने छपकारी रे, वीरवचन सुणो नर नारी रे ॥ १॥ इति ॥

॥ अथ श्री ज्ञानिवमलजी कृत ते सुखीयानी सद्याय प्रारंजः ॥ ॥ तेतरीया जाइ तेतरीया ॥ ए देशी ॥ ते सुखिया जाइ ते सुखिया, जे परणुःखें जुःखिया जी ॥ परसुख देखी जे संतोषिया, जिणे जिन धर्म जेखिखया जी ॥ ते० ॥१॥ ज्ञानादिक वहु गुणना दिखा, जपशमरस जिल जिरियाजी ॥ जे पाले नित सूधी किरिया, जवसायर ते तिरया जी ॥ ते० ॥ ३ ॥ दानतणे रंगें जे राता, शीखगुणें करी माता रे ॥ सिव जगजीवने,

दिये जे शाता, पर वनिताना जाता रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ जेणे ढांड्या घरना धंघा, जे परधन क्षेत्रा श्रंधा रे ॥ जे निव बोले वोल निवंधा, तप तपवे जे जोधा रे ॥ ते० ॥४॥ परमेसर श्रागल जे साचा, जे पाले सूधी वाचा जी॥ धर्म कामे कवही निहं पाढा. जिनगुण गावे जाचा रे ॥ते०॥४॥ पापतणां द्र्यण सिव टाले, निजवत नित संजाले जी ॥ काम क्रोध वैरीने गाले, ते श्रातम कुल श्रजुवाले जी ॥ ते० ॥ ६ ॥ निशिदिन ईर्यो सुमतें चाले, नारी श्रंग न जाले जी ॥ शुक्क ध्यानमांहे जे माले, तपह तपी कर्म गाले जी ॥ ते० ॥ छ ॥ जे निव वोले परनी निंदा, जीह श्रमीरस कंदा जी ॥ जे णे त्रोड्या जवना फंदा, तस देखत परम श्रानंदा जी ॥ ते० ॥७॥ जे पूजे जावें जिनइंदा, सोम्य गुणें जिन चंदा जी ॥ धर्में धीर ग्रुरु चिरनंदा, नय कहे हुं तस चंदा जी ॥ ते० ॥ ए॥ इति ॥

॥ अय श्री ज्ञानिनखजीकृत पूर्वसेवालक्ण सद्याय प्रारंजः॥

॥ एकदिन दासी दोडती ॥ ए देशी ॥ राग काफीनी देशी ॥ जब्यने कर्मना योगथी, चरम आवर्त्त अनुजाव रे ॥ पूर्वसेवा ग्रण जपजे, तेहने एह जमाव रे ॥ १ ॥ सुग्रुरुवाणी एम सांजलो ॥ ए त्र्यांकणी ॥ पूर्वसेवा तणा योगथी, सदाचारनो रंग रे॥ देवगुरवादिक पूजना, मुक्ति अर्थे तप संग रे ॥ सु॰ ॥ १ ॥ जनक जननी कलाचार्यनी, एहनी जे वली ज्ञाति रे ॥ वृद्ध वली धर्म जपदेशका, एइ ग्रुह्मगर्ग कहेवाती रे ॥ सुण ॥ ३ ॥ न मन पूजन त्रिसंध्यें करे, आसनार्पण जस वाद रे।। अपयश तास निव सां जले, नाम सुणी लहे आव्हाद रे ॥ सुण ॥ ४ ॥ सर्वदा तस इष्ट आचरे, करे श्रनिष्टनो लाग रे॥ तस धन विषमें जोडे नही, मरणें श्रनु श्रनुमति खाग रे ॥ सुण्॥ ए॥ गुरुजन विंबनी स्थापना, अर्चना तास उपगरण रे ॥ आप जोगें ते जोडे नही, एह गुरुवर्गनुं तरण रे ॥ सु॰ ॥ ६ ॥ शौच श्रद्धान शुजवस्तुशुं, करे देवतणी जिक्त रे॥ मुक्तिनी वासनायें वस्यो, ज ब्रुसे आतम शक्ति रे॥ सुण॥ उ॥ यद्यपि वस्तुनिर्णय नथी, तोहे एम मति जाव रे ॥ विषयकषाय जित्यो जिए, तेहिज जवजलनाव रे ॥ सुव ॥ ए॥ द्वीये अधिक गुण आपमां, ईहियें अधिकता तोहि रे ॥ निर्शुण पर जन देखते, धरे द्वेप निव कोइ रे ॥ सु॰ ॥ ए॥ स्विक्रिया कार सिव र्खिगीया, दीये पात्र परें दान रे॥ निर्ग्रुणीने पण देय तो, दिये निव अप

मान रे ॥ सुर्व ॥१०॥ क्रुपण दीनांध कार्याक्मी, पालनाशकिथी तास रे॥ छातुर पथ्य दानादिके, पोष्यवर्ग दयावास रे ॥ सुण ॥ ११॥ लोक छप वादें जय मन धरे, निव करें दाननो जंग रे ॥ मनें खहे जवतणुं हेते हे, सदा दान आश्रवसंग रे ॥ सुर्व ॥ ११ ॥ ए सदाचार होये सहजनो, गुणिजनशुं धरे राग रे ॥ निंदा गुणी तणी निव करे, आपदें दैन्य निव लाग रे ॥ सुण ॥ १३॥ संपदायें धरे नम्रता, प्रतिक्वा करे निर्वाह रे ॥ त्रिकुलविरुद्ध निव श्राचरे, सत्य मितवचन प्रवाह रे ॥ सुण ॥ १४॥ उत्तमकार्य ईहा धरे, वावरे ड्रव्य शुज्ञाम रे ॥ लोक अनुवृत्ति नित्त क रे, तप करे करि मन ठाम रे ॥ सुण। १५॥ पापसूदन ने चांडायणादिक, तप जप ने संन्यास रे ॥ कृष्ट्र मृत्युव्न प्रमुखा बहु, तप तणा जेद विद्यास रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ ख्यादिथी धर्मनी योग्यता, चित्र जप मंत्र ख्रज्यास रे॥ कर्मक्तयहेते सवि आदरे, एहिज मोक्त आवास रे ॥ सु॰॥ १९॥ मान छक्कान भिष्याविषे, निहं जिहाँ एहवा जाव रे॥ तेहिज मोक्त चित्त मां धरे, जन्म मरण न संतापरे ॥ सु०॥ १०॥ चार संजीवनीनी परें, होये कार्यनी सिक्षिरे ॥ मार्ग सुप्रवेश फल उदयथी, टक्षे कपटनी बुक्षि रे ॥ सु॰ ॥ १ए ॥ जवसुख उत्कट वांडना, एह संसारनुं मूख रे ॥ आप ज्कर्ष मातो रहे, ते पूर्वसेवा प्रतिकृत रे ॥ सुण ॥ २० ॥ पूर्वसेवाषी हुने शिथिलता, मलकषायादि परिणाम रे ॥ जाग संक्षेश ते मल कहा, यो ग्यता जव परिणाम रे ॥ सु॰ ॥ ११ ॥ एहथी मार्ग अनुसारिता, गुणवृद्धि होये एम रे॥ अपुनर्वधकता करे, धरे शुद्ध गुण प्रेम रे॥ सुन्॥ ११॥ कानविमल गुरु सेवना, तेहं यकी एहवी वात रे ॥ 'सांजली श्रंगी जो आदरे, होये तोही सुख शात रे ॥ वधे निज गुणसुजात रे ॥ सुण ॥ २३॥ ॥ अथ श्री खिंधविजयजी कृत पन्नर तिथिनी पन्नर,

तथा सात वारनी सात संख्य प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमजोडी जगधणी, दायक शिवगति जेह ॥ श्रक्षिय विघन दूरें हरे, टाले दुरित अठेह ॥ सुधादृष्टि होवे सदा, एहवी जे हिन दृष्टि ॥ उरग तजी सुरपित कस्बो, गिरु गुणें गरिष्ट ॥१॥ जाविय पद पंकज सदा, हुं नित्य प्रणमुं तास ॥ सकल मनोरथ पूरवे, त्रेवीशमो जिन पास ॥ ३॥ जावें प्रणमुं जारती, पूरे पूरण खाश ॥ मुरखनें पंकित करे, श्रापे वचन विसास ॥ ४॥ (पाँठातरें) मूरखने पंनित करे, एवी तुरु श्राख्यात ॥ वचन सुधारस पोषवा, वर दे शारद मात ॥ ४॥ शक्तिं निहें सिंद्धातनी, बुद्धि नहीं सबसेश ॥ वचन विसास करी कहुं, तें पण निहें सुविशेष ॥ ४॥ पण मुरु एक श्राधार हे, सजुरु तणो पसाय ॥ तस श्रमुजावें उपजे, वचन सदा सुखदाय ॥ ६ ॥ श्रागमना श्रमुसा रथी, श्राणी मन्न पवित्र ॥ पन्नर तिथि सात वारनां, पजणुं तेह चरित्र ॥ ॥ ॥ जिम मृगनाद सीनो थको, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो जवियण तुमें, श्राणी चित्त श्रजंग ॥ ए॥

॥ श्रथ प्रतिपदानी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ अय दितीयानी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ ढाल वीजी ॥ कोइसों पर्वत धुंधलों रे लो ॥ ए देशी ॥ वीज कहे जव्य जीवने रे लो, निसुणों आणी रीज रे ॥ सुगुणनर ॥ सुकृतकरणी खेतमें रे लो, वावो समिकत वीज रे ॥सुंगों घरंजो धर्मशुं प्रीतडी रे लो, किर निश्चय व्यवहार रे ॥ सुण्॥ इंह्जव परजव जवोजवे रे लो, होवे ज्युं जग जयकार रे ॥सुण्॥ यं आंकणी ॥१॥ किरिया ते खातर नां खियें रे लो, समिता दिजें खेड रे ॥ सुण्॥ जपशम नीरं सींचीयें रे लो, जगे ज्युं समिकत लोड रे ॥ सुण्॥ धण्॥ १ ॥ वाड करो संतोषनी रे लो, तस पांखली चिहुं

ठोर रे ॥ सु० ॥ त्रत पच्छाण चोकी ठवो रे खो, वारे युं कर्मना चोर रे ॥ सु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ अनुजव केरे फूखडे रे खो, महोरे समिकत वृक्ष रे ॥ सु० ॥ अत्वारित्र फख उतरे रे खो, ते फख चाखो शिक्ष रे ॥ सु० ॥ ध० ॥ अ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे खो, स्वाद ह्यो साम्यतांबूख रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ ३ ॥ ज्ञानामृत रस पीजीयें रे खो, स्वाद ह्यो साम्यतांबूख रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ घ० ॥ घ० ॥ घ० ॥ घ० ॥ केवल थ ॥ घ० ॥ घ० ॥ दे ॥ समिक कमला पामीयें रे खो, विरयें मुक्तिविवेक रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ ६ ॥ समिक त बीज ते सदहे रे खो, ते टाले नरकिनगोद रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ घ० ॥ इति॥ सदा खहे रे खो, नित नित विविध विनोद रे ॥ सु० ॥ घ० ॥ घ० ॥ इति॥ ॥ अथ तृतीयानी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ ढाब त्रीजी ॥ इकर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥ त्रीज कहे मुज जंलली रे, आदरो देवगुरुधर्म ॥ जन्म जरा मृत्युधी छुटो रे, टालो जव जय जर्म ॥ जिनकजन, धरजो धर्मशुं राग ॥ जिन पामो जवनिधि ताग ॥ ज० ॥ घ० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोहिनी त्रणे परिहरो रे, रालो मन निःशल्य ॥ गारव त्रणे मत करो रे, ढंको त्रण्ये शह्य ॥ ज० ॥ घ० ॥ १ ॥ मानव जवमां मोटकां रे, कहियां तीने रत्न ॥ इतान दर्शन चारित्र अढे रे, तेहनुं करियें यत्न ॥ ज० ॥ घ० ॥ ३ ॥ ए त्रण्ये रत्नयोगधी रे, पामिये त्रिज्यन राज ॥ श्रीजगवंत शकारशे रे, सरशे वंढित काज ॥ ज० ॥ घ० ॥ ४ ॥ त्रवर्गनां सुख मेलवो रे, आणी त्रण्ये योग ॥ मन वचन कायायोगधी रे, टालो कर्मना रोग ॥ ज० ॥ घ० ॥ ४ ॥ त्रण ग्रिस सूधी धरे रे, जे नर त्रीज आराधि ॥ विजयलिं वेत ते पामशे रे, दिन दिन सुख समाधि ॥ ज० ॥ घ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थीनी सद्याय प्रारंजः ॥

ा ढाल चोथी।। कपूर हुवे छति ऊजलो रे॥ए देशी॥ चोथी कहे जिन्न सांजलो रे, माहारा गुण छित्राम ॥ माहरी शिलें चालशो रे, तो लेशो मुक्तिनुं ठाम रे ॥ प्राणी, जिनवाणी धरो चित्त ॥ एतो छाणी मन शुज रीत रे ॥ प्राण ॥ जिण ॥ ए छांकणी ॥ १ ॥ विकथा चारे परिहरो रे, प रिहरो चार कषाय ॥ क्षमारूपी धन संचियें रे, जवो जव पातक जाय रे ॥ प्राण॥ जिणाश। त्रिगडे बेसी जिनवरे रे, जांख्यो चछविह धर्म ॥ दान शियल तप ज्ञावना रे, ए चारे सुलनां हर्म्य रे ॥ श्राण्॥ जिण्॥ ३ ॥ दानें ते दोलत पामीयें रे, शीले जस सीजाग्य ॥ तप करी कर्म विनाशियें रे, जावें जावत जाग रे ॥ प्राण्॥ जिण्॥श्रा जविनिध पार जतारवा रे, ए चारे नाव समान ॥ सकल पदारय व्यापवा रे, ए चारे प्रगट निधान रे ॥ प्राण्॥ जिण्॥ थ ॥ इम जाणी पुष्य कीजीयें रे, सांजली सकुरु वाणी ॥ चिहुं गतिनां छु:ख टालिये रे, होवे कोडी कल्याण रे ॥ प्राण्॥ जिण्॥ ६ ॥ चोथतणा गुण जाणीने रे, जे धरे चल धर्मद्वार॥ विजयलिध सदा लहे रे, साधि पदारथ चार रे ॥ प्राण्॥ जिण्॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्रय पंचमीनी सद्याय प्रारप्यते ॥

॥ ढास पांचमी ॥ जय जगनायक जगगुरु रे ॥ ए देशी ॥ पुनरिष पांच म एम वदे रे, सांजलो प्राणी सुजाण ॥ श्री जिन अनुमतें चालीयें रे, जिम सहियें सुखनी खाए ॥ १ ॥ जविक जन, धरजो धर्मशुं प्रीति ॥ ए तो आए। मन ग्रुनहीत ॥ न०॥ ध०॥ ए आंकणी ॥ आश्रव पंच दूरें हरी रे, कीजे संवर पंच ॥ पंच समिति शुज पालीनें रे, तुमें मेलो शिवव धूसंच ॥ त०॥ ध०॥ १॥ पंच महाव्रत अनुसरी रे, पालो पंच आचार॥ त्रिकरण शुक्तियें घ्यावजो रे, पंचपरमेष्टी नवकार ॥ त०॥ ध०॥ ३॥ स मिकत पंच अजुवालजो रे, धरजो चारित्र पंच ॥ पंच सूषणने पडिवजी, टालो हूपण पंच खलखंच ॥ जण्॥ घण॥ ध॥ मत करो पंच प्रभादने रे, मत करो पंच श्रंतराय॥ पंचमी तप शुज श्रादरो, जिम दिन दिन दो खत थाय ॥ ज० ॥ थ० ॥ ए। एंचमी तप महिमा घणो रे, कहेतां नावे पार ॥ वरदत्तनें गुणमंजरी, जुर्ड पाम्या जवनो पार ॥ ज०॥ ध०॥ ६॥ पांचमी एम आराधीयें रे, खिह्यें पंचम नाण ॥ चनद रज्ज्वात्मक लोक ना, एतो मनपञ्चव शुज जाए ॥ ज० ॥ घ० ॥ १ ॥ घनघाति कर्म खपाव तां रे, वाजे हो मंगलशब्द ॥ यंचमी गति खविचल लहे, तिहां सुख अ नंत सुलच्ध ॥ जण्॥ धण्॥ ए॥ इति॥

॥ अथ पष्टीनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥ इण विध पांचे तिथि जाती, वोली शुज परिणाम ॥ एक एकथी चढते गुणें, मनोहर वे अजिराम ॥ १ ॥ वडी तणा गुण वर्णवुं, मूकी मन अजिमान॥ हवे जवियण जार्वे करी, निसुणो यह सावधान्॥ ॥१॥ ढाल वही॥ छुंबलडानी देशी॥ वही कहे मुज वेलली रे, वटको आ भूषी दूर॥ सनेहा सांजलो ॥ वकाय रक्ता की जीये रे, होवे ज्युं सुल सन्र्र ॥ सण्॥ १॥ चार कषाय राग देषने रे, नालजो दूर विकारि ॥ सण्॥ वण द्रव्यने वेलली रे, पालो निरितचार ॥ सण्॥ २॥ समिकत शुद्ध जगाविये रे, जांगियें दुःखनी बेडि ॥ स०॥ मग्न रहो जिनधर्ममें रे, नाखो कुगति वलेडि ॥ सण्॥ ३॥ वह व्याराधो जावशुं रे, जवियण यह वजमाल ॥ सण्॥ जिक्त मुक्ति सदा लहो रे, होवे युं मंगलमाल ॥ सण्॥ ४॥ बिब्ध कहे साजन तुमें रे, म करो प्रमाद लगार ॥ सण्॥ दिन दिन संपदा व्यजिनवी रे, होवे श्री श्रीकार ॥ सण्॥ ४॥ इति ॥

॥ ढाख सातमी ॥ खूहारणे जायो दीकरा, सोनारी हैं ॥ ए देशी ॥सा तम कहे सात आतमा॥ सुखकारी हे॥ प्राणी राखीयें सोय॥ सदा सुख कारी है ॥ सुख आवे गर्व न कीजीयें ॥ सु० ॥ दुःख आवे दीन न होय ॥स०॥ १॥ सात जय निवारियें ॥सु०॥ उंिमयें मिथ्या शंस ॥स०॥ सात अभीरस कुंममां ॥ सु॰ ॥ जीलीयें थइनें हंस ॥ स॰ ॥ २ ॥ सातम दिन साखेतमें ॥ सु॰ ॥ वाबीयें डब्य विशेष ॥ स॰ ॥ सुकृतकर्षण जुगीनें ॥ सु ॥ उपजे धान्य विवेक ॥ स ॥ ३ ॥ वाड करो तुमें शीलनी ॥ सुण ॥ तस पांखडीचिहुं ठोर ॥ सण ॥ चोकी ठत्रो सही धर्मनी ॥ सुण॥ अघ कोल न करे जोर ॥ स०॥ ४॥ मनरूपी माल बनावियें ॥ सु०॥ बेसीयें तिहां सावधान ॥ स० ॥ विरतिरूपी गोफणे करी ॥ सु० ॥ नाबि यें गोखा शान ॥ स० ॥ ए ॥ जुष्कृत पंखी उमाडीयें ॥सु०॥ करी निश्चय व्यवहार ॥ स० ॥ पोंक आरोगियें पुण्यना ॥सु०॥ जवियण थइ हुशियार ॥ स०॥ ६॥ सात नय जाणी तुमें ॥ स०॥ तङ्वी खखां बनाव ॥ स०॥ करुणारस जल त्याणीने ॥ सु॰ ॥ सात नय खलां पिवराव ॥ स॰ ॥ ७ ॥ जीवदया सगटे जरी॥ सु॰॥ सुकृत कर्षण सार॥स॰॥ संवर बलद्नें जो तरी ॥ सु० ॥ त्र्याणियें खला मजार ॥ स० ॥ ७ ॥ ध्यानरूपी थंत्र रोपीने ॥ सुणा खणियें क्तपक संयोग ॥ सणा जिनञ्जाणा सदी जावीये ॥ सुणा हालरुखां खशोक ॥स०॥ए॥ पुःखरूपी बूरां काटकी ॥सु०॥ नावियें पूर सुजाण ॥सणा स्थातमबस जंगरमें ॥ सुण्॥ जरजो सुकृत ध्यान ॥ सणी

॥१०॥ इहजव परजव जवोजवे ॥सु०॥ पामियें सुख विचित्र ॥स०॥ संतोष राखी आतमा ॥ सु० ॥ कीजें पुष्य पवित्र ॥ स० ॥११॥ खब्धि कहे जवि इष विधे ॥ सु० ॥ आदरे प्राणी जेह ॥ स०॥ सात रज्ज्वातम जेदीनें ॥ सु० ॥ सिव सुख खेहेशे तेह ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथाष्ट्रमीनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ हरिया मन लागो ॥ ए देशी ॥ आतम कहे आत मदनो, प्राणी मूको ते ठाम रे ॥ जवियण हित धरी ॥ आठ प्रकारे आतमा, उललो तुमें अनिराम रे ॥ न्नण ॥ १ ॥ पडिक्रमणां पोपा करी, तोडो दुःखना वर्ग रे॥ ज०॥ समिति ग्रिप्त सूधां धरी, मेलो सुख अपवर्ग रे॥ ज०॥ १॥ अप्र महागुण सिद्धंना, ध्यावो ते निश दीस रे ॥ ज०॥ अप्र महा सिद्ध संपजे, पहोंचे मनह जगीश रे॥ जिन ।। जिन देवनी करो हा जरी, दिख पाक करी मन कोड रे ॥ जण्॥ मनरूपी घोडो वनावीयें, गुरुङ्गान लगाम जोड रे ॥ जण्या ४ ॥ शीलनी पाखर नाखीयें, तपरूपी खज लेइ हाथ रे॥ ज०॥ क्रमा वक्तर पेहेरीनें, ध्यान कवाण सलोध रे ॥ जा ॥ था। विरति तीर चलावीनें, अष्ट करम सद मोडि रे ॥ जा। विषय कपाय जे त्राकरा, तेइनां ते मस्तक तोडि रे ॥ ज०॥६॥ श्रीजिन त्रागंत श्रावीने, मुजरो करो कर जोडि रे॥ ज०॥ श्रीजिन केरा पसायथी, मोक् शहेरे जार्ज दोडी रे ॥ जण्याशा आठम दिन शुज जाणीनें, धर्मनां करि यें वखाण ॥ तण ॥ कपटनो कोट छमाडियें, वाजे युं जीतनिशान ॥तण ॥ ए॥ एणिपरें अप्टमी जावशुं, आदरे प्राणी जेह रे ॥ जण्॥ लिब्ध कहे जिव तस घरे, प्रगटी पुर्खनी रेह रे॥ जि०॥ ए॥ इति॥

॥ अथ नवमीनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ वन्यो रे विद्याजीनो कलपडो ॥ ए देशी ॥ जीरे नवमी कहे नमीयें सदा, एतो श्रीजिनकेरां विंव हो विशेष ॥ नव अंगे पूजा बनावीयें, एतो मूकी मननो दंज हो ॥ विशेष॥ जित्रेष ग्रुजनावें करी ॥ए आंकणी ॥ वंको विषयकपाय अतीव हो ॥विणा स्नात्र महोत्सव कीजीयें, एतो दीजें दान सदीव हो ॥ विणाजण ॥ शाजीरे पूजा जिक्त प्रजावना, किर रोपे जे कीर्ति यंज्ञ हो ॥विणा सुख अनंतां ते वरे, तस जस जि सुर रंग हो ॥ विणा जण ॥ शाजीरे जिन आगें स्तवना जावशुं, एतो जे करे नाटारंज्ञ

॥ अथ दशमीनी सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ राम ज्ञणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ दशमीयें छुषमन वारियें, काम क्रोध मद जोर रे ॥ दशविध यति धर्म आचरी, कापीयें छुः खतणी द्रोर रे ॥ खाल सुरंगा रे आतमा ॥ विहयें धर्मनी होर रे, प्रगटे पुण्यनो तोर रे, लिहेयें मुक्तिनुं ठोर रे, वाधे जस चिहुं ठेर रे ॥ खाण ॥ १ ॥ दशविध विनयने अज्यसी, तोडीयें मोहजंजाल रे ॥ दशविध मिश्यात्व परहरी, ढंकियें आलपंपाल रे ॥ खाण। मेलीयें सुक्रतमाल रे, प्रगटे ज्ञाग्य विशाल रे, होवे मंगलमाल रे, लिहेथें सुख ततकाल रे ॥ लाण॥ १ ॥ त्रस यावर सर्व जीवने, संज्ञा कही तस रंग रे ॥ ते संज्ञा प्रत्ये जेलखी, कीजें ग्रुक्तो प्रसंग रे ॥ लाण॥ संज्ञा धर्म न चंग रे, राखीयें चित्त अजंग रे, सुखत टिनी वहे अंग रे, जलटे ज्युं गंगरंग रे ॥ लाण ॥ ३ ॥ दशविध प्राण त्रस जीवने, जांखे जिनवर वीर रे ॥ ते दश प्राण तुं पाभीनें, धरियें मन दया धीर रे ॥ लाण॥ दशविध सुख शरीर रे, हरियें दश विध पीर रे, तोडीयें छु:खजंजीर रे, पाभीयें ज्ञवोदिध तीर रे ॥ लाण ॥ ४ ॥ दश प्रच काण सिद्धांतमें, पाल्यां हे सिह बोल रे॥ तेहमां नित्य एक ज्ञावशुं, करे

पश्चरकाण श्रमोल रे ॥ लाण ॥ जाण लाज श्रतोल रे, मुक्तिशुं करि बंध कोल रे, लिब्ध जाणे दिल लोल रे, वाजे जीतना ढोल रे ॥ लाण ॥ ५ ॥ ।। श्रिथेकादशीनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

🖣 ॥ दोहा ॥ इम दशतिथि अधिकार अथ, किंचित् कह्यो चरित्र ॥ शा स्र तणा अनुसारघी, वर्णन करी विचित्र॥१॥ इवे एकादशितिथि तणा, हे सूरिजन माहाराज॥ त्रिकरण करीनें आतमा, निसुणो यइ मृगराज ॥१॥ ढाल ॥ न्यरो नगीनो माहरो ॥ ए देशी ॥ हवे एकादशी इम वदे, न्नविजन ठंकीयें विपयासत्त हो ॥ वसन उंढो निर्विकारनां ॥ निष् ॥ जेह नी वे सवल प्रतीत हो ॥ १॥ गुणना रागी प्रवी, अवगुण त्यागी सही होइयें ।। त्रणा पामी मनुन्नव संत हो ।। ए आंकणी ॥ ध्यान तणी श्रंगी विका ॥ त्रणा जोजन तिम संतोष हो ॥ श्रासव समता पीवतां ॥ त्रणा करजो काया पोप हो ॥ गुण्ण ॥ छा ॥ भाषा निशा हुरें की जीयें॥ जा। गुऊ स्वनावें कीए हो।। तैलाज्यंग तिम जदासीनता ॥नणा श्रुत तंवोल प्रवीण हो ॥ गु॰ ॥ऋणा ३॥ उंचा महेल विवेकना ॥ जना वास करो तेह मांहे हो ॥ अग्यार वोले ते धारियें ॥ त्रण ॥ रसपोषण वे जेह हो ॥ गुणा या।।।। याचार यंग रस सांजली ॥ जा ॥ प्रतिमा बहो याचार हो ॥ कर्म किन दूरें करी ॥ निष्ण । बिह्यें युं मुक्ति छुवार हो । गुणाञ्रणाया एकाद्शी तप की जिये ॥ जण्॥ एक एकाद्श वर्ष हो ॥ अग्यार अंग वा चक होने ॥ त्र० ॥ पामियं सुजस हर्ष हो ॥ गु० ॥ अ० ॥ ६॥ इणविध निवयण आदरो॥ न०॥ जाणो एकादशी सार हो ॥ खिंघ कहे निव सांज्ञलो ॥ ज्ञण्॥ होवे ज्युं जवनिस्तार हो ॥ युण्॥ ख्रण्॥ प्र॥ इति ॥

॥ अथ द्वादशीनी सञ्चाय प्रारंतः॥

रहो रहो वालहा ॥ए देशी॥ द्वादशी कहे जिन्नावशुं, की अंधर्मनी गोठ लाल रे॥ विण दामें रस लीजीयं, जिम साकरनी जरी पोठ लाल रे॥ १॥ जावे जिवयण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ वारशें वार उपांगना, नि सुणो जे कह्या वोल लाल रे॥ स्वाद स्यो अमृत तेहना, टाली जहता निटोल लाल रे॥ जा०॥ १॥ वारे वत जिव उच्चरी, मेलीयें सुकृत माल लाल रे॥ कम मलीन दूरें करी, श्रावक कुल अजुवाल लाल रे॥ जा०॥ ३॥ वारे जेदें तप जे अहे, आदरो हंमी क्रोध लाल रे॥ वारे

जावना जावियें, वारियें ममता विरोध खाख रे ॥ जा० ॥ ४॥ कुरस व चन कहेतां थकां, दिवस तणुं तप जाय खाख रे ॥ अधिक खीजंतां मास नुं, तप तप्युं निःफल थाय खाख रे ॥ जा० ॥ ४॥ शाप दियंतां वर्षनुं, तप जाये सुणो धीर खाख रे ॥ हणतां श्रमणपणुं हणे, एणी परं बोखे वीर खाख रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनवरं हो वर्णवी, जिस्कुप्रतिमा बार खाख रे ॥ ते तुमें जवियण पडिवर्जी, पालियें शुक्र आचार खाख रे ॥ जा० ॥ छ ॥ इणविध जे नर द्वादशी, आदरे शुज परिणाम खाख रे ॥ ते नर वं वित पामशे, शाश्वतां सुख अजिराम खाख रे ॥ जा० ॥ द्वादशी जेह आराधशे, धरशे जिनशुं राग खाख रे ॥ खिंधविजय कहे ते नरा, पाम शे जवनो जाग खाख रे ॥ जा० ॥ ए॥ इति ॥

॥ अय त्रयोदशीनी सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ रंगरो रे रसीया रे फुल गुलाबरो ॥ ए देशी ॥ ते रस श्रोता त्रागर्खे, जाले मन श्राब्हाद हे ॥ श्रीजिनवाणी सांजली, ते रस चालो खाद हे ॥ १ ॥ रसिया रे सूरिजन जावें हे सांजलो ॥ श्री जिन विंव जरावियें, कीजें जिन प्रासाद हे ॥ क्लानजिक सिव साचवी, ते रस चालो स्वाद हे ॥ र० ॥ १ ॥ काठीया तेरे परहरी, कीजें नव पद याद हे ॥ समकित वास सदा लही, ते रस चालो स्वाद हे ॥ र० ॥ ३ ॥ श्रीजिन श्रनुमित चालियें, तजीयें मिथ्यावाद हे ॥ श्रनुजव रूपी शेलडी, ते रस चालो स्वाद हे ॥ र० ॥ ४ ॥ तेरस चालो संवरी, श्रुक्तिध्यान प्रसाद हे ॥ केवल कमला पामीने, ते रस चालो स्वाद हे ॥ र० ॥ ५ ॥ ते रसना ग्रण जाणीनें, जे नर तजशे प्रमाद हे ॥ ते नरना ग्रण बोलशे, सुर नर श्रमृत वाद हे ॥ र० ॥ ६ ॥ श्रुजजावें सुकृतपणे, तेरशगुण श्राराधि हे ॥ लिध विजय कहे नेहशुं, लिहयें सुल समाधि हे ॥ र० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दशीनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ प्यारी ते पीयुने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ हवे चउदशतिथि इम वरे रे हां, एतो सांज्ञखो चतुर सुजाण ॥ जिवयां जावशुं ॥ श्रुत सि इतांतना बोखजे रे हां, एतो ते करो वचन प्रमाण ॥ ज० ॥ १ ॥ वडना कुसुम तणी परें रे हां, एतो दोहिखो मनु अवतार ॥ ज० ॥ श्रार्थदेश पण दोहिखो रे हां, एतो दोहिखुं श्रावक कुख सार ॥ ज० ॥ श्रा श्रद्धा ते पण दोहिली रे हां, एतो दोहिलो ज्ञानसंयोग ॥ ज० ॥ दोहिली जिननी सेवना रे हां, एतो दोहिलो मननो योग ॥ ज० ॥ ३ ॥ ए सिव छर्कल पामवां रे हां, जिम रयणतणे हष्टांत ॥ ज० ॥ ते तुम पुण्यप्रजाव थी रे हां, एतो पाम्यो मनुज्ञव संत ॥ ज० ॥ ४॥ पामी चलदश तप त णो रे हां, एतो खप करो मननें प्रमोद ॥ ज० ॥ चौद नियम संजारजो रे हां, एतो खंदे को तिम चौद ॥ ज० ॥ थ ॥ चौद पूरवना ज्ञावधी रे हां, एतो चौदमे चढे ग्रणताण ॥ ज० ॥ श्रंतगढ केवली होने रे हां, एतो खेली जाणे ज्ञाव ॥ ज० ॥ इ॥ चौद जुवन ए लोकनां रे हां, एतो देली जाणे ज्ञाव ॥ ज० ॥ चौद रज्ज्वातमक जिदीने रे हां, एतो शिव सुख ते निल्य पाव ॥ ज० ॥ श ॥ चौद खाल मनु योनिना रे हां, एतो त्रवीचें छःखधी जीव ॥ ज० ॥ इम जाणी चलदश श्रादरो रे हां, एतो दिल किर जाव श्रतीव ॥ ज० ॥ छ।। चलदशना ग्रण सांजली रे हां, धिरंगें सुविहित बुध ॥ ज० ॥ खिधिवज्य रंगें करी रे हां, एतो खिहें कि समृद्धि ॥ ज० ॥ ए॥ इति ॥

॥ अथ पूर्णिमानी सञ्चाय प्रारंज ॥

| सुडला संदेशो रे कहे माहरा पूज्यमें रे ॥ ए देशी ॥ पूनम कहे ज
व्य जीवने रे, सांजलो सज़रु वाणी रे ॥ अधिर तन धन आउखुं रे, जलबु
हुद परें जाण रे ॥ जावे हे जिवयण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥१॥ असार सं
तारने पेखीनें रे, धर्मशुं धरो प्रतिवंध रे ॥ वांधव स्थण ए जाणजो रे,
स्वार्ध जूत संवंध रे ॥ जा० ॥ १॥ सकल कुटुंबने पोषवा रे, जे नर करेय
ते पाप रे ॥ तेह तणां रे फल दोहिलां रे, सहेशे ते एकलो आप रे ॥
जा० ॥ ३ ॥ जिम मृग तृष्णानें कारणें रे, जमतो रणमां धाय रे ॥ जमे
पत्रे ए जीवडो रे, जव जव जुःखीयो थाय रे ॥ जा० ॥ ४॥ ए धन घरणी
ए धामने रे, कांइ न ले गयो साथ रे ॥ जिहां जक्ष्में जीव जपनो रे,
तिहां सहि होये तेहनें हाथ रे ॥ जा० ॥ ४॥ इम जाणीनें धर्म कीजी
वें रे, टाली ते विषय विकार रे ॥ दिन दिन दोलत अजिनवी रे, पामि
वें हर्प अपार रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ पूरण जीवितव्य पामीनें रे, आदरो पूरण
धर्म रे ॥ पूरण शांत स्वजावथी रे, पूरण हेदो ए कर्म रे ॥ जा० ॥ ९ ॥
पूरण जन्म जराथकी रे, पूरण हटीवें छःख रे ॥ पूरण खीला पामीवें रे,

पूरण सुर नर सुख रे ॥ जा० ॥ छ ॥ पूरण पन्नर सिक्रना रे, जाणियें पूरे ण जेद रे ॥ पूरण पन्नर योगना रे, ते पण जावनिर्वेद रे ॥ जा० ॥ ए ॥ पन्नर जातिनां जांखियां रे, परमाधामी जोर रे ॥ ते पण छःखयकी हूटी यें रे, टाखी ते कर्म व्यवोर रे ॥ जा० ॥ १० ॥ पन्नर कर्म व्र्मि ठेखली रे, ठंमों कषाय ते शोख रे ॥ जवियण दिन दिन पामीयें रे, संपदा पुण्यरंग रोख रे ॥ जा०॥११॥ जिम शशी शोखकला सही रे, जांखे जिनवर वाच रे ॥ तिम ए धर्मकला शशी रे, पामीयें जगतमां साच रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ पूरणमासी ए जाणीने रे, जे सही करशे ए पुण्य रे ॥ विजयलिध ते पामशे रे, दिन दिन निज सुखतन्न रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ व्याठम चठदश पूर्णिमा रे, श्रंग छपांगें श्रिषकार रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ व्याठम चठदश पूर्णिमा रे, श्रंग छपांगें श्रिषकार रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ व्याठम चठदश पूर्णिमा रे, श्रंग छपांगें श्रिषकार रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ ते सिव जाणो व्यवहारथी रे, धर्म छयम छपदेश रे ॥ निश्रयमार्गें श्रप्रमादी जे होवे रे, ते पाले पन्नर तिश्र विशेष रे ॥ जा०॥१५॥ एम जाणीने जि जावियें रे, प्रव्य ने जावशी धर्म रे॥ सघली तिथि श्राराधतां रे, लिब्ध कहे सदा सुख शर्म रे॥ जा०॥१६॥

॥ अथ श्रीकानिमलजीकृत सतासतीनी सञ्चाय प्रारंजः॥
॥ सुप्रजात नित्य वंदियें, जरतवाहु वली यंजा रे ॥ अजय कुमार ने ढंढणो, सिरिज ने कयवन्नो रे ॥सुणाशा अणिकापुत्र ने अयमत्तो, नागदत्त सृक्षिज्ञहो रे ॥ वयरस्वामी नंदिखेण जी, धन्नो ने सित्तज्ञहो रे ॥सुणाशा सिंहिगिरि किर्त्ति सुकोसलो, करंकंकू पुंकरीको रे ॥ सुणाश ॥ गयसुकुमाल जंबु प्रज्ञ, केशी अवंती सुकुमालो रे ॥ दशारण जद्र जस जद्रजी, इलाती चिलाती पुत्र सालो रे ॥ सुणा ४॥ बाहु जदाइ मनक मुनि, आर्यरिक्त आर्यगिरीशो रे ॥ आर्यसुहस्ती अजव वली, संब प्रसुम्न मुनीशो रे ॥सुण ॥ ॥ मूलदेव कालिक सूरि, विष्णुकुमार श्रेयांसो रे ॥ आर्दिक दृढ प्रहार वली, कूरगडु मेह मुनीशो रे ॥ सुण ॥ ६ ॥ सयंजव प्रसन्नचंद्र जी, महासाल वंकचूलो रे ॥ एह सता नाम लीजियं, जिम होय सुंदर कुलो रे ॥ सुण ॥ ॥ मुलसा चंदनबालिका, मणोरमा मयणरेहा रे ॥ कुंती न मेदासुंदरी, ब्राह्मी सुंदरी गुणगेहा रे ॥ सुण ॥ । ।। दमयंती सती रेवती, शिवा जयंती नंदा रे ॥ देवकी द्रौपदी धारिणी, श्रीदेवी सुज्ञा जहारे ॥ सुण ॥ ए॥ कृषदत्ता राजीमती, पद्मावती प्रज्ञवती कहीयें रे ॥ अंज

ना ने कलावती, पुष्फचूला मन खहीयें रे ॥ सुण ॥ १०॥ गौरी गांधारी लखमणा, जंबुवती सत्यज्ञामा रे ॥ पद्मा सुसीमा रुकमिणी, ए अड हरि नी रामा रे ॥ सुण ॥ ११ ॥ ज्येष्टा सुज्येष्टा मृगावती, चिलणा पद्मा प्रज्ञा राणी रे ॥ वहेनी सात यूलिजड़नी, बुद्धि महाग्रण खाणी रे ॥ सुण ॥ १२ आक् कहा जक्षदिन्ना वली, जूया ने सुयदिन्ना रे ॥ सेणा वेणा रेणा कही, ए शक्मालनी कन्ना रे ॥ सुण ॥ १३ ॥ इत्यादिक जे महा सती, त्रिज्जवनमां हि विराजे रे ॥ आज लगें पण जेहनो, जस पडह जग गाजे रे ॥ सुण ॥ १४ ॥ शिलवती सुरसंदरी, कौशल्या ने सुमित्रा रे ॥ देवदत्तादिक जाणीयें, सिव जिनजननी पित्रा रे ॥ सुण। १५॥ इरित जपड़व जपशमे, होवे मंग लमाला रे ॥ झानविमलगुण संपदा, पामीजे सुविशाला रे ॥ सुण। १६॥ इति

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजीकृत रात्रिजोजननी सद्याय लिख्यते ॥ ॥ शारद बुध दायी ॥ ए देशी ॥ढाल ॥ श्रीगुरुपद प्रणमी, छाणी प्रेम् छ पार ॥ ठट्टं वत जाणो, निशिजोजन परिहार॥त्याराधी पामो, सुरसुख शिव सुख सार॥ इह जवें विख परचर्ने, जेम खहीयें जयकार॥१॥ त्रुटक ॥ जय जयकार होवे जगमांहे, निशिजोजन परिहरतां॥ पातक पौढां पहनां जां ख्यां, रयणीत्रोजन करतां ॥ वहुविध जीव विराधन हेतें, एइ अजदय त्रणीजें ॥ प्रत्यक् दोष कह्या आगममां, त्रिव ते हृदय धरीजें ॥१॥ढाल ॥ मतिनें हणे कीडी,वमन करावे माखी।।ख़ूताथी कोढी,जलोदरी जू जांखी॥ गलू वींधे कांटो, वाले होय खरजंग ॥ सडे पेट थिरोले, विंठीयें तालू अंग ॥३॥ हुण। श्रंग उपांगे होय वली ही हो। जो श्रावी विष जात ॥ दृष्टि दोष इह्लोके जाणो, परनवें नरके पात ॥ दोय घडी परनाते सांके, टाली करो आहार ॥ नोकारसीतणुं फल पासो, संज्ञालो चोविहार ॥४॥ ढाल ॥ देव पूजा आहुती दान, श्राद्ध स्नान नि सूजे॥रात्रें खाधायी, निश्चें नरकें सूंजे॥ धान्य आचमन करंतां, पवित्र होये निव तेह॥निशिज्ञोजन करतां, लहे अ वतारज एह ॥ ए। । । एह अवतार ज घूक मांजारी, काक ग्रधह अहि विंठी।।वडवागुल सिंचाण घरोली, इत्यादिक गति नीची।। इंस मोर पिक शुक ने सारस, उत्तम पंखी जेह॥रातें चण न करे तो सानव, किस खाये , अन्न तेह्।।६॥ ढाल।। इम जाणी ढंको, निशिजोजन जवि प्राणी ॥ ए आग समांहे, वेद पुराणनी वाणी ॥ दिनकर आश्रमते, पाणी रुधिर समान ॥

श्रक्त मांस वरावरी, कहे मार्कंक पुराण ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ जाण होये ते वसी इम जाणे, अस्त थाये जव सूर ॥ हृदय नाजिकमख संकुचाणे, किम हो ये सुखपूर ॥ यजुर्वेदमांहें इम जांख्युं, मासे पक्त उपवास ॥ स्कंद पुराण दिवस जम्यानुं, सात तीर्थ फल खास ॥ ए ॥ राम जाणे हिर जिंगे ॥ ए देशी ॥ परशासन मांहि कह्युं, रयणी जोजन पाप रे ॥ दोष घणा हे रे ते हमां, एम जांखे हरि छाप रे ॥ वेद पुराणनी छाप रे, पांमव पूछे जवाप रे, एतो पापनो व्याप रे ॥ ए॥ रयाधी जोजन परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ ज व उन्नुं खगे पारधी, जे तुं पाप करेइ रे ॥ ते एक सरोवर शोषता, ते एक सो जब जोय रे॥ एक दव दीधे ते होय रे, एह सम पाप न कोय रे॥ रयाणी ॥१०॥ एकसो आठ जव दवतणा, एक कुवाणिज्य की घरे॥ एक शो चुमालिश ते नवें, कूडुं आल एक दीध रे॥ रयणी०॥ ११॥ आल ए कावन सो जवे, एक परनारीनुं पाप रे॥ एकसो नवाणुं जव तेहवे, एक निशि जवे पाप रे, तेह्थी अधिक संताप रे ॥ रयण ॥ १२ ॥ तेमाटे निव कीजीयें, जिम खहीयें सुखसार रे ॥ रयणीजोजन सेवतो, नरजवे पशु अवतार रे॥ चार नरकतणां वार रे, प्रथम ते ए निरधार रे॥ रय०॥१३॥ ते उपर त्रप्य मित्रनो, जांख्यो एक दृष्टांत रे ॥ पडिक्रमणां सूत्र वृत्तिमां, ते सुणजो सवि संत रे ॥ जिम जांगे तुह्य च्रांति रे, शिवसुंदरी केरा कंत रे, जिस थार्ड जिव गुणवंत रे ॥ रयः ॥ १४ ॥ आज न हेजो रे दीसे ना हलो ॥ ए देशी ॥ एक कुलगामें मित्र त्रय वसे, मांहो मांहे नेह ॥ आ वक जड़क ने मिथ्यामति, आप आप गुणगेह ॥ १५ ॥ जिव निशिनो जन विरमण व्रत धरो ॥ ए त्र्यांकणी ॥ जैन त्र्याचारज एकदिन त्र्याविया, वंदी निसुणे वाणी ॥ श्रावककुलधी रे जावधकी यहे, अजद्य सकल पत्र रकाण ॥ जि ॥ १६ ॥ जडक निशिजोजन विरमण करे, सहैजे आणी नेइ ॥ मिथ्यामति ते नाव प्रतिबूकीयो, कूड कदाग्रह गेह ॥ जण ॥ १९॥ श्रावक जड़क संगतिथी थयो, संकल कुडुंच वतवंत॥ एकदिन राजनियो गतणे वशें, जिम न शक्या गुणवंत ॥ जिण ॥ १७ ॥ संध्यासमये ते घर आविया, बेहुने कहे परिवार ॥ जडक निश्चलजावे निव जम्यो, श्रावके कीधो छाहार ॥ तण ॥ १ए॥ यूकापातें जलोदर तस ययुं, वतनंग ग्रण पात ॥ व्याधि पीड्यो मरीने ते ययो, कुर मांजारनी जाति ॥ ज० ॥१०॥ श्वाने खांधो प्रथम नरके गयो, यहतो नरके डु:ख् ॥ जडक नियम्तणा प्रजावथी, सौधर्मे सुरसुख ॥ जणा ११ ॥ मिथ्यात्वीनुं पण निशिजोजन यकी, विषमिश्रित ययुं अन्न ॥ अंग सडी मरी मांजार थीयो, प्रथम नर कें चरपन्न ॥ नवं ॥ ११ ॥ श्रावक जीव चवीने च्यनुकंमें, थयो निर्कन दि जपुत्र ॥ श्रीपुंजनामें तस लघु वंधवो, मिथ्यात्वी थयो तत्र ॥ तर्व ॥ १३॥ श्रीधरनामें वेंहु महोटा थया, चाले कुल आचार ॥ जंडक सुर तव जीवे क्चानशुं, प्रतिबोध्या तिणिवार ॥ जा ॥ ५४ ॥ जातिसमरण पाम्या वेहु जण, नियम धरे दृढचित्तं॥ रयणीजोजन न करे सर्वथा, कुढुंब धरे ऋर्यी त ॥ त्रण ॥ १५ ॥ ढाख ॥ श्रेणिक मन श्रंचरिज खयुं ॥ ए देशी ॥ जोजन नापे तेहने, पिता माता करे रीषो रे॥ त्रख उपवास यया तिस्यें, जोयो नि यम जगीशो रे ॥ २६ ॥ एक मतां व्रत आदरो ॥ ए आंकणी ॥ जिम हो ये सुर रखवाला रे ॥ जुषमन जुष्ट हुरें टले, होये मंगलमाला रे ॥ ए० ॥ २७॥ जडकसुर सान्निधि करे, करवा प्रगट प्रजावे रे॥ अकस्मात् नृप पेटमां, शूलव्यथा उपजावे रे ॥ ए० ॥ श्वा विफल थया सवि ज्योतिषी, मंत्री प्रमुखनें चिंता रे ॥ हाहारव पुरमां थयो, मंत्रवादी नाग दमता रे ॥ ए० ॥ रूपा सुरवाणी तहवे समे, यह गगनें घनगाजी रे ॥ निशिनोजन व्रतनो धणी, श्रीपुंज द्विज दिननोजी रे ॥ ए० ॥ ३०॥ तस कर फरस यकी होवे, जूपति नीरुज अंगें रे ॥ पडह वजावी नयरमां, तेडाव्यो धरी रंगे रे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ जूपति निरोगी थयो, पंच सय गाम तस दीधां रे॥ ते महिमाथी वहु जणे, निशिजोजन व्रत खीधां रे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ श्रीपुंज श्रीधर श्रवंक्रमें, सौधर्मे यया देवा रे॥ राजादिक प्रतिबृक्तिया, धर्म करे सयमेवा रे ॥ ए० ॥ ३३ ॥ नरजव ते त्रण पामिया, पाली संयम सूधा रे ॥ शिवसुंदरीने ते वस्वा, थया जगत प्रसिद्धा रे ॥ ए० ।। ३४ ॥ एम जाणी जवि प्राणीया, निशिजोजन वत कीजें रे ॥ श्रीकानविमलगुरु ना मथी, सुजस सोजाग बहीजें रे ॥ ए० ॥ ३५ ॥ इति ॥

॥ श्रथ श्रीज्ञानविमलजीकृत हितशिकानी सचाय प्रारंजः॥

॥ एम धन्नो धरणीने परिचावे ॥ ए देशी॥ आपें आप सदा समजावे, मनमां द्वाःख मत पावे रे ॥कोइ किसीके काम न आवे, आप कियां फल पावे रे ॥ १ ॥ आपें आप सदाव ॥ जिम पंखी तरुयें मली आवे, रयणी वीते जावे रे ॥ जिम तीरथ मेखी सिव संघो, किर किर निज घर जावे रे ॥ आण ॥ १ ॥ आपथकी कर्तव्य थयां जे, जोगवे तेह एकी छो रे ॥ मा हरुं माहरुं करतो अहोनिश, मृहपणे होय घेलो रे ॥ आण ॥ ३ ॥ स्थिर निहं ए संसारी प्राणी, तन धन यौवन वान रे ॥ जिम संध्यानां वादलनो रंग, जेम चंचल गजकान रे ॥ आण ॥ १ ॥ एम जाणीने धर्म आराधो, आपे आप सबाहो रे ॥ झानविमल प्रजुनें चित्त ध्यार्ट, जिम शिवसुक ने पार्ट रे ॥ ध्याण ॥ ६ ॥ ६ शिवसुक ने पार्ट रे ॥ ध्याण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्रय श्री ज्ञानविमलजीकृत कायारूपकामिनीनो जीवरूपस्वामीने जपदेशनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ देशी रसीयानी ॥ सुगुण सोजागी हो साहिब माहरा, सुण मुक आ तम राम वाब्हेसर ॥ काया कामिनी कंच प्रत्यें कहे, प्रीतम तुं अति राम सोजागी ॥ सुण ॥ १॥ रयण अमूलक में तुं संप्रद्यो, मत हुर्ग का च समान चतुर नर ॥ धुर बेहडा खगें तेहनें चाहतां, निपट खराखरी काम पन्होता ॥ सुण ॥ २ ॥ पूरव पुर्खें हुं तु जने मेखी, जत्तमकुलनी ए काय रंगीला ॥ अवसर मलिया लाहो लीजीयें, क्षण लाखीणो रे जाय ववीला ॥ सु॰ ।।३॥ कामिनी कंततणो संबंध करी, पण निव विसरे हेज हिल मली।। हुं सोहागण सोहिव तुक उते, एम केम सरशे प्रीत हेज सांजल ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ कुमति कुचिंता प्रसुख कुरूप त्रिया, तेनी साथें वि लसे रे नेइ खगाय ॥ निज घर ठंकी परघर जावतां, कोय न कहरो रे कंत जलाय ।।सुवा। ।। तेह कुघरणी संगमधी कदा, विषय कवाया रे अंगज हो शे॥ तबहु दुःखदायक स्रति वांकडां, महेणां देश्ने सयण वगोशे॥ सुं ॥६॥ वणज करेवा शेठे धन दियो, कुमति कुघरणी रे ते सवि मूसे॥ चो खे खेखें कहो किम पोहोंचशो, स्वामी धर्म कहो किएपरें रहेशे॥सु०॥ उ॥ पाखे प्रीति सदा परणी त्रिया, पण परतरुणी रे प्रीति न पाले ॥ हमणां मद वाह्या नथी जाणता, निरति पडशे रे मोह सम गाले ॥ सुण ॥ ए॥ कुलंबती कामिनी मुफ समी, फिर नित्र मलशे रे चित्त अव धारो ॥ पडढाया सुख त्यां खगें सांजले, जब लगें लागे ताप निरालो ॥ सु०॥ ए॥ सयण मलीने डुर्जन जब मिले, तब ते सांबरे सयण सुग्र णनर ॥ कपट कुघरणी केरां जाणशो, तव चित्त धरशो रे वयण चतुर नर

। सुण। १०। भुज वहपण यये तुह्य रसीया होशो, श्यो रस माणशो त्यांय रंगीला ॥ ए जलाणो मसशे लोकमो, उंट बलद तणो न्याय ॥ सुण। ११ ॥ हमणां सरस्वी जोढी विहुं तणी, नवयोवन रस जूरि सलूणा ॥ अविचल प्रीति करो प्रीतम तुह्यों, होंश हैया तणी पूर सनेहा ॥ सुण। १२।। प्रसन्न यह में मुजशुं विलसतां, होशे सुत सुविवेक सलूणो ॥ वहपणे सुखदायी तुह्याने होशे, धरशे जनकशुं नेक विष्टूणो ॥ सुण। १३॥ सुप्रतिष्ठ प्रीतमनें जे जांख खं, तेह अघटतुं रे सुकुल वहूनें।। शोक्यवेध होथे अतिहि आकरा, वांश सुखनी रे होये सहूने॥ सुण। १४।। सुमति साहेली माहरी अति प्रली, ते पण प्रीतम जोग तुमारे ॥ सहज सलूणा साहिव सेवतां, अविचल सुलसंयोग वधारे ॥ सुण। १५॥ एम घरवटशुं प्रीतम प्रीठवी, अतिह अनोपम प्रेम लगाड्यो ॥ सुकृत सुकामण करिनें वस कियो, जगजसवाद शुं तेम जगाड्यो सुण। १६॥तप जप किरिया समिकत सुखडी, विलसे कामिनी कंत सदाये ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, उत्तम संगति सुजस प्रलाये ॥ सुण। १९॥। अथ श्रीमान विजयजीकृत श्रावकना वार वतनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइ ॥ श्री जिनवीर वदे शुज वाण, श्रावक साधु धर्म श्रहिनाण ॥ देशविरति श्रावकनो धर्म, श्रादरो जिवजन समजी सम ॥ १ ॥ समकित मूल श्रणुत्रत पंच, त्रण ग्रण वतनो हे परपंच ॥ चह शिका वत ए वत वार, प्रथम कहुं समिकत विस्तार ॥ १ ॥ दोष श्रहार रहित श्रिरहंत, देव खरो ग्रह साधु महंत ॥ पंच महावत धारी जेह, धर्म जिनेश्वर जापित तेह ॥ ३ ॥ पंचषो प्रथम मिथ्यात्व हमेद, लो किकने लोकोत्तर जेद ॥ देव श्रने ग्रह्मत ए दोय, एकेके जोडे चल होय ॥ ४ ॥ ए चल्जेय होय इत्यश्री, विवरीनें हंनो शुजमति ॥ हिर हर ब्रह्मादिक जे देव, मुक्तिदायक जिल न कहं सेव ॥ ४ ॥ परतीर्थ पाखंकी जेह, ग्रह्मुक्टें वंटूं निहं तेह ॥ पात्रबुक्टें पोषुं निहं कदा, श्रमुकंपादिकें देवुं सदा ॥ ६ ॥ वंटूं निहं जिनजव फल तिह्न, जिनप्रतिमा परतिहि हह ॥ पासहादिक जे श्रिगयह, जावे न नमुं न कहं सह ॥ ९ ॥ केत्र य की श्राहिं ने परदेश, न कहं मिथ्यामतनो लेश ॥ जावजीव थिरता का लथी, श्रातमशक्ति लगें जावथी ॥ ह ॥ नृपगण वल सुर श्रिज्ञिंगण, ग्रहिनगह वित्ती कंतारेण ॥ हिंकी विण न कहं मिह, चार श्रागार

प्रत्ये पण इह ॥ ए॥ समकित आदरीय इण रीति, अतिचार पण टाजी नीति॥ उन्नतिकी जिन शासनें, चढते उत्साहें निजमने ॥ १०॥ वि भिशुं देव अने गुरु वंदि, नित्य पर्चरकाण करी आनंदि ॥ सात केन्नें धन वावियें, पण परमेष्ठि सदा ध्याइयें ॥ ११॥ संघविनय की जें जिक्तिशुं, न हिंतो समकित हीये किश्युं ॥ पंचशुद्धि विधिशुं ज्विजना, वत आदरी ये श्रहशुजमना ॥ ११॥

॥ ढाल बीजी गराग परजीयो ॥ स्यूल प्राणातिपात विरमण, प्रथम अणुर्वते कह्युं जिने ॥ निरंपराध क्रस जीव न हणुं, संकल्पी निरंपेकीने ॥ १३ ॥ अरो आवक विरति चविजन, त्रसनी अविरती ऊतरे ॥ अवि रति जवज्रमण होते, विरंतिकी जवजल तरे ॥ १४॥ असे श्रावक विर्ति त्रविजन ॥ ए व्यांकणी ॥ हणावुं पण नहीं त्रिकरणें, एम पहेलुं वत क ह्यं ॥ स्यूल मृषावाय विरमण, अणुवत बीजुं खेह्यं ॥ घ० ॥ १५॥ कन्यका गो स्नुमि अलिअं, बोधुं वोलावुं नही ॥ श्रापणमोसो साहि कू डी, इंविथ त्रिविधे पण नहीं ॥ ४० ॥ १६॥ हिसद चलपद सरवे जाणि, भूर तिग अलीयथी भा स्थूल अदत्तादान विरमण, त्रीजं वत धरो अवस्य थी।। घण।।१।।। पडी मूकी गई आवी, बस्तु लोही त्रिकरणें ॥ न करंत करावुं किवारे, चोर नाम लहे जिले ।। घण्।। रण्।। स्वदारासंतोष अ थवा, अन्यदारा वर्जना, स्थूलमैथुन विरित चोथुं, अणुवत धरो सजना ॥ घ० ॥१ए॥ योषिता तो दार शब्दे, पुरुष अर्थ घरी मने ॥ दिव्यमैथुन डुविध त्रिविधें, मनुष्यनुं इक विध तने ॥ धँ० ॥ २०॥ तिरियनुं इकविध त्रिकरणे, एम जांगे मन धरो॥ स्थूल परियहः त्रिरति पंचम, व्रते इष्टामि ति करो ॥ धणा ११ ॥ इहां नवविध परिप्रहती, करवी संख्या ते सही ॥ मान जपर छाधिक त्रिकरणें, रखावुं राखुं नही ॥ घ० ॥ ११ ॥ ढाल त्रीजी ॥ राग सारंग मल्हार ॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी॥ उठा दिग्विरमण वर्ते रे, दशदिशि की जें मान ॥ जावा मोकलवा तणुं रे, ति गकरणें सावधान ॥१३॥ जिव जन आदरीयें वत खंगें, जिम वरीयें शिव वधू रंगें जविजन, आदरीयें व्रत अंगें।। ए आंकणी।। सातमुंवत इविधा घरो रे, जोगोपजोग परिमाण ॥ जोजनथी ने कर्मथी रे, तज अजस्यादि क जाए ॥ जवि०॥ २४॥ जंबर पीपल पीपरडी रे, वड कल्लंब वर पंच॥

सुरा मांस माखण मधूरे, दिम विष करहा वंच ॥ ज्ञा ॥ ३८॥ ग्रात्रिज़ो जनमाटी सवे रे, श्रथाणं वहु बीजा। काचां गोरसशुं मह्युं रे, विदल वत्या क नहीज ॥ ज॰ ॥१६॥ जे तुह्रफल महुदादिकां रे, श्रजाण्यां फल फूल ॥ वर्णादिक जस विगडीयां रे, एह चलितरस शुल ॥ जण्॥ १९॥ वासी विदल पीली सापशी रे, जलमां रांध्युं अन्न ॥ कृथित अन्न फूद्युं सने रे, पकान्नादिक मन्न ॥ नण्॥ २०॥ मान पनर विश त्रिश दिना रे, क्तु वर्षा उष्ण शीत ॥ दिध दिन दोष गया पठी रे, ढंमो श्रावक रीति ॥नण ॥ १ए॥ अनंतकाय कूंपल सबे रे, कंद मूल सबि वारि ॥ लूणी ढाल थो हरि गलो रे, गिरिकब्री कुंछारि॥ ज०॥३०॥ वरियाली सत्तावली रे, नी सी मोथी हसदा। अमृतवेली सोहो लूणो रे, जूमिफोड़ा त्यज ज़रु॥ ना ॥ ३१ ॥ द्विदस श्रंकूरा श्रांवली रे, कवली सूत्र्यर वाल्या नीलों कल रो पढ़ांको रे, टंक वाथूलो वाल ॥ ज०॥ ३१ ॥ वंश करेलां आदिवा रे, वीजा ए पण जाण ॥ सेमजंग गूढ पर्व शिरा रे, विन्नरुह्नी अहिनाण ॥ जण्या ३३.॥ सचितादिक चलदनी रे, प्रतिदिननी करि संख्या जोगतुं अधिक तिज्ञकरणें रे, जावजीव निःशंक ॥ जण ॥ ३४ ॥ वंत्रिति तन्यें पण हुने रे, चउदमे नियम विस्तार ॥ अश्वनादिक आहारनी रे, कीजें विगति विस्तार ।। नवा। ३५॥ वीजा ए एण आरंजा रे, नियमीयें ए णें वत ।।। कर्मथी पन्नर . ठंकीयें रे, .कर्मादानह जित्।। जि ॥ ३६॥ ॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो ॥ कपूर होते छति ऊज्लो रे॥ ए देशी॥ अप्रियारंनें जे हुने रे, वृत्ति ते कर्म इंगाल ॥ वनस्पति वेदादिकें रे, वृत्ति वनकर्म कराल र जिनका, न करो कर्मादान ॥ पहनां फल कडवां निदा न रे ॥ जविकाण ॥ ३७ ॥ शकट कराववां वेचवां रे, साडीकर्म अति हीन ॥ जाडानी त्राजीविकारे, जाडीकर्म सखीन रे ॥ जण ॥ ३० ॥ जूमिविदा री हलादिके रे, जीवन फोमी कर्म ॥ त्रस छंग आगर वहोरवे रे, दंतवा णिज्य कुकर्म रे ॥ जण्या ३ए ॥ जिहां जीव अत्पत्ति तेहनो रे, वकरो वा णिक्क खाखा। मदिरादिकनुं वेचवुं रे, रसवाणिक्क म राख रे ॥जणाधणा जीवघात निमित्तनो रे, विकय विषयाणिक ॥ केशकृत गो दासादि रे, वेचवे केशवाणिका रे ा जिल्हा धर ॥ यंत्रविक्य यंत्र पीलवुं रे, यंत्र पीलन कर्म तेहा। निर्धं वन कर्म पशु तणां रे, अंग्वेदन वृत्ति जेह रे ॥

॥ जि ॥ अश। दवनुं दान तलावनुं रे, तह सर प्रहनुं शोष ॥ क्रूर कर्मका रीतणुं रे, पोषवुं असती पोष रे ॥ जि ॥ अ ॥ च विह अनर यदं म हेरे, प्रथम आरतिरूप ध्यान ॥ बीजो पाप उपदेशना रे, त्रीजो हिंसप्रदान रे । जि ॥ ४४ ॥ दाकिण विण अधिकरण ये रे, तुरिय प्रमादाचरण ॥ ए हथी विरति छहा त्रिकरणे रे, आठमे व्रत आचरणे रे ॥ जि ॥ ४५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ जोलीडा इंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥ आ रति रौद्र निवारी जेणे तज्युं, छुगविध अठविहें सावद्य ॥ घटिका छुग खगें समता तस नवमुं, सामायिक वत सदा॥ ४६॥ परिएत जन सुणों सकुरु देशना ॥ ए आंकणी ॥ जिम खहो मग्ग जमग्ग ॥ शुद्ध प्ररूपक प्टर्धन किं खुगें, तस चरणें जे खग्ग ॥ तस पासें वत मग्ग ॥ ४७ ॥ ॥ परिणतः ॥ ढंभे दिशि परिमाण यहां तेहनुं, जे संदेप सरूप ॥ देशाव काशिक वत दशमुं छहवा, सवि वत संदेग रूप ॥ ४० ॥ परिणत जन ।। अन्य आरंझ डुविध त्रिविधें तजो, मुहूर्त्तादि प्रमाण ॥प्रतिदिन चजद नियम विहाणे धरो, संवरो सांक सुजाणे॥ परि०॥ ४ए ॥ स्राव स्यक पर्व दिवसे छादरो, व्रत पोषध उपवास ॥ छाहार तनुसत्कार छ ब्रह्म तथा, सावचनो त्याग खास ॥ प०॥ ५०॥ सो चउविह जुग्बिह तिविहें करो, दिन अहोर तिसें सरित ॥ देशयी सर्वथी आहार पोषध धरो, सर्वथी तिगर्से सचित्त ॥प०॥धरा। नवम एकादश छुग व्रत आराधो, परिएमे अतिथि संविजाग॥ सजुरु साधुनें पडिलाजी, जमे श्रावक महा जाग ॥ प० ॥ ५१ ॥ गुरुविरहें दिशि व्यवस्रोकन करे, समरी जेणें प्रति बुद्ध ।। पडिखाच्यो विणं न जमे त्रिकरणें, पाले ए वत शुद्ध ॥ प०॥५३॥ एह विवक्तित जंगें वत कह्यां, स्यूखनयें धरो मन्न॥ जगवई छंगें रे विव री जांखियां, ज्ञामार्ये गुणवन्न ॥ प० ॥५४॥ इम श्रावकवत आदरो जवि जना, पास्नो तजी अतिचार॥ आणंदादिक परें सद्गति बहो, पंचम गति एणि सार॥पण।। एथा। मोक्तमारग एहवो तो वीर जिने, कह्यो करीय संसार॥ शांतिविजय बुध विनयी विनयशुं, मान कहे हितकार ॥ पणापदे॥ इति॥

॥ अध श्री हतवीजयजीकृत छढार नातरांनी सद्याय प्रारंतः॥
॥ पेहेखांने समरुं पास पंचालरो रे, समरी सरसती माय॥ निज गुरु
केरा रे चरण नमी करी रे, रचगुं रंगें सफाय॥ १॥ जवि तुमे जोजो रे

संसार नातरां रे ॥ श्रांकणी ॥ एकजने हुश्यां श्रदार, एह्युं जाणीने दूरें निवारजो रे, जिम पामो सुख अपार ॥ त्रण॥ १ ॥ नगरमां मोद्धं रे मथुरा जाणियें, तिहां वसे गणिका एक ॥ क्वबेरसेना रे नाम वे तेहतुं रे, विससे सुखं श्रनेक ॥ तण ॥ ३ ॥ एकदिन रमतां परशुं प्रेममां रे, जदरे रह्यं र्रथान ॥ पूरणमासें प्रसब्यं जोडखं रे, एक वेटो वेटी सुजाण ॥ ज़ा ॥ ४॥ वेश्या विमासे आपणने घरे रे, कुण जाख़वशे ए बाख ॥ कुण कुण जोवां धोवां ने धवराववां रे, कुण करे स्नार संजाखा। जा ॥ १५॥ एइवुं विमासी रे पेटीमां सहरे, घाड्यां वासक दोय ॥ मांहे ते मेसी नामां कित मुद्भिका रे, नदीमां चलावे सोय ॥ जण ॥ ६॥ जमुनामां वहेती रे ष्ट्रावी शौरीपुरें रे, वाणुं ते वाह्यं तेवार ॥ तव तिहां खादया रे दोय व्य हारीया रे, नदी कांवे हर्ष अपार ॥ ज़ ॥ ।। इरथी दीवी रे पेटी आ वत्ती रे, हैडे विमासे दोय ॥ एहमां जे होशे रे ते आपण बिहु रे, वहेंची खेशुं सोय ॥ ज० ॥ जा बोखवंध कीधा दीय व्यवहारीये रे, काढी पेटी ते वार ॥ पेटी जपाडी रे ढानी सोडमां रे, खेइ आव्या नगर मजार ॥ जणा ए॥ पेटी जघाडी रे निहासतां रे, दीठां वासक दोय ॥ मनमां विचारे रे दोय व्यवहारीया रे, शुं जाणे पुर कोय ॥ त्रण ॥ १० ॥ जेने सुत निहं इ तो तेणें वेटो लियो रे, बीजे बेठी हो खीध ॥ मुझिकामें कें रे नाम कुवेर दत्त दियो रे, कुवेरदत्ता वली दीध ॥ ता ॥ ११॥ अनुक्रमें वाध्यां रे दोय जां गुण्यां रे, पाम्यां जोवन सार ॥ महाता त्वात जोईने परणावियां रे, विखसे सुख अपार ॥ न ॥ ११ ॥

॥ ढाल वीली ॥ एकदिन वेठा मालीयें रे खाल, मर नारी मली रंग रे॥ रंगीखा कंत ॥ श्रावोने पियुडा श्रापण खेखियें रे॥ करंढुं घणी मनोहार रें ॥रं॥व्याव॥१॥ ए व्यांकणी ॥ हास्य विनोद करे घणां रेखाल, माने निज धन्य अवदात रे ॥ रं० ॥ सार पासे रमीयें सोगरे रे वाख, आणी मनमां उमंगरे ॥ रं० ॥ छा० ॥ १ ॥ रमतं रमे खुशीमां घणां रे खाल, दाव नाखे जरतार रे ॥ रंण ॥ दीठी नामांकित मुझिका रे खाँख, हियडे वि मासे नार रे ॥ रंण ॥ त्राण ॥ ३ ॥ बेहु रूपें बेहु सारिखां रे खाल, सरखां वींटीमां नाम रे ॥ रंणां नारी विचार चित्तमां रे खाख, में ए की ध श्रकाम रे ॥ रं ॥ श्रा ॥ ४ ॥ रमत मेखी पीयरमां गई रे खाल,

पूछे मातने वात रे "Il रंग II मात कहे हुं जाणुं नहीं रे साल, जिलो ताहरो तात रे ॥ रंण॥ आण्॥ या तात कहे सुणजो सुता रे साल. सं केपे सघली वात रे॥ रंगी पेटीमांहेची वहेंचीयां रे खाले, बालक होंच विख्यात रे ॥ रंगा आणा६॥ कुबरदत्ता मन चितवे रे लाल, में की धी अप राध रे ॥ रं ॥ जीइ वर्यों ने जाइ जोगव्यों रे लॉल, ए सिब कर्मनी वात रे ॥ रं ॥ आ ।। एम चिंतवीने संयम लीयो रे लाल, पाले पंत्री चार रे ॥ रं ॥ समिति ग्रितनो खंप करे रे लालं, विकाय रक्ता सार रे ॥ रंण ॥ खार्ण ॥ ए ॥ कुबेरदत्तं मन चिंतवे रे लाल, ए नगर माहे न रहेवांय रे ॥ रेंण ॥ बेन वरीने बेन जोगवी रे खाख, घर घर ए कहेवाय रे ॥ रंज ॥ आण ॥ ए ॥ कुबेरदेत्त तिहाँची चालियों रे लाल, आव्यो मधुरा माय रे ॥ रं० ॥ वेश्यामंदिर आवीयो रे लाल, करे वेश्याद्युं अन्याय रे ॥रं० ॥ आण ॥ १ण ॥ कुबेरदत्त निज मातशुं रे लाख, सुख विलसे दिन रात रे ॥ रं ॥ एम करतां सुत जनमीयो रे खाल, ए सवि कर्मनी वात रे ॥ रंग ॥ त्या ॥ ११ ॥ तप जप संयम साधतां रे लाल, पालतां किरि या सार रे ॥ रंण्या ज्ञान अविध तिहां ऊपन्युं रे लाल, दिये तिहां क्वांनविचार रे ॥ रंग ॥ व्याव ॥ ११ ॥ व्यवधिकानें साधवी रे खाल, दी वो मथुरा मकार रे ॥ रं० ॥ निजजननी सुख विलसतो रे लाल, धिक धिक तस अवतार रे ॥ रंण ॥ आण ॥ १३॥ गुरुणीनें पूछी करी रे लाल, आवी मथुरा जाम रे ॥ रंग ॥ वेश्यामंदिर जइ उत्तरी रे खांल, करवा धर्मनुं काम रे॥ रं०॥ छा०॥ १४॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ इण अवसर नानो बाह्युडो रे कांइ, पाले पोढ़्यों जेह ॥ गाउं हालरुआं ॥ हीलो हीलो कही हुलरावती रे कांइ, साधवी चतुर सुजाण ॥ गा० ॥ र ॥ सगपण वे ताहरे माहरे कांइ, सांजल साची वात ॥ सुण तुं बाह्युडा ॥ काको जत्रीजो पोतरो रे कांइ, दिकरो देवर जेठ ॥ सु० ॥ व ॥ सगपण वे ताहरे माहरे कांइ, खट बीजां कहुं तेह ॥ सु० ॥ बंधव पिता वडवो रे कांइ, ससरो सुत जरतार ॥ सु०॥ ३ ॥ सगपण वे ताहरे महारे कांइ, खट त्रीजां कहु तेह ॥ सुण तुं माताजी ॥ पण वे ताहरे महारे कांइ, खट त्रीजां कहु तेह ॥ सुण तुं माताजी ॥ माता कहुं सासू कहुं रे कांइ, वली कहुं शोक्य जीजाइ ॥ सुण ॥ सुण ॥ ए ॥ सुण ॥ ए

ह संबंध सिव सांजली रे कांइ, घरमांथी आव्यां दोय ॥ सुण तुं श्रम णी जी ॥५॥ अवतां आल न दीजीयें रे कांइ, तुम मारग निहं एह ॥सुण श्रमणी कहे सुणो दोय जणां रे कांइ, खोटुं निहंय लगार ॥ सु० ॥ ६ ॥ पेटीमां घाली मूकियां रे कांइ, जमुनायें वहेती जोय ॥ तुमें सांजलजो॥ सौरीपुर नगर तिहां वली रे कांइ, पेटी काढी सोय ॥तुणाणा इम निसुणी ते दोय जणे रे कांइ, संयम लीधो तेणि वार॥तुभेंणा संयम लेइ तप आद री रे कांइ, देवलोकें पहोतां तेणिगार रे ॥ मन रंगीला ॥ णा तपथी सिव सुख संपजे रे कांइ, तपथी पामे ज्ञान रे ॥मणातपथी केवल ऊपजे रे कांइ, तप महोटुं वरदान रे ॥ मण॥ ए ॥ तपगद्यति ग्रण गावतां रे कांइ, क्रिक वृद्धि घर थाय ॥मणा पंकित दानिवजय तणो रे कांइ, हेतिवजय ग्रण गाय ॥ मण॥ १० ॥ इति अढारनात्रानी सञ्चाय संपूर्ण ॥

॥ त्रत्र प्रथमाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥
॥ तत्र प्रथमाध्ययन सञ्चाय प्रारंज्यते॥

॥ सुयीव नयर सोहामणुं जी ॥ ए देशी ॥ श्रीग्रहपदपंकज नमी जी, विल धरी धर्मनी बुद्धि ॥ साधुक्रिया ग्रण जांखग्रुं जी, करवा समिकत ग्रुद्धि ॥ मुनीश्वर, धर्म सयल सुलकार ॥ तुम्हें पालो निरितचार ॥ मुनीश्वर, धर्म सयल सुलकार ॥ र ॥ ए श्रांकणी ॥ जीवदया संयम तणो जी, धर्म ए मंगलरूप ॥ जेहना मनमां नित्य वसे जी, तस नमे सुर नर जूप ॥ मु० ॥ घ०॥ १ ॥ न करे कुसुमिकलामणा जी, विचरतो जिम तरुंद्द ॥ संतोपे विल श्रातमा जी, मधुकर यहि मकरंद ॥ मु० ॥ घ०॥ ३ ॥ तेणि परें मुनि घर घर जमी जी, लेतो ग्रुद्ध श्राह्मर ॥ न करे वाधा कोइने जी, दिये पिंमने श्राधार॥ मु०॥ ध०॥ ॥ एहिले दशवैकालिके जी, श्रध्ययने श्राह्मर ॥ न स्वाध्ययन सञ्चाय प्रारंत्रः

॥ शील सुहामणुं पालीयें ॥ ए देशी ॥ नमवा नेमी जिणंदनें, राजुल रूडी नार रे ॥ शीलसुरंगी संचरे, गोरी गढिगरनार रे ॥ १ ॥ शील सुहाम णी मन धरो ॥ ए श्रांकणी ॥ तुमें निरुपम निर्धंथ रे ॥ सिव श्रिजलाष तज़ी करी, पालो संयमपंथ रे ॥ शी०॥ १ ॥ पाजस जीनी पिझनी, गइ ते गुफा मांहि तेम रे ॥ चतुरा चीर निचोवती, दीठी इषि रहनेम रे ॥ शी०॥ २॥

चित्त चले चारित्रियो,वयण वदे तव एम रे॥ सुख जोगवीय सुंदरी, आप णे पूरण प्रेम रे ॥ शीणाधा तव रायजादी एम जणे, जूंना एम शुं जाखेरे ॥ वयणविरुद्ध ए बोलतां, कांइ कुललाज न राखे रे ॥ शी० ॥५॥ हुं पुत्री जमसेननी, अने तुं यादवकुलजायो रे॥ ए निर्मल कुल आपणां, तो केम अकारज थायो रे ॥ शी ॥ ६ ॥ चित्त चलावी एणिपरें, निरखीश जो तुं नारी रे ॥ तो पवनाइत तरुपरें, घाइश छाथिर निरधारी रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ जोग जला जे परहस्या, ते वली वांग्रे जेह रे ॥ वमनजक्ती कूतर समो, कहीयें कुकर्सी तेह रे ॥ शी० ॥ ए ॥ सरप अंधक कुलतणा, करे अग्नि प्रवेश रे ॥ पण विमियुं विष निव सीये, जुर्ज जातिविशेष रे ॥ शी०॥ ए ॥ तिम उत्तमकुल उपना, ठोडी जोगसंजोग रे ॥ फिर तेहने वांबे नहिं, हुवे जो प्राणवियोग रे ॥ शीण ॥ १०॥ चारित्र किम पाली शके, जो निव जाये छि जिलाष रे॥ सीदातो संकलपथी, पग पग इम जिन जांखेरे ॥ शीण ॥ ११ ॥ जो कण कंचन कामिनी, इन्नता अने जोगन ता रे ॥ त्यागी न किह्यें तेहनें जो, मनभें श्री जोगवता रे ॥ शीण॥ ११ ॥ जोग संयोग जला लहि, परहरे जेह निरीह रे ॥ त्यागी तेहज्जा खियो, तस पद नमुं निश दीह रे ॥ शी० ॥ १३॥ एम जपदेशने अंकुशें, मयगल परें सुनिराजो रे॥ संयम मारग स्थिर कस्बो, साखुं बंढित काजो रे ॥ शी० ॥ १४ ॥ ए बीजा अध्ययनमां, गुरुह्ति शीख पयासें रे ॥ लाज विजय कविरायना, वृद्धिविजय एम जासे रे ॥ शीए ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयाध्ययन सञ्चाय प्रारंतः ॥ ॥ पंच महावत पाखीयं ॥ ए देशी ॥ आधाकमी आहार न खीजियें, निशिजोजन निव करीयें ॥ राजिंक ने सद्यांतरनो, पिंक वली परहरियें के ॥१॥ मुनिवर ए मारग अनुसरियें ॥ जिम जवजलनिधि तरीयें॥मुनिष

|| ए०।। ए आंकणी || साहामी आखो आहार न लीजें, नित्य पिंग निव आदरीयें।। शी इन्ना एम पूछी आपे, तेह निव अंगीकरियें के ॥ मु०॥१॥ कंद मूल फल बीज प्रमुख वली, लवणादिक सचित ॥ वर्जें तिम वली

निव राखीजें, तेह सिन्निधि निमित्त के ॥ मुणा३॥ जवटणुं पीठी परहरि यें, स्नान कदा निव करीयें॥गंध विखेपन निव आचरियें, खंग कुसुम निव

धरियें के ॥ मुण ॥ ४॥ यहस्थनुं नाजन निव वावरियें, परहरियें वली

श्राजरण ॥ ठाया कारण ठत्र न धिरयें, धरे न जपानह चरण के ॥ मु०॥ १ ॥ दातण न करे दर्पण न धरे, देखे निव निज रूप ॥ तेख चोपडीये ने कांकसी न कीजें, दीजें न वस्त्रें धूप के ॥ मु०॥ ६ ॥ मांची पढ़ंग निव वेसीजें, किजें न विंडाणे वाय ॥ एहस्थगेह निव वेसीजें, विण कारण समु दाय के ॥ मु०॥ धा। वमन विरेचन चिकित्सा, श्रिष्ठ श्रारंज निव कीजें ॥ सोगठां सेत्रंज प्रमुख जे कीडा, ते पण सिव वरजीजें ॥ मु०॥ ०॥ पांच इंडिय निजवश श्राणी, पंचाश्रव पच्चकीजें ॥ पंच सिमित त्रण ग्रिष्ठ धरीनें, ठकाय रक्ता ते कीजें के ॥ मु०॥ ए॥ जनाखे श्रातापना खीजें, श्रीयाखे शीत सहीयें ॥ शांत दांत घइ परिसह सहेवा, स्थिर वरसाखे रिहेयें के ॥ मु०॥ १०॥ इम छक्कर करणी बहु करतां, धरतां जाव जदा सी॥ कर्म खपावी केइ हूश्रा, शिवरसणीशुं विखासी के ॥ ॥ मु०॥ १०॥ दश्वेकाखिक त्रीजे श्रध्ययनें, जांख्यो एह श्राचार ॥ ज्ञाज विजयग्रह चरण पसाये, इिद्यान्य जयकार के ॥ मु०॥ १०॥ इति॥

॥ अथ चतुर्थाध्ययन सद्याय प्रारंजः॥

॥ सुण सुण प्राणी, वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुधर्मा रे कहे जंबु प्रत्ये, सुण सुण तुं गुणलाणि ॥सरस सुधारसहूं ती मीठडी, वीर जिणेसर वाणी ॥स्वाणा ए त्रांकणी ॥ १ ॥ सूक्तम वादर त्रस यावर वली, जीव विराहण टाला। मन वच काया रे त्रिविधे स्थिर करी, पहिं क्वं त्र सु विचार ॥स्वाण।।शाकोध लोज जय हास्यें करी, मिथ्या म जांलो रे वयण॥ त्रिकरण गुरुं त्रत त्राराधजे, वीजुं दिवस ने रयण ॥ स्वाण॥ ३ ॥ गाम नगर वनमांहे विचरंतां, सचित्त त्र्यचित्त तृण मात्र ॥ कांइ त्रदीधां मत त्रांगिकरो, त्रीजुं त्रत गुणपात्र ॥ स्वाण॥ ४ ॥ सुर नर तिर्यंच योनि संवं धियां, मैथुन कस्य परिहार ॥ त्रिविधे त्रिविधे तुं नित्य पालजे, चोथुं त्रत सुखकार ॥ स्वाण॥ ४ ॥ धन कण कंचन वस्तु प्रमुख वली, सर्व त्राचित्त सचित्त ॥ परिप्रह मूर्छा रे तेहनी परहरी, धरी व्रत पंचम चित्त ॥ स्वाण॥ ६ ॥ पंच महाव्रत एणीपरें पालजो, टालजो जोजन राति ॥ पापस्थानक सघलां परहरि, धरजो समता सिव जांति ॥ स्वाण॥ १॥ पुढवी पाणी वायु वनस्पति, त्राप्ति ए थावर पंच ॥ वि ति चल पंचिंदि जलयर थलयरा, खयरा त्रस ए पंच ॥ स्वाण॥ ए॥ ए लक्कायनी वारो

विराधना, जयणा किर सिव वाणि॥विण जयणा रे जीवविराधना, जांखे तिहुआण जाण ॥ स्वाणाए॥ जयणापूर्वक बोलतां बेसतां, करतां आहार विहार ॥ पापकर्म बंध किर्ये निव हुवे, कहे जिन जगदाधार ॥ स्वाण ॥ ॥१०॥ जीव अजीव पिहलां उल्ली, जिम जयणा तस होय॥ ज्ञानिना निव जीवद्या पले, टले निव आरंज कोय ॥ स्वाण ॥ ११ ॥ जाणपणाधी संवर संपजे, संवरें कर्म खपाय ॥ कर्मक्षयथी रे केवल ऊपजे, केवली मु कि लहेय ॥ स्वाण ॥१२॥ दशवैकालिक चज्याध्ययनमां, अर्थ प्रकाश्यो रे एह ॥ श्री गुरु लाजविजयपद सेवतां, वृद्धिविजय लहे तेह ॥स्वाण॥१३॥ ॥ अथ पंचमाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेखणा ॥ ए देशी ॥ सुकता आहारनी खप करो जी, साधुजी समय संज्ञाल ।। संयम शुद्ध करवा जणी जी, एषणा रूषण टाल ॥ सुऊ० ॥ १ ॥ प्रथम सकायें पोरिसी करी जी, अणुसरी वेंसी जपयोग ॥ पात्र पडिलेहण आचरो जी, आदरी गुरु अणुयोंग ॥ सुण ॥ २ ॥ ठार धूत्र्यर वरसातना जी, जीव विराहण टाल ॥ पग पग र्ह्या शोधतां जी, हरिकायादिक नाल ॥ सुण ॥ ३॥ गेह गणिका तणां परिहरों जी, जिहां गयां चल चित्त होय ॥ हिंसक कुल पण तेम तजो जी, पाप तिहां प्रत्यक्त जोय ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ निज हाथे बार उघाडीने जी, पेसीयें निव घरमांहि॥ बाल पशु जिक्क प्रमुखने संघहे, जङ्गें निहं घरमाहि॥ सु०॥ ५॥ जल फल जलए कण लूणशुं जी, जेट तां जे दिये दान ॥ ते कह्ये निहं साधुनें जी, वरजवुं अन्न ने पान ॥ सुण ॥ ६ ॥ स्तन श्रंतराय बालक प्रत्यें जी, करीनें रहतो ठवेय ॥ दान दिये तो उलट जरी जी, तोहि पण साधु वरजेय ॥ सुण ॥ छ॥ गर्जवती वली जो दिये जी, तेह पण अकट्प होय ॥ माल निशरणी प्रमुखें चढी जी, आणि दीये कहपे न सोय॥ सु०॥ ठ॥ मूल्य आएयुं पण मत ली यो जी, मत लीयो करी अंतराय ॥ विहरतां यंत्र खंत्रादिकें जी, न अ आहार जो शुद्ध।। तो लिहियें देह धारण जाणी जी, अणलहे तो तपवृद्धि ॥ सुण्॥ १०॥ वयण खङ्मा तृषा ज्ञक्तना जी, परिसहयी स्थिरचित्त॥ गुरुपालें इरियावही पडिक्रमी जी, निमंत्री साधुने नित्य ॥ सुण ॥ ११ ॥ गुद्ध एकांत ठामें जई जी, पिडकमी ईरियावही सार ॥ जोयण दोष स वि ठांभिने जी, स्थिर यइ करवे। आहार ॥ सु० ॥ ११ ॥ दशवैका लिके पांचमे जी, अध्ययनें कह्यो ए आचार ॥ ते गुरु लाज विजय सेवतां जी, वृद्धिविजय जयकार ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ पष्टाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ म म करो माया काया कारिमी ॥ ए देशी ॥ गणधर सुधर्म एम जपदिसे, सांजलो मुनिवरबंद रे ॥ स्थानक अहार ए ठललो, जेह हे पापना कंद रे ॥ गण॥ १ ॥ प्रथम हिंसा तिहां डांडियें, फूठ निव जां लियें वयण रे ॥ तृण पण अदन निव लीजीयें, तजीयें मेहुण सयण रे ॥ गण॥ १ ॥ परियह मूर्जा परिहरों, निव करो जोयण राति रे ॥ डंको ठकाय विराधना, जेद समजी सहु जांति रे ॥ गण॥ ३ ॥ अकह्य आहार निव लीजीयें, उपजे दोष जे मांहि रे ॥ धातुनां पात्र मत वावरों, एहीतणां मुनिवर प्राही रे ॥ गण॥ ४ ॥ गादीये मांचीये न वेसीयें, वारियें शय्या पलंग रे ॥ रात रहियें निव ते स्थलें, जिहां होवे नारि प्रसंग रे ॥ गण॥ ४ ॥ सान मज्जन निव कीजीयें, जिणे हुवे मनतणो कोज रे ॥ तेह शणगार विल परिहरों, दंत नख केश तणी शोज रे ॥ गण॥ ६ ॥ ठठे अव्ययनें एम प्रकाशोयों, दश्वैकालिक एह रे ॥ लाजिव जय ग्रह सेवतां, वृद्धिवजय लह्यों तेह रे ॥ गण॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तमाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ कर्र हुवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ साचुं वयण जे नां खियें रे, साची नाषा तेह ॥ सचा मोसा ते किह्यें रे, साचुं मृषा होय जेह रे॥ रे॥ साधुजी करजो नाषा ग्रुद्ध ॥ करी निर्मल निजलुद्धि रे ॥ साण ॥ करण ॥ ए आंकणी ॥ केवल जूठ जिहां होवे रे, तेह असचा जाण ॥ साचुं निहं जुठुं नहीं रे, असत्या अमृषा ठाण रे ॥ साण । कण ॥ ए चारेमांहे कही रे, पहेली नाषा होय॥संयमधारी बोलवी रे, वचन विचारी जोय रे॥ साण ॥ कण ॥ ३ ॥ कठिन वयण निर्धार रे ॥ साण ॥ कण ॥ ४ ॥ कोइना मर्म न बोलीयें रे, साचा पण निर्धार रे ॥ साण ॥ कण ॥ ४ ॥ चोरने चोर न जां खियें रे, काणाने न कहे काण॥कहीयें न अंधो अंधने रे, साचुं कठिन ए जाण रे॥ साण ॥ कण ॥ थ ॥ जेहथी अनरय उपने रे, परने पीडा थाय ॥

साचुं वयण ते जांखतां रे, लाजथी त्रोटो जाय रे ॥ सा० ॥ क० ॥ ६ ॥ धर्म सहित हितकारीया रे, गर्वरहित समतोल ॥ योडला ते पण मीठडा रे, बोल विचारी बोल रे ॥ सा० ॥ क० ॥ ९॥ एम सवि ग्रण अंगीकरी रे, पर हिर दोष अशेष ॥ बोलतां साधुनें हुवे नहिं रे, कमनो बंध लबलेश रे ॥ सा० ॥ क० ॥ ० ॥ दशवैकालिक सातमे रे, अध्ययन ए विचार ॥ लाज विजय ग्रुखी लहे रे, बुद्धिविजय जयकार रे ॥ सा० ॥ क० ॥ ए॥ इति ॥ ॥ अथाष्ट्रमाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ राम सीताने धीज करावे॥ ए देशी॥ कहे श्रीग्रह सांजलो चेला रे, श्राचारज ए पुण्यना वेला रे॥ ढक्काय विराहण टालो रे, चित्त चोखे चा रित्र पासो रे ॥१॥ पुढवी पाषाण न जेदो रे, फल फूल पत्रादि न वेदो रे॥ बीज कूंपल वन मत फरजो रे, जीव विराधनेथी करजो रे ॥१॥ वली अप्नि म जेटशो जाई रे, पीजो पाणी ऊनुं सदाई रें॥ मत वावरो कानुं पाणी रे, एहवी हे श्री वीरनी वाणी रे ॥ ३॥ हिम धूछार वड उंबरां रे, फल कुं थुआ कीडी नगरां रे ॥ नील फूल हरी अंकूरा रे, इंमाल ए आवे पूरा रे॥ ४॥ स्नेहादिक नेदें जाणीर, मत हणजो सूक्तम प्राणी रे॥ पड़ि लेही सिव वावरजो रे, जपकर्णे प्रमाद म करजो रे॥॥५॥ जयणार्थे मगलां जरजो रे, वाटे चालतां वात म करजो रे ॥ मत ज्योतिष निमित्त प्रकासो रे, निरखो मत नाच तमासो रे ॥ ६ ॥ दी वुं अणदी वुं करजो रे, पाप व्यसन न श्रवणे धरजों रे ॥ अणसूजतो आहार तजजो रे, राते स निध सिव वरजो रे ॥ ७॥ बावीस परिसह सहेजो रे, देह इःखे फस स इहजो रे ॥ छाण पामे कार्पण्य म करजो रे, तप श्रुतनो मद नवि धरजो रे॥ ए॥ स्तुति गति समता यहेजो रे, देश काल जोइने रहेजो रे॥ ग्रहस्थशुं जाति सगाइ रे, मत काढजो मुनिवर कांइ रे ॥ ए॥ न रमाडो गृहस्थनां बाल रे, करो ऋियानी संज्ञाल रे॥ यंत्र मंत्र श्रीषधनो जामो रे, मत करजो कुगतिकामो रे ॥ १०॥ क्रोधें प्रीति पूरवली जाय रे, वली मानें विनय पखाय रे ॥ माया भित्राइ नसांडे रे, सिव गुण ते खोज न सांडे रे॥ ११॥ ते मार्टे कषाय ए चार रे, छनुक्रमें दमजो छाणगार रे ॥ जपशमशुं केवल जावे रे, सरलाइ संतोष सजावें रे ॥ ११ ॥ ब्रह्मचा रीने जाणजो नारी रे, जैसी पोपटने मांजारी रे ॥ तेले परिहरो तस परसंग रे, नव वाड धरो वित चंग रे ॥ १३॥ रसलोक्षप यइ मत पोषो रे, निजकाय तपकरीनें शोषो रे ॥ जाणो अधिर पुजलिंग रे, वत पाल जो पंच अखंग रे ॥१४॥ किह्युं दशवैकालिकें एम र, अध्ययने आठमे ते मरे ॥ ग्रुरु लाजिनजयथी जाणी रे, बुध वृद्धिविजय मन आणी रे ॥१५॥ ॥ अथ नवमाध्ययन सलाय प्रारंजः॥

॥ शेत्रुंजे जर्श्ये खालन, शेत्रुंजे जर्श्ये ॥ ए देशी ॥ विनय करेजो चे सा, विनय, करेजो ॥ श्रीग्रह श्राणा शीश घरेजो ॥ चेला ।।शी ।।ए श्रां कणी॥ क्रोधी मानी ने परमादी, विनय न शीखे वखी विषवादी॥चेणा वणार॥ विनयरहित आशातना करतां, वहु जव जटके छुर्गति फरतां॥ चेण ॥ छुणाअप्रि सर्प विष जिम नवि मारे, गुरु आसायण तेथी अधिक प्रकारें॥ चेण ॥अण ॥ १॥ अविनयें द्वषियो बहुल संसारी, अविनयी। मुक्तिनो नहिं अधिकारी॥ चे०॥ न०॥ कोह्या काननी कूतरी जेम, हां की काढे अविनयी तेम ॥ चेण ॥ अण ॥ ३॥ विनय श्रुत तप वली आ चार, कहींयें समाधिनां ठाम ए चार ॥ चे०॥ ठा०॥ वली चार चार नेद एकेक, समजो गुरुमुख्यी सिववेक ॥ चेण ॥ थीण ॥ ४॥ ते चारेमां विनय वे पहेलो, धर्म विनय विण जांखे ते घेलो ॥ चे० ॥ जां० ॥ सूख थकी जिस शाखा किहेंचें, धर्मिकिया तिम विनयधी खिहये।। चेण ॥ विण ॥ यह मान विनयणी लहे सो सार, ज्ञान किया तप जे आचार ॥ चे०॥जे०॥ गरथ पखें जिम न होये हाट, विण गुरुविनय तेम धर्मनी वाट ॥ चे० ॥ध०॥६॥ ग्रह नान्हो ग्रह महोटो कहिएँ, राजा परें तस आ ्णा वहियें ॥चे०।। आल्पश्रुत पण वहुश्रुत जाणो, शास्त्रसिद्धांते तेह मनाणो ॥ चे० ॥ ते० ॥ ७॥ जेम शशी यहगणें विराजे, भुनि परिवारमां तेम गुरु गाजे ॥ चे० ॥ ते० ॥ गुरुषी खलगा मत रहो नाइ, गुरु सेट्ये सहेशो गौरवाइ ॥ चेo ॥ शोo ॥ o ॥ गुरुविनये गीतारथ थाशो, वंडित सवि सुखखखमी कमाशो॥ चे०॥ खणा शांत दांत विनयी खङ्जाखु, तप जप क्रियावंत दयाखु ॥ चेवावंव।।ए॥ गुरुकुलवासी वसतो शिष्य, पूजनी य होये विसवा वीश्। चे०॥ वि०॥ दशवैकासिक नवमे अध्ययनें, अर्थ ए नांख्यो केवली वयर्षे ॥ चे०॥ के० ॥ इणिपरें लानविजय गुरु सेवी, वृद्धिविजय स्थिर खखमी खहेवी॥ चे०॥ ख०॥ १०॥ इति॥

॥ व्यथ दशमाध्ययन सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ ते तरीया जाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥ ते मुनि वंदो ते मुनि वंदो, जपशम रसनो कंदो रे ॥ निर्मल ज्ञान कियानो चंदो, तप तेजें जेहवा दि णंदो रे ॥तेण।।। ए आंकणी॥ पंचाश्रवनो करि परिहार, पंच महाबत धा रो रे ॥ षट्जीव तणो छाधार, करतो उप्रविहारो रे ॥तेण।श।पंच समिति त्रण गुप्ति छाराधे, धर्मध्यान निराबाध रे ॥ पंचमगतिनो मारग साधे, ग्र ज गुण तो इम वाधे रे ॥ ते ॥ ३ ॥ ऋय विऋयं न करे व्यापार, निर्मम निरहंकार रें ॥ चारित्र पाले निरतिचारें, चालंतो खर्जनी धार रे ॥ ते ॥ ॥ ४॥ जोग ने रोग करी जे जाले, आपे पुंख वंखाली रे ॥ तप श्रुतनो मद निव आणे, गोपवी अंग ठेकाणे रे।। तेण ।।।।। ढांभी धन कण कंचन गेह, यह निःस्नेही निरीहरे॥ खेहसमाणी जाणी देह, निव पोसे पापें जेह रे ॥ ते० ॥ ६ ॥ दोष रहित आहार जे पामे, जे खूबे परिणामें रे॥ लेतो देहनुं सुख निव कामे, जागतो आठेइ जामे रे ॥ ते०॥ ७॥ रसना रस रसीयो निव यावे, निर्झीजी निर्माय रे ॥ सहे परिसह स्थिर करी काया, अविचल जिम गिरिराय रे ॥ तेण ॥ ए ॥ राते काउस्सगा करी समशाने, जो तिहां परिसह जाणे रे ॥ तो निव चूके तेहवे टाणे, जय मनमां निव आणे रे ॥ ते०॥ ए॥ कोइ जपर न धरें कोध, दिये सहुने प्रतिबोध रे ॥ कर्म आठ जींपवा जोध, करतो संयम शोधीरे ॥ते ॥ १०॥ दशवैकालिक दशमाध्यनने, एम जांख्यो आचार रे॥ ते गुरुलाज विजयथी पामे, वृद्धिविजय जयकार रे ॥ ते०॥ ११॥ इति॥

॥ अथैकादशाध्ययन सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ नमो रे नमो श्रीशत्रुंजय गिरिवर ॥ ए देशी ॥ साधुजी संयम सूथो पालो, व्रत द्वण साव टालो रे॥ दशवैकालिक सूत्र संजालो, मुनि मारग अजुआलो रे ॥ सा०॥ सं०॥१॥ ए आंकणी ॥ रोगांतिक परिसह संकट, परसंगे पण धार रे ॥ चारित्रथी मत चूको प्राणी, इम जांखे जिनसार र ॥ सा० ॥ सं० ॥ १ ॥ जमचारी मुंको कहावे, इह जव परजव हार र ॥ नर क निगोद तणां छःख पामे, जमतो बहु संसार रे ॥ सा० ॥सं०॥३॥ चित चोले चारित्र आराधे, जपशम नीर अगाध रे ॥ कीले सुंदर समतादरिये, ते सुल संपत्ति साधे रे ॥ सा० ॥ सं० ॥ ४ ॥ कामधेनु चिंतामणि सरिखं,

चारित्र चित्तमें आणो रे॥ इह जब परजब सुखदायक ए सम, अवर न कांइ जाणो रे ॥ सावा। ५॥ सिक्जंजन सूरियें रचीयां, दश अध्ययन रसा ृिखां रे॥ मनकपुत्र हेतें ते जणतां, सहियें मंगलमाला र ॥सा०॥६॥ श्रीवि जयप्रतसूरिने राज्यें, बुध लाजविजयने शिष्यें रे॥ वृद्धिविजय विबुध छा चारय, गायो सकल जगीसें रे ॥साणाणा इति दशकैका लिक सद्याय संणा ि॥ स्रय लालचंदरुषिकृत श्रीविजयकुंवर स्रमे विजयाकुंवरीनी सद्याय॥ ॥ खावणीनी देशीमां ॥ श्रीवीतराग जिनदेव नमुं शिर नामी, कहुं शी खतणो अधिकार, मुक्ति जिए पासी ॥ एक वत्सदेशमें कोसंबि नगरी जा णी, ते दक्षिण देशमें प्रगटपणे वखाणी।। तिहां शेव तणो सुत विजय कुमर वैरागी, सुणि शीखतणो महिमा भनमें खय लागी ॥ तब हाथ जोड कर मुनिपें सोगन मागी, हुआ एक मासमें कृष्णपक्तका त्यागी॥ ॥ १॥ धन विजय कुमरकी करी कनी कबु नांजी, चित्त चोखे शीख श्रादखुं नरजोवनमां जी ॥ ए श्रांकणी ॥ पाले श्रायक धर्म शुद्धज्ञान मुख उचरे, पोसह पिकसणां संवर करता विचरे ॥ करि दया दान संतोष शीख शुद्ध पाले, धरि धर्म ध्यान और आतमकूं अजुआले ॥ दह समिकतधारी शंका कंखा निव आणे, पर पाखंकीको पखो नहीं वखा णे ॥ देवादिकनां प्रःख देखी धर्म निव छंके, चढते परिणामें करणी अधिकी मंके ॥ धन० ॥ २ ॥ पुष्ययोगें विजयाकुमरी मर्खी गुणवंती, गुक्र चोशव कलानी जाण महा बुद्धिवंती॥ गजगमणी रमणी बोले को किल वाणी, तनुं कंचन सोहे बदन जाल जलकाणी।। अति अधर ला ख कोमल कपोल वहु सोहे, कर चरण उदर मुलकमल जोइ मन मोहे॥ वहु हर्ष ज्ञावशुं विजय कुमरजी तीहां, पुष्ययोगें जोड मखी परणे घर प्रीया ॥ धनण ॥ ३ ॥ हवे विजय कुमरजीकी सोहे सुंदरताइ, अब सुर सुंदरकी देवरूप विव वाइ॥ विद्व कानें कुंमल रहें जिंदयां सोहे, शिर लाख मुकुट मुक्ताफल सुर नर मोहे॥ गले हार रहें जिंदया सोहे बहु जारी, कर कंकण चमकण मुझडीयां ठिब न्यारो॥ अरु बदन जाल निर्म ख शिश नेत्रें सोहे, इत्यादिक ग्रण करि विजयकुमर मन मोहे॥ धनण। ॥ ४॥ तव रंग महेलमें बेठे पतंग बिढाई, प्रीतमकी सेजां सुंदर तन सज आई॥ अणियालां कज्जल वीजलीयां चमकंती, करजोडी जजी

पीयु आगल मलपती ॥ चमके चूडियां सार मणियें चमकती, नकवेसर वेषी फ्मरीयां फमकंती ॥ कर कडियां जडियां मुझडियां दमकंती, श्रु नेजर पगमें घूघरियां घमकंती ॥ भनण॥ ए॥ जब बदन दिखावे काम जगावे बाखा, इंझाणी सरखी जजी रूप रसाखा ॥ त्रीतमको श्रादर मा गे सुंदरी जमाइ, तन मन जबसंती जनी आशा खाइ॥ कहें विजयकुमर जी अहो सुंदरि जर्बे आई, पण हमणां तुमग्रं काम नहिं मुक्त काई॥ दिन तीन खर्गे तो निर्हें मदनकी डांही, फिर तुम हम पीडें सुखें सुखें दिन जाई॥ धन०॥६॥ कहे छुमरी छुमरकूं कहो कारण है काई, हुं सुं दर तन सज कर आइ हुं जमाई ॥ अब अवसर परियां केम तजो प्रीत मजी, में नियम खीयों हे तुं सुंदरी नीहं समजी ॥ तब कुमरी पूहे कहो प्रीतमजी हमकुं, अब किसी जांतका नियम खिया हे तुमकुं॥ मुफ बाख पणाथी शियस रुच्यो मनमांही, किया कृष्णपक्तका नियम मुनिपे जाइ ॥ धनण ॥ ए॥ तब विजया कुमरी जनी मुख कुमलाई, मुं मनकी आशा जरी रही मनमांही ॥ कहे विजयकुमर सुण सुंदरि क्युं कुम खाइ, तुम जिम हे तिम मुज वेग कहो फुरमाई ॥ तब विजयाकुमरी धीरजता मन खाई, नीचा नेत्रें करी वात करे मुरजाई ॥ मुक बालपणा थी शील रुच्यो मनमांही, पहिला परखेका पैरिणाम हता नहिं कांही ॥ धनः ॥ छ ॥ गुरुणीपें किया में गुक्कपक्षका सोगन, अब तो महारे हुआ दोनुं पक्तका आगन ॥ प्रीतमजी तुम तो परणो नारी अनेरी, पण पहेली इहा क्षेत्र तणी हुइ मेरी ॥ कहे विजयकुमरजी अहो वहान ग्र णवंती, अब तुम हम जोडी मखी यहू दीपंती ॥ हवे रत बोड़ कोण काच यहे सुण प्यारी, शुद्ध शीख पालशुं मुक्तिरमणी हे नारी ॥ धनणी ॥ ए॥ बहु देवखोकनां सुख विखस्यां वार अनेरी, पण मनइहा पूरण न्नइ निहं कुण केरी ॥ जीव नरक निगोद नम्यो नवसायर मांही, बहु काल गमायो गरज सरी निहं कांही ॥ अब जत्तम कुल अवतार लीयो हे आइ, पुण्ययोगें मुनिवरकी योगवाई पाई ॥ अब मात तात सब जात मिले स्वारश्रका, चढते परिणामें शियल पालशुं नित्यका ॥ धन्०॥ १०॥ अब अहप संपदा देखी कहो किम खोईयें, पण वाटी साटे खेत खोयां डुःख होईये॥ अब यह बात अपने नहिं करनी कीसीकुं, जो हम दोनुने

नियम लिया हे खुसीकुं।। करजोडी कुमरी कहे कुमरशुं अरजी, पण वात ए ढानी केम रहेशे कुंवरजी ॥ सुषी ससरो सासु घणां खीजशे तुमशुं, पढ़ी किसी शरमसें रह्यो जायशे हमशुं ॥ धन० ॥ ११॥ सुण प्रीतम प्यारी एह आपली शिका, यह बात प्रगटी तब निश्चें खेवी दीका ॥ एकण सेजें सोवे सुंदरि अरु सांई, सुते सुते बात करे ज्युं बहेन ने जाई॥ दो वेर करे पिकक्षमण सामायिक आई, करे दान शील तप जली जाव ना जाई।। तिहां बार वरस विह गयां एस करंतां, पढी वात विस्तरी शीलपणे विचरंतां ॥ धनं ॥ १५ ॥ तव दक्षिण देशमें विजया विज यजी केरां, श्रीविमलकेवली कियां वखाण घरेरां ॥ वेहु चरमशरीरी वे महा जत्तम प्राणी, सहु अचरिज पाम्यां सुणि केवलिमुख वाणी॥ सुणि जिनदास श्रावक हुँ वहुत प्रमन्न, हुं जाइ करुं तिहां हर्ष धरो दरशन्न ॥ वहु हर्प जावद्युं आव्यो नगरि कोसंबी, श्रीविजयकुमरनी वात सुषी अवंत्री ॥ धनण ॥ १३॥ बहु हर्ष नावथी मिलयो कुंछर कुंवरियां, परिवार जिमाया बहुत हर्ष मन धरिया ॥ तब मात तात कुम रका घणुं उमाह्या, तुम कदो शेवजी कुण सगपणतें श्राया॥ श्रीजैनधर्म स्नेहें होशें करी आयो, शीखवंत कुमर कुमरीको दरिसन पायो॥ धन्य तुमचे कुर्लमें जपना जत्तम प्राणी, श्रीविमल केवली शोजा घणी वलाणी ।। धनि ।। १४ ।। एक सेजे सोवे शील निर्भेह्यं पाले, बिहुं बाल ब्रह्मचारी आतमने अजुवाले ॥ बहु अचरिज सरखी वात सुणी हुं आ यो, वली जावमुनिको दर्शन निर्मख पायो ॥ तब सात तात कहे कहोजी हमकुं न्हाना, तुम किसी जांतका नियम खीया है हाना॥ तब नेत्र नी चां करी वात कहे विस्तारी, अब संयम खेवा इन्ना नई हमारी॥ धन० ॥ १५ ॥ जब मात तातर्षे मागे कुंवरजी आग्ना, तब नात जात सब कुमरकुं कहने लाग्या॥ तव बहुत हठनशुं खही कुमरजी शिक्ता, चढते परिणामें दोनुं खीनी शुद्ध दीका॥ वहु किन होईनें तपस्याशुं खय ला इ, जिव जीव सुधाखा शुद्ध समिकत पद पाइ॥ अरे जीव अब उती वांडे किम इटकाइ, धन्य विजय विजया (कुमरी) ने अधिक करी अधिकाई ॥ धनः ॥ १६ ॥ चढते परिणामें करणी कीधी निर्मख, मुनि मुक्तें पहोता दोनुं पाम्यां केवल॥ श्रीदोखतरामजी श्रने जीवाजी स्वामी, कृषि खालचंद

गुण्याम किया शिरनामी ॥ सय संवत श्रहार श्रहशहें श्रवसर पाता, शहर कोटा केरा रामपुरे गुण गाया ॥ जिहां श्रावक बहु वसे श्रद्धा गुण वंता, जिहां साधु साधवी श्रावे विहार करंतां ॥ धनण ॥ १९॥ इति ॥ ॥ श्रथ श्री जावरत्नजीकृत फांफरिया मुनिनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ ढाख पहेली ॥ सुण बहेनी, पियुडों परदेशी ॥ ए देशी ॥ । सरखती चरणे शीश नमावी, प्रणमी सकुरु पाया रे ॥ जांजरिया क्षिना गुण गातां, उखट छंग सवाया रे ॥ १॥ त्रविजन वंदो मुनि कां करियो ॥ ए आंकणी ॥ संसार समुद्र जे तरीयो रे ॥ शियल सन्नाहं पेरी मनशुक्तें, शियल रयणें करी जिरयों रे ॥ जि ॥ रे। पेठाणपुरे मकरध्वज राजा, मदनसेना तस राखी रे ॥ तस सुत मदनब्रह्म बाखूडो, कीर्त्तिः जा स कहेवाणी रे ॥ जण् ॥ ३॥ बत्रीस नारी सकोंमख परण्यो, जरजोबन रस खीनो रे ॥ इंड महोत्सव ज्यानें पहोतो, मुनि देखी मन जीनो रे॥ न्।। ।। चरणकमल प्रणमी साधुना, विनय करीने बेठो रे ॥ देशना धर्मनी दे साधुजी, वैराग्यें मन पेठों रे ॥ ज्ञण ॥ ५ ॥ माता पितानी अ नुमती मागी, संसार सुख सनि डांकी रे ॥ संयम मारग सूधो लीधो, मिथ्यामति सवि ढांकी रे॥ जण्॥ ६॥ एकखडो वसुधातल विचरे, तप तेजे करी दीपे रे ॥ जोबन वय जोगीश्वर बलियो, कर्म कटकने जींपे रे ॥ ज०॥ ७॥ शील सन्नाह पहेस्वो जेणे सबसो, समिति ग्रिप्त चित्त धर तो रे ॥ आप तरे ने परने तारे, दरिसणे हुरगति हरतो रे ॥ जण ॥ ण॥ त्रंबावतीनगरी मुनि पहोतो, उद्यविहार करंतो रे ॥ मध्यान्हें गोचरीयें संचरतो, नगरीमां मुनि जमंतो रे ॥ जण ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ बेडले जार घणो हे राज, वातां केम करो हो ॥ ए देशी ॥ इण अव सरें तीहां तरुणी, गोरडी गोखें बेही ॥ निजपित चाख्यो हे परदेशें, विष यसमुद्रमां पेही ॥ १ ॥ विरुद्द मदन चढाइ राज, जेणें तेणे जीती न जा वे ॥ ए आंकणी ॥ शोख शृंगार सजी सा सुंदरी, जरजोबन मदमाती ॥ चपखनयन चिहुं दिशि फेरवती, विषया रस रंग राती ॥ विष् ॥ १ ॥ चाचर चहूटे चिहुं दिशि जोतां, आवंतो रुषि दीहो ॥ मखपंतो ने मोह नगारो, मनशुं खाग्यो मीहो ॥ विष् ॥ ३ ॥ राजकुमार कोइक हे रूडो,

रूपें अनुपम दीसे ॥ जोवनवय मुखपंतो योगीश्वर, ते देखी चित्त हिंसे ॥ विण्।। ४॥ तव दासी खासी तेडावी, खावो एहने बोखावी ॥ शेठां-णीनां वयण सुणीने, दासी तेडण खावी ॥ विण्या थे ॥ इण घर खावोते साधुजी, वोरण कार्जे वेखा ॥ जोक्षे जार्वे मुनिवर आवे, शुं जाणे मन महेंसां ॥ विण् ॥ ६॥ थाल जरी मोदक मीठाइ, मुनिवरने कहें वहोरो ॥ मेलां कपडां ऊतारीने, आठा वाघा पहेरो ॥ विण् ॥ ॥ आ मंदिर मालियां महोटां, सुंदर सेज विढाइ ॥ चतुर नारी मुक साथें मुनिवर, सुख विखसो खइ खाइ ॥ विण ॥ ज ॥ विरहामियें करी हुं दाजी,..परम् सुधारस सींचो ॥ माहारां वयण सुणिने मुनिवर, वात आघी मतं खीं चो ॥ वि० ॥ ए ॥ विषय वयण सुणी वनितानां, समता रसमां वोखे ॥ चंदनथी पण शीतलवाणी, मुनि अंतरथी खोले ॥ विष् ॥ रुष् ॥ ह्यं वालक दीसे वे वाली, वोलंतां निव लाजे॥ जत्तम कुलमां जेह जपना, ते हने ए निव ठाजे ॥ वि०॥ ११ ॥ ए आचार नहीं अम कुलमां, कुल कू पण केम दीजें।। निजकुलने आचारे चालीजें, तो जगमां जस लीजें ॥ विष् ॥ ११ ॥ वात छाठे जगमां वे मोटी, जारी ने एक चोरी ॥ एणे त्तव अपयश वहु पामे, परन्नव दुःख अघोरी ॥ विण ॥ १३ ॥ शियख चिंतामणि सरखुं बंकी, विषयारस कोण रीके॥ वर्षाकाले मंदिर पामी, उघाडो कोण जींजे॥ वि०॥ १४॥ मन वचन कायायें करीने, वत खीधुं निव खंडु ॥ ध्रुव ताणी परे अविचल पालुं, अमे घरवास न मंडुं ॥ विरु इ मदन चढाइ राज ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ विंवियानी देशी ॥ हारे लाल शीख साधुनी अवग्रणी, जाणे वेग थड़ घडनाल रे लाल ॥ कामवशें यह आंधली, करे साधुतणी ते आल रे लाल ॥ १ ॥ मुनि पाये जांजर रमजमे, ते आवी पेतुं साधुने पाय रे लाल ॥ वेलतणी परें सुंदरी, वलगी साधुनी बांय रे लाल ॥ मुण्॥ १ ॥ हारे जोर करी जोरावरें, निकष्ट्यो तिहांथी मुनिराय रे लाल ॥ तव पोकार पूंठे सुखो, धार्ड एणें कीथो अन्याय रे लाल ॥ मुण्॥ ३ ॥ हांण ॥ तिहांथी मुनिवर चालीयो, पाये जांजरनो जमकार रे लाल ॥ खोक बहु निंदा करे, माठो ए अणगार रे लाल ॥ मुण्॥ ४ ॥ हांण ॥

चोबारे बेगे राजवी, नजरें जोवे अवदात रे खाख ॥ दीधो देशवटो जा रीने, मुनियश तणी यह वात रे खाख ॥ मु०॥ ५ ॥ हां०॥ तिहांथी मुनिवर चाखीया, आव्या कंचनपुर गाम रे खाख ॥ राजा राणी बे प्रेम शुं, बेगं गोंखे आराम रे खाख ॥ मु०॥ ६ ॥ हां०॥ राणी मुनिवर देखी नें, आंसुडे वूगी धार रे खाख ॥ राजा देखी मन कोपियो, सही एहनो पूर्व जार रे खाख ॥ मु०॥ ९॥ हां०॥ राजा गयो रयवाडीयें, तेडाव्यो क्षिने त्यांहि रे खाख ॥ खाँक खणी नंभी घणी, बेसाड्यो क्षिने मांहि रे खाख ॥ मु०॥ ७॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी।

ा। देवतणी रुद्धि जोगवी आव्यो ॥ ए देशी ॥ अणुसण लामण करें मुनि तिहां कणे, समता सायरमां की ले।। चोराशी जीवायोनि खमावे, पापकर्मने पीक्षे रे ॥ मुनिवर तुं मोरे मन विसयो ॥ ए आंकणी ॥ १॥ उदय आव्यां निज कर्म आलोइ, ध्यान जिनेश्वर ध्यावे ॥ खर्जे हणतां केवल पामी, अविचल ठामें जावे रे॥ मुण॥ १॥ शरीर साधुनुं शूलियें आरोप्युं, हाहाकार त्यां पडियो ॥ उंघो वस्त्र सोहिये रंगाणां, अति अन्या य रायें करियों रे ॥ मु०॥ ३॥ समली उंघो लइ उनती, ते राणी आगख पंडियो ॥ बंधव केरो उंघो देखीनें, हृदय कमलयी खडियो रे ॥ मु०॥ ४॥ श्रति अन्याय जाणीने राणी, अण्राण पोतें लीधो ॥ परमारथ जा प्यो राजायें, हाहा ए शुं में की धो रे ॥ सुण ॥ थ ॥ क्षिहत्यानुं पातक खाग्युं, ते केम **बूट्युं जावे ॥ श्रांसुडां नाखंतो राजा**, मुनि कंखेवर खमावे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ गदगदस्वरे रोवंतो राजा, मुनिवर आगस बेठो ॥ मान मेलीने खमावे रे त्रूपति, समता सायरमां पेठो रे ॥ मुण ॥ ७ ॥ फरी फ री जठीनें पायज लागे, श्रांसुडे पाप पखाले ॥ जूपति उम्र जावना जा वतो, कर्मपमल सिव टाले रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ केवलक्कान लह्युं राजायें, जवो जब वैर खमावे ॥ जांकरिया क्षिना गुण गातां, पापकर्म शमावे रे ॥ मुण ॥ ए॥ संवत सत्तर ठपन्न केरा, आषाढ ग्रुद बीज सोहे ॥ सोमवारे स द्याय ए की थी, सांजलतां मन मोहे रे ॥ मुण ॥ १०॥ श्रीपूनम गन्न गुरु विराजे, महिमाप्रज सूरिंदा ॥ जावरत सुशिष्य एमः पज्रणे, सांजलजो सहु बंदा रे ॥ सुन्॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नित्यक्षाजजीकृत चंदनबाक्षानी सद्याय प्रारंजः ॥ ॥ ढाल पहेली ॥ श्ररणिक मुनिवर चाख्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ श्री सरस्वतीना रे पाय प्रणमी करी, शुण्हां चंदनबाखा जी ॥ जेणें वीरनो रे श्रिजमह पूरियो, साधी मंगस मासा जी ॥१॥ दान उसट धरी जवियण दी जियें, जेम खिह्यें जग मानो जी ॥ खर्गतणां सुख सहे जें पामी यें, ना से दुर्गति स्थानो जी ॥ दानण ॥ १॥ नयरी कोसंबी रे राज्य करे तिहां, नामें संतानिक जाणुं जी ॥ मृगावती राणी रे सहियर तेहजी, नंदी ना में वखाणुं जी ॥ दानः ॥३॥ शेव धनावो रे जिए नगरी वसे, धनवंतमां शिरदारो जी ॥ मूखानामें रे ग्रहिणी जाणियें, रूपें रित अवतारो जी ॥ दान ।। ४॥ एऐं अवसर भीवीर जिनेश्वरु, करता जय विहारो जी ॥ पोषवद पडवे रे अनिम्रह मन धरी, आव्या तिए पुर सारो जी।।दान ॥५॥ राजसुता होये मस्तक झौर करी, कीधा त्रख उपवासो जी ॥पगमां वेडी रे रोती डुःख नरी, रहेती परघरवासो जी ॥ दानण ॥ ६॥ खरे रे वपोरें वेठी उंवरे, एकपग वाहिर एक मांहे जी।। सुपडाने खूणे रे अडद ना वाकला, मुजने श्रापे उत्साहे जी ॥ दानण ॥ ७ ॥ एहवुं धारी रे मन मांहे प्रज्ञ, फरता आहारने काजे जी ॥ एक दिन आव्या रे नंदीने घरे, ईर्या समिति विराजे जी 11 दानण 11 ए ॥ तव सा देखी रे मन हिर्षित थइ, मोदक खेइ सारो जी ॥ वहोरावे पण प्रजुजी नवि कीये, फरि गया तेणीवारो जी ॥ दान० ॥ ए॥ नंदी जइने रे सहियरने कहे, वीर जिनेसर श्राव्या जी ॥ जिक्ताकाजे रे पण खेता नथी, मनमां श्रजियह खाव्या जी ॥ दान० ॥ १० ॥ तेइनां वयण सुणी निज नयरमां, घणा रे जपाय करावे जी ॥ एक नारी तिहां मोदक खेइ करी, एक जाणी गीतज गावे जी ॥ दान०॥ ११ ॥ एक नारी श्वंगार सोहामणा, एक जणी वासक क्षेड् जी ॥ एक जणी मुके रे वेणीज मोकसी, नाटक एक करेड् जी ॥ दान ॥ ११ ॥ एणिपरें रामा रे रमणी रंग नरी, आणी हर्ष अपारो जी ॥ वहोरावे वहु जाव जर्के करी, तोय न खीये आहारो जी ॥ दा नण्या १३ ॥ धन्य धन्य प्रजाजी वीर जिनेसर, जुम ग्राणनो नहिं पारो जी ॥ इकर परिसह चितमां व्यादस्वो, एह अनियह सारो जी ॥दानः ॥ १४ ॥ एणीपरें फिरतां रे पांच मास थया, उपर दिन पचकीसों जी ॥

थ्यित्रमह सरिखोरे जोग मले नहीं, विचरे श्रीजगदीशो जी। दाणारेपा

ा। नमो नमो र्मनक महामुनि ॥ ए देशी ।। तेणे अवसर तिहां जा णियें, राय संतानिक छाव्यों रे॥ चंपानगरी उपरे, सेना चतुरंगी दख खाव्यों रे ॥ तेणें अवसर तिहां जाणियें ।। ए आंकणी ॥ रे ॥ दिधवा हन नबलो थयो, सेना सघली नाठी रे॥ धारणी धूत्रा वसुमती, बांद षड्या थइ माठी रे ॥ ते० ॥ २ ॥ मारगमां जातां थकां, सुन्नटने पूर्व राणीरे ॥ द्यं करशो स्थमने तमें, करद्यं यहिणी गुणखाणी रे ॥ ते० ॥३॥ तेह वचन श्रवणें सुणी, सतीय शिरोमणि ताम रे ॥ ततक्रण प्राण तज्यां सही, जो जो कर्मनां काम रे ॥ तेण ॥ ध ॥ वसुमती कुमरी खेइ करी, आव्यो निजघर मांही रे ॥ कोप करी घरणी तिहां, देखी कुमरी जत्साही रे ॥ ते० ॥ ए ॥ प्रात समय गयो वेचवा, कुमरीने नि रधारो रे ॥ वेक्या पूछे मूख्य जेहनुं, ते कहे शतपंच दिनारों रे ॥ ते०॥ ॥ ६॥ एहवे तिहांकणे आवियो, शेठ धनावो नाम रे ॥ कहे कुमरी खेशुं अमें, खासा आपशुं दाम रे ॥ तेण ॥ ए ॥ शेठ वेश्या **फग**डे ति हां, मांहो मांहे विवादों रे ॥ चक्केसरी सान्निध्य करी, वेक्या उतास्वो नादो रे ॥ ते० ॥ ७॥ वेश्यासी मुकावीने, शेव तेडी घरे आवे रे ॥ म नमां अति हर्षित थको, पुत्री कहीने बोखावे रे ॥ तेण ॥ ए॥ कुमरी रूपें रूखडी, शेव तणुं मन मोहे रे॥ अनिनव जाणे सरस्वती, कक्षा चोशा सोहे रे ॥ तेण ॥ १० ॥ काम काज घरनां करे, बोले अमृत वा णी रे ॥ चंदनबाला तेहनुं, नाम दीधुं गुण जाणी रे ॥ ते०॥ ११ ॥ चंदनवाला इक दिने, राठ तणा पग धोवे रे ॥ वेणी जपाडी रोठजी, मूला वेठी जोवे रे ॥ ते० ॥ १२ ॥ ते देखीने चिंतवे, मूला मन सं देह रे॥ रोठजी रूपें मोहिया, करहो ग्रहिणी एह रे॥ तेण ॥ १३॥ मनमां कोध करी घणो, नावीने तेडावी रे ॥ मस्तक जड करावीयुं, पग मां वेडी जडावी रे ॥ ते० ॥ १४ ॥ उरडामां हि घालीने, ताखुं देइने जावे रे ॥ मूला मन इर्षित यइ, बीजे दिन शेठ आवे रे ॥ तेण॥ १५॥ शेव पूर्व कुमरी किहां, घरणीने तिण कालें रे ॥ ते कहे हुं जाणुं नहीं, एम ते उत्तर छाखे रे ॥ ते०॥ १६॥ एम करतां दिन त्रण थया,

तोहि न जाणे वात रे।। पाकोशण एक कोकरी, संघली कही, तेण वात रे ॥ ते० ॥ १७ ॥ काढी बार जघाडीने, जंबरा वर्चे वेसारी रे ॥ आप्या श्रदना वाकुला, सुपढामांहे तिए वारी रे ॥ ते० ॥ रे। होत लुहार तेडण गयो, कुंबरी जावना जावे रे॥ इण अवसर बहोराविये, जो कोइ साधुजी खावे रे॥ तेण॥ रए॥ इति ॥

॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ वेडले नार घणो ठे राज, वार्ता केम करो ठो ॥ ए देशी ॥ इण श्रवसर श्रीवीर जिनेसर, जंगम सुरतरु श्राया रे ॥ श्रातिज्ञावे ते चंदन वाला, वांदे जिन सुखदाया ॥ १॥ श्राघा त्राम पधारो पूज्य, श्रम घर वहोरण वेला ॥ ए आंकणी ॥ आज अकार्षे आंवो महोस्यो, मेह अमी रस बूठा रे ॥ कर्नतणा जय सर्वे नाठा, श्रमने जिनवर तूठा ॥ श्राघा श्रास प्रधारो वीर, मुक्तने पावन की जैं॥ ए॥ एम कहीने श्रडदुना वा कुला, जिनजीने वहारावे रे ॥ योग्य जाणीने प्रज्ञजी वहारे, छाजिपह पूरण थावे ॥ श्राघाण ॥ ३॥ वेडी टलीने कांकर हूआं, मस्तक वेणी रूडी रे ॥ देव करे तिहां वृष्टि सुवननी, साडी वारह कोडी ॥ आघाण ॥ ४॥ वात नगरमां संघले व्यापी, धन क्षेत्रा नृप आवे रे ॥ मुलाने पण खवर घइ हे, ते पण तिद्धां कणे जावे ॥ आघाण॥ य॥ शासनदेवी सान्निध्य करवा, वोले श्रमृत वाणी रे ॥ चंदनवालानुं हे ए धन, सांजल गुणमणिखाणी ॥ श्राघाण॥ ६ ॥ चंदनवाला संयम लेशे, तव ए धन खरचाशे रे ॥ राजाने एणि परें समजावे, मनमां धरी जल्लासे ॥ आघा। ॥ ॥ शेव धनावो कुमरी तेडी, धन खेई घर आवे रे ॥ सुखें समाधं तिहां कणे रहेतां, मनमां हर्ष न मावे ॥ आघाण ॥ ए ॥ हवे तिए कार्ले वीर जिएंदजी, हमा केवल नाएी रे ॥ चंदनवाला वात सुणीने, हियडामां हरखाणी ॥ श्राघाण॥ ए ॥ वीरकने जइ दीका सीधी, ततक्त कर्म खपाव्यां रे ॥ चंदनवाला गुणह विशाला, शिवसं दिर सीघाट्यां ॥ श्राघा०॥ १०॥ एइवुं जाणी रूडा प्राणी, करजो शियख जतन्न रे ॥ शियखयकी शिवसंपद खड़ीयें, शियखे रूपरतन्न ॥ श्राघाः ॥११॥ नयन वसु संयमनें नेदें, संवत् (१७१७) सुरत मकारे रे॥ विद आषाढ तणी वृष्ठ दिवसें, गुण गांया रिववारें ॥ आघाण ॥१२॥ श्री

विद्यासागर सुरि शिरोमणि, श्रवसगढ सोहाया रे ॥ महियस महिमा श्रिषक बिराजे, दिन दिन तेज सवाया ॥ श्राघाण ॥ १३ ॥ वाचक सहज सुंदरनी सेवक, हर्ष धरी चिन्त श्राणी रे ॥ श्रीष्ट्र जसी परें पासी जवियण, कहे नित्यसाज ए वाणी ॥ श्राघाण ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मालमुनिकृत इक्तुकार कमलावतीनुं षद्दालीयुं॥
॥ दोहा ॥ चोवीशे जिनवर नमुं, समरी सरसती माय ॥ साधु तणा
ग्रण गायवा, मुफ मन आनंद याय ॥ १ ॥ वृद्धीव संयम पालीनें, पहो
ता मुक्ति मजार ॥ संकेपें करी वर्णतुं, सूत्र तणे अनुसार ॥ १ ॥ साधु
मारगे चालतां, जूला पड्या वनमांह ॥ जूल तृषायें पीडिया, गोवाल म
ह्या वस्ताह ॥ ३ ॥ आगत स्वागत बहु करी, खेइ षया निज गेह ॥
जात पाणी प्रतिलाजिया, आणी अधिक सनेह ॥ ४ ॥ तिहां मुनि दी
घी देशना, जांख्यो अधिर संसार ॥ वाणी सुणी ह्रम समक्तिया, लीघो
संयमजार ॥ ५ ॥ गोवालिया ते व्रम जणा, पाली संयम सार ॥ देवलोके
जइ उपन्या, एक विमान मकार ॥ ६ ॥ देवतणां सुल जोगवी, पुण्यतणे
सुपसाय ॥ उत्तमकुलें इहां उपन्या, ते सुणजो हित खाय ॥ १ ॥

॥ हाख पहेखी ॥

॥ जंबुद्धीपना जरतमां, नगरी नामें इस्कुकार रे ॥ इद्धि समृद्धि योजती, स्वर्गपुरी धनुहार रे ॥ १ ॥ पुष्यंत्रणां फन्न जाणियं, पुष्यं सिव सुख थाय रे ॥ ए आंकणी ॥ पुष्यंकी संपत्ति मले, पुष्यं वंतित होय रे ॥ परजव जातां जीवने, पुष्यं सखाइ जोय रे ॥ पुष्यं ॥ १ ॥ तिषा नगरे राजा हतो, गुण्यंती तस नार रे ॥ तस कुलें आ वी जपन्यो, जन्म्यो शुज तिथि वार रे ॥ पुष्यं ॥ ३ ॥ मात पिता यें आपियुं, नाम जल्लुं इस्कुकार रे ॥ पंच धावे करी जिल्लों, जल्लों कला बहु प्रकार रे ॥ पुष्यं ॥ ४ ॥ बीजों जीव वली जपन्यो, कोइक नगरी मकार रे ॥ कमलावती रूपें रूपडी, जीलादिक गुण धार रे ॥ पुष्यं ॥ ६ ॥ योवन वय दोय पानियां, पूरव कर्म विकार रे ॥ मात पितायें परणावियां, सुख जोगवे संसार रे ॥ पुष्यं ॥ ६ ॥ पुरोहित हतो रायनो, नारी हती गुण्याण रे ॥ तस जदरे आवी जपन्यो, ती जो पुष्यं भाग रे ॥ पुष्यं ॥ १ ॥ चोन्नों जीव पुत्रीपणे, ब्राह्मण

कुर्ते व्यवतार रे ॥ जसापत्वी नामें जली, ते जृगु पुरोहित यइ नार रे ॥ पुर्खण ॥ ज ॥ हवे इक्कार राजा थयो, राज पाले सुलकार रे ॥ पुरो हित पद जृगुने दीयो, जग जल तेहनो विस्तार रे ॥ पुर्खण ॥ ए ॥ इक्कार ने कमलावती, जृगु ने जसापत्वी नार रे ॥ सुल जोंगवे संसारनां, चारे जीव जदार रे ॥ पुर्खण ॥ १० ॥ सोना रूपा व्यादें करी, धननो न हिं कांइ पार रे ॥ पण पुरोहितने पुत्रज नहिं, जुःख धरे स्त्री जरतार रे ॥ पुर्वण ॥ ११ ॥ दिशा ग्रुनी विण वंधवा, घर ग्रुनुं विण पुत्र रे ॥ ते का रख वहुविधपणे, जपाय करे ब्यज्जत रे ॥ पुर्खण ॥ ११ ॥ संबंध हुवे जेह जीवथी, ते मेलविया जगमांहे रे ॥ पहेली ढाल कही जली, माल मुनि जत्साहें रे ॥ पुर्खण ॥ १३ ॥ इति ॥

ा दोहा॥
॥ सुख जोगवतां खर्गनां, तव ते दोनुं देव ॥ च्यवण चित्र जाणी करी, अविध जोइ ततखेव ॥ १॥ अमें जपजानुं विद्व जणां, प्राहित यह सुखकार ॥ नेमित्तिकं रूप खेइ आविया, तिण नगरीनी वहार ॥ १॥ नि नित्त जांखे वहुजनअतं, यश वाष्यों प्रमाहि ॥ ते सांजली प्रश्न प्रवा, आव्यां प्रोहितस्त्री खांहि ॥ ३॥ पुगेहित कहे रे निमित्तिया, जो सुज पुत्रज होय ॥ तमें कहो ते हुं करं, बोळा निमित्तिक दोय ॥ ४॥ पुत्र होशे दोय तुम्ह पण, खेशे संयम जार ॥ नाकारों करवो निहं, मान्युं वचन तिवार ॥ ५ ॥ कोल देइने देवता, गया पोताने गम ॥ काल मा से देवथी च्यवी, जपन्या युगलपणे ताम ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ हास वीजी ॥

॥ दान कहे जग हुं वहुं ॥ तथा नणदखनी देशी ॥ मात पिता तत्र हरिख्यां, जनम्या पूरे सास हो ॥ जिविज ॥ १ ॥ अनुकर्मे ते महोटा पियुं, देवजड जशोजड तास हो ॥ जिविज ॥ १ ॥ अनुकर्मे ते महोटा थया, जण्या शास्त्र विचार हो ॥ जण्॥ मात पिता मन चिंतवे, हर्षे केम राखशुं कुमार हो ॥ जण्॥ १ ॥ ब्रह्मपुरी वासी नन्नी, विस्था तिण हिज गम हो ॥ जण्॥ साधुवीकें नगरी तजी, वर्षी पुत्र तेही कहें। ताम हो ॥ जण्॥ ३ ॥ मोकखा केश ने मुह्पची, मेखां वहा मेखां गांत्र हो ॥ जण्॥ हाथमां कोखी राखे व्ली, महि फांसी पाली कात्र हो ॥ जण्॥ ४॥ मुख मीठा घीठा घणुं, वस्त्र वींट्रीने राखे शस्त्र हो ॥ जण्॥ इसवे जोइ पगलां जरे, पण हे तेह कुपात्र हो ॥ ज०॥ य ॥ रंगरंगीखी पातरां, हाथ अमूलक लोट हो ॥ ज० ॥ नाम धरावे साधुजी, हैयामां राखे चोट हो ॥ त० ॥ ६ ॥ दीन हीन द्यामणा, पण मायाना पास हो।। तण ॥ दीसता अति इवला, म करशो तहनी विश्वास हो।। तण ॥ ७॥ देखी तुमें नासजो, आवजो आपणे गेह हो ॥ प्र० ॥ नहिं कां तमने मार्स, कापशे कान नाक तेह हो ॥ प्रण ॥ प्रणादिक वंधे करी, जोखवीया दोय बाल हो ॥ ज० ॥ जेम पशु पंखी शीखव्यां, शीखे तेहज चाल हो ॥ ज० ॥ ए ॥ चरमदारीरी जीवडा, मोहतणे वश होय हो ॥ ज० ॥ तरण तारण साधु नावने, फांसीया कहा ते सोय हो ॥ ज० ॥ १० ॥ धिक् धिक् माह विडंबना, जेहनी व्यवसी नीति हो ॥ जि ॥ मात पितार्थे जेम जोखव्या, कुंवर चाखे ते रीत हो ॥ जि ॥ ॥ ११ ॥ नगर जोवाने नीकस्या, तव दीठा व्यणगार हो ॥ जा ॥ बीके नाशी तर चड्या, पेखे सयख विचार हो ॥ जा ॥ १२ ॥ मुनि पण तरुतक्षे खावीने, साचवे साधुनी रीति हो ॥ प्रण ॥ ते देखी वैरागियां, तव मन थावी प्रीति हो ॥ ज०॥ १३॥ थहो ए जीव जयणा करे, ते दात हो ॥ त्रण ॥ १४ ॥ जहापोइ करतां थकां, जाति समरण खाध हो ॥ त्रण ॥ पूरव जब देखी करी, उतरी वांचा साध हो ॥ त्रण॥ १५ ॥ सफल थयों दिन आजनो, नेट्या महामुनि राय हो ॥ ज०॥ बीजी ढा खे एहवा, माख मुनि नमे पाय हो ॥ ज<sup>०</sup> ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ जाति समरण जपन्युं, जाण्यो सर्व विचार ॥ तप संजम पाद्यां हतां, ते दीठां तेणि वार ॥ १ ॥ काम जोगथी जजन्या, सांसारिक मुख जेह ॥ शिवसुख श्रि जिलाषी थया, जपनी श्रुद्धा एह ॥ श्रे ॥ वैराग्ये मन वािस्युं, जाप्यो श्रिया संसार ॥ परजव जातां जीवने, एक जिनधम श्रा धार ॥३॥ मात पिता ए केहनां, केहनां धन परिवार ॥ स्वारथनां सहुको सगां, नावे जीवनी खार ॥ ४ ॥ घर श्रावी कहे मातने, श्रवस्ति द्यो श्रीकार ॥ रख पामिया हवे श्रमें, क्षेत्रुं संयमनार ॥ ४ ॥ क्रमर त्यां

वयूणां सुणी, मात तात तेणि वार ॥ मोहतणे वशाने पड्या, ते सुणजो श्रुधिकार ॥ ६ ॥ माय कहे सुणो नानडा, एम केम वोलो वाण ।। श्रम मन आशा हे घणी, तुम दोय जीवन प्राण ॥ ॥ पुरोहित आमण इ मणो, घणुं षइ दिलगीर ॥ उत्तर प्रत्युत्तर घणा, नयणे करते नीर ॥ ७ ॥। ॥ ढास त्रीजी ॥

॥ आहे लालनी देशी ॥ सुणो वत्स माहरी वात, वेद वाणी साद्धांत ॥ आवे सास ॥ अपुत्रीयाने स्वर्ग वे नहीं ॥१॥ वेद जणी कुलसुत, होम यझ करी पुत्र ॥ त्र्याण्॥ वित्र जमाडो तुमें वेगद्युं ॥ २ ॥ परणी विख सो जोग, मिलयो सर्व संयोग ॥ आ०॥ युत्र थया संयम प्रहो ॥३॥ सुख़ विससोही नार, टाखी विषयविकार ॥ आण्॥ घरनार सोपी पुत्र ने ॥ ४ ॥ वखता दोनुं कुमार, तातने कहे सुविचार, ॥ आ० ॥ मिण्या वाणीयं कोइ निव तस्यो ॥ थ ॥ त्रणे वेद अपार ॥ न करे करणी खगार ॥ था। ।। वेद न तारे कोइ जीवने ॥ ६॥ करे वहुजीव संहार, ते जाये नरक मजार ॥ श्राण ॥ हिंसायें धर्म जांखे सही ॥ ॥ तेहने गुरुबुद्धि आण, कोइ जमाडे अजाण ॥ आण n माठी गति पामे सही ॥ ए॥ द्वःख आवे जेणि वार, टले न कोइ खगार॥आणा सगां संबंधी टग मग् जूवे॥ ए॥ होम यज्ञ निहं जेह, निव तारे जीवने तेह ॥ आ०॥ द यामें श्रात्महोम यक् हे ॥ १०॥ ए देह श्रनित्य संसार् जोगं श्रशु चित्रंकार ॥ आ० ॥ किंपाकफखनी वे जपमा ॥ ११ ॥ क्ष्णमात्रनां वे सुख, ते पामे बहुखां छःख ॥ छा० ॥ जोग छनर्थनी खाण हे ॥ १२ ॥ काया माया परिवार, स्वन्नागत संसार ॥ आ०॥ रमत वाजीगर सम श्रहे ॥ १३॥ वत्स विचारी जोय, जीव शरीर एक होय ॥ श्राण्॥ परनव फल कोण जोगवे ॥ १४॥ अर्णिमां अभि जेम, जीव कायामां हिन्तेम ॥ आ०॥ देह विण्से जीव विण्से नहीं ॥१५॥ वर्णादि सहित जे होय, पुजल विणसे सोय ॥ आ०॥ जीव श्ररूपी वर्णादिक नहीं ॥ १६॥ होम यक्रादिक वात, तो किम कस्त्रा अवदात ॥ आण्या जीव काया ते जूदां खते॥ १९॥ जव अमें हूता खजाए, तव मानी तुम्ह श्राण ॥ आ०॥ वात खोटी न समाचरं ॥ १७॥ जनम मरण जरा शेंग, छः खतणा हे संयोग ॥ व्याप ॥ रत्न पार्खं ग्रहवासमां ॥ १ए ॥ रात दिवस जे

जाय, ते तो क्षेत्रे न थाय ॥ श्राण ॥ धर्म विद्वूणो जाणो सही ॥ १०॥ एह संसार श्रसार, जोग श्रमुचि जंकार ॥ श्राण ॥ काया माया सर्वे कारमी ॥ ११ ॥ नर मुख विंडु समान, देव मुख उद्धि पिठान ॥ श्राण ॥ श्रम् जाएयां सर्व श्रसार, क्षेत्रुं संयम जार ॥ श्राण ॥ श्रमुमित दीवो मात सातजी ॥ १३ ॥ शाश्रता मुख नी चाह, हवे मन ए न मुहाय ॥ श्राण ॥ जनम मरणथकी उज्ज्या ॥ ॥ १४ ॥ ते माटे मूकुं संसार, हाल श्रीजी मुखकार ॥ श्राण ॥ मालमुनी कहे जावश्रुं ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ साची वात तें सुत कही, समज्यों धर्म विचार ॥ जीव कावा जूदां सही, पण मुक विनति अवधार ॥ १ ॥ हमणां आपण बेहु जणा, एक ठा विसय संसार ॥ पठी संयम खेशुं सही, करशुं उम्र विहार ॥ १ ॥ मि त्राइ होंवे मरणशुं, जम्र आवे फिर जाय ॥ खबर पडे जो मरणनी, तो मुक्रने पण खाय ॥ ३ ॥ अमर ठाप खिल नावीया, तो केम रहुं संसार ॥ साचो धर्म पाम्या पठी, न करंडील लगार ॥ ४ ॥ पत्र वयण एहवां सुणी, पुरोहित पाम्यो वैराग ॥ नारीप्रस्थं आवी कहे, ते सुणजो वडनाग्य ॥ ४ ॥ ॥ हास चोशी ॥

्या जीरण शेठनी सज्जायनी देशी॥ पुरोहित कहे नारी सुणो जी रे, पुत्र प्रम्या रे वेराग ॥ दीका खेशे ते सही जी रे, करशे संसारनो त्यागानारी जी रे॥ सांजलो माहारी वात॥ ए छांकणी ॥ १॥ पुत्र विना जुगतुं नहीं जी रे, रहेवुं छापणने संसार॥ योग वेला हे छापणी जी रे, तजीयें मोह विकार॥ नारी जी रे॥ सांजलो माहारी वात ॥ नारी जी०॥ १॥ तह शोले शाखें करी जी रे, शाख विण हुंठ छसार॥ पंत्री शोजे पांचे करी जी रे, पंत्र विण छुःल छपार॥ नारी जी०॥ १॥ वहाण वेपारी धने करी जी रे, धन विना शोच विचार भराजा शोजे सैने करी जी रे, सैनविण न शोजे लगार॥ नारी०॥ ४॥ तेम पुत्र विण हुं शोजं नहीं जी रे, छमें लेशें संयम जार॥ तय नारी कहे सांजलो जी रे, प्रीतम प्राण छाधार॥ प्रीतमजी॥ ४॥ पुत्र जाय तो जावा दीयो जी रे, छापण रहेशें ग्रहवास॥ जोगवाइ स एवे घणी जी रे, विक्रसीयें खील विसास॥ प्रीतम ॥ धंसार सुल हडी

मलां जी रे, जोगविषे छापणे जोग ॥ जुक्त जोगी थया पहे जी रे, लेहुं संयमनो योग ॥ प्रीति ॥ ७ ॥ जोग बहुला में जोगव्या जी रे, लांधा छा नंती वार ॥ तृति न पाम्यो ए जीवडो जी रे, ध्रमें केंद्रं संयमजार ॥ नारी ॥ ७ ॥ आर्य देश छत्तम कुले जी रे, पाम्या नर अवतार ॥ तप सं यम पाल्या विना जी रे, केम पामी यें जव पार ॥ नारी ॥ ए ॥ आपणे तो सुख जोगव्यां जी रे, धन्य एहनो अवतार ॥ हजीय लगण नाना वा खुडा जी रे, खीय हे संयमजार ॥ नारी ॥ १० ॥ तो केस रहे बुं माहरे जी रे, इण अवतर संसार ॥ चोथी ढाल सोहामणी जी रे, मालमुनि हितकार ॥ नारी ॥ ११ ॥ इति ॥

# ॥ दोहा ॥

॥ कर्मवर्शे सुख दुःख सह्यां, ते पण फह्यां न जाय ॥ के जाणे निज ष्ठातमा, के जाणे जिनराय ॥ १॥ संपदा सहु जीवे बही, न बह्यो धर्म प्रसंग ॥ ते योगवाइ मही हवे, निव मुक्कं सुतसंग ॥ १॥ निज निज स हु स्वारथ जुए, पण न जुए परनार्थ ॥ परजद जातां जीवने, कोइ राख वा न समर्थ ॥ ३॥ पुत्र दिना संसारमां, केम रहे स्त्री, जाण ॥ जसापत्नी वखतुं कहे, सांजछो जीवन प्राण ॥ ४ ॥ इति ॥

# ॥ ढाख पांचमी'॥

॥ हिरिया मन लागो ॥ ए देशी॥ संयम मारग दोहिलो, दोहिलो सा घु आचार रे ॥ श्रीतम सांजलो ॥ जूना हंसनी परें संजारशो, फ्रशो ह दय मजार रे ॥ श्री० ॥ र ॥ रोहित मत्स्यतणी परें, पुत्र ठेदी मोह जा ल रे ॥ नारीजी सांजलो ॥ दीका छे दोय बाखुडा, तो हुं केशुं संयम विशाल रे ॥ नारी० ॥ १ ॥ सेवक कहे राणी सुणो, नथी कोण्यो महा राज रे ॥ नारी० ॥ प्रोहित दीका खीये खठे, ते भन लावे छे खाज हे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तव राणी पूछे वखी, तस नारी खने पुत्र दोय रे ॥ ते पण चारित्र खादरे, राणी विमासें सोय रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मित्राइ हती माहरे, पण निव दाख्युं तेण रे ॥ कोइ केइनुं जगमां निहं, कूडुं सगप ण सेण रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खनित्यपणुं एम ध्यावतां, राणीने खपन्युं झान रे ॥ वैराग्ये मन वालियुं, तव समजावे राजान रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥

#### ॥ दाख केंद्री ॥ १

ा वीरो सांज्ञको ॥ ए देशी ॥ कहे राणी कमलावती रे, सुणो राजा इक्कार ॥ धनपरिवार तजी करी रे, पुरोहित खीये संयमचार रे ॥ १ ॥ कहे कमलावति।। ए छांकणी ॥ कमला कहे नरपति सुणो रे, पूर्छ प्रश्न ज एक ॥ उत्तर देजों तेहनों रे, आणी मनशुं विवेक रे ॥ कहे हैं ॥ र ॥ व म्या आहारने कोण इन्ने रे, दाखवो मुंजने रे तेह ॥प्रशंसी न हीय तेहनी रे, राथ कहे काग श्वान जेह रे ॥ कहें ।। शां ए धन सुवर्ण रयणनी रे, पु रोहित करे परिहार ॥ तमें पृथिवीपति राजीया रे, केम खेशी वस्यो आ हार रे ॥ कण ॥ ध ॥ सर्व जग होवे तुम घरे रे, जो सर्व धन तुम्ह होय ॥ तृप्ति न पामे तोहि जीवडो रे, त्राण शरण निव कोय रे ॥ कण ॥ ए॥ पर जुन चाले (स्त्रामी) तुमतणे रे, तो खीयो पुरोहित वित्त ॥तेतो राणी धन इहां रहे रे, तो केम करो अनीति रे ॥ कण ॥ ६ ॥ एक दिन मरवुं हे सुदी रे, ढांकी सर्वे रे आथ ॥ परजुव जातां जीवने रे, एक धर्म सखा यो साथ रे ॥ क० ॥ ७ ॥ विलंब न की जे धर्मनो रे, क्रण क्रण खूटे रे खाय ॥ धर्मविद्वणी जे घडी रे, ते तो निःफख जाय रे ॥ कण ॥ जे ॥ दश दृष्टांते दोहिसो रे, खाधो नर व्यवतार ॥ पामीने केम हारिये रे, जे हथी (छहियें) मुक्तिद्वार रे ॥ क०॥ ए॥ काम जोग में जोगव्या रे, खाधा वार अनंत ॥ तृष्ठि न पाम्यो जीवडो रे, चेतो वहु गुणवृंत रे॥ । कि ॥ १० ॥ आमिष सहित जेम पंखणि रे, पीडा सहै रे अपार ॥ तेम हुं नरपति केम रहुं रे, जाप्यों अधिर संसार रे ॥ क० ॥ ११ ॥ दव बलता जीव देखीने रे, बीजा हर्षित होय ॥ जाणे न होशे श्रमारडे रे, पण वसको अंते सोय रे ॥ क० ॥ १२ ॥ एम जग वसतुं देखीने रे, खामी नवि बुके रे जीव ॥ मरण तो एक दिन आवशे रे, तव मुकावशे धनादि सदैव रे ॥ कर्ण ॥ १३ ॥ जेम पंस्ती पंजर पड़्यों रे, देखे छःखं अपारं॥ तेमं मायावंधनमां पड़ी रे, निव पासुं रित खगार रे ॥ कंग॥ १४ ॥ कम खावतीने वयणके रे, बूज्यो राय इस्कुकार ॥ नगर राजस्त्री परहरी रे, धन सोवन रयण जंगार रें ॥ क० ॥ १५ ॥ पुरोहित पुत्र कलत्रशुं रे, राय राणी तेंणि वार ॥ सुगुरु मुखें वत उच्चक्यों रे, खेइ संयम करे विहार दे।। कण्या १६॥ तप जप संयम पालीने रे, जपन्युं केवल झान ॥ कर्म

खपावी मुक्तें गया रे, ढ जीव सुग्रणनिधान रे ॥ जिवयण सांजलो ॥
१९ ॥ उत्तराध्ययन ए सूत्रथी रे, चडदमे ढे विस्तार ॥ तेह्थकी में वर्ण
व्या रे, षटढाक्षें किर सार रे ॥ जि ॥ १० ॥ संवत छठार पंचावनें रे,
ज्येष्ठ विद त्रिज गुरुवार ॥ छंजार शहेर सोहामणो रे, खोंकागन्न सुखका
र रे ॥ जि ॥ १७ ॥ गन्नपति श्रीखूपचंदजी रे, तस शासन सुखदाय ॥
पूज्य नाथाजी पसाययी रे, मालमुनि ग्रण गाय रे ॥ जि ॥ १० ॥ इति ॥
॥ छथ श्रीमार्नासंहकृत कलावतीनुं चोढा ित्युं प्रारंजः ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वन्यो रे कुंवरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥ मालवदेश मनोहरु, तिहां नयरी उज्जेणी नाम हो ॥ नरिंद ॥ शंख राजा तिहां शोनतो, सहु शुन गुण केरं धाम हो ॥ नरिंद ॥ १ ॥ शीयलतणा गुण सांज्ञ हो । शियलें छ हियें वहुमान हो ॥ निरंद ॥ शीयकें सतीय कलावती, जेम पामी सुख प्रधान दो ॥ नरिंद ॥ शी॰ ॥ १ ॥ त्रणसो साठ सांहे वडी, खीखावती पटराणी कहेवाय हो ॥ नरिंद ॥ नेपाल देशनो नरपति, नामें जितशहु राय हो ॥ नरिंद ॥ शी० ॥३॥ जयसेन विजयसेन सुत जला, कलावती पुत्री उदार हो ॥ न० ॥ मालवपति शंखरायने, परणावी प्रेम अपार हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ४ ॥ पंच विषयसुख विखसतां, कखावती राय संघा त हो ॥ न० ॥ गर्ज रह्यो पुएययोगथी, हरख्यो नृप साते धात हो ॥ ॥ नं ॥ शी ॥ थ ॥ अघरणी उत्सव मां दियो, गीत गावे वहु मेली नार हो ॥ न० ॥ पेटी आवी पीयरथकी, कलावतीने तेणिवार हो ॥ न० ॥ शीण ॥६॥ शंकाती सहु शोक्यथी, खेइ गोपवी गोठण हेठ हो ॥ नणा एकांते ऊखेलतां, दोय वेहेरला दीठा दृष्ट हो ॥ न० ॥ शी० ॥ । नंग जड्यां मांहे निर्मलां, श्रंधारे करे जजवास हो ॥ नण्॥ नामांकित बेहु चातना, पेहरीने पामी जल्लास हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ७ ॥ खाट हिंमोले हिंचतां, वहेरखा जबुके जेम वीज हो ॥ नण ॥ दासी खीखावती तणी, देखी धरे दिखमां खीज हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ए ॥ कहो बाइ ए केणें दीयां, आजूषण दोय अमूख्य हो ॥ न० ॥ मुक्तने जे घणुं वालहो, तेणें दीधां ए वहुमूल हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १० ॥ दासी खीलावती जाणी, चांख्यो ते संघलो नेद हो ॥ न० ॥ सांजली क्रोधातुर थइ, उपन्यो चित्त

मां बहु खेद हो ॥ न० ॥ शि० ॥ ११ ॥ राणी प्रत्यें महीपित कहे, केले छहव्यां तुमने ब्याज हो ॥ न० ॥ बहुमूला तमे बहेरला, केम की धा कला वती काज हो ॥ न० ॥ शी० ॥ ११ ॥ में न घडाव्या बहेरला, तस खबर निहं मुज कांय हो ॥ न० ॥ पूढी निरित करो तुमें, सुणी लीलावती तिहां जाय हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १३ ॥ राय छानो छजो रह्यो, तव पूढे लीलावती तेह हो ॥ न० ॥ साचुं कहो बाइ कलावती, केलें दीधा बहे रखा एह हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १४ ॥ हुं घणुं जेहने वालही, तेणे मोक ख्या मुक्तनें एह हो ॥ न० ॥ रात दिवस मुक्क सांजरे, पण जाइ न कह्यो तेह हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १४ ॥ राजा कोधातुर थयो, सुणी कलाव तीनां वचन हो ॥ न० ॥ शीत पूरवला पुरुषद्यं, मूक्या ए तेणें प्रवृत्त हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १६ ॥ कोल दियो लीलावती जणी, दोयं बहेर खासेंती बांह हो ॥ न० ॥ विदावी तुक्कने दीयुं, सुणी पामी परम उत्सा ह हो ॥ न० ॥ शी० ॥ १९ ॥ इति ॥

### ॥ ढाल बीजी ॥

॥ सुण सुण रे गौतम समय म करीश प्रमाद ॥ ए देशी ॥ राय हुम म एहवो कखो जी, चंमाबने तेणि वार ॥ कलावती कर कापीने जी, खाणी द्यो एणी वार ॥ १ ॥ सुण सुण रे प्राणी, कर्म तणां फल एह ॥ ए खांकणी ॥ जन्मांतर जीवें किया जी, खावे उदय सही तेह ॥ सुण सुण रे प्राणी ॥ कर्म० ॥ १ ॥ सांजली अंत्यज थरहखो जी, चंमालीने कहे तेह ॥ राय हुकम रुडो नहीं जी, मूकीयें नगरी एह ॥ सुण० ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ पापणी कहे तुं शुं बीये जी, ए हे माहरुं काम ॥ शिर ना मी उजी रही जी, रायें खज दीयो ताम ॥ सुण ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ रथ जोडी रंका कहे जी, बेसो बाइ इण्मांह ॥ पीयर तुमने मोकले जी, राय घरी बहु चाह ॥ सुण ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ गिवयल माफा केहवा जी, स्याम दृषज विल केम ॥ पुत्र रहे निहं रायने जी, काघो कारण एम ॥ सुण० ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ रथ बेसारी रानमां जी, चाली उजड वाट ॥ सुके वन रथ होडियो जी, राणी पामी उचाट ॥ सुण० ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ पी यर मारग ए निहं जी, चांकाली कहे ताम ॥ राये मुकने मोकली जी, कर कापणने काम ॥ सुण० ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ जमणो पोतें हेदीयो जी,

मावो चंमालियें लीध ॥ वहेरला सहित वेहु यहे जी, आणी रायनें दी ध ॥ सु० ॥ कर्म० ॥ ए॥ नारीज्ञात नाम निरखतां जी, मूर्छाणो तत काल ॥ शीतल वाये सज्ज कर्छो जी, रोवे तव महिपाल ॥ सु० ॥ कर्म० ॥१०॥ किसी कुन्नति मुज उपनी जी, कीधो सवल श्रन्याय ॥ ए जीव्युं कोण कामनुं जी, राजरमणी न सुहाय ॥ सुण० ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ चय रचावी चंदनें जी, वलवाने तिहां जाय ॥ लोक मली वारे घष्टुं जी, व चन न माने राय ॥ सु० ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ इति॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वासाजीनो कुंखर लाबिलो ॥ ए देशी ॥ कलावतीने जे खयो, ते सुणजो प्रतिकार ॥ जिन प्राणी ॥ करतेदन नेदनथकी, सुत जनस्यो तेणि वार ॥ जविण॥ १॥ शीयलनो महिमा जाणीयें, शीयले संप त्ति याय ॥ नव ॥ ए आंकणी ॥ विष्न विषय भूरें टले, सुर नर प्रणमे पाय ॥ जण् ॥ ज्ञीण ॥ १ ॥ पुत्र प्रत्यें कहे पद्मिणी, शुं करुं ताहरी सार प्रण ॥ माहरी कुखें व्यवतस्यो, तुं निर्पाग्य कुतार ॥ प्रण ॥ शीण ॥ ॥३॥ अशुचिपणुं केम टालशुं, पालशुं ए केम वाल ॥ जण्॥ शौच करे रोवे वली, वन महोस्या ततकाल ॥ जा ॥ शीणा ४ ॥ शियलें सूकी नदी वही, पाणी आव्युं नजीक ॥ त्रण ॥ जाणे के जल लेइ जाय शे, वचें वेठी निर्त्रीक ॥ ज०॥ शीणा ५॥ आंटो देइ चिहुं दिशें, नदी वही दोय धार ॥ ज० ॥ वोले वांह नीची करी, जलमांहे तेणि वार ॥ जण्॥ ज्ञीण् ॥ ६ ॥ नवपञ्चव नवली यइ, बहेरखासेंती बांह ॥ न ॥ वीजी पण तिमहिज यह, पामी परम उत्लाह ॥ न ॥ शी ॥ ॥ ॥ अचरिज देखी आवियो, तापस एक तेणि वार ॥ जन। जन कनो मित्र जाणी करी, वोलावे सुविचार ॥ तण ॥ शीण ॥ ए ॥ रे पुत्री तापस कहे, एकली श्रटवी मजार ॥ तण ॥ केम श्रावी मुजने कहे, तव जांख्यो सघलो विचार ॥ त्र० ॥ शी०॥ ए॥ कोप्यो तापस एमं कहे, राजाने करुं उत्पात ॥ जण् ॥ कलावती तव विनवे, कोप म करो मुज तात ॥ जण्या शीण ॥ १०॥ तापसें तिहां विद्यावलें, अ वल रच्यो आवास ॥ तण ॥ कलावती सुत्युं तिहां, अहोनिश रहे जहास ॥ जण ॥ शीण ॥ ११ ॥ काठियारा तेणे अवसरे, देखी एह वि चार ॥ त्र० ॥ दोड़्या देवा वधामणी, राजाने तेणि वार ॥ त्र० ॥ श्रीणा ॥ ११ ॥ मंत्री श्ररज करे तिसे, सुणो राजन सुकुमाल ॥ त्र० ॥ श्रवधि दियो एक माकनी, खबर करुं ततकाल ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ एम क ही शोध करण चले, एहवे श्राव्या किंगत ॥ त्र० ॥ राणीनी विगत कही सवे, हरख्यो चित्त मजार ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ १४ ॥ सूकुं वन सवि मोरियुं, श्रुकी नदी वहे पूर ॥ त्र० ॥ राणीयें सुत तिहां जनिमयो, कर क्रग्या ससनूर ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ राजाने जइ विनव्यो, पा स्यो हर्ष विशाल ॥ त्र० ॥ राणीने तेडवा मोकल्यो, मंत्रीने ततकाल ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ राजाने जर मजार ॥ त्र० ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ श्री० ॥ श्री० ॥ १९ ॥ राजा नगर मजार ॥ त्र० ॥ त्र० ॥ श्री० ॥ १० ॥ १० ॥ श्री० ॥ १० ॥ १० ॥ श्री० ॥ १० ॥

॥ ढाख चोथी ॥

॥ आदर जीव क्सा ग्रण आदर ॥ ए देशी ॥ एक दिन राय राणी मन रंगें, वनमां खेलण जावे जी ॥ तव तिहां साधु धर्मधुरंधर, तेहनां दर्शन पावे जी ॥ १॥ जवियण धर्म करो मन शुद्धें, धर्में संपत्ति याय जी ॥ ए व्यांकणी।। धर्में मनोवं बित सिव हुवे, धर्में पाप पखाय जी ॥ त०॥ ॥ १ ॥ पाय प्रणमी साधुने पूढे, जगवंत मुक्तने जांखो जी ॥ राणी कर वेचा किण कारण, तेहनो उत्तर दाखो जी ॥ जण् ॥ ३ ॥ साधु ज्ञानी एणी परें बोखे, महा विदेहमां रहेतां जी ॥ महीं इपुरी नयरी नृप विक म, खीखावती विखसंतां जी ॥ त्रण ॥ ४॥ पुत्री प्रसवी रूप अनुपम, सुलोचना गुणखाणी जी ॥ विद्यावंत विदेशी सूडो, वदतो अमृत वाणी जी ॥ ज० ॥ ए ॥ सुक्षोचना सोवन पिंजरमां, सूडो घाली राखे जी ॥ गाहा गूढा नवली गावे, मनोहर मेवा चाखे जी ॥ जण्॥ ६॥ मनमां कीर विमासे एहवुं, पिंजर बंधन रहेवुं जी ॥ त्राश पराइ करवी खहो निश, परवश सुख न छेहवुं जी ॥ ज० ॥ ७ ॥ एक दिन पिंजर बार उघडियुं, पोपट तव निकलीयो जी ॥ वनमां तरु शाखायें बेठो, मन वंहित स्वि फलियो जी ॥ ज० ॥ ए॥ सुलोचना सूडाने विरहें, तत क्षण सृष्ठित थावे जी ॥ राजा पाश नखावी सूडो, बंधावीने खावे जी ॥ जण ॥ ए॥ रीषाणी सूडाशुं कुमरी, पांखों बेहु तस हेदें जी ॥ सूडो पण तनुमोह तजीने, जूख तृषा बहु वेदे जी ॥ न०॥ १०॥ शुज परिणामें सूडो चवीने, सुर खोके सुर थावे जी ॥ कुंवरी तस विरहें तमु सजीने, देवांगना पद पावे जी ॥ जण ॥ ११ ॥ सुरखोके सुर सुख वि सिनोने, इहांकणे राजा हूर्ज जी ॥ देवी पण ते त्यांथी चवीने, हुइ क खावती जूर्ज जी ॥ जण्मा ११ ॥ पूरव वैर इहां तुफ प्रगट्यो, तिण कार ए कर ठेया जी ॥ जन्मांतर कींधां जे जीवे, निव दूरे विण वेयां जी ॥ जण ॥ १३ ॥ राजा राणी सुणीने ततक्तण, जाति समरण झानें जी ॥ पूरव जव संपूरण देखे, तहित करीने माने जी ॥ जण ॥ १४ ॥ करम तणी गित विरुइ जाणी, वैराग्ये मन जीनो जी ॥ राजा राणी निर्मल जावें, संयम मारग खीनो जी ॥ जण ॥ १५ ॥ तप वल ध्यान शुक्क आराधी, जववंधन सिन ठोड्यां जी ॥ राजा राणी केवल पामी, शिवरमणी सुख जोड्यां जी ॥ जण ॥ १६ ॥ कलश ॥ एम छरित खंमण शीयल मं मण, आराधी शिवपद लह्यो ॥ संवत श्रहार पांत्रीश श्रावण, शुक्क पंच चमी दिन कह्यो ॥ खोंकाक्रिष श्री करमसी तस, शिष्य रंगे उच्चरे ॥ जजनगर जावे रही चोमासुं, मानसिंह जय जय वरे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्रथ श्रीश्रह्नकमुनिनो रास प्रारच्यतेः ॥
॥ टाल पहेली ॥ इनर श्रांवा श्रांवली रे ॥ए देशी ॥ सरसती सामिणी विनतुं रे, प्रणमुं श्रीकृषिराज ॥साधु शिरोमणि ग्रणनिलो रे, श्रह्निक कृषिराज ॥मुनीसर॥ गायशुं ग्रण गंजीर ॥१॥ मेक्तणी परें धीर ॥मुनीण॥ गाण॥ ए श्रांकणी ॥ तुंगीया नगरी सुंदरू रे, जितशत्रु नामें राय॥राज रीति चाले सदा रे, श्राण न लोपी जाय ॥ मुण ॥ गाण॥ श॥ तेणे नगरी व्यवहारियो रे, दत्त वसे शुन्न श्रंग॥दत्ता नारी तेहनी रे,पीथुशुं राती रंग ॥ मुण ॥ गाण ॥ ३ ॥ श्ररहन्नक सुत वालहो रे, चंद्रवदन सुकुमाल ॥ ल स्प वत्रीशें शोजतो रे, लीला लग्ज न्यूपाल ॥ मुण ॥ गाण ॥ ४॥ इण श्रव सर तिहां श्राविया रे, श्ररहन्नक मित्र सूरीश॥ दत्तरोठ वंदन चल्यो रे, धर्म सुणे मन हिंस ॥ मुण ॥ गाण ॥ थ॥ वैराग्ये मन वालियुं रे, दोहिलो ए श्रवतार ॥ श्रायंकुल देश मोटके रे, दोहिलो जन्म विचार ॥मुण। गाण। ६ ॥ जैनधर्म ते दोहिलो रे, दोहिलो साधु संयोग ॥राजकृक्षि पामी घणी रे, जव जव जामिनी नोग ॥ मुण। गाण।।॥ दत्त सुणी ते देशना रे, मन जीनो वैराग ॥ घर श्रावी ग्रहिणी जणी रे, तेह सुणावे लाग ॥ मुण॥

गाण ॥ उ॥ वलती बोली वालही रे, सांजलो जीवन प्राण ॥ पीयु पांले कोण माहरे रे, सुख इःख करो जाण ॥ मुण ॥गाण॥ण॥ बालक सुत माथे करी रे, लीधो संयम जार ॥ पंख विना शी पंखणी रे, कंथ विना शी नार ॥ मुण॥ गाण ॥ १० ॥ खांकाधार तणी परें रे, संयम सूधो पंथ ॥ आराधे जिन आण्छुं रे, दत्त नामें निर्मथ ॥मुण॥गाण॥११॥ कोमल काया न्हान हो रे, अरह क्रक क्षराय ॥ प्रेम धरी पाले पिता रे, आप गोचरीयें जाय ॥ मुण॥ गाण ॥ ११ ॥ बालक सुत बेठो रहे रे, तावड क्रण न खमाय ॥ वेयावच कर तातनुं रे, मोह न जीत्यो जाय ॥ मुण॥ गाण॥ १३ ॥ इण अवसर दत्त साधुजी रे, पाली निरतिचार ॥ परलाकें प्रहोता थया रे, बा लक कोण आधार ॥ मुण॥ गाण॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरहक्षक ठानो रडे, हायथकी मुख जीड ॥ पण जे नयणां नींग खे, तेह जणावे पीड ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग काफी ॥ प्रवहण तिहां ची पूरी युं रे लाल ॥ ए देशी ॥ अरह त्रक चित्त चिंतवे रे लाल, कोण करशे मुज सार हो तातजी ॥ अणी टली रणीयो चयो रे लाल, अवर न कोइ आधार हो तातजी ॥ अरणी १ ॥ पूरव परें सघलुं टल्युं रे लाल, बेठो रहेतो जेह रे हो तातजी ॥ सुनिवर विहरण पांगच्या रे लाल, साधुसंघातें तेह रे हो तातजी ॥ अरणी १ ॥ खरे बपोरे गोचरी रे लाल, नगर तणा पंच दूर रे हो तातजी ॥ तडतडता तडका पडे रे लाल, स्वेद तणां वहे पूर रे हो ताण ॥ अरण॥ ॥ ३ ॥ श्वास जराणो साधुजी रे लाल, धगधग धगते पाय रे हो ताणी तडके तन रातुं चयुं रे लाल, योवन सोवन काय रे हो ताण। अणा ४ ॥ पातुं फरी जोवे नहीं रे लाल, खागलनो अणगार रे हो ताण। आणा ४ ॥ पातुं फरी जोवे नहीं रे लाल, खागलनो आणगार रे हो ताण। आरह होय माहरो रे लाल, तो पडले तेणी वार रे हो ताण। आण ॥ ए ॥ अरह झक चाक्यो घणो रे लाल, बेठो हेठ आवास रे हो ताण। गोले धनवंत सुंदरी रे लाल, दीठो प्रेम विलास रे हो ताण। अण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ तिणि अवसर तले गोखनें, बेठो दीठो नार ॥ तरुणी तन मन उल्लस्यं, नयणें फलक्यं वारि ॥ १॥

#### ॥ ढाख त्रीजी ॥

॥ जंबूद्वीपना जरतमां ॥ ए देशी ॥ ते तरुणी चित्त चिंतवे, पीयु चा ख्यो परदेशें रे ॥ विरह दहे नव यौवना, प्राणी प्राण हुं खेशे रे ॥ १ ॥ मुनिवर देखी मन चढ़यो ॥ ए आंकणी ॥ रूपें दीवे रूअडो, चढती जो वन वारो रे॥ नयण वयणें करी निर्मलो, मयण तणे अनुसारो रे॥ मुनि ॥ १॥ तर यौवन घर एकखी, लाह तणो नहिं पारो रे ॥ चृतुर त्रियां चित्त चिंतवे, रहेवुं स्वेद्याचारो रे ॥ मुनिण ॥ रे ॥ आठ गुणो नरथी क ह्यो, नारी विषयविकारो रे ॥ लाज चन्नग्रणी चित्त घरे, साहसनो जंकी रो रे ॥ मुनिव ॥ ४ ॥ काज करे कुंजर समां, कीडी देखी करपे रे ॥ फूबें नारी वीही पड़े, साप सिराणे ऊड़पे रे ॥ मुनिण ॥ य॥ मन मधुकर ज़ं मतो घको, राखी न शके कोइ रे॥ पण माखती क्रण ज़ोगने, वन वन जमतो जोड्रे ॥ मुनि । ॥ ६॥ वाल सहेली मोकली, तेडाव्यो कृषि रायो रे ॥ ततक्ष ते उन्नी यइ, प्रमदा लागे पायो रे ॥ मुनि०॥ ७ ॥ शुं मागो स्वामी तुमें, कवण तुसारो देशो रे ॥ रूपवंत रखीयामणा, दी सो यौवन वेशो रे ॥ सुनि० ॥ ० ॥ तांत न की जें साधुनी, अमनें जिल्ला काजो रे ॥ च्रमरतणी परें आचरुं, देशविदेशनां राजो रे ॥ सुनिण ॥ ए ॥ तव घरणी घरमां गइ, हियडे हेज न मावे रे ॥ सिंह केरीसया साधुनें, मोदक लेश् वहोरावे रे ॥ मुनि० ॥ १० ॥ नेहृद्धें सन्सुख जुवे, आलस मोड अंगो रे ॥ अवला ते आतुर यइ, प्रगट कीयो मनरंगो रे ॥ सुनि० ॥ ११ ॥ हे गुणवंता साधुजी, जमवुं घर घर वारो रे ॥ दीक्ता छुष्कर पा खवी, विपसो तुम आचारो रे ॥ मुनि०॥ ११ ॥ महोटां मंदिर माखीयां, वृटी मांहे वासो रे ॥ सुखें रहो मेली करी, परघर केरी आज्ञा रे ॥ मुनि ॥ १३ ॥ किहां हिंकोला सोहामणा, फूलतणा महकारो रे ॥ किहां धरणी तल पोढवुं, कांकराद्युं व्यवहारो रे ॥ मुनिण ॥ १४ ॥ इति ॥

# ॥ दोहा ॥

॥ सुगुण सखूणा साधुजी, जमवुं देश विदेश ॥ रमतो मंदिरमालिये, जोवन लाहो लेश ॥ १ ॥ वोल सुणी अवला तणा, जिश्या मोर कंगार ॥ माद्यो पण जूल्यो घणुं, अरहन्नक अणगार ॥ २ ॥

# ॥ ढाख चोथी ॥

॥ राग जेतश्री ॥ यांको वीरो चारित्र खीये ॥ ए देशी ॥ महोख पधा रो मन रुखी, बलहारी तुम वेश ॥ मुनिवर ॥ गोद बिठाउं पाये पहुं, च खहो तो चलण न देश ॥ मुनि० ॥ महोल०॥ १ ॥ खाज न कीजें हो ख़ािक्खा, सरखो खही संयोग ॥ मुनि० ॥ बाखापण हे दोहिखं, केम ठीजे विण जोग ॥ मुनि ॥ महो ॥ १ ॥ ए मंदिर ए माखीयां, ए हिंमोला खाट ॥ मुण ॥ ए मोतीनां जुमलां, रयणजड्यां ए खाट ॥ मुण ॥ महोण ॥ ३॥ ए सोवननां सांकलां, रूपेरी रंग रोल ॥ मुण ॥ ए चो बारे चिहुं दिशें, हेम जड्या हिंगोल ॥ मुण्॥ महोण ॥ ४॥ ए लाखी णा र्टरडा, रयण जड्या पटसांख् ॥ मु॰ ॥ ए धन जोवन तुम वसु, आणंद सीस जुवास ॥ मु०॥ महो०॥ ए॥ मुनिवर चढीया मासीये, चाली गया व्यणगार ॥ मुण ॥ जामिनीशुं जीनो रहे, विरुष्ठं विषय विकार ॥ मुण ॥ महोण ॥ ६ ॥ कृण् चलवारे मालीये, कृण हिंमोला खाट ॥ मुण ॥ क्षण लाखीणे रहे, पूरे मननी श्राश ॥ मुनिण ॥ महोण ॥ ९॥ क्रण चांचडीयें चाखतो, ठमके ठवतो पाय ॥ मुण ॥ मुख मरकल डा मेखतो, मानिनी मोह जपाय ॥ मु॰ ॥ महो॰ ॥ ७ ॥ अबला आसंगें चढी, क्रण विरहो न खमाय ॥ मु०॥ जे जेहने मन मानीया, ते तहने मन राय ॥ मु॰ ॥ म॰ ॥ ए॥ खेले फूल तलाइयें, मेली सर्वें रीत ॥ मु॰ ॥ खालंगा खाघा थया, गंभी गुरुशुं प्रीत ॥ मु॰ ॥ महो॰ ॥ १० ॥ गोच रीयें चाख्यो हतो, जे आगल आणगार ॥ मुण्॥ तेणें पाढुं जोयुं जिसें, तिसें न दी वो खार ॥ मुण्॥ महोण॥ ११॥ उंचुं न जोयुं आगलें, पाढल जोयुं ने जोय ॥ मुण्॥ श्रारहन्नक दीसे किहां, नारी जोलाव्यो सोय॥ मुः॥ महोः॥ १२॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ नारी नयणें जोलव्या. जूखा पड्या अवेह ॥ हरि हर ब्रह्मा सारिखाः, इजीय न खाधा तेह ॥ १॥

॥ ढाख पांचमी ॥

॥ बे बे मुनिवर विहरण पांगस्या जी ॥ ए देशी ॥ तेणे रे छाणगारे क्षि जोयो घणुं रे, नयणें न दीवो किण्ही वाम रे॥ आचारिज आगल

श्रावी कहे रे, हुं श्रपराधी हुर्ज साम रे ॥ महारो श्ररहन्नक किए दीं गि नहिं रे ॥ १ ॥ जगवन् श्ररहन्नो जूलो पड्यो रे, वात सुणी ते मुनिनी मा य रे ॥ दत्ता द्वःख जरी ठाती फाडती रे, जीवन सुतने जोवा जाय रे ॥ महारो० ॥ १ ॥ मोहतणी गित दीसे दोहेखी रे, रोतीने जोती हीं में गा म रे ॥ जाडव खागो नयणां नींगले रे, मुख्यी न मूके सुतनुं नाम रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जूल न खागे तृवा जांगी गई रे, क्षण क्षण खटक हृदय म कार रे ॥ विरह विद्युद्धा पीड न को खहे रे, जेहमां छःख वहे निर्धार रे ॥ म० ॥ ४ ॥ घर ते पूछे विखखाणी यह रे, दीठो कोइ नानडीयो वेश रे ॥ खांधे तस खाखेणी खोवडी रे, मुनिवर रूपतणो सन्निवेश रे ॥ म० ॥ थ ॥ शरीयें शरीयें जोयो साधवी रे, फरि फरि फरीनें सो वार रे ॥ हरी हेरी घर घर मालीये रे, घरी घरी पूछे नार रे ॥ म० ॥ ६ ॥ वाल विठो ही हरणी जेहवी रे, छःख जरसेंती घेली थाय रे ॥ मोह विठोहा एणी परें दोहिला रे, रयणी दिन टलवलतां जाय रे ॥ म० ॥ इति ॥ ॥ दोहा ॥

॥ अरहन्नक एकण समय, प्रमदा पासें बेइ॥ गोख जरूखे माखतो, पासा रमण केंग्इ॥ १॥

## ॥ ढाल ग्रही ॥

॥ रं० ॥ ९ ॥ तन धन जोबन कारिमां रे, मूढ करे छहंकार रे ॥ रं० ॥ छाठे मदशुं चालता रे, ते पण गया निरहंकार रे ॥ रं० ॥ ए ॥ रावण सिरिला राजवी रे, लंकां सिरिलो कोट रे ॥ रं० ॥ रूठे कमें रोलव्या रे, रामचंदकी चोट रे ॥ रं० ॥ ए ॥ जे मूंठे वल घालता रे, करता मोडामो ड रे ॥ रं० ॥ तेह मसाणे संचस्वा रे, मान छध्रां ठोड रे ॥ रं० ॥ २० ॥ हुं जूलो जल छापथी रे, एह न जाणी रीत रे ॥ रं० ॥ छातम हित ठां की करी रे, परशुं मांकी प्रीत रे ॥ रं० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरहज्ञक जठी गयो, खेल अधूरो ठोड ॥ कामिनी टलवलती रही, माय नमे कर जोड ॥ १ ॥ हुं अपराधी तुमतणो, माय खमावुं तेह ॥ मोहतणे वश मालीये, जमतो नवले नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल-सातमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ वत्सतणां सुणि वयणलां रे, रोमांचित यया देह ॥ विकलपणुं वेगे गयुं रे, घूधे वूठा मेह रे ॥ नं दन॥ शुं की धुं तें एह ॥ १॥ स्वारथ सहुने वालहो रे, स्वारथ सूधो सं ग ॥ सोही स्वारथ छाणपूगते रे, सहु छापणडे रंग रे ॥ नं० ॥ छुं० ॥ १ ॥ निःस्नेहा मुख मीउडा रे, तापे मननुं हेत ॥ काची कखी कणेयरतणी रे, तन रातो मन श्वेत रे ॥ नं० ॥ शुं०॥ ३॥ काज सत्वां पुःख वीस स्यां रे, ए प्रमदानी प्रीत ॥ जनम जीवित जेहने दहे रे, ते विरक्षानी नीत रे ॥ नंणा शुंण ॥॥। प्रेमतणां फल पाडुआ रे, प्रत्यक्त दीसे दाह ॥ प्राण तपे निद्धा खपे रे, नित्य नवो उमाह रे ॥ नं ।। शुं ।। ए॥ रूपें न राचो रूखडा रे, गुणे राचो गुणवंत ॥ इंडवारुणी फल फूटरां रे, जहेर ज खां एकंत रे ॥ नं ।। ग्रुं ॥ ६ ॥ अंतरजामी आपणा रे, जीव समाणा जोय ॥ ते पण वोलावी वले रे, साथ न त्यावे कोय रे ॥ नं० ॥ ग्रुं० ॥॥ साथ न आवे सुंदरी रे, साथ न आवे आथ ॥ ऊठी जावुं एक बुं रे, ठा ला लेश हाथ रे || नंग || ग्रुंग || ग। करकं मू जे जेहने रे, ब्रह्मदत्त चक्री जोय॥ चित्र वचन मान्युं नहीं रे, सातमी पहोतो सोय रे॥ नं०॥ ग्रुं० ॥ ए॥ जे आराधे जिनतणो रे, सुरतरु धर्म सुजाण ॥ फल अजरामर ते लहे रे, मीठां अमिय समान रे ॥ नंण ॥ द्युंण ॥ रण ॥ इति ॥

## ॥ दोहा ॥

॥ संवेगी शिर सेहरो, वैरागे मन वालि ॥ छोडी मंदिर नवलखां, जन चाल्यो ततकाल ॥ १ ॥ ते तरुणी तरबी रही, मेली गयो मुणिंद ॥ मेह विना जेम वेलडी, जेन चकोरी चंद ॥ १॥

॥ ढाल श्रावनी ॥

॥ वरसालानी देशी ॥ अरहन्नक जतावलो, जइ जेट्यो गुरुराय विचा र॥ दीका शिक्ता फरी बही, फरी लीधो रे मारग निरतिचार के॥ १॥ नेट्यो रे गुरुराज, तेले सास्यां रे खापणडां काज के ॥ नेट्योण ॥ गुरु दी ये शिक्षा साधुनें रे, पाले निरतिचार ॥ प्रेमवंधन हे पाडुआं, तेणें कीजें रे जद्यम विचार के ॥ जे०॥ १॥ के गिरि वनखंम साधु जी, साधीयें संयमयोग ॥ गालियें यौवन आपणुं, निव धरीयें चिंता ने शोक के ॥ ने ॥ ३॥ जोलपणे जोशीश्वर थयो, आतम बार अनंत ॥ जामिनी शुं नीनो रह्यो, निव छाट्यो रे छाज लगें छंत के ॥ नेट्यो०॥ ४॥ प्रण मीने प्रजुशुं कहे, स्वानी सुणो अरदात ॥ काया कायर माहरी, सुज दीनें रे अण्सणनी आश के ॥ जेट्यो॰ ॥ ४॥ लाख चोराशी खामीनें, तेणें लीधुं अणसर सार ॥ अनुक्रमें पाली आजखुं, अवतरियो रे सुवि मानमजार के ॥ जेट्यो० ॥ ६ ॥ जिनतणी शीख सोहामणी, जे करे कुल अवतंस ॥ ते बहे लीला आणंद्युं, जेम विलसे र गंगाजल हंस के, ॥ जेट्योण ॥ ७ ॥ संवत सत्तर चिडोत्तरे, वड खडतरगरू वास ॥ गणि महिमासागर हित वडे, आणंदे रे कह्यो रास विलास के ॥ नेट्योण ॥ण॥ ॥ अथ कासकंदर्पनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ करेखडां घड दे रे ॥ ए देशी ॥ कामिवकारें मानवी रे, करे कुकर्म अनेक ॥ काम करेवा कारणे, विरमे आप विवेक ॥ १ ॥ कामी नर वर्जजो रे ॥ कामह केरा विकार, कामी नर वर्जजो रे ॥ ए आंकणी ॥ कामवशे जे वाहीया रे, पाम्या छु:ख अपार ॥ खंपट थयो खंकापति, अवलेही स्व आचार ॥ कामी०॥ १॥ काम थकी सीता हरी रे, खाव्यो रावण खंक ॥ दशशिर रामे ठेदीयां, काम तणा ए वंक ॥ कामी०॥ ३॥ पद्मोत्तर औपदी हरी रे, पांनव पांचनी नार ॥ कृष्णवलें लेइ आविया, बूट्यो ते राय थइ नार ॥ कामी०॥ ४॥ काम विकल हुइ कामि

नी रे, ते स्रीकंता नार ॥ निजपतिने हाथे हत्यो, पहोतो ते स्रगं मजार ॥ कामीण॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त निज सुत उपरें रे, कीथो एकत्र प्रपंच ॥ चूकी चूलणी मारवा, कामह केरा ए संच ॥ कामीण॥ ६ ॥ इत्यादिक कामें करी रे, पाम्या जुःख अठेह ॥ एणे जव तो खंपटीतणुं, नाम धरावे तेह ॥ कामीण॥ ७ ॥ परजव तो नरकें पचे रे, नाम थकी ए जीव ॥ मुनि जू धर कहे प्राणीया, वर्झों काम संदेव ॥ कामीण॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ अथ नेमराजुलनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ जोषी ताहारा फतडामां जोय, केटले दाहाडे हे हांजो मारु आ वशे जी ॥ ए देशी ॥ गोलंमें सखीयो संघात, राजुख निरखे हें पीयुने श्रावतां वेगलो जी ॥ बेनि सुणोने एक वात, सरखीने जोडी है बाइ रे वर शामलो जी ॥ १ ॥ काला हो मेघ मलार, काला कृष्णागरु हे अंजन शोहे आंखडी जी ॥ रंगें रमो मेखि सखी आज, परणीने काले हे सास रीये जाशो वही जी ॥ १ ॥ मुक फरके दाहिण अंग, लगनमां विघनज हे बेनी रे होशे सही जी ॥ राजुल सुण ससनेह, वांठित फलशे हे बा इ रे बोलो एम निहं जी ॥ ३॥ तोरण आव्या जब नेम, पशुत्र पेली ने हे पूढे रे सारियप्रसें जी ॥ सारिय कहे सुणो खानि, लगन प्रजाते हे हण्यो रे गोरवप्रत्यें जी ॥ ४॥ धिग् होजो एह संसार, मुफने पर णंतां हे हिंसा रे होशे घणी जी॥ पशु ठोडाव्यां प्रजु नेम, रथडो वाली ने हे चाढ्या रे खामी घरजणी जी ॥ थ॥ प्रज संवत्तरी देइ दान, स हस पुरुषशुं हे संयम क्षेत्र गिरिवर गया जी ॥ चोपन दिन मुनि राय, घाती खपावीने हे केवलमय प्रजुजी थया जी ॥ ६ ॥ जूवे ते राजुल नार, रयडो वालंता हे देखीने धरणी ढली जी ॥ जनके सचेतन कीथ, परणावुं बेटी हे नेमधी वर जलो वली जी ॥ ए॥ सुणी करि चवे निज कान, तातजी माहरे हे अवर बांधवने पिता जी ॥ अष्ट जवनी स्वामी प्रीत, नवमे ठोडीने हे वहारे सुर केम जता जी।। ए।। उत्तमनी नहिं ए रीत, विण अवगुणें हे होड़ी रे खामी तुम गया जी ॥ मुक त्यजी पीयु तमें नार, बीजी वरीने हे त्रीजीने जजता थया जी ॥ ए॥ एमक हेती सखीयो संघात, मार्ग जातां हे घणेरी सखीथी जुइ यई जी॥एकखी राजुल नार, गिरनार चढीने हे सुकायां चीर गुफा जह जी॥ १०॥ रह

नेमी धरता ध्यान, राजुल पेखी हे चूको ते संयमथकी जी ॥ हुं जमसे ननी कुमारी, नेम विना श्रवर हे जजती रे नथी मनथकी जी ॥ ११ ॥ जाजी म धरशो श्रंदेश, नेमने स्थानक हे विल्तो रे श्रमशुं सही जी ॥ ए यौवन जरपूर, लाहो लीजिये हे चालो रे जाजी घरे जइ जी ॥ ११ ॥ रहनेनीनां सुणी वयण, राजुल जंपे हे देवर सुणो माहरा जी ॥ एहवो जोग श्रिथर संसार, संयमरत्वज हे लोडीने पड़ो सायरा जी ॥ १३ ॥ वम्यो न लीजें रे श्राहार, विषयशुं वंची हे तुम वांधव मूकी गया जी ॥ एहवी सतीनी सुणी शील, नेम कने जइनें हे फरी रे ते संयती श्रया जी ॥ एहवी सतीनी सुणी शील, नेम कने जइनें हे फरी रे ते संयती श्रया जी ॥ १४ ॥ दीका लीधी नेमजीने हाथ, संयम लइने हे फरी फरी करी तप स्या घणी जी ॥ श्रंते केवलधारी होय, पीयु पहेली पहोती हे राजुल तो मुक्ति जणी जी ॥ १५ ॥ वेहु मल्या मुक्ति मजार, श्रवहड प्रीतडी हे वांधी रे वेल सुल लते जी ॥ एहवा सतीना ग्रण्याम, पूज्य नाथाजीना हे मल्या रे वंदे नित्यप्रसें जी ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अय आत्मशिक्ता सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ करेंखडां घडी दे रे ॥ ए देशी ॥ जिंवक जन जज ले रे, जज जज जग जग जग ते ॥ जिंव ॥ तुं तजी दे मोह अक्षान ॥ जिंव ॥ तुं तो देने सुपात्रें दान ॥ जिंव ॥ सुण ले सद्गुरु वाण ॥ जिंव ॥ ए आंकणी॥ जो दिन रयणी जात है, सो तो फिर निहं आय ॥ सूरख चित्त चेते निहं, अंजली जलके न्याय ॥ जिंव ॥ १ ॥ तेंतो जन्म मरणें करी, फरश्यो सव संसार ॥ अव मानव जव पायकें, सफल करो अवतार ॥ जिंव ॥ १ ॥ तन धन यौवन कारिसुं, कारिमो सव संसार ॥ कारिमो संग विचार कें, मानव जन्म म हार ॥ जिंव ॥ ३ ॥ कवढुं सुली कवढुं छुःली, कतु राजा कतु रंक ॥ कत्र् न सटे जगतमें, कर्म लख्यो जे अंक ॥ जिंव ॥ ४ ॥ कोध मान माया तजो, वजों विषयप्रसंग ॥ पांचे इंडिय वश करो, फींपो सवल अनंग ॥ जिंव ॥ ५ ॥ पूरव पुण्य विना किये, कहो किहां सुल होय ॥ बोवे बीज वव्यूलके, अव कहां सें सुल होय ॥ जिंव ॥ ६ ॥ एह मायाके मामले, मूल रहेहे जूत ॥ दीप करेगो तो हिये, मान वचन तुं सूत ॥ जिंव ॥ । मोहवशें सव जीत्रे, सिले वटाऊ आय ॥ हिल मिल शीख न करि शके, आण्वोख्या उठ जाय ॥

प्रविण ॥ ए ॥ कहा करे ज्ञानी प्रखो, कहा करे छाज्ञान ॥ मोहरायके राजमें, कहेनुं न रह्युं मान ॥ जिवि ॥ ए ॥ संबहुं करमसें जिन कह्युं, मोहकर्म डु:खदंद ॥ दोस्रो तरत इनन त्रणी, कीनो मारण संच॥ त्रण॥ १०॥ दीर्घराय चूलणी मली, कीनो मारण संच ॥ ब्रह्मदत्त च क्री जाणी, देखो मोह प्रपंच ॥ जविण ॥ ११ ॥ कृष्ण कलेवर लइ जम्यो, राम बमासी विदीत।। वन गिरि कुंजन कुंजमें, ए ए मोह कुरीत।। न विण ॥ ११ ॥ गर्जवासमांहे हस्यो, खे तव एसो नीम ॥ माता पिता ज्व जीवते, व्रत खेवानी सीम ॥ जवि० ॥ १३ ॥ नमो नमो या मोहकूं, मोह सबल कम राथ ॥ िबनमां हे महावीरके, दीनो जेहने घाय ॥ जिवि ॥ ॥ १४ ॥ मोह कर्म वत्स तुम तजो, जेम होये अशरीर ॥ इणविध बहु परें शीखवी, गौतमने माहावीर ॥ जविष् ॥ १५॥ दीका लीधी जावशुं, होडी सब घरवास ॥ वरस चोवीश घरें रह्यो, सो फरि आई कुमार ॥ जविण्॥ १६॥ श्रृक्षिजडकूं देखके, मन्न करो मत कोय ॥ सिंहगुफावासी मुनि, चूको वेदया जोय ॥ जविण्॥ १७॥ पुत्र मरण मूलक सभे, सिक्जंजव गणधार ॥ डुःख धरी निज चित्तमें, डुजेय मोह विकार ॥ निविण ॥ १७॥ वात सकल या मोहकी, मुखे कह। निव जा य ॥ प्रश्नचंद्र शुजध्यानथें, देव इंदुनि गवाय ॥ जविण ॥ १ए॥ क्रि ठांभी वत खादखं, मन वैराग्य संजाल ॥ सो मोहे विल नोलव्यो, वीर जमाइ जमाल । जिवि ॥ २० ॥ अब तो मायामें पड्यो, जाएत नहीं खगार्॥ पठतावेगो प्राणीयो, वीठडवानी वार ॥ चविण॥ ११ ॥ छरि हंत किहां चक्रवर्ति किहां, जामें बल असमान ॥ एसेंन्री स्थिर नां रहे, तुं तो केहे ज्ञान ॥ जविष् ॥ १२ ॥ स्वारथको सबको सगो, खारथको सब नेह ॥ जो स्वारय पूरो नाईं, विनमें देखाडे वेह ॥ जवि०॥ १३॥ जैसा चंचल पवन है, तैसी मनकी दोर ॥ गुरुके वयण विचारके, ले रा खो एक ठोर ॥ जविष् ॥ १४ ॥ पांचे इंडिय वहा करो, वारो विषय कषाय ॥ आतम् जंपो आपणो, इणविध बहु समजाय ॥ त्रवि० ॥ १५ ॥ ए हि तशीख विचार के, यहो सकल नर नार ॥ लावत्यकीर्ति संपदा, ज्युं पामो जव पार ॥ जवि ॥ १६ ॥ इति आत्मशिक्ता समाप्ता ॥

॥ श्रथं श्रीजंबूकुमारनुं चोढाखीयुं पारंजः

॥ दोहा ॥ सरसित पदपंकज नमी, पामी सुग्रुरु पसाय ॥ ग्रुण गातां जंबुस्वामिना, मुज मन हर्ष न माय ॥ १ ॥ यौवनवय व्रत आदरी, पाले निरितचार ॥ मन वच काया शुद्धशुं, जाउं तस बिखहार ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ प्रवहण तिहांथी पूरीयुं रे लाल ॥ ए देशी ॥ राजयही नगरी जली रे खाल, बार योजन विस्तार रे॥ जविकजन ॥ श्रेणिकनामें नरेसरू रे लाल, मंत्री श्रत्रय कुमार रे ॥ त्रण॥ १॥ जाव धरी नित्य सांजलोंदे खाल ॥ ए आंकृणी ॥ क्षत्रदत्त व्यवहारीयो रे खाल, वसे तिहां धनवंत रे ॥ जण् ॥ धारणी तेहनी जारया रे लाल, शीलादिक गुणवंत रे ॥जणा ॥ जावण ॥ १ ॥ सुख संसारनां विखसतां रे लाल, गर्ज रह्यो शुजदिन्न रे ॥ ज० ॥ सुपन बही जंबुवृक्ततुं रे खाख, जनम्यो पुत्र रतन्न रे ॥ ज० ॥ नावण ॥ १ ॥ जंबुकुमर नाम स्थापीयुं रे लाख, स्वमतणे अनुसार रे॥ त०॥ अनुक्रमें यौवन पामीयो रे लाल, हुर्ड गुणनंमार रे ॥ त० ॥ जावण ॥ ४॥ यामानुयामें विचरता रे खाख, खावीया सोहसस्वामि रे ॥ प्राचीयां रे लाल, साथें जंबु गुण्धाम रे ॥ प्राचीयां रे लाल, साथें जंबु गुण्धाम रे ॥ प्राचीयां रे ॥ ना० ॥ ए ॥ निवक जनना हितन्नणी रे खाख, दीये देशना गुणधार रे॥ जण्॥ चारित्र चिंतामणि सारिखुं रे लाल, जवडुःख वारणहार रे ॥ त्रण ॥ त्राण ॥ ६ ॥ देशना सुणी जंबु रीजीया रे लाख, कहे गुरुने कर जोडि रे ॥ तृ ॥ अनुमति लेइ मात तातनी रे लाख, संयम लीयो मन कोड रे॥ जनिण्॥ जानण॥ ७॥ इतिण्॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ इनर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥ ग्रुरु वांदी घर आवीया रे, पा मी मन वैराग ॥ मात पिता प्रत्यें बीनवे रे, करशुं संसारनो त्याग ॥ १ ॥ माताजी, अनुमति द्यो मुज आज ॥ जेम सीफे वंदित काज ॥माताजी ॥ ॥ अनुमति ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पंथ हे दोहिलो रे, वत हे खांडा नी धार ॥ लघु वय हे वत्स तुम तणुं रे, केम पले पंचाचार ॥ कुमर्जी, वतनी म करो वात ॥ तुं मुफ एक अंगजात ॥ कु० ॥ व० ॥ १ ॥ एक खविहारें विचरतुं रे, रहेवुं वन नद्यान ॥ त्रूमिसंथारे पोढतुं रे, धरवुं धर्मनुं ध्यान ॥ कुमण ॥ व्रतण ॥ ३ ॥ पाय ख्याष्ट्रवाणे चालवुं रे, फरवुं देश विदेश ॥ बीरस खाहार लेवो सदा रे, परिसह केम सहीश ॥ कुमण ॥ व्रतण ॥ ४ ॥ कुमर कहे माता प्रत्ये रे, ए संसार ख्यसार ॥ तन धन यो वन कारिमुं रे, जातां न लागे वार ॥ माताण ॥ खनुण ॥ ५ ॥ माता कहे खाल्हादथी रे, वरस परणो शुज नार ॥ योवन वय सुख जोगवी रे, पत्नी लेजो संयमजार ॥ कुमण ॥ व्रतण ॥ ६ ॥ मात पिता खामह करी रे, परणावी खाने नार ॥ जलवी कमल जेम जिन्न रहे रे, तेम रहे जंबु कुमार ॥ कुमण ॥ व्रतण ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ हाल त्रीजी ॥

शा सखीरी आव्यो वसंत, अटारडो अटारडो ॥ ए देशी ॥ सनेही प्रीतमने कहे कामिनी कामिनी, सुणो खामी अरदास ॥ सुण्णिजन सां जालो ॥ सनेही अमृत स्वाद मूकी करी ॥ मृण् ॥ कहो कोण पीवे बास ॥ सुण ॥ र ॥ सनेही कामकखा रस केखवो ॥ केण ॥ मूकोजी वतनो धंध ॥ सुण ॥ सनेही परणीने शुं परिहरो ॥ परिण् ॥ हाथ मेख्यानो सं बंध ॥ सुण ॥ सनेही चारित्र वेद्युकवल जिश्युं ॥ कवण ॥ तेमां किश्यो सवाद ॥ सुण ॥ सनेही जोग सामग्री पामी करी ॥ पाण् ॥ जो गवो जोग आहाद ॥ सुण ॥ सनेही जोग सामग्री पामी करी ॥ पाण् ॥ जो गवो जोग आहाद ॥ सुण ॥ सनेही ते रोगने शमाववा ॥ शण ॥ चारित्र वे रे रसांग ॥ सुण ॥ सनेही किंपाकफल अति फूटरां ॥ फूण ॥ पत्र वे रे रसांग ॥ सुण ॥ सनेही विष पसरे जब अंगमां ॥ श्रंण ॥ त्या रे होवे अनिष्ट ॥ सुण ॥ स ॥ सनेही दीप ग्रही निज हाथमां ॥ हाण ॥ कोण ऊंपावे कूप ॥ सुण ॥ सनेही नारी ते विषवेलडी ॥ वेण ॥ वेष फष विषयं विरूप ॥ सुण ॥ स ॥ सनेही एहवुं जाणी परिहरो ॥ पण ॥ संसार मायाजाल ॥ सुण ॥ सनेही जो मुक्युं तुम नेह वे ॥ नेण ॥ तो वत खो थइ जजमाल ॥ सुण ॥ स ॥ इति ॥

॥ ढाख चोथी ॥

॥ नमो नमो मनक महामुनि ॥ ए देशी ॥ एहवे प्रजवो खावीयो, पांचशें चोरनी संगरे ॥ विद्याये तालां उघाडीयां, धन लेवाने उमंगरे ॥ १॥ नमो नमो श्री जंबुखामीने ॥ ए खांकणी ॥ जंबुये नवपद ध्यान थी, यंज्या ते सवि दंत्र रे ॥ यंजतणी परें स्थिर रह्या, प्रजवी पाम्यो छ चंज रे ॥ नमोव ॥ प्रज्ञचों कहे जंबुप्रत्यें, चो विचा मुफ एइ रे ॥ जं बु कहे ए गुरुकने, वे विद्यानं गेह रे॥ नमोण ॥ ३ ॥ पणसय चोर ते बूजवी, बूजव्यां माय ने ताय रे ॥ सासु ससरा नारी बूजवी, संयम सेवा जाय रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ पंचतया सत्तावीशशुं, परवस्त्रो जंडुकुमार रे ॥ सोहन गणधरनी कने, खीये चारित्र उदार रे ॥ नसोव ॥ थ ॥ वीरथी वीसमे वरसे, यया युग प्रवानो रे ॥ चौद पूर्व अवगाइीनें, पाम्या केवलज्ञानो रे ॥ नयो० ॥ ६ ॥ वरस चोशत पदवी जोगवी, स्था पी प्रजन स्वामी रे ॥ अप्र कर्ननो क्य करी, थया शिवगतिगासी रे ॥ नमो०॥ ७ ॥ संवत अढार तेरोत्तरे, रह्या पाटण चोमास रे ॥ चरम केवलीने गावतां, होये लीलविलास रे ॥ नमोण ॥ उ॥ महिमा सागर सद्गुरु, तास तणे सुपलाये र ॥ जंबुस्त्रामी ग्रुण गाइवा, सीनाग्ये ध रिय जरसाइ रे ॥ नमो० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ श्रथ श्री नेलराजुलनो वारमालो प्रारंजः॥

।। सरसति सामिणी विनवुं, गोयम खाग्रं रे पाय ।। राजुल नारी रे वीनवे, वे कर जोडी रे आय ॥ १ ॥ तें मन मोह्युं रे नेमजी, बोले राजुल नार ॥ कंता कां रथ वालीयो, छाज्यो तोरण वार ॥ तें । ॥ २ ॥ वे कर जोडी रे वीनवुं, श्रीतम खाग्रं रे पाय ॥ नारी नरजव केरडी, कां मुक मेलीने जाय ॥ तें ॥ ३ ॥ गज रथ घोडा रे वे घणा, पायक संख्या न पार ॥ जोतां जान तुमारडी, हियडे हर्प अपार ॥ तेंण ॥ ४ ॥ कुंम स सोवन केरडां, हैयडे नवसरो हार ॥ चढीने गयवर ऊपरे, सोहे सव शणगार ॥ तें ।। ए ॥ मंदप महोटा रे मां िया, नाचे नवलां रे पात्र ।। थानक थानक घोकडे, जोवा सरखी हे जान ॥ तें ॥ ६ ॥ माने वसन इ कानजी, माने महोटा रे जूप ॥ सुर नर सेवे रे सामटा, ताहरूं अक ल स्वरूप ॥ तेंण ॥ ७ ॥ साव सुरंग्रं रे सासरं, पीयर पनोती माय ॥ कर्भें खख्युं जे तिम करुं, पीयुनुं योवन जाय ॥ तें ॥ ७॥ यादव कोडीयें रे परिवर्त्वां, सार्थें दशे दसार ॥ नेमजी गयवर चढीया, छाव्या तोरण वार ॥ तें० ॥ ए ॥ स्वामी पूढे रे सारिथ, ए इया निरया रे वाड ॥ तुम प्रजातें रे परगडो, होशे पशुडानो घात ॥ तें० ॥ १० ॥ हरएी वोले रे

हरणला, तें कां की धो रे पोकार ॥ रहे रहे बानो रे बूटशुं, आब्यो नेम कुमार ॥ तें ॥ ११ ॥ सावर बोले रे सावरी, सांजल सुंदरी वात, ॥ जा यां जोशुं रे व्यापणां, व्याव्यो त्रिजुवन तात ॥ तें ।। ११॥ रोज जणे सुण रोजडी, घडि घडि जयस न याय॥ आव्यो देव दयासुर्व, हैयडे हर्ष न माय ॥ तेंण ॥ १३ ॥ कालो घोडो रे कांबलो, सामलीयो असवार ॥ नेम जी घोडो रे वालीयो, जइ चढ्या गढ गिरनार ॥ तेंग ॥ १४ ॥ स्वामी पूर्व सुण सारिय, आ स्था जरिया रे बाड ॥ सावज मुक्या रे मोकला, वेगे वली रथ वाल ॥ तें ।। १५॥ निज निज ठामे रे ते गया, बोले मधुरी रे वाण ॥ कोडी वरसां रे जीवजो, राजुल प्रीति निर्वाण ॥ तें ॥ १६ ॥ नेमजिनेसर विनवे, नाहीं संसारनुं काम ॥ एक स्त्रीने रे कारणे, एवडो पशुष्टांनो घात ॥ तें ॥ १९ ॥ वरसी दानज वरसीयो, प्रथवी करण की ध ॥ चढीयो गिरनारें जङ्, तारक चारित्र खीध ॥ तें ।। १०॥ गाजी वा जी रे गडगड्यो, वूठो गढ गिरनार ॥ सहसावन सरोवर ज्रखं, तरषी राजुल नार ॥ तेंण्॥ १ए ॥ हयवर हींसे रे हंसला, गर्यवर बांध्या रे बार ॥ जोग जली पेरे जोगवो, रूडी राजुल नार ॥ तें ।। २० ॥ कहो केम कीजे रे साजना, कर्मने दीजें रे दोष ॥ कारण विद्वणी रे परहरि, ए हुं एवडो रे रोष ॥ तें० ॥ २१ ॥ आपे की घो रे उरतो, होपी अविचल वाट ॥ पाप तो की धां रे में घणां, धर्म न वाही रे वात ॥ तें०॥ ११॥ रंजा सरखी रे छंगना, ते कां मूकी रे नेम ॥ पंच विषय सुख जोगवो, बोले शिवादेवी एम ॥ तें० ॥ १३ ॥ राख़ी माता रे मानले, राखी नहिं हा रे कीध ॥ राखे राजुल केटलां, राखे बलनड ज्ञात ॥ तें० ॥ २४ ॥ सुण सुण माहारी रे मावडी, एम बोखे जिनवर नेम ॥ कारिमो रंग पतंगनो, ते रंग धरियें केम ॥ तें ।। १५ ॥ राजुल जई नेम मले, वंदे प्रजुना पाय ॥ स्वामीजी संयम आपीये, जिए वेशे सुख थाय ॥ तें०॥ १६ ॥ पूर्वे प होती रे पदिमाणी, नयणे निरखंति नार ॥ खावण्यसमय मुनि एम जणे, जेम तरीयें संसार ॥ तें० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवशीखामण्नी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ सरसति सामिनी वीनवुं ए, माग्रं बहुय पसाय तो ॥ धर्मतणी वाट जोइशुं ए, आपो एह जपाप तो ॥ १ ॥ अणगल नीर न पीजी

र्ये ए, गलीयें त्रणज बार तो ॥ पाप न खागे एक रति ए, धर्मतणो श्राचार तो ॥ १ ॥ रयणी जोजन म म करो ए, श्रावक एह श्राचार तो ॥ रात्रे जे पंखी जलां ए, ते पण न करे चार तो ॥३॥ केतां माणस रात्रे जुमे ए, सांजलजो सिह एह तो ॥ ढोरां माणस वापडां ए, विगते कहुं हवे तेह तो ॥४ ॥ अतिथि नोतर दीजीये ए, आणीजे न अहंकार तो ॥ अहंकारे घणा गया ए, रात्रण सरिखा सार तो ॥ ए ॥ कुंनकर्ष तिहां गयो ए, बाणासुर वीजी बार तो ॥ अजिमाने दुःख उपजे ए, पडे नरक मजार तो ॥ ई॥ हिराखकशिपु गर्वे गयो ए, समरी रात्रि न दीह तो ॥ अहंकारे एता गया ए, गयो बीजो केशरी सिंह तो ॥ ७ ॥ चाडी चोरी निव कीजीयें ए, केहने न दीजे गाल तो ॥ वलतो कोइ आपे नहीं ए, साधुताणों ए आचार तो ॥ ए॥ मेलव्यो दूध न डोहीये ए, कूडो बोज निवार तो ॥ विखोया पठी वापडा ए, माखण म राख लगार तो ॥ ए ॥ ते पण पाप खरुं लगे ए, सुंदर तेणे कपाल तो ॥ चूले आग संध्रुकतां ए, नीलां ढांणां म वाल तो ॥ १०॥ मानव जवे आवी करी ए, हिंसा जेह करंत तो ॥ परखीशुं रंगे रमे ए, नरके तेह पडंत तो ॥ ११॥ सिद्धांतनी साखे कह्या ए, ज्ञानी वोख्या जेइ तो ॥ कागडो कूतरो ते थई ए, कूकडो थाये तेह तो ॥ ११ ॥ लावर तेतर ने छहि ए, तोतलो थाये तेह तो ॥ पडीयो तर्षे कलकले ए, मोढे मागे मेह तो ॥ १३॥ एहवुं जाणी वापडा ए, परनारी म करो स्नेह तो ॥ जे नरें शीयल पालीयुं ए, सांजलो तस होय जेह तो ॥ १४ ॥ पह्यंक ऊपर ते सूए ए, चमरे वायु ढोखंत तो ॥ पद्मिणी पग उखांसती ए, पायक काम करंत तो ॥ १५॥ घर घोडा हाथी घणा ए, शियले संपत्ति सार तो ॥ घेर गायो घेर घोडलां ए, वलद अनंत अपार तो ॥ १६॥ प्रत्यक्त एहिज पारखुं ए, सांजलजो सहु कोय तो॥ जे नारी पुरु ष हेरां करे ए, जूंकी तेहज होय तो ॥ १९॥ कुल खजवे मावित्रतणुं ए, बीजे जवे गोली होय तो ॥ पाणी जरे पीयारडां ए, छंगे उघाडी जोय तो ॥ १७॥ पग कांटा लागे घणा ए, माथे त्रूटे जार तो ॥ एह वी वात है सोहली ए, सांजलजो नर नार तो ॥ १ए॥ चोखे चित्ते जे चांखरो ए, सांजलजो तस नेह तो ॥ पंचराणीमां पहराणी थाये ए,

राजा तेशुं करे स्नेह तो ॥ १०॥ बीजी स्त्री विजमत करे ए, जो जो एइ महंत तो॥ धन न हरीयें पीयारडुं ए, चोर न कोइ कहंत तो॥ ११॥ चोरोंनुं जो जक्कं हुवे ए, तो साधु जूखें मरंत तो ॥ सोना पीतस बापडा ए, विगतें ते सिंह खनंत तो ॥ १२ ॥ मी वुं वो से न बापडा ए, मुक्तें कोइ न जाय तो ॥ चोखे चिक्तें पुएय करो ए, देवलोकें तेहिज याय तो ॥ २३॥ तेह पिता केम छहवीयें ए, जेले कुछ तरीयां जाय तो ॥ धन्य धन्य माता वखाणीयें ए, जेणे राख्यो उदर मांहे तो ॥ १४॥ जिक जलीएरें की लीयें ए, माता ने वखी तात तो ॥ प्रसक्त ए हिज पारखुं ए, घरे घेठां निज जात्र तो ॥ १५॥ वहू अर तेज वसाणी र्थे ए, जे राखें घरनी खाज तो ॥ राजपुत्र तेज वलाणीयें ए, जे राखे रूडुं राज तो ॥ १६॥ शिष्य तेहीज वखाचीचे ए; जे राखे गुरुनो पाट तो॥ धन्य धन्य गुरु चलाणीयें ए, जेणें देखाडी बाट तो ॥ १७ ॥ एइ विनतडी अस ताएी ए, अरिहंत तुं अवधार तो ॥ अचरिज एकज वातनुं ए, स्वासी तेह देखाड तो ॥ २०॥ मानव सघखां ते सारिखां ए, एवडो अंतर कांइं हुंत तो ॥ एक सूत्रे जूमि साथरे ए, एक तो सेज सू वंत तो ॥ २ए ॥ एक पडे पीयारे आंगणे ए, एकने हीं मोखा खाट तो ॥ एक हीं ने जीख मागतो ए, एक तो राज करंत तो ॥ ३० ॥ एक घेर घोडा हाथीया ए, एक घेर ढोर न एक तो ॥ एक दीसे नूखें मूआ ए, एक पामें जमण अनेक तो ॥ ३१ ॥ एक नर दीसे सुखिया घणा ए, घरे सुकु िषणी नार तो ॥ वीजा डुईल दीसता ए, घरणी रांम जतार तो ॥ ३१ ॥ एक नर दीसे वांजीया ए, एक घरे पुत्र रतन्न तो, एक वेगा धन वावरे ए, पुण्य करे दिन दिल्ल तो ॥ ३३॥ कर्म विहूणां माणसां ए, छहोनिश हाथ घतंत तो ॥ एवडो छंतर कांइ कीयो ए, सुणजोश्री अरिहंत तो ॥३४॥ एटखे अरिहंत वो बिया ए, सांजबजो नर नारि तो॥ पुण्यविद्वृणा प्राणीया ए, धरती त्रोडे जार तो ॥ ३५ ॥ जेणें दीधुं तेणें पामी युं ए, खीला लाड करंत तो ॥ मानव जव वे दोहिलो ए, फरि फरि निव पामंत तो ॥ ३६ ॥ मानवजव पुर्ख निव कियां ए, पढी कांइ ढोर करंत तो ॥ चेतणहारा चेतजो ए, आयु जाये घटंत तो॥ ॥ ३७॥ मूळा केडे वापडा ए, कांहिं न रहेशे खगार तो ॥ पुण्य कखुं ते

खावशे ए, बीजुं धन खसार तो ॥ ई० ॥ शक्ति सारु दीजीयें ए, नित्य गणीयें नवकार तो ॥ महोटां माणस एम कहे ए, नमे न होये नीच खगर तो ॥ ३७ ॥ संवत शोल र्रुगणोत्तरें ए, शुदि श्रावण तिथि बीज तो ॥ ए विनति पब्वो जणे ए, श्रीजिनवर ख्रवधार तो ॥ ४० ॥ पाप कर्म जे में कीयां ए, तेह्थी मूकावे नेठ तो ॥ जीव ख्रनेक विराधीया ए, कोदाला हल हेठ तो ॥ ४१ ॥ परनी निंदा में करी ए, जोयुं जूंबी दृष्टि तो ॥ बूडतांने वांहे जालीयें ए, तारक तुंहीज इष्ट तो ॥ ४२॥ मानव जव ख्रावी करी ए, खरिहंत तुं ख्राधार तो ॥ जे सेवे कारज सिव सरे ए, तेह्वा समस्या चार तो ॥ ४३ ॥ शंलेश्वर स्वामी जलो ए, महावीर जिन जाण तो ॥ गौतमस्वामी गुरु जलो ए, जीरावलो जगजाण तो ॥ ४४ ॥ जे प्रणमे पातक टले ए, सफल थाये ख्रवतार तो ॥ विनतही पव्वो जणे ए, श्रीजिननामें जयकार तो ॥ ४८ ॥ इति ॥

॥ अय श्रीजपशम सञ्चाय प्रारंजः॥

।। जगवति जारित मन धरी जी, प्रणमी गौतम पाय ॥ सहग्रह च रण पसावले जी, कहुं उपशम सञ्चाय रे प्राणी ॥ आंणने उपशम सार॥ जे विण तप जप खप करी जी, चारित्र हूवे बार रे ॥ प्राणी॥ आ। । १ ॥ ए आंकणी ॥ उपशमयी संकट टेंसे जी, उपशम गुणह जंमार ॥ जपरामधी शिवसुख मखे जी, जपरामधी जवपार रे प्राणी ॥ आ। ।। ।। उपशम संयम मृख हे जी, उपशमें संपदकोड ।। वैरी वैर विना थइ जी, आगस रहे कर जोह रे ॥ प्राण्॥ आण्॥ ३॥ रीष वरों परवश थयो जी, हारे वे घडीमांच ॥ चारित्र पूरवकोडीनो जी, गणधरनी एम वाय रे ॥ प्रांण ॥ आण ॥ ध ॥ क्रोधंवृक्त कडुंआ तणा जी, विषम फूल फल जाए ॥ फूखयकी मन परजले जी, फलयकी होय धर्महाण रे॥ प्रा०॥ त्रा०॥ यं॥ विरुष्ठ वैरी शुं करे जी, मारे एकज वार ॥ कोध रूप रिपु जीवने जी, दीये अनंत संसार रे ॥ प्रा॰ ॥ आण ॥ ६ ॥ जो कोइ वार कोइ दीयें जी, आपणपाने गालं ॥ ते र्ज पर जपशम धरी जी, वखतुं वचन म वाल रे ॥ प्रा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ मनमांहे मत्सर धरी जी, कीजें क्रियाकखाप ॥ ते रज जपर खीपणुं जी, जिस वली रानें विलाप रे ॥ प्राण् ॥ ष्याण्॥ ण ॥ राई सरशव

जेवंडां जी, परनां जोवे रे विडा। बीखां सरिखां आपणां जी, निव देखे एम जाह रे ॥ प्राण ॥ छाण ॥ ए॥ पर अवगुण मुखें उच्चरी जी, कांइ वखाण र आप ॥ परनवें सहेतां दोहिखां जी, परिनेंदानां पाप रे ॥ प्राण ॥ आण ॥ १० ॥ एक देव एक ग्रुरुजणी जी, हीखे हीना चार ॥ केवल ज्ञानीयें एम क गुं जी, तहने घणो संसार रे ॥ प्राण्॥ आण ॥ ११ ॥ परनी तांते बापडो जी, मुधा गूंथे रे जाल ॥ नरय तिरिय गित छःख सहे जी, रुखे अनंतो काल रे ॥ प्राण्॥ आण्॥ ११ ॥ परा यां पातक ते धोवे जी, जे निपजावे तांत ॥ पिशुनपणुं वली परहरि जी, परना अवगण शांत रे ॥ प्रा० ॥ आ० ॥ १३ ॥ नरजव निरर्थक नीर्गमे जी, धर्म मर्म निव जाण ॥ आप पढे पापे जस्बो जी, तस जीवित छाप्रमाण रे॥ प्रा०॥ छा०॥ १४॥ मेतारच मुनिराजीयो जी, शंभरस तणो रे निधान॥ परिसह रीष विना सही जी, पामियो मुक्ति प्रधान रे॥ प्रा०॥ छा०॥ १५॥ खंभक सूरि तणा यंति जी, कमा त णा रे जंभार ॥ घाणीयें घाली पीलतां जी, न चल्युं चित्त लगार रे॥ प्राण्॥ आण्॥ १६॥ कूरगडु हुर्ज केवली जी, कूडी ठांभी रीश ॥ प्रिया शूनी मूकी करी जी, पहें बुं नामे शीश रे ॥ प्राण्॥ आण्॥ १७॥ गिरुवं गयसुकुमाद्धर्व जी, न कस्बो कोव खगार ॥ ससरे शिर जपर धस्वा जी, धगधगता खंगार रे ॥ प्राण ॥ खा० ॥ १०॥ दुर्मुख वयण सुणी करी जी, प्रसन्नचंद्र क्षिराय ॥ कोपे चड्यो कर्मे नड्यो जी, बांध्युं नरकनुं खाय रे ॥ प्राण्॥ खाण्॥ १ए॥ मस्तकलोच देखी करी जी, वलीयो मुनि मनमाय ॥ क्रोध गयो निर्मल थयो जी, लहि केवल तेणे गय रे ॥ प्राण ॥ व्याण ॥ शण ॥ कामा खड्ग नहिं जे कने जी, बे छः खिया सं सार ॥ क्रोधयोधशुं जुजता जी, केम निव पामे हार रे ॥ प्राण ॥ आण ॥ श्र ॥ तप विणसे रीषें करी जी, स्त्रीची शियल विनाश ॥ मानें विनय विणाशियों जी, गर्वें ज्ञान विनाश रे ॥ प्रा० ॥ त्रा० ॥ २२ ॥ जेहतुं मन जपशमें रमे जी, नहिं तस छु:ख दंदोख ॥ कहे शिष्य जववायनो जी, मुनि खद्मीकल्लोख रे ॥ प्रा०॥ ष्या०॥ २३॥

॥ श्रय श्री अर्जुनमासीनी सद्याय प्रारंतः ॥ किसके चेसे किसके पूत, श्रातमराम एकिसे श्रवधूत ॥ जीन जा

न से ॥ ए देशी ॥ सद्ग्रह चरणे निम कहुं सार, अर्जुनमासी मुनि श्रधिकार ॥ जिन सांजेखो ॥ रूडी राजयही पुरि जाण, राज्य करे श्रेणि क महिराण ॥ त्रविण ॥ १ ॥ नगर निकट एक वाडी श्रनूप, सकल तरु जिहां सोहे सरूप ॥ जण्॥ दीपे मोघरयक् तिहां देव, श्रर्जुनमाली करे तसु सेव ॥ जविव ॥ १ ॥ वंधुमती गृहिणी तसु जाण, रूप यौवने करी रंज्रसमान ॥ जव ॥ एकदा खर्जुन ने त्रिया देवगेह, गया वाडीयें विहुं धरि नेह ॥ त्रण ॥ ३ ॥ गोठिल पद् नर आव्या तिवार, विकल थया देखि बंधुमती नार ॥ जण्॥ अर्जुनने वांधी एकांत, जोगवी बंधु मती मननी हो ख़ांत ॥ जण ॥ ४॥ अर्जुन चिंते मोघरपाणि आज, सेवकनी तुं करजे साह्य ॥ जण ॥ एम निसुणी यक्त पेठो हो श्रंग, वंधन त्रोडी चाल्यो मन रंग ॥ जण॥ ए॥ गोविल पद् नर सातमो नार, मोघरद्यं मारीने चाल्यो तिवार ॥ जण्॥ दिन दिन षट् नर ने एक नार, हएया व मास लगें एक हजार ॥ जणा६॥ वशें साठ वेली जपर जाण, हंखा ते माणस मोघरपाण ॥ जण्॥ विस्तरी नयरीमांहे ते वात, खोक विहिनां ते वाहार न जात ।। जा ॥ ७ ॥ ५ ॥ इए अवसर राजगृही नयान, समोसस्या माहावीर सुजाण ॥ ज० ॥ शेव सुदर्शन सुणि ततकाल, वंद ननें चाख्यो सुकुमाल ॥ प्रविष् ॥ छ ॥ देखि दोड्यो यक् हणवाने काज, रोठे प्रतिका करी पंथमांज ॥ त्रण ॥ उपसर्गथी जो उगरं एणि वार, पा ब्धं तो जावजीव चलविहार ॥ जण्॥ ए॥ करी नमोत्रुणं धरे हवे ध्यान, जंपाड्यो हणवा मोघर पाण ॥ जा ॥ धर्मप्रजावें हाथ यं जिया आकाश, गयो अर्जुनदेहथी यक् नाशि ॥ न०॥ १०॥ धरती जपर पड्यो अर्जुन देह, चित्त वब्युं घडि एकने ठेह ॥ तण ॥ शेठ प्रतिक्वा व्यर्जुन पेखि, किहां जाशो पूर्वे सुविशेष ॥ त० ॥ ११ ॥ वांदवा जाशुं श्रीमहावीर, सांजली साथे ते थयो सधीर ॥ ज० ॥ वाली सुली उपन्यो वैराग, लीधुं चारित्र छर्जुन धरि राग ॥ ज०॥ १२॥ की धुं रे कर्म खपावाने काज, राजगृही पासें रहेवुं क्रियराज ॥ त्रा ।। यक्तरूपें हणीया जे जीव, तेइ हुं वैर लावी मारे संदेव ॥ त०॥ १३॥ थपाट पाट मूठी पेजार, गुरंज जोडा ने पहर प्रहार ॥ त०॥ कापट इंट कोरडा निहं पार, हुए लाठी केई नर हजार ॥ जण्॥ १४॥ शुज्जपरिणामें साधु सहे सदैव,

तहारां की धां तुं जोगवे जीव ॥ ज०॥ अज्यासें आणी शुज ध्यान, केव ल लहि पाम्यो शिवधान ॥ ज०॥ १५॥ संवत सत्तर सहताले ज्ञास, शहेर राणकपुर कखुं चोमांस ॥ ज०॥ कहे कवियण कर जोडी हेव, मु कितणां फल देजो देव ॥ ज०॥ १६॥ इति॥

॥ अथ श्रीजिनरख अने जिनपालनुं चोढालीयुं प्रारंतः॥ ॥ दोहा ॥

॥ अनंत सिक्ष आगें हुवा, वली होवंता जेह ॥ अनागते जे होयशे, हुं प्रणमुं धरि नेह ॥ १ ॥ पाप अहारे जिन कह्यां, परिग्रह महा विकरा ल ॥ प्रीति मैत्रीने गणे नहीं, सहु गुणने दिये वालि ॥ ३ ॥ दोष दाता हे परिग्रहो, महोटी माया जाल ॥ दोनुं जाश्यें छुःख सह्यां, जिनरख ने जिनपाल ॥ ३ ॥ घरमां धन हे अति घणुं, तोय न पूगी हाम ॥ पची र ह्या हे प्राणीया, केम पामे विल हाम ॥ ४ ॥ कोण नगरी वसता हता, के म छुःख सह्यां अपार ॥ सावधान यह सांजलो, तेहनो कहुं विस्तार ॥ ॥ ॥ हाल पहेली ॥

॥ चंपा रे नगरी रिलयामणी, दीठ ते हर्षित याय रे॥ लोक व्यापा री अित जला, वली केठ घणा तिणमांय रे॥ धनना रे लोजी वाणीया ॥ १॥ ए आंकणी ॥ शेठ मुकुंदना दीकरा, दोनुं वडा व्यापारी रे॥ ना वने लेइ समुद्भमां, जतस्वा वार अगीयारी रे॥ घ०॥ १॥ लाज कमावी लावीया, मेली भाया जारी रे॥ लोज मट्यो निहं मांहेलो, वारमी वार हुवा तैयारी रे॥ घ०॥ ३॥ आवी मा नापने एम कहे, अमें जाग्रुं समु इव्यापार रे॥ मा वापे इस्युं कहां, जली निहं वारमी वार रे॥ घ०॥ ४ इव्यापार रे॥ मा वापे इस्युं कहां, जली निहं वारमी वार रे॥ घ०॥ ४ अ अग्रावातां छुःख कोण देले रे॥॥ घ०॥ १॥ मा वापे वचन कहां टले, अण्यादतां छुःख कोण देले रे॥॥ घ०॥ १॥ मा वापे वचन कहां हिते चाले रे॥ घ०॥ ६॥ अनेक योजन गया पठी, जठीयो जहकापात हे ते चाले रे॥ घ०॥ ६॥ अनेक योजन गया पठी, जठीयो जहकापात हे ते चाले रे॥ घ०॥ ६॥ अनेक योजन गया पठी, जठीयो जहकापात हे ते चाले रे॥ घ०॥ ६॥ वाले वेगली दीले हे वात रे॥ घ०॥॥॥ आकाशें वीज गाजीयो, नावो कंपवा लागी रे॥ वायरे चली हेही पढी, आकाशें वीज गाजीयो, नावो कंपवा लागी रे॥ वायरे चली हेही पढी, कांइक नांगर जांगी रे॥ घ०॥ ॥॥ वा विद्याधरनी दीकरी, विद्या विसरतां, वातावे रे॥ गरुड देली वासुकी हिपे, दर वाहिर जेम नावे रे॥ घ०॥॥ पठतावे रे॥ गरुड देली वासुकी हिपे, दर वाहिर जेम नावे रे॥ घ०॥॥

॥ए॥ जरतारे बोडी नाहली, कांइ लोल कल्लोल पोकारे रे ॥नाव समुद्रमां बूडतां, रोवंतां रिव पाडे रे ॥ धन० ॥ १० ॥ हाहाकार हुर्ज घणों, तिहां पाटीयुं हाथज आय रे ॥ बीजा तो असकी पड्या, वे जाइ तरंता जाय रे ॥ धन० ॥ ११ ॥ रलाद्वीपे ते आवीया, तिहां मन मान्यां फल लाय रे ॥ नालियर फोडि तेल काढीने ते, चोपडी वेठा ठाय रे ॥ धन० ॥ १२ ॥ वोहा ॥ वोहा ॥

॥ रयणदेवी तिण ख्रवसरे, वसती द्वीप मजार ॥ पाप करी हर्षित हु इ, रौड क्रौड जरतार ॥ १ ॥ ते नवं नव सुख जोगवे, रही विषय रस खाग ॥ मखीया ख्रति रखीयामणा, चारे एकण बाग ॥ १ ॥ वे जाइ चिं त्या करे, पूरव वात विचार ॥ ख्रार्चध्यान करता थकां, देवि ख्रावि तिण वार ॥ ३ ॥ खज वे तेहना हाथमां, कीधुं रूप कुरूप ॥ नयणां दोय फा टी थकी, जूंमी दिसे विरूप ॥ ४ ॥ खहो मुकुंदजीना दीकरा, वचन क द्यां निर्धार ॥ तमें मुज्युं सुख जोगवो, निहं तो करं निहार ॥ ५ ॥ मा न्युं वचन ए वेहु जणें, खइ चाली ख्रावास ॥ ख्रयुज पुजल सहु काढीने, जोगवो जोग विलास ॥ ६ ॥ नित्य ख्रमृत सुख जोगवे, किर किर नवला वेश ॥ काल केतो जव निकल्यो, ख्राव्यो इंड ख्रादेश ॥ ९ ॥

॥ ढास वीजी ॥

॥ इण श्रवसर तिहां गुंवनुं रे ॥ ए देशी ॥ हाथ जोडीने एम कहे रे, सांजल मोरी वात रे ॥ वालम मोरा ॥ इंडे हुकम फ़रमावियो रे, समुद्र वलोवा जाय रे ॥ वालम मोरा ॥ मुऊ विनत ही श्रवधार जो रे ला ख ॥ र ॥ जो तुम श्रारति उपजे रे, तो जाजो पूरव बाग रे ॥ वाण ॥ दोय रीतिनां फल खाय जो रे, कर जो मन मान्या रंग रे ॥ वाण ॥ मुफ विनण ॥ र ॥ एक फल खातां थकां रे, जागशे विषय विकार रे ॥ वाण ॥ काम दीपावण एह हे रे, मने हा भूरण हार रे ॥ वाण ॥ मुण ॥ ३ ॥ वाच्य घणी हे ए वागमां रे, सरोंवर घणां तिणमां जे रे ॥ वाण ॥ हेल कचोल को यल लवे रे, जेहनी मीठी हे वाच रे ॥ वाण ॥ मुण ॥ अ ॥ तिहां कदी श्रारति ऊपजे रे, तो बाग उत्तरमां जाय रे ॥ वाण ॥ गुरद हिमनां सुल जोगवो रे, दिक्तण बागमें जाय रे, ॥ वाण ॥ गुण ॥ ए ॥ तिणमें सर्प हे मोटको रे, चंकरी इक्त का लिनाग रे ॥ वाण ॥ रखे पीडा

तमने करे रे, मुफ तुम जपर राग रे ॥ वा० ॥ मु० ॥ ६ ॥ दांत छे छोइज सारिखा रे, जीज तडमह जाए रे ॥ वा० ॥ तेए कारण वर्जुं छं रे, रखे खीये ताहारा प्राए रे ॥ वा० ॥ मु० ॥ ७ ॥ एम ए त्रएं बागमां रे, सर्व काल गहगाट रे ॥ वा० ॥ सुखशाता घणी पामशो रे, जो जो माहारी वाट रे ॥ वा० ॥ मु० ॥ ७ ॥ एम शीखामण देइ करी रे, कहीने वारो वार रे ॥ वा० ॥ रयणादेवी वली सही रे, वांसे एकल डा निर्धार रे ॥ वा० ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ दोहा॥

॥ बेहु जाइ इवे चिंतवे, आर्ति सनमां याय ॥ सुख पामे जेम आतमा, पूर्ववागमें जाय ॥ १ ॥ तेम पिष्ठम ते उपजे, पण न पामे वैराग ॥ मांहोमांहे ते एम कही, चाख्या दिक्तण वाग ॥ १ ॥ तेमां द्वर्गंघ वे घणो, हाड पड्यां घणां त्यांच ॥ शूलीये पुरुष देखीने, संधाण दीलां चाय ॥ ३ ॥ कोण नगरी वसता हता, केम प्रःत्व सद्यां अपार ॥ कोण अन्याय तमे कस्यो, शूलीये दीधा चडाय ॥ ४ ॥ हुं काकंकीनो वाणीयो, घोडा वहेचण आय ॥ वाण जांग्युं आंहीं आवीयो, रयणां वश पड्यो आय ॥ ५ ॥ संसारनां सुख जोगव्यां, कालज केतो जाय ॥ तमो एहने हाथे चड्या, मने शूलीयें दीधो चडाय ॥ ६ ॥ जो जार्व चंपा जणी, तो पूर्व वागमां जाइ ॥ शीलंग यक्त पग कालशे, तो घर देशे पहोंचाइ॥ ॥ ॥

ा ढाख त्रीजी ॥

॥ वीं बुद्यानी देशीमां ॥ हां रे खाल दोनुं जाइ रोवे घणा, ए तो जूंमी दीसे वे नार रे खाल ॥ जो व्यापणी माता जाणशे, तो देशे व्यापणने मार रे खाल ॥ नारी ग्रुं नेह न की जीये ॥ १ ॥ ए व्यां कणी ॥ हां रे खाल प्र रव बागमां व्यावीया, यक्त व्याव्यो तेणी वार रे खाल ॥ केहने उतारं इहां चकी, कोणने उतारं पार रे खाल ॥ नारी ॥ १ ॥ हां ॥ हाथ जोडी ने एम कहे, व्यमें जुःखीया दोनुं जाइ रे खाल ॥ कृपा करो व्यम जपरें, व्यवखायी पार उतार रे खाल ॥ नारी ॥ ३ ॥ हां ॥ नारी नो मोह मत व्याणजो, हुं महारे बंग के बेसा जुं रे खाल ॥ जो मन तमारं मोह तो तुमने तेवार पठा जुं रे खाल ॥ नारी ॥ ॥ हां ॥ धीरज दइने

चालीया, देवी आवी तेणी वार रे लाख ॥ हाथमां खज बीहामणुं, मु खथी बोखे मार मार रे लाख ॥ नारी० ॥ य ॥ हां० ॥ कडवां वचन कह्यां घणां, दया नहींय खगार रे लाल ॥ तव शणगार शोले सजी, घृंघट काढ्यो तेणि वार रे खाल ॥ नारी० ॥ ६ ॥ हां० ॥ मीठां वयण कह्यां घणां, मुने कांड् मेलो निर्धार रे लाल ॥ अवला साहामुं जोड्ने, सुख न्नोगवो संसार रे लाल ॥ नारी० ॥ ७ ॥ हां० ॥ सुख संपूरण नोग वो, एम केम दीजें ढेह रे लाल ॥ प्रीत चतुराइ पाढली, तमें छु:खीणी देखो देह रे खाल ॥ नारी०॥ ७॥ हां०॥ अवधिज्ञाने जोइने, जनरखी यो मगीयो जाण रे लाल ॥ नाइ नेद गाली करी, किणविध बोले नार रे लाल ॥ नारी० ॥ए॥ इां० ॥ जनपालीयो कठोर ठे, एहनें दया नहींय लगार रे लाल ॥ जनरखीया तुं माहरे, प्राण आधारज थाय रे लाल ॥ ॥ नारीण॥ १ण॥ हांण॥ कमल सुकोमल वो तुमें, माहारुं हैंडुं फाटी जाय रे खाल ॥ तमारुं दरिसण देखीनें, हूंतो पग पूजुं चित्त लाय रे ला ख ॥ नारीण ॥ ११ ॥ हांण ॥ जरसमुख्यां कों मूको, मने एकखडी निर्धार रे लाल ॥ प्राण तजुं तुम जपरें, माहारे वीजो कोण खाधार रे लाल ॥ ॥ नारी ।। ११ ॥ हां ।। मुजनें म मेलो एकली, तमें दया करो महारा ज रे लाल ॥ तुम विष जीवाशे नहीं, माहारां सफल करोने काज रे ला ल ॥ नारी ।। १३ ॥ इां ।। एम ग्रुण्याम की धा घणा, एकवार तुं सा हामुं जोय रे लाल ॥ अवलाने जीवाडो सही, नजरे निहालो तो सुख होय रे लाल ॥ नारी० ॥ १४ ॥ इां० ॥ वचन विपयनां सांजली, जन रखीयानां क्यीयां प्राण रे लाल ॥ वचनरागें रीजावीयो, ललचाणो जोग कारण रे लाख ॥ नारी ।। १५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ यहाँ मगीयो जाणीने, ढालि दीयो तेणि वार ॥ देवी आवी जताव ली, वचन कहे निर्धार ॥ १ ॥ कोध करी घणुं मारियो, खंमोखंम करी धार ॥ चिहुं दिशे छठाली दीयो, हर्षित हुइ तेणि वार ॥ १ ॥ जनरिल् यो डुःखीयो हुई, जोयानां फल जाण ॥ चंपानयरी पहोतो नहीं, वचमां ठोड्या प्राण ॥ ३ ॥ वैराग्यें घर ठोड्युं नहीं, हुइ शरन निहं जाल ॥ शि वनगरी पहोतो नहीं, नरकें गयो तत्काल ॥ ४ ॥ रयणा देवी कामिनी, ॥ जनपार्खे मन धास्त्रो, ए तो कपटी दीसे नारो॥ पूरवलो मोह निव आप्यो, ए तो काचो सगपण जाएयो ॥ १॥ यक्त ऊपर निश्चें धास्त्रो, तेणे चंपा बागें उतास्त्रो ॥ यक्त कहे तमें चंपामें जार्ड, सुख होशे तुमने सवायो ॥ १ ॥ जनपाद्यीयो निजघरे आवी, सघलाने वात सुणा वी ॥ जनरखनो शोकज कीधो, केता लोकें काल प्रसिद्धो ॥३॥ एवे वीर चंपायें आव्या, तेतो सघलाने मनमां जाव्या, जनपाल ते सुणवालाग्यो, घरबारथकी मन जाग्यो ॥४॥ मन शिवरमणीथी लाग्यो, संयम लइ अ यो वैरागो ॥ अंग अगीयारें ते जणीयो, पहेले देवलोकें अवतरीयो ॥ ५ ॥ एणें तप करी काया गाली, माहाविदेहें मनुष्य होशे माली ॥ तिहां दीक्ता लेइ केवल पामशे, सहु दोष टाली मोक्ते जाशे ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ अथ धर्मसिंहकृत श्रीरलगुरुनी जोड प्रारंजः ॥

॥ रतनगुरु गुणें मीठडा रे, मीठडा मुखना बोख ॥ सांजलतां सुख जप जे रे, आपे जेम तंबोल ॥ रत० ॥ रू ॥ सूराशाहनो नंदजी रे, श्रीमाली कुलचंद ॥ नागर ऋषियें बूजव्यो रे, रतनगुरु गुणचंद ॥ रतः ॥ १॥ सा सरे जइ त्रिया बूजवी रे, श्रीधाई वर नार ॥ पीयुनो साथ न मेलीयें रे, राजुल राजकुमार ॥ रतण॥ ३॥ शोले वरसे रतनसी रे, कीथां व्रत उ चार ॥ देवकन्या सरखी तजी रे, श्रीबाई सुखकार ॥ रतः ॥ ४ ॥ श्रीबा इयें बोलावीया रे, सासरे आवोने स्याम ॥ सासरवासो लइ करी रे, सा थे मंत्री छित्रराम ॥ रतण ॥ ए॥ विनय करी सासु वदे रे, तमे केम पधास्त्रा आज ।। रतन कहे तव रंगद्युं रे, तुम तनयाद्युं काज ।। रतण ॥६ ॥ तेडो तुमारी बालिका रे, श्रीबाई सुकुमाल ॥ सासरवासो कहुं अमें रे, संयम लहीशुं विचार ॥ रतः ॥ ७॥ पांच सहीयर मांहे बोलती रे, श्रीबाई परमोद ॥ भाता बोखावे मंदिरे रे, सुणी वात विनोद ॥ रतण ॥ ॥ ७ ॥ रतन कहे सुणो सुंदरी रे, अमें आदरशुं चारित्र ॥ मानी बहेन में तुजने रे, से सासरवासो पवित्र ॥ रतः ॥ ए ॥ श्रीबाई कहे कंतने रे, निवुर वचन निवार ॥ जोला ए चित्त्यी परिह्रो रे, चालो मारग्ब्य वहार ॥ रतण ॥ १० ॥ विण श्रवगुण निज कामिनी रे, केम तजो नि

रधार ॥ जत्तम कुखनी हुं जपनी रे, मुक साख जरे संसार ॥ रत० ॥११॥ हुं दिन दिन सुख माणती रे, मुक रतनसी जरतार ॥ हुं महोटा मन जाणती रे, तुम जपर निरधार ॥ रतः ॥ ११ ॥ रतः कहे सुणो सुंदरी रे, ए संसार असार ॥ साख चोराशी फेरा फखो रे, जीव अनंती वार ॥ र तण।। १३॥ सगपण सहु आपणे खीयां रे, न रही मणा खगार ॥ धर्म विहूणो श्रातमा रे, वस्यो निगोद मजार ॥ रतः ॥ र४॥ दशे दष्टांते वे दोहिसो रे, मानवनो अवतार ॥ धर्म सामग्री सरवे सही रे, हवे को ण फरे संसार ॥ रतः ॥ १५ ॥ कीधुं सद्ग्रह सान्निध्ये रे, परणवानुं पच काण ॥ ॥ वहेन सरखी तुं हो हवे रे, सांजख चतुरसुजाण ॥र्तणा१६॥ सासरवासो परहरी रे, मुज वंधव किह वोलाव ॥ दे आशीष सोहामणी रे, मुफ कुंकुम चोखे वधाव ॥ रतः ॥ १७॥ गुणवंता सुणो कंतजी रे, केम रहेशो निरधार ॥ जो वैराग एवडो हतो रे, तो कां प्रथम न की थो विचार ॥ रतण ॥ रण ॥ हवे मन स्थिर करो नाथजी रे, पहोंचो तुम श्रावास ॥ लगन वेला चोरी वचें रे, श्राणजो मन जल्लास ॥ रतण ॥१ए॥ तुम अम तात आशा घणी रे, सफल करो ग्रणवंत ॥ एम केम दीका खीजीये रे, कुंत्रारा सुणोने कंत ॥ रतः ॥ २० ॥ तमे अमे सगपण जोडीयुं रे, ते जाणो जग विख्यात ॥ एम केम कामिनी ठोडशो रे, तुम शुं मोही मोरी धात ॥ रतण ॥ ११ ॥ यौवनवये दीका दोहेली रे, दो हिलो साधु त्राचार ॥ खघुवेशे कोण त्रादरे रे, फुकर संयम नार ॥रतण ॥ २२ ॥ सुदर्शने सुंदरी तजी रे, जेम श्री जंबुकुमार ॥ तेम हुं बांकुं हुं तुकने रे, अनुमित चो श्रीकार ॥ रतः ॥ १३ ॥ श्रीवाई कहे जंबूये रे, परणी आवे नार ॥ त्यार पठी दीक्षा अही रे, तेम करो रतन कुमार ॥ ॥ रतण ॥ १४ ॥ तमे तो परप्या विना रे, आदरो साधु आचार ॥ तेझुं तमें मुफने जाएजे रे, कहे श्रीवाई सुखकार ॥ रतः ॥ १५ ॥ विवाह शा ख ते में लीयो रे, तस निहं नारी जंजाल ॥ हुं पाय लागुं प्रज तुम तिए रे, ते जाणे वाल गोपाल ॥ रतण ॥ २६ ॥ देवकीनंदन सोहामणो रे, नामे गजसुकुमाल ॥ कुंछारी कन्या तजी करी रे, लीधो संयम सार ॥ रतः ॥ २९ ॥ तेतो ब्राह्मण केरी वालिका रे, ए वे यादव राय ॥ जो डावाडो सारिखो नहिं रे, ते न मक्षे इहां न्याय ॥ रतण ॥ २० ॥ पासव

खागीने परहरी रे, जेम नेमे राजुख नार ॥ तेम हुं बांकुं बुं तुकने रे, मुक उत्तर किश्यो विचार ॥रतण।शए॥ हाथ जोडी तत्र विनवे रे, तमें जीखा माहारा स्वामि ॥ जेइनी रचनामां हुं रहुं रे, ते देखाडो मुक ठाम॥रतण ॥३०॥ मुक जनक घर सुंदरी रे, रहेजो सुखे संसार ॥ श्रीबाई कहे तुम विमारे, कोण देखाडे घर बार ॥ रतण ॥ ३१ ॥ तो तमें पीयरें शोजजो रे, हुं आपुं इब्य अपार ॥ दान पुख खखमी तणुं रे, ख्यो खाहो संसार ॥ रतण ॥ ३१ ॥ पीयर मीठां तिहां खों रे, ज्यां खों आणानी वाट ॥ लोक चडावे दोषडा रे, पाडे मनमां फाल ॥ रत० ॥ ३३ ॥ हुं तो कुंवारी कुमारिका रे, इयो घर इयो जरतार ॥ आदरजो मन मानीयो रे, जे जा णो तुमें हितकार ॥ रत० ॥ ३४ ॥ सुंदरी कहे सुणो वालमा रे, जवोजव तुमशुं नेह ॥ हुं तुमने बोडुं नहीं रे, निव पाखुं अवरशुं नेह ॥ रतण॥ ३५ ॥ आपें जवसायर तरो रे, मुज राखो संसार ॥ पीयुडा ते प्रेम न जा णीयो रे, स्वारशीयो संसार ॥ रतः ॥ ३६ ॥ मानसरोवर इंसलो रे, नगर खार्से कोण नाय॥ आखा अखोड सेवा तजी रे, खींबोखी कोण खाय॥ रतण ॥ ३७ ॥ जो रहेशो संसारक्षां रे, तो हुं तमारी नार ॥ जो तुमें संय म आदरो रे, तो युक साधवी आचार ॥ रतः ॥ ३० ॥ नेमनी रीत तमें करो रे, में करी राजुल रीत ॥ परमेसर साखें करी रे, जवोजव तमशुं प्रीत ॥ रतः ॥ ३ए ॥ अपृत वचन श्रीबाईनां रे, सांजली रतनकुमार ॥ दीपतो संयम आदस्यो रे, ते जाणे जग विस्तार ॥ रतण ॥ ४० ॥ श्रीमा खी पाट शोहे सदा रे, जिनशासन शणगार ॥ संयम रस जी खे सदा रे, निर्मल शीयल आचार ॥ रतः ॥ ४१ ॥ सुरत नगरथी आवीया रे, श्री नवानगर मकार ॥ साधु सहुनी सेवा करे रे, सफल करे अवतार ॥ रत० ॥ ४२ ॥ तिए समयें उए चातद्यं रे, श्रीशिवजी कुमार ॥ चरए कमल क्षि रायनां रे, जेट्यां प्रेम खपार ॥ रत० ॥४३ ॥ रतन गुरु दीये देशना रे, जेम पुष्कर जखधार॥ सांजलतां सुख उपजे रे, दशमो ढाल रसाल॥ रतण ॥ ४४ ॥ नाकर रिख सखी देवजी रे, जपकारी गुणवंत ॥ तास शिष्य धर्मसी वदे रे, सांजखजो मन खंत ॥ रतण ॥ ४५ ॥ इति ॥

॥ श्रय श्रजयरामकृत श्री रत्नचिंतामणिनी सद्याय प्रारंजः ।। श्रा प्राप्त रत्नचिंतामणि सरिलो, वारो वार न मलशे जी ॥ चेति

शके तो चेतजे जीवडा, श्रावो समय नीहं मखशे जी ॥ श्रा जवण ॥१ ॥ चार गति चोराशी सख योनि, तेहमां तुं न्नमी आयो जी ॥ पुर्खसंयोगे स्वप्तनी संगते, मानवनो जव पायो जी ॥ श्रा० ॥ १ ॥ वहेलो था तुं वहे लो जीवडा, से जिनवरनुं नाम जी ॥ कुगुरु कुदेव कुथर्मने ठंमी, कीजें श्रातम काम जी ॥ श्राण ॥ ३ ॥ जेम कठीयारे चिंतामणि खाघो, पुण्य तणे संयोगं जी ॥ कांकरानी परं नाखी दीधो, फरि नहिं मखवा जोग जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ एक काले तुं आव्यो जीवडा, एककार्ले तुं जारो जी तेहनी वचें तुं वेटो जीवडा, काल आहेडी निकासे जी ॥ आए॥ ॥ ॥ धन्य साधु जे संयम णाले, सूधो मारग दाले जी॥ साचुं नाणुं गांवे वांधे, खोटे दृष्टि न राखे जी ॥ आण् ॥६॥ सात पिता दारा सुत गांभव, वहु विधमां विरित जोडे जी ॥ तेमांहणी जो काज सरे तो, साधु घर केम वोडे जी ॥ आ०॥ ए॥ साया समता दिषय सहु वंभी, संवर क्मा एक की जी ॥ गुरुजपदेश सदा सुलकारी, सुणी अमृत रस पीजे जी॥ र्था ।।। ए ।। जेस स्रंजलीमां नीर नराणुं, क्षण क्षण ठेंद्वं याय जी ॥ घढी घडीयें घडीयालां वाजे, क्षण लाखीणो जाय जी ॥ आ०॥ ए॥ सा मायिक मन शुद्धें की जें, शिवरमणी फल पासी जें जी ॥ मानवजन मु क्तिनो कामी, तेमां नरोंसो शानो लीजें जी ॥ आणा १०॥ देव गुरु तमें दृढ करी धारो, समकित शुद्ध आराधो जी ॥ ठकाय जीवनी रका करी ने, मुक्तिनो पंथज साधो जी ॥ ऋा० ॥ ११ ॥ हैडा जींतर समता राखो, जनम फरी निव मखके जी ॥कायर तो कादवमां खूता, शूरा पार जतर शे जी ॥आण।११॥ गुरु कंचन गुरु हीरा सरिखा, गुरु झानना खडीया जी ॥ कहे अजयराम ग्रुरु उपदेशें, जीव अनंता तरीया जी ॥ आ० ॥ २३ ॥ ॥ अथ श्री यावचाकुमारनुं चोढाखीयुं प्रारंजः॥

।। दोहा ॥ द्वारामित नयरी वसे, थावचागिव इण नाम ॥ थावचो तस पुत्र हे, रूप चतुर गुणधाम ॥ १॥ वत्रीशें कन्या वस्त्रो, एक लगन सुखकारं ॥ सुरनी परें सुख जोगवे, पंच विषय सुख सार ॥ १ ॥ एक दिन नेम् पधारीया, वाणी सुणि हितकार ॥ दीका लेवा मन थयुं, स्वा मी अमने तार ॥ ३ ॥ घरे आवीं माता प्रत्ये, कहे यावचाकुमार ॥

व्याङ्गा यो मुक मातजी, संयम खेशुं सार ॥ ४॥

॥ ढाख पहेखी ॥

भा सासु नणदीने पूछशे रे वाला, तेहनें उत्तर हयो देश रे ॥ कामण गारा रे जावा निहं दं ।। ए देशी ॥ माय कहे थावश्चा प्रत्यें रे वासा, सांजलो माहारी वात रे॥ आतमना प्यारा, माहारा रे वाला, सोजागी सुजात रे ॥ १ ॥ पुत्र वाला रे, मीठा बोला रे, मोहनगारा रे, आज्ञा नहीं दर्ज । ए आंकणी।। बत्रीशे जली जामिनी रे वाला, जोगवो इण्जुं जीग रे ॥ दिवस निर्ह ए योगना रे वाला, बुद्धपणे लेजो योग रे॥ पु० ॥ मीण ॥ मोण ॥ खाण ॥ २ ॥ रयण सोवन मोती घणां रे वाला, धननो नहिं हे पार रे ॥ खार्ड पीर्ड सुक्रत करो रे वाला, खरचो इण संसार रे॥ पुण ॥ मीण ॥ मोण ॥ आण ॥ ३॥ सुख आव्यां जे हाथमां रे वाला, परत्रव चित्त केम जाय रे ॥ केड न मूकुं पुत्रनी रे वाला, स्त्री मन आशा याय रे ॥ पुण् ॥ मीण ॥ मोण ॥ स्वाण ॥ ४ ॥ साधु मारग हे दोहिलो रे बाला, जेहवी खजनी धार रे ॥ पंचमहाव्रत मोटकां रे वाला, छक्करता श्रा चार रे ॥ पु०॥ मी०॥ मो०॥ आ०॥ थ ॥ बाबीश परिसह जीतवा रे वाखा, खोचेवा शिर केश रे॥ ज्ञात पाणी खेवां सूजतां रेवाखा, ब्रह्मदत्त केम पालेश रे॥ पुण्॥ मीण॥ मोण॥ आण्॥ ६॥ मोहतणे वश माय क हे रे वाला, एणीपरें वचन सुहेत रे ॥ जोगथकी जो उसस्या रे वाला, वात न आवे चेत रे॥ पुण ॥ मीण॥ मोण॥ ॥ ॥

॥ ढाख बीजी ॥

॥ आवोने नेमजी नाहला ॥ अथवा वारमासानी देशी है ॥ मानही रे जे कहो हो ते साचुं सही, माहरे न आवे दाय ॥ मोरी माता ॥ संयम ले छुं मातजी ॥ साचा जेम सुख थाय ॥ मोरी माता ॥ १ ॥ थावची कहे रे माता प्रत्यें ॥ ए आंकणी ॥ मावही रे विषयसूता जे मानवी, तेहने दोहिलो होय ॥ मो० ॥ शूरा नरने सोहिलो, संयम विचारी जोय ॥ मो० ॥ था० ॥ १ ॥ मा० ॥ ए संसार असार हे, छःखमांहे पूखो हे लोक ॥ मो० ॥ जनम जरा जय मरणनो, देहमांहे हे बहु रोग मो० ॥ था० ॥ ३ ॥ मा० ॥ खखमी चंचल जाणीयें, विजली जेम फबकार ॥ मो० ॥ अथिर कुटुंवनी प्रीतही, आखर धर्म आधार ॥ मो० ॥ था० ॥ ४ ॥ मा० ॥ कामिनी रंग पतंग हे, साचो न पाले नेह ॥

मो। भोक मारगनी देषिणी, तिण्हां किइयो सनेह ॥ मो। ॥ था। ॥ ॥ भा। ॥ साव चोराशी फेखा फखो, कर्म तणे परिमाण ॥ मो। ॥मा नवजव पुण्ये पामीयो, हवे केन थाउं अजाण ॥ मो। ॥ था। ॥ ६॥ मा। ॥ दीनमुखे रडती कहे, खीयो दीका कुनार ॥ मो। ॥ धर्मयल कर जो घणा, जेम जीवने हितकार ॥ मोरा पुत्र ॥ था। ॥ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ जीवडा तुं म करीश निंदा पारकी ॥ ए देशी ॥ यावचा गाहावयणी रे जेटणुं खेदने, खाव्यां श्री कृक्षनी पास ॥ हे खामी मुक पुत्र ते एक हे, खेरो संयम नार ॥ था० ॥ १॥ तेमाटे खामी मुऊ दीजीये, हत्र चामर वाजित्र ॥ दीका महोत्सव करवा कारणे, मन जमाह्यो विचित्र ॥ याण ॥ र ॥ कुस कहे शेठाणी सांत्रलो, तमे पंधारो रे गेह ॥ दीका महोत्सव करशुं श्रमे सही, तमारा कुमरनो रे जेह ॥ था। ३॥ कुछ आव्या तिहां हर्षे अति घणा, यावचा कुमरने रे गेह ॥ दीका ख्यो ठो रे श्या कारणे, मुक्तने कहोने रे तेह ॥ ४ ॥ कृष्ट कहे रे थावचा कुमरने ॥ ए आंकणी ॥ मुज ठत्रवाया रे कुमर तमे वसो, जोगवो सुख शिरताज ॥ तुमने पीडाकारी रे जे हुवे, तेहने वारं रे आज ॥ कृक्षण ॥ थ॥ इः खकारी नर मुकंने को नही, खामी तुम आधार ॥ पण मु क जीवने इः खदीये त्रण जणा, मूकं तेणे संसार ॥ ६॥ यावचा कह रे श्रीकृष्ण प्रत्ये ॥ ए श्रांकणी ॥ कृष्य कहे रे तेह नर कोण हे, नाम क होने कुमार ॥ जन्म जरा ने मरण ए डुःख दीये, काया डुःखनो जंमार ॥ था० ॥ ४ ॥ एहने वारो र जो खामी तुमे, तो हुं रहुं संसार ॥ ते हने वारी रे हुं पण निव शकुं, मनुष्यने वारं कुमार ॥ कुछा ॥ ए ॥ जि नवर सुरवर चक्री जे थया, तेले निव वास्ता रे एह ॥ कर्म क्ये करी बूटे ए सही, ख्यो दीका धरि नेह ॥ क्रम्राण ॥ ए॥ साद पडाव्यो रे नगरी द्वारिकां, राजा अथवा कुमार ॥ शेव सेनापति दीक्ता जे लीये, पाक्षं तस परिवार ॥ १०॥ कुल्एजी कहे रे निजलोको प्रत्ये ॥ ए आं कणी ॥ यावचा कुमर दीका क्षे सही, मूकी धन परिवार ॥ तेइना रागी रे सहस पुरुष थया, संयम खेवा उदार ॥कृष्णण। ११॥ उत्सव महोत्सव कृष्णराजा करे, खरचे चहुला रे दाम ॥ शिविका बेसी रे निज

निज घरथकी, आव्या रेवंतवन ठाम ॥ कृष्ण ॥ ११ ॥ खहरतें दीका रे दीधी नेमजी, हुआ थावचा अणगार ॥ शिष्य पोताना रे करीनें या पीया, महियल करे रे विहार ॥ १३ ॥ कृष्ण कहे धन्य थावचा साधुनें ॥ ए आंकणी ॥ अनुक्रमें आव्या रे सेलंगपुर सही, सेलंगराय आवक कीध ॥ सोगंधिका नगरी रे थावचा आविया, सुदर्शन पण वृत लीध ॥ कृष्ण ॥ १४ ॥ वात सुणीने रे ग्रुक तिहां आवीयो, सहस संन्यासी संघात ॥ महारो शिष्य रे एणें जोलव्यो, करे थावचाग्रुं वात ॥ कृष्ण ॥ १५ ॥ प्रश्न पहुत्तर ग्रुक बहु पूठीया, कृष्टिलपणे रे ज्ञ्लास ॥ चजद पूरवधारी थावचा मुनिवरू, पहोंचाये केम तास ॥ कृष्ण ॥ १६ ॥ खोटो धर्म मिथ्यात्वनो मूर्कीनें, श्रीग्रुक थयो अणगार ॥ सहस संन्या सी रे दीका ले तिहां, हुआ चौद पूरवधार ॥ कृष्ण ॥ १९॥ मास अण सण रे सहस साधुग्रं, शेत्रुंजे दीध संथार ॥ थावचामुनिवरें केवल पा मीनें, लीधुं शिवपद सार ॥ कृष्ण ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोर्थी॥

॥ जित तमें जो जो रे संसार नातरां रे ॥ ए देशी ॥ सेखंगपुर आव्या हो ग्रुक मुनिवरू रे, सहस शिष्य परिवार ॥ सेखंगराजा हो पांचशें मंत्री ग्रुं रे, वांयां चरण ग्रुणधार ॥ र ॥ हुं ग्रुण गाउं हा थावचा मुनि परि वारना रे, उत्तम अरथ जंकार, श्रुत केवली आणगार, जित जावां मुल कार ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ वैराग्य पामी हो सेखंग रायजी रे, मंमुकते देइ राज ॥ दीका लीधी हो पांचशें मंत्रिशुं रे, करे धर्मनां काज ॥ हुं० ॥ १ ॥ शुक आचार्य हो पुंकरिक चडी रे, पादोपगमन संथार ॥ साधु सहसना हो परिवार करी रे, लही मुक्ति सुखकार ॥ हुं० ॥ ३ ॥ सेलंग कृषि हो विहार करतां थकां रे, अंतप्रांत आहार ॥ रोगे व्यापी हो काया तेहनी रे, आव्या निजपुर सार ॥ हुं० ॥ ४ ॥ तात शरीरें हो रोग देखी करी रे, मंमुक करे उपचार ॥ विविध प्रकारें हो औषधीयं करी रे, समाव्यो रोग तेणि वार ॥ हुं० ॥ थ ॥ आहार तणे रसें हो ते थया खाखुपी रे, श्रीसेखंग कृषिराय ॥ पडिक्रमणादिक किरियाने विषे रे, प्रमादी हूआ गुरुराय ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पांचशें साधु हो मनमांहे चिंतवे रे. रहेवुं निहं एकण ठाम ॥ पंथक शिष्यने हो पासे थापीने रे, चाल्या मुनिवर सुजाण

॥ हुं ॥ ७॥ कार्त्तिक चोमासुं हो छाहार करी घणो रे, सूता तेलंग क्रियाय ॥ पंथक खमावण हो पडिक्रमणा समे रे, आव्यो ते मुनि चित्त साय ॥ हुं० ॥ ७ ॥ शिष्य संघट्टें हो ततक्तण जागीयो र, क्रोध चड्यो विकराल ॥ सुखनर सूतां हो मुजने जगाडीयो रे, एहवो कोण रे चंनाल ॥ हुं ॥ ए॥ पंथक नामे हो स्वामी हुं शिष्य हुं रे, खमजो मुक अप राध ॥ आज पढ़ी हुं अविनय निव करुं रे, श्रीजिनवचन आराध ॥ हुं० ॥ १०॥ पंथक वयणें हो मुनि प्रमन्न थथो रे, आव्यो गुद्ध आचार॥ हुं अज्ञानी हो पासहो ययो रे, करशुं शुद्धविहार ॥ हुं० ॥ ११ ॥ मंभुक रायने हो प्रजातें पूछीनें रे, चाल्यो सेलंग रुषिराय ॥ प्रांचशें साधु हो श्रावीने मस्या रे, वांचा ग्रहना रे पाय ॥ हुं । । १२ ॥ कठण तप करी हो कर्म खपावीयां रे, शत्रुंजय करी संधार ॥ अढी हजार साधु मुक्तें गया रे, थावञ्चादिक परिवार ॥ हुं० ॥ १३ ॥ गुण में गाया हो जत्तम साधुना रे, नामें पाप पलाय ॥ जाएँ गुएँ जे जवियए जावद्युं रे, तस घर नव निधि थाय ॥ हुं० ॥ १४ ॥ गन्ननायक हो श्रीजागचंदजी रे, उत्तम श्रीपूज्य नाम ॥ शासनमांहे हो गोवर्द्धन मुनिवरू रे, साधुगुणें अितराम ॥ हुं० ॥ १५ ॥ शिष्य रायचंद हो कहे हर्षे करी रे, गुण गाया छाणगार ॥ ज्ञातासूत्र अध्ययन पांचमें कह्यों रे, यावचा मुनि अधिकार ॥ हुं०॥ १६ ॥ संवत सत्तरशो सत्ताणंवे रे, विजया दशमी सार ॥ चार ढालें थावचा गुण गा इया रे, नवा रे नगर मोजार ॥ हुंº ॥ १९ ॥ गुण प्राह्क श्रावक आयहें क री रे, रह्या वीजुं चोमास ॥ श्रीजगवंत तणा प्रसादंथी रे, संघनी फल जो हो आश्रा ॥ हुं० ॥ १७ ॥ कलस ॥ श्रावचा गाया सुजस पाया, हर्ष मनमें अति घणा ॥ इद्धि वृद्धि सुख संपत्तिकारक, श्रीसंघकोडि वधाम णां ॥ १ए ॥ इति श्री थावज्ञा कुमरनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥ ॥ अथ श्रीधन्नाजीनी सद्याय ॥

॥ शीयाखामां शीत घणी रे धन्ना, जनाखे खूजाख ॥ चोमासें जख वादखां रे धन्ना, ए छुःख सह्युं न जाय ॥ हुं तो वारी रे धनजी आज नहिं सो काख ॥ १ ॥ वनमें तो रहेवुं एकखुं रे धन्ना, कोण करे तारी सार ॥ जूख परिसह दोहिखों रे धन्ना, मत कर एसी वात रे हो धनजी ॥ मत खीयों संयम जार ॥ २ ॥ वनमें तो मृग एकखों रे माता, कोण करे

उनकी सार।। करणी तो जेसी आपकी रे माता, कोण बेटो कुण बाप रे हो जननी ॥ हुं खेहुं संयम जार ॥ ३ ॥ पंच माहावतको पाखवो रे धन्ना, पांच मेरु समान ॥ बावीस परिसह जीतवा रे धन्ना, संयम खांना की धार रे हो धनजी ॥मतण।।।। नीरिवनानी नदी कीसी रे धन्ना, चंद विना केसी रात ॥ पियु विना केसी कामिनी रे धन्ना, वदन कमल विक खाय रे हो धनजी ॥ मतण॥ य॥ दीपक विना मंदिर किस्यां रे धन्ना, कान विना केसो राम ॥ नयण विना किस्युं निरखवुं रे धन्ना, पुत्र विना परिवार रे हो धनजी ॥ मतणा६॥ तुं मुक्त श्रंधालाकडी रे धन्ना, सो कोइ टेको रे होय ॥ जो कोइ लाकडी तोडशे रे धन्ना, श्रंधो होशे खुवार रे हो धनजी ॥मणाणारत जडितको पिंजरो रे माता, ते सूडो जाणे बंध ॥ काम जोग संसारना रे माता, ज्ञानीने मन फंद रे जननी ॥ हुं खेहुं संयम जार ॥ ए॥ आयु तो कंचन जस्चो रे धन्ना, राष्ट्र परवत जेम सार ॥ मगर पचीशी असतरी रे धन्ना, निहं संयमकी वात रे हो धनजी ॥ मे०॥ ए॥ नित्य उठी घोडले फीरतो रे धना, किल उठी बागमें जाय ॥ एसी खुडी परमाणें रे धन्ना, चमर दुलायां जाय रे हो धनंत्री ॥ मण ॥ १० ॥ चोडी पाखखीयें पोढतो रे धन्ना, नित्य नइ खुबी माण ॥ ए तो बत्रीश कामिनी. रे धन्ना, उनी करे अरदास रे हो धनजी ॥ मण्॥ ११॥ नास्य सकारा हुं गयो रे माता, कानें आयो राग ॥ सुनीश्वरनी वाणी सुणी र माता, आ संसार असार रे हो जनि ॥ हुं खेशुं०॥ ११ ॥ दाथमें लेनो पातरो रे धन्ना, घेर घेर मागवी जीख ॥ कोइ गाखज देइ काढशे रे धन्ना, कोइ देवेंगे शीख रे हो धनजी ॥ मतण।। १३॥ तज दियां मंदिर माखीयां रे माता, तज दियो सब संसार ॥ तज दीनी घरकी नारीयो रे माता, बोड चख्यो परिवार रे हो जनि ॥ हुँ खे॰ ॥ १४ ॥ जुवां तो मंदिर मालियां रे माता, जूठो ते सब संसार ॥ जीवतां चूंटे कालजूं रे माता, मुवां नरक क्षेष्ठ जाय रे हो जननि ॥ हुं क्षेण ॥ १४ ॥ रात्रिजोजन बोड दे हो धन्ना, परनारी पचकाण ॥ परधनशुं दूरा रहो रे धन्ना, एहज संयमनार रे हो धनजी ॥ मतण ॥ १६ ॥ मात पिता वरजो नहिं रे धन्ना, मत कर एसी वात ॥ एह बन्नीशे कामिनी रे धन्ना, एसा देगी शाप रे हो धनजी ॥ म० ॥ १७ ॥ कर्मतणां डुःख में सह्यां रे माता, कोइ

न जाणे जेद ॥ राग द्वेपके पूंछडे रे माता, वाध्यां वैर विराध रे हो ज नि ॥ हुं ॥ १०॥ साधुपणामें सुख घणां रे माता, नहिं छः खरो स वलेश ॥ मलशे सोइ लावशुं रे माता, सोइ साधु जहेश रे हो जननि ॥ हुं०॥ १ए॥ एकसो जठी जायशे रे माता, कोई न राखणहार॥ एक जीवके कारणे रे माता, क्युं करे एतो विखाप रे हो जननि ॥ हुं०॥ १० ॥ न कोइ धन्नो मर गयो रे माता, न कोइ गयो परदेश ॥ जग्या सोइ श्रायमे रे माता, फूख्या तो करमाय रे हो जननि ॥ हुं क्षेण ॥ ११ ॥ का ख र्टिचतो मारशे रे माता, कोण बोडावण हार ॥ कर्म काट मुक्तें गया रे माता, देवलोक संसार रे हो जननि ॥ हुं क्षेण ॥ २१ ॥ जे जेसी करणी करे रे माता, तिन तेसां फल होय ॥ दया धरम संयम विना रे माता, शिवसुख पामे न कोय रे हो जननि ॥ खेडां०॥ १३॥ इति ॥

॥ श्रय मकनकविकृत श्री गजसुकुमारनी सद्याय ॥

॥ एक घ घोडा हायीया जी रे, नायक संख्य अपार ॥ ए देशी ॥ जी रे सरखती समरुं शारदा, जी रे पत्रणुं सुगुरु पसाय ॥ जी रे गजसुकुमार गुलें जस्वा, जी रे नलट खंग सवाय ॥ मोरा जीवन, धर्स हैयामां धार॥ र।। ए आंकणी ॥ जी रे दीपे नगरी द्वारिका, जी रे वासुदेव नरपति नंद ॥ श्रीकृष्ण राज करे तिहां, जी रे प्रगट्यो पूनम चंद ॥ सोराण ॥श। जी रे न्यायवंत नगरी घणी, जी रे दिखयो वलजंड वीर ॥ जी रे कोइ कला गुणें करी, जी रे आपे अति मन धीर ॥ मो० ॥ ३ ॥ खामी नेम स मोसखा, जी रे सहसावन्न मजार॥ जी रे वहु परिवारे परवस्ता, जी रे गुण मिलना चंमार ॥ मो० ॥ ।।। जी रे बंदण आव्या विवेकथी, जी रे क्र प्णादिक नर नार ॥ जी रे वाणी खुणावे नेमजी, जी रे वेठी पर्षदा बार ॥ मो॰ ॥ था। जी रे गजसुकुमार गुणें तस्वा, जी रे छाव्या वंदण एह ॥ जी रे विनय करोने वांदिया, जी रे त्रिकरण करीने तेह ॥ मोव ॥ ६॥ जी रे दिये देशना प्रजु नेमजी, जी रे आहे अथिर संसार ॥जी रे एक घडि मांहें उठी ज़िंखे, जी रे कोइ नाईं राखणहार ॥मोणाउ॥ जी रे विधिविधि करी ने विनवुं, जी रे सांजलो सहु नर नार ॥जी रे अंते कोइ केनुं नथी, जी रे आखर धर्म आधार॥मोणाणा जी रे स्वामीनी वाणी सांजलो, जी रे गजसु कुमार गुणवंत ।।जी रे वैराग्ये मन वाखीयुं, जी रे आणवा जवनो अंत ॥मो०

॥ ए॥ जीरे खाव्या घेर जतावला, जीरे न कस्त्रो विलंब लगार ॥ जीरे माता मुज अनुमति दियो, जीरे लेशुं संयम जार ॥ मो० ॥ १०॥ इति॥ ॥ ढाल बीजी ॥

॥ कहे माता कुमारने रे, सांजखो गजसुकुमार रे ॥ प्रवीणपुत्र॥ दीका डकर पालवी हो लाल ॥ तुं हो नानो बाल रे ॥ प्रवीण ॥ अनुमति हुं आपुं नहिं रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सांज्ञलो सुत सुख जोगवो रे, मणि माणक जंकार र ॥ प्र० ॥ सुख छाहियाँ हे सुणो हाथमां रे खाल, तुमे परहरो कोण प्रकार रे ॥ प्रण ॥ अनुण ॥ २ ॥ पंचन्नत आप्यां नेमजी रे, मोंघा मूख्य जेवां होय रे हो ॥ मोरी मात ॥ नाणां दीयेंते निहं मले रे लाल, आप्यां अवल मुक एह रे हो मोरी माताः॥ दियो अनुमति दीका बहुं रे बाल ॥ ३ ॥ सांजलो सुत संयम जणी रे, पंच पाराधि जेह रे ॥ प्रणा आग करम आवी नडे रे खाख, तेहने तुं केम जीतीश रे ॥ प्रण ॥ अण ॥ ४ ॥ मन निर्मख नाले करुं रे, ज्ञानना गोला जेह रे हो ॥ मो०॥ जपसर्ग अप्ति-दारु दीयुं रे लाल, जमाडी आपुं एहरे हो। ।। मो। ।। दियो। ।।।।। चार चोर छति छाकरा रे, लोंना लूंटी जाय रे॥ प्रण॥ दश दुशमन वली ताहरा रे खाख, आमा आपे घाय र ॥ प्रण ॥ अनुण ॥ ६॥ खेमखजानो माहेरो रे, खूंट्यो केणे न खूंटाय रे हो ॥ मोण्॥ शियलसेना सूधी करं रे लाल, मारा जुशमन पूरे जाय रे हो ॥ मोण ॥ दीण ॥ ७ ॥ मोहमहिपति जे मोटको रे, धीरज केम धरीश रे ॥ प्रण ॥ जालम ए जुगने नडे हो लाल, तेहने तुं केम जीतीश रे ॥ प्रण्या अनुण्या ज्या कोमस मन कवानथी रे, जाव प्राची जरपूर रे ॥ हो। ॥ त्रिकरण मन तीरज करं हो खाखः मोहमहिपति करं दूर रे हो ॥ मो०॥ दीयो०॥ ए॥ जोजन जिल जिल जातनां रे, सुखडी साते जात रे ॥ प्रवीण ॥ सरस नीरस आहार आवशे रे खाल, ते खाशो केम करि खांत रे ॥ प्र० ॥ अनु० ॥ १० ॥ समकित साते सूखडी रे, मनिथर मोतीचूर रे हो ॥ मों० ॥ गगण गांठीया इतनना रे खाल, जाव जलो जरपूर रे हो ॥ मोण ॥ दीयोण ॥ ११ ॥ सोवनथाल सोहा मणो रे, शाल दाल घृत गोल रे ॥ प्रण ॥ सरस जोजन मन मानतां रे लाल, उपर मुख तंबोल रे ॥ प्र०॥ श्रवु०॥ ११॥ कंचन थाली काच

खी रे, समता शाल दाल घृत गोल रे हो ॥ मो० ॥ सरस जोजन संतो षनां रे खाल, स्थिर मन मुख तंबोख रे हो ॥ मो०॥ दीयो०॥ १३॥ जपसर्ग तुजने अतिघणो रे, वली परिसह बावीश रे ॥ प्र०॥ पामी न शके तुं खरो रे खाख, पढ़ी पस्तावो करीश र ॥ प्रण ॥ व्यण ॥ १४ ॥ जन सर्ग जे मुज उपजे रे, तेह इतमायें करीने खमाय र हो ॥ मो०॥ प्रीतें करी परिसह सहुं रे खाल, बलीया जे कोइ बाबीश रे हो ॥मो। ॥ दीयो। ॥ १५ ॥ वचन सुणी वैराग्यनां रे, मूर्शाणी तव मात रे ॥ प्र० ॥ नयणें ते श्रांसुं नीतस्वां रे लाल, सांजहय सुत सुजात रे ॥ प्रणा श्रनुणा ॥ १६॥ मान्य वचन माता तणां रे खाल, तुफने कहुं छुं हुं एह रे ॥ सोजागी सुंदर॥ सुग्रण सुता सोमलतणी रे खाल, परणो पनोता एह रे ॥ सो०॥ धर्म हैयामां ग्रुं धरो रे खाल ॥ ए आंकणी ॥ १९॥ मात मनोरथ पूरवा रे, न करजो मुख नाकार रे ॥ सो०॥ जत्सव महो त्सव करि घणा र लाल, परणावुं पुत्र कुमार रे ॥ सो०॥ धर्म०॥ ॥ १०॥ कहे कुंवर माता जणी रे, सांजलो मोरी माय रे हो ॥ मोरी०॥ मन मारुं वैराग्यमां रे लाल, एक क्रण लाखेणो जाय रे हो ॥मोणादीयोण ॥ १ए ॥ माता विचारे चित्तमां रे, राख्यो न रहे एह रे ॥ प्र० ॥ आशि ष आपी अति घणी रे खाल, लीयो दीका धरि नेहरे ॥ प्रण ॥ धर्मण ॥ २०॥ वेसास्या सेवक सुत जणी रे, जत्सव की धो अपार रे ॥ सो०॥ खाव्या नेमजी खागले रे लाल, जावें ले संयमजार रे ॥ सोव ॥ धव ॥ ॥ ११ ॥ माता कहे निज पुत्रने रे, सांजल सुत् सुजाण रे ॥ सो० ॥ सं यम सूधो पालजो रे लाल, पामजो पद निर्वाण रे ॥ सो०॥ ४०॥ १२॥ एम आशीष माता दीये रे, आव्यां सहु घेर एह रे॥सोण॥ आव्या नेम खी आगर्खे रे लाल, गजसुकुमार गुणगेंह रे ॥ सो ॥ धर्म ॥ १३ ॥ आज्ञा आपो जो नेमजी रे, काउस्सग्ग करुं समशान रे॥सोण। मन स्थिर रां विश माहरं रे लाल, पामुं पद निर्वाण रे ॥सोजागीस्वामी॥धर्मणाश्याः आज्ञा आपी नेमजी रे, आव्या जिहां समुशान रे ॥सो०॥ मन स्थिर रा खी आपणुं रे लाल, धरवा लाग्याध्यान रे ॥सोणाधर्मणाश्या सोमल ससरे देखीया रे, जपनुं मनमां पूरव वैर रे ॥सो०॥ कुमति सोमल कोधें चड्यो रे लाल, मनमां ते नाणी मेर रे ॥ सोण ॥ धर्मण ॥ १६॥ शिरनपर बांधी

सुणों रे, मुखें माटीनी पाल रे ॥ सो० ॥ खेर श्रंगारा खरा कहा रे खाल, ते मृक्या ततकाल रे ॥ सो० ॥ धर्म० ॥ १० ॥ फट फट फट हाडकां र, त्रट त्रट त्रटे चाम रे ॥ सो० ॥ संतोषी ससरो मख्यो रे खाल, तुरत साखुं तेनुं काम रे ॥ सो० ॥ घ० ॥ १० ॥ सो जागी शुक्कच्याने चढ्यो रे, उप न्युं केवलकान रे ॥ सो० ॥ कणमां कर्म खपावीयां रे, मुनि मुक्ते गया एह रे ॥ सो० ॥ घ० ॥ १ए ॥ गजसुकुमार मुक्ते गया रे, वंडुं वारंवार रे ॥ सो० ॥ मन स्थिर राख्युं श्रापणुं रे खाल, पाम्या जवनो पार रे ॥ सो० ॥ घ० ॥ ३० ॥ श्रीविजयधर्म स्रितणों रे, राजविजय उवसाय रे ॥ सो० ॥ घ० ॥ ३० ॥ श्रीविजयधर्म स्रितणों रे, राजविजय उवसाय रे ॥ सो० ॥ व० ॥ ३१ ॥ को विजयधर्म स्रितणों रे, सांगानेर मंजार रे ॥ सो० ॥ यण गा या मास फागुणे रे खाल, शुक्क उठ सोंमवार रे ॥ सो० ॥ ध० ॥ ३१ ॥ कहे मकन मोहनतणों रे, साधुतणी सद्याय रे ॥ सो० ॥ वणजों ग्रणजों जिल्ला रे खाल, पामजों जवनो पार रे ॥ सो० ॥ ३३ ॥ ॥ श्रा श्री पर्यूषणपर्वनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ पर्व पज्सण आवीयां रे लाल, कीजें घणां धर्मध्यान रे ॥ जिन जन ॥ आरंज सकल निवारीयें रे लाल, जीवोने दीजें अजयदान रे ॥ जि ॥ पर्वण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सवला मासमांहे शिरं रे लाल, जाइव मास सुमास रे ॥ जि ॥ तिण्मांहे आठ दिन रूअडा रे लाल, कीजें सु कृत जल्लास रे ॥ जि ॥ पर ॥ श लांकण पीसण गारनां रे लाल, न्हा वण धोवण जेह रे ॥ जि ॥ एहवा आरंज टालवां रे लाल, जत्सव करीयें अनेक रे ॥ जि ॥ धर्म साह वित्त वावरों रे लाल, जत्सव करीयें अनेक रे ॥ जि ॥ धर्म साह वित्त वावरों रे लाल, हैये आणों वि वेक रे ॥ जि ॥ दि ॥ प्रजी अचीं आणीये रे लाल, श्रीसज्जर्नी पास रे ॥ जि ॥ दील ददामां फेरीयां रे लाल, मांगलिक गावो गीत रे ॥ जि ॥ पा ॥ श्रीफल सिखर सोपारियां रे लाल, दीजें सहामीने हाथ रे ॥ जि ॥ ला ॥ लाज अनंता वधावतां रे लाल, श्रीमुख त्रिज्ञवन नाथ रे ॥ जि ॥ पा ॥ साहामीवत्सल कीजीयें रे लाल, जवजल तरवा ना वारे ॥ जि ॥ पा ॥ साहामीवत्सल कीजीयें रे लाल, जवजल तरवा ना वारे ॥ जा ॥ पा ॥ पा ॥ श । चित्त किर चैल जहारीयें रे लाल, प्रजा स

सर प्रकार रे॥ ज०॥ श्रंगपूजा सजुरुतणी रे खाख, कीजे हर्ष श्रपार रे॥ ज०॥ प०॥०॥ जीव श्रमारी पलावीयें रे खाख, तिण्यी शिवसुल होय रे॥ ज०॥ दान संवत्सरी दीजियें रे खाख, इण सम पर्व न कोय रे॥ ज०॥ प०॥णा काजस्सग्ग करीने सांजको रे खाख, श्रागम श्रापणे कान रे॥ ज०॥ इठ श्रद्धस तप श्राकरां रे खाख, कीजियें जज्जवस ध्यान रे॥ ज० प०॥१०॥ इण्विधे जे श्राराधशे रे खाख, ते खहेशे सुल कोडि रे॥ ज०॥ मुक्तिमंदिरमें मालुशे रे खाख, मतिहंस नमे कर जोडि रे ॥ ज०॥ सुक्तिमंदिरमें मालुशे रे खाख, मतिहंस नमे कर जोडि रे ॥ ज०॥ रु

॥ श्रथ श्री जिनवर्कन कृत उपदेशकारक ककानी सचाय प्रारंतः॥ ॥ सोरठा ॥ कक्का करमनी वात, करी कमाइ नोगवो ॥ शुन अशुन जे होय, जोगव्या विण नहिं बूटको ॥ १॥ खण खण स्रायु जाय, चे तवुं होय तो चेतजे ॥ वाजनी पेठे यहे जीव, जिहां मूक्युं ते तिहां रहे ॥ १ ॥ गुरुनां वचन मन आण, गुरु विण ज्ञान न पामीयें ॥ गुरुथी जत रिश पार, सक्तुरु वचन हिचडे धरे ॥ ३॥ घर क्रुटुंव परिवार, स्वारथीयो सहु को सगो ॥ ताहारो न दीसे कोय, जोगवीश प्राणी एकलो ॥ ४ ॥ नन्ना न करीश नेह, परनारीशुं प्रीतडी ॥मन चित्त राखी ठाम, परनिंदा तुं परहरे ॥ ५ ॥ चचा तुं चार निवार, फ्रोध बोन मद मोहने ॥ चार दावानल जाण, करी कमाई हारीयें ॥६॥ ठोड तुं सकल संसार, ए संसार श्रसार है ॥ तुं जाणे मन सार, जगमां कोइ कहेनुं नथी ॥ ७ ॥ जन्म्यो वार अनंत, अनंता जव तें कस्ता॥ देदन जेदन अपार, पार न पाम्यो ते हनो ॥ ए ॥ कुस्तो सयस संसार, जागीने जोयुं नहिं ॥ खूतो मोहनी जाख, जन्म मरण निव र्राखख्यो ॥ ए॥ निखवट खिख्या खेख, कोणे म टाया निहं मटे ॥ जो जार्ड देश विदेश, हाण वृद्धि साथे चले ॥१०॥ टा स तुं कुगुरु कुदेव, सजुरु साचो जाणीने ॥ दे जो धर्म उपदेश, तो मुक्ति तणां फल पामशे ॥ ११ ॥ ठाले हाथ जे जाय, पामी धन निव जे दिये ॥ मरीने विषधर थाय, धन ऊपर परठी रहे ॥११॥ उंश हिये मृत् राख, मं शयी दुर्गति पामीये ॥ मंदा दावानख जाण, करी कमाई हारिये ॥ १३॥ ढूंढत स्यख संसार, निःस्पृही कोई निहं मिछो ॥ तिसका वंद्रं पाय, जे हं मख्यो ते खाखची ॥ १४ ॥ रणनी वाटे जाय, प्राणी जावुं एक खुं ॥ सं षस सेजे साथ, आगस निथ हाट वाणीयो ॥ १५ ॥ तज तुं राग ने

देष, शमताशुं मन खावजे ॥ कर तुं व्रत पचकाण, सामायिक पोसा साचवे ॥ १६ ॥ थर थर कंपे काय, मुखर्थी खाख चूवे घणी ॥ पंचे पर वश थाय, धर्म जदय आवे निहं॥ १९॥ देने सुपात्रे दान, जज जगवंत विसार मां ॥ जीवदया प्रतिपाल, रात्रिजोजन परिहरे ॥ १०॥ धन जे होय ते खाय, धर्मनो जेद जाणे नहिं॥ हाय हाय करे दिन रात, सम ता न आणे प्राणीयो ॥ १ए ॥ नारी विष सम जाण, विषनी वेख तुं काप जे ॥ शीयल अमृत वेल, शियले सिव संकट टले ॥ २०॥ परपीडा तुं जाण, जीव लघलानी रक्ता करे॥ आपणा जीव समान, परना एवा जा णीये ॥ ११ ॥ फरीयो अनंती वार, तीन खोकमां हे वली ॥ तोहि न पा म्यो पार, समय जोइ जाग्यो नहिं॥ ११॥ बब्बा वे कर जोड, सकत सा धुने वंदीयें ॥ न करीश कोइनी वात, निंदा करजे आपणी ॥ २३ ॥ ज खो ते चारे वेद, आप प्रतीति आवे नहिं॥ परने दे हे शीख, आप कशुं समजे नहिं॥ १४॥ मनुष्य जन्मने पामी, त्रण दद्दा तुं खावजे ॥ दया दीनपर लाव, दान देजे तुं मन दमे ॥ १५ ॥ आव्यो योनि मकार, कंधे शिर डुःख जोगव्यां ॥ संकट उदर मजार, साते नरकथी आकरां ॥ १६ ॥ रलचिंतामणि हाथ, काच लेइ मत राचजे ॥ जीते सकल संसार, पांच इंडिय जो वश करे ॥ १९ ॥ खे जगवंतजी नाम, नामे नरजव पामीयें ॥ नामे निर्मेख काय, आवागमण निवारीयें ॥ २० ॥ व्रत मांहे मन आण, व्रतथी विलसे सुख घणां ॥ व्रतथी पामीश पार, व्रत हे जीवने मोटकुं ॥ १ए॥ सत्य वचन तुं बोख, सत्यवचन शिख निर्मखां ॥ सत्यथी शीतल त्र्याग, सत्यथी विषहर वेगला ॥ ३० ॥ खोजने तुं घटमांहि, धर्म अधर्म घटमां वसे ॥ धर्में होये सिक्षि, अधर्में होये डुःख घणां ॥ ३१ ॥ सात व्यसन तुं बोड, व्यसनें वाहालां वेगलां ॥ व्यसनें जीवनी हाण, पर्यातुं पाणी जतरे ॥ ३२ ॥ हैये हर्ष न माय, हर्षे हका जोडिया ॥ कल्याणधर पंन्यास, शिष्य जिनवर्कन इम जणे ॥ ३३ ॥ इति ॥

॥ अथ जांग्यवारकनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ जोला जोगीयडा, रखे थार्ज जांग्यना जोगी ॥ जांग्यना जोगी ते जा णे जाण, के जाणे कोइ रोगी ॥जोला० ॥ ए आंकणी ॥ जंगुर कही सहु जांगे, कार न माने कोइ ॥ जे बोले ते बंध न बेसे, वैरी मेहले वगोइ ॥

जो। । १॥ खोखन खाखी खहे जेमांहि, कीर्ति थाये काखी॥ जांग्य तमा कूनो पीनारो, गुण मेहसे सहु गासी ॥ जोण ॥ २ ॥ मात पिता गुरुने निव माने, साते व्यसनें शूरा ॥ वारे तेहना वैरी थाये, पापी ते वासी पूरा॥ जो ।। ३॥ वनवासी संन्यासी वावे, जंदा तकीये जाजी॥ जे ब्यसनी ते जात विटासे, खोकनी मांदे खाजी ॥ जोए ॥ ४॥ साकर जा खनां सरवत पीयो, पीयो इधना प्याला ॥ देह तपे ने रूडां दीसो, कोइ न कहे मतवाला ॥ जो०॥ ५ ॥ जांग तमाकू मदिरा पाइ, माजमना वसी मोजी ॥ धर्मतणी ते वात न धारे, खोटी वातना खोजी ॥ जो०॥ ६॥ नीली बूटी पीये घूंटी, खूणे बेसी खांते॥ जूलवतां पण थाये जाहेर, वाहेर वेसतां खांते ॥ जो० ॥ ७॥ जांग पाइने जिलडी रूपें, नगन श्रइ नचाव्यो ॥ पारवतीयें प्रेम धरीने, शंजुने समजाव्यो ॥ जो०॥ ए।। जांग्य नीली पण नरने पूणे, सवजीवें सूकाइ।। व्यसन तणी वाडी सिंचावी, सफ़ुरु वांहे न साही ॥ नोण ॥ ए ॥ विशक वाडवनी जात विटाले, जांग्य तमाकू वाला ॥ नीच जंच वेरो निव जाणे, कुल खजवे कुमताला ॥ जो० ॥ १० ॥ जांगडलीयें जे जोलवीया, जेलवीया ते जंधा ॥ फूलविया धर्में निव फूले, रोलविया जड मूधा ॥ जो० ॥ ११ ॥ एक हो ये तिहां साते छावे, एक एकना छनुवंधी ॥ वांध्या जिम जलमां वंधायें, समजावी संबंधी ॥ जो०॥ १२ ॥ श्रमख तणी जे श्रवला तेमां, जव अटवीमां शुला ॥ व्यसन विद्युद्धा न रहे सूधा, तस्त्र न पामे मूला ॥जो□ ॥ १३ ॥ मदिरा तणी जांग्य ते जिंगनी, जुर्ज जनक गति गांजो ॥ पूर्ण व्यसननां श्रंग ए परखी, मुनि वचनें ते मांजो ॥ नो० ॥ १४ ॥ कुलवोसू नर कहीयें केता, कोइकुलें व्यवतंसा ॥ वोलू ते वीजाने वोले, पुण्ये होय प्रशंसा ॥ जोंव ॥ १५ ॥ पुढवी तेज वाज वनस्पति, त्रस पामे बहु त्रासा ॥ व्यसनी नरनुं कांय विणासे, विल खहे छुर्गति वासा ॥ जो० ॥ १६ ॥ जिनवयणें नयणे जोईने, व्यसन ते हूर निवारो ॥ वत आराधो सं यम साधी, निज आतमने तारो ॥ जो० ॥ १७ ॥ सत्तरशें पंचाणुआ वरपें, शुदि वीज ए बोली ॥ फाल्युनमासे जांग्य फजेती, जेहवी गणिका गोली ॥ नोष ॥ १७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, समज्या जेह सुजाए॥ अपसद्गण्यी असगा रहेशे, खेहशे परम कख्याण ॥ जोण्॥ १ए ॥ इति ॥

् ॥ श्रय श्रीविष्णुकुमार मुनिनी सद्याय प्रारंजः॥

श दोहा॥ श्रीमुनिसुवत स्वामीजी, त्रिजुवन तारण देव॥ तीर्थंकर प्रज वीशमो, सुर नर सारे सेव ॥ १॥ चरणकमख तहनां नमी, कहेशुं कथा श्राजिताम ॥ सुणतां सिव सुख ऊपजे, घटे मोह विद्राम ॥ १॥ विष्णुकुमारमुनींड्नुं, नाम महा सुखदाय॥ सज्जनको सुख उपजे, डुर्ज न महाडुःख पाय ॥ ३॥ जिनशासन श्रजुवाखियो, कियो धर्म सुखका ख॥ बिद्याजाने चांपियो, सक्षम जूमि विशाख ॥ ४॥ पर्व बखेव तिहां यकी, प्रगटयुं जगके मांहि॥ सब दर्शनवाखे सही, जाणे मननी मांहि॥ ॥ ॥ सांजलजो श्रोता सहू, कुमति कदाग्रह ढांकि ॥ धर्मचितामणि जैनको, तेहथकी चित्त सांकि॥ ६॥

॥ ढाख पहेली ॥

॥ कपूर होवे अति कजलो रे ॥ ए देशी ॥ जंबूद्वीपना जरतमां रे, नय री जजायणी सार ॥ धन धान्ये करि दीपती रे, गढ मढ पोली प्राकार रे प्राणी।। जोजो धर्म विचार॥ जिनधर्मे शिव सार रे प्राणी, देखी धरे सु विचार रे प्राणी ॥ जो जो ह ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तस नबरे नृप शोजतो रे, धर्मराय सुलकार ॥ न्यायें नित्य पाखे प्रजा रे, श्रीजिनधर्म गखे हार रे प्राणी ॥ जो० ॥शा शिवसत धर्मनो रागियो रे, जूपने एक प्रधान ॥ न मुची नाम मिध्यामित रे, देषी जिनधर्मनी जाण रे प्राणी।। जोण॥ ३॥ ते अवसर तिण नयरमें रे, श्री मुनिसुद्रत जिन शिष्य ॥ आव्या घणा परिवारद्युं रे, सुत्रत नाम तितिष्य रे प्राणी ॥ जो० ॥ ४ ॥ धर्मराय वंदन तदा रे, आवे सहु परिवार ।। जमनादिक विधिशुं करे रे, जाव जिल जर धार रे प्राणी ॥ जो। ॥ ए॥ सब मुनीश्वर दिये देशना रे, जविक जीव जपकार ॥ दश दष्टांते दोहिलो रे, जनम नर अवतार रे प्राणी ॥ जो०॥६॥ अद्धा संयम पराऋम विना रे, पामवुं महाडुःख चूर ॥ बाजीने हारो सती रे, जिस संबासमाँ रहर रे प्राणी ॥ जोए॥ प्र॥ चार श्रंग दुर्ह्मिन खही रे, करजो धर्म प्रयत्न ॥ नरेंद्र सुर शिवगति साधशो रे, धर्म चिंतामणी रत रे प्राणी ॥ जोण ॥ ए ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ । जैन वचन निव सहतो,

बाद करे तस जाय ॥१॥ व्याकरणादिक उंद सब, काव्य कोष अलंकार ॥ न्याय तर्क साहित्य जे, निरुक्तादिक सुविचार ॥ १॥ वेद वेदांत पुराण पण, नास्तिक मत पण जोय ॥ पूठ्या सञ्जिशिष्यें तव, दीधा उत्तर सीय ॥३॥ इत्यप्कमां हि द्वाह्मक मुनि, जीत्यो वादमें कित्र ॥ मानजंग पाम्यो स्रित ते, गयो गेइ निज विश्र ॥ ४॥ इष्ट जाव मनमें जुज्यो, सारुं मु निकूं छाज ॥ सजामांहि इसवो कियो, सर्व गमावी खाज ॥ ५॥

॥ ढास बीजी ॥

॥ च्रमर जूधरने कहेजो ॥ ए देशी॥ कोध करी ब्राह्मण जातें, युरु मार ण आव्यो रातें, निर्दय खन्न मह्यं हाथे रे॥ जैनधर्भ सुरतर फलियो॥के मुःख दोह्ग दूरें टिखयो रे॥ जैनेघर्मे ॥ ए खांकणी ॥ विविर निकर खा व्यो ज्यारे, मारण खन्न धखुं त्यारे, श्रीजिन वचन हैये धारे रे ॥जैन०॥१॥ एहनो कांहिं नहिं दोप, अनुजवरस आत्त पोष, पण नहिं विप्र उपर रोष रे॥ जै०॥ ३॥ कंचन कामिनी नहिं राता, ते ग्रह खट जीवना त्राता॥ जगत गुरु वत्सल ने चाता ॥ जैन० ॥॥ शत्रु मित्र सम नहिं रीष, धर्म पाले विश्वा वीश, ते गुरु जगतना ईश रे ॥ जैनव ॥ ५ ॥ आश अरण निहं होय तेने, मुख डुःख खाङ न छहे कहेने, सुर साबिध्य रहे नित्य तेने ॥ जैन० ॥ ६ ॥ जिनशासन सुर रखराख, ज्ञानदेह आव्यो ततका ख, नमे मुनि चरण धरी जाख रे ॥ जैनः ॥ । धुर कोप्यो द्विज परं जाडो, मारग वचें कस्त्रो ठाढो, शंज्यो स्थंजपरें गाढो रे ॥ जैन०॥ ७॥ मारग रह्यो सहजन देखे, दुर्य उदयें उह मुख पेखे, जन्मकृतार्थ गणे केखे रे ॥ जैन० ॥ ए॥ धर्मराय वंदन छावे, प्रजालोक सहु सुख पावे, कृषि वंदी पावन थावे रे ॥ जैनण ॥ २७ ॥ वरें दें स्वरूप जाएयो सबहीं, प्रधान उपर कोप्यो तबहीं, काढ्यो नगरपकी धबहीं रे ॥ जैनण ॥ ११॥

॥ दोड़ा ध

॥ सेवकजन वोखायकें, कहे इस्यो तृप धर्म ॥ इषे ड्रष्ट माहापापीयें, कखुं निविड महा कर्म॥१॥ एइडुं सुख जोबुं नहीं, नहीं नगरमें काम॥ काढो इहांथी तेहने, निहं विलंबतुं ठाम ॥ १ ॥ उखंठ पाप एहनें सही, करो नगरनी बाहार ॥ श्राणा सीम रहेवे नहिं, करो देशनी पार ॥ ३ ॥ फट फट लोक करे सहु, रे पापी निर्खंडा ॥ गुरु महोटा संतापिया,

किस्युं कर्खुं तें कजा ॥ ४ ॥ किपफाले सस काढियो, सूंटी घर ने बार ॥ मानजंग जमतो फरे, कोइ न पूढे सार ॥ ४ ॥ ॥ ढाख त्रीजी ॥

भा सांजलजो मुनि संयम रागे, उपशमश्रेणिय चढियो रे ॥ ए देशी॥ इण श्रवसर एक सुरपुर सरिखुं, इंस्तिनागपुर न वाजा रें।। क्रिक्सिमृद्धि श्रकंटक जनने, श्री पद्मोत्तर राजा रे॥ इए० ॥ र॥ ए श्रांकणी॥ रा जा हुवे जिनधर्मनो संगी, रंगी संत पिछानो रे ॥ तस पत्नी ज्वाला पट राणीं, सतियां मुकुट समानो रे ॥ इ० ॥ १ ॥ समिकत शील रहे गुण साची, राची जगतविख्याती रे ॥ राजी नहीं विषया रस तो पणः जाची पियुगुण माती रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ राणीने नंदन जुगल अनुपम, जपमा ने हिं कोइ जेहने रे।। दिनकर तेज दीपे निशिपति ज्युं, न्यून जाणो तेहने रे ॥ इण् ॥ ४ ॥ विष्णुकुमार अने महापद्मज, नाम त्रिजगत विदित्ता रे॥ कल्प दोयना सुरपति मानुं, श्रावी खलकने जीता रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ रहे संसारमांहि पण अलगा, विलगा नहिं ज्युं रागी रे ॥ विलसे जोग रोग सम जांणे, विष्णुकुमार वडनागी रे ॥ इ०॥६॥ युवराजपद नृप कुम रकूं, पण निव लेवे निरोगी रे ॥ अधिरराजशुं प्रीति न मंद्रं, वंदुं इदि मुख जोगी रे॥ इ० ॥ ७ ॥ दानादिक कल्पडुम सरिखो, परखो कहुं ग्रण कैता रे ॥ जनक पास संयमनी अनुमति, मागे पण निव देता रे ॥ इण ॥ ७॥ ज्ञाव चारित्र धरे मन इन्ना, मिथ्या सब सुख जाणे रे॥ महापद्म ने ऋणुनृपं पदवी, नरेंद्र देइ सुख माने रे ॥ इ० ॥ ए ॥ इति ॥ े॥ दोहा ॥

ा देश नगर जमतो थको, विष्ठ नमूची नाम।।इस्तिनागपुर आवियो, लेइ रह्यो विश्राम ॥ १॥ एक दिवस माहापद्मने, जेट दृष्ट विष्ठेश ॥ राजसजामां आवियो, अंग धरी शुज्ज वेश ॥ १॥ ज्ञान कला करि रं जियो, महापद्म नृप जाण ॥ मान सन्मान पूरव परे, देई करे प्रधान ॥ ३॥ सीमाडानो राजियो, हेमरथ नाम जूपाल ॥ आण न माने पद्मनी, लूंटे देश विशाल ॥ ४॥ तेह नमूचि एकदा, सैन्य लेइ चतुरंग॥ हेम संघातें युद्ध घन, मांम्युं धरी उठ्रंग ॥ ४॥ सिंहरथ राजा जणी, जीलो तेह प्रधान ॥ साथ तेह नृप तेडीने, आव्यो निज पुरथान ॥ ६॥

## ॥ दास चोथी ॥

॥ महावीर प्रज घेर आवे ॥ ए देशी ॥ महापदाराय सुख पावे, हर्षे करी वित्र वोलावे॥ माग माग जे ताहरी इहा, शा पुरुष वचन नव मिंध्या रे॥ १ ॥ द्विज धेर्य धरीने मागो, बिलराजा किह बोलाव्यो रे ॥ द्वि०॥ ए खांकणी ॥ तव विष्र विमासी बोले, तुमे हो प्रज सुरतर तोलं॥ ए वचन जंगार राखीजें, अवसरें मागुं तो दीजें रे ॥ द्विजण ॥ १॥ इण श्रवतर ज्वाला देवी, जिन वचन हियामां धरेवी ॥ श्रायु क्षण कृण वी ती जाय, पण धर्म दात न सुहाय रे ॥ द्विज ॥ ३॥ रथयात्रां मनोरथ यावे, पीयु आगल सर्व जणावे ॥ नृप कहे ए धर्मनुं काम, खिह्यें सुर शिव सुख ठाम रे ॥ द्विजण् ॥ ४॥ सुरपतिना विमाननी जेहवा, पासक जिम सूत्रमें तेह्वा ॥ कलभीत मणिना निपाने, रथ देखीने हर्ष जरावे रे ॥ द्विज् ॥ । मण्रिल जिंदतनी प्रतिमा, आदीश्वर जिनको कित्रिमा॥ रथमांहि प्रजु जले जावें, ग्रुज मुहूरत लेइ पधरावे रे ॥ दिज ॥ ६॥ रथ यात्रा तृषुं मंनाण, यंथें दहु जेद वेखाण ॥ तिम ज्वाला ते राणी सार, क्षेड् हर्प घणो परिवार रे ॥ द्विजण ॥ ॥ इण अवसर खद्भी राणी, जवा खा खघु शोक्य वखाणी ॥ मिथ्यामत मोहमें माची, शिव ब्रह्मामतें रति साची रे ॥ द्विज ॥ ए ॥ ति णें वादें पण रथ एहवो, ब्रह्मानो कराव्यो तेह वो, हठवादें घणुं अकुखाइ, रथ खेइने साहामी आइ रे ॥ दिजा ॥ ए॥ हॅंने मांहोमांहे रथ वेहुना, मिखया खबु सामा तेहुना ॥ कोइ काढे न आगो जेइमां, विखवाद खाग्यो घन तेहमां रे ॥ दिज्ञाशणा तसं कखह नरेंड पीठान्यो, देहु राणीनो मन सन्मान्यो ॥ रथ वेहुना पाठा वंलावे, सहु विप्र महा सुख पावे रे ॥ द्विजण ॥ ११ ॥ इति ॥

## ॥ दोहा ॥

॥ पण पद्मज निजमातनुं, तिम देखी अपमान ॥ दिग्यात्रा जिए चा लियो, रीप करी अपमान ॥ १॥ जगेतो दिनकर जिस्यो, वधतो जाये तेज ॥ तिम अरियण क्त्री मंग्लें, जीत्यो सवल सहेज ॥ १॥ जये खंम मांहे सही, वर्तावी निज आण ॥ कुमर खेचर जूपति, करे मान सन्मान ॥ ३॥ जंबूद्वीपे जाणियें, जिम जरतेसर राय ॥ साधि जूमि तिम जाण

जो, महीराणा सब पाय ॥ ४ ॥ अनुक्रमें लाधन करी, आवे निज पुर यान ॥ घणी विजूति साथें जीके, कहतां नावे मार्न ॥ ५॥

### ॥ ढांख पांचमी॥

॥ कोइया वेक्या कहे रागी जी, अनोहर मन गसता ॥ ए देशी॥ निज नगरमां पद्मज आया जी ॥ मनोहर मन वितया ॥ राय राणी घ णुं सुख पायाजी ॥ मनो० ॥ साथें बहु क्रि वखाणी जी ॥ मनो०॥ इण पण संदेषें आणी जी ॥मनो०॥१॥ नव अखूट निधान हे जेहने ॥मनो० ॥ दश चार रत कहां तेहने जी ॥ मनोण ॥ देश आर्य अनार्य मिल जा णो जी ॥ मनो० ॥ बत्रीश हजार प्रमाणो जी ॥ मनो०॥ १॥ श्रंते उर चोशां इजार जी ॥ मनोण ॥ सहस बत्तीस नाटकनो विचार जी ॥ मनोष् ॥ बत्तीस सहस पुर महोटां जी ॥ मनोष् ॥ बहोतेर सहस्ते हो टां जी ॥ अनो० ॥ ३॥ खेट कोडि अंमपनुं मान जी ॥ मनो० ॥ सह स शोख चोवीस जाण जी ॥ मनो० ॥ छडताखीश हजार ने धार जी ॥ मनोष् ॥ वाटीनी संख्या लार जी ॥ अनोष् ॥ ४ ॥ सहस वीश आकर नां लान जी ॥ सनो० ॥ उन्नं कोडि ते गाम वर्खाण जी ॥ मनो०॥ गज अश्व रथनो धमकार जी ॥ मनो०॥ खाख खाख चोराशी उदार जी॥ मनोव ॥ ।। पायक हे हम्नुं क्रोड जी ॥ मनोव ॥ अनुसतिया कोडि तीन जोंड जी ॥ मनो० ॥ सुतार हे तीनहों ने साह जी ॥ मनो० ॥ श्रेणी पर श्रेणीनां ठाठ जी ॥ सनोव ॥ ६ ॥ एक ख़ाख अठावीश हजार जी ॥ मनोष ॥ वारांगना रूपनी सार जी ॥ मनोष ॥ ते रूपनी आगार सोहे जी ॥ अनो० ॥ नवाणुं सहस्र स्त्रीमन मोहे जी ॥ अनो०॥ ७॥ हवे रह ना आगार वलाप्या जी ॥ मंनो०॥ सोल सहस्र प्रमाण ते आएया जी ।। मनोण।। आयुद्धधर त्रीश इज़ार जी ॥ मनोण ॥ सेखाधर वत्रीश वि चार जी ॥ सनोव ॥णा पांच खांख दिवटीया चांले जी ॥मणा निज्ञान चो राशी खाल चाले जी ॥ सनोणा दलनी संख्या तीन कोटि जी ॥मनोणा कौटंबी सिनेर खांख जोडि जी ॥मनो०॥ए॥ हार मोतीना चोसठ हजार जी ॥ मनो० ॥ जूषणधर बन्नीश विचार जी ॥ मनो० ॥ सेवा करे नरें इनी सार जी ॥ मनो० ॥ म्लेकराय गुन शांत हजार जी ॥ मनोण।१०॥

#### ॥ सोरवा ॥

ा संवाह वस्तीप्रमाण, चौद सहस्र सब मिल गएयं ॥ श्रन्नरक्तणनां स्थान, सहस्र नवाणं प्रमुख कह्यां ॥ १ ॥ वेलाजल सहस्र उत्तीस, संख्या कहुं सूत्रधारनी ॥ चोसठ लाख सुजगीश, वेठी सामान्य साठ कोडि हे ॥ १ ॥ जोजनस्थानक मान, तीन लाख सुंदर कह्यां ॥ जद्यानप्र्मि ते जाण, पचिश सहस्र निर्मल कही ॥ ३ ॥ नृपसेनापित सोय, चोवीस सहस्र सव मिल हवा ॥ सामान्यमंत्री होय, कोटि तीन कर्में जुवा ॥ ४ ॥

## ॥ ढाल ग्रही ॥

॥ जीरे महारे लोज ते दोष अयोज, पापस्थानक नवमुं कह्युं॥ जीरे जी ॥ ए देशी ॥ जीरे महारे ॥ महापद्म नृप संग, चाले गोकुल मलपतां ॥ जीरे जी ॥ जीरे महारे ॥ एक कोटिशुं प्रमाण, सुर्धेनुं परें छूजर्ती ॥ जी०॥१॥ जी०॥ छुपद चलपद हजार, गामां वहोंतेर कोडि हे ॥ जी० ॥जी० ॥ मं दिर नवाणुं हजार, वैद्य कोड तीन जोडें हे ॥ जी० ॥ १ ॥ जी० ॥ वहोतेर योजन मान, वाण चाले जस नित्यप्रत्यें ॥ जी० ॥ जी० ॥ सवा कोड सुत जाण, सेवा सारे दिनप्रत्यें ॥ जी० ॥ ३ ॥ जी० ॥ सारथवाह सुजा ण, कोड तीन नृप मानिया ॥ जी० ॥ जी० ॥ श्रंगमर्दन राजान, सहस वत्रीस सहु जाणिया ॥ जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ नृपमन रंजनहार, हजार कह्या वली ॥ जी० ॥ जी० ॥ नगरशेव पद धार, तीन कोडि मली ॥ जी० ॥ ए ॥ जी० ॥ जलपंथ मार्ग विज्ञानि, चौद हजार प्रमाणियें ॥ जी० ॥ जी० ॥ त्राग्यार सहस सन्निवेश, वृष्पन्न अंतरद्वीप आणियें ॥ जी० ॥ ६ ॥ जी० ॥ राजधानीनां मान, इजार वन्नीस कह्यां सहू II जी ।। जी ।। पंमव अठावीश लाख, लाख कोट वाल श्रुतथी कहा। ।। जी०॥ ।। जी०॥ उर देश राजान, गुण पंचास साथें रहे ॥ जीण ॥ जीण ॥ सहस्र पचवीसं यद्दा देव, सेवा करे जिनवर कहे ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ सहस वत्रीश महासूप, करजोडी आगल रहे ॥ जी० ॥ जी० ॥ महामंत्रीश्वर जूप, चौद सहस राज निर्वहे ॥ जी० ॥ ए ॥ जी० ॥ सूडा चोराशी खाख, पांखता आगल वहे ॥ जी० ॥ जी० श्वान रहे आठ कोड, सिंहज पण शंका खहे ॥ जीए॥ १ए॥ जीए॥ माहाव्यापारी साथ, कोटि सत्त श्री अनुसरें ॥ जीव ॥ जीव ॥ एक रसो

इनी मांहि, दश लाख मण लोट नित्य वरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ जी० ॥ इण परें क्रिक्क समेत, निजपुर निकट खावी वसे ॥ जी० ॥ जी० ॥ निज सुत महापद्म जाण, राणी नरेंद्र मन उद्घसे ॥ जी० ॥ १२ ॥ जी० ॥ इति ॥ ॥ दोहा ॥

॥ जत्सव महोटे मंगाणशुं, क्षावे जनक पुरमांह ॥ पेसारी विधिशुं क खो, जूप नयर जत्साहिं ॥ १ ॥ महापद्म चक्रीशकुं, जरतराज पद सार ॥ पद्म खादि जूपित मही, करे ख्रिजिक जदार ॥ १॥ इण समे सुव्रत मृनी श्वरा, घणा मृनि परिवार ॥ हस्तिनागपुर ख्राविया, नृपवन चैत्य मजार ॥ ३ ॥ पद्मराय खादें बहू, नयरी पर्षदा संग ॥ विष्णुकुमार पण वांदवा, ख्रावे धरि जठरंग ॥ ४ ॥ वंदी गुरु देशना सुणी, हुवो परम वैशाग ॥ पद्म विष्णु दीह्या ग्रही, ठंमी क्रिक्त महाजाग ॥ ५ ॥ घणा जूप परिवारशुं, श्री शुज विष्णुकुमार ॥ पंच महाव्रत थिवर्षे, लिये घणे मनोहार ॥ ६ ॥

।। ढाल सातमी॥

॥ जिम जिम ए गीरि जेटिये रे ॥ ए देशी ॥ पद्मराय क्रिष्ट रंगमां रे, पाले संयम शिवदाय ॥ सलूणा ॥ अतिचार निव आचरे रे, टाले असं यम ठाय ॥ स० ॥ १ ॥ जिम जिम ए क्रिष्ट जेटीये रे, तिम तिम पाप पलाय ॥ स० ॥ पंच सिमिति त्रण गुितमें रे, निवसे प्रवचनमां हि ॥ स० ॥ जिम० ॥ १ ॥ कोषादिक अरियण प्रत्ये रे, जीत्यो पद्म मुनीं ५ ॥ स० ॥ जिम० ॥ ३ ॥ करि अप्रतिवंध वायुपरे रे, विचरे धरा योगीं ६ ॥ स० ॥ जिम० ॥ ३ ॥ करि अण्यसण आराधना रे, पहोतो अमर विमान ॥ स० ॥ पद्म देव सुख जोगवी रे, चिव जाशे निर्वाण ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ बहुलता महा पद्मजी रे, निज जननीकी आश्चा ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ बहुलता महा पद्मजी रे, निज जननीकी आश्चा ॥ स० ॥ जूरे मनोरच जावगुं रे, जिन रथयात्रा तास ॥ स० ॥ जिम० ॥ ४ ॥ जिनमं मित पृथिवी करी रे, चै त्य घणां मनोहार ॥ स० ॥ संघ यात्रा विधिशुं घणी रे, लेई कीध जुहार ॥ स० ॥ जिम० ॥ ६ ॥ शिवमतनी लघुमातनुं रे, राख्युं वली पण मान ॥ स० ॥ जिन्यधर्म शिव आंतरो रे, गो योयर पय जाण ॥ स० ॥ जिन० ॥ १ ॥ वक्रवर्त्ते पद जोगवे रे, पूरण पट खंम राज ॥ स० ॥ धर्माचरण वंगक प्रत्ये रे, करे नरेंडज साज ॥ स० ॥ जिम० ॥ ए ॥ इति ॥

# ॥ दोहा ॥

॥ अथ श्रीविष्णुकुंमार मुनि, तप तपता महाराण ॥ षद् सहस वर्ष तप तपी, हुआ लिब्धना ठाण ॥ १ ॥ आमोसिह विष्पोसिह, खेलोसिह सुप्रमाण ॥ पुलाक ने वेिक्रय प्रमुख, कहेतां 'नावे कान ॥ १ ॥ मेर सुर्शन चूलिका, विष्णुकुमार क्रषिराय ॥ ग्रुरु अनुमत लेई करी, ध्यान करे तस ठाय ॥ ३ ॥ इण अवसरें सुवत सूरि, विचरत देश विदेश ॥ हस्ति नागपुरें आवीया, साथें मुनि सुविशेष ॥ ४ ॥ महापद्म नृप आदि दे, मली समस्त राजान ॥ चातुरमासनी वीनित, करि राख्या घरी मान ॥ धं ॥ इत्यनंतर नमुचि जे, चली नाम जस दीध ॥ ते नृपपासें वर प्रहें, मागे जेतस दीध ॥ ६ ॥

#### ॥ ढाल आठमी ॥

॥ दान कहे जग हूं इडं ॥ ए देशी ॥ सात दिवस मुजने सही, यक्त कारण दियो राज ॥ खलना ॥ प्रज तुम सुर चिंतामणि, वंटापूरण हार ॥ खलना ॥ १॥ दान जलट नर दीजियें, ज्युं की जियें वंडित काज ॥ तः ॥ सुरधेनु पारश मणि, प्रगुट्यो पुष्य हम आज ॥ तः ॥दानः ॥श॥ वचन राय वंद्यो जिके, दीधुं क्रिज निण राज ॥ ल० ॥ श्रंतःपुर रहिता हुवा, वचन प्रतिक्ञा लाज ॥ ल० ॥ दान् ॥ ३ ॥ अतिथि संन्याशी का पडी, मठबासी जोगेश ॥ तण ॥ तरडादिक तद नेटणुं, आवी नमे सहु देश ॥ सव ॥ दान ॥ ध ॥ जैनगुरु नव छाविया, तव धस्त्रो पूर्व तो द्वेष ॥ ख०॥ तेडी थिविरनें इम कहे, नम्या तुम विना सहु शेष ॥ ख०॥ ॥ दानण ॥ ५॥ तुम्ह नम्या निहं किए कारणें, शुं एइ तुम्हने ग्रमान ॥ खण्॥ रहो ठो अम प्रथवीविषे, कर निव आषो मान ॥ खण्॥ दानण ॥६॥ तव क्रिप नृप जाणी इम वदे, विंग परें हम एहि ॥ लण ॥ नहिं नमे यहस्थने मुनिवरा, परिश्रह नहिं हम पांहि ॥ छ० ॥ दान० ॥ ७ ॥ कोप्यो द्विज विल राजियो, जांखे गुरुप्रतें आम ॥ खण ॥ सात दिव नि श्रंदरे, तजवुं पट खंग गम ॥ खा ॥ दान ॥ ए ॥ लोकें कह्यं माने नहि, न धरे नरेंड्रनुं कान ॥ खण ॥ तव वलीनुं श्रावी च्हयुं, पोहोतो क्रषि निजयान ॥ ख०॥ दान०॥ ए॥

॥ दोहा ॥

॥ संघ मली सूरि निकट, आवे खलु धरि प्रेम ॥ विष्णुमुनिने तेडियें, सवि बन आवे केम ॥१॥ एम विचार करी सहू, जेजे एक मुनि ताम॥ लेख वांचि वहेला तुमो, आवजोही इण गम ॥ १॥ कारण अत्र गुरु व न्यो, जाणशो क्षिने वेण ॥ तुम्ह आवे इहां संघने, ऊपजशे सुख चेन॥ ३ ॥ तव अंबरचारी मुनि, हुवा शीघ ततखेव ॥ मेरु सुदर्शन चूलिका, प होता ततक्णमेव ॥४॥ विष्णुकुमार मुनींडने, वंदी त्रिविधे सोय ॥ विष नमुचि कारणे, मोकलियो गुरु मोय ॥ ए॥ शिष्य पास व्यतिकर सुणि, संघपत्र लियो हाथ ॥ वांची शीव उतावला, आव्या लेइ मुनि साथ ॥ इ॥ ॥ ढाख नवमी ॥

॥ जत्तीनी देशी॥ श्री विष्णुकुमार मुर्नींड, आव्या धारी परमानंद ॥ गुरु वंदीने पावन थाय, सहु संघने हर्ष न्नराय॥१॥ सुणि वितराजा वृत्तंत, पहोता ते सजायें संत ॥ देखी सघछी सजा हरखाणी, नम्या विष्णु गुरुने जाणी ॥१॥ पण न नम्यो ते बलिराज, पूरवली धरी नहिं मा क्षिश्वर वाणी, निर्क्षज बिल तुं अन्नाणी ॥ शुंर राज लेइने राच्यो, काकिडा परे शत माच्यो ॥ ४॥ चलमासे यति किहां जाय, अजियहो केम निष्फल थाय ॥ तेहथी अम रहेवा काज, न्रूमि दे कितनी आज ॥ थ ॥ सुणि वचन करे नृप हांसी, मही आपे त्रिपद विमासी॥ स्वामीना इ जाणी दिधुं दान, एम बोल्यों ते बलिराजान॥ ६ ॥ कोर्प चढ्या वि ष्णुकुमार, कर्खुं वैकियरूप अपार ॥ खक्त योजननो देह करियो, दोय प दमें जंबूद्वीप धरियो ॥ ७ ॥ एक चरण पृथ्वीपर जोइयें, बाकी ते रही न हिं कोइयें ॥ एहवुं कही बलीने माथे, पद देइ महीतख चांपे ॥ जा काल करीने ते बलीरूप, गयो सातमी जूमि अनूप ॥ तव विश्व जयंकर कांपे, रखे अमने बली परें चांपे।।ए॥ अचला मू चलाचल होती. पूनियां सब मिलकर रोती ॥ मुख ढांकी मांहोमांहे रहियां, नाशीने किहां जाय त हियां ॥ १० ॥ गिरिवर पण कंपित जये हे, शिखरादिक सब टूट गये हे ।। जद्धिनो पाणी जढ़ियो, शेषनाग महा सल्सिखियो ॥ ११ ॥ नव म हादिक सुर जय आणे, नवो इंड जयो इहां टाणे॥ तव शक अवधें करी

देखे, जाणे वलीनुं कार्य विशेषे ॥ १२ ॥ गांधर्व देव तिहां तिण वेला, इं ५ वचने त्यावी हुवा जेला ॥ विष्णुक्षि पासें ते त्यावे, नाटक करीने को ध शमावे ॥ १३ ॥ क्रणमांहे मुनि कोध शमियो, क्रपावंत दयालू बनियो ॥ महाक्षि करुणानिधि कहीये, मुनि नरेंद्र देवसुख सहियें ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ स्वजाव रूपे खावी रह्या, मुनि श्री विष्णुकुमार ॥ तो पण करता ना रहे, वित्र क्षोक निरधार ॥ १ ॥ महापद्म चक्की हवे, खावि नमे धरि जाव ॥ में खपराध घणो कियो, तेह करो सुपताय ॥ १ ॥ ग्रह कहे इम तुम निव घटे, समिकतंवत कहाय ॥ तुम ठते इम शासनतणी, खघुता केम सहाय ॥ ३ ॥ इत्यादिक शिक्का दई, महापद्म जिण सोय ॥ ग्रह पा से खाव्या चक्षी, कृषि साथे वहु सोय ॥ ४ ॥ पण धृजंतां निव रहे, क्षोक सहु मिध्यात्व ॥ ताव तेजस खादि दइ, प्रगट्या जगत विख्यात ॥ ५ ॥ तव सुर नरपित इम कहे, सुणो विष्र धरी प्रेम ॥ राखडी ए कृषि नाम नी, वांधो खाशो तुम क्षेम ॥ ६ ॥ कह्युं तेम करियुं सिव, जई जगत सु खशांति ॥ पर्व वलेव इहांथकी, जगतमांहि विख्यात ॥ ९ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ एक समे शामिष्वयाजी ॥ वृंदावनमां ॥ ए देशी ॥ रंग रिसया रंग रस वन्यो ॥ मन मोहनजी ॥ श्रीजैनधर्मपसाय ॥ मनडुं मोह्युं रे ॥ मनणा सत्य असत्य पटंतरो ॥ मन ॥ न्याय अन्याय दिखाय ॥ मन ॥ १ ॥ मिध्यात्वध्वांत दूरे गर्युं ॥ मन ॥ केइ जिन वत धरे मुनि पास ॥ मन ॥ केइक देश वत उच्चरी ॥ मन ॥ केइ जड़क जया सुखि खास ॥ मन ॥ श ॥ जवस्थिति पाक्या विना ॥ मन ॥ निव जाणे धर्मनो मर्म ॥ मन ॥ श ॥ कारणे कार्यहू नीपजे ॥ मन ॥ पंच मले शिवशर्म ॥ मन ॥ ३ ॥ यर सुख आलोयण अही ॥ मन ॥ श्री विष्णुक्रवीश्वर संत ॥ मन ॥ धरा पीठ विचरे सुखें ॥ मन ॥ शोना क्षि अधिक खहंत ॥ मन ॥ श ॥ पर शासनमां दीपतो ॥ मन ॥ विष्णु वामन अवतार ॥ मन ॥ विखराजा ने चांपीयो ॥ मन ॥ धर्म कारण सुविचार ॥ मन ॥ ए ॥ तप तपतां रिह रानमां ॥ मन ॥ बहु वरस सहस सुख प्रेम ॥ मन ॥ केवल झान दिवाकर ॥ मन ॥ विष्णु क्षि पाम्या केम ॥ मन ॥ क सखासन

पर बेसिने ॥ म० ॥ कहे धर्म परम सुखकार ॥ म० ॥ छिवध धर्म मुक्ति तणा ॥ म० ॥ आगार ने अणागार ॥ म० ॥ छ ॥ इम उपदेश देतां रह्या ॥ म० ॥ नर नारी केरां बृंद ॥ म० ॥ त्रूमंम्स्स पावन करी ॥ म० ॥ सेवे मुनि नर इंद्र ॥ म० ॥ छातसमे अणसण करी ॥ म० ॥ सुख संसेष णा तप सार ॥ म० ॥ काल करी मुक्ते गया ॥ म० ॥ मुनि नरेंद्र पाम्या ज्ञाव पार ॥ म० ॥ ए ॥ विष्णुकुमार मुनींद्रजी ॥ म० ॥ किह सद्याय रसा ल ॥ म० ॥ जाणे गुणे जे सांजले ॥ म० ॥ ते लेहशे मंगलमाल ॥ म० ॥ ॥ १० ॥ इति श्री विष्णुकुमारसुनि सद्यायः संपूर्णः ॥

॥ अत्र श्री हीरविजयसूरि सद्याय प्रारंतः॥

॥ वे कर जोडी विनवुं जी, शारदा लागुं जी पाय ॥ वाणी आपो निर्म ली जी, गाशुं तपगछराय ॥ तें मन मोद्यु रे हीरजी ॥ १॥ ए आंकणी ॥ अकबर कागल मोकले, हीरजी वांचे ने जोय ॥ तुफ मलवा अलजो घणो, विरवल करनो जी जोय ॥ तेंण ॥ १ ॥ अकबर करे जी विनति, टो करमल लागे जी पाय ॥ पूज्य चोमासुं इहां करो, होशे धर्म सवाय ॥तेंण ॥ ३ ॥ तेजी घोडाजी आते घणा, पायक संख्या निहं पार ॥ माहाजन आवे जी अति घणा, थानसिंह शाह उदार ॥ तेंण ॥ ४ ॥ पहेलुं चो मासुंजी आगरे, बीजुं लाहोरमांहि ॥ त्रीजुं चोमासुं फत्तेपुरे, अकबर करे रे उत्साहिं ॥ तेंण ॥ ४ ॥ मामर सरोवर ठोडियां, ठोड्यां बंदीनां वान ॥ ठोड्यां पंलीने मृगलां, अकबर दे बहुमान ॥ तेंण ॥ ६ ॥ तप गछनायक राजीयो, श्री विजयसेन सूरींद ॥ तास शिष्य जिक तणे, होजो मुफ आनंद ॥ तेंण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री क्रतुवंती सद्याय प्रारच्यते ॥

॥ हो वांसलडी वेरण यह लागी र वजनी नारने ॥ ए देशी ॥ सुण सो जागी सुखकारी जिनवाणी मनमां आणी ॥शिवसाधक जिनवरनी वाणी, केइ तरिया तरशे जिनवाणी, पीस्तालीश आगम शुज जाणी ॥ सुण ॥ १॥ जे पित्रत्र यहने सांजलीये, आपित्राई दूरें करिये, समवसरणमां जिम संचरिये ॥ सुण ॥ १॥ अपित्राई अखगी करजो, अतुवंती संग ति परहरजो, असज्जाइथी दूरें संचरजो ॥ सुण ॥ ३॥ दर्शन देहरे क रो चोथे दिवसे, पिडक्रमणुं पोसा परिहरशे, सामायिक जणवुं निव कर हो ॥ सुण ॥ ४ ॥ बोधबीज ते कीधे जासे, ज्ञानावरणीय कर्म बंधाहो, समिकत तेनुं मूखथी नासे ॥ सु०॥ ५॥ दिन साते जिनवर पूजीजें, नात जात विषे जमवा ना जइयें, वली हाथें दान नहिं दीजें, ॥सुणा६॥ ज्ञुवंती तुमें अलगी राखो, घरकारन कांही मत जांखो, अन पाणी शय्या दूर राखो ॥ सु॰ ॥ ७ ॥ ज्ञतुवंती साधुने वहोरावे, तस पातकथी नरके जावे, पांचे महाव्रत श्रखगां थावे ॥ सु॰ ॥ ए॥ ऋतुंवती जो वहा णमां बेसे, ते प्रवहरा समुद्रमां पेसे, ताफान घणेरां ते खहेशे ॥ सु⁵ ॥ ए॥ मजी हिंगलो थाये कालो, एकें डियदलने डुःख जालो, तो पंचें डिय विशेषे टालो ॥ सु॰ ॥ १० ॥ सेवादिक शास्त्रें एम वाणी, क्रतुवंती राखो दूर जाणी, वली असुरकुराणें 'इम वाणी ॥ सु० ॥ ११ ॥ पहेले दिन चां मालणी सरखी, बीजे दिन ब्रह्मघातणी निरखी, त्रीजे दिन घोबणडी परली ॥ सु॰ ॥ ११ ॥ खांमण पीसण रांधण पाणी, तस फरसें छुःख बहे खाणी, ज्ञानीने होय ज्ञाननी हाणी ॥ सु०॥ १३॥ सूत्रसिद्धांत मंत्रज नाहिं फखे, असंखायें आशातना सबकें, पहोर चोवीस पढी ना एहवी मले ॥ सु॰ ॥ १४ ॥ श्राशातना श्रमञ्चायनी राखी, जिनसुनिरत्नविजय गुरु साखी, ए धर्मकरणी साची जांखी ॥ सुन ॥ १५ ॥

॥ अथ पर्युषणपर्वना नव व्याख्याननी अथवा कल्पसूत्रनी सञ्चाय ॥ ॥ तत्र प्रथम व्याख्यानस प्रथम सद्याय प्रारत्यते ॥

॥ ढाल पहेली ॥ पर्व पज्रषण आवियां, आनंद अंगे न माय रे॥ घर घर उत्सव अति घणा, श्री संघ आवीने जाय रे ॥१॥ पर्व पज्रषण आवि यां॥ ए आंकणी ॥ जीव अमारी पलावियें, की जियें वत पञ्चकाण रे॥ जार्व घरि ग्रुक वंदियें, सुणियें सूत्र वलाण रे॥ प०॥ १॥ आठ दिवस एम पालियें, आरंजनो परिहारों रे॥ नावण धोवण खंकण, लेपण पीसण वारो रे॥ पर्व०॥ ३॥ शक्ति होय तो पञ्चकीयें, अठायें अति सारो रे॥ परम जिक्त प्रीति लावियें, साधुने चार आहारों रे॥ पर्व०॥ ४॥ गाय सोहा गण सिव मली, धवल मंगल गीत रे॥ पक्कां करि पोषियें, पारणे साहिम मन प्रीत रे॥ पर्व०॥ ४॥ सत्तरजेदि पूजा रची, पूजियें श्री जिनराय रेशी आगल जावना प्रावियें, पातक मल घोवाय रेशी विदेपन हि ॥ लोच करावे रे साधुजी, बेसे वेसणां मांकी रे॥ शीर विदेपन

की जिये, श्रास्त श्रंगथी उंकी रे ॥ पर्वण ॥ ४॥ गजगित चाले चालती, सोहागण नारी ते श्रावे रे ॥ कुंकुम चंदन गहूं श्राद्धी, मोतिये चोक पूरावे रे ॥ पर्वण ॥ ए ॥ रूपा मोहरे प्रजावना, करिये ते सुखकारी रे ॥ श्री क्र माविजय कि रायनो, बुध माणकविजय जयकारी रे ॥ पर्वण ॥ ए ॥

॥ अय प्रथम व्याख्यान दितीय सद्याय प्रारंजः ॥

॥ ढाल बीजी ॥ ए डींकी किहां राखी ॥ ए देशी ॥ पहेले दिन बहु श्रादर श्राणी, कल्पसूत्र घर शाहो ॥ कुसुम वस्त्र केसरशुं पूजी, रातिज गे लिये लाहो रे ॥ प्राणी ॥ १॥ कल्पसूत्र आराषी, आराधी शिवसुल साधो रे जविजन ॥ कल्पसूत्र आराधो ॥ ए आंकणी ॥ प्रह उठीने उपा श्रये खावी, पूजी गुरु नव खंगें ॥ वाजित्र वाजतां मंगल गावतां, गहंली दिये मन रंगे रे ॥ प्राण्॥ कण्॥श। मन वच काय ए त्रिकरण शुक्ते, श्री जिनशासनमां हे ॥ सुविहित साधुतणे मुख सुणिये, उत्तम सूत्र उमाही रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ३॥ गिरिमांहे जिम मेरु वडी गिरि, मंत्रमांहे नवकार ॥ इक्मांहे कल्पवृक्त अनुपम, शास्त्रमांहे कल्प सार रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ४ ॥ नवमा पूर्वनुं दशा श्रुत, ऋध्ययन आठमुं जेह ॥ चौद पूर्वधर श्रीजङ बाहू, उद्धें श्री कहप एह रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ए॥ पहेला मुनि दश क हप वखाणो, केत्रगुण कह्या तेर ॥ तृतीय रसायन सरिखुं ए सूत्र, पूरव मां निहं फेर रे ॥ प्राव ॥ कव ॥ ६ ॥ नवशें त्राणुं वरसें वीरथी, सदा कस्प वखाण ॥ ध्रुवसेन राजा पुत्रनी आरती, आनंद पुर मंनाण रे ॥ प्राण्॥ कण ॥ ७ ॥ व्यटम तप महिमा जपर, नागकेंतु दृष्टंत ॥ एतो पी विका हवे सूत्रवांचना, वीरचरित्र सुणो संत रे ॥ प्राण् ॥ कण् ॥ जंबूद्वीपमां द क्षिण जरतें, माहणकुंम सुठाम ॥ व्याषादशुदि वर्षे चिवया, सुरक्षोकथी 'अजिराम रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ए॥ क्षज्ञदत्त घरे देवानंदा, कुखें अवत रिया खामि॥ चौद सुपन देखी मन हरखी, पियु आगख कही ताम रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ १ण्॥ सुपन अर्थ कह्यो सुत होत्रो, एइवे इंड आसोचे॥ ब्राह्मण घर अवतरिया देखी, बेठो सुरक्षोक शोचे रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ११॥ इंदे स्तवि जलट छाणी, पूरण प्रथम वलाण।। मेघकुमार कथाथी सांजे, कहे बुध माणक जाणि रे ॥ प्राण्॥ कण्॥ ११ ॥

॥ श्रथ द्वितीय व्याख्यान सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ प्रथम गोवालातणे जवे जी ॥ ए देशी ॥ इंड विचारे चित्तमां जी, ए तो अचरीज वात ॥ नीचकुले नाव्या कदा जी, उत्तम पुरुष व्यवदात ॥ १ ॥ सुगुण नर, जुर्ज जुर्ज कर्म प्रधान ॥ कर्म सबल बल वान ॥ सु॰ ॥ जु॰ ॥ ए छांकणी ॥ छावे तो जन्मे नहीं जी, जिन चकी हरि राम ॥ उद्य जोग राजनकुखे जी, छावे उत्तम वास ॥ सु॰ ॥ श॥ का स अनंते ऊपनां जी, दश अहेरां रे होय ॥ तिणे अहेरं ए ययुं जी, गर्ज हरण दशमांहे ॥ सु०॥ ३ ॥ व्यथवा प्रचु सत्यावीशमा जी, जवमां त्री जे जन्म ॥ मरीचित्रव कुलमद कियो जी, तेथी वांध्युं नीच कर्म ॥ सुण ॥ ४॥ गोत्रकंर्म उद्ये करी जी, माहराकुले उपवाय ॥ उत्तमकुले जे व्य वतरे जी, इंडिजीत ते थाय ॥ सुण ॥ य ॥ हरिणगमेषी तेडीने जी, हरि कहे एह विचार ॥ विश्रकुलयी लेइ प्रजुजी, क्तिय कुले अवतार ॥ सु० ॥ ६॥ राय सिद्धारथ घर जाली जी, राणी जिशाला देशि ॥ तास कुले व्यवतारिया जी, हरिसेवक ततखेव ॥ सु० ॥ ७ ॥ गज वृपनादिक सुंदरु जी, चौद सुपन तिणि बार ॥ देखी राणी जेहवां जी, दर्णव्यां सूत्रे सार ॥ सु॰॥ ७॥ वर्णन करी सुपनतणुं जी, मूकी वीजुं वखाण ॥ श्री क्तमा विजय गुरुतणो जी, कहे माणक गुणखाण ॥ सु॰ ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अय तृतीय व्याख्यान सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ ढा़ल चोथी ॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥ देली सुपन तव जागी राणी, ए तो हियडे हेतज आणी रे ॥ प्रज अर्थ प्रकासे ॥ ए आंक णी ॥ जठीने पियु पासे ते आवे, कोमलवचने जगावे रे ॥ प्रण ॥ शा कर जो ढीने सुपन सुणावे, जूपतिने मन जावे रे ॥ प्रणा कहे राजा सुण प्राण पिया री, तुम पुत्र होशे सुखकारी रे ॥ प्रणाशा जार्च सुजगे सुखसद्धाये, शयन करोने सद्धाये रे ॥ प्रणा निज घर आवी रात्रि विहाइ, धर्मकथा कहे बाई रे ॥ प्रणा ३ ॥ प्रात समय थयो सूरज उदयो, उठ्यो राय उमायो रे ॥ प्रणा कौदुंविक नर वेगे वोलावे, सुपानपाठक तेडावे रे ॥ प्रणा ४ ॥ आ व्या पाठक आदर पावे, सुपन अर्थ समजावे रे ॥ द्विज अर्थ प्रकासे ॥ ॥ ए आंकणी ॥ जिनवर चकी जननी पेखे, चौद सुपन सुविशेषे ॥ द्विण ॥ था। वासुदेवनी माता सात, चार बलदेवनी मात रे ॥ द्विणा ते माटे ए जिन चकी सारो, होशे पुत्र तुमारो रे ॥ दि० ॥ ६ ॥ सुपन विचार सुणी पाठकने, संतोषे नृप बहु दाने रे ॥ दि० ॥ सुपनपाठक घरे बोलावी, नृपराणी पासें त्यावी रे ॥ दि० ॥ ५ ॥ सुपन कह्यां ते संखेबे, सुख पामी प्रिया ततखेवेरे ॥ दि० ॥ गर्निपोषण करे हवे हथें, राणी श्रंग त्यानंद वरषे रे ॥ दि० ॥ ए ॥ पंच विषय सुख रंगें विलसे, श्रव पुष्यमनोरथ फलशे रे ॥ दि० ॥ एदले पूरुं त्रीजं वलाण, करे माणक जिनगुण ज्ञान रे ॥ दि० ॥ ए॥

॥ श्रय चतुर्भ व्याख्यान सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ मन मोहनां रे खाख ॥ ए देशी ॥ धनद तणे आदेशथी रे ॥ मन मोहनां रे खाल ॥ तिर्यग्जुंजक देव रे ॥ जग सोहनां रे खाल॥राय सिद्धा रथने घरे रे॥ मणा वृष्टि करे नित्यमेव रे॥ जणा १॥ कनक रयण मणि रौप्यनी रे ॥ मणा धण कण जूषण पान रे ॥ जण् ॥ वरसावे फल फूलनी रे ॥मण। नृतन वस्त्र निधान रे॥जण॥श॥ दाधे दोखत दिन प्रत्यें रे ॥ मण॥ तेणें वर्द्धमान हेत रे ॥ जण्॥ देशुं नामज तेहनुं रे ॥ मण्॥ मात पिता संकेत रे ॥ ज०॥ ३ ॥ मातानी जिक्त करी रे ॥ म० ॥ निश्चल प्रज रह्या ताम रे ॥ ज०॥ माता आरति ऊपनी रे ॥ म०॥ शुं थयुं गर्जनें आम रे ॥ ज॰ ॥ ४॥ चिंतातुर सहु देखीनें रे ॥ म॰ ॥ प्रजु हाख्या तेणि वार रे ॥ ज॰ ॥ हर्ष थयो सहु क्षोकनें रे ॥ म॰ ॥ आनंदमय अपार रे जण्या थ्या उत्तम मोह्ला उपजे रे ॥ मण्या देवपूजादिक जाव रे ॥ जण् ॥ पूरण थाये ते सहु रे ॥ मण ॥ पूरव पुष्य प्रज्ञाव रे ॥ जण ॥ ६ ॥ नव मास पूरा ऊपरें रे॥ मण॥ दिवस साहाडा सात रे॥ जण॥ उच्च स्थानें मह श्रावतां रे ॥ म०॥ वाये श्रनुकुल वात रे ॥ ज०॥ ७॥ वसंत कतु वन मोरियां रे ॥ मण्॥ जन मन हर्ष न माय रे ॥ जण्॥ चैत्र मास शुदि तेरशे रे ॥ मण्॥ जिन जन्म्या आधी रात रे ॥ जण्॥ छ॥ अजु वाह्यं त्रिहुं जग थयुं रे॥ मण्॥ वरत्यो जय जयकार रे॥ जण्॥ चोथुं व खाण पूरण इहां रे ॥ म० ॥ बुध माणक विजय हितकार रे ॥ जण्॥ ए॥ ॥ अथ पंचम व्याख्यान सद्याय प्रारंजः ॥

॥ ढाख वर्छी ॥ सुणों मोरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी॥जिननो

जन्म महोत्सव पहेलो रे, उप्पन दिशि कुमरी वहेलो रे ॥ चोशव इड मली पहें जाने रे, जिनने मेरुशिखर खइ जाने रे ॥ १॥ कीरसमुद्रनां नीर छाणावी रे, कनक रजत मणि कुंत्र रचावी रे ॥ एक कोटि सांठ खा ख जरावे रे, एहवे इंडने संदेह आवे रे ॥ १ ॥ जलधारा केम खमरो बा स रे, तब प्रजु हरिनो शंतय टाल रे, अंगुठे करी भेरु हखावे रे, हरि खा मीने जिन न्हवरावे रे ॥ ३ ॥ वावनाचंदन छंगे लगावे रे, पूजी प्रणमी घरे पधरावे रे ॥ सवलविधानी सिद्धारथ राजा रे, दश जिन जत्सव करी ताजा रे ॥ ध ॥ कुंकुम हाथा दिये घरवारे रे, वाजां वागे विविध प्रकारे रे ॥ धवल मंगल गोरी गावे रे, खजन कुटुंव ते आनंद पावे रे ॥ ए ।। पकानशुं पोषी नात रे, नाम धखुं वर्द्धमान विख्यात रे ॥ चंद्रक ला जिम वाधे वीर रे, घ्याठ वरसना थया वड वीर रे ॥ ६ ॥ देव सना मां इंद्र वखाणे रे, मिथ्यादृष्टि सुर निव माने रे ॥ सापनुं रूप करि विक राख रे, आव्यो देव विवराववा वाख रे ॥ ७॥ नाख्यो वीरे हाथे साही रे, वालक रूप करी सुर त्यांही रे॥ वीरनी साथे आव्यो रमवा रे, जाणी हास्वो सुर ते वलमां रे ॥ ७ ॥ निज खंधोले वीरने चढावे रे, सात ताड प्रमाण ते थावे रे ॥ वीरे मास्बो मुष्टिप्रहार रे, वीनो सुर ते कस्बो पोकार रे॥ ए॥ देव खमावी कहे सुण धीर रे, जगसां महोटो तुं महावीर रे ॥ मात पिता इवे मुहूरत वारू रे, सुतने भेइले जणवा लारु रे ॥ १०॥ श्रावी इंद्र ते पूठवा लाग्यो रे, वीरे संशय सघलो जांग्यो रे॥ जैन व्याक रण तिहां होने रे, पंक्यो ऊजो आगल जोने रे ॥ ११ ॥ मति श्रुत अ विश्वाने पूरा रे, संखेमातपे शूरा रे ॥ अति आग्रहणी पराखा नारी रे, सुख जोगवे तेह्युं संसारी रे ॥ १२ ॥ नंदिवर्कन वडेरो जाइ रे, व हेनी सुदंसणा वहु सुखदायी रे ॥ सुरलोके पहोतां माय ने ताय रे, पू र्णे अजियह वीरनो थाय रे ॥ १३ ॥ देव लोकांतिक समय जणावे रे, दान संवत्सरी देवा मंमावे रे॥ मागशिर वदि दशमी वत खीनो रे, ती व्र जावथी लोच तव कीनो रे ॥ १४ ॥ देश विदेशे करे विहार रे, सहे ज पसर्ग जे सवल उदार रे ॥ पूरुं पांचमुं वलाण ते आंहीं रे, पत्रणे माणक विबुध जमाही रे ॥ १५ ॥ ईति ॥

े ॥ श्रय षष्ठ व्याख्यान सद्याय प्रारच्यते ॥ ंता हाल सातमी ॥ थोयनी देशी ॥ चारित्र लेतां खंधे मूक्युं, देवडुष्य सुरनाथे जी ॥ अर्द्ध तेहनुं आप्युं प्रजु जी, ब्राह्मणने निज हाथे जी॥१॥ विहार करतां कांटे वलग्युं, बीजुं अर्द्ध ते चैस जी॥ तेर मास सचैसक रहिया, पढे कहिये अचैख जी ॥ २ ॥ पन्नर दिवस रही तापस आश्रमे, स्वामी प्रथम चोमाले जी ॥ अस्थियामे पहोता जगगुरु, शूलपाणिनी पा से जी ॥३॥ कष्ट खनाव व्यंतर तेणे की था, उपसर्ग अति घोर जी॥ सही परिसह ते प्रतिबोधी, मारी निवारी जोर जी ॥४॥ मोराक गामे काजस्स ग्ग प्रजुजी, तापस तिहां करजेदी जी ॥ अहन्नंदकनुं मान नताखुं, इंदें त्रांगुली वेदी जी।।। ए।। कनकबले कोशिक विषधर, परमेश्वरे पिडबोह्यो, जी ॥धवल रुधिर देखी जिन देहे, जातिसमरण सोह्यो जी ॥६॥ सिंह दे व जीवे कियो परिसह, गंगानदी जतारे जी ॥नावनेम ज्ञान करतो देखो, कंबल संबल निवारे जी ॥ ७ ॥ धर्माचार्य नामे मंखली, पुत्रे परिघल ज्वा खा जी ॥तेजोक्षेस्या मूकी प्रजने, तेहने जीवितदान व्याख्यां जी ॥ ।। वा सुदेव जवे पूतना राणी, ब्यंतरी तापस रूपे जी ॥ जटा जरी जल ढांटे प्रजुने, तोपण ध्यानस्ररूपे जी ॥ ए ॥ इंड प्रशंसा छणमानते संगमे, सुरे बहु डुःख दीधां जी ॥एक रात्रिमां वीश उपसर्ग, कठोर निठोर तेणे की धा जी ॥ १० ॥ तमासवाडा पूर्व पडियो, आहार असूजतो करतो जी ॥ निश्चल ध्यान निहाली प्रजुतुं, नाठो कर्मची करतो जो ॥११॥ इजी कर्म ते अघोर जाणी, मनें अनियह धारे जी ॥ चंदनबाला अडदने बाकुले, षटमासी तप पारे जी ॥१२॥ पूरव जब वैरी गोवाले, काने खीला ठोक्या जी ॥ खरक वैद्ये खेंची काढ्या, इएपेरे सहु कर्म रोक्यां जी ॥ १३ ॥ बार वर्ष सहेतां इम परिसह, वैशाख ग्रुदि दिन दशमी जी ॥केवलकान जप न्युं प्रजुने, वारी चिहुंगति विषमी जी ॥१४॥ समोसरण तिहां देवे रचि युं, बेठा त्रिजुवन ईशंजी ॥शोजिता खतिशय चोत्रीशे, वाणी गुण पांत्रीश जी ॥१५॥ गौतम प्रमुख एकादश गएधर, चौद सहस मुनिराय जी ॥साध वी बत्रीस सहस अनोपम, दीवे दुर्गति जाय जी ॥१६॥ एक लाख ने सह स र्रगण्साठ,श्रावक समकितधारी जी ॥त्रण खाल ने सहस खढारसें, श्रा विका सोहे सारी जी ॥१९॥ स्वामी चडविह संघ अनुक्रमें, पावापुरी पाय

धारे जी ॥ कार्त्तिक विद स्रमावास्या दिवसे, पहोता मुक्ति मकारें जी ॥ १० ॥ पर्व दीवाली तिहां यी प्रगटयुं, की धो दीप उद्योत जी ॥ राय मली ने तिणे प्रजातें, गौतम केवल होत जी ॥ १ए ॥ ते श्रीगौतम नाम जपं तां, होवे मंगलमाल जी ॥ वीरमुक्ते गयाथी नवशें, एंशी वरसें सिद्धांत जी ॥ १० ॥ श्री क्रमाविजय शिष्य बुध माणक कहे, सांजलो श्रोता सु जाण जी ॥ (कल्पसूत्रनी पुस्तक रचना देवादिगणे की धो जो) चरम जिलेसा तव ए चित्रे, मूक्युं ठहुं वखाण जी ॥ ११ ॥

॥ अथ षष्ट व्याख्यान द्वितीय सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ ढाल ञावसी ॥ देशी जमरानी ॥ काशी देश बनारसी ॥ सुखकारी रे॥ द्यश्वलेन राजान ॥ प्रजु उपकारी रे॥ पहराणी वासा सती ॥ सु०॥ रूपें रंज समान ॥ प्रण ॥ र ॥ चौद स्वयन सूचित जलां ॥ सुण ॥ जनम्या पास कुमार ॥ प्र० ॥ पोप वदि दशमी दिने ॥ सु० ॥ सुर करे जत्सव त्तार ॥ प्र॰ ॥ १ ॥ देहमान नव हाथनुं ॥ सु॰ ॥ नीख वरण मनोहार ॥ प्रणा अनुक्रमें जोवन पामिया ॥ सुण ॥ परणी प्रजावती नार ॥ प्रण॥ ३॥ कमन तणो मद गालीयो ॥ सुण ॥ काख्यो जलतो नाग ॥ ॥ प्रण ॥ नवकार सुणावी ते कियो ॥ सुण ॥ घरणराय महाजाग ॥ प्रण ॥ ४॥ पोप वदि एकादशी ॥ सु०॥ व्रत देइ विचरे स्वाम ॥ प्र०॥ वडतलें काजस्मग्गे रह्या ॥ सुण ॥ मेघमाली सुर ताम ॥ प्रण ॥ ५ ॥ करे जपतर्ग जलवृष्टिनो ॥ सु० ॥ त्राव्युं ना।सका नीर ॥ त्र० ॥ चूक्या निहं प्रज ध्यानथी॥ सु०॥ समरथ साहस धीर ॥ प्र०॥ ६॥ चैत्र विद चोथनें दिने ॥ सु० ॥ पाम्या केवल नाण ॥ प्र० ॥ चजविह संघ थापी करी ॥ स्त्रण। व्याव्या समेतिगरि सण ॥ प्रण्या । पाली व्यायु शो वर्षमुं ॥ सु० ॥ पहोता मुक्ति महंत ॥ प्र० ॥ श्रावण शुदि दिन श्रष्टमी सुण। की धो कर्मने। अंत ॥ प्रणा जा पास वीरनें आंतरुं ॥ सुणा वर्ष खढीरों जाए ॥ प्रण ॥ कहे माएक जिन दासने ॥ सुण ॥ कीजें कोटि कल्याण ॥ प्र० ॥ ए ॥

॥ श्रथ सप्तम व्याख्यान सञ्चाय प्रारंतः ॥

॥ ढाख नवमी ॥ हो मतवाखे साजनां ॥ ए देशी ॥ सोरि पुर समुद्र विजय घरे, शिवादेवी कुखें सारो रे ॥ कार्त्तिक वदि बारश दिने, अवतस्वा

नेम कुमारो रे ॥ र ॥ जयो जयो जिन बावीशमो ॥ ए छांकणी ॥ चौद खपन राणियें पेखियां, करवो स्वप्त तणो विचार रे ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी, प्रजु जनम हुर्न जयकार रे ॥ जयण ॥ १ ॥ सुरगिरि जत्सव सुर करे, जिनचंड कला जिम वाधे रे॥ एक दिन रमतां रंगमां, हरि आयुध सघलां साधे रे ॥ जण ॥ ३॥ खबर सुणी हिर शंकिया, प्रजु लघुवयथ की ब्रह्मचारी रे॥ बखवंत जाणी जिनमें, विवाह मनावे मुरारी रे॥ ज० ॥४॥ जन लेइ जादव आप्रहें, जिन आव्या तोरण बार रे ॥ उपसेन घर आंगणे, तव सुणीयो पशुपोकार रे ॥ जण् ॥ थ।। करुणानिधि रथ फेरव्यो. निव मान्यो कहेण केहनो रे ॥ राजुलनें खटके घणुं, नव जवनो स्नेह है जेहनो रे ॥ जण् ॥ ६ ॥ दान देइ संयम लियो, श्रावण वह अजुआली रे ॥ चोपन दिन ठझस्य रही, रह्यं केवल कर्मने गाली रे ॥जणाए॥ आशो विद् अमावासें, दे देशना प्रजुजी सारी रे॥ प्रतिबोध पामी वृत लियो, रहे नेम राजुल नारी रे॥ ज०॥ ७॥ आषाढ शुदि दिन अष्टमी, प्रजु पाम्या पद निर्वाणो रे ॥ रैवतगिरिवर उपरें, मध्यरात्रियें ते मन आणो रे ॥ ज० ॥ ए ॥ श्री पार्श्वनाथ थया पहेलां, क्यारे नेम् थया निरधारो रे ॥ साडा सातसें त्याशी हजार वर्षें, चित्तमांहे चतुर विचारो रे ॥ जणाश्या सहुको जिननां आंतरां, मन देइ मुनिवर वांचे रे॥ इहां पूरण व्याख्यान सातमं, सुणी पुण्यजंभारने सांचे रे ॥ ज़ण ॥ ११ ॥

॥ अधाष्ट्रम व्याख्यान सद्याय प्रारंतः॥

॥ ढाल दशमी ॥ बे वे मुनिवर विहरण पांगस्वा जी ॥ ए देशी॥ इक्ष कुत्रमें नाजि कुलघर घरे जी, सोहे मरुदेवी तस नार रे ॥ अवाढ विद सुरलोकणी चवी रे, अवतस्था जग सुखकार रे॥१॥ प्रणमो जविजन आदि जिणेसर रे॥ ए आंकणी॥ गज वृषजादिक चौद सुहणे जी, दीठां माडि ये माजम रात रे ॥ सुपन अर्थ कहे नाजि कुलपर जी, होशे नंदन बीर विख्यात रे ॥ प्रण॥ १ ॥ चैत्र अंधारी आठमें जनमिया जी, सुर मली उ स्सव सुरगिरि कीध रे ॥ दीठो वृषज ते पेखे सुपनें जी, तेणें करी नाम रूपज ते दीध रे ॥ प्रण॥ श॥ वोधे क्षपजजी कह्य वेलि ज्युं रे, दर्शन दीठे सकल स मुद्धि रे ॥ बालक रूप करीने देवता जी, खेले जिन साथें हित वृद्धि रे॥ प्रण ॥ अमरी सुनंदा बीजो सुमंगला जी, जिनने परणावी हरि आय रे ॥

थापी अयोध्या नगरी वसावीने रे, थापी राजनीति तिण ठाय रे ॥प्रणाः था रीति प्रकाशी सघली विश्वनी रे, कियो असी मषी कशी व्यवहार रे॥ एकसो वीश अने नर नारी कला रे, प्रजुजी युगलाधर्म निवार रे॥प्रव ॥६॥ जरतादिक शत पुत्र सोहामणा रे, वेटी ब्राह्मो सुंदरी सार रे॥ खाख त्राशी पूरव यहिषणे जी, जोगवी जोग जसा मनोहार रे ॥ प्र० ॥ उ ॥ देव लोकां तिक समय जणावियो रे, जिनने दी हानो व्यवहार रे॥ एक कोटि आठ लाख सोवन दिन प्रत्यें रे, देइ वरषीदान उदार रे ॥ प्र०॥ ए॥ चैत्र खंधारी आठम आदस्वो रे, संयम मुष्टियें करि लोच रे॥श्रेयांस कुमर घरे वरषीपारखं सी, कीधुं इक्तरसें चित्त साचरे ॥ प्रण ॥ ए॥ सहस्र वर्ष लगें उद्मस्थपणे रह्या जी, पठी पाम्या केवल ज्ञान रे ॥ फा गुण अंधारी अग्यारस दिने जी, सुर करे समवसरण मंनाण रे ॥ प्रण ॥ १० ॥ त्यां वेशी प्रज्ञ धर्मदेशना रे, साहमी ने सुणे पर्षदा बार रे॥ प्रतिवोधाणां केई व्रत यहे जी, केइ श्रावकनां व्रत बार रे ॥ प्रण ॥ ११॥ याप्या चोराशी गणधर ग्रणनिला जी, मुनिवर मान चोराशी हजार रे॥ साधवी त्रण खाख श्रावक एटला जी, उपर पांच सहस श्रवधार रे॥ प्रणा ११ ॥ पांच लाख चोपन सहस श्राविका जी, थापी चछित्रह संघ सुजाण रे ॥ महावदि तेरशें मुक्तें पधारिया जी, बुध माणक नमें सुवि हाण रे॥ प्रण॥ १३॥ वांचे विस्तारे मुनिवरा वली जी, मूक्युं छाठमुं वखाण इण ठाम रे ॥ बुधश्री क्तमाविजयजी ग्रुरु तणो जी, करे माणक मुनि गुण्यान रे ॥ प्रण्॥ १४॥

॥ श्रथ नवम व्याख्यान सद्याय प्रारच्यते ॥

॥ ढाल अगगरमी ॥ जरत नृप जावशुं ए॥ ए देशी ॥ संवत्सरी दिन सांजलो ए, वारसी सूत्र सुजाण॥ सफलदिन आजुनो ए॥ए आंकणी॥ श्रीफलनी प्रजावना ए, रूपा नाणुं जाण॥स०॥१॥ सामाचारी चित्त धरो ए, साधु तणो आचार ॥ स०॥ वडलहुडाइ खामणां ए, खामो सहु नर नार ॥ स०॥ १॥ रीष वशें मन रूषणां ए, राखीने खमावे जेह्न ॥ स०॥ कोयुं पान जिम काढवुं ए, संघ थाहेर सिंह तेह ॥ स०॥ ३॥ गिलत वृषजं वधकारकु ए, निर्देय जाणी वित्र॥ स०॥ पंक्ति बाहिर ते कह्यो ए, जिस महास्थानें क्तित्र ॥ स०॥ ४॥ चंदनबाला मृगावती

ए, जेम खमाब्युं तेम ॥ स० ॥ चंमप्रयोतनरायने ए, जदायन खमाब्युं जेम ॥ स० ॥ ५ ॥ कुंजकार शिष्यनी परे ए, तिम न खमावो जेम ॥ स० ॥ बार बोले पटावली ए, सुणतां वाधे प्रेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पिडक्रमणुं संव तसरी ए, करिये स्थिर करी चित्त ॥ स० ॥ दान संवत्सरी देइने ए, लीजे लाहो नित्त ॥ स० ॥ ७ ॥ चढविह संघ संतोषिये ए, जिक्त करी जिल जाति ॥ स० ॥ इणिपरे पर्व पजुषण ए, खरचो लक्षी अनंत ॥ स० ॥ ७ ॥ जनवर पूजा रचाविये ए, जिक्त सुक्ति सुखदाय ॥ स० ॥ इमाविजय पंकिततणो ए, बुध माणक सन जाय ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अय श्री नरेंडकृत सृगापुत्र सद्याय प्रारप्यते ॥

॥ नाटक जरतादिक तिहां रे खाल ॥ ए देशी ॥ सुग्रीव नयर सुहाम णुं रे लाल, शोजातणो नाहें छंत रे ॥ जिवक जन ॥ बलजड नामे नरे श्वरु रे खाल, हरि सम ऊद्धि महंत रे॥ तण॥ १॥ मृगापुत्र मुनि गुणवं त रे हो लाल, केम पाम्यो उपशांत रे॥ तण॥ सुमीण॥ ए आंकणी॥ मृगावती नृपगेहिनी रे लाल, सुंदर सरखी जोड रे ॥ त० ॥ पतिजका गुण रागिणी रे लाल, शीलवंती शिर मोड रे ॥ ज०॥ सु०॥ २॥ तास नंदन दिनकर समो रे लाल, मृगापुत्र अजिराम रे॥ प्रण॥ मात पिता दीधुं सही रे लाल, बीजुं बलश्री नाम रे॥ त०॥ सु०॥ ३॥ अलंतोग समरथ वडो रे लाल, कलाविचक्ण ताम रे॥ जण॥ कुलबालिका सरखी जली रे लाल, परणावे बहु आस रे॥ ज०॥ सु०॥ ४॥ युवराज पद तस आपियुं रे लाल, जनक साथ बहु प्रेम रे ॥ त्रण ॥ श्वेतजुवन हिर सारि खुं रे लाल, कुमरन आप्युं केम रें॥ जा। सुण॥ य॥ रयण जडित कुहि म तला रे लाल, नाटक विविध बत्तीस रे॥ ज०॥ दोगुंदक सुरनी परे रे बाल, जोगवे जोग वत्तीस रे ॥ जा ॥ सुण ॥ ६॥ सानंदन आनंदमे रे लाल, जातो जाणे न दीह रे॥ त०॥ गोले रह्यो पुरवर जुवे रे लाल, जि म कंदर वनसिंह रे ॥जण। सुण ॥७॥ एहवे इंड मुनि गुणनीलो रे लाल, जिह्ना काज महंत रे॥ च०॥ त्रीजा प्रहरना तापमां रे लाल, रिव तणुं प्रःख सहंत रे ॥ जण्॥ सुण्॥ ए॥ तप करी काया शोषवे रे खाख, सर स नीरस आहार रे ॥ जण्॥ बाविश परिसद्द जींपतो रे लाल, पामवा जवतणों पार रे ॥ जण्॥ सुण्॥ ए॥ त्रिक चहू टे मुनिवरप्रते रे खाख,

देखे कुंवर छिनमेप रे ॥ ज० ॥ पूरव में सिह एह बुं रे खाख, दी बुं रूप क्षीश रे ॥ ज० ॥ सु० ॥ १० ॥ एम चिंतवतां जपन्युं रे खाख, जातीसमर ण क्षान रे ॥ ज० ॥ पूरव जवमें पाखियों रे खाख, संयम श्रुत शुज ध्यान रे ॥ ज० ॥ सु० ॥ ११ ॥ जोगथकी मन ऊजग्यों रे खाख, योग ते दिखमें वसंत रे ॥ ज० ॥ इतरा दिन मुक च्रांतिमें रे खाख, दिवस गया विखसंत रे ॥ ज० ॥ सु० ॥ ११ ॥ वैरागी शिर सेहरों रे खाख, मृगापुत्र गुणवंत रे ॥ ज०॥ नाटक तजीने जियों रे खाख, मुनि नरेंद्र जखसंत रे ॥ ज०॥ सु० ॥ ११

॥ हाल बीजी ॥

॥ कारतक महिने क्रुसजी आव्या ॥ रमवा आवोने रे ॥ ए देशी ॥ संयमकी मनसा चित्त जागे, आवी माय जनक पाय लागे, जना दोय कर जोडीने मागे, अनुमति द्यो माय ताय रे॥ १॥ मोह्युं मन माहरुं॥ अवर निहं कोइ ठाय रे ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ ए संसार हाडको मेलो, राचि रहे जममें मतिघेखो, जूखि रह्यो निज जाव सहेखो, फिर मनमें प वताय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ सुएयां पंच महाव्रत गतजव, नरक तिरियंचतणां डुःख अनुजव, पाम्यो नरजव पुएयवले हव, साग्रं अनुमति सार रे मो० ॥३॥ नोंगं सुख मुक क्षण नहिं राचे, जिहां किंपाकतणां फल जाचे. रोम रोम विष तसतणुं माचे, प्राण तजे तत्काल रे ॥ मो०॥ ४॥ क्रण एक सुख वहु काल छु:ख, जोगव्यां कर्म विना नहिं मुख, ए संसारे नहिं क्षण सुख, राचे कोण मोरी माय रे॥ मो०॥ ५॥ तन धन जोवन कारि मा नहिं स्थिर, मूरल राचि रह्यो ए अम घर, संचे जाडां पाप सुधा नर, समजे नहिं लगार रे ॥ मो० ॥६॥ व्याधि अनेक लागिया तनमें, रूप रंग विण्से क्षण क्षणमें, तोहू समज न आणे दिलमें, अहो अहो मोह वि कार रे॥ मो०॥ ७॥ छा देह छनित्य छशाश्वत कह्यो जिन, विणसे सं ध्याराग परें ठिन, माज अणी परें उस बिंडु क्तण, इण परे लागे न वार रे॥ मो०॥ ए॥ वली जन्म इःख जरातणुं इःख, अशुचि रोग मरण जय प्रमुख, इण संसारे न होये कुण सुख, बहुं न रित खगार रे ॥ मो०॥ ए॥ यथा नर कोइ चाल्यो परदेशे, साथे संबल नहिं शुजवेशे, जूल तृषा व्यापी अति जेसें, पासे छःख तिवार रे॥ मो०॥ १०॥ एवं धर्म अकृत मनुष्य जिम, आधि रोग याये अंते तिम, शोचंतो जाये परजव इम,राखे

नहिं कोइ साहि रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ खीजो व्रतसंबद्ध धरी कोइ, चालंतां पंथें सुख होइ, ठ्यापे जूख तृषा निहं सोइ. पामो सुख तिवार रे ॥मो०॥ ११ ॥ इम मुनि धर्म कह्यो जगदीश, पाले जे कोइ विश्वा वीश, शिव पामे त्रिजुवन थाय ईश, नरेंड ते केवलश्री पाय र ॥ मो० ॥ १३ ॥ ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज, दक्षिण दोहिलो रे हांजा पाणी लाग णो ॥ ए देशी ॥ मृगातनु जात हो राज, जनविष्यात हो राज, जनयनी पासें रे मागे अनुमित बत ता ॥ जे घडी जावे हो राज, ते फिर नावे हो राज, विलंब न कीजें रे, जननी माहावत आदरुं ॥ १॥ काच ज्युं काया हो राज, बादल ज्युं ठाया हो राज, उदक परपोटा रे, विणसतां वार लागे नहीं ॥ जिस नन्न दीसे हो राज, धनुष अतीशें हो राज, मनो हर दीसे रे, पण क्रण एक विखये सही ॥ २॥ जिम तरु सोहे हो राज, पंखी मन मोहे हो राज, पण सब ठंके रे, तस खद्मी विश्वेश यके॥ इम सहु जाणों हो राज, जगत पीछाणो हो राज, स्वारथ न पूगे रे, तो वंमे सहु मिल करी ॥ ३ ॥ रयणादिक माया हो राज ॥ अधिक जपाया हो राज, पुत्रादिक दारा रे, जावुं इंग सब तिज करी ॥ जे जिन राया हो राज, जगत निपाया हो राज, अनित्य उनेखी रे, त्यागि इद्धि शिवपंद गया।। ।। आइ जग व्यापी हो राज, त्रिजग समापी हो राज, अप्नि प्रजागी रे, छहो ते विश्वनयंकर ॥ दिहुं दिशि देखे हो राज, ते जो न पेखे हो राज, माय तव जांखेर, वत्सं विना दीसे नहीं ॥ ५ ॥ मृगा सुत जांखे हो राज, निहं कोइ राखे हो राज, जगत विख्याती रे, अप्नि जनम मरण तणी ॥ माटे तुम पासे हो राज, अधिक उद्वांसे हो राज, अनुमित मागुं रे, जननी आतम तारशुं ॥ ६ ॥ राणी चित्त तोले हो राज, सुत द्युं ए बोले हो राज, अचरिज पामी रे, जांले राय राणी सुत त्रणी ॥ सुणो तुम पूत हो राज, दीसो सपूत हो राज, गिरि सम लागे रे, वयण एसां निव बो लियें ॥ ७ ॥ तनु सुकुमार हो राज, जिम पुष्फ माल हो राज, तुमधी जाया रे, संयमपथ किम पली शके॥ जोगवो जोग हो राज, तजि मन सोग हो राज, रोग न करियें रे, वत्स उदर म सखी करी ॥ ।। चारित्र दोहिल्लं हो राज, निहंय ए सहेल्लं हो राज, वन

तप करतुं रे, महाव्रत छुकर पालवां ॥ प्राणांत पात हो राज, सांजल जा त हो राज, जावजीव सुधी रे, जीवदया व्रत पालवां ॥ ए॥ नित्यंज बोले हो राज, सत्य छमोले हो राज, नंद तुक्यी र छुक्कर व्रत किम पली शके ॥ सदैव छ्याची हो राज, व्रत गुण राची हो राज, छदत्त न लेवे रे, दंतसोहन छिप विण कह्यां ॥ १० ॥ ब्रह्मव्रत राचे हो राज, त्रिकरण सा चे हो राज, नववाड लांखी रे, ए व्रतनी जगदीश्वरु ॥ तिल तुस छागें हो राज, परियह न रागें हो राज, छःखनो दाता रे, वाह्य छुन्यंतर वर जवो ॥ ११ ॥ चछित्रयाहार हो राज, निशापरिहार हो राज, सान्निध्य न राखे रे, संचय वत्स मुनिश्वरु ॥ शत्रु ने सित्र हो राज, छन्य एकत्र हो राज, समनाव करवो रे, राणी नरेंद्र कहे पुत्रने ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी॥

॥ कुक्कड देखी कुंमने ॥ मन मान्यो लाल ॥ ए देशी ॥ मृगाराणी कहे पुत्रने ॥ मन मान्यो लाल ॥संयम विपम अपार ॥अति मन मान्यो लाल ॥वावीस परिसह नित्यप्रत्ये ॥ मन० ॥ सहेवा डुकरकार ॥ अति० ॥ १ ॥ दारुण खोच करावणो ॥ म० ॥ केम खमशो सुकुमार ॥ अ० ॥ स्नानादि क पण वरजवां ॥ म० ॥ तुम तनु कोमल लाल ॥ व्य० ॥ २ ॥ चारित्र तु कथी न पत्नी शके ॥ मण्॥ इजी लवुवुद्धि कुमार ॥ ऋण्॥ लोह् जार मस्तक विषे ॥ म० ॥ धरवो तिम व्रत जार ॥ व्य० ॥ ३ ॥ सामे पुर केम तरी शके ॥ मण ॥ त्याकाश पडती जे गंग ॥ त्याण ॥ ज्यामा नहिं जीवि त लगे ॥ म०॥ करो हो अति उहरंग ॥ अ०॥ ४ ॥ वेलूकवलतणी परे ॥ मण्॥ आखाद हे सम तेह ॥ अण्॥ तीक्षण असिधारा परे ॥ मण् ॥ चालवुं फुकर एह ॥ अ०॥ ५ ॥ अहि साथे रहेवुं जिस्युं ॥ म०॥ चारित्र वे दुःखकार ॥ छा ॥ खोहमय जव चाववा ॥ मण ॥ छाज्ञक्य चारित्र विचार ॥ अ० ॥ ६ ॥ यथा वैश्वानरनी शिखा ॥ म० ॥ ते कहो केम पिवाय ॥ अ०॥ संयम पण वत्स न पत्ने ॥ म०॥ तमश्री कुक्रर था य ॥ छ० ॥ ७ ॥ वली नर कोइ कोथले ॥ म० ॥ वायु तरे कहो केम ॥ अणा तिम ए फुकर हे सही।। मणा ए मन हे बत्स तेम ॥ छणा ए॥ मेरु महीधर त्राजुवे ॥ मण्॥ किम तोखायो जाय ॥ अण्॥ सुरितित्रार सहेवो यथा ॥ मण्॥ तिम चारित्र कुकर थाय ॥ अण्॥ ए॥ रत्ना

कर जिम जुजबहों ॥ म० ॥ तरवो जुकरकार ॥ अ० ॥ अनुपशांत कियो दिशे ॥ म० ॥ विषम ते तरवो पार ॥ अ० ॥ १० ॥ मानुष जोग ते जोगवो ॥ म० ॥ जत्तम लक्ष्ण पंच ॥ अ० ॥ जुक्तजोग थया पठी ॥ म० पश्चात् धर्म समंच ॥ अ० ॥ ११ ॥ तत्र ते कुमर माय तायने ॥ म० ॥ जांखे वचन रसाल ॥ अ० ॥ इह लोक विपासा रहिनने ॥ म० ॥ जुक्कर निहंय विशाल ॥ अ० ॥ १२ ॥ कायरने जुक्कर सही ॥ म० ॥ शू राने निहं कांय ॥ अ० ॥ नरेंद्र ते सुखनो निधान ॥ म० ॥ संयम सुत कहे माय ॥ अ० ॥ १३ ॥

#### ॥ ढाल पांचमी॥

॥ उधवजी संदेशो कहेजो स्यामनें ॥ एदेशी ॥ मृगापुत्र वैरागी दमी श्वर सेहरो, मात पिताने जांखे वचन मनोहार जो ॥ शरीरवेदना मान सी में पूरव सही, कहेतां न आवे वचन्यकी तस पार जो ॥ १॥ मृगा पुत्र वैरागी दमीश्वर सेहरो ॥ ए आंकणी ॥ साचो ए संवेगी अवनीपति खरो, मुनिजनमां ते शोजे सवल महंत जो ॥ नाम जपंतां तम जाये ना शी परुं, जन्म मरण कांतार तणो लह्यो श्रंत जो ॥ मृगा० ॥१॥ जरा मर ण कांतार चतुर्गति जय महा, अनुजवियो में वार अनंती माय जो॥ क र्भ वशें ते जाइ नरकमें ऊपज्यो, जाव कहुं ते सुणजो चित्त खगाय जो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ अग्नि जसता पणुं खोकमें तेह्थी, अनंत गुणुं तिहां नरक मांहि जुःख वार जो ॥ खोह अग्नि गोलानी परें तिहां धग धगे, एहवी वेदन सही अनंती वार जो ॥ मृष्॥ ४ ॥ सात वेदना ते तिहां तमने दाखवुं, मनुलोकमें शीत पडे असराल जो ॥ इहांची अनंत गुणी जे नर कमें वेदना, वार अनंती जोगवी ते सुविशाल जो ॥ मृण ॥ ५ ॥ कुंत्री पाक विपाक कर्म वश ऊपन्यो, नीचुं मस्तक कथ्व कस्वा मुक पाय जो॥ वन्हि सरखी रीते वरणे फलहुले, पाचिवयो तस वार अनंती माय जो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ कलबनदनी वेलु समूह तणे विषे, मेरु मंदर वेलूनी समान जो ॥ माहा अग्नि दावानल सहस्य तापमें, जलावियो मुफ देह अनंती ताम जो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ परमाधामी देव यही मुने बांधियो, कर्वतञ्जं करी ठेद कियो मुफ देह जो।। बीजा पण शस्त्रादि करीने विडं वियो, डु:ख जोगवियां वार अनंती तेह जो ॥ मृण ॥ कूट शामखी

वृक्त निघह मुफ वांधियो, धनुष वाणे करी जेदी तव मुफ काय जो ॥ खें वाताण करीने घणी वेदन करी, असिधारे करी खंम किया अहो माय जो ॥ मृ० ॥ ए ॥ महोटा यंत्रमांहि ते यहीने नाखियो, इक्तुपरे मुफ पी ख्यो घाणीमांहि जो ॥ पापकर्म वश रुदन वि आकंद करं, जोगवी वे दना वार अनंती खांहि जो ॥ मृ० ॥ १० ॥ नरकमांहि जे करे वे गाढी वे दना, जांखी न शके केवली ते छु:खवेश जो ॥ पर्षदामांहि कोड वरस अहोनिश दिने, अंश मात्र जिहां सुखनो नहिं इक रेश जो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ केत्र वेदना मांहोमांहे पण हुवे, श्वान रूप करी परमाधामी धाय जो ॥ कवहुंक जीरण वस्त्र परे मुफ वेदीयो, एहवा छु:खनी धरी अनंतीकाय जो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ अग्नि सरिसी खायमां रथें जोतस्त्रो, चलावियो ते व खती वेद्यमफार जो ॥ जंगली रोफ पशुनी परे मुफ पीडियो, असिधारे करी खंम किया निर्धार जो ॥ मृ० ॥ १३ ॥ महिष परे वेश्वानरमें मुफ बा लियो, गिरू पंखी ढंकादिक रूप बनाय जो ॥ लोह सरीखी चांचें करी तन्न वेदिग्रं, वार अनंती नरेंद्र कहे सुण माय जो ॥ मृ० ॥ १४ ॥

॥ हाल नही ॥

॥ तिष्ठ तिष्ठ किहां गयो रे, मेरा जाइ मारे रे॥ ए देशी ॥ मृगापुत्र निज मायने रे, उपदेशे तिणवार रे ॥ अनंतानंत छुःख अनुज्ञव्यां रे, क हेतां नावे पार ॥ १ ॥ जननी विसार रे अनुमित दीजियें उल्लास रे ॥ ए आंकणी ॥ जिन धर्म करणी विना रे, ल्रह्यों नरक निवास रे ॥ परमाधा मी वश पड्यों रे, सुख निहुं एक सास ॥ ज० ॥ १ ॥ तृषावश पीड्यों थ को रे, वैतरणी नदी आय रे ॥ क्रुरधार कल्लोल जेहना रे, हण्यों जेहमें तणाय ॥ ज० ॥ ३ १। पापे करी पीड्यों तवे रे, ठाया ठंडी देख रे ॥ वन खंम जाणी आवियों तिहां, आशा धरी विशेष ॥ ज० ॥ ४ ॥ असि धार तीक्षण जिस्यां रे, पत्र तक्नां जेह रे ॥ तेणे करी तनु ठेदियुं, जाणे मां ड्यों वरसवा मेह ॥ ज० ॥ ५ ॥ मुफने पीनज ताडियों रे, परमाधामी देव रे ॥ कातरे करी कापियों मुफ, खंम खंम विजेव ॥ ज० ॥ ६ ॥ मृग परे तिम जालमां रे, नाखियों मुफ माय रे ॥ मुख बांधी रूंधी करी र, मारियों तस साय ॥ ज० ॥ ७ ॥ मीन सम मुफने यही रे जालमां हि ताणी रे ॥ मवर जिम काया करी रे, लियों मुखमें आणी ॥ ज० ॥ ज० ॥ ठ ॥

सिंचाणा पंत्नी परें रे, बतकने ज्युं धरे साय रे ॥ त्युं रूपधारी मुज प्रत्यें रे, जपट पकडे धाय ॥ ज० ॥ ए ॥ वार्धिक जिम वृक्तने रे, वेद करे वसु धार रे ॥ वेदियो तिम अंग जननी, देव अनंती वार ॥ ज० ॥ १० ॥ याप मृटी लातसें रे, मारियो अविमासि रे ॥ लोह जिम मुज चूर्ण की धुं, जाउं किहां तिहां नाशि ॥ ज० ॥ ११ ॥ लोहकार जिम लोहने रे, जाले अग्निमजार रे ॥ जालियो तिम अंग सघलो, कूटियो घनसार ॥ ज० ॥ १२ ॥ कल कलतो तस्त्रो सही रे, पाने महोहुं फार रे ॥ मांस का पी दिये मुजने, एम अनंती वार ॥ ज० ॥ १३ ॥ पूर्वे में सुरापान की धुं, महाकर्म अघोर रे ॥ संजारीने मुज रुधिर काढी, पाने महोहुं फोर ॥ ज० ॥ १४ ॥ हिस राची जे कर्म बांध्यां, तेणें ए जुःखपाय रे ॥ हने न रा चूं माय मोरी, नरेंद्र श्रुत चित्त लाय ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ जिव जीवो, करणी तो की जें चित्त निर्मेखी ॥ ए देशी ॥ माजी मोरी करणी तो कर ग्रुं चित्त निर्मेखी ॥ ए आंकणी ॥ माजी मोरी मोह मिथ्यातकी निंदमें, सूतो काल अनंत ॥ मा० ॥ परमाधामी वश पख्यो, कहेतां न आवे अंत ॥ माजी मोरी० ॥ क० ॥ १ ॥ मा० ॥ राग तणा रित्तया हता, सुन सुन करता तान ॥ मा० ॥ धर्म कथा नव सांजली, तेहना कापे कान ॥ मा० ॥ क० ॥ २ ॥ मा० ॥ परनारीना रूपनो, विषय वखाण्यो जोय ॥ मा० ॥ देवगुरु निरस्त्या नीहें, तेहनी आं स्थो काढे दोय ॥ मा० ॥ क० ॥ ३ ॥ मा० ॥ सूरजीगंध सुंघ्या घणा, गुष्ठा फूल फराक ॥ मा० ॥ अत्रत फूलेल पडावियां, ठेदे तेहनां नाक ॥ मा० ॥ क० ॥ ४ ॥ मा० ॥ स्रजीगंध सुंघ्या घणा, गुष्ठा फूल फराक ॥ मा० ॥ अत्रत फूलेल पडावियां, ठेदे तेहनां नाक ॥ मा० ॥ क० ॥ ४ ॥ मा० ॥ क० ॥ क० ॥ या मा० ॥ क० ॥ क० ॥ धामा० ॥ क० ॥ ६ ॥ मा० ॥ क० ॥ धामा० ॥ क० ॥ ६ ॥ मा० ॥ काचा कुंवल फल जिह्नयां, गाजल मूला कंद ॥ मा० ॥ जृठ वचन बोल्या घणां. कृड कपटनी खाणा ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहनी, जीज काढे जड ताण ॥ मा० ॥ क० ॥ ए ॥ मा० ॥ मा० ॥ क० ॥ ए ॥ मा० ॥ क० ॥ ताण तहनी, काप्यां तह वनरां तह वालरां तह व

य ॥ माण ॥ घणां मूलां काढियां, कापे तेहनी काय ॥ माण ॥ कण ॥ ए॥ माण ॥ फूल जुवारा चूंटता, फूलां सेज विठाय ॥ माण ॥ सुख जोगवियां तेहने, कांटा चांपे काय ॥ माण ॥ कण ॥ रण ॥ माण ॥ कोमल कलियां फूलनी, तोडी गूंथ्या हार ॥ मा० ॥ शामलीवृक्तें वांधीने, दे चाबुकना मार ॥ मा॰ ॥ क॰ ॥ ११ ॥ मा॰ ॥ वचनचूक नर जे हता, माया कप टी जेह ॥ मा॰ ॥ पकडी पछाडे पर्वते, खंग खंग करे तस देह ॥ मा॰ ॥ क०॥ ११॥ मा०॥ घरमें कखह करावती, काथा कवली नार ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहना, मुखमें चरे छंगार ॥ माण ॥ कण ॥ १३ ॥ माण ॥ कूहाडे करि कापियां, खींखां महोटां जाड ॥ मा०॥ परमाधामी तेइनुं, मुस्तक ठेदे फाड ॥ मा०॥ क० ॥ १४॥ मा०॥ कोश कोदाली पावडा, जूमि विदारण जेह ॥ माण ॥ माग्यां जे किह आपियां, पामे कप्टज ए ह ॥ माण्॥ कण्॥ १५॥ माण्॥ पूज्य कहीने पूजावता, करता अनरथ मूल ॥ माण्॥ कामिनी गर्ज गंखावता, परोवी दिये त्रिशूल ॥ माण्॥ कण्॥ १६॥ माण्॥ पापप्रजावथी उपन्यो, कुंजीपाकनी मांय॥ माण्॥ उपर चूंटे कागडा, मांही कीडा खाय ॥ माº ॥ कº ॥ १९ ॥ माº ॥ इ णिया हुका पीवतां, जलादिकथी जीव ॥ माण॥ तातो लोह तपावी ने, मुख चांप्या करे रीव ॥ मा०॥ क०॥ र०॥ मा०॥ मानवनो जव पामिने, अव जाउं निहं हार ॥ माण ॥ नरेंड्रतणी अनुमति लही, पा मुं जननो पार ॥ मा० ॥ क० ॥ १ए ॥

### ॥ ढाल आउमी ॥

॥ मान न की जे रे मानवी ॥ ए देशी ॥ पापकरमधी रे प्राणिया, जप न्या नरक मजार ॥परमाधामी रे तेहने, हणतां करे रे होकार ॥१॥ की धां कर्म न ब्रियें, किहां राणा किहां राव ॥ हिरहर ब्रह्म पुरंदरा, ते पण हु आ खराव ॥ की धां कर्म न ब्रियें ॥ १॥ किया निर्धंठन ढोरने, मांज्या तेणे रे वांध ॥ गगडावे गिरि जपरे, काढे तेहनी रे सांध ॥ की धां० ॥ ३॥ किनी आंगीठी रे अग्निनी, चलम जरी चकमोल ॥ गांजा तमाकु रे पीव ता, पाम्या नरकनी पोल ॥ की धां० ॥ ४॥ साधुजनने संतापिया, निंदा की धी अपार ॥ ताते यंजे तस वांधिने, दे मुजरकी रे मार ॥ की० ॥ ॥ ५ ॥ विष देइ माणस मारियां, किर किर को ध प्रचंक ॥ परमाधामी रे

तेहनुं, शरीर करे शतखंम ॥ कीव ॥ ६ ॥ धीठो देषी रे धर्मनो, करतो क र्म कुलंठ ॥ ताणी बांधे रे तेहने, उन्नो राखे रे ठंठ ॥ की० ॥ उ॥ न्हावण धोवण बहु कियां, ढोख्यां अणगल नीर ॥ मबकी मारीने मोलियां, नदी सरोवर नीर ॥ की० ॥ ए ॥ कूड कपट करी उंखवी, परचापण धनराशि ॥ दइ विश्वासने वंचिया, सहे नरकमां रे त्रास ॥ की० ॥ ए॥ नदी वैतर णी रे नीरना, देखो इष्ट खरूप ॥ रसी रुधिर ने रे पासनो, कखकखतो प्रहकूप ॥ की० ॥ १० ॥ बहु दुर्गंधि रे देखिने, आवे कांठे रे धाय ॥नाखे पाछो रे साहिने, परमाधामी रे पाय ॥ की ॥ ११ ॥ ताकी तीर कटारि यां, आहमा साहमी रे खाय ॥ पाप कियां जव पाठले, कोण होडावे रे श्राय ॥ की० ॥ १२ ॥ पूरववैर संबंधथी, करे परस्पर घात ॥ शस्त्र फडो जड मारता, रूपे जेसा किरात ॥ कीण ॥ १३ ॥ परमाधामी रे बांधता, रूप करे विकराल ॥ कसता काचां रे फाडीने, संकट सबल विशाल ॥ की ।। १४॥ ठोरे रमता रे हो लीणा, हसता पाणी रे ढोल ॥ परमाधामी रे तेहने, घणी उनावे रे रोखं ॥ की० ॥ १५ ॥ तरुवा तेल उकालीने, आ णी कोप छापार ॥ पिचकारी जिरने रे डांटवे, उपर नाखे रे खार ॥ की॰ ॥ १६ ॥ होली क्वेशनुं मूल हे, खाजहीणा नर थाय ॥ बालक तो बोले खरा, पण मित बूढानी रे जाय ॥ की ।। १७ ॥ मन मेलो रे मीठो मुखे, कूड कपटनो रे कोष ॥ पापकर्म पोते करे, करतां काढे न दोष ॥ की० ॥ १० ॥ पाप कर्म विण जोगवे, बूटकबारो न श्राय ॥ नर तुं शरण जिनधर्म नुं, बहे तो शिवसुख थाय ॥ की० ॥ १ए ॥ ॥ ढाल नवमी ॥

॥ मोह्या मोह्या रे त्रिज्ञवन लोक, गुरुने बोलिडिये ॥ ए देशी ॥ मोह्या मोह्या रे राणीने राय, सुतने बोलिडिये ॥ ए ख्रांकणी ॥ मृगापुत्र गुण ख्रागरु रे, धर्म धुरंधर धीर रे ॥ जूप राणी प्रत्ये दाखवे रे, ज्ञान वली वड वीर ॥ कुं० ॥ १ ॥ नरकमांहि में जोगवी रे, घोर प्रचंक प्रगाद रे ॥ मनुष्यलोक तेहथी तिहां रे, ख्रानंती वेदना जात ॥ कुं० ॥ १ ॥ रत्निवंतामणि सारि लो रे, खादरशुं ख्रम जोग रे ॥ जोग रोग सम उल्लेख रे, प्रतंत्र धर्म संयोग ॥ कुं० ॥ ३ ॥ मात पिता इम कुंवरने रे, जांले वचन खनुकूल ॥

रे॥ अनुमति हे बत्स तुर्जने रे, पण संयम प्रतिकूल ॥ कुण ॥ ४॥ रोग प्रःख पीडे तदा रे, कुण करशे तुक सार र ॥ मुनिमारग घणो दोहिलो रे, जेसी खांकाधार ॥ कु॰ ॥ ५॥ वचन सुर्णी निज मातनां रे, मृगा पुत्र अितराम रे ॥ तुम जेह्वुं मुक्त दाखियुं रे, तेह्वुं संयम काम ॥ कु०॥ ६॥ मृग वनखंम रहे सदा रे, कुण करे तेहनी सार रे॥ तिम संयममारग विषे रे, विचरशुं अमें मनोहार ॥ कु॰ ॥ ७ ॥ रोग यदा मृगने हुवे रे, वसे तस्तल ठांय रे ॥ सुख हुवे विचरे सदा रे, कोण पूरे सुख खांय ॥ कु०॥ ० ॥ मृगचर्या तहनी परें रे, चरशुं संयम मांय र ॥ सुख डु:ख आवे सम सहू रे, धर्म तहनी ढांय ॥ कु०॥ ए॥ वचन सुणी निज जातनां रे, राय राणी तिण वार रे॥ जाएयुं पुत्रनुं हढ पणुं र, अनुमति दीधी सार ॥ कु० ॥ १० ॥ जिम थाये तिम सुख करो रे, सारो आतमकाज रे ॥ मूकी ममत्व संसारनुं रे, मांड्यो उत्सव साज ॥ कु० ॥ ११ ॥ जिम विषधर कंचुक तजे रे, तिम तजियो सव राग रे॥ रेणु परें क्रिक्क तजीने, निकलीयो माहाजाग ॥ कु० ॥ ११ ॥ मात पिता जत्सव करे रे, क्रिक्क महा विस्तार रे॥ जय जय नंदादिक क हे रे, आतमने निस्तार ॥ कु०॥ १३ ॥ स्तवीजतो जन मुखयकी रे, आ व्यो नगर जद्यान रे॥ लोच कस्त्रो निज करश्वकी रे, परम लीन शिवध्यान ॥ कु० ॥ १४ ॥ पंच महावत छादस्यां रे, मृगापुत्र छएगार रे ॥ पंच समिति त्रण गुतिमें रे, वसे निरंतर चार ॥ कु० ॥ १५ ॥ चरणकमख मुनिराजनां रे, निम सहु सुख पावंत रे॥ निज नगरी आव्या वली रे, नरेंड महिपति संत ॥ कुण ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी॥

॥ हारे महारे जोवनियांनो लटको दाहाडा चार जो, नाणुं रे मलशे पण टाणुं निहं मले रे लो ॥ ए देशी ॥ हारे महारे मृगापुत्र ते मृनिगणमां शिरदार जो, विचरे रे मिहमंमल मृनिवर दीपतो रे लो ॥ हारे महारे निर्मल ने निरहंकारी निःसंग जो, त्यक्तगारव सिव जीव उपर सम जाव में रे लो ॥ १ ॥ हांण ॥ सुख इःख ने लाज अलाज एकत्र जो, जीवि ताश मरणांत तणो जय निव गणे रे लो ॥ हांण ॥ निंदा अने प्रशं सा मानापमान जो, सरखुं रे समजाव मुनि मन जावतो रे लो ॥ १॥

हां ।। मन दंगादि विषय मिथ्यात्व निःशस्य जो, हास्य निदान अिं चन बंधन शोचना रे लो ॥ हां ॥ डव्य केत्र समयादिक जाव विचार जो, नहिं प्रतिबंध अबंध किहांये मानसा र खो ॥ ३ ॥ हां।॥ इह खोका दिक सुख तणी नहिं आश जो, परखोकादिक क्रक्कि तणी वांठा नहीं रे लो ॥ हां ।। कहप ते मुनिनो चंदनवासी समान जो, लाधे अशन अलाधे समजावे गिणे रे लो ॥ ॥ हां०॥ आश्रव मनची दूर गयो अपसञ्च जो, प्रशस्त ध्यान चढवे मन संवर स्थिर करे रे खो॥ हांण॥ मेरु महीधर अचल महामुनि ध्यान जो, कायानी शुश्रूषा सहु ते पर हरी रे लो ॥ ए ॥ हां ।। देव मनुष तिर्यंचना परिसह जेह जो, अनुलोम खने पडिलोम उपने सम रहे रे लो ॥ हां ॥ कांस्यपात्र डव्य डव्य नाव निर्क्षेप जो, शंख निरंजन जेम रागादिक निहं खगे रे खो ॥ ६ ॥ हां ।। गगनपरें आलंबन रहित सुनीश जो, वायुपरें प्रतिबंध नहिं कोइ देशमां रे लो ॥ हां ।। सायर सखिल समान हृदय अकलुष जो, कम लपत्र निर्केष सजल ते निव धरे रे लो ॥ उ॥ हां कर्मपरें ग्रुप्तें डिय रहे निशि दीस जो, जारंक जिम अप्रमत्त कुंजरसम शूर वे रे लो ॥ हांण॥ वृषत्र परं व्रतन्तार वहे बलवंत जो, सिंहपरं महा धीर वीर परिसह सहे रे लो ॥ छ॥ हांण॥ मेर जेम अकंप उद्धि गंनीर जो, चंडलेश्या तेजोलेश्या सूर्य परं तपे रे लो ॥ हांण ॥ वसुंधरा ड्व्य फरस सहे वड धीर जो, हूताशन जेम दीम तपें करी दीपतो रे खोल।। ए।। हां।। अनुत्तर दर्शन ज्ञान चारित्र जेह जो, चढियो रे परिणा में क्तपक श्रेणियें रे लो ॥ हां ॥ घाती कर्मनां तोड्यां वे आवरण जो, जपन्यो रे ते केवलज्ञान दिवाकरू रे लो ॥ १०॥ हां० ॥ देव मलीने रचना कमल तणी कीध जो, मृगाक्रिष कमलासन बेशी उपदिसे रे लो ॥ हांo ॥ धर्मदेशना जिक्कमल मनोहार जो, तारे रे जुव पुष्करिणीथी बुडता रे लो ॥ ११ ॥ हां ॥ देखे केवल दर्शन लोक स्वरूप जो, तेम प्ररूपे जविक मैत्रिजावें करी रे लो ॥ हांण ॥ वहु वरष खगें महियल कीध पावन्न जो, श्रंतसमे गुणी संलेषणा विधि शुं करी रे लो ॥ १२ ॥ हां ॥ एक मासनुं श्रणसण कीधुं महंत जो, पूरण श्रायु करीने शिवसुंदरी वस्त्रो रे लो ॥ हां ॥ जन्म मरणनां वेद्यां दुः ख अनंत जो, नमो नमो मृगापुत्र मुनिश्वर सिक्दने रे लो।। १३॥ हां ॥ देश गुर्जरमें महुधा नगरसुवास जो, श्रावक लोक वसे ति हां सुंदर दीपता रे लो ॥ हाँ ॥ प्रथम जिनेश्वर दर्शन श्रति मनोहार जो, शाल रंगणीशनी एकवीशें जिन नेटिया रे लोल ॥ १४ ॥ हां ॥ मृगापुत्र मुनिराज तणी सञ्चाय जो, पूरण की धी चोमासें उल्लास शुं रे क्षो ॥ हां ॥ उत्तराध्यायने र्रगणीशमे विस्तार जो, संक्षेपे गुण स्तविया मुनि नरेंद्रना रे लो ॥ १५॥ इति मृगापुत्र सद्याय संपूर्णः ॥

॥ अय सपरिकर श्रीखंधकक्षिनी सद्याय प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री सुव्रत जिनवर नमुं, चरणयुगल कर जोडि ॥ सावह्वीपुर शो त्रतुं, अरि सवला वल तोड ॥ १ ॥ जितरात्रु महिपति तिहां, धारणी नामे नार ॥ गौरी ईश्वर सूनु सम, खंधक नामे कुमार ॥ १॥ स्वसा पुरंद रा मनहरु, रूपें जीत्यो अनंग ॥ दिनकर इंड कतरी, विसया अंगोपांग ॥३॥ कुंत्रकार नयरी जली, दंमक राय वरिष्ठ ॥ जीव अनव्यनो छुष्टिभ, पालक मात्य कुदिछ ॥४॥ मात पिता सिव मिल करी. पुरंदर कन्या जेह ॥ आपी दं मकरायने, पामी रूपनो हेह ॥ ५॥ एक दिन विहरंतां प्रजु, सावही उद्यान ॥ विशमा जवि पडिवोहता, समोसस्या जिन नाण ॥६॥ सुणि आगम खंधक विज्ञ, नमे जगवंतने आय ॥ सुणी देशना दर्शन ख ही, निज निज स्थानक जाय ॥ ७॥ कुंजकार नयरी थकी, कोइक रायने काज ॥ पालक सावही जाणी, आव्यो सन्नायें राज ॥ पालक वोले सा धुना, अवगुणनो जंमार ॥ निसुणी खंधक तेहने, शिक्ता दीधी लगार ॥ ए॥ पालक खंधक उपरें, थयो ते कोधातूर ॥ पठी ते निजस्थानक गयो, दं मकरायनें पूर ॥ १० ॥ एहवे मुनि सुव्रत कने, निम खंधक लिये व्रत ॥ पंचशत नरनी संगतें, बहुल कर्खुं सुकृत ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ विचरता गामो गाम॥ ए देशी ॥ खंधक साधु विचार, आपे वांचना सार ॥ आज हो एक दिन पूछे सुव्रतनें जी ॥ १॥ स्वामी साधु सवेष, जाउं बहेनने देश ॥ आए।। जो प्रजुजी आज्ञा हुवे छी ॥ १॥ कहे जन साधुं सर्व, मरणांत होशे उपसर्ग ॥ आण् ॥ निसुणी खंधक वीनवे

जी ॥ ३ ॥ न जीवित श्रम छु:ख, सहेशुं मोक्तनां सुख ॥ श्राण् ॥ लोक लायक श्रमे पामशुं जी ॥ ४ ॥ खामी कहे तेवार, तुज विना सब परिवार ॥ श्राण् ॥ छु: खित ते बहु थायशे जी ॥ ५ ॥ ते सुणी मुनि पंचशत, सह चाल्यो नूरे श्रादित्त ॥ श्राण् ॥ श्राण् ॥ पालके ते जट गहनमां जी ॥ ७॥ उठ तुं वांदवा काज, जांखे श्रमात्य माहाराज ॥ श्राण् ॥ कां तुज धारणा किहां गई जी ॥ ७ ॥ पांचशें सुजटने साज, लेवा श्राण्यो ते राज ॥ श्राण् ॥ वेष धरी साधुतणा जी ॥ १॥ श्रतिकृर ते सशस्त्र, वांदवा जाइ श तत्र ॥ श्राण् ॥ हणी तुज क्षेशे राजने जी ॥ १० ॥ जोवा श्राव्ये राय, शस्त्रनी धोरणी बताय ॥ श्राण् ॥ थानके कपट केलव्यां जी ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥

॥ देखी चिंते राजियो, क्रोधे दीसे तप्त ॥ सर्व यति घन बांधीने, सों प्या पालक ग्रप्त ॥ १ ॥ कहे राजा मंत्रीवरू, जे रूचे ते धार ॥ हरख्यो पालक पामीने, उंदर जिम मांजार ॥ १ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ कूकड देखी कुंकने ॥ अन मान्यो लाल ॥ ए देशी ॥ तव पालक सु ल पामतो ॥ प्रज ध्यावो लाल ॥ लावे घाणी समीप रे ॥ प्रण ॥ कुवचनने ते बोलतो ॥ प्रण ॥ पीलिश यंत्र तनुदीप रे ॥ प्रण ॥ १ ॥ कहे वे ते मंत्री श्वरु ॥ प्रण ॥ पालेक श्रमणने यंत्र रे ॥ प्रण ॥ घाली घाली पीलतो ॥ प्रण ॥ माठी बुद्धि अप्रयंत्र रे ॥ प्रण ॥ १ ॥ खंधक शिष्यने पीलतां ॥ प्रण ॥ देखी दाजे देह ॥ प्रण ॥ पालके खंधक निर्विहणी ॥ प्रण ॥ बांध्यो घाणिये तेह रे ॥ प्रण ॥ ३ ॥ ते साधुना उठले ॥ प्रण ॥ रुधिर केरा बिं छु रे ॥ प्रण ॥ पापने देखी अंबरे ॥ प्रण ॥ कंपे सूरज चंद रे ॥ प्रण ॥ श ॥ खंधक तो मन लेखवे ॥ प्रण ॥ ते अमृतरस बिंछ रे ॥ प्रण ॥ छःकृत देखी सुरनरा ॥ प्रण ॥ यर कंपे इंद रे ॥ प्रण ॥ ५ ॥ शातावचने शिष्यने ॥ प्रण ॥ निर्यामे शमतावंत रे ॥ प्रण ॥ कीव ते शरीरणी जिल्ल वे ॥ प्रण ॥ वे स्त्रो निहें छःख संत रे ॥ प्रण ॥ ह ॥ ए उपसर्गने पा मिया ॥ प्रण ॥ ते कृत पूरव कर्म ॥ प्रण ॥ सुल कारण ए जोगवो ॥ प्रण ॥ कोइ न करशो गर्व रे ॥ प्रण ॥ व निर्ममत्व मन जेहनां ॥ प्रण ॥ कोइ न करशो गर्व रे ॥ प्रण ॥ व निर्ममत्व मन जेहनां ॥

प्र० || निर्यामें सङ्गावंत रे || प्र० || जिम जिम पीले पापियो || प्र० || तिम तिम शमतावंत रे || प्र० || ए || जिज्ज्ञल ध्याननें ध्यावतां || प्र० || पामे केवल तुर्त्त रे || प्र० || एम ते मंत्रीयें हण्या || प्र० || मुनि द्वि जिन पंचशत्त रे || प्र० || खंधक बोले वाल ए || प्र० || देखी छु:ख न ख माय रे || प्र० || ते कारण मुज प्रथम तुं || प्र० || हण्य पढ़ी एहनी काय रे || प्र० || १० || पापी पालक सांजली || प्र० || देवाने घणुं छु:ख रे || प्र० || युक्त देखंतां शीवपणे || प्र० || पीले पालक मन सुख रे || प्र० || ११ || पेशे पालक मन सुख रे || प्र० || ११ || केवल पामी मोक्तने || प्र० || वरियो वालक शिष्य रे || प्र० || दे खी खंधक सूरिवरा || प्र० || करे न कल्पांत मुनिश रे || प्र० || ११ || || दोहा ||

॥ लिखित ज्ञाव टले निहं, चले चदी जो ध्रव ॥ कर्मरेखा व्यपि निव टले, कहे वितराग ए ध्रव ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वालक महारे वचनेन रे, न राख्यो क्षणमात्र ॥ कर्मनी जुत्रो गित रे ॥ विपरित हे किरतार ॥ कणा ए आंकणी ॥ १॥ सपरिकर मुफ शिष्यनेरे, मा खा एणें छुष्ट ॥ कणा राजा हणवो मंत्रिने रे, जिरयो कोपे कष्ट ॥ कणाशा जो ते फल मुजने हुने रे, तो दाहक करणार ॥ कण्॥ याज्यो जन मुफ आवते रे, नीयाणुं करूं रे प्यार ॥ कण्॥ ३॥ तन मृत खंधक मुनिनरा रे, हुआ अक्षिकुमार ॥ कणा बात सुणी इम चिंतने रे, पुरंदरयशा नार ॥ कण्॥ ध ॥ उघो खरड्यो रक्तथी रे, जाणी जक्तने हेत ॥ कण्॥ अंवर चडिय एध चंनथी रे, पडियो स्वसा हे जेत ॥ कण्॥ ए श की खं कारिमुं रे, राजा पाणी अजाण ॥ कण्॥ ६ ॥ वत अही परलोक साधियो रे, पुरंदरयशा देवि ॥ कण्॥ अविधेयें जाणी करी, अधिममृत्यु सचिन ॥ कण्॥ ए ॥ दं मक रा यनो देश जे, कहे प्रचंम गणधार ॥ कण्॥ (जतराध्ययने द्वितीयमें रे) एके ऊणा पांचशें रे, परिसह सहे तिहां सार ॥ कण्॥ ए॥

॥ कलस ॥

॥ वध परिसद्द क्षियें खम्या, गुरू खंधक जेम ए ॥ शिव सुख चाहो जो जंतुत्रा तव, करशो कोप न एम ए॥ संवत सप्त मुनीश्वरे, वसु चंड्र

(१९७९) वर्षे पोष ए॥मास षष्टी प्रेमरामे, क्षजविजय जग जांखए॥१॥ ॥ श्रथ वैराग्यसद्याय प्रारंजः॥

॥ एक घरे घोडा हाथिया जी, पायक संख्या न पार ॥ महोटां मंदिर मालियां जी, विश्वतणो आधार रे ॥१॥ जीवडा दीधानां फल होय ॥ ए आंकणी ॥ विण दीधे केम पामिये जी, हियडे विसासी जोय रे ॥जीणा दी ।।।। त्ररियाने सहुको जरे जी, वूठा वरसे रे मेह ।। सुखियानां सहु को सगां जी, जुः खियाशुं नहिं नेह रे॥ जी०॥ दी०॥ ३॥ वे नर साथे जनमिया जी, एवडो छंतर कांच ॥ एक माथे मूखी वहे जी, एकतणे घेर राज रे ॥ जी० ॥ दी० ॥४॥ एक सुखिया दीसे सदा जी, दुःखिया दीसे एक ॥ सुखडुःख बेंदु आंतरं जी, पुर्खतणे प्रमाण रे ॥ जीव ॥दीव ॥ए॥ सेव सुंहाखी सासणां जी, जोजन क्रूर कपूर ॥ क्रकस बाकस ढोकलां जी, ते नहिं पेटह पूर र ॥ जी० ॥ दी० ॥ ६ ॥ आंगण आगल मलपती जी, मीठा बोली रे नार ॥ एक घरे काली काबली जी, को न चढे घरबार रे ॥ जी० ॥ दी० ॥ शा एक घरे बेटा सुंदरु जी, राखे घरनां सूत्र ॥ एक नर दीसे वांकिया जी, एक कुल खंपण पुत्र रे॥ जी०॥ दी० ।। ए॥ एक चढे घोडे हांसखे जी, आगख एक उत्राय ॥ एक नर पोढे पालखी जी, एक र्जेंबांसे पाय रे ॥ जी० ॥ दी० ॥ ए ॥ पाय पटोंबां चांपता जी, पहेरण काक कमाल ॥ एकतणे निहं जेढणुं जी, पहेरवा तो निहं पोत रे ॥ जीव ॥ दी० ॥१०॥ एक बहुमां हि बोलाविये जी, चोमांहे चोसाल ॥ एक नाम नव जाणिये जी, जो जायो जगपाल रे॥ जी०॥ दी०॥११॥ पात्र कुपात्रे श्रांतरो जी, जुर्च करीय विचार ॥ शाखीन्न सुख नोगवे जी, पात्रतणे अनुसार रे ॥ जी० ॥ दी० ॥ १२ ॥ दत्त विण गर्वी ते घेहलो जो, नव त रीये परलोक ॥ जेम दी हो जल पोषियो जी, घडिमां थाये फोक रे ॥ जी ।। दी ।। १३।। राग न की जे रोष न की जे, वसी निव दी जे दोष।। जो करे वाव्या कोदस्या जी, तो केम खिणये शाखरे ॥ जीव ॥ दीव ॥ १४॥ आण न खंभे जिनतणी जी, हमके होल निशान॥ मुनि लावण्य समय त्राषे जी, प्रत्यक्त पुण्य प्रमाण रे ॥ जी० ॥ दी० ॥ १५ ॥ इति॥ ॥ अथ पांच पांकवनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ इस्तीनागपुर वर ज्ञां, तिहां राजा पागुं सार रे ॥ तस यहिणी कुंती

सती, वली माड़ी बीजी नारी रे ॥ वली माड़ी बीजी नारी रे ॥ रा पांकव पांचे वांदतां मन मोहे रे, मन मोहे मोहनवेखि ॥ त्रिजगमाहे दीपता अति सोहे ॥ ए आंकणी ॥ त्रण पांक्व जया कुंतिना, मार्जिना पांक्व दोय रे ॥ पंच सहोदर सारिखा, नलकूबर सरिखा होय रे ॥ नलकू० ॥ पां ।।।।। एक दिन थिविर पर्धारिया, पांच वांधव वांदवा जाय रे ॥ दे शना सुणि मन गहगह्या, जाइ समयं जाय हे आय रे ॥ जाइ० ॥ पां० ॥ ३॥ जिनवर चकवर्ती जे हुआ, स्थिर न रह्या कोइ देव त्रूप रे ॥तन धन सहु सुह्णां समां, संसारतुं विषमुं खरूप रे ॥ संसाव ॥ पांव ॥ धां संसार मांहे पलेवडुं, लागुं ते केम जेलाय रे ॥ जिनवर वाणी सिंचतां, आपणां जव जवनां दुःख जाय रे ॥ आण्॥ पांण्॥ ए॥ पांनव पांचे विचारियुं, आपण लेशुं संयम जार रे ॥ पुत्रने राज आपी करी, द्रौपदीशुं करे रे विचार रे ॥ औपदी ।।। पां ।। ६ ॥ औपदी वलतुं एम कहे, अमें मेलशुं संसारनो पास रे ॥ कंत विना शी कामिनी, मुक जलो नहिं घरवास रे ॥ मुऊ०॥ पां०॥ ९॥ पांचे आवी गुरुने कहे, अमें खेहशुं संयम नार रे॥ मानव जव अति दोहिलो, विल पालवो समय सार रे॥ व०॥ पां०॥ उ ॥ गुरु कहे पांक्य सुणों, तमे राजपुत्र सुकुमार रे ॥ चारित्र पंथ अति दो हिलो, तमे केम सहेशो जूपाल रे ॥ तमे० ॥ पां० ॥ ए ॥ घर घर जिका मागवी, वली हींमवुं घर घर बार रे ॥ पाय ऋणुवाणे चालवुं, विल चाल वुं खांकाधार रे ॥ विलिण ॥ पांण ॥ १० ॥ संयम मारग आदरे, क्रिष पाले निरतिचार रे ॥ दोष वेहेंतालीश टालता, साधु ले हे शुद्ध आहार रे ॥ साधुण ॥ पांण ॥ ११ ॥ तप तपे अति आकरां, मासखमण मन रंग रे ॥ जिए लिंग नेमि वांदियें, अतियह कस्बो मन चंग रे ॥ अतिण ॥ पांण ॥ ११ ॥ हस्तिनागपुर पधारिया, पारणानो दिवस ते जाण रे ॥ नगर क रतां गोचरी, सुएयुं नेमितणुं निर्वाण रे ॥ सुएयुंण ॥ पांण ॥ १३ ॥ आ हार वोहस्यो ते लेइ वख्या, आव्या निज गुरुनी पास रे ॥ गुरुने कहे अमें सांजल्युं, नेमिजी पहोता शिवपुरवास रे ॥ नेमि०॥ पां० ॥ १४॥ श्रम मनोरथ मनमां रह्या, निव पहोता गढ गिरनार रे ॥ श्राहार लेवो जुगतो नहिं, अमोने अणसण सार रे ॥ अ० ॥ पां० ॥ १५ ॥ मास खमण्तुं पारणुं, निव कीधुं मुनिवर कोय रे ॥ आहार परवव्यो कुंन

शालें, पांचे चढ्या विमलगिर सोय रे॥ पांचे ॥ पांण ॥ १६॥ तिहां ज इ अणसण अनुसखुं, पादोपगमन सार रे॥ शिला उपर संघारहो, कृषि पोढ्या जिम वृक्तमाल रे॥ कृषि ॥ पांण ॥ १९॥ दोय मासनी संलेषणा, अंते पाम्या केवल सार रे॥ पांमव पांच मुक्तें गया, तव हुवो जय जय कार रे॥ तण॥ पांण॥ १०॥ श्री हीरविजय सूरि राजियो, तपगन्न ज योतकार रे॥ कर जोडी किव नाको न्नणे, मुक आवागमण निवार रे॥ मुक्कण ॥ पांण ॥ १ए॥ इति॥

॥ अध रूपविजयजी कृत श्री यूलिजड प्रथम सञ्चाय प्रारंजः ॥
॥ आंबो मोस्यो हे आंगणे, परिमल पुह्वी न माय ॥ पासे फूली हे के
तकी, जमर रह्यो हे लुजाय ॥ आंबोण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आवो यूली
जडवालहा, लाउलदेना हो नंद ॥ तुमग्रुं मुक मन मोहियुं, जिम सायर
ने चंद ॥ आंण ॥ १ ॥ सुगुणासाथे हो प्रीतडी, दिन दिन अधिकी हो
याय ॥ बेठो रंग मजीठनो, कदीये चटक न जाय ॥ आंण ॥ ३ ॥ नेह
विहूणा के माणसा, जेहवां आवल फूल ॥ दीसंतां रखीयामणां, पण न
वि पासे हे मूख्य ॥ आंण ॥ ४ ॥ कोयलडी टहुका करे, आंबे लेके रे लुंव
॥ यूलिजड सुरतरु सरिखो, कोश्या कणयर कंव ॥ आंण ॥ ५ ॥ यूलिज
डे कोश्याने बूकवी, दीधो समिकत सार ॥ रूपविजय कहे शीलयी, ल
हिये सुख अपार ॥ आंण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अय श्री क्षत्रविजयजी कृत श्रीयृ विजय दितीय सद्याय प्रारंजः॥ ॥ श्री यृ विजय मुनिगणमां शिरदार जो, चोमासे आव्या कोश्या आगर जो॥ चित्रामण शाबीये तप जप आदस्यां जो॥ १॥ आदिर्यां वत आव्या वे अम गेह जो, सुंदरी सुंदर चंपकवरणी देह जो॥ हम तु म सिखो मेखो आ संसारमां जो॥ १॥ संसारे में जोयुं सकव खरूप जो, दर्पणनी वायामां जेवुं रूप जो॥ खप्तानी सुखडवी जूख जांगे नहीं जो॥ ३॥ ना कहेशो तो नाटक करशुं आज जो, बार वरसनी माया वे मुनिराज जो॥ ते वोडी हुं जाउं केम आशा जरी जो॥ ४॥ आशा जि रियो चेतन काब अनादि जो, जिमयो धर्मने हीण थयो परवादी जो॥ न जाणी में सुखनी करणी योगनी जो॥ ५॥ जोगी तो जंगलमां वासो विसया जो, वेश्याने मंदिरीये जोजन रिसया जो॥तुमने दीवा एवा संयम

साधता जो ॥ ६ ॥ साधुद्युं संयम इष्ठारोध विचारी जो, कुरमापुत्र थया नाणी घरवारी जो, पाणीमांहे कोरुं पंकज जाणीयें जो ॥ ७॥ जाणीये तो सघली तुमारी वात जो, मेवा मीठा रसवंता वहु जात जो, अमर न्नूपण नव नवली नातें खावता जो ॥ ७ ॥ खावता तो तुं देती आदर मान जो, काया जाणुं पतंगरंग समान जो, ठालोने शी करवी एवी शीत डी जो ॥ए॥ प्रीतखडी करता ते रंगज़र सेज जो, रमता ने देखाडंता घणुं हेत जो, रीपाणी मनावी मुक्तने सांजरे जो ॥ १०॥ सांजरे तो मुनिव्र मनडुं वाले जो, ढांको अग्नि जघाड्यो प्रजाले जो, संयममांहे ए वे दूषण मोटकुं जो ॥ ११ ॥ मोटकुं श्राव्युं तुं नंदनुं तेडुं जो, जातां न वहे कांइ तुमारुं मनडुं जो, में तुमने तिहां कोल करीने मोकह्या जो ॥ ११ ॥ मोकह्या तो मारगमांह् मिलया जो, संस्तृति श्राचारिज क्वानें विधाजो, संयम दीधुं सम्कित तेणे शीखव्युं जो ॥ रहा। शीखव्युं तो किह देखाडो श्रमने जो, धर्म करंतां पुख वडेरं तुमने जो ॥ समताने घेर श्रावी वेश्या एम वदे जो ॥ १४ ॥ वदे मुनीश्वर शंकाने परिहार जो, समिकत मूले श्रावकनां वत वार जो ॥ प्राणातिपातादिक स्थूलथी उच्चरे जो ॥ १५ ॥ उचरे तो वीत्युं वे चोमासुं जो, श्राणा सइने श्राव्या गुरुनी पासे जो ॥ श्रुतनाणी कहेवाणा चनदे पूरवी जो ॥ १६ ॥ पूरवी यइने तास्वा प्राणी योक जो, जज्ज्वस ध्यानें ते गयां देवलोक जो, कपन कहे नित्य तेने करीयें वंदना जो ॥ १७ ॥ इति ॥

॥श्रीक्तमाक ख्याण जीकृत श्रीयू बिज इत्तीय सञ्चाय प्रारच्यते ॥
॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥ श्री महावीर जिनेसर ॥ त्रिजुवन
ग्रुकी ॥ तसु श्राष्ठम पटधार ॥ श्री यू बिज इनमो ॥ १ ॥ पाम बीपुर सो
हामणुं, महिमंमणुं जी ॥ तिहां पायो श्रावतार ॥ श्री० ॥ १ ॥ नंद नारें
द मंत्रीश्वर, ग्रण श्रागर जी ॥ श्री सकमाब सुपुत्र ॥ श्री० ॥ १ ॥ बाव
खदे नंदन जाते, मुनि ग्रण निस्तो जी ॥ नागर दिज कुखदीप ॥ श्री० ॥
ध ॥ श्री संजू तिविजय ग्रह, पूरव धरु जी ॥ वत सीधां तसु पास ॥ श्री० ॥
॥ १ ॥ कोश्या वेश्या प्रतिवोधवे, सजुरु तवे जी ॥ जुकर जुकर कार ॥ श्री० ॥
॥ ॥ संयम पाढ्यो निर्मेखो, त्रिविधें जाते जी ॥ जंगम युग प्रधान ॥ श्री० ॥

॥ ण ॥ पंच मास पंच दिन सही, ऊपर कही जी ॥ वरस नवाणुं आप ॥ श्रीण ॥ ए ॥ किर आण्सण आराधना, शुजवासना जी ॥ पहोता खर्ग म कार ॥ श्रीण ॥ रण ॥ चुलसी चोवीशी लगें, जस कगमगो जी ॥ रहेशे जेनुं नाम ॥ श्रीण ॥ ११ ॥ वसु युग वसु चंद्र वत्सरे (१७१०) पामलीपुरे जी ॥ जसु पद आपना कीध ॥ श्रीण ॥ ११ ॥ वाचक अमृत धर्मनो, शुणे शुजमनो जी ॥ शिष्य कमाकल्याण ॥ श्रीण ॥ १३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्री देवचंदजी कृत अष्ट प्रवचनमातानी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुकृत कहपतस्त्रेणिनी, वर उत्तर कुरु नोमि ॥ अध्यातम रस श शिकला, श्रीजिनवाणी नौमि ॥ १ ॥ दीपचंद पाठक सुगुरु, पय वंदी श्र वदात ॥ सार श्रमणगुणनावना, माग्रुं प्रवचनमात ॥१॥ जननी पुत्र जिम गुजकरी, तिम ए पवयणमाय ॥चारित्र गुणगणवर्ष्किनी, निर्मल शिवसुल दाय ॥३॥ जाव श्रयोगी करण रुचि, मुनिवर गुप्ति धरंत ॥ यदि गुप्ति जो न रिह शके,तो समितिविचरंत ॥४॥ गुप्ति एक संवरमयी, श्रोठरंगिक परि णाम ॥ संवर निर्जरसमितिथी, श्रपवादे गुणधाम ॥५॥ इत्ये इत्यत चर णता, जावे नावचरित ॥ जावदृष्टि इत्यत किया, करतां शिव संपत्त॥६॥ श्रातमगुण प्राग्नावथी, जे साधक परिणाम ॥ समिति गुप्ति ते जिन कहे, साध्य सिद्धि शिवठाम ॥५॥ निश्चय करण इन्चि घइ,सिमित गुप्तिधर साधि ॥ परम श्रहिंसकजावथी, श्राराधे निरुपाधि ॥६॥ परम महोदय साधवा, जेह थया उजमाल ॥श्रमण जिन्हा माहण यित, गाउं तस गुणमाल ॥ ए॥ ॥ श्रथ प्रथम ईर्यासमिति सचाय प्रारंजः ॥

॥ प्रथम गोवालातणे जवं जी ॥ ए देशी ॥ प्रथम छिं सक वततणी जी, जत्तम जावना एह ॥ संवर कारण उपिदशी जी, समतारसगुण गेह ॥ मुनीश्वर, ईर्यासमिति संजार ॥ आश्वव कर तनुयोगथी जी, छष्टचपल तावार ॥मुणाईणाए आंकणी॥१॥ कायग्रित उत्सर्गनो जी, प्रथम समिति अपवाद ॥ ईर्या ते जे चालवुं जी, धिर आगमविधि वाद ॥मुणाईणाश जा न ध्यान सद्यायमें जी, स्थिर बेठा मुनिराज ॥ शाने चपलपणुं करे जी, अ नुजव रस सुखराज ॥मुणाईणाश मुनि उठे वसहीथकी जी, पामी कार ण चार ॥ जिनवंदन ग्रामांतरे जी, के आहार निहार ॥ मुण्या ईणाश ॥

परम चरण संवरधरु जी, सर्वजाण जिन दिछ ॥ शुचिसमता रुचि छप जे जी, तिणे मुनिने ए इठ ॥ मु० ॥ई०॥४॥ राग वधे स्थिरजावथी जी, इान विना परमाद ॥ वीतरागता ईइता जी, विचरे मुनि साब्हाद ॥ मु०॥ई०॥६॥ ए शरीर जवमूल हे जी, तसु पोषक छाहार ॥ जाव योगी निव हुवे जी, तां छानादि छाचार ॥ मु० ॥ई०॥७॥ कवलाहारें निहार हे जी, एह छंगव्यवहार ॥ धन्य छातनुपरमातमा जो, जिहां निश्चलता सार ॥मु०॥ई०॥०॥ परपरिणति कृत चपलता जी, केम मूकशे एह ॥ एम वि चारी कारणें जी, करे गोचरी तेह ॥मु०॥ई०॥ए॥ इत्मावंत दयालुछा जी, निःस्पृह तनुनीराग ॥ नीरविषे गजगति परें जी, विचरे मुनि महाजाग मु० ॥ई०॥१० ॥ परमानंदरस छानु जव्या जी, निजगुणरमता धीर ॥ देव चंद्र मुनि वंदतां जी, लहीयें जवजल तीर ॥ मु० ॥ ई० ॥ ११ ॥ इति ॥

# ॥ अय दितीय जापासमिति सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ नावनामालती चूशीयें ॥ ए देशी ॥ साधुजी सिमितिवीजी खादरो, वचन निर्दोप परकाश रे ॥ गुप्ति ज्ञत्मर्गनो समिति ते, मार्ग अपवाद सु विलास रे ॥ सा॰ ॥ ए आंकणी ॥ जावना बीजी महाव्रत तणी, जिन जणी सत्यता मूल रे ॥ जाव छोईसकता वधे, सर्वसंवर छानुकूल रे ॥सा० ॥ १॥ मौनधारी मुनि निव वहे, वचन जे आश्रव गेह रे ॥ आचरण ज्ञाननें ध्याननो, साधक उपदिसे तेहरे ॥ साण ॥ ३ ॥ उदित पर्याप्ति जे दचननी, ते करि श्रुत अनुसार रे॥ बोध प्राग्जाव सञ्चायथी, विल करे जगत उपकार रे ॥ साणाधा साधुनिजवीर्यथी परतणो, निव करे य हण ने त्यागरे ॥ ते जणी वचन ग्रित रहे, एह जत्सर्ग मुनिमार्ग रे ॥ साव ॥ ५॥ योग जे आश्रवपद हतो, ते कस्यो निर्जरारूप रे ॥ खोहणी कंचन मुनि करे, साधता साध्य चिड्य रे॥ सा०॥६॥ आत्महित पर हितकारेणें, आदरे पांच सचाय रे॥ ते जणी अशन वसनादिकां, आ श्रय सर्व अववाय रे ॥ साण ॥ ए ॥ जिनगुणस्तवन निज तत्वने, जोइवा करे अविरोध रे ॥ देशना जव्य प्रतिबोधवा, वायणा करण निजबोध रे ॥ साव ॥ व ॥ नय गम जंग निक्तेपथी, स्विहत स्याद्वादयुत वाणि रे॥ शोल दश चार गुणशुं मलि, कहे अनुयोग सुपहाण रे ॥ सा०॥

ए॥ सूत्र ने छार्थ छानुयोग ए, बीय नियुक्ति संजुत्त रे॥ तीय जाष्ये नयें जावियो, मुनि वदे वचन एम तंत रे॥ सा०॥ १०॥ क्वानसमुद्ध समता जस्या, संवरी दयाजंकार रे॥ तत्त्व छानंद छास्वादता, वंदियें चरणगुण धार रे॥ सा०॥ ११॥ मोह जदयें छमोही जेहवा, गुद्ध निज साध्य खीन रे॥ देवचंद तेह मुनि वंदियें, क्वान छामृतरस पीन रे॥ सा०॥

॥ अथ तृतीय एषणासमिति सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ जांजरीया मुनिवर् ॥ धन्यण ॥ ए देशी ॥ समिति तीस्री एषणा जी, पांच माहावत मूल ॥ अनाहारी उत्सर्गनो जी, ए अपवादी अमूल ॥१॥ मनमोइन मुनिवर, समिति सदा चित्त धार ॥ ए श्रांकणी ॥चेतन ता चेतन तणा जी, निव परसंगी तेह ॥ तिण परसन मुख निव करे जी, श्रातमरति वती जेह ॥ म०॥ स०॥ १॥ काययोग पुजल प्रहे जी, एह न आतम धर्म ॥ जाएंग करता लोगता जी, हुं माहरो ए मर्भ ॥ मणासण ॥३॥ अनितसंधि चलवीर्यनो जी, रोधकशक्ति अजाव॥ पण अनिसंधी जे वीर्यथी जी, केम महे परनाव ॥ मण ॥सणा धा इम परत्या गी संवरी जी, न प्रहे पुजल खंध ॥ साधक कारण राखवा जी, अशना दिक संबंध ॥मणासणाया आतमतस्य अनंतता जी, ज्ञानविना न जणा य ॥ तेह प्रगट करवा जणी जी, श्रुत सद्याय उपाय ॥मणा सण्॥६॥ तेह् देहची देहराह जी, आहारें बलवान ॥ साध्य अधूरे हेतुनें जी, केम तजे गुणवान ॥मणासणाणा तनुत्रनुयायी वीर्यनो जी, वर्तन त्रश्रान संजोग॥ वुद्ध यष्टि सम जाणिने जी, खरानादिक उपजोग् ॥ मण्॥ सणाणा ज्यां साधकता निव छाडे जी, तो न महे छाहार ॥ बाधक परिणति वारवा जी, अशनादिक उपचार ॥मणासणाए॥ सुडताखीशे प्रव्यना जी, दोष तजी नीराग ॥ असंज्ञांत मूर्छी विना जी, ज्रम परें वड जाग ॥मणासणा ॥१०॥ तत्त्वरुचि तत्त्वाश्रयी जी, तत्त्वरसीव निर्मेश्य ॥ कर्म उद्यें आहार ता जी, मुनि माने पत्नी पंथ।। मण।सण। ११॥ खाजयकी पण घन खहे जी, अतिनिर्जरा करंत ॥ पाम्ये अण्व्यापकपणे जी, निर्मेख संत महंत ॥मणासणार्थ। अणाहारता साधता जी, समता अमृतकंद ॥ जिक्क अम ण वाचेयमी जी, ते वंदे देवचंद ॥ म०॥ स०॥ १३॥ इति॥

॥ अथ चतुर्थ आदाननिषेवणसमिति सद्याय प्रारंजः॥

॥ जोलिडा इंसारे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥ समिति चोथी रे, चुजगित वारणी, जांखी श्रीजिनराज ॥ राखी परम श्रहिंसक मुनि वरे, चाखी ज्ञानसमान ॥ १॥ सहज संवेगी रे समिति परिणमें॥ ए आंक णी ॥ साधन आतमकाज ॥ आराधन ए संवर जावनो, जवजल तारण कहाज ॥ स० ॥ १ ॥ श्रजिलाषीनिज श्रातमतत्त्रना, साली करि सिद्धां त ॥ नाखी सर्व परिग्रह संगने, ध्यानाकाशी रे संत ॥ स॰ ॥ ३ ॥ संवर पंच तणी ए जावना, निरुपाधिक अप्रमाद ॥ सर्व परिग्रह त्याग असंग ता, तेहनो ए अपवाद ॥ सण ॥ ४॥ शाने मुनिवर उपकरण संग्रहे, जे परनाव विरत्त ॥ देइ श्रमोही निव खोही कदा, रत्नेत्रयी संपत्त ॥ सण ॥ ५॥ जाव श्रहिंसकता कारणजणी, झव्य श्रहिंसक साधि॥ रजो हरण मुखबस्त्रादिक धरे, वरवा योग समाधि ॥ सण ॥ ६॥ शिव सा धनतुं रे मूल ते ज्ञान हे, तेहनो हेतु सचाय ॥ ते आहारें ते विक पात्र थी, जयणायें यहेवाय ॥ स०॥ ७ ॥ वाल तरुण नर नारी जंतुने, नम्र प्रगंढा हेतु ॥ तिण चोलपट यही मुनि जपदिसे, शुद्धधर्मसंकेत ॥ स० ॥ ७॥ मंश मशक शीतादि परिषह सहे, न रहे ध्यान समाधि॥ क हपक आदिक निर्मोहिपणे, धारे मुनि निर्बाध ॥ सण ॥ ए॥ सेप असे पनदीना ज्ञाननो, कारण दंम प्रहंत ॥ दशवैका लिक न्नगवइ साखधी, तनुस्थिरताने तंत ॥ स० ॥ १० ॥ बघु सजीव सिचत्त रजादिनो, वारण डुःख संघट ॥ देखी पुंजे रे मुनिवर तेह्थी, ए पूरव मुनि वट ॥ सण्॥ ॥ ११ ॥ पुजस खंध यहण निषेवणा, ड्रव्यें जयणा तास ।। जावे आत्म परिणति नव नवी, यहतां समिति प्रकाश ॥ सण ॥ ११ ॥ बाधकजाव अद्देषपणे तजे, साधक ले गतराग् ॥ पूरव गुणरक्तक पोषकपणे, निपज ते शिवमार्ग ॥ स० ॥ १३ ॥ संयमश्रेणें रे संचरता मुनि, हरे कर्म कखंक ॥ धरता समता रस एकत्वता, तत्त्वरमणि निःशंक । । सण् ॥ १४ ॥ जग जपगारी रे तारक ज्ञव्यना, खायक पूर्णानंद ॥ देवचंद एहवा ते मुनिरा जना, वंदे पय अरविंद् ॥ स० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम पारिष्ठावणीया समिति सद्याय प्रारंजः ॥ ॥ चेतन चेतजो रे ॥ ए देशी ॥ पंचमी समिति कहि अति सुंदरु

रे, पारिष्ठावणीया नाम॥ परम ऋहिंसक धर्म वधारणी, मृष्ट करुणा परि णाम॥ मुनिवर सेवजो रे॥ समिति सदा सुखदाय, थिरताजावे संयम सो हाय, धरे निर्मल संवर याय ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ देहनेहथी चं चलता वधे रे, विकसे छुष्ट कषाय ॥ तिण तनुरागध्याने रमे जी, ज्ञानच रण सुपसाय ॥ मुण्॥ १॥ जिहां शरीर तिहां सख ऊपजे रे, तेहतणो प रिहार ॥ करे जंतु चर स्थिर अण्डूह्व्या रे, सकल छुगंबा वार ॥ मु॰ ॥ ३॥ संयम बाधक आत्मविराधना रे, आणा घातक जाणि ॥ जपाधि अ शन शिष्यादिक परठवे रे, आयति खाज पिठाण ॥ मु० ॥ ४॥ वध्या आ हारे तपीया परववे रे, निज कोवे अप्रमाद ॥ देह अराग़ी जात अव्या पता रे, धीरनो एह अपवाद ॥ मु॰ ॥ ५ ॥ संबोकादिक पूषण परहरी रे, वर्जी राग ने देष॥ आगमरीते परतवणी करे, खाघवहेतु विशेष॥ मुख ॥ ६॥ कल्पातीत आहालंदी कमी रे, जिनकल्पादि मुनीश ॥ तेहने परविषा एक मलतणी रे, तेह अद्भप विल दीस ॥ मु॰ ॥ १॥ रात्रे प्रश्र वणादिक परववे रे, विधिकृत मंगल ग्राम ॥ थिविरकहपनो प्रति अपवा द हे रे, ग्लानादिक नहिं काम ॥ मुण्॥ ज्या विल एह ड्यथी जावे रे, बाधक जे परिणाम ॥ देष निवारी मादकताविनी रे, सर्वविज्ञाव विराम ॥ मुण्।।ए॥ अंतःपरिणति तत्त्वमयी करे रे, परिहरिता परनाव ॥ डब्य सं मिति परंगन्नाव नाणी धरे रे, मुनिनो एइ खन्नाव ॥ मुण ॥ रण॥ पंच स मिति समता परिणामथी रे, क्याकोष गतरोष ॥ जावन पावन संयम साधता रे, करता गुणगण पोष ॥ मुण ॥११॥ साध्य रसी निजतत्वे तन्मया रे, उठरंगी निर्माय ॥ योगिकिया फल जाव अवंचता रे, शुचि अनुजव सुखदाय ॥ मुण्यारशा खाणाजित्युं खानाणी रसी रे, निश्चय नियह युत्त ॥ देवचंड एहवा । नर्अंथ जे रे, ते माहरुं गुरुतत्व ॥ मु० ॥ १३ ॥ इति ॥ ॥ अथ षष्ट मनोगुप्ति सञ्चाय प्रारच्यते ॥

॥ वैरागी थयो रे ॥ ए देशी ॥ मुनि मन वश करो रे॥ मन ए आश्रव गेहो ॥ समताने तो कृषि मन्नथी रे, टालो यतिवर तेहो रे ॥ मुण्॥ १ ॥ पुष्ट तुरगचित्त ते कह्युं रे, सो मोहनृपति प्रधान ॥ आरतिरुद्धतुं केत्र ए रे, रोक तुं ज्ञान निधानो रे ॥ मुण्॥ १ ॥ ग्रिप्त प्रथम ए साधुने रे, धर्म ग्रु क्वनो कंद ॥ वस्तु धर्मावेंतन रम्या रे, साध्ये पूर्णानंदो रे ॥ मुण्॥ ३॥ यो ग ते पुजल जोग हे रे, पांचे श्रजिनव कर्म॥ योगवरणा ने कंपना रे, निव ए श्रातम धर्म ॥ मुण॥॥ वीर्य चपल परसंगमी रे, एह न साधक पक्त॥ ज्ञान चरण सहकारना रे, वरतांचे मनदक रे ॥ मुण॥ ८ ॥ सिवकल्पक ग्रण साधुना रे, ध्यानीने न सुहाय ॥ निर्विकल्प श्रमुजव रसी रे, श्रात्मा नंदी थायों रे ॥ मुण॥ ६ ॥ रत्नत्रयनी जेदता रे, एह समल व्यवहार ॥ त्रिगुण वीर्य एकत्वता रे. निर्मल श्रात्माचारों रें ॥ मुण॥ ७ ॥ ग्रुक्कध्यान श्रुतलंबनी रे, ए पण साधन दाव ॥ वस्तु धर्म जहरंगमें रे, ग्रणगुणी एक सुजावों रे ॥ मुण॥ ए ॥ परसहाय ग्रणवर्त्तना रे, वस्तु धर्म न कहाय ॥ साध्यरसी तो किस बहे रे, साधु चित्त सहायों रे ॥ मुण॥ ए ॥ श्रात्मरु चि श्रात्मालयी रे, ध्याता तत्त्व श्रमंत ॥ स्याद्यादक्तानी मुनि रे, तत्त्वरम ण जपशांतों रे ॥ मुण॥ १ण॥ निव श्रपवादक्ति कदा रे, शिव रिसया श्राप्तमार ॥ शक्ति यथागम सेवतां रे, निंदे कर्म प्रचारों रे ॥ मुण॥ ११ ॥ ग्रुद्धसिद्ध निज तत्त्वता रे, पूर्णानंद समाज ॥ देवचंद्र पर साधता रे, न मिये ते मुनिराजों रे ॥ मुण॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ सहमवचनगुप्ति सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ समिति सदा ए दीखमें घरो॥ ए देशी॥ अथवा हमीरियानी देशी॥ वचनगुति सूधी घरो, वचन ते कर्स सहाय॥ सलुऐ॥ उद्याश्रित जे चेतना, निश्चे तेह अपाय॥ स०॥ वचनगुति सूधी घरो॥ १॥ ए आंक एी॥ वचन अगोचर आतमा, सिद्ध ते वचनातीत ॥ स०॥ सत्ता अस्तिस्त्रावमें, जापक जाव अनीत॥ ॥ स०॥ व०॥१॥ अनुजव रस आस्तिस्त्रावमें, जापक जाव अनीत॥ ॥ स०॥ व०॥१॥ अनुजव रस आस्वादता, करता आतम ध्यान॥ स०॥ वचन ते वाधकजाव हे, न वदे मु नि अङ्गान॥ स०॥ व०॥३॥ वचनाश्रव पलटायवा, मुनि साधे साध्याय ॥ स०॥ तेह सर्वथा गोपवो, परममहारस थाय॥ स०॥ व०॥४॥ जाषा पुजल वर्गणा, यहणा निसर्ग उपाधि॥ स०॥ करवा आतमगुण संपत्त॥ स०॥ तावत सरवे निर्जरो, आश्रव पर आयात ॥ स०॥ व०॥ ६॥ ।। स०॥ तावत सरवे निर्जरो, आश्रव पर आयात ॥ स०॥ व०॥ ६॥ । इम जाणी स्थिरसंयमी, न करे चंपलीमंथ ॥ स०॥ आत्मानंद आरा धतां, आङ्गही निर्यथ॥ स०॥ व०॥ ६॥ साध्य गुद्ध परमातमा, तसु साधन जत्सर्ग॥ स०॥ च०॥ वार जेदें तप दिविधे, सकल श्रेष्ठ व्युत्सर्ग॥ साधन जत्सर्ग ॥ स०॥ वार जेदें तप दिविधे, सकल श्रेष्ठ व्युत्सर्ग॥

संग ॥ वण ॥ ज ॥ समिकतगुणंगणे कस्यो, साध्य अयोगी जाव ॥ सण ॥ उपादानता तेहनी, ग्रितिरूप स्थिरजाव ॥ सण ॥ वण ॥ ए॥ ग्रिति रुचि ग्रिते रम्या, कारण समिति प्रपंच ॥ सण ॥ करता स्थिरता ईहता, प्रहे त त्व ग्रुणसंच ॥ सण ॥ वण ॥ १० ॥ अपवादे जत्सर्गनी, दृष्टि न चूके जेह ॥ सण ॥ प्रणमे नित्यप्रत्ये जावशुं, देवचंद मुनि तेह ॥ सण ॥ वण ॥ ११ ॥ ॥ अथाष्टम कायग्रित सद्याय प्रारंजः ॥

॥ फुलना चोसर प्रजुजीनें शिर चढे ॥ ए देशी ॥ ग्रुप्ति संजारों रे त्री जी मुनिवर, जेह्थी परम आनंदों जी ॥ मोह टलें घन घाति परगलें, प्रगटे झान अमंदों जी ॥ ग्रुप्त ॥ श ॥ करीय ग्रुप्त अग्रुप्त पवजे जे हे, तिए तिज तन व्यापारों जी ॥ चंचलजाव ते आश्रव मूल हे, जीव अच ल अविकारों जी ॥ ग्रुप्त ॥ १ ॥ इंद्रिय विषय सकलनुं द्वार ए, बंघहेतु हुढ एहों जी ॥ अजिनव कर्म यहे तनुयोगथी, तिए थिर करीयें देहों जी ॥ ग्रुप्त ॥ आतमवीर्य फुरे परसंग जे, ते कहीयें तनुयोगों जी ॥ चंतन सत्ता रे परम अयोगी हे, निर्मल स्थिर उपयोगों जी ॥ ग्रुप्त श्रीप्त महायों रे आतम भर्मनों, अचल सहज अप्रयासों जी ॥ ग्रुप्त ॥ विर्म सहायों रे आतम भर्मनों, अचल सहज अप्रयासों जी ॥ ते परनाव सहाया किम करें, मुनि वर ग्रुप्त आवासों जी ॥ ग्रुप्त ॥ संति मुक्ति युक्ति अकिंचनी, शोच बहा धर धीरों जी ॥ विषय परिसह सैन्य विदारवा, वीर परम शोंकीरों जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रुप्त शांकि आतमक्रित समुकों जी ॥ देवचंद जिन आणा पालतां, वंदूं ग्रुर्प्त ग्रुप्त जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रुप्त शांकि जी ॥ देवचंद जिन आणा पालतां, वंदूं ग्रुर्प्त ग्रुप्त जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रुप्त ।। ग्रुप्त जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रुप्त ।। ग्रुप्त विद्य जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रुप्त ।। ग्रुप्त विद्य जी ॥ ग्रुप्त ।। ग्रु

॥ अय नवम साधुस्करपवर्णन सञ्चाय प्रारंजः ॥
॥ रसीयानी देशी ॥ धर्म धुरंधर मुनिवर सुखही, नाण चरण
संपन्न ॥ सुण्ण नर ॥ इंद्रिय जोग तजी निज सुख जजी, जवचारक
जदिवन्न ॥ सुण्॥ १ ॥ द्रव्य जाव साची सरधा धरी, परिहरी शंका
दि दोष ॥ सुण्॥ १ ॥ कारण कारज साधन आदरी, धरी ध्यान संतोष ॥
सुण्॥ धण्॥ १ ॥ गुणपर्यायें वस्तु पारिस्ततां, शीख जजय जंकार ॥
सुण्॥ परिण्ति शक्ति स्वरूपमें परिण्मी, करता तसु व्यवहार ॥ सुण्॥
धण्॥ ३ ॥ स्रोक सन्नवितिगिष्ठा वारता, करता संयमवृद्धि ॥ सुण्॥

मूल उत्तरगुण सर्व संजारता, धरता आतमशुक्ति ॥ सु०॥ ध०॥ ४॥ श्रुतधारी श्रुतधर निश्रारसी, वश कस्या त्रिकजोग ॥ सु० ॥ श्रुज्यासी अनिनव श्रुतसारना, अविनाशी उपयोग ॥ सु० ॥ ४० ॥ ५ ॥ ५० नाव आश्रव मल टालता, पालता संयम सार ॥ सु० ॥ साची जैन क्रिया संजालता, गालता कर्मविकार ॥ सु० ॥ घ०॥ ६ ॥ सामायिक छा दिक गुण्श्रेणिमें, रमता चढते रे जाव ॥ सुण ॥ तीन लोकथी जिल्ल त्रि लोकमें, पूजनीय जसु पाव ॥ सुणा। घण॥ घ॥ अधिकगुणी निज तुख्य गुणीयकी, मलता ते मुनिराज ॥ सु० ॥ परम समाधिनिधि ज वजलिधना, तारण तरण जहाज ॥ सुण ॥ धण ॥ छ ॥ समिकतवंत सं यम गुण ईहता, ते घरवा समरथ ॥ सु० ॥ संवेग पक्तीजावें शोजता, क हेता साचो र अर्थ ॥ सु० ॥ ध०॥ ए ॥ आप पशंसायें न व माचता, राचता मुनि गुण्रंग ॥ सु॰ ॥ अप्रमत्त मुनि श्रुततत्व पूठवा, सेवे जासु अर्जग ॥ सु॰ ॥ ध॰ ॥ १० ॥ सद्दल्णा आगम अनुमोदता, ग्रलकर संयमचाल ॥ सु० ॥ विवहारें साची ते साचवे, आयित लान संजाल ॥ सुण् ॥ घण्॥ ११॥ पुक्ररकारीयी अधिका कहे, बृहत्कब्प व्यवहार ॥ सु०॥ उपदेशमाला जगवइ अंगने. गीतारथ अधिकार ॥ सु०॥ ध०॥ ११॥ जाव चरण स्थानक फरस्या विना, न हुवे संयमधर्म ॥ सुण ॥ ते शाने जुरु ते उच्चरे, जे जाणे प्रवचनमर्म ॥ सु० ॥ ध० ॥ १३ ॥ जस खार्जे निजसंस्मृत **यायवा, परजनरंजन काज ॥ सु०॥ ज्ञानिकया** द्रव्य त विधि साचवे, तेह नहीं मुनिराज ॥ सु० ॥ ४० ॥ १४ ॥ बाह्य दया एकांतें जपदिसे, श्रुत श्राम्नाय विर्हीन ॥ सुण ॥ वगपरें गता सूरल खोकने, वहु जमशे तेह दीन ॥ सु॰ ॥ ध॰ ॥ १५ ॥ अध्यातम परिणति साधन यही, उचित वहे आचार ॥ सुण ॥ जिन आणा अविराधक पुरुष जे, धन्य तेहनो अवतार ॥ सु<sup>0</sup> ॥ ध० ॥ १६ ॥ इव्यक्रिया नैसित्तिक हेतु है, जावधर्म लयलीन।। सु॰ ॥ नैरुपाधिक तो जे निज अंशनी, माने लाज नवीन ॥ सु० ॥ घ० ॥ १७ ॥ परिणति दोष जणी जे निंदता, क हेता परिणति धर्म ॥ सु० ॥ योगयंथना जाव प्रकाशता, तेह विदारे हो कर्म ॥ सु॰ ॥ ध॰ ॥ १० ॥ अदयिकया पण उपकारीपणे, ज्ञानी साधे हो सिक्र ॥ सुणा देवचंद्र सुविहित मुनिवृंदने, प्रणम्यां सयख समृद्धि॥१ए॥

## □ कखरा ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ते तरिया रे जाइ ते तरिया जे, जिनशासन अनुस रिया जी ॥ जेह करे सुविहित मुनि किरिया, झानामृत रस दरिया जी ॥ तेण ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विषय कषाय सहू परहरिया, जनससमता व रिया जी ॥ शीलसन्नाह्यकी पाखरिया, जनसमुद्ध जल तरिया जी ॥तेण ॥१॥ समिति गुसिशुं जे परवरिया, आत्मानंदे तरिया जी ॥ आश्रवद्वार सकल आवरियां, वर संवर संवरिया जी ॥ तेण ॥३॥ खरतर मुनि आचर णा चरिया, राज सार गुणगरिया जी ॥ झान धर्म तप ध्याने विसया, श्रु त रहस्यना रिया जी ॥ तेण ॥४॥ दीपचंद पाठक पद धरिया, विनयर यणसागरिया जी ॥ देवचंद्र मुनि गण जचरिया, कर्म श्रिरि निर्क्वारिया जी ॥ तेण ॥४॥ सुरगिरि सुंदर जिनवर मंदिर, शोजित नगर सवाई जी ॥ नवानगर चोमासुं करीने, मुनिवर गुणश्रुति गाई जी ॥ तेण ॥६॥ श्रिर हंतनो यश जगमें विचस्त्रो, विस्तरी जस संपदा ॥ निर्मंथ वंदन स्तवन करतां, परम मंगल सुख सदा ॥१॥ इत्यष्टप्रवचनमाता सञ्चाय समाप्त ॥

॥ अय श्रीजीवविजयजीकृत पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरनी सद्याय ॥ दोहा ॥ शासननायक सुखकर, वंदी वीर जिणंद ॥ पृथ्वीचंद्र मुनि गायग्रं, गुणसागर सुखकंद ॥ १ ॥ जत्तमना गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ वात घणी वैराग्यनी, सांजखजो मनरंग ॥ १ ॥ शंख कलावती जवयकी, जव एकवीश संबंध ॥ उत्तरोत्तर सुख जोगवी, एकविशमे जवें सिद्ध ॥ ३ ॥ पण एकवीशमा जवतणो, अहप कहुं अधिकार ॥ सांजल जो सन्मुख थई, आतमने हितकार ॥ ४ ॥

॥ ढाख पहेली ॥

ा कंथ तमाकू परिहरो॥ ए देशी॥ नयरी अयोध्या अति जली, राज करे हरिसिंह ॥ मेरे लाल ॥ त्रिया पद्मावती तेहने, सुख विलसे गुणगेह ॥ मे०॥१॥ चतुर सनेही सांजलो॥ ए आंकणी॥ सर्वारथथी सुर चवी, तस कूले अवतार ॥ मे०॥ रूप कला गुण आगलो, पृथ्वीचंडकुमार॥ मे०॥ च०॥ १॥ समपरिणामी मुनि समो, नीरागी निर्धार॥ मे०॥ पि ता परणावे आग्रहे, कन्या आठ उदार॥ मे०॥ च०॥ ३॥ गीत विलाप नी सम गणे, नाटक काय किलेश॥ मे०॥ आजूषण तनुजार हे, जोगने रोग गणेश ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ हुं निजतातने आप्रहें, संकट पडियो जेम ॥ मेण ॥ पण प्रतिवोधूं ए प्रिया, माता पिता पण तेम ॥ मेण॥ चा ॥ ५॥ जो सिव संयम संयहे, तो थाये उपकार ॥ मे० ॥ एम शुज ध्यानें गुण्निलो ॥ पहोतो जवन मजार ॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ नारी आवने एम कहे, सांजलो गुणनी खाण ॥ मे०॥ जोगवतां सुख जोग हे, विपाक कडुवा जाए ॥ मे॰ ॥ च॰॥ ७ ॥ किंपाकफल छति मधुर हे, खाधे हंमे प्राण ॥ मेण ॥ तिम विषयसुख जाणजो, एवी जिननी वाण ॥ मे॰ ॥ च॰॥ छ॥ अग्निनी जो तृति इंधनें, नदीयें जलिध पूराय॥ में ।।।। तो विषयसुख न्नोगथी, जीव ए तृत्तो थाय ॥ मे ।। च ।। ए ।। नव नव नमतां जीवडे, जेह आरोग्यां धान्य ॥ मे०॥ ते सिव एकछां जो करे, तो सनि गिरिनरमान ॥ मे०॥ च०॥ १०॥ निषयसुख सुरखोक में, ज्ञोगवियां इण जीद ॥ मे० ॥ तो पण तृप्तज निव ययो, काल अ संख्य अतीव ॥ मे० ॥ च० ॥ ११ ॥ चतुरा समजो सुंदरी, मूंजो मत विषयने काज ॥ मे॰ ॥ संसार अटवी ऊतरी, खिह्यें शिवपुरराज ॥ मे॰ ॥ च० ॥ १२ ॥ कुमरनी वाणी सांजली, बूकी चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ खघुकर्मा कहे साहेवा, जपाय कहो गुणखाण ॥ मे० ॥ च० ॥ १३ ॥ कुमर कदे संयम यहो, अञ्चत एह जपाय ॥ मे०॥ नारी कहे अम विसर्जो, संयमें वार न याय ॥ मे० ॥ ॥ च० ॥ १४ ॥ कुमर कहे पड़को तुमें, ह मणां निहं गुरुजोग ॥ मे० ॥ सज्जर जोगें साधशुं, संयम ढांकी जोग ॥ में ॥ च ॥ १५ ॥ मात पिता मन चिंतवे, नारीनें वश निव थाय ॥में ॥ जलटी नारी वश करी, कुमरनुंगायुं गायं॥मेणाचणा१६॥ जो हवे राजा की जियें, तो जलशे राजनें काज॥ मेण॥ नरपति एम मन चिंतवी, थापे क्रमरने राज्य ॥ मे० ॥ च० ॥ १९ ॥ पिता उपरोधें आदरे, चिंते मो हना घाट ॥ मेण ॥ पाले राज्य वैरागियो, जोतो गुरुनी वाट ॥ मेण ॥ च ।। १ ए ॥ राज्यसनायें अन्यदा, पृथ्वीचंद्र सोहंत ॥ मे ।। इए अव सर व्यवहारियो, सुधन नाम आवंत ॥ मेण ॥ चण्या १ए ॥ राजा पूर्व तेहनें, कोण कोण जोया देश ॥ मेण ॥ आश्चर्य दी वुं जे तुमें, जांको तेह विशेष ॥ मेण ॥ चण ॥१०॥ शेठ कहे सुएय साहिबा, एकविनोदनी बात ॥मेणा सांजलतां सुख जपजे, जांखुं ते अवदात ॥ मेण ॥चणा ११॥

## ॥ दोहा ॥

॥ कौतुक जोतां बहु गयो, काल अनादि अनंत ॥ पण ते कौतुक जग वहुं, सुणतां आतम शांत ॥ १ ॥ कौतुक सुणतां जे हुवे, आतमनो उप कार ॥ वक्ता श्रोता मन गहगहे, कौतुक तह उदार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ गिरि वैताढ्यनी जपरे ॥ ए देशी ॥ आव्या गजपुर नयरथी, तिहां व से व्यवहारी रे लो ॥ अहो, तिहां वसे व्यवहारी रे लो ॥ रत्नसंचय तस नाम हे, सुमंगला तस नारी रे लों॥ अहो, सुमंगला तस नारी रे लो ॥ ?॥ गुणसागर तस नंदनो, विद्यागुणनो द।रयो रे हो ॥ अ०॥ वि०॥ गो खे बेठो अन्यदा, जुवे ते सुख जरियो रे खो ॥ अ०॥ जु०॥ १॥ राजपंथे मुनि मलपतो, दीठोनें सांजरीयो रे खो ॥ छ। ॥ दी०॥ ते देखी गुज चिंतने, पूरव चरण सांजरियो रे खो ॥ अ० ॥ पू० ॥३॥ मात पिताने एम कहे, सुखीयो मुक कीजे रे खो ॥ अ० ॥ सु० ॥ संयम खेशुं हुं सही, आ का मुक दीजें रे खो ॥ अ० ॥ आ० ॥४॥ मात पिता कहे नानडा, संयमें जमायो रे को ॥ अ० ॥ सं० ॥ तो पण परणो पदमिणी, अम मन हरः खावो रे खो ॥ अ०॥ अ०॥ थ्॥ संयम खेजो ते पढी, अंतराय न कर शुं रे लो ॥ अव ॥ अंव ॥ विनयी वात अंगीकरी, पढे संयम वरशुं रे खो ॥ अ० ॥ प० ॥ ६ ॥ आठ कन्याना बापने, इम नांखे व्यवहारी रे खो ॥ अ० ॥ ६० ॥ अम सुत परणवा मात्रथी, थाहो संयमधारी रे लो ॥ अ०॥ था०॥ ७॥ इन्य सुणी मन चमकिया, वर बीजो करशुं रे खो ॥ अ०॥ व०॥ कन्या कहे मिज तातने, आ प्रव अवर न वर्शुं रे लो ॥ अ०॥ आ० ॥ ७ ॥ जे करशे ए गुण्निधि, अमो तेह आदरशुं रे लो ॥ अ०॥ अ०॥ राग वैरागी दोयमें, तस आणा शिर धरशुं रे क्षो ॥ छ०॥ त०॥ ए॥ कन्या छाठनां वचनधी, हरख्या ते व्यवहारी रे लो ॥ ऋ०॥ ह०॥ विवाह महोत्सव मांभीया, धवलमंगल बहु नारी रे लो ॥ ऋ०॥ ध०॥ १०॥ गुणसागर गिरुई हवे, वरघोडे वर सोहे रे लो ॥ ऋ०॥ व०॥ चोरीमांहे आवीया, कन्यानां मन मोहे रे लो ॥ ऋ०॥ क० ॥ ११ ॥ हाथ मेलावो हर्षशुं, साजन जन सहु मिलया रे लो ॥ ऋ०॥ सा० ॥ हवे कुमर शुज चित्तमें, धर्मध्यान सांजरियां रे

क्षो ॥ अ०॥ ४०॥ १२॥ संयम लइ सुगुरुकने, श्रुत नणशुं सुलका री रे लो ॥ अ०॥ अ०॥ समतारसमां जीलशुं, काम कषायने वारी रे खो ॥ छ ॥ का ॥ १३ ॥ गुरुविनय नित्य सेवशुं, तपं त्पशुं मनो हारी रे खो ॥ अवा । तेव बहेंतां बीश टाखशुं, माया खोज निवा री रे लो ॥ २४ ॥ मां ॥ १४ ॥ जीवितमरणें समपणुं, सम तृण मणि गणशुं रे लो ॥ छा ॥ सण ॥ संयम योगें थिर घइ, मोहरिपुनें हणशुं रे लो ॥ छ०॥ मो०॥ '१५'॥ गुणसागर गुणश्रेणीयें, घया केवल नाणी रे लो ॥ अण् ॥ यण् ॥ नारी पण मन चिंतवें, वरीयें अमें गुण खाणी रे लो ॥ अण ॥ वण ॥ १६ ॥ अमो पण संघम साध्युं, नाथ नगीना साधें रे लो ॥ अ० ॥ ना० ॥ एम थइ आठे केवली, ते सवि पियु डा हाथे रे सो ॥ अणा तेण ॥१९॥ अंबर गाजे छुंछुनि, जय जय रव कर ता रे लो ॥ अ० ॥ ज० ॥ साधुवेश ते सुरवरा, सेवाने अनुसरता रे लो ॥ अ०॥ से०॥ १०॥ गुंणसागर मुनिराजनां, मात पिता ते देखी रे खो ॥ अ० ॥ मा० ॥ गुनसंवेगें केवली, घाती चार जवेली रे लो ॥ अ०॥ घाण॥ १ए॥ नरपति आवे वांदवा, मन आश्चर्य आणी रे खो॥ अण॥ मण। शंख कलावती जनयकी, निजचरित्र वखाणी रे लो ॥ अण्॥ नि॰॥ २०॥ जव एकवीश ते सांजली, बूज्या केई प्राणी रे लो ॥ छि॰ बू॰॥ सुधन कहे सुणो साहेवा, छत्र छाव्यो नमाइ रे लो ॥ छ०॥ अ। ११ ॥ पण ते कौतुक देखवा, मनडो मुक हरखायो रे खो ॥ अ। ॥ मण्॥ केवलज्ञानी मुक कहे, शुं कौतुक उल्लासे रे लो ॥ अ०॥ शुंणा २२ ॥ एहची अधिकूं देखशो, अयोध्या नामा ग्रामे रे लो ॥अण।अंवाते निसुणी मुनिपद नमी, आव्यो इण ठामें रे लो ॥ अ०॥ आ०॥ १३॥ कौतुक तुम प्रसादथी, जोशुं सुख कामी रे लो ॥ अणा जोण ॥ एम क हीने सुधन तिहां, जनो शिर नामी रे लो ॥ अ०॥ ऊ०॥ १४॥

## ॥ दोहा॥

॥ पृथ्वीचंद्र ते सांजली, वाध्यो मन वैराग ॥ धन धन ते गुणसागह, पाम्यो जवजल ताग ॥ १॥ हुं निज तातने दाक्तिणें, पडियो राज्यमकार पण हवे नीसरशुं कदा, थाशुं कव अगगार ॥ १॥ ां ढाख त्रीज़ी ॥

ा रिसयानी देशी।। धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे, करता आतम शु क्र ॥ मुनीश्वर ॥ राजा चिंते सजुरु सेवना, करशुं निर्मक्ष बुक्रि ॥ मु० ॥ धन्।।१॥ कबहुं शम दम सुमति सेवशुं, धरशुं आतमध्यान ॥मु०॥ इस चिंतवतां अपूरव गुण चढे, श्रेणीयें शुक्कध्यान ॥ मुण ॥ घण ॥ शा ध्यानव खें सिव आवरण क्रय करी, पाम्या केवलकान ॥ मुण्॥ हर्ष धरि सोहम पति आवीया, वेश वंदे बहुमान ॥ मुण ॥ घण ॥ ३॥ सांजली मात पिता मन संज्ञमे, आव्यां पुत्रनी पास ॥ मुण्॥ ए शुं ए शुं एणि परे बोखतां, हरिसिंह हर्ष उल्लास ॥मुण। धण।।।। दियता त्राठ सुणी मन हर्षथी, उ खट छंग न माय ॥ मुण्॥ संवेग रंग तर्गमें जीवती, छाठे केवली याय ॥मुणाधणाए॥ सारथ सुधन पण मन चिंतवे, कौतुक अहुत दी ॥मुण॥ नरपति पूछे मुनिचरणे नमी, स्नेहनुं कारण जिष्ठ ॥ मुण॥ धण ॥६॥ केव खी कहे पूरव जव सांजखो, नयरी चंपा जय राय ॥ मुण॥ सुंदरी प्रियम ती नामें तेहने, कुसुमायुध सुत थाय ॥ मु० ॥ ध०॥ ७॥ दंपती संयम पाली शुजमना, विजयविमाने ते जाय ॥ मुण ॥ अनुत्तर सुख विखसी सु र ते चट्यां, थयां तुमें राषी ने राय ॥ मु० ॥ ध० ॥ ७ ॥ कुसुमायुध पण संयम सुर चवो, ययो तुम सुतत्रणे नेह ॥ मुण ॥ मात पिता पण पृथ्वीचं इनां, सुणी थयां केवली तेह ॥ सु० ॥ घ०॥ ए॥ सार्थ पूढे पृथ्वीचंड्रने, गुणसागर तुम केम ॥ मु॰ ॥ मुनि कहे पूरव जव अम नंदनो, कुसुमकेतु तस नाम ॥ मुण ॥ घण ॥ १०॥ एहिज देयिता दोयने ते जवें, संयम पा ली ते सार ॥ मु०॥ समधर्में सिव अनुत्तर ऊपन्यां, आ नीव पण यह नार ॥ मु॰ ॥ ध॰ ॥ ११ ॥ सांजली सुधन श्रावकवत लहे, बीजां पण बहु बोध ॥ मुण्॥ पृथिवी विचरे पृथ्वीचंद्रजी, सादि अनंत यया सिद्ध ॥ मुं ॥ घ ॥ १२॥ नित नित कठी हुं तस वंदन करं, जेणें जग जीत्यो रे मोह ॥ मुण ॥ बढते रंगे हो सम सुख सागर, करतो श्रेणि आरोह ॥ मुण ॥ धण्॥ १३॥ जग जपकारी हो जगहेतु वत्सलू, दीवे प्रम कल्याण ॥ मुण्॥ विरह् म पडशो हो एहवा मुनितणो, जाव सहुं निर्वाण॥ मुण॥ धा ॥ १४ ॥ मुनिवर ध्याने हो जन उत्तम पद वरे, रूपकेला गुणकान ॥ मुण। कीर्त्तिकमला हो विमला विस्तरे, जीवविजय धरे ध्यान॥ मुण।।

धण्।। १५ ॥ इति पृथ्वीचंद्र श्रने गुणसागरनी सञ्चाय संपूर्णः ॥ श्रथसीतानुंहरणकरीत्रावेखारावणनेमंदोदरीयेश्रापेखानपदेशनीसञ्चाय.

॥ सिद्धचक्रपद वंदो ॥ ए देशी ॥ सीता हरि रावण घर आणी, बोले मंदोदरी राणी। अवर सती जग एह समाणी, नव दीवी नव जाणी रे राजा, रामग्रहिणी कां आणी ॥ एम तुकमित कां मूंकाणी रे रावण, सीता कां घर छाणी।। सीता छाणे यारो फजेती, रहेरो जुग जुग वाणी रे॥रा० ॥ रामग्रहिणी कां आणी ॥१॥ ए आंकणी।।समकित शुद्ध शियल गुणला णी, सिक्समा मुखवाणी॥ सकलसती शिरमुकुट कहाणी, दोहिली ए **जुह्रवाणी रे ॥ राणासीताण ॥२॥ दशरथनंदननी एह पहराणी, माने इंड** इंडाणी ॥ खंकापति मूको जतावख, एहशुं करो महेरबानी रे ॥ रा० ॥ सीए॥ ३॥ परदाराशुं प्रीति पुराणी, करतां न रहे पाणी॥ पुर्गति आपे पह कमाणी, बोख्या केवलनाणी रे ॥ राण ॥ सीण ॥ ध ॥ शियलगुणें सुर लोक गवाणी, समरे हे सुर विमानी ॥ एह तणा ग्रण सूत्र सिद्धांतें, कहो किम एहं हराणी रे ॥ रा० ॥ सी० ॥ ५ ॥ पाप परंपर पियु शीख खाणी, राधावेध वराणी ॥ पतिव्रता व्रतरंग रंगाणी, केम तरियें नाव कहाणी रे ॥ रा० ॥ सी० ॥ ६ ॥ तुं बो पूरण पुरुषप्रमाणी, हुं तुं छ मति तोलाणी ॥ पररमणी लंपट न निर्वाणी, कीर्त्तिकमला हराणी रे ॥ रा० ॥ सी०॥ ष्र॥ कंथ कहो कुण कुमति उपाइ, सती सीता न पीठाणी॥ अथवा जे विधि लिख्य लखाणी, तेह कुण टाले प्राणी रे ॥ रा० ॥ सी० ॥ ए॥ अहोत्तर सो शोक्यो वराणी, एह कोइ निव सम जाणी ॥ एम आवे दुर्गति उजाणी, एह कोइ निव पीठाणी रे ॥ राण्॥ सीण॥ ए॥ शियल सबल गुण यंथ कहेवाणी, एह वर उत्तर वाणी।। जार्ड निज ठामें मेलाणी, भीठी साकर खांणी रे॥ रा०॥ सी०॥ र०॥ तुं हे न्यायी वि जिषण जाइ, जलनिधि खाइ जराणी॥ धर्म सखाइ या ठकुराई, कां होरे अजिमानी रे ॥ राº ॥ सीº ॥ ११ ॥ ठार जराइ ज्योति न थाइ, शुं फूंके र्जलवाणी ॥ श्रंग सकोमल रामवियोगें, पोयण जिम करमाणी रें॥ राण ॥ सीण ॥ १२॥ त्याराधो परमारथ साधो, एइ कमला ब्रह्माणी ॥ वि नयें करीने विघ्न जंखावो, जिम होय कुशल कख्याणी रे ॥ रा० ॥ सी० ॥ १३॥ रावण कंथ कहे सुण कामिनी, मुक मन एह न सुहाणी रे॥ कहे केम हारुं बख हे माहारुं, परदेख देखि मराणी रे राणी, तुं केम मनमें मुजाणी ॥ ए आंकणी ॥१४॥ सितय सीतानी निरत न जाणी, किम खा जे सुपराणी ॥ राम खक्तमण हे माहाबिखया, सब्बी गोत गोताणी रे ॥ रा० ॥ तुं० ॥ १५ ॥ रावण जीती जगत्र वदीती, सागर सहस बंधाणी ॥ रामे घर आणी धिणयाणी, विद्याचंड वखाणी रे ॥ रा० ॥ तुं० ॥ १६ ॥

॥ इसर ट्यांबा ट्यांबा हिंदी ॥ प देशी ॥ की धां कर्म निकंदवा रे, खेवा मुक्तिनुं दान ॥ हत्या पातक बूटवा रे, निहं को इतप समान ॥ जिवक जन, तप करजो मन गुरू ॥ ए ट्यांकणी ॥ १ ॥ उत्तम तपना योगथी रे, सेवे सुर नर पाय ॥ लिब्ध ट्यांविश ऊपजे रे, मनोवंदित फल याय ॥ जि ॥ तण्या तण्या तिर्थंकर पद पामियें रे, नासे सघला रोग ॥ रूपली ला सुख साहिबी रे, लिह्यें तप संयोग ॥ जण्यातण ॥ ३॥ ते गुं ने संसारमां रे, तपथी न होवे के ह ॥ जे जे मनमां कामियें रे, सफल फले सिह ते ह ॥ जि ॥ तण्या । था। व्यव्यक्त के तप टाले ततकाल ॥ व्यवसर लहीने तेहनो रे, लप करजो जजमाल ॥ जण्यातण ॥ ए॥ बाह्य व्यवसर लहीने तेहनो रे, लप करजो जजमाल ॥ जण्यातण ॥ ए॥ बाह्य व्यवसर के कहा रे, तपना बार प्रकार ॥ होजो तेहनी चालमां रे, जेम धन्नो व्यापार ॥ जण्या तण्या ६ ॥ जदयरल कहे तपथकी रे, वाधे सुजस स नूर ॥ स्वर्ग हुवे घरत्यांगणे रे, प्रगित जावे हर ॥ जण्यातण ॥ प्रणातण ॥ ॥

॥ अय श्री ज्ञानविमलकृत श्री सुंदरीनी सद्याय प्रारंजः॥

॥ पुत्र तुमारो देवकी ॥ ए देशी ॥ रूडे रूपे रे शीख सोहागण सुंदरी ॥ सुंदरी सुलित वयण रूडें, पंकजदलसम नयन रूडे ॥ ए आंकणी ॥ साठ सहस सम दिग्जय करीनें, जरत अयोध्यायें आव्या।। बार वरस जि हां चिक्रपदनें, अजिषेकें न्हवराव्या।। रूडे०।। १॥ एक दिन चकी सुंदरी दे खे, बाहुबलीनी बहेन ॥ दिनकर तेजें चंडकला जिम, रूपे कांति यह खीण ॥ रूडे० ॥ १॥ वैद्य प्रमुखा सिव तेडी कहो, किस्युं ऊण्ं तात वंश ॥ घर तेडीने तमें दाखो जोश्यें, ते हुं पुरूं सदंश।। रू०।। ३॥ ए वाहली सुंदरी किम कुशतनु, तेह निदान कही जें ॥ साठ हजार ययां एहने, आंबिखनुं तप की जें ॥ रू० ॥ ४॥ दीका लेतां तुमहि जिवारी, स्वीरयणनी ईहा ॥ तस नयथी छुईरर तप की थां, धन धन एहना दीहा ॥ रू० ॥ ४॥ एम निसु

णी कहे तात अपत्यमां, तूं हिज मुकुट समाणी ॥ विषयदशाथी एणिपेरं विरमी, मात सुनंदा जाणी ॥ रू० ॥ ७ ॥ अमें तो विषयप्रमादे निहयां, पिडयां हुं संसार ॥ नरपित उत्सव साथें ते प्रजु, हाथे क्षीये व्रतनार ॥ रू० ॥ ० ॥ युद्धें चक्री हारी मनावि, बाहुवली लिये दील ॥ वरस समें ब्राह्मी सुंदरीमें, कहेवरावे प्रजु शील ॥ रू० ॥ ए ॥ गज चट्ट्यां केवल नहोये वीरा, एम सुणी मान उतारे ॥ पष उपाडी केवल पाम्या, ए महो टा अणगार ॥ (प्रजु पासें पाउ धार) ॥ रू० ॥ १० ॥ अनुक्रमें केवल सा धी साधवी, ब्राह्मी सुंदरी जोडि ॥ ज्ञानविमल प्रजु क्षजनी वेटी, प्रण मुं हुं कर जोडि ॥ रू० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अय श्रीकानिमलजीकृत श्रीनंदासतीनी सञ्चाय प्रारंतः॥

॥ राणी चेलणा लावे गहूं ली ॥ ए देशी ॥ बेनातटनयरे वसे, व्यवहा री वड माम रे ॥ शेव धनावाह नंदिनी, नंदा गुणमणिधाम रे ॥ १ ॥ स मिकत शील त्रूषण धरो, जिस लहो अविचल लील रे ॥ सहज मले शि व सुंदरी, करिय कटाक्तकल्लोल रे ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ प्रसेन जित नर पतितणो, नंदन श्रेणिक नाम रे ॥ क्रमर पणे तिहां आवियो, ते परणी जले माम रे ॥ स० ॥ २ ॥ पंच विषय सुख जोगव, श्रेणिकशुं ते नार रे ॥ श्रंगज ताल सोहामणो, नामें श्रजयकुमार रे॥ स०॥ ३॥ श्रनुक्रमें श्रे णिक नृप थया, राजगृही पुरी केरा रे॥ अजयकुमार आवी मखा, ते संबं ध घणेरा रे ॥ सण ॥ ध ॥ चलिह बुद्धितणा धणी, राज्य धुरंधर जाणी रे ॥ पण तेणे राज्य न संब्रह्यं, निसुणी वीरनी वाणी रे ॥ स०॥ ५॥ बु क्रिवले आज्ञा यही, चेलणाने अवदात रे ॥ कहे श्रेणिक जा इहांदकी, एहनी हे घणी वात रे ॥ सण ॥ ६ ॥ नंदा माता साथशुं, लीधो संयम नार रे ॥ विजयविमानें उपन्यां, करशे एक अवतार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ श्रे णिक कोणिकने थया, वैरतणा अनुबंध रे ॥ ते सवि अनय संयम पठी, ते सवि कर्मबंध रे ॥ स० ॥ ७॥ ज्ञानविमल प्रजु वीरजी, आण धरे जे शिष्य रे ॥ ते नित्यनित्य लीला लहे, जागती जास जगीश रे ॥ सणाणा

॥ अथ श्रीजिनहर्षजिकृत राजीमतीनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ केसर वरणो हो, काढ कसुंबो ॥ माहारा खाख ॥ ए देशी ॥ कांइ रीसाणा हो, नेम नगीना ॥ माहारा खाख ॥ तुं परवारी हो, बुद्धे खीना ॥ माहारा खाख ॥ विरह विवोही हो, कजी वोडी ॥ माण ॥ प्रीति पुरा षी हो, के तें तो तोडी ॥ माण ॥ रा। सयण सनेही हो, के कखं पण राखो ॥ माण ॥ जे सुख खीणा हो, के वेह न दाखो ॥ माण ॥ नेम नहें जो हो, के निपट नीरागी ॥ माण ॥ कये अवगुणे हो, के मुफने खागी ॥ माण ॥ कां प्र आवो ॥ माण ॥ विरह बुफावो हो, के प्रेम बनावो ॥ माण ॥ कांइ बनवासी हो, के कांइ जदासी ॥ माण ॥ जोवन जासी हो, के फर न आसी ॥ माण ॥ ३ ॥ जोवन खाहो हो, के वाखम खीजें ॥ माण ॥ अंग जमाहो हो, के सफल करीजें ॥ माण ॥ हुं तो दासी हो, के आठ जवांरी ॥ माण ॥ नवमे जव पण हो, के कामणगारी ॥माण ॥ ४ ॥ राजुल दोका हो, के खिह छु:स्व वारे ॥ माण ॥ दियर रहनेमी हो, के तेहने तारे ॥ माण ॥ नेम ते पहेखां हो, के केवल पामी ॥ माण ॥ कहे जिनहर्षे हो, के मुक्तिगामी ॥ माण ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसमयसुंदरजीकृत चेलणासतीनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ वीरे वखाणी राणी चेखणा जी, सतीय शिरोमणी जाण ॥ चेडा नृप नी साते सुता जी, श्रेणिक शियल प्रमाण ॥ वीण ॥ १॥ वीर वांदीने वलतां थकां जी, चेलणायें दीठो रे निर्मंथ ॥ एकलडो वनमां रह्यो जी, साधे ते मुक्तिनो पंथ ॥ वीण ॥ १॥ शीत ठरे रे सबली पढे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारित्रीयो रे चित्तमां वस्यो जी, सोड बाहिर रह्यो हाथ ॥ वीण ॥ ३ ॥ जबक जागी रे कहे चेलणा जी, केम करतो हसे तेह ॥ कुसतीने मन शुं वस्युं जी, श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वीण ॥ ४ ॥ अंते ठर परजालजो जी, श्रेणिक दियो रे आदेश ॥ जगवंते संदेह जांगियो जी, चमकियो चित्त नरेश ॥ वीण ॥ ४ ॥ तातनुं वचन पाह्युं तिहां जी, वत लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामी ते जवतणो पार ॥ वीण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अय श्री मोहन्दिनजयजीकृत रुक्मणिजीनी सञ्चाय प्रारंतः ॥
॥ आवे खाखनी देशी ॥ कहे सीमंधर खामि, नारदप्रतें तिण वाम ॥
आवे खाख ॥ सांज्ञखं तुजनें कहुं ॥ १ ॥ पूरवजव हरिनार, ब्राह्मणी
घर अवतार ॥ आ० ॥ रूपकेखा गुण्डरही ॥ १ ॥ अमरीने अनुहार,
अजिनव रित अवतार ॥ आ० ॥ हतां सुंदर सुंदरी ॥ ३ ॥ चाले पित

आज्ञाय, रहिणी ते कहेवाय ॥ आ० ॥ पियुमन महियुं पाणिमां ॥ ४ ॥ जोखी टोली संग, गत वन धरिय उमंग ॥ श्राव ॥ कोइ कामिनी जली मली ॥ य ॥ रमे रामा करि होड, लेवे फुदरडी दोड ॥व्याण। केई घुमरी घाखती ॥ ६॥ गावे मधुरां गीत, सुणतां उपजे प्रीत ॥ व्याण ॥ नारी नीकाचित नाचती ॥ ९ ॥ न धरे कुणनी बीक, पिंयु पण नहीं नजीक ॥ श्रां ।। मयगल ज्युं मद्य पीधलो ॥ ७ ॥ थाकी सघली नार, ब्राह्मणी पण तिण वार ॥ आण ॥ जइ वेठी तरु हेठले ॥ ए ॥ मोरडीये तिण ठाह, मूक्यां धरीने जमाह ॥ आ०॥ इंमां सुंदर तरुहेठले ॥ १०॥ मा णसं सण सणं जाणं, मूकण लागी ठाण ॥ त्राण ॥ त्रय धरी जमी मोर डी ॥ ११ ॥ कौतुक देखंए काज, ब्राह्मणी सुणीने श्राद्ध ॥ त्राण ॥ इंमां दीठां जाइने ॥११॥ कुंकरम खरडे हाथ, इंनां खीधां साथ ॥श्राण श्ररूण वरण इंनां थयां ॥ १३॥ मूक्यां तिणहिज ठाव, मनमें धरी जमाह ॥ ॥ आ०॥ फरी पाढी आवी प्रहे ॥ १४ ॥ मोरडी इंमां पास, आवी यह जदास ॥ आ०॥ अरुण निरखी निव संप्रद्यां ॥ १५ ॥ देखि करेय पो कार, नयणें आंसु धार ॥ आण ॥ फुःख धरती वनमोरडी ॥ १६ ॥ सोख घडी पर्यंत, ञ्राकसी हुइ ञ्रत्यंत ॥ ञ्राण्॥ पंखीनो शो ञ्राशरो ॥ १७॥ तिए अवसर घनघाट, गाजे करी गडेडाट ॥ आण् ॥ काजल सरसी कं वला ॥ १० ॥ वरसे जलधर जोर, जरीयां सरनदी वोर ॥ ऋाण ॥ ऊंने जवकती वीजली ॥१ए॥ जल वहे ठामो ठाम, मोरडी इंमां ताम ॥ श्राणा जलथी धोवाइ उज्ज्वल हुवां ॥ २० ॥ उज्ज्वल देखीने तेह, हियडे दर्ष समेत ॥ आण्॥ इंकां पाढां आदस्यां ॥ २१ ॥ ब्राह्मण नारी जेह, हरिए हिणीं हुइ तेह ॥ आण ॥ पूरव कर्मवशें करी ॥ ११ ॥ पामी पुत्र विबोह, जपन्यों चित्त अंदोह ॥ आण ॥ शोल वरस लगें एहने ॥ १३ ॥ घडी एक वरस विचार, जाणी विरहनी ठार ॥ आण् ॥ वियोगपणे डुःख होये घ णुं॥ १४॥ जली जिननी वाणी, संयम लेइ केइ जाणि ॥ आण्॥ सम कितधारी केई थया ॥ १५ ॥ निसुणी नारद ताम, जिनने करिय प्रणाम ॥ त्राव ॥ मोहनवचनें संयुएयो ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसद्भीस्रित् रोहिणीजीनी सद्याय प्रारंजः॥
॥ जरतनृप जावशुं ए॥ ए देशी॥ श्री वासुपूज्य जिणंदना ए, मघ

वा सुत मनोहार ॥ जयो तष रोहिणी ए ॥ रोहिणी नामें तस सुता ए, श्रीदेवी मात मलार ॥ ज० ॥ करे तस धन अवतार ॥ ज० ॥ १ ॥ पद्म प्रजुना वयण्यी ए, दुर्गंधा राजकुमार ॥ जणा रोहिणी तप थाते जवे ए, सुजस सुगंधी विस्तार ॥ ज० ॥ क० ॥ २ ॥ नरदेव सुरपद जोगवी ए, ते थयो अशोक नरिंद ॥ जणा रोहिणी राणी तेहनी ए, दोयने तप सुख कंद ॥जणाकणा ३॥ प्रतिगंधा कामिनी ए, गुरु उपदेश सुर्वत ॥ जणा रोहिणीतप करि डुःख हरी ए, रोहिणी जन सुखनंत ॥ जणाकणाधा प्र थम पारणदिन क्षत्रनो ए, रोहिणी नक्षत्र वास ॥जणाडुविधें करि तप उचरो ए, सात वरस सात मास ॥ जo ॥कo ॥ ५ ॥ करो उजमणुं पूरण तये ए, अशोक तरु तस ग्राय ॥ जिए ॥ बिंब रयण वासुपूज्यनुं ए, अ शोक रोहिणि समुदाय ॥ जण्॥ कण्॥ ६॥ एकसोएक मोदक जला ए, रूपा नाणां समेत ॥ ज०॥ सात सत्याविश की जिये ए, वेश संघ जिक हेत ॥जणीकणाण। आठ पुत्र चारे सुता ए, रोग सोग निव दीठ ॥ जणा प्रज हाथे संयम बह्यं ए, दंपती केवल दीठ॥ जनाकनान। कांति रोहि णीपति जिसी ए, रोहिणीसुत सम रूप ॥ ज०॥ ए तप सुख संपद दिये ए, विजयलक्षी सूरी जूप ॥ जण् ॥ कण ॥ ए॥ इति रोहिणी सद्याय ॥

॥ अथ श्रीक्षानिवमत्नजीकृत कीराख्याजीनी सञ्चाय प्रारंतः॥
॥ जामिनीने जरतार मनावे ॥ ए देशी॥ दशरथ नृप कीशख्याने कहे,
तुं जामिनी किम छह्षाणी ॥ के आ जोने र ॥ तुं जा० ॥ प्राण्यकी अ
धिकी ठो वाहाली, राममाता गुण लाणी ॥ के आ० ॥ राम० ॥ के ना
जो के निहं जो के, शानें के शा माटे ॥ मारे वाहाला निहं बोलुं तुम्ह
साथें रे, तुमशुं अबोलडा लीधा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गलापासे र ।णी
ना गलाथी, ठोडवे आपणे हाथे ॥ के आ० ॥ साहामुं जोई छ स कहे
मुजने, एम कहे प्रहि बाथें ॥ के आ० ॥ के ना जो० ॥१ ॥ अठ तर विध
सात्र कराव्यां, मंत्र न्हवणनां पाणी ॥ के आ० ॥ अम्ह विण ते सघले मो
कलाव्यां, सारें प्रीति तुद्धारी जाणी ॥ के आ० ॥ के ना० ॥ ३ ॥ पति
सुतवंती जे कुलवंती, ते सिव सरखे दावें ॥ के आ० ॥ के ना० ॥ ४ ॥ कहे
दशरथ नृप स्नात्र तणुं जल, मोकलीयुं ठे पहेलां ॥ के आ० ॥ करकंक

णने शो खारीसों, क्या बोलो हो घहेलां ॥ के खाण ॥ के नाण ॥ ५ ॥ प्रेमकल करतां एक खावी, जल लेइ दासी जरती ॥ के खाण ॥ तुरत खागमन निव खयुं जराथी, एम ख़बस्था करती ॥ के खाण ॥ के नाण ॥ ६ ॥ इण निमिन्तं ज्ञवसंवेग खाठ्यों, देह ख़िथरता जाणो ॥ के खाण ॥ दंपती दोय मल्यं रसरंगें, लिये संयम नृपने राणी ॥ के खाण ॥ ७ ॥ के होवे जिहां रे वाहला, हवे वोलं तुम्ह साथ रे ॥ ए खांकणी ॥ इम संबंध हे पद्मचरित्रे, रामनें राजनी वेली ॥ के खाण ॥ इानविमल गुरुथी ते लहां, कहां जिहां ने लिला ॥ के खाण ॥ के होवेण ॥ छ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसकलचंदजी कृत देवानंदाजीनी सद्याय ॥

॥ राग काफी ॥ जिनवररूप देखी मन हरखी, स्तनमें प्रूध जराया ॥ तव गौतमकूं नया अचंत्रा, प्रश्न करनकूं आया ॥ १ ॥ गौतम एतो मेरी अम्मा॥ तस कूखें तुम काहुं न विसया, कवण कियां इण कम्मा ॥ गौ०॥ १॥ त्रिसंबादे देराणी हूती, देवानंदा जेगाणी ॥ विषयंबो ज करी कांइ न जाणो, कपटवात सन आणी ॥ गौ०॥ ३॥ एसा शाप दिया देरानी, तुम संतान न होजो ॥ कर्म आगल कोयनुं निव चाले, इंद्र चऋवर्ती जोजो ॥ गौ० ॥ ४॥ देराणीकी रत्नमाबली, बहुलां रत्न चुरायां ॥ जगडो करतां न्याय तव हूर्न, तब कब नाणां पायां ॥ गौ० ॥ थ॥ जरतराय जब क्षज़ने पूछे, एहमां कोइ जिएंद्रा ॥ मस्त्रि पुत्र त्रिदंमी तेरी, चोवीसमो जिएंदा ॥ गौ०॥६॥ कुलनो गर्व कियो में गौतम, जरतराय जब वंद्या ॥ मन वचन कायायें करीने, हर्ख्यो अति आणंदा ॥ गो०॥ १॥ कर्मसंयोगे जिक्ककुल पाम्या, जन मन होवे कबहु ॥ इंडअवधें जोतां अपहस्त्रो, देव दुजंगम वांहे ॥ गौ० ॥ ० ॥ त्रासी दिन तिहांकणे विसया, हरणगमेषी जव आया॥ सिद्धारथ त्रिश खादे राष्ट्री, तस कूखें ढटकाया ॥ गी० ॥ ए ॥ श्रष्ट्रजदत्त ने देवानंदा, लेशे संयम जारा ॥ तव गौतम ए मुक्तें जाशे, जगवती सूत्र विचारा ॥ गौण॥ १ण॥ सिद्धारय त्रिशलादे राणी, अच्युत देवलोके जाशे॥ बीजे खंधे खाचारंगें, ते सूत्रें कहेवाशे ॥ गौष् ॥ ११ ॥ तपगन्न श्रीहीरविजय सूरि, दियो मनोरय वाणी ॥ सकखचंद प्रजु गौतम पूछे, जलट मन मां आणी ॥ गौण ॥ १२,॥ इति ॥

॥ अय श्रीअविचलः ीकृत नागेश्वरी ब्राह्मणीनी सदाय॥ ॥ ढाख पहेली ॥ चंपानगरी वखाणियें रे खाख, जरतक्षेत्र मजार हो ॥ जावकजन ॥ सोमस ब्राह्मण तिहां वसे रे खास, नागेश्वरी घरनास्य हो ॥ जविण्॥ १॥ साधुने वहोराव्युं कडवुं तुंबडुं रे खाख, कीधो न मन्न वि चार हो॥ जण॥ तिणकाले ने तिण अवसरे रे लास, धर्मघोष अणगार हो ॥ जण्॥ साण्॥ श। तेहनो शिष्य अति दीपतो रे लाल, धर्मरुचि मु निराय हो ॥ त्रण ॥ मास मास तप आदरे रे खाल, रहे गुरांकी लार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥३॥ मासलमणके पारणे रे लाल, लेइ गुरुनी आण हो ॥ त्रण ॥ नागेश्वरी घर छाविया रे खाल, दीयो घणो सन्मान हो ॥ त्रण ॥ सा० ॥४॥ तेतो घरमांहि जाइने रे खाख, हरष्शुं खाये उठाय हो ॥ जणा कडुवा तूंबारो सालणो रे लाल, सब दीधो वहोराय हो ॥ जा ॥ सा०॥ य ॥ आहार पूरो जाणी करी रे खाल, आव्या ग्ररांजी रे पास हो ॥तण ॥ पहवो आहार वत्स मत करो रे लाल, होशे जीवविनाश हो ॥ ज०॥ सा० ॥ ६ ॥ आहार खेइ मुनि चालिया रे खाल, गया वनह मजार हो ॥ जि ॥ एक बुंद तिहां परठव्यो रे खाल, हुवो जीव संहार हो ॥ जि ॥ सा<sup>0</sup> ॥ ७ ॥ एकविंडुने नाखवे रे खाख, हुवो जीवनो विनाश हो ॥ज०॥ जीवदया मन चिंतवी रे खाख, कियो सघलो आहार रे ॥ जण ॥ साण॥ o || एक मुहूरतके आंतरे रे खाख, परिणम्यो आहार असार हो ॥ जo ॥ श्रतुल वेदना ऊपनी रे खाल, तुंबा तणे प्रसाद हो ॥ ज०॥ सा० ॥ ए॥ संयारा गाया पढि करी रे खाल, त्याग्यो सकल आहार हो ॥ जा ॥ पाप अदार पचकी करी रे खाख, काख कियो तिए बार हो ॥ न्न ण। साव ॥ १० ॥ साधु श्राणी मन नावना रे खाल, गया श्रनुत्तर विमान हो ॥ जि ॥ माहाविदेहमांहे जनमशे रे खाल, पामशे केवल क्वान हो ॥ त्रण ॥ साण ॥ ११ ॥ वाह्मण सुणि करी कोपियो रे लाल, नागेश्वरीने दीधी काढ हो ॥ ज० ॥ सोख जातिना रोग उपन्या रे खाख, वेदना पीडी अपार हो ॥ जा ॥ सा ॥ ११ ॥ साते नरकमें जाइ क री रे खाख, रुखी असंख्यातो काल हो ॥ जण्॥ जुःख अनंतां पामियां रे खाख, कर्मतणां फख जाण हो ॥ जण्॥ साण॥ १३॥ शेवतणे घरे अ वतरी रे खाख, चंपानगरी मंकार हो ॥ तः॥ सुखमाखिका नामें जखी

रे साल, रूपें रंत्रा अवतार हो ॥ जण्॥ साण्॥ १४ ॥ रोठकुंवरी परणा वियां रे खाख, कुंवर श्रति सुकुमार रे ॥ न ॥ ततकाखें बोडी गयो रे खाल, लागी श्रमिनी काल हो ॥ जण्॥ साण्॥ १५॥ शेयजी शेवघर श्राविया रे खाख, उंखंत्रो दियो तिए वार हो ॥ तण ॥ विए श्रवगुण कांइ परहरी रे खाख, तुम मन कोण विचार हो ॥ त्रण ॥ साण ॥ १६॥ शेव पुत्रने एम कहे रे खाख, तें कीधुं कांइक पुत्त हो ॥ तण ॥ पाढा जा वो रे इणरे घरे रे लाल, राखो शेठ घर सुत्त हो ॥ त्रण॥ साण॥ १९॥ पुत्र कहे पिता सुणो रे खाख, कहो तो बूकुं जखमांय हो ॥ जण् ॥ कहो तो श्रिमां वसी महं रे सास, कहो तो पर्ड रूंख चाढ हो ॥ न ॥ सा० ॥ १७ ॥ कहो तो छुंगरशुं पडी मरुं रे खाख, कहो तो हुं विष खाउं हो ॥ जण।। कहो तो फांसी खेई सरुं रे खाख, कहो तो परदेशे जाउं हो।। ना ।। सा ।। १ए।। कहो तो शस्त्र पहेरी मरु रे खाख, कहो तो खहुं संयमजार ॥ हो ॥ जण् ॥ तातवचन खोषुं नहिं रे खाख, पण नहिं वंद्धं ए नार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ २० ॥ शेव सुणी घरे आविया रे लाल, कुंबरी पर वहु कोड हो ॥ जिल् ॥ जिल् पुरुष अणावियो रे लाल, सो वि गयो तेने ठोड हो ॥ ज०॥ सा०॥ ११॥ कुमरी मन चिंता थइ रे खाल, कां सरजाई किरतार हो ॥ जण्॥ कीथां पाप में अति घणां रे लाल, उदे हुवां इण वार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ ११ ॥ दान देवा तिहां मां ियां रे लाल, दिन दिन पर ते प्रजात हो ॥ जण्॥ गोवालिका साधवी पधा रियां रे लाल, पूठे वे मननी वात हो ॥ जण्॥ साण॥ १३॥ कर जोडी विनति करे रे लाल, मुजशुं करो उपकार हो ॥ त ॥ मुज जरतार वांबे नहिं रे लाल, कोइ करो जपगार हो ॥ जण ॥ साण ॥ १४॥ एह वचन ति हां सांजली रे लाल, सा कहे धर्म उपदेश हो॥ तण ॥ धर्म सुणाव्यो मोट को रे लाल, जेथी पावे सुल अनंत हो ॥ जा ॥ सा ॥ १५॥ धर्मकथा हे तशुं सांजली रे लाल, श्रावकनां वर्त बार हो ॥ जण्॥ ए धर्म मुफ ता रशे रे खाल, ए संसार असार हो ॥ न०॥ सा०॥ १६॥ आज्ञा लेइ पिता तणी रे लाल, लीधो संयमजार हो ॥ जा ॥ चार माहावत उच स्वां रे लाल, रहे गुरुणीकी लार हो ॥ जण् ॥ साण ॥ २७ ॥ कर जोडी विनति करे रे लाल, यो मुक्तने छादेश हो॥ ज०॥ वनमांही काउस्स

गग करं रे लाल, लेशुं आतापना तेथ हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ २० ॥ गुरुणी वचन लोपी करी रे लाल, गई बाग मजार हो ॥ ज० ॥ ठ० ठ० तप का जस्सग्ग करे रे लाल, दीठी ठे गणिका लार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ २० ॥ गणिका देखी नीबाणुं करी रे लाल, पांचे पुरुषनी नास्त्र हो ॥ ज० ॥ अध्यसासनी संलेषना करी रे लाल, छुजे सरग अवतार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ ३० ॥ नव पल आउखुं जोगवी रे लाल, देवा गणिका नार हो ॥ ज० ॥ इपदराजा घरे अवतरी रे लाल, चूलणी कूले डोपदी नार हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ ३१ ॥ पांच पांमव घरे जारया रे लाल, हुई अति सुजाण हो ॥ ज० ॥ संयम लेइ खों गई रे लाल, पले जाशे निर्वाण हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ ३१ ॥ माहाविदेहमांहे सिद्धशे रे लाल, पामशे केवलकान हो ॥ ज० ॥ सा० ॥ ३३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीहंसञ्जवनजीकृत निश्चयव्यवहारनी संद्याय प्रारंजः॥ ॥ देशी एकवीशानी ॥ ढाख ॥ श्री जिनवर रे, देशना दिये सोहाम णी ॥ ज्ञवियणने रे, ज्ञवसायर कतारणी ॥ तेइ जिनवर रे, विनयजावे हित धरी ॥ निश्चय नय रे, व्यवहारथी अधिको गणी ॥ श्रुटक ॥ व्यवहा रथी नय अधिको जाणो, हवे आणो मन वली ॥ एहिवेष हूं ते कोय न वंदे, जो थयो होय केवली। ठयवहार अधिको वीर जांखे, धर्मे दाखे जी वने ॥ अन्याय करतां जगतिनेता, वारे छुर्जय स्रोकने ॥ १ ॥ ढाल ॥ जुर्ज मुनिवर रे, खप करतो निव जाणीयो ॥ आधाकमी रे, आहार असूजतो आणीयो ॥ तेइ केवली रे, आहार आखो ते जमे ॥ मुनि आगंख रे, दो ष प्रकाशे निव किसे ॥ हुए ॥ निव दोष जांखे साधु आगल, सूत्र ऊपर मित टले ॥ व्यवहार राखे त्रागम पांखे, साधु मारगथी चले ॥ खटमा स कूर्मापुत्र रहिया, गृहस्थवेषे केवली ॥ यतिवेष पामी अवनीमांहे, नमे सुरराजा वली ॥ १॥ ढाल ॥ जरतेसर रे, खारीसामांहे जोवतां ॥ निज काया रे, अनियत जावना जावतां ॥ क्षपकश्रेणें रे, चार कर्म चूरण करी ॥ शुज्रध्याने रे, केवलल्ली तंव वरी ॥ त्रुण्॥ तव वरी केवलल्ली राजा, इंद्र चोस्त आव ए॥ मनमां आएंदे कोय न वंदे, जामे वेष न पाव ए॥ मुनिवेष पहेरी जाम विचरे, ताम वंदे सुरवरा॥ जपदेशमाला वृत्तिमांहे

एसा दीसे श्रक्ता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ तप करतो रे, प्रसनचंद्र क्षिराज रे ॥ बेष देखी रे, साध्यां उत्तमकाज रे ॥ सोनी घर रे, मेतारज वहोरण गयो ॥ कृपि देखीरे, सोनार मन आनंद जयो ॥ हु०॥ श्रानंद जङ्खा, सार श्राहार वहोराव ए।। तव जव न पासें मन विमासे, साधुने परिताप ए ॥ परखोक पहोतो साधु देखी, ताम वेष अंगी करे ॥ क्षि घातकारी अनाचारी, देषथी जीवित घरे ॥ ४॥ ढाल ॥ वेष वंदो रे, निंदो मां मूरखपणे ।। वेष राखे रे, धर्मयतिनो जिन जणे ॥ यहीहंतो रे, साधु समान किया करे।। व्यवहारें रे, साधुपणुं को निव कहे।। हु० ॥ निव कहे साधुपणुं ग्रहीने, प्रवचननी साखे करी॥ राजिंप सेलंग थयो उसन्नो, शिष्य गया सवि परहरी ॥ साधुपंथग करे वेयावच, चोमासी खामण करे ॥ शिष्यवचने सेलंग विषयो, शत्रुंजे ष्यणसण उच्चरे ॥ ५ ॥ ढाल ॥ प्रतिमामांहे रे, तीर्थंकरना गुण नथी ॥ जिनप्रतिमा रे, सद्दिये धर्म सारथी ॥ तेम मुनिना रे. पूरा ग्रेण निव पामियें ॥ प्रतिमापरे रे, वे प देखी शिर नामियें ॥ त्रु॰ ॥ प्रतिमा परे वेप देखी, हिये हरखी वांदवा ॥ श्रावक समकित स्थिरीकारण, गुण साधु तिहां जाववा ॥ साधुसेव क रतो राग धरतो, कर्मनी करे निर्ज्जरा ॥ श्री जडवाहु ग्ररु प्यंपे, त्यावस्य कमांहे अक्रा ॥ ६ ॥ ढाल ॥ ग्रुरु पाखें रे दीक्वा दीधी निव हुवे ॥ ग्रुरु सेवा रे, करतां सूत्र पूरो बहे ॥ मुनि आगल रे, वीर प्रकासे मन रुखि ॥ सुणि गौतम रे, संबंध असुचा केवली ॥ तुण ॥ संबंध असुचा केवलीनो, वीर जांखे एशी परें ॥ अणसांजली जे केवल पाम्यो, तेणें देशन निव करे ॥ शिष्यने ते दीक न दिये, कमलं न रुचे सुरवरा ॥ व्यवहारे तेहनें कांइ न हुवे, जगवतीमांहे अक्रा ॥ ७ ॥ ढाख ॥ मुक्ताफल रे, गुणें करी शोजा लहे ॥ संयमस्थानक रे, संख्यातीता जिन कहे ॥ ज्ञानें पूरो रे, आचारे पूरो नहिं॥ एवा मुनिने रे, पंक्ति को निंदे नहिं॥ त्रुण ॥ निंदे नाहें रुपिवेष देखी, मुनिविना शासन नथी।। एकवीश सहस्र वर्ष सी मा, चाख्यो धर्म वकूशथी ॥ तिऊांतना ए जाव दोहिला, केवली विण न वि बहे ॥ श्रीहंसज्जवन सूरिंद बोखे, वीतराग एणिपरें कहे ॥ ७॥ इति ॥ ॥ श्रथ श्री श्रीसारजीकृत स्वाद्वादनी सञ्चाय प्रारंजः ॥

॥ श्राराधो श्ररनाथ श्रहोनिशं॥ ए देशी ॥ स्याद्वादमत श्री जिनवर

नो, ते केम कहियें एकांत जी ॥ मत एकांत कहे मिथ्यात्वी, साखी स कल सिद्धांत जी ॥ स्याण ॥ १ ॥ त्रियारूप तिहां न रहे मुनिवर, शोलमे उत्तराध्ययने विचार जी ॥ साधु साधवी वसे एकठां, श्रीठाणंगें पांच प्र कार जी ॥ स्या ।। १ ॥ जीव असंख्य कह्या जल टबके, पन्नवणासूत्र जि नराज जी ॥ कल्पसूत्रमांहे नित्य नदीने, खंघे मुनिवर वहोरण काज जी ॥ स्याण ॥ ३ ॥ श्रीठांणांगे चोथे ठाणे, मांस आहारी नरकें जाय जी ॥ मद्य मांस मधु पण आचरणो, आचारांगे कह्यो जिनराय जी ॥ स्याण ॥ ४॥ पंचम अंगे न करे श्रावक, त्रिविध पन्नरह कर्मादान जी॥ इस नि वाहतणा पण दीसे, सप्तम अंगें कियां परमाण जी ॥ स्याण ॥ ए॥ हिंसा न करे त्रिविधें मुनिवर, पंचमे अंगें जुवो धीर जी ॥ जिनवर तेजोलेखा जपरि, शीतलेश्या मूकी वीर जी ॥ स्याण ॥ ६ ॥ महावेदना हाथ लगा यां, वनस्पतिने याये छंग जो ॥ पडतो मुनिवर तेहज पकडे, एह छर्थ हे आचारांग जी ॥ स्याव ॥ ५॥ उत्तराध्ययने जांख्यो सुनिवर, समय मा त्र न करे प्रमाद जी ॥ दशवैका सिक त्रीजी पोरिसी, निंदतणी की धी म रजाद जी ॥ स्याण्॥ ए॥ ऋंधनाणी, पण ऋंध न क़हेवो, दशवैकालिक ए विधिवाद जी ॥ ज्ञाताळंगें जित्य नांख्या, नागश्रीना अवरणवाद जी ।। स्याण ।। ए ।। सूत्रें देव अविरति बोखा, हवे पांचम ठाणे मनरंग जी ॥ ब्रह्मचरिज तप खति उत्कृष्टो, देवनणी बोख्यो ठाणांग जी ॥ स्याणारणा सूत्र निव घटे प्रकरण विघटे, प्रश्न पूछीजें तेहने एह जी ॥क्रषण बाहुबंख शिवपुर पहोता, एकण दिन जांज्यो संदेह जी ॥ स्याण्॥ ११ ॥ सात ज णाशुं मल्ली दीका, सातम गणे श्रीगणांग जी ॥ वहे श्रंगें सात सयाशुं, कोण खोटो कोण साचो छंग जी ॥ स्याण्॥ ११॥ नारी सहस बत्तीसें **इाता, सुगडांग सोख हजार जी ॥किसनतणी अंतेजर जांकी, किम मेली** जें एह प्रकार जी ॥ स्या० ॥ १३ ॥ कुलघर पनरे जंबुपन्नत्ति, समवायांगे कुलघर सात जी ॥ हिर बारमा जिन आठमे अंगें, तेरमे चोथे अंग क हात जी ॥ स्याण ॥१४॥ चारित्र विराधी ज्युं पांचमें खंगें, जवनपतिमांहे सुर थाय जी ॥ तो सुखमालिका ठठे छंगें, किम पूजे देवलोक कहाय जी ॥ स्याण ॥ १५ ॥ सूत्र टीका निर्युक्ति वखाणो, चूर्णि जाष्य ए मेखो पंच जी॥ पंच कहे तो ते मत साचो, तिए अर्थे म करो खल खंच जी॥स्याण

॥१६॥ जीवा जिगमें असंघयणी, जांख्या नारकी श्रीजगवंत जी॥ उंगणीश में श्रीजत्तराध्ययनें, मांसपिंन बोख्या सिद्धांत जी ॥ स्याणारणा विण व्याकर णें अर्थ करे जे, अर्थ निहं पण अनरथ जाण जी॥ जांजे नावें नदी केम तिर यें, दशमें अंगे कह्यों जिनजाण जी॥ स्याणारणाश्री जिनजतिमानुं वयाव हा, करें कर्म निर्जरा कार्जे जी॥ दशमें अंगें साधु जणी ए, अर्थ विचार कह्या जिन राजें जी ॥ स्याणा १ए ॥ हेय गेय जपादेय वखाख्यों, तिम जत्मर्ग अने अप वाद जी॥ विधिचरितानुवादनयसंस्थित, निश्चयनय व्यवहार मर्जाद जी ॥ स्याणाश्णा अनेकांत नयवादी जिनवर, आगममां हि वद्या दश बोल जी कहे श्रीसार समजि के परिखो, श्री सिद्धांत रतन बहु मोल जी॥ स्याणाश्णा श्री वाद्या श्री शांतिकुशलजी कृत सनत्कुमारनी सञ्चाय ॥

॥ सरस्वति सरस वचन रस माग्रं, तोरे पाये खाग्रं ॥ सनतकुमार चकी गुण गाउं, जिम हुं निर्मल थाउं ॥ १ ॥ रंगीला राणा रहो, जीवन रहो रहो, मेरे सनतकुपार, विनवे सवि परिवार ॥ ए आंकर्णी ॥ रूप अनोपम इंडें वलाएयुं, सुर जाणे ए माया ॥ त्राह्मण रूप करी दे।य श्राया, फरि फरि निरखत काया॥ रं०॥ जी०॥ से०॥ र ॥ ह्यं निर खो तुमें खाल रंगीले, खेल जरी मोरी काया ॥ नाइ धोइ जव वत्र धराव्युं, तत्र फरि ब्राह्मण छाया ॥ रं०॥ जी०॥ मे०॥ ३॥ देखी जोतां रूप पलटाण्, सुण हो चकी राया ॥ शोल रोग तेरे देहमें जपना, गर्व म कर कूडि काया ॥ रं० ॥ जी० ॥ मे० ॥ ४ ॥ कलमलियो घणुं चक्री मनमां, श्रमर तणी सुणि वाणी।। तुरत तंबोल नाखीन जोवे, रंग नरी काया पत्र टाणी ॥रंणाजीणामेणाय॥ गढ मढ मंदिर पोल मालियां, हंकी सिन ठकु राइ॥नवनिधि चउद रतन सवि ठंकी, ठंकी सयख सजाइ ॥रंग। जीग ॥ मेणाहा। धनपुर नयर छंतेजरी महेली, महेली ममता माया ॥ संयम लेइ फरे एकीला, केड न मूके राणा राया ॥ रंग ॥जीणा मेण ॥ उम पालें मोरं तन मन ठीजे, दिन केही परें खीज़ें॥ एक लख्क ने सहस वाएं, नयन त्ररी तरी ढीजें॥रंणाजीणामेणाजा पाय घूघरी घम घम वाजे, ठम ठम क रती आवे।।दश आंगुली मुखें देइने, विनति घणी कराये।।रंणाजीणामेण ॥ पुरोहित महेता परजा क्रूरे, अंतेजर संवि रोवे॥ एक वार तुमें सामुं जीवी, सननकुमार निव जोवे ॥ रंणा जीव ॥मेण ॥१०॥ वत्र धरे शिर चा

मर ढाले, रावत प्रतपो रूडे ॥ पद्लंक पृथ्वी निरंतर, उमास लगें फरें केडें ॥ रं०॥ जी०॥ मे०॥ ११ ॥ देव उले माया निव पडीयो, वैद्युरूप ल हिं आवे ॥ तपराक्तियें करी ख़िक्क चपनी, शुकें करी रोग गमावे ॥ रं०॥ जी०॥ मे०॥ ११ ॥ वरस बे लाख मंक लिक चक्री, लाख वरसनी दीक्ता॥ पन्नरमा जिगवरने वारे, नरदेव करे जीवरका ॥ रं०॥ जी०॥ मे०॥ १३॥ श्रीविजयसेन सूरी श्रुरवाणी, तपगृष्ठ राजे जाणी ॥ विनय कुरालपं कित वर खाणी, तस चरणे चित्त आणी ॥ विनय कुरालपं कित वर खाणी, तस चरणे चित्त आणी ॥ मे०॥ १४॥ वरस सातरें रोगहीयासी, सूधो संयम पाले ॥ स्विन शांतिक राल एम प्रजंपे, देवलोक जीजो संजाले ॥ रं०॥ जी०॥ मे०॥ १८॥ इति ॥

॥ अय श्रीज्ञान्विमलजीकृत एवंतीसुकुमारजीनी सञ्चाय प्रारंजः॥

॥ खाउखदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ मनोहर मालव देश, तिहां बहुनयर निवेश ॥ आज हो अहे रे जजेणी नयरी सोहती जी ॥ १ ॥ तिहां निवसे धनरोठ, खन्नी करे जस वेठ ॥ आज हो जड़ा रे तस घरणी मनडुं मोहती जी ॥ १॥ पूरव जवें ऊष एक, राख्यो धरिय विवेक ॥ ञ्चाज हो पाम्यो रे तेह पुएयें सोहम कहपमां जी ॥ ३॥ निबनीगुढम विमान, जोगवी सुख अजिराम ॥ आज हो ते चवीयो रे जपन्नो जडा कुखें जी ॥४॥ एवंतीसुकुमार, नामे अतिसुकुमार ॥ आज हो दीपे रे जीं पे निज रूपें रतिपति जी ॥ ए ॥ रंजाने अनुकारि, परएयो बत्रीस ना री ॥ त्राज हो जोगी रे ज्ञामिनीशुं जोगज जोगवे जी ॥ ६ ॥ नित्य नव ला श्णगार, सोवन जिंदत सफार ॥ आज हो पहेरे रे सुंवालुं चीवर सामदुं जी ॥ ७॥ नित नवलां तंबोल, चंदन केशर होल ॥ आज हो चरचे रें जस अंगे आंगी फूटरी जी ॥ ए ॥ एक पखाखे अंग, एक करे नाटक चंग, आज हो एकज रे सुंहाली सेज समारती जी ॥ ए॥ एक बोले मुख जाल, मीठी जाणे झाल ॥ आज हो लावणें लटकाला रूडा बोलडा जी ॥ १०॥ एक करि नयन कटाक, एक करे नखरा लाख ॥ आ ज हो प्रेमें रे पन्होती पियु पियु उचरे जी॥ ११॥ एक पिरसे पकवान्न, एक समारे पान ॥ आज हो पिरसे रे एक सारां खारां साखणां जी ॥ १२॥ एक वली गूंथे फूल, पंच वरण बहुमूल ॥ आज हो जामे रे केस रीये कल एक बांधती जी ॥ १३॥ एक कहे जीजीकार, करती काम

विकार ॥ आज हो रूडी रे रहियाखी वेण वजावती जी ॥ १४ ॥ इत्याँ दिक बहु जोग, विससे स्त्रीसंयोग ॥ आज हो जाणे दोगुंदक पृथिवी मंग्लें जी ॥ १५ ॥ एवे समे समता पूर, श्रीत्रार्यमाहागिरि सूरि ॥ श्राज हो आव्या रे उजेणी पुरनें परिसरें जी । १६ ॥ वसति अनुप्रह हेत, चेला चतुर संकेत ॥ श्राज हो मेर्ले रेन्जिंडा घर स्थानक याचवा जी ॥ १७॥ बारू बाइन शाल, पोढी बली पटशाल ॥ ख्रीज हो खापे रे उतर वा कार्जे साधुने जी ॥ १७॥ शिष्य क्यंन सुणी एम्, संपरिवारे धरि प्रेम ॥ आज हो पुखें रे पटशाखे आवी उत्तर्या जी ॥ रेए ॥ सकल मुनि समुदाय, करे पोरिसिं सद्याय ॥ त्राज हो सुणियां रे श्रवणें रे सुल नि नीगुटमनां जी ॥ २०॥ तेह सुणी वृत्तांत, जातिसमरणवंत ॥ आंज हो चिंते रे चित्तमांहि ए केम पामीयें जी ॥ ११॥ पूढे गुरुनें नेह, केम ल हियें सुख एह ॥ आज हो जांखे रे ग्रुरु तव वयण सुधारसें जी ॥ ११ ॥ चरणची निश्चे मोख, जो पाले निर्दोप ॥ आज हो अथवा रे सरागें वैमा निकपणुं जी ॥ २३ ॥ कहे गुरुने दियो दीख, गुरु कहे विण माय शीख॥ आज हो न हुवे अनुमति विश्व संयमकामना जी ॥ १४ ॥ तिहां माता आलाप, स्त्रीना विरह विलाप ॥ आज हो कहेतां रे ते सघलो पार न पा मीयें जी ॥१५॥ आपें पहेरे वेश, लही आयह सुविशेष ॥ आज हो धारे रे तिहां पंच महावत गुरुकने जी ॥ १६ ॥ जिम कर्म खेरू थाय, दाखो तेत्र जपाय ॥ त्यांज हो त्यापे रें जपयोगी गुरु परिसह तिहां जी ॥ १७ ॥ कंथेरी वनमांहि, पहोतो मन उत्साहिं॥ आज हो करे रे काउस्सग्ग क र्मने तोडवा जी ॥ १० ॥ माठी जवनी नार, करी जवच्रमण अपार ॥ आ ज हो यह रे ते स्याखणी व्याखणनी परे जी ॥ १ए ॥ नवप्रसूति विकरा ख, आवी वनह विचाल ॥ आज हो निरखी रे ते मुनिने रीषें धडहडे जी ॥ ३० ॥ निश्चलमनें मुनि ताम, कर्म दहननें काम ॥ आज हो जूवें जडजडती मुनिचरणे अडे जी ॥ ३१॥ चारे पहोर निशि जोर, सह्यो परिसह घोर ॥ त्राज हो करडी रे स्थालणें शरीर वलूरीयुं जी ॥ ३१॥ धरतो धर्मनुं ध्यान, निखनीगुल्म विमान ॥ श्राज हो पहोतो रे पन्हो तो पुर्खप्रनावयी जी ॥ ३३ ॥ सुरिनकुसुमजब वृष्टि, सुर करे सम कित दृष्टि ॥ आज हो महिमा रे ते ठामें सबखो साचवे जी ॥ ३४ ॥

जड़ा ने सिव नार, प्रजातें तिण वार ॥ अज हो आवी रे गुरु वांदी पूछे वातडी जी ॥ ३५ ॥ गुरु कहे एक रातमांहि, साध्या मनना उत्साह ॥ आज हो निसुणी रे डुःख वारे संयम आदरे जी ॥ ३६ ॥ गर्जवती एक पुत्र, तेण राख्युं घरसूत्र ॥ आज हो थापे रे मुनि काउस्सग्ग ठामें सुंदरु जी ॥ ३९ ॥ ते माहाकाख प्रासाद, आज खगें जसवाद ॥ आज हो पास जिनेसर करों रूयडो तिहां जी ॥३०॥ धन धन ते मुनिराज, साखां आत म काज ॥ आज हो वरशे रे शिवरमणी जवने आंतरे जी ॥ ३०॥ धीर विमल कि शिष्ट्य, लिल लिल नामे शीश ॥ आज हो तेह रे नयविमल गावे गुणो जी ॥ ४०॥ इति श्री एवंती सुकुमार सञ्चाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपद्मविजयजीकृत वयरमुनिनी सञ्चाय प्रारंजः॥

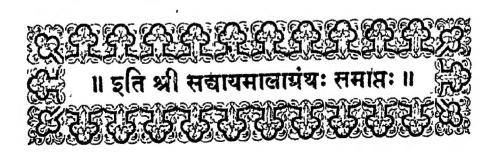
॥ सांजलजो तुमें अञ्चतवातो, वयरकुमर मुनिवरनी रे॥ ए आंकणी॥ खट महिनाना गुरु फोर्खीमां, आंबे केलि करता रे ॥त्रण वरसना साधवी मुखयी, छंग छग्यार जाएंता रे ॥ सांग्।।१॥ राजसन्नामां नहिं द्वीजाणा, मात सुखडली देखी रे ॥ गुरुयें दीधो उघो मुहपत्ती, लीधो सर्व जवेखी रे ॥ सांज्ञाशा गुरुसंघातें विहार करे मुनि, पाले गुद्ध आचार रे ॥ बाल पणाथी महा जपयोगी, संबेगी शिरदार रे ॥ सांव ॥ ३॥ कोलापाक ने घ वर जिक्का, दोय ठामें निव लीधी रे॥ गगनगामिनी वैकियलब्धि, देवें जेह्ने दीधी रे ॥ सांव ॥ ४ ॥ दश पूरव जिएया जे मुनिवर, नाइग्रह गुरु पासे रे ॥ खीरास्रव प्रमुख जे लिब्धे, परगट जास प्रकासे रे ॥ सां ।॥ ।।।। कोडि सेंकडा धनने संचें, कन्या रुक्मिणी नामें रे ॥ शेठ धनावो दिये प ण न लीये, वधते शुजपरिणामे रे॥ सां०॥ ६॥ देइ उपदेशने रुक्मिणी नारी, तारी दीका आपी रे ॥ युगप्रधान जे विचरे जगमां, सूरजतेज प्र तापी रे ॥ सांण ॥ ७ ॥ समकित। शयल तुंब धरि करमां, मोहसायर क स्वो ठोटो रे ॥ ते केम बूडे नरयनदीमां, एतो मुनिवर महोटो र ॥ सां० ॥ 0 ॥ जेथे ड्रार्निक् संघ बेईनें, मूक्यो नगर सुगाब रे ॥ शासनशोजा जन्नतिकारण, पुष्फपद्म विशाल रे ॥ सांण ॥ ए॥ बोधरायने पण प्रतिबो ध्यो, कीधो शासनरागी रे ॥ शासन शोजा जयपताका, अंबर जइनें लागी रे ॥ सांव ॥ २०॥ विसस्त्यो ग्रुंग्गां वियो कानें, आवश्यकवेखा जाएयो रे॥ विसरे नहिं पण ए विसरियों, आयु अहप पिढान्यों रे ॥ सां ॥ ११ ॥

साख सोनइये हां कि चड़े जिम, बीजे दिन सुगाख रे ॥ एम संज्ञावी वीरसेनने, जाणी अणसण काल रे ॥ सांण । ११ ॥ रथावर्त गिरि जइ अणसण कीधुं, सोहम हिर तिहां आवे रे ॥ प्रदक्तिणा पर्वतने देइने. मुनिवर वंदे जावे रे ॥ सांण ॥ १३ ॥ धनसिंहगिरि सूरी उन्नम, जेहना ए पटधारी रे ॥ पद्मविजय कहे गुरुपद पंकज, नित्य निमयें नर नारी रे ॥ सांण ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीरामविजयजीकृत मेतारज मुनिनी सञ्चाय प्रारंजी ॥

॥ धन धन मेतारज मुनि, जेणें संयम खीधो, जीवदयाने कारणें, ते णें कोप न की थो ॥ ध० ॥ १॥ मास खमणने पारणें, गोचरीयें जाय ॥ सोवनकार तणे घरे, पहोता मुनिराय ॥ धं० ॥ १ ॥ सोवन जव श्रे णिकना, क्रिप पासें मूकी ॥ घरजींतर ते नर गयो, एक वात न चूकी ॥ ५०॥ ३॥ जब सघला पंखी गले, मुनिवर ते देखे ॥ तब सोनी घर श्रावियो, जब तिहां न देखे॥ ४०॥४॥ कहो मुनिवर जब किहां गयुा, कहोने केणें लीधा ॥ मुनि उत्तर आपे नहिं, तव चपेटा दीधा ॥ ध०॥ ए॥ मुनिवर उपशम रस जस्वो, पंखीनाम न जासे॥ कोप धरीने इम कहे, जब हे तुम पासे ॥ ४० ॥ ६॥ जब चोस्वा राजा तणा, तूंतो म होटो चोर ॥ आ़ वर्म तणो करी, बांध्यो मस्तकें दोर ॥ धण ॥ ७॥ नेत्रयुगल तणी वेदना, निकलियां ततकाल ॥ केवलज्ञान ते निर्मेखुं, पा मी कीधो काल ॥ ध० ॥ ७ ॥ । शिवनगरी ते जइ चढ्यो, एह्वो साधु सुजाए ॥ गुणवंतना गुण जे जंपे, तस घर कल्याए ॥ घ० ॥ ए॥ नव कन्या तेणें तजी, तजी कंचन कोडि॥ नव पूरवधर वीरना, प्रणमुं कर जोडी ॥ घ० ॥ २० ॥ सिंह तणी परें आदरी, सिंहनी परें शूरो ॥ संयम पाली शिव लही, जस जगमें पूरो ॥ घ०॥११॥ जारी काठ तणी तिहां, उंचेथी नाखे ॥ घडकी पंखी जव वृम्या, ते देखी छांखे ॥ घ० ॥ १२ ॥ तव सोनी मन चिंतवे, की धुं खोढुं काम ॥ वात राजा जो जाएशे, तो टा खशे गम ॥ ध<sup>0</sup> ॥ १३ ॥ तव ते मनमां चिंतवे, त्रयथो जिनहाथे ॥ सोव नकार दीका लीये, निज कुटुंब संघातें॥ घणा १४॥ शिवनगरी ते जइ चढ्यो, एवो साधु सुजाण ।। गुणवंतना गुण जे जेपे, तस घर कोडि कख्याण ॥ घ०॥ १५ ॥ श्री कनकविजय वाचकवरु, शिष्य जंपे राम ॥ साधुतणा युण गावतां, बहियें उत्तम ठाम ॥ ४० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्रय श्रीज्ञानविमखजीकृत सातव्यसननी सद्याय प्रारंजः ॥ ॥ देशी कडखानी ॥ वार तुं वार तुं व्यसनसप्तकमिदं, जीव तुं जोय म नमां विचारी॥ खूत मांसं सुरा वारविनता वखी, चोरी मृगया परकीयनारी ॥ वारण्॥ १॥ रूपवंती बहुगुण्युता कुलवती, सुतवती निजपति प्रेमें खीधी ॥ एहवा चूतना व्यसनथी निजवशा, परवशा तोय सानहीं कीधी ॥ वाणै ॥ १ ॥ मांसना व्यसनथी वनमांहि हरिणली, वाणे वेधी पराक्रम वखाणे ॥ श्रेणिको नरपति श्रमणपति जित्तयुत, नरकें गयो ते सह लो क जाणे ॥ वाण ॥ ३ ॥ द्वारका द्वारिका स्वर्ग नगरी तणी, वासिता याद वापति मुरारि॥ विस्तृता बार जोयण धनें पूरिता, चूरिता तेह द्वैपाय नारि ॥ ए सुरापाननो जुर्छ विकार ॥ वाण ॥ ४ ॥ नयर वसंत वसंतर्वधव समो, वसति धम्मिल जस इविण कोडी ॥ सकल निजगेह सुख होडी वेश्यातणी, संगति पामियो दुःख कोडी ॥ वा०॥ ५॥ चोरिका व्यसन थी डुःख डुर्गति तणा, जाजनं ते जना जननमांहि ॥ चोर मंगुक हरि चित्रक प्रमुखने, राजदंमादि छु:ख नरक प्राहिं ॥ वा०॥६॥ छु:खेनुं घर थयो जेह मृगयाथकी, राघवो वनमांहि मेखि सीता ॥ हरणने मा रवा निजवशा हारवा, रावणें तेह निज नयरी नीता ॥ खंपटी रावणें खीधी सीता ॥ वाo ॥ ७ ॥ वासुदेवार्क सम इक्कि सेनायुतो, जास महिमांहि महिमा विराजे॥प्रबल लंकाधिनायो परस्रीयकी, नारकी तत्र अद्यापि गाजे ॥ वा० ॥ ए॥ एम छानेकें थया एक व्यसनथकी, दुःख संततितणां तत निकेतं ॥ जेहने सात व्यसन होय मोकलां, ते लहे



डु:ख कहेवाय केतुं ॥ ते सहे डु:ख वली मेरू जेतुं ॥ वाण ॥ ए ॥ एम

जाणी करी व्यसनने वारियें, धारियें धर्मवर धरिय नेहा॥ संयमें धीर गुरु

चरण आराहियें, नय कहे जिस लहियें सुख समृहा ॥ वा॰ ॥ १० ॥ इति॥